नवीन महावीर कीर्त्तन

जैसी महिमा तुमविषै, और धरे नहिं कोय।
जो सूरज में ज्योति है, नहिं तारागण सोय॥
वीर तुम्हारे नाम से, अघ छिन माहिं पलाय।
ज्यों दिनकर परकाशते, अन्धकार विनशाय॥

★

प्रकाशक :

"सेठी बन्धु"

श्री वीर पुस्तक मन्दिर

श्री महावीरजी (हिण्डौन)

(राजस्थान)

षष्ठमवार	अप्रेल, सन् १९६०	मूल्य ६)

प्राप्ति-स्थान—

वीर पुस्तक मन्दिर

श्री महावीरजी (हिण्डौन) राजस्थान

तथा

वीर पुस्तक भण्डार

श्री वीर प्रेस, जयपुर।
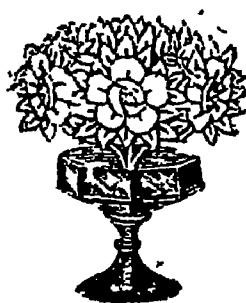
मुद्रक -

श्री वीर प्रेस, जयपुर।

विषय-सूची

※ सूची ※

चतुर्थ अध्याय

पंचम अध्याय

(पासा केवली तथा यंत्र मंत्र)

अष्टम अध्याय

नवम अध्याय

दशम अध्याय
वृहद् अर्घावली

सिद्ध क्षेत्र सम्बन्धी अर्घ

एकादशम अध्ययाय

(पृ० ३४६ से ४६८ तक भजन आरती संग्रह)

❀ भ ❀

❀ व ❀

सत्रहवां अध्याय

(श्री महावीर क्षेत्र का विस्तृत परिचय)
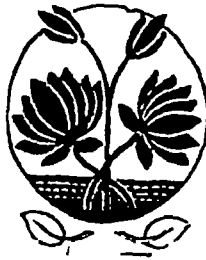
★ दर्शन पाठ तथा दर्शन विधि ★

प्रातःकाल उठकर शुद्ध जलसे स्नान कर, सादे शुद्ध साफ वस्त्र पहिन चांवल, लौंग, बादाम आदि सामग्री लेकर नंगे पांव दर्शन के लिए मन्दिर में जावे और वहां हाथ पांव धोकर समवशरण में प्रवेश करते समय, जय निःसहि ३ वार उच्चारण करे।

दर्शन करते समय नजर भगवान की प्रतिमा की ओर रखे। उस समय जो पाठ पढे उसीमें निमग्न होजाना चाहिये। भगवान की मूर्ति को एकटक होकर देखे और भावना करे कि जैसी वीत-रागता और शांति तुम में है वैसी ही मेरे आत्मा में भी उत्पन्न होजाय।

परिक्रमा देते समय यदि कोई स्त्री पुरुष धोक देरहा हो तो उसके आगे से न निकले, पीछे की ओर से निकले या जब तक वह खड़ा न होजाय तब तक खड़ा रहे, आगे न बढे। दर्शन करते समय इस तरह खड़ा होना या परिक्रमा देना चाहिए जिससे दूसरे व्यक्तियों को दर्शन पूजन में विघ्न न पड़े। फिर भगवान के सामने खड़े होकर नीचे लिखा पाठ पढ़े।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

णमोकार मन्त्र

णमो अरिहंताण, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

नोट—इस णमोकार मन्त्र को ९ या ३ वार पढे।

मंगल पाठ

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

वर्त्तमान २४ तीर्थङ्करों के नाम

१. श्री आदिनाथजी २. अजितनाथजी ३ सम्भवनाथजी ४. अभिनन्दननाथजी ५. सुमतिनाथजी ६. पद्मप्रभजी ७. सुपार्श्वनाथजी ८. चन्द्रप्रभजी ९. पुष्पदन्तजी १० शीतलनाथजी ११ श्रेयांसनाथजी १२. वासुपूज्यजी १३. विमलनाथजी १४. अनन्तनाथजी १५. धर्मनाथजी १६ शांतिनाथजी १७. कुंथुनाथजी १८. अरनाथजी १९. मल्लिनाथजी २० मुनिसुव्रतनाथजी २१. नमिनाथजी २२. नेमिनाथजी २३. पार्श्वनाथजी २४. महावीर स्वामीजी को नमस्कार हो।

विद्यमान तीर्थङ्करों के नाम

श्री सीमंधरजी, युगमंधरजी, वाहूजी, सुवाहूजी, संजातकजी स्वयंप्रभजी, वृपभाननजी, अनन्तवीर्यजी, सूरिप्रभजी, विशालकीर्तिजी, वज्रधरजी, चन्द्राननजी, चन्द्रवाहुजी, ईश्वरजी, नेमीश्वरजी

वीरसेनजी, महाभद्रजी, भुजङ्गमजी, देवयशजी, अजितवीर्यजी को नमस्कार हो।

भूतकाल के २४ तीर्थङ्करों के नाम

निर्वाण, सागर, महासाधु, विमलप्रभ, शुद्धाभ, श्रीधर, सुदत्त, अमलप्रभ, उद्धर, अङ्गिर, सन्मति, सिन्धु, कुसुमांजलि, शिवगण, उत्साह, ज्ञानेश्वर, परमेश्वर, विमलेश्वर, यशोधर, कृष्णमति, ज्ञानमति, शुद्धमति, श्रीभद्र, शांत।

भविष्यतकाल के २४ तीर्थङ्करों के नाम

महापद्म, सुरदेव, सुपार्श्व, स्वयप्रभ, सर्वात्मभूत, देवपुत्र, कुलपुत्र, उदङ्क, प्रौष्ठिल, जयकीर्ति, मुनिसुव्रत, अर, निष्पाप, निष्काय, विपुल, निर्मल, चित्रगुप्त, समाधिगुप्त, स्वयं, अनुवृत्तिक, जय, विमल, देवपाल, अनन्तवीर्य।

(फिर लाई हुई प्राशुक सामग्री को नीचे लिखे अनुसार छन्द पढ़कर चढ़ावे)

(चांवल चढ़ाने का छन्द)

तंदुल धवल पवित्र अति, नाम सुअक्षत तास।
अक्षत सो प्रभु पूजिये, अक्षय गुण परकाश॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽक्षयपद प्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

(लौंग बादाम फल चढ़ाने का छन्द)

जो जैसी करनी करे, सो तैसा फल लेय।
फल पूजा महाराज की, निश्चय शिवफल देय॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥

(अर्घ चढ़ाने का छन्द)

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री ··· ·······जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाणकल्याणक-प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(फिर नीचे लिखा पाठ पढ़े)

मैं तव चरण कमल गुण गाय, वहु विधि भक्ति करी मन लाय।
जनम जनम प्रभु पाऊ तोहि, यह सेवा फल दीजे मोहि ॥
कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय।
बार बार मैं विनती करूं, तुम सेये भवसागर तरूं ॥
नाम लेत सब दुख मिट जाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूं चरण तव सेव।
मैं आयो दर्शन के काज, मेरो जन्म सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊं शीस, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश ॥

दोहा—सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी वान।
मो गरीव की बीनती, सुन लीज्यो भगवान ॥
दर्शन करते देव का, आदि मध्य अवसान।
स्वर्गन के सुख भोगकर, पावै मोक्ष निदान ॥
जैसी महिमा तम विषै, और धरै नहिं कोय।
सूरज में जो ज्योति है, तारन में नहिं सोय ॥
नाथ तिहारे नामतैं, अघ छिनमांहि पलाय।
ज्यों दिनकर प्रकाशतैं, अंधकार विनशाय ॥

दर्शन पाठ संस्कृत

दर्शनं देवदेवस्य दर्शनं पापनाशनम् ।
दर्शनं स्वर्ग-सोपानं दर्शनं मोक्षसाधनम् ॥ १ ॥
दर्शनेन जिनेन्द्राणां साधूनां वन्दनेन च ।
न चिरं तिष्ठते पापं छिद्रहस्ते यथोदकम् ॥ २ ॥
वीतरागमुखं दृष्ट्वा पद्मरागसमप्रभम् ।
जन्मजन्मकृतं पापं दर्शनेन विनश्यति ॥ ३ ॥

दर्शनं जिनसूर्यस्य संसारध्वान्तनाशनम् ।
बोधनं चित्तपद्मस्य समस्तार्थप्रकाशनम् ॥ ४ ॥
दर्शनं जिनचन्द्रस्य सद्धर्मामृतवर्षणं ।
जन्मदाहविनाशाय वर्धनं सुखवारिधेः ॥ ५ ॥
जीवादितत्त्वप्रतिपादकाय सम्यक्त्वमुख्याष्टगुणार्णवाय ।
प्रशांतरूपाय दिगम्बराय देवाधिदेवाय नमो जिनाय ॥ ६ ॥
चिदानंदैकरूपाय जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय नित्यं सिद्धात्मने नमः ॥ ७ ॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥ ८ ॥
नहि त्राता नहि त्राता नहि त्राता जगत्त्रये ।
वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति ॥ ९ ॥
जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने ।
सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु भवे भवे ॥१०॥
जिनधर्मविनिर्मुक्तो मा भवेच्चक्रवर्त्यपि ।
स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिनधर्मानुवासितः ॥११॥
जन्म जन्म कृत पापं जन्मकोटिमुपार्जितम् ।
जन्ममृत्युजरातंकं हन्यते जिनदर्शनात् ॥ १२ ॥

चैत्य वन्दना

सात करोड़ बहत्तर लाख पाताल विषै जिन मन्दिर जानो ।
मध्यलोक मे चारसौ अट्ठावन व्यंतर ज्योतिप के अधिकानो ॥
लाख चौरासी हजार सत्तानवे तेईस ऊरध लोक बखानो ।
इक इक मे प्रतिमा शत आठ नमों कर जोड त्रिकाल सयानो ॥

(फिर अष्टांग नमस्कार दण्डवत् करे और ३ परिक्रमा (फेरी) देवे । उस समय आगे लिखी विनती पढे)

नोट—कहीं कहीं समवशरण में प्रवेश करके पहले परिक्रमा करने का विधान है।

विनती बुधजनजी कृत

प्रभु पतित पावन मैं अपावन चरण आयो शरण जी।
यो विरद आप निहार स्वामी मेट जामन मरणजी॥
तुम ना पिछान्या आन मान्या देव विविध प्रकारजी।
या बुद्धिसेती निज न जान्यो भ्रम गिन्यो हितकारजी॥
भव विकट बन में कर्म वैरी ज्ञान धन मेरो हर्यो।
तव इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय अनिष्टगति धरतो फिर्यो॥
धन घड़ी यो धन दिवस योही धन जनम मेरो भयो।
अब भाग्य मेरो उदय आयो दरश प्रभु को लख लयो॥
छवि वीतरागी नग्न मुद्रा दृष्टि नासा पै धरैं।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण युत कोटि रवि छवि को हरैं।
मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो उदय रवि आतम भयो॥
मो उर हरष ऐसो भयो मनु रङ्क चिंतामणि लयो॥
मैं हाथ जोड़ नमाय मस्तक वीनऊं तुव चरणजी।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन सुनहु तारन तरनजी॥
जाचूं नहीं सुरवास पुनि नर राज परिजन साथजी।
'बुध' जाचहूँ तुम भक्ति भव भव दीजिये शिवनाथजी॥

नोट—फिर भगवानके सन्मुख खड़ा होकर आगे लिखी विनती पढ़े।

विनती भूधरदास कृत

अहो जगत गुरु देव, सुनियो अरज हमारी।
तुम हो दीन दयालु, मैं दुखिया संसारी॥
इस भव बन में वादि, काल अनादि गमायो।
भ्रमत चतुर्गति मांहि, सुख नहीं दुख बहु पायो॥

कर्म महारिपु जोर, एक न कान करें जी।
मन मानो दुख देय, काहूँ सो नाहीं डरै जी॥
कबहूँ इतर निगोद, कबहूँ नरक दिखावे।
सुर नर पशु गति मांहि बहु विधि नाच नचावे॥
प्रभु इनको परसंग, भव भव मांहि बुरो जी।
जो दुख देखे देव! तुम से नांहि दुरोजी॥
एक जनम की बात, कहि न सकों सुन स्वामी।
तुम अनन्त परजाय, जानत अन्तरजामी॥
मैं तो एक अनाथ, ये मिलि दुष्ट घनेरे।
कियो बहुत वेहाल, सुनियो साहिब मेरे॥
ज्ञान महानिधि लूट, रङ्क निबल कर डार्यो।
इनही तुम मुझ मांहि हे जिन! अन्तर पार्यो॥
पाप पुण्य मिल दोय, पायनि वेडी डारी।
तन कारागृह मांहि, मोहि दियो दुख भारी॥
इनको नेक बिगार, मैं कछु नाहिं कियोजी।
बिन कारण जगवन्धु! बहुविधि वैर लियोजी॥
अब आयो तुम पास, सुनके सुजश तिहारो।
नीति निपुण महाराज, कीजे न्याय हमारो॥
दुष्टन देहु निकार, साधुन को रख लीजे।
विनवै "भूधरदास", हे प्रभु ढील न कीजे॥

विनती पढकर भगवान की प्रतिमा का ध्यान करे और विचारे कि धन्य है इस ध्यान को, धन्य है इस वीतराग मुद्रा को, इन्होंने राजपाट तज कर आत्म ध्यान के द्वारा केवलज्ञान प्राप्त किया। वह दिन कब हो कि मैं भी इनकी तरह आत्म-कल्याण करूं, इत्यादि विचार कर अष्टांग नमस्कार करे। फिर और वेदियों पर जाकर इसी प्रकार दर्शन करे।

दर्शन पाठ (पं० दौलतरामजी कृत)

दोहा—सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानन्द रस लीन।
सो जिनेन्द्र जयवन्त नित, अरि रज रहस विहीन॥

पद्धरि छन्द

जय वीतराग विज्ञान पूर, जय मोह तिमिर को हरन सूर।
जय ज्ञान अनन्तानन्त धार, दृग सुख वीरज मंडित अपार॥२॥
जय परम शान्ति मुद्रा समेत, भवि जनको निज अनुभूति देत।
भवि भागनवश जोगे वशाय, तुम ध्वनि ह्वै सुनि विभ्रम नशाय।
तुम गुण चिन्तत निज पर विवेक, प्रकटे विघटे आपद अनेक।
तुम जगभूषण दूषण-वियुक्त, सब महिमायुक्त विकल्प मुक्त॥४॥
अविरुद्ध शुद्ध चेतन स्वरूप, परमात्म परम पावन अनूप।
शुभ अशुभ विभाव अभाव कीन, स्वाभाविक परणति मय अछीन॥
अष्टादश दोष विमुक्त धीर, सुचतुष्टय में राजत गंभीर।
मुनि गणधरादि सेवत महन्त, नव केवल लब्ध रमा धरन्त॥६॥
तुम शासन सेय अमेय जीव, शिव गये जाहिं जैहैं सदीव।
भवसागर में दुख छार वारि, तारण को और न आप टारि॥७॥
यह लख निज दुखगद हरण काज, तुम ही निमित्त कारण इलाज
जाने ताते मैं शरण आय, उचरों निज दुख जो चिर लहाय॥८॥
मैं भ्रम्यो अपनपो विसरि आप, अपनाये विधि फल पुण्यपाप।
निजको परको कर्त्ता पिछान, पर में अनिष्टता इष्ट ठान॥९॥
आकुलित भयो अज्ञान धारि, ज्यों मृग मृगतृष्णा जान वारि।
तनपरणति में आपो चितार, कबहू न अनुभवो स्वपद सार॥१०॥
तुम को जाने बिन जो कलेश, पायो सो तुम जानत जिनेश।
पशुनारक गति सुर नर मझार, धर धर भव मर्‍यो अनन्तवार॥११
अब काल-लब्धि बल ते दयाल, तुम दर्शन पाय भयो खुशाल।

मन शान्त भयो मिटि सकलद्वन्द, चाख्यो स्वातम रस दुख निकंद॥१२
तातैं ऐसी अब करो नाथ, बिछुडे न कभी तुम चरण साथ।
तुम गुणगण को ना छेव देव, जगतारण को तुम बिरद एव॥१३॥
आतम के अहित विषय कषाय, इनमें मेरी परणति न जाय।
मैं रहूं आपमे आप लीन, सो करो होउं जो निजाधीन॥१४॥
मेरे न चाह कछु और ईश, रत्नत्रय निधि दीजे मुनीश।
मुझ कारज के कारण हो आप, शिव करो हरो मम मोह ताप॥१५॥
शशि शांति करण तप हरण हेत, स्वयमेव तथा तुम कुशल देत।
पीवत पियूष ज्यों रोग जाय, त्यों तुम अनुभव ते भव नशाय॥
त्रिभुवन तिहु काल मझार कोय, नहिं तुम विन निज सुखदाय होय।
मो उर यह निश्चय भयो आज, दुखजलधि उवारन तुम जहाज॥
दोहा—तुम गुणगण मणि गणिपती, गणत न पायो पार।
"दौल" स्वल्पमति किम कहै नमो त्रियोग सम्हार॥

गंधोदक का श्लोक

निर्मलं निर्मलीकरणं पावन पापनाशनं।
जिनचरणोदकं वंदे, चाष्टकर्म-विनाशकं॥

अथवा

तुम पद पंकज धूलिको, जो लावें निज अंग।
ते निरोग शरीर लहि, छिन में होय अनंग॥

फिर बाहर आकर शास्त्र भण्डार के सामने खडे होकर नीचे लिखे छन्द पढ जिनवाणी को नमस्कार करे और शास्त्र सुने अथवा स्वाध्याय करे।

शास्त्र स्तुति

वीर हिमाचल तैं निकसी गुरु गौतम के मुख कुण्ड ढरी है।
मोह महाचल भेद चली जग की जडतातप दूर करी है॥

ज्ञान पयोनिधि मांहि रली वहु भंग तरंगनि सों उछरी है।
ता शुचि शारद गंगनदी प्रति मैं अजुलि निज शीश धरी है॥
या जग मन्दिर में अनिवार अज्ञान अन्धेर छयो अति भारी।
श्री जिनकी धुनि दीप शिखासम जो नहिं होत प्रकाशनहारी॥
तो किहिं भांति पदारथ पांति कहां लहते रहते अविचारी।
या विधि सन्त कहे धन हैं धन हैं जिन बैन वडे उपकारी॥
दोहा—जा वाणी के ज्ञानतें, सूझे लोकालोक।
सो वाणी मस्तक चढो, नित प्रति देतहुं धोक॥

नोटः-विद्यार्थीगण मन्दिरजी से आकर, ताजा भोजन करके पाठशाला में जावें, गुरुजी को प्रणाम करे और पाठशाला के आरम्भ में मिलकर प्रार्थना करे।

अभिपेक पाठ

नोटः-यदि श्री जी को दूसरे स्थान पर विराजमान कर अभिपेक करना हो तो यह श्लोक पढना चाहिए।

यं पांडुकामलशिलागतमादिदेवमस्नापयन्सुरवराः सुरशैलमूर्ध्नि।
कल्याणमीप्सुरहमक्षततोयपुष्पैः संभावयामि पुर एव तदीय विंबं॥६॥

जल अक्षत पुष्प क्षेपणकर श्रीकार लिखित पीठपर जिनविंव की स्थापना करना चाहिये।

दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटीसंलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रि।
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपि प्रकृष्टैर्भक्त्या जलैर्जिनपतिं वहुधाभिषिंचे॥१॥

ओं ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसतं वृपभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जंवूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे ... नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे मासे .. मासे .... पक्षे शुभदिने मुनि आर्यिका श्रावकश्राविकानां सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषिंचे नमः॥

(इसे पढकर श्रीजिनप्रतिमा पर जल के कलश से धारा

छोडनी चाहिये । धारा के वाद "उदकचंदन" आदि श्लोक वोल कर अर्घ चढाना चाहिये ।

पंच मंगल पाठ

ये पांचों मङ्गल अभिषेक के समय न वोलकर सामग्री वनाते समय वोल लेना चाहिये ।

पणविवि पंच परमगुरु गुरु जिनशासनो ।
सकलसिद्धि दातार सु विघन विनासनो ॥
शारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकासनो ।
मंगल कर चउ संघहि पापपणासनो ॥
पापहि पणासन गुणहि गरुआ, दोष अष्टादश-रहिउ ।
धरि ध्यान करमविनाशि केवल-ज्ञान अविचल जिन लहिउ ॥
प्रभु पञ्चकल्याणक विराजित, सकल सुरनर ध्यावहीं ।
त्रैलोक्यनाथ सुदेव जिनवर, जगत मङ्गल गावहीं ॥ १ ॥

१ गर्भ कल्याणक

जाके गर्भ कल्याणक, धनपति आइयो ।
अवधिज्ञान-परवान, सु इंद्र पठाइयो ॥
रचि नव वारह जोजन, नयरि सुहावनी ।
कनकरयणमणिमंडित, मंदिर अति वनी ॥
अति वनी पोरि पगारि परिखा, सुवन उपवन सोहिये ।
नरनारि सुन्दर चतुर भेख सु, देख जनमन मोहिये ॥
तहँ जनकगृह छहमास प्रथमहिं रतन धारा वरसियो ।
पुनि रुचिकवासिनि जननी-सेवा करहिं सवविधि हरपियो ॥ २ ॥
सुरकुंजर सम कुंजर, धवल धुरंधरो ।
केहरि-केशरशोभित, नखशिख सुंदरो ॥

कमलाकलश-न्हवन, दुइ दाम सुहावनी ।
रविशशि मंडल मधुर, मीन जुग पावनी ॥
पावनी कनक घट जुगम पूरन, कमलकलित सरोवरो ।
कल्लोलमालाकुलितसागर, सिंहपीठ मनोहरो ॥
रमणीक अमर विमानफणिपति-भुवन रवि छवि छाजई ।
रुचि रतनराशि दिपंत, दहन सु तेजपुंज विराजई ॥ ३ ॥
ये सखि सोलह सुपने सूती सयनहीं ।
देखे माय मनोहर, पच्छिम रयनहीं ॥
उठि प्रभात पिय पूछियो, अवधि प्रकाशियो ।
त्रिभुवनपति सुत होसी, फल तिहँ भासियो ॥
भासियो फल तिहिं चित दंपति परम आनंदित भये ।
छहमासपरि नवमास पुनि तहँ, रैन दिन सुखसों गये ॥
गर्भावतार महंत महिमा सुनत सब सुख पावहीं ।
भनि 'रूपचन्द' सुदेव जिनवर जगत मङ्गल गावहीं ॥ ४ ॥

२ जन्मकल्याणक

मतिश्रुतअवधिविराजित, जिन जब जनमियो ।
तिहूंलोक भयो छोभित, सुरगन भरमियो ॥
कल्पवासि घर घंट, अनाहद बज्जियो ।
जोतिषघर हरिनाद, सहज गल गज्जियो ॥
गज्जियो सहजहिं संख भावन; भुवन सबद सुहावने ।
विंतरनिलय पटु पटह बज्जहि, कहत महिमा क्यों बने ॥
कंपित सुरासन अवधिबल जिन जनम निहचै जानियो ।
धनराज तब गजराज माया-मयी निरमय आनियो ॥ ५ ॥

जोजन लाख गयंद, वदन सौं निरमये ।
वदन वदन वसुदंत दंत सर संठये ॥
सर सर-सौ पनवीस, कमलिनी छाजहीं ।
कमलिनि कमलिनि कमल पचीस विराजहीं ॥
राजहिं कमलिनी कमलऽठोतर सौ मनोहर दल वने ।
दल दलहिं अपछर नटहि नवरस; हाव भाव सुहावने ॥
मणि कनकिंकणि वर विचित्र, सु अमरमण्डप सोहिये ।
घन घंट चवर धुजा पताका, देखि त्रिभुवन मोहिये ॥ ६ ॥
तिहि करि हरि चढि आयउ, सुरपरिवारियो ।
पुरिहि प्रदच्छन दे त्रय, जिन जयकारियो ॥
गुप्तजाय जिन-जननिहिं, सुखनिद्रा रची ।
मायामयि शिशु राखि तौ, जिन आन्यो सची ॥
आन्यो सची जिनरूप निरखत, नयन तृपित न हूजिये ।
तव परम हरषित हृदय हरिने सहस लोचन पूजये ॥
पुनि करि प्रणाम जु प्रथम इंद्र, उछंग धर प्रभु लीनऊ ।
ईशान इंद्र सु चंद्र छवि सिर, छत्र प्रभु के दीनऊ ॥ ७ ॥
सनत्कुमार महेंद्र, चमर दुइ ढारहीं ।
शेप शक्र जयकार, सबद उचारहीं ॥
उच्छवसहित चतुरविधि, सुर हरपित भये ।
जोजन सहस निन्यानवे, गगन उलँघि गये ॥
लँघिगये सुरगिर जहाँ पांडुक वन विचित्र विराजहीं ।
पाण्डुक शिला तहँ अर्द्धचद्र समान, मणि छवि छाजहीं ॥
जोजन पचीस विशाल दुगुणा याम वसु ऊंची गनी ।
वर अष्ट-मङ्गल-कनक कलशनि सिंहपीठ सुहावनी ॥ ८ ॥

रचि मणिमंडप शोभित, मध्य सिंहासनो।
थाप्यो पूरब दिशि मुख तहँ, प्रभु कमलासनो॥
बाजहिं ताल मृदंग, वेणु वीणा घने।
दुंदुभि प्रमुख मधुरधुनि, अवर जु बाजने॥
बाजने बाजहिं सची सब मिलि, धवल मङ्गल गावहीं।
पुनि करहिं नृत्य सुरांगना सब देव कौतुक धावहीं॥
भरि क्षीरसागर जल जु हाथहिं हाथ सुरगिरि ल्यावहीं।
सौधर्म अरु ईशान इंद्र सु कलश ले प्रभु न्हावहीं॥ ९॥
वदन उदर अवगाह, कलशगत जानिये।
एक चारु वसु जोजन मान प्रमानिये॥
सहस-अठोतर कलशा, प्रभुके सिर ढरैं।
पुनि सिंगार प्रमुख, आचार सबै करैं॥
करि प्रकट प्रभु महिमा महोच्छव, आनि पुनि मातहिं दये।
धनपतिहिं सेवा राखि सुरपति, आप सुरलोकहिं गये॥
जनमाभिषेक महंत महिमा, सुनत सब सुख पावहीं।
भणि 'रूपचंद' सुदेव जिनवर जगत मङ्गल गावहीं॥ १०॥

पंचामृत अभिषेक पाठ

(घृत दुग्ध दधि आदि से पंचामृत अभिषेक करना हो तो यह बोलना चाहिये। अगर संस्कृत पाठ पढना नहीं आता हो तो आगे छपा हुआ भाषा पंचामृत अभिषेक पाठ बोलकर करना चाहिये।)

श्रीमज्जिनेंद्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हम्।

श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतु—
जैनेंद्रयज्ञविधिरेप मयाभ्यधायि ॥१॥

(इस श्लोक को पढकर जिनचरणों में पुष्पांजलि छोडनी चाहिये ।)

श्रीमन्मंदरसुन्दरे शुचिजलैर्धौते सदर्भाक्षते,
पीठे मुक्तिकरं निधाय रचितं त्वत्पादपद्मस्रजः ।
इंद्रोऽहं निज—भूपणार्थकमिदं यज्ञोपवीतं दधे
मुद्राकंकणशेखराण्यपि तथा जैनाभिपेकोत्सवे ॥२॥

(इस श्लोक को पढकर अभिपेक करने वालो को यज्ञोपवीत तथा अनेक (मन्त्र या चन्दन के) आभूपण धारण करना चाहिये ।

सौगंध्यसंगतमधुव्रतझंकृतेन, संवर्ण्यमानमिव गंधमनिंद्यमादौ ।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृंदवंद्यपादारविंदमभिवंद्य जिनोत्तमानां ॥

इसे पढकर अभिपेक करने वालों को अङ्ग में चन्दन के नव जगह तिलक करना चाहिये ।

ये संति केचिदिह दिव्यकुलप्रसूता, नागाः प्रभूत—बलदर्पयुता विबोधाः । संरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेपां, प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम् ॥४॥

(इस श्लोक को पढकर अभिपेक के लिए भूमि या चौकी का प्रक्षालन करना चाहिये ।)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः, प्रक्षालितं सुरवरैर्यदनेकवारम् । अत्युद्धमुद्यतमहं जिनपादपीठं, प्रक्षालयामि भव संभवतापहारि ॥५॥

(जिस सिंहासन पर श्रीजी को विराजमान करे उस सिंहासन का प्रक्षालन करे ।)

श्रीशारदासुमुखनिर्गतबीजवर्णं, श्रीमंगलीकवरसर्वजनस्य नित्यं । श्रीमत्स्वयं जयति तस्य विनाशविघ्नं, श्रींकारवर्णलिखितं जिनभद्रपीठे ॥६॥

इस श्लोक को पढकर सिंहासन पर श्रीकार लिखना चाहिये।

इंद्राग्निदंडधरनैऋतपाशपाणि, वायूत्तरेशशशिमौलि फणींद्रचंद्राः । आगत्य यूयमिह सानुचराः सचिह्नाः, स्वं स्वं प्रतीच्छत बलिं जिनपाभिषेके ॥७॥

(नीचे लिखे मंत्रों को पढकर क्रम से दशदिक्पालों के लिये अर्घ चढावे ।)

१ ओं आं क्रौं ह्रीं इन्द्र आगच्छ आगच्छ इंद्राय स्वाहा ।
२ ओं आं क्रौं ह्रीं अग्ने आगच्छ आगच्छ अग्नये स्वाहा ।
३ ओं आं क्रौं ह्रीं यम आगच्छ आगच्छ यमाय स्वाहा ।
४ ओं आं क्रौं ह्रीं नैऋत आगच्छ आगच्छ नैऋताय स्वाहा ।
५ ओं आं क्रौं ह्रीं वरुण आगच्छ आगच्छ वरुणाय स्वाहा ।
६ ओं आं क्रौं ह्रीं पवन आगच्छ आगच्छ पवनाय स्वाहा ।
७ ओं आं क्रौं ह्रीं कुवेर आगच्छ आगच्छ कुवेराय स्वाहा ।
८ ओं आं क्रौं ह्रीं ऐशान आगच्छ आगच्छ ऐशानाय स्वाहा ।
९ ओं आं क्रौं ह्रीं धरणींद्र आगच्छ आगच्छ धरणींद्राय स्वाहा ।
१० ओं आं क्रौं ह्रीं सोम आगच्छ आगच्छ सोमाय स्वाहा ।

इति दिक्पालमंत्राः

दध्युज्ज्वलाक्षतमनोहरपुष्पदीपैः, पात्रार्पितैः प्रतिदिनं महतादरेण । त्रैलोक्यमंगलसुखालयकामदाह—मारार्तिकं तव विभोरवतारयामि ॥८॥

(दधि अक्षत पुष्प और दीप रकाबी में लेकर मंगल पाठ तथा अनेक वादित्रों के साथ त्रैलोक्यनाथ की आरती उतारना चाहिये ।)

यं पांडुकामलशिलागतमादिदेव-मस्नापयन्सुरवराः सुर-शैलमूर्ध्नि । कल्याण,मीप्सुरहमक्षततोयपुष्पैः, संभावयामि पुर एव तदीय-बिम्बम् ॥६॥

(जल अक्षत पुष्प क्षेपणकर श्रीकार लिखित पीठपर जिन-बिंब की स्थापना करना चाहिये ।

सत्पल्लवार्चितमुखान्कलधौतरूप्यान्, ताम्रारकूटघटितान्प-यसा सुपूर्णान् । संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्, संस्था-पयामि कलशान् जिनवेदिकांते ॥ १० ॥

(जलपूरित सुन्दर पत्तों से ढके हुए सुवर्णादि धातु के चार कलश चौकी या वेदी के चारों कोनों में स्थापन करना चाहिये ।

आभिः पुण्याभिरद्भिः परिमलबहुलेनामुना चंदनेन,
श्रीदृक्पेयैरमीभिः शुचिसदकचयैरुद्गमैरेभिरुद्धैः ।
हृद्यैरेभिर्निवेद्यैर्मखभवनमिमैर्दीपयद्भिः प्रदीपैः,
धूपैः प्रायोभिरेभिः पृथुभिरपि फलैरेभिरीशं यजामि ॥११॥

ॐ ह्रीं परमदेवाय श्री अर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटीसंलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रिं ।
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपि प्रकृष्टैर्भक्त्याजलैर्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे

ओं ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादिमहावीर-पर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जंबूद्वीपे

भरतक्षेत्रे आर्यखंडे'''नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे मासे'''
मासे'''पक्षे'''शुभदिने मुनिआर्यिका-श्रावक-श्राविकाणां
सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषिंचे नमः ॥ १३ ॥

(इसे पढ़कर श्रीजिनप्रतिमा पर जलके कलश से धारा छोड़नी चाहिये। यहाँ प्रत्येक धारा के वाद "उदकचंदन आदि श्लोक बोलकर अर्घ चढाना चाहिये।

उत्कृष्टवर्णनवहेमरसाभिराम—देहप्रभावलयसंगमलुप्त-दीप्ति । धारां घृतस्य शुभगंधगुणानुमेयां, वंदेऽर्हतां सुरभिसंस्नपनोपयुक्तां ॥ १४ ॥

(ऊपर लिखा पूरा मंत्र पढ़कर मंत्र में "जलेनाभिषिंचे" की जगह 'घृतेनाभिषिंचे' पढ़कर घृत के कलश से स्नपन करना चाहिये।

संपूर्ण शारदशशांकमरीचिजाल,—स्यंदैरिवात्मयशसा-मिव सुप्रवाहैः। क्षीरैर्जिनाः शुचितरैरभिषिंच्यमानाः, संपादयंतु मम चित्तसमीहितानि ॥ १५ ॥

(ऊपर के मंत्र में जलेनाभिषिंचे की जगह 'क्षीरेणाभिषिंचे' पढ़कर दुग्ध के कलश से अभिषेक करना चाहिये)

दुग्धाब्धिवीचिपयसंचितफेनराशि—पांडुत्वकांतिमवधारय-तामतीव। दध्ना गता जिनपतेः प्रतिमा सुधारा, संपद्यतां सपदि वांछितसिद्धये नः ॥ १६ ॥

(ऊपर लिखे मंत्र में 'जलेन' की जगह 'दध्ना' पढ़कर दधि के कलश से अभिषेक करना चाहिये।

भक्त्या ललाटतटदेशनिवेशितोच्चैः, हस्तैश्च्युताः

सुरवराऽसुरमर्त्यनाथैः । तत्कालपीलितमहेक्षुरसस्य धारा, सद्यः पुनातु जिनबिंबगतैव युष्मान् ॥ १७ ॥

(ऊपर के मंत्र में 'जलेन' की जगह 'इक्षुरसेन' पढ़कर इक्षुरस के कलश से अभिषेक करना चाहिये ।

संस्नापितस्य घृतदुग्धदधीक्षुवाहैः, सर्वाभिरौषधिभिरर्हतउज्ज्वलाभिः । उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेकमेलाकालेयकुंकुमरसोत्कटिवारिपूरैः ॥ १८ ॥

(ऊपर के मंत्र में 'जलेन' की जगह 'सर्वौषधिभिः पढ़कर सर्वौषधि के कलश से अभिषेक करना चाहिये ।

द्रव्यैरनल्पघनसारचतुः समाद्यै—रामोदवासितसमस्तदिगंतरालैः । मिश्रीकृतेन पयसा जिनपुंगवानां, त्रैलोक्यपावनमहं स्नपनं करोमि ॥ १९ ॥

यहाँ 'जलेन' की जगह 'सुगन्धजलेन' पढ़कर केशर कपूरादि सुगन्धित पदार्थों से बनाये जल से स्नपन करना चाहिये ।

इष्टैर्मनोरथशतैरिव भव्यपुंसां, पूर्णैः सुवर्णकलशैर्निखिलैर्वसानैः । संसारसागरविलंघनहेतुसेतुमाप्लावये त्रिभुवनैकपतिं जिनेंद्रं ॥ २० ॥

(ऊपर लिखे मंत्र से बचे हुए समस्त कलशों के अभिषेक करें)

मुक्ति श्रीवनिताकरोदकमिदं पुण्यांकुरोत्पादकं ।
नागेंद्रत्रिदशेंद्रचक्रपदवीराज्याभिषेकोदकं ॥
सम्यग्ज्ञानचरित्रदर्शनलतासंवृद्धिसंपादकं ।
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिन ! स्नानस्य गंधोदकं॥२१॥

(इस श्लोक को पढ़कर गन्धोदक अपने अंग मे लगाना चाहिये ।)

॥ इति श्री लघु अभिषेकविधि समाप्त ॥

अथ लघुपंचामृताभिषेक भाषा

घृत दुग्ध आदि से पंचामृत अभिषेक करना हो तो यह पाठ बोलना अथवा पंचामृत के अभाव मे सिर्फ जलधारा से काम लेना।

श्रीजिनवर चौबीस वर, कुनयध्वांतहर भान ।
अमितवीर्यदृगबोधसुख,–युत तिष्ठौ इहि थान ॥

नाराच छन्द

गिरीश शीस पांडुपै, सचीश ईश थापियो ।
महोत्सवो अनंदकंदको, सबै तहाँ कियो ॥
हमैं सो शक्ति नाहिं, व्यक्त देखि हेतु आपना ।
यहां करैं जिनेंद्रचंद्रकी सुबिंब थापना ॥ २ ॥

(पुष्पांजलि क्षेपण करके श्रीवर्ण पर जिनविम्ब की स्थापना करना)

सुन्दरी छन्द

कनकमणिमय कुंभ सुहावने, हरि सुक्षीर भये अति पावने ।
हम सुवासित नीर यहां भरैं, जगतपावन-पांय तरैं धरैं ॥३॥

(पुष्पांजलि क्षेपण करके वेदी के कोनों में चार कलशों की स्थापना)

हरिगीतिका छन्द

शुद्धोपयोग समान भ्रमहर, परम सौरभ पावनो ।
आकृष्टभृंगसमूह गंग समुद्भवो अति भावनो ॥
मणिकनककुम्भनिसुंभकिल्विष, विमलशीतल भरिधरौ ।

श्रम स्वेद मल निरवार जिन त्रय धार दे पांयनि परौं ॥४॥

(मंत्र से शुद्ध जल की तीन धारा जिनविम्ब पर छोडना)

अति मधुर जिनधुनि सम सुप्रीणित प्राणिवर्ग सुभावसों ।
बुधचित्तसम हरिचित्त नित्त, सुमिष्ट इष्ट उछावसों ॥
तत्काल इक्षुसमुत्थ प्रासुक रतनकुंभविषै भरौं ।
यमत्रासतापनिवार जिन त्रय धार दे पांयनि परौं ॥५॥

(ऊपर का मंत्र पढकर इक्षुरस की धारा देना)

निष्तप्तक्षिप्तसुवर्णमदद्मनीय ज्यौं विधि जैनकी ।
आयुप्रदा वलबुद्धिदा रक्षा, सु यों जिय-सैनकी ॥
तत्काल मंथित, क्षीर उत्थित, प्राज्य मणिझारी भरौं ।
दीजै अतुलवल मोहि जिन, त्रय धार दे पांयनि परौं ॥६॥

(घृतरस की धारा देना)

शरदभ्र शुभ्र सुहाटकद्यु ति, सुरभि पावन सोहनो ।
क्लीवत्वहर वल धरन पूरन, पय सकल मनमोहनो ॥
कृतउष्ण गोथनतैं समाहृत मणिजटितवट मैं भरौं ।
दुर्वल दशा मो मेट जिन त्रयधार दे पांयनि परौं ॥७॥

(दुग्ध की धारा देना)

वर विशदजैनाचार्य ज्यों लघुराम्लकर्कशता धरैं ।
शुचिकर रसिक मंथन विमंथित नेह दोनों अनुसरैं ॥
गोदधि सुमणिभृंगार पूरन लायकर आगैं धरौं ।
दुखदोप कोप निवार जिन त्रयधार दे पांयनि परौं ॥८॥

(दही की धारा)

सर्वौषधी मिलायके, भरिकंचन भृंगार ।
जजौं चरण त्रयधार दे, तारतार भवतार ॥६॥

(सर्वौषधि की धारा देना)

दूसरा अध्याय

नित्य नियम पूजा

नोट—पूजा करने वालों के लिए:—मन्दिर आने से पहले सामग्री साथ लावे (जल, चन्दन, चॉवल, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, फल) स्नान कर शुद्ध धुले वस्त्र पहिनना चाहिए । सामग्री के आठ द्रव्यों मे से चॉवल साफ किये हुए होने चाहिए । जल, चन्दन-छने हुए पवित्र जल के दो कलशों में भर कर एक में केशर घीसी हुई मिला देना चाहिए । शेष सामग्री को पवित्र छने जल से धोकर एक थाल में क्रमशः रखना चाहिए । केशर घिसते समय करीव आधे चॉवल और आधी खोपरे की गिरी को केशर में रंग लेना चाहिए । रंगे चांवल पुष्प एवं रंगी गिरी दीपक के स्थान पर चढाना चाहिए । अर्घ ऊपर लिखे आठों द्रव्यों के मिलाने पर बनता है । इसके पश्चात् पूजा के पात्र (वरतन) दो थाल, चम्मच, रकेबी, ठोणा, कलश लेकर मन्दिर में जाना चाहिए । विधि पूर्वक दर्शन अभिषेक करें । पश्चात् भगवान के सामने खड़े होकर ६ वार णमोकार मंत्र पढ़ कर पूजन प्रारंभ करना चाहिए । नित्य पूजा में देव शास्त्र गुरु, बीस तीर्थंकर पूजन कर, अकृत्रिम चैत्यालयों का अर्घ चढाकर सिद्ध पूजा, समुच्चय चौवीसी और वेदी में विराजमान भगवान की पूजन करे । अनन्तर दशलक्षण, सोलहकारण आदि के अर्घ चढ़ाकर अन्त में महावीर पूजन करे ।

शान्ति पाठ पढते हुए पुष्प क्षेपण करना चाहिए । पश्चात् पूजन के महत्त्व को बतलाने वाला कोई भजन पढकर अन्त मे विसर्जन पाठ पढकर पूजन का विसर्जन करना चाहिए । विसर्जन में ६ पुष्प लेकर दोनों हाथों से ठोना में छोडना चाहिए । इसी प्रकार स्थापना करते समय भी तीन तीन पुष्प तीन वार में ठोने में चढ़ाना चाहिए । पुष्प (रंगीन चॉवल) साबुत हों । पूजन करते समय ध्यान उसी में लगा हो । पाठ मधुर ध्वनि से पढ़ा जाय । यदि समय कम हो तो पूजन में देव गुरु शास्त्र की पूजन कर बीस तीर्थंकरों का भी अर्घ ही चढा, सिद्ध पूजा व समुच्चय चौवीसी का भी अर्घ ही चढ़ा कर महावीर पूजा के साथ समाप्त किया जा सकता है । इस प्रकार पूजाएँ संख्या में भले ही कम हों परन्तु भाव पूर्वक होना चाहिए । यह ध्यान रहे कि आपके कारण दूसरों की पूजा मे व्याघात न हो ।

पूजन प्रारंभ करने के समय नौ बार णमोकार मन्त्र पढकर नीचे लिखा नियम पाठ बोल कर पूजा आरम्भ करना चाहिये ।

[केवल णमोकार मंत्र पढ़कर भी पूजा कर सकते हैं]

❀ विनय पाठ दोहावली ❀

इह विधि ठाडो होयके, प्रथम पढै जो पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम नाशे कर्मजु आठ ॥ १ ॥
अनंत चतुष्टयके धनी, तुमही हो सिरताज ।
मुक्तिवधू के कंथ तुम, तीन भुवन के राज ॥ २ ॥
तिहुं जगकी पीडाहरन, भवदधि शोषणहार ।
ज्ञायक हो तुम विश्वके, शिवसुख के करतार ॥ ३ ॥
हरता अघअंधियार के, करता धर्म प्रकाश ।
थिरतापद दातारहो, धरता निजगुण राश ॥ ४ ॥
धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञानभानु तुम रूप ।

तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुं जग भूप ॥ ५ ॥
मैं वंदौं जिनदेवकों कर अति निर्मल भाव ।
कर्मबंध के छेदने, और न कछू उपाव ॥ ६ ॥
भविजनको भवकूपतैं, तुमही काढ़नहार ।
दीनदयाल अनाथपति, आतमगुणभंडार ॥ ७ ॥
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल ।
सरल करी या जगत में भविजनको शिवगैल ॥ ८ ॥
तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय ।
शत्रु मित्रताको धरै, विष निरविषता थाय ॥ ९ ॥
चक्रीखगधरइंद्रपद, मिलैं आपतैं आप ।
अनुक्रमकर शिवपद लहैं, नेमसकल हनि पाप ॥ १० ॥
तुम विन मैं व्याकुलभयो, जैसे जल विन मीन ।
जन्मजरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥ ११ ॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव ।
अंजनसे तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव ॥ १२ ॥
थकी नाव भवदधिविषै, तुम प्रभु पार करेय ।
खेवटिया तुम हो प्रभू, जय जय जिनदेव ॥ १३ ॥
रागसहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव ।
वीतराग भेट्यों अबै, मेटो राग कुटेव ॥ १४ ॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान ।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ॥ १५ ॥
तुम को पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव ।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ॥ १६ ॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार ।
मैं डूबत भवसिंधु में, खेय लगाओ पार ॥ १७ ॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान ।

अपनो विरद निहारकैं, कीजे आप समान ॥ १८ ॥
तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार ।
हा ! हा ! डूब्यो जात हौं, नेक निहार निकार ॥ १६ ॥
जो मैं कहहूं औरसौं. तो न मिटै उरझार ।
मेरी तो तोसौं बनी, तातैं करौं पुकार ॥ २० ॥
वंदौं पाँचौं परमगुरु, सुर गुरु वंदत जास ।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश ॥ २१ ॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमो शारदा माय ।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥ २२॥

पूजाप्रारंभ

ओं जय जय जय । नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु ।

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं । णमो उवज्झायाणं णमोलोये सव्वसाहूणं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः (पुष्पांजलि क्षेपण करना) चत्तारि मंगलं—अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहूलोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहूसरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ॥ ओं नमोऽर्हते स्वाहा ।

(यहां पुष्पांजलि क्षेपण करना)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १ ॥

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः ॥ २ ॥
अपराजितमंत्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशनः ।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ॥ ३ ॥
एसो पंचणमोयारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥ ४ ॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥ ५ ॥
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनं ।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ॥ ६ ॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी भूतपन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥ ७ ॥

पंचकल्याणक का अर्घ

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्री भगवान के गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

पंचपरमेष्ठी का अर्घ

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहं यजे ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्री अरिहंतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घं० ॥

यदि अवकाश हो तो यहां पर सहस्रनाम पढकर दश अर्घ

देना चाहिये । नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढकर एक अर्घ चढाना चाहिये ।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाम अहं यजे ॥३॥

ओं ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वस्ति मंगल

श्री मज्जिनेंद्रमभिवंद्यजगत्त्रयेशं, स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हम् । श्री मूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्जैनेंद्रयज्ञविधिरेष मयाऽभ्यधायि ॥ १ ॥ स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुंगवाय, स्वस्ति स्वभावमहिमोदयसुस्थिताय । स्वस्ति प्रकाशसहजोर्ज्जितदृङ्मयाय, स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुतवैभवाय ॥ २ ॥ स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय, स्वस्ति स्वभावपरभावविभासकाय, स्वस्ति त्रिलोकविततैकचिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकालसकलायतविस्तृताय ॥ ३ ॥ द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं, भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः । आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्, भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञं ॥ ४ ॥ अर्हत्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेकएव । अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवलबोध वह्नौ, पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥ ५ ॥

ओं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिन प्रतिमाग्रे परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

श्री वृषभो नः स्वस्ति स्वस्ति श्री अजित ।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः ।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः ।

श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः ।
श्री पुष्पदंत स्वस्ति स्वस्ति श्री शीतल. ।
श्रीश्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्य ।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्त ।
श्रीधर्म स्वस्ति स्वस्ति श्री शांति नाथ ।
श्रीकुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथ ।
श्रीमल्लि स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः ।
श्रीनमिः स्वस्ति. स्वस्ति श्री नेमिनाथः ।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः ।

(पुष्पांजलि क्षेपण)

इति जिनेन्द्र स्वति मङ्गल विधानं ।

नित्याप्रकंपाद्भुतकेवलौघाः स्फुरन्मनः पर्ययशुद्धबोधाः ।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥१॥

यहां से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपन करना चाहिये ।

कोष्ठस्थधान्योपममेकबीजं संभिन्नसंश्रोतृपदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥२॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादनघ्राणविलोकनानि ।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥३॥

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः ।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाःस्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥४॥

जंघावलिश्रेणिफलांबुतंतुप्रसूनबीजांकुरचारणाह्वाः ।
नभोऽगणस्वैरविहारिणश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥५॥

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि लघिम्नि शक्ताः

कृतिनो गरिम्णि । मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासु परमर्पयो नः ॥ ६ ॥ सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं प्राकाम्यमंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः । तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्पयो नः ॥ ७ ॥ दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः । ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्पयो नः ॥ ८ ॥ आमर्पसर्वौपधयस्त थाशीर्विषंविषाःदृष्टिविपंविपाश्च । सखिल्लविड्जल्लमलौपधीशाः स्वस्ति क्रियासु परमर्पयो नः ॥ ९ ॥ क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृत स्रवंतो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः । अक्षीणसंवासमहानसाश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्पयो नः ॥ १० ॥ (पुष्पांजलि)

देव शास्त्र गुरु की भाषा पूजा

अडिल्लछंद ।

प्रथमदेव अरिहंत सुश्रुत सिद्धांतजू । गुरुनिरग्रंथ महंत मुकतिपुरपंथजू । तीन रतन जगमांहि सो ये भवि ध्याइये । तिनकी भक्ति प्रसाद परम पद पाइये ॥ १ ॥

दोहाः—पूजौं पद अरहंत के, पूजौं गुरुपदसार ।
पूजौं देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार ॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्रावतरावतर, संवौपट् ।
ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः ।
ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

गीता छंद

सुरपति उरगनरनाथ तिनकर, वंदनीक सुपदप्रभा ।
अति शोभनीक सुवर्ण उज्ज्वल, देखि छवि मोहित सभा ॥

वर नीर क्षीरसमुद्र, घट भरि अग्र तसु बहुविधि नचूं ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निरग्रंथ नित पूजा रचूं ॥ १ ॥

दोहा—मलिन वस्तु हरलेत सब, जल स्वभाव मलछीन ।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरुतीन ॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व० ।

जे त्रिजग उदर मँझार प्राणी, तपत अति दुद्धर खरे ।
तिन अहितहरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे ॥
तसु भ्रमर लोभित घ्राण पावन सरस चंदन घसि सचूं ।अरहंत.।

दोहा—चंदन शीतलता करै, तपत वस्तु परवीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ २ ॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्य संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व० ॥२॥

यह भवसमुद्र अपार तारण-के निमित्त सु विधि ठई ।
अति दृढ परम पावन जथारथ भक्ति वर नौका सही ॥
उज्ज्वल अखंडित सालि तंदुल पुंजधरि त्रयगुण जचूं ।अरहंत ।

दोहा—तंदुल सालि सुगन्ध अति, परम अखंडित बीन ।
जासों पूजों परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्य-अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० ॥ ३ ॥

जे विनवंत सुभव्य उर अंबुज प्रकाशन भान हैं ।
जे एक मुख चारित्र भाषत त्रिजगमाहिं प्रधान हैं । लहिकुन्द
कमलादिक पहुप, भव २ कुवेदनसों बचूं । अरहन्त० ॥४॥

दोहा—विविध भांति परिमलसुमन, भ्रमर जासु आधीन ।
जासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व० ॥४॥

अति सबल मदकन्दर्प जाको क्षुधा उरग अमान है ।
दुस्सह भयानक तासु नाशनको सु गरुड़ समान है ।
उत्तम छहों रसयुक्त नित, नैवेद्यकरि घृत में पचूं ।अरहंत ।५।

दोहा—नानाविधि संयुक्तरस, व्यंजनसरस नवीन ।
जासों पूजों परमपद देव शास्त्र गुरु तान ।।५।।

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्य. क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व० ।।५।।

जे त्रिजगउद्यम नाश कीने, मोहतिमिर महाबली ।
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीप प्रकाशजोति प्रभावली ।।
इहभांति दीप प्रजाल कंचनके सुभाजन में खचूं ।अरहंत।।६।।

दोहा—स्वपरप्रकाशक ज्योति अति, दीपक तमकरि हीन ।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।६।।

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व० ।।६।।

जो कर्म-ईंधन दहन अग्निसमूह सम उद्धत लसै ।
वर धूप तासु सुगन्धताकरि, सकल परिमलता हंसै ।।
इहि भांति धूप चढाय नित भवज्वलनमाहिं नहीं पचूं ।अरहंत ।७।

दोहा—अग्निमांहि परिमलदहन, चंदनादि गुणलीन ।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।७।।

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अष्टकर्मविध्वंशनाय धूपं निर्व० ।।७।।

लोचन सु रसना घ्रान उर, उत्साह के करतार हैं ।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार हैं ।।
सो फल चढावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूं ।अरहंत० ।

दोहा—जे प्रधान फल फलविषैं, पंचकरण रस लीन ।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।। ८ ।।

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्ष फलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूं ।
वर धूप निरमल फल विविध, बहु जन्म के पातक हरूं ॥
इहभांति अर्घ चढ़ाय नित भवि, करत शिवपंकति मचूं । अर०

दोहा—वसुविधि अर्घ सँजोयके, अति उछाह मन कीन ।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला

देवशास्त्रगुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार ।
भिन्न भिन्न कहुँ आरती, अल्प सुगण विस्तार ॥

पद्धरिछंद

कर्मनकी त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दोपराशि ।
जे परम सुगुण हैं अनंत धीर, कहवत के छ्यालिस गुण गंभीर ॥२॥
शुभ समवसरन शोभा अपार, शत इन्द्र नमत कर सीसधार ।
देवाधिदेव अरहंत देव, वंदों मनवचतनकरि सु सेव ॥ ३ ॥
जिनकी धुनि ह्वै ओंकार रूप, निर अक्षरमय महिमा अनूप ।
दश अष्ट महाभाषा समेत, लघुभाषा सात शतक सुचेत ॥ ४ ॥
सो स्याद्वादमय सप्त भंग, गणधर गूंथे बारह सु अंग ।
रवि शशि न हरै सो तम हराय, सो शास्त्र नमों बहु प्रीति ल्याय ॥५॥
गुरु आचारज उवझाय साध, तन नगन रतन-त्रयनिधि अगाध ।
संसार देह वैराग धार, निरवांछि तपैं शिवपद निहार ॥६॥
गुण छत्तिस पच्चिस आठवीस, भवतारन तरन जिहाज ईस ।
गुरु की महिमा वरनी न जाय, गुरु नाम जपों मनवचन काय ॥७॥

सोरठा—कीजै शक्ति प्रमान, शक्ति विना सरधा धरै ।
'द्यानत' सरधावान, अजर अमरपद भोगवे ॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सूचना—आगे जिस भाई को निराकुलता हो, वह नीचे लिखे अनुसार वीस तीर्थंकरों की भाषा पूजा करे। यदि स्थिरता न होतो इस पूजा के आगे जो अर्घ लिखा है उसको पढकर अर्घ चढ़ा देवे।

श्री वीस तीर्थंकर पूजा भाषा

नोट—अढाई द्वीप सम्बन्धी ५ विदेह क्षेत्रों में सदा काल सीमन्धरादि २० तीर्थंकर विराजमान रहते हैं। यहा से मोक्ष मार्ग सदा खुला हुआ है। ५०० धनुष प्रमाण शरीर और एक करोड पूर्व की आयु होती है। इसीलिए यह पूजा नित्य की जाती है।

दीप अढाई मेरु पन, अरु तीर्थंकर बीस।
तिन सबकी पूजा करूं मनवचतन धरि सीस॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकराः! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्।
ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकराः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत। ठः ठः।
ओं ह्रीं विद्यामानविंशतितीर्थंकरा·! अत्र मम सन्निहिता भवत २ वषट्।

इन्द्र फणींद्र नरेंद्र वंद्य, पद निर्मल धारी।
शोभनीक संसार, सारगुण हैं अविकारी॥
क्षीरोदधि सम नीरसो (हो), पूजों तृषा निवार।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो भव, तारणतरण जिहाज॥ १॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्ममृत्यु विनाशनाय जलं०

(इस पूजामें वीस पुंज करना हो, तो इस प्रकार मंत्र बोलना)

ओं ह्रीं सीमंधर—युगमंधर—बाहु—सुबाहु—संजातक—स्वयंप्रभ—ऋषभानन—अनंतवीर्य—सूरीप्रभ—विशालकीर्ति—वज्रधर—चंद्रानन

भद्रबाहु–भुजंगम—ईश्वर–नेमिप्रभ—वीरसेन—महाभद्र–देवयशोऽजितवीर्येति विंशतिविद्यमानतीर्थङ्करेभ्यो जन्ममृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

तीन लोक के जीव, पाप आताप सताये।
तिनको साता दाता, शीतल वचन सुहाये ॥
बावन चंदनसों जजूं (हो) भ्रमन-तपन निरवार। सीमंधर.।२

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदन नि०
(इसके स्थान में यदि इच्छा हो, तो बड़ा मंत्र पढ़े)

यह संसार अपार महासागर जिनस्वामी।
तातैं तारे बडी, भक्ति नौका जगनामी ॥
तंदुल अमल सुगंधसों (हो) पूजों तुम गुणसार। सीमंधर. ।३।

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

भविक-सरोज-विकाश निंद्यतमहर रविसे हो।
जति श्रावक आचार, कथनको तुमही बड़े हो ॥
फूलसुवास अनेकसों (हो) पूजों मदन प्रहार। सीमंधर. ।४।

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यः कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि०।

काम नाग विषधाम, नाशको गरुड कहे हो।
छुधा महादवज्वाल, तासको मेघ लहे हो ॥
नेवज बहुघृत मिष्टसों (हो), पूजों भूखविडार। सीमंधर. ।५।

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं०।

उद्यम होन न देत, सर्व जगमाहिं भरयो है—
मोह महातम घोर, नाश परकाश करयो है ॥
पूजों दीप प्रकाशसों (हो) ज्ञानज्योति करतार। सीमंधर. ।६।

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं० ।

कर्म आठ सब काठ,-भार विस्तार निहारा ।

ध्यान अगनि कर प्रकट, सरब कीनो निरवारा ॥

धूप अनूपम खेवतैं (हो), दुःखजलैं निरधार । सीमंधर. ।७।

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि० ।

मिथ्यावादी दुष्ट, लोभऽहंकार भरे हैं ।

सबको छिनमें जीत, जैनके मेरु खरे हैं ॥

फल अति उत्तमसों जजों (हो) वांछितफलदातार । सीमं. ।८।

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० ।

जल फल आठों दर्व, अरघकर प्रीति धरी है ।

गणधर इंद्रनहूतैं, थुति पूरी न करी है ॥

'द्यानत' सेवक जानके (हो) जगतैं लेहु निकार । सीमं. ।९।

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० ।

अथ जयमाला—आरती ।

सोरठा—ज्ञान सुधाकर चंद, भविकखेतहित मेघ हो ।
भ्रमतमभान अमंद, तीर्थंकर वीसों नमों ॥

चौपाई १६ मात्रा

सीमंधर सीमंधर स्वामी, जुगमंधर जुगमंधर नामी ।
बाहु बाहु जिन जगजन तारे, करम सुबाहु बाहुबल दारे ॥ १ ॥
जात सुजातं केवल-ज्ञानं, स्वयंप्रभु प्रभु स्वयं प्रधानं ।
ऋषभानन ऋषि भानन दोषं, अनंतवीरज वीरजकोषं ॥ २ ॥
सौरीप्रभ सौरी गुण मालं, सुगुण विशाल विशाल दयालं ।
वज्रधार भव गिरिवज्जर हैं, चंद्रानन चंद्रानन वर हैं ॥ ३ ॥

भद्रवाहु भद्रनिके करता, श्रीभुजंग भुजंगम हरता ।
ईश्वर सबके ईश्वर छाजैं, नेमिप्रभु जस नेमि विराजैं ॥ ४ ॥
वीरसेन वीरं जग जानै, महाभद्र महाभद्र वखाने ।
नमो जसोधर जसधरकारी, नमो अजित वीरज वलधारी ॥ ५ ॥
धनुष पांचसौ काय विराजै, आव कोडिपूरव सब छाजै ।
समवसरण शोभित जिनराजा, भव जलतारन तरन जिहाजा ॥६॥
सम्यक रत्नत्रयनिधिदानी. लोकालोक प्रकाशक ज्ञानी ।
शतइंद्रनिकरि बंदित सोहैं, सुरनर पशु सबके मन मोहैं ॥ ७ ॥

दोहा—तुमको पूजैं वंदना, करै धन्य नर सोय ।
'द्यानत' सरधा मन धरै, सो भी धरमी होय ॥

ॐ ह्रीं विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(विद्यमान बीसतीर्थंकरों का अर्घ)

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनराजमहं यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरयुग्मंधरवाहुसुवाहुसंजातकस्वयंप्रभऋषिभानन अनन्तवीर्यसूर्यप्रभविशालकीर्तिवज्रधरचंद्राननभद्रवाहुभुजंगमईश्वर नेमिप्रभवीरसेनमहाभद्रदेवयशअजितवीर्येति विंशति विद्यमान तीर्थङ्करेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अकृत्रिम चैत्यालयों के अर्घ ।

जगत में ऐसे मन्दिर भी हैं जो किसी मनुष्य द्वारा वनाये हुए नहीं हैं, अनादि काल से चले 'आरहे हैं । उनको 'अकृत्रिम चैत्यालय' कहते हैं । उन चैत्यालयों में अर्हत् भगवान की मनोहर प्रतिमाएं विराजमान हैं, किसी तीर्थंकर विशेप की प्रतिमाएँ नहीं हैं ।

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान् नित्यं त्रिलोकीगतान् ।
वंदे भावनव्यंतरान् द्युतिवरान् स्वर्गामरावासगान् ॥
सद्गंधाक्षतपुष्पदामचरुकैः, सद्दीपधूपैः फलैः,
द्रव्यैर्नीरमुखैर्यजामि सततं दुष्कर्मणां शांतये ॥ १ ॥
ओं ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालयसंबंधिजिनबिंबेभ्योऽर्घ्यं निर्व०
वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेषु नंदीश्वरे यानि च मंदरेषु ।
यावंति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानां ॥२॥
अवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां,
वनभवनगतानां दिव्यवैमानिकानां ।
इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां,
जिनवरनिलयानां भावतोऽहं स्मरामि ॥ ३ ॥
जंबूधातकिपुष्करार्द्धवसुधाक्षेत्रत्रये ये भवा-
श्चंद्राम्भोजशिखंडिकंठकनकप्रावृड्घनाभा जिना ।
सम्यग्ज्ञानचरित्रलक्षणधरा दग्धाष्टकर्मेन्धनाः,
भूतानागतवर्तमानसमये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥४॥
श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जम्बुवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकररुचिके कुंडले मानुषाके ।
इष्वाकारेऽञ्जनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरे स्वर्गलोके
ज्योतिर्लोकेऽभिवंदे भुवनमहितले यानि चैत्यालयानि ॥५॥
द्वौ कुन्देन्दुतुषारहारधवलौ द्वाविंद्रनील प्रभौ ।
द्वौ बंधूकसमप्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ ।
शेषा षोडश जन्ममृत्युरहिताः संतप्तहेमप्रभा,
ते संज्ञानदिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं त्रिलोकसंबंधि कृत्याकृत्रिम-चैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपा० ।
इच्छामि भंते चेइयभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ ।
अहलोय तिरियलोय उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि

जिन चेयाणि ताणि सव्वाणि, तीसुवि लोयेसु भवणवासिय वाण-विंतरजोयसियकप्पवासियत्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धुव्वेण दिव्वेणचुण्णेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण ह्वाणेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति वंदंति णमस्संति। अहमवि इहसंतो तत्थसंताइ णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि। दुक्खक्खओ कम्मक्खओ वोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं॥

(इत्याशीर्वादः। पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथ पौर्वाह्णिक-माध्याह्निक अपराह्णिक-देववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजा वंदनास्तवसमेतं श्री पंचमहागुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्—

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।
तावकायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि॥

अथ सिद्धपूजा द्रव्याष्टक

उर्ध्वाधोरयुतं सविंदु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं।
वर्गापूरितदिग्गतांवुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितं।
अंतः पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितं।
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः॥

ओं ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर सवौषट्।

ओं ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रतिष्ठ तिष्ठ।ठः ठः।

ओं ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट्।

निरस्तकर्मसम्बंधं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वंदेऽहं परमात्मानममूर्त्त मनुपद्रवम् ॥ १ ॥

पुष्पांजलि (यहां सिद्धयंत्रकी स्थापना करना)

जिन त्यागियों को विना द्रव्य चढाये भावों के द्रव्यों से ही पूजा करना हो, वे आगे भावाष्टक है, उसको बोलकर करें। अष्टद्रव्य से पूजा करने वालों को भावपूजा का अष्टक कदापि नहीं बोलना चाहिये।

द्रव्याष्टक।

सिद्धौ निवासमनुगं परमात्मगम्यं, हान्यादि भावरहितं भववीतकायं। रेवापगावरसरोयमुनोद्भवानां, नीरैर्यजे कलशगैर्वरसिद्ध चक्रं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं सिद्ध चक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्ममृत्युविनाशनाय जलं०

आनंदकंदजनकं घनकर्ममुक्तं, सम्यक्त्वशर्मगरिमं जननार्तिवीतं। सौरभ्यवासितभुवं हरिचंदनानां, गंधैर्यजे परिमलैर्वर सिद्धचक्रम् ॥ २ ॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चंदनं

सर्वावगाहनगुणं सुसमाधिनिष्ठं, सिद्धं स्वरूपनिपुणं कमलं विशालं। सौगंध्यशालिवनशालिवराक्षतानां, पुंजैर्यजे शशिनिभैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं०

नित्यं स्वदेहपरिमाणमनादिसंज्ञं, द्रव्यानपेक्षममृतं मरणाद्यतीतम्। मंदारकुंदकमलादिवनस्पतीनां, पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वरसिद्ध चक्रम् ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं०

ऊर्ध्वस्वभावगमनं सुमनोव्यपेतं, ब्रह्मादिवीजसहितं गगनाव-
भासम् । क्षीरान्नसाज्यवटकै रसपूर्णगर्भैर्नित्यं यजे चरुवरैर्वर-
सिद्धचक्रम् ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुद्रोगविध्वंशनाय नैवेद्यं०

आतङ्कशोकभयरोगमदप्रशांतं,—निर्द्वंद्वभावधरणं महिमा-
निवेशं । कर्पूरवर्तिवहुभिः कनकावदातैर्दीपैर्यजे रुचि-
वरैर्वरसिद्धचक्रम् ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकार विनाशनाय दीपं०

पश्यन्समस्तभुवनं युगपन्नितांतं, त्रैकाल्यवस्तुविषये
निविडप्रदीपम् । सद्द्रव्यगंधघनसारविमिश्रितानां, धूपैर्यजे
परिमलैर्वरसिद्ध-चक्रम् ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं०

सिद्धासुरादिपतियक्षनरेंद्रचक्रै ध्येयं शिवं सकलभव्यजनैः
सुवंद्यम् । नारिंगपूगकदलीवरनारिकेलैः, सोऽहं यजे वरफलैर्वर
सिद्धचक्रम् ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्ताय फलं ।

गंधाढ्यं सुपयोमधुव्रतगणैः संगं वरं चंदनं ।
पुष्पौघं विमलं सदक्षतचयं रम्यं चरुं दीपकं ॥
धूपं गंधयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये ।
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांछितं ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्मरूपं, सूक्ष्मस्वभावपरमं यदनंतवीर्यं ।
कर्मौघकक्षदहनं सुखशस्यबीजं वंदे सदा निरुपमं वरसिद्धचक्रं ।
ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने अर्घं निर्व० स्वाहा ।

त्रैलोक्येश्वरवंदनीयचरणाः प्रापुः श्रियं शाश्वतीं ।
यानाराध्य निरुद्धचंडमनसः संतोऽपि तीर्थंकराः ॥
सत्सम्यक्त्वविबोधवीर्य-विशदाऽव्याबाधताद्यैर्गुणैर्-
युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान् विशुद्धोदयान् ॥

(पुष्पांजलि)

अथ जयमाला ।

विराग सनातन शांत निरंश, निरामय निर्भय निर्मल हंस ।
सुधाम विबोधनिधान विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ १ ॥
विदूरितसंसृतिभाव निरंग, समामृतपूरित देव विसंग ।
अबंधकषाय विहीनविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ २ ॥
निवारितदुष्कृतकर्मविपाश, सदामल केवलकेलिनिवास ।
भवोदधिपारक शान्त विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ३ ॥
अनंतसुखामृतसागर धीर, कलंकरजोमलभूरिसमीर ।
विखण्डितकाम विराम विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ४ ॥
विकारविवर्जित तर्जितशोक, विबोधसुनेत्रविलोकितलोक ।
विहार विराव विरंग विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ५ ॥
रजोमलखेदविमुक्त विगात्र, निरंतर नित्य सुखामृतपात्र ।
सुदर्शनराजित नाथ विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ६ ॥
नरामरवंदित निर्मल भाव, अनंत मुनीश्वरपूज्य विहाव ।
सदोदय विश्वमहेश विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥ ७ ॥
विदंभ वितृष्ण विदोष विनिद्र, परापरशंकरसार वितंद्र ।

विकोप विरूप विशंक विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ८ ॥
जरामरणोज्झित वीतविहार, विचिंतित निर्मल निरहंकार।
अचिंत्यचरित्र विदर्प विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ९ ॥
विवर्ण विगंध विमान विलोभ, विमाय विकाय विशब्द विशोभ।
अनाकुल केवल सर्व विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥१०॥

घत्ता—

असमसमयसारं चारुचैतन्यचिह्नं, परपरणतिमुक्तं पद्मनंदींद्रवंद्यं।
निखिलगुणनिकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं, स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिम् ॥ ११ ॥

ओं ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथाशीर्वादः —अडिल्लछंद।

अविनाशी अविकार परमरसधाम हो,
समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो।
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि अनन्त हो,
जगत शिरोमणि सिद्ध सदा जयवंत हो ॥ १ ॥
ध्यान अगनिकर कर्म कलंक सबै दहे,
नित्य निरंजनदेव सरूपी ह्वै रहे।
ज्ञायक के आकार ममत्वनिवारिकैं,
सो परमातम सिद्ध नमौ सिर नायकैं ॥ २ ॥

दोहा—अविचलज्ञान प्रकाशतैं, गुण अनंत की खान।
ध्यान धरै सो पाइये, परम सिद्ध भगवान ॥ इतिः

सिद्ध पूजा का भावाष्टक

निज-मनो-मणि-भाजन भारया शम-रसैक-सुधारस-धारया।
सकल-बोध-कला-रमणीयकं सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥१॥ जलं०
सहज-कर्म-कलङ्क-विनाशनैरमल-भाव-सुवासित-चन्दनैः।

अनुपमान-गुणावलि-नायकं सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥२॥ चन्दनं
सहज-भाव सुनिर्मल-तन्दुलै सकल-दोष-विशाल-विशोधनैः।
अनुपरोध-सुबोध-निधानकं सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥३॥ अक्षतान्
समयसार-सुपुष्प-सुमालया सहज-कर्मकरेण विशोधया।
परम-योग-बलेन वशीकृतं सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥४॥ पुष्पं०
अकृत-बोध-सुदिव्य-निवेद्यकैर्विहित-जाति-जरा-मरणान्तकै।
निरवधि-प्रचुरात्म-गुणालय सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥५॥ नैवेद्यं
सहज-रत्न-रुचि-प्रतिदीपकै रुचि-विभूति-तम--प्रविनाशनैः।
निरवधि-स्वविकास-विकासनं सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥६॥ दीपं
निज-गुणाक्षय-रूपसुधूपनै स्वगुण-घाति-मल प्रविनाशनै.।
विशद-बोध-सुदीर्घ-सुखात्मकं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥७॥ धूपं
परम-भाव-फलावलिसम्पदा सहज-भाव-कुभाव-विशोधया।
निज गुणस्स्फुरणात्म-निरञ्जनं सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥८॥ फलं
नेत्रोन्मीलि-विकास-भाव-निवहैरत्यन्त बोधाय वै
वार्गन्धाक्षत-पुष्प-दाम-चरुकै सद्दीप-धूपै. फलैः।
यश्चिन्ता-मणि-शुद्ध-भाव-परम-ज्ञानात्मकैरर्चयेत्
सिद्धं स्वादुमगाध-बोधमचलं सञ्चर्चयामो वयम् ॥९॥ अर्घ्यं

[भाषा अष्टक]

मोह तृषा दुख देत, सो तुमने जीती प्रभू।
    जल से पजूं तोय, मेरा रोग निवारियो ॥ जलं ॥
हम भव आतप मांहिं, तुम न्यारे संसार से।
    कीज्यो शीतल छांह, चन्दनसे पूजा करूं ॥ चन्दनं ॥
हम अवगुन समुदाय तुम अक्षय गुण के भरे।
    पूजूं अक्षत ल्याय, दोष नाश गुण कीजिये ॥ अक्षतं ॥
काम अग्नि है मोहि, निश्चय शील स्वभाव तुम।

फूल चढ़ाऊँ तोय, मेरो रोग निवारियो ॥ पुष्पं ॥
मोहि क्षुधा दुख भूर ध्यान खड्ग करि तुम हती ।
मेरी बाधा चूर, नेवजसे पूजा करूं ॥ नैवेद्य ॥
मोहतिमिर हम पास, तुमपै चेतन ज्योति है ।
पूजों दीप प्रकाश, मेरो तम निरवारियो ॥ दीपं ॥
अष्टकर्म वन जाल, मुक्ति माहिं स्वामी सुख करो ।
खेऊँ धूप रसाल, अष्ट कर्म निरवारियो ॥ धूपं ॥
अन्तराय दुख टाल, तुम अनन्त थिरता लही ।
पूजूं फल दरशाय, विघन टाल शिव फल करो ॥ फलं ॥
हममें आठों दोप, जजहु अर्घ ले सिद्धजो ।
दीज्यो वसु गुण मोय, कर जोड्यां 'द्यानत' खड़ो ॥अर्घं॥

सिद्ध चक्र पूजा ।

अडिल्ल छंद

अष्टकरमकरि नष्ट अष्ट गुण पायकैं ।
अष्टमवसुधा माहिं विराजे जायकें ।
ऐसे सिद्ध अनन्त महन्त मनायकें ।
संवौपट् आह्वान करूं हरपायकैं ॥

ओं ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन् । अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ओं ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन् । अत्रतिष्ठ २ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन् । अत्र ममसन्निहितो भव भव । वषट्

छंद त्रिभंगी

हिमवनगतगंगा आदि अभंगा, तीर्थ उतंगा सरवंगा ।
आनिय सुरसंगा सलिल सुरंगा, करिमनचंगा भरि भृंगा ॥

त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवनामी, अन्तरजामी अभिरामी ।
शिवपुरविश्रामी निजनिधि पामी, सिद्धजजामी सिरनामी ॥

ओं ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

हरिचन्दन लायो कर्पूर मिलायो, बहु महाकायो मनभायो ।
जलसंग घसायो रंगसुहायो, चरन चढ़ायो हरपायो ।त्रि०।२।

ओं ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

तंदुल उजियारे शशिदुतिहारे, कोमल प्यारे अनियारे ।
तुपखंडनिकारे जलसु पखारे, पुंज तुम्हारे ढिग वारे ।त्रि०॥३॥

ओं ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुरतरु की वारी, प्रीतिविहारी, किरिया प्यारी गुलजारी ।
भरिकञ्चन थारी फूलसँवारी, तुम पदढ़ारी अतिसारी ।त्रि०।४।

ओं ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

पकवान निवाजे, स्वाद विराजे, अमृत लाजे, क्षुत भाजे ।
बहु मोदक छाजे, घेवरखाजे, पूजन काजे करि ताजे । त्रि. ।५।

ओं ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

आपापरभासै ज्ञान प्रकाशै, चित्तविकासै तम नासै ।
ऐसे विध खासे दीप उजासे, धरि तुम पासे उल्लासे । त्रि. ।६।

ओं ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

चुम्बक अलिमाला गन्धविशाला, चन्दनकाला गुरु वाला ।
तस चूर्ण रसाला करि ततकाला अग्निज्वाला में डाला । त्रि.।७।

ओं ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्रीफल अतिभारा, पिस्ता प्यारा, दाख छुहारा सहकारा ।
ऋतु ऋतुका न्यारा सत्फलसारा, अपरम्पारा ले धारा । त्रि.।८।

ओं ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल फल वसुवृन्दा अरघ अमन्दा, जजत अनन्दा के कंदा ।
मेटो भवफन्दा, सब दुखदन्दा, 'हीराचन्दा' तुव वन्दा ।त्रि.।९।

ओं ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला

दोहा:—ध्यानदहनविधिदारुदहि, पायो पद निरवान ।
पंचभावजुतथिर थये, नमों सिद्ध भगवान ॥

—:त्रोटक छंद:—

सुख सम्यक्दर्शन ज्ञान लहा, अगुरुलघु सूक्षमवीर्य महा ।
अवगाह अबाध अघायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो ॥२॥
असुरेन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्र जजैं, भुवनेन्द्र खगेन्द्र गणेन्द्र भजैं ।
जर जामनमरण मिटायक हो, सब० ॥ ३ ॥
अमलं अचलं अकलं अकुलं, अछलं असलं अरलं अतुलं ।
अरलं सरलं शिवनायक हो, सब० ॥ ४ ॥
अजरं अमरं अधरं सुधरं, अडरं अहरं अमरं अघरं ।
अपरं असरं सब लायक हो, सब० ॥ ५ ॥

वृषवृंद अमंद न निंद लहैं, निरदंद अफंद सुछंद रहैं।
नित आनँदवृंद विधायक हो, सव० ॥ ६ ॥

भगवंत सुसंत अनंत गुणी. जयवंत महंत नमंत मुनी।
जगजंतु तणे अघघायक हो, सव० ॥ ७ ॥

अकलंक अटंक शुभंकर हो, निरडन्क निशङ्क शिवंकर हो।
अभयंकर शंकर क्षायक हो, सव० ॥ ८ ॥

अतरग अरंग असंग सदा, भवभंग अभंग उतंग सदा।
सरवंग अनंग नसायक हो, सव० ॥ ९ ॥

ब्रह्मण्ड जु मन्डलमन्डन हो, तिहुँदंडप्रचन्ड विहन्डन हो।
चिद पिंड अखण्ड अकायक हो, सव०॥१०॥

निरभोग सुभोग वियोग हरै, निरजोग अरोग अशोग धरै।
भ्रमभंजन तीक्षण सायक हो. सव० ॥११॥

जय लक्ष्य अलक्ष्य सुलक्ष्यक हो, जय दक्षक पक्षक रक्षकहो।
पण अक्ष प्रत्यक्ष खपायक हो, सव० ॥१२॥

निरभेद अखेद अछेद सही, निरवेद अवेदन वेद नहीं।
सवलोक अलोकहि ज्ञायक हो, सव० ॥१३॥

अमलीन अदीन अरीन हने, निजलीन अधीन अछीन वने।
जमको घनघात वचायक हो, सव० ॥१४॥

न अहार निहार विहार कवै, अविकार अपार उदार सवै।
जगजीवन के मन भायक हो, सव० ॥१५॥

अप्रमाद अनाद सुस्वादरता, उनमाद विवाद विषादहता।
समता रमता अकषायक हो, सव० ॥१६॥

असमंद अधंद अरन्ध भये, निरवन्ध अखन्ध अगन्ध ठये।
अमनं अतनं निरवायक हो, सव० ॥१७॥

निरवर्ण अकर्ण उधर्ण वली, दुखहर्ण अशर्ण सुकर्ण भली।
वलि मोहकी फौज भगायक हो सव० ॥१८॥

अविरुद्ध अक्रुद्ध अजुद्ध प्रभू, अति शुद्ध प्रबुद्ध समृद्ध विभू ।
परमातम पूरन पायक हो, सब० ॥१९॥
विररूप चिद्रूप स्वरूप द्युती, असकूप अनूपम भूप भुती ।
कृतकृत्य जगत्त्रयनायक हो, सब० ॥२०॥
सब इष्ट अभीष्ट विशिष्टहितू, उतकिष्ट वरिष्ट गरिष्ट मितू ।
शिवतिष्ठत सर्व सहायक हो, सब० ॥२१॥
जय श्रीधर श्रीधर श्रीवर हो, जय श्रीकर श्रीभर श्रीझर हो ।
जय ऋद्धि सुसिद्धि-बढायक हो, सब० ॥२२॥
दोहाः—सिद्धसु गुण कोकहि सकै, ज्यों विलस्त नभ मान ।
'हिराचन्द' तातै जजैं, करहु सकल कल्यान ॥२३॥
ओं ह्रीं श्रीअनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
(यहां पर विसर्जन भी करना चाहिये)
अडिल्ल—सिद्ध जजैं तिनको नहिं आवै आपदा ।
पुत्र पौत्र धन धान्य लहैं सुख सम्पदा ॥
इन्द्र चन्द्र धरणेंद्र नरेन्द्र जु होयकैं ।
जावैं मुकतिमँझार करम सब खोयकैं ॥२४॥
(इत्याशीर्वादाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सोलहकारण का अर्घ

जल फल आठों द्रव्य चढ़ाय द्यानत वरत करों मन लाय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥१॥
ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतीचार,

अभीदणज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप, साधुसमाधि, वैयावृत्यकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्गप्रभावना, प्रवचन–वात्सल्य इति षोडश कारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

पंच मेरु का अर्घ

आठ दरवमय अर्घ बनाय, द्यानत पूजौं श्री जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पांचों मेरु असी जिन धाम, सब प्रतिमा को करों प्रणाम ।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ २ ॥

ओं ह्रीं पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

नंदीश्वर द्वीपका अर्घ

यह अर्घ कियो निज हेत तुमको अरपत हों ।
'द्यानत' कीनो शिव हेत भूप समरपतु हों ॥
नंदीश्वर श्रीजिनधाम बावन पुंज करों ।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम आनंदभाव धरों ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तरदक्षिणे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति०

दशलक्षण धर्म का अर्घ

आठों द्रव्य संवार, 'द्यानत' अधिक उछाह सों ।
भवाताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन, ब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्मेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ

आठ द्रव्य निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये ।
जन्म रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजों ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय, अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय, त्रयोदश प्रकार सम्यक् चारित्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

समुच्चय चौबीसी पूजा

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम सुपार्श्वजिनराय ।
चन्द पुहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज्य पूजित सुरराय ॥
विमल अनन्त धर्मजस उज्ज्वल, शान्तिकुंथु अर मल्लिमनाय ।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट, आह्वाननं ।

ओं ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः, स्थापनं ।

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधिकरणम् ।

मुनिमन सम उज्ज्वल नीर, प्रासुक गंध भरा ।
भरि कनक कटोरी धीर दीनी धार धरा ॥
चौबीसों श्रीजिनचंद, आनंदकंद, सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं०

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंगभरी ।
जिनचरनन देत चढ़ाय, भवआताप हरी ॥चौबीसों। चंदनं ॥

तंदुल सित सोमसमान, सुन्दर अनियारे ।
मुक्ता फलकी उनमान, पुंजधरों प्यारे ॥ चौ० । अक्ष० ॥
वरकञ्ज कदंब कुरंड, सुमन सुगंध भरे ।
जिन अग्रधरों गुनमंड, कामकलंक हरे ॥ चौ० । पुष्पं० ॥
मनमोहनमोदक आदि, सुन्दर सद्य बने ।
रसपूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने ॥ चौ० । नैवे०॥
तमखंडन दीप जगाय, धारों तुम आगे ।
सब तिमिर मोह क्षयजाय, ज्ञानकला जागे ॥ चौ० । दीपं ॥
दशगंध हुताशनमांहि, हे प्रभु खेवत हों ।
मिस धूमकरम जरिजाहिं, तुमपद सेवत हों ॥ चौ० । धूपं ॥
शुचि पक्व सुरस फल सार, सब ऋतु के ल्यायो ।
देखत दृगमनको प्यार, पूजत सुख पायो ॥ चौ० । फलं ॥
जलफल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों ।
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों ॥ चौ० । अर्घ्यं ॥

जयमाला ।

दोहा—श्रीमत तीरथनाथपद, माथ नाय हित हेत ।
गाऊं गुणमाला अबै, अजर अमरपद देत ॥ १ ॥

घत्ता—

जय भवतमभंजन जनमनकंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छ करा ।
शिवमगपरकाशक अरिगन नाशक, चौबीसों जिनराज धरा ॥

पद्धरि छन्द

जय ऋषभदेव ऋषिगन नमंत, जय अजित जीत वसुअरि तुरंत ।
जय संभव भवभय करत चूर, जय अभिनंदन आनंदपूर ॥ २ ॥

जय सुमति सुमतिदायक दयाल. जय पद्म पद्म दुतितनरसाल ।
जय जय सुपास भवपासनाश, जय चंद चंद तनदुतिप्रकाश ॥ ४ ॥
जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत, जय शीतल शीतल गुन निकेत ।
जय श्रेयनाथ नुतसहस्रभुज्ज, जय वासवपूजित वासुपुज्ज ॥ ५ ॥
जय विमल विमलपद देनहार, जय जय अनंत गुनगन अपार ॥
जय धर्म धर्म शिवशर्म देत, जय शांति शांति पुष्टी करेत ॥ ६ ॥
जय कुंथ कुंथवादिक रखेय, जय अर जिन वसु अरि क्षय करेय ॥
जम मल्लि मल्ल हत मोहमल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रतशल्ल दल्ल ॥ ७ ॥
जय नमि नित वासवनुत सपेम, जय नेमनाथ वृषचक्र नेम ॥
जय पारसनाथ अनाथनाथ, जय वर्द्धमान शिवनगर साथ ॥ ८ ॥

चौवीस जिनंदा, आनंदकंदा पापनिकंदा, सुखकारी ।
तिन पदजुगचंदा, उदय अमंदा वासव वंदा, हित धारी ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्व० स्वाहा ॥

सोरठा—भुक्ति मुक्ति दातार, चौवीसों जिनराज वर ।
तिनपद मनवचधार, जो पूजैं सो शिव लहैं ॥

(इत्याशीर्वादः । पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

नोटः—इन पूजाओं को करलेने के पश्चात् वेदी मे विराजमान मूलनायक भगवान तथा महावीर भगवान की पूजा करना चाहिये ।

व्रतों का अर्घ

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनव्रतमहं यजे ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्री भगवज्जिनभाषितव्रतेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति ॥१॥

निर्वाणक्षेत्र पूजा

सोरठ—परम पूज्य चौवीस, जिहँ जिहँ थानक शिव गये ।
सिद्धभूमि निशदीस, मनवचतन पूजा करौं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्कर-निर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र अवतरत अवतरत, संवौषट्, आह्वानन।

ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाण क्षेत्राणि ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत, ठ: ठ, स्थापनं।

ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणं।

गीता छन्द

शुचि क्षीरदधि सम नीर निरमल, कनकझारी में भरौं।
संसार पार उतार स्वामी, जोरकर विनती करौं॥
सम्मेदगिर गिरनार चंपा, पावापुरि कैलाशकों।
पूजों सदा चौबीसजिन निर्वाण भूमि निवासकों॥१॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जलं निर्व०स्वाहा।

केशर कपूर सुगंध चंदन सलिल शीतल विस्तरौं।
भवताप को संताप मेटो, जोरकर विनती करौं। सम्मेद.॥२॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो चंदनं नि०॥२॥

मोती समान अखंड तंदुल अमल आनन्द धरि तरौं। औगुन हरौ गुन करौ हमको, जोरकर विनती करौं॥ सम्मेद.॥३॥

ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्कर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अक्षतान् नि०॥३॥

शुभ फूलरास सुवासवासित, खेद सब मन की हरौं।
दुखधामकामविनाश मेरो जोरकर विनती करौं॥सम्मेद॥४॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थङ्कर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो पुष्पं नि०॥४॥

नेवज अनेक प्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौं।
यह भूखदूखन टार प्रभुजी, जोरकर विनती करौं॥सम्मेद॥५॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थङ्कर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं नि०॥५॥

दीपक प्रकाश उजास उज्ज्वल, तिमिरसेती नहिं डरौं ।
संशयविमोहविभ्रम तमहर, जोरकर विनती करौं॥सम्मेद॥६॥
ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो दीपं नि० ॥६॥
शुभ धूप परम अनूप पावन, भावपावन आचरौं । सब
करमपुंज जलाय दीज्यो, जोरकर विनती करौं॥सम्मेद॥७॥
ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो धूपं नि० ॥७॥
बहुफल मँगाय चढाय उत्तम, चारगतिसों निरवरौं ।
निहचै मुकति फल देहु मोकों जोरकर विनती करौं ॥स०॥८॥
ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थङ्करनिर्वाण क्षेत्रेभ्यो फलं नि० ॥८॥
जल गंध अक्षत पुष्प चरु फल, दीप धूपायन धरौं ।'द्यानत'
करो निरभय जगतसों, जोर कर विनती करौं ॥ स० ॥९॥
ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थङ्कर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं नि० ॥९॥

अथ जयमाला ।

श्री चौबीसजिनेश, गिरिकैलाशादिक नमों ।
तीरथ महाप्रदेश, महापुरुष निरवाणतैं ॥

चौपाई १६ मात्रा ।

नमों ऋषभ कैलाशपहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं ।
वासुपूज्य चंपापुर वंदौं, सनमति पावापुर अभिनदौं ॥ २ ॥
वंदौं अजित अजित पददाता, वंदौं संभव भवदुखघाता ।
वंदौं अभिनंदन गणनायक, वंदौं सुमति सुमति के दायक ॥ ३ ॥
वंदौं पदमसुकति पदमाकर, वंदौ सुपास आशपासाहर ।
वंदौं चंद्रप्रभु प्रभुचंदा, वंदौं सुविधि सुविधिनिधि कंदा ॥ ४ ॥
वंदौं शीतल अघतपशीतल, वंदौ श्रेयांम श्रेयांस महीतल ।
वंदौं विमल विमल उपयोगी, वदौं अनंत अनंत सुखभोगी ॥ ५ ॥

वंदों धर्म धर्म-विस्तारा, वंदौं शांति शांतिमनधारा।
वंदौं कुंथु कुंथु-रखवालं, वंदौं अर अरिहर गुणमालं ॥ ६ ॥
वंदौं मल्लि काम मलचूरन, वंदौं मुनिसुव्रत व्रतपूरन।
वंदौं नमि जिन नमितसुरासुर, वंदौं पास आस भ्रमजगहर ॥ ७ ॥
बीसों सिद्धभूमि जा ऊपर, शिखर सम्मेद महागिरि भूपर।
एक बार वंदै जो कोई, ताहि नरकपशुगति नहिं होई ॥ ८ ॥
नरगतिनृप सुरशक्र कहावै, तिहुं जग भोग भोगि शिव जावै।
विघनविनाशक मंगलकारी, गुणविशाल वंदै नरनारी ॥ ९ ॥
घत्ता—जो तीरथ जावै पापमिटावै, ध्यावै गावै भगति करै।
ताको जस कहिये संपति लहिये, गिरिके गुण को बुध उचरै १०
ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थङ्कर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं ॥ नि० ॥१०॥

इत्याशीर्वादः।

सप्तऋषि पूजा

छप्पय

प्रथम नाम श्रीमन्व दुतिय स्वरमन्व ऋषीश्वर ॥
तीसर मुनि श्रीनिचय सर्वसुन्दर चौथौ वर ॥
पंचम श्रीजयवान विनयलालस षष्ठम भनि ॥
सप्तम जयमित्राख्य सर्व चारित्रधाम गनि ॥
ये सातों चारणऋद्धिधर, करूं तास पद थापना।
मैं पूजूं मनवचकायकरि, जो सुख चाहूं आपना ॥

ओं ह्रीं चारण ऋद्धिधर श्रीसप्त ऋषीश्वराः! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट, आह्वाननं। अत्र तिष्ठत ठः ठः, स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट, सन्निधिकरणम्।

अष्टक—गीता छन्द

शुभतीर्थउद्भव जल अनूपम मिष्ट शीतल लायकै।
भवतृषा कंदनिकंदकारण, शुद्ध घट भरवायकै॥
मन्वादिचारणऋद्धिधारक, मुनिन की पूजा करूं।
ता करें पातिक हरें सारे सकल आनन्द विस्तरूं॥१॥

ओं ह्रीं श्रीमन्व, स्वरमन्व, निचय, सर्वसुन्दर, जयवान, विनयलालस, जयमित्र ऋपिभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

श्रीखंड कदलीनंद केशर, मंद मंद घिसायकैं। तसुगंध प्रसरित दिगदिगंतर, भर कटोरी लायकैं। मन्वादि.॥१॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋपिभ्यो चंदनं नि॰।

अति धवल अक्षत खंड-वर्जित, मिष्ट राजन भोगके।
कलधौत थारा भरत सुन्दर चुनित शुभ उपयोग के॥म.॥४॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋपिभ्यो अक्षतान् निर्व॰।

बहु वर्ण सुवरण सुमन आछे अमल कमल गुलाबके।
केतकी चंपा चारु मरुआ, चुने निज कर चावके॥मन्वादि।४

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋपिभ्यो पुष्पं नि॰।

पकवान नानाभांति चातुर, रचित शुद्ध नये नये।
सद्मिष्ट लाडू आदि भरबहु, पुष्टके थारा लिये।मन्वादि.॥५॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो नैवेद्यं नि.।

कलधौत दीपक जड़ित नाना, भरित गोघृतसारसों।
अति ज्वलितजगमग ज्योति जाकी, तिमिरनाशनहारसों।म.

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो दीपं नि॰।

दिक्चक्र गंधित होत जा कर, धूप दश अंगी कही।

सो लाय मनवचकाय-शुद्ध, लगायकर खेऊं सही ।।मन्वादि०

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो धूपं नि० ।

वर दाख खारक अमित प्यारे, मिष्ट चुष्ट चुनायकैं ।

द्रावडी दाडिम चारु पुंगी, थाल भर २ लायकैं ।।मन्वादि०

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो फलं नि० ।

जलगंधअच्छतपुष्पचरुवर, दीप धूप सु लावना ।

फल ललित आठों द्रव्यमिश्रित, अर्घ कीजे पावना ।मन्वादि

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारीसप्तऋषिभ्यो अर्घं नि० ।

अथ जयमाला । छन्द त्रिभंगी ।

वंदूं ऋषिराजा, धर्मजहाजा, निजपरकाजा, करत भले ।
करुणाके धारी, गगन विहारी, दुख अपहारी, भरम दले ।।
काटत जगफंदा, भविजन वृन्दा, करत अनंदा चरणनमें ।
जो पूजैं ध्यावैं मंगल गावैं, फेर न आवैं भववन में ।।१।।

छन्द पद्धरी ।

जय श्रीमनु मुनिराजा महंत, त्रस थावरकी रक्षा करन्त ।
जय मिथ्यातम नाशक पतंग, करुणारसपूरित अंग अंग ।।१।।
जय श्री स्वरमनु अकलंकरूप, पद सेवा करत नित अमर भूप ।
जय पंच अक्ष जीते महान, तप तपत देह कञ्चनसमान ।।३।।
जय निचय सप्त तत्त्वार्थ भास, तप-रमातनों तन में प्रकाश ।
जय विषयरोध संबोध भान, परणतिके नाशन अचल ध्यान ।।४।।
जय जयहि सर्वसुन्दर दयाल, लखि इन्द्रजालवत जगत जाल ।
जय तृष्णाहारी रमण राम, जिन परणतिमैं पायो विराम ।।५।।
जय आनन्दघन कल्याणरूप, कल्याण करत सबको अनूप ।
जय मद नाशन जयवान देव, निरमद विरचित सब करत सेव ।।६।।
जय जयहि विनयलालस अमान, सब शत्रु मित्र जानत समान ।

जय कृशितकाय तपके प्रभाव, छवि छटा उडति आनन्द दाय ॥७॥
जय मित्र सकल जग के सुमित्र, अनगिनत अधम कीने पवित्र ।
जय चन्द्रवदन राजीव-नैन, कबहूँ विकथा बोलत न वैन ॥८॥
जय सातों मुनिवर एकसंग, नित गगन गमन करते अभंग ।
जय आये मथुरापुर मॅझार, तहं मरी रोग को अति प्रचार ॥९॥
जय जय तिन चरणनिके प्रसाद, सब मरी देवकृत भई वाद ।
जय लोक करै निर्भय समस्त, हम नमत सदा नित जोड़ हस्त ॥१०॥
जय ग्रीषमऋतु परवत मॅझार, नित करत अतापन योगसार ।
जय तृषापरीषह करत जेर, कहुँ रंच चलत नहीं मनसुमेर ॥११॥
जय मूल अठाइस गुणनधार, तप उग्र तपत आनन्दकार ।
जय वर्षाऋतु में वृक्षतीर, अति शीतल झेलत हैं समीर ॥१२॥
जय शीतकाल चौपट मॅझार, कै नदी सरोवर तट विचार ।
जय निवसत ध्यानारूढ़ होय, रंचक नहिं मटकत रोम कोय ॥१३॥
जय मृतकासन वज्रासनीय, गोदूहन इत्यादिक गनीय ।
जय आसन नाना भांति धार, उपसर्ग सहत ममता निवार ॥१४॥
जय जपत तिहारो नाम कोय, लख पुत्र पौत्र कुलवृद्धि होय ।
जय भरे लक्ष अतिशय भंडार, दारिद्र तनों दुख होय जार ॥१५॥
जय चोर अग्नि डाकिन पिशाच, अरु ईति भीति सब नसत सांच
जय तुम सुमरत सुख लहत लोक, सुर असुर नवत पद देत धोक।१६

छन्द रोला ।

ये सातों मुनिराज, महातप लछमी धारी ।
परम पूज्य पद धरे, सकल जग के हितकारी ॥
जो मन वच तन शुद्ध होय सेवै औ ध्यावै ।
सो जन मनरगलाल अष्टऋद्धिनकौं पावै ॥ १७ ॥

दोहा—नमन करत चरनन परत, अहो गरीबनिवाज ।
पंच परावर्तननितैं, निरवारो ऋषिराज ॥ १८ ॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्त ऋषिभ्यो पूर्णार्घं नि०

पंच बालयती तीर्थंकर पूजा

दोहा—श्री जिन पंच अनंगजित, वासुपूज्य मलि नेम।
पारसनाथ सुवीर अति, पूजूं चित धरि प्रेम ॥

ओं ह्रीं पंच बालयति तीर्थंकराः अत्रावतरावतरत संवौषट आह्वानन। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ ठः, स्थापनं। अत्रमम सन्निहिता भवत भवत वषट्, सन्निधिकरणं ॥

अथाष्टक–शुचि शीतल सुरभि सुनीर, लायो भर झारी।
दुख जामन मरन गहीर, याको परिहारी ॥
श्री वासुपूज्य मलि नेमि, पारस वीर अती।
नमुं मन वच तन धरि प्रेम पाचों बालयती ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ महावीर स्वामी, श्री पंच बालयती तीर्थंकरेभ्यो नमः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चन्दन केशर कंरपूर, जल में घसि आनो।
भव तप भंजन सुखपूर, तुमको मैं जानो ॥ श्री वासु०। चन्दनं ॥
वर अक्षत विमल बनाय, सुवरण थाल भरे।
बहु देश देश के लाय, तुमरी भेट धरे ॥ श्री वासु०। अक्षतं ॥
यह काम सुभट अति सूर, मनमे क्षोभ करो।
मैं लायो सुमन हजूर, याको वेग हरो ॥ श्री वासु०। पुष्पं० ॥
षट्रस पूरित नैवेद्य, रसना सुखकारी।
द्वय करम वेदनी छेद, आनन्द है भारी ॥ श्री वासु०। नैवेद्यं ॥
धरि दीपक जगमग ज्योति, तुम चरनन आगे।
मम मोह तिमर क्षय होत, आतम गुण जागे ॥ श्री वासु०। दीपं ॥
ले दशविधि धूप अनूप, खेऊं, गन्ध मयी।
दशबन्ध दहन जिन भूप, तुमहो कर्म जयी ॥ श्रीवासु०। धूपं ॥

पिस्ता अरु दाख बदाम, श्रीफल लेय घने ।
तुम चरन जजूं गुण धाम द्यौसुख मोक्ष तने ।। श्री वासु० । फल ।।
सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं ।
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नसावत हैं ।। श्री वासु० । अर्घ ।।

अथ जयमाल

दोहा—बाल ब्रह्मचारी भये पांचों श्री जिनराज ।
तिनकी अब जयमालिका, कहूँ स्वपर हितकाज ।।१।।

जय जय जय जय श्रीवासुपूज, तुम सम जगमे नहीं और दूज ।
तुम महा लक्ष सुर लोक छार, जब गर्भ मात मांहीं पधार ।। २ ।।
षोडश स्वपने देखे सुमात, बल अवधि जान तुम जन्म तात ।
अति हर्षधार दम्पति सुजान, बहु दान दियो जाचक जनान ।। ३ ।।
छप्पन कुमारिका कियो आन, तुम मात सेव बहु भक्ति ठान ।
छ' मास अगाऊ गर्भ आय, धनिपति सुवरन नगरी रचाय ।। ४ ।।
तुम मात महल आंगन मंझार. तिहुंकाल रतन धारा अपार ।
वरषाये षट् नव मास सार. धनिजिन पुरुपन नयनन निहार ।।५।।
जय मल्लिनाथ देवन सुदेव, शतइन्द्र करत तुम चरण सेव ।
तुम जन्मत ही त्रयज्ञान धार, आनन्द भयो तिहुँ जग अपार ।।६।।
तबही ले चहु विधि देव सङ्ग, सौधर्म इन्द्र आयो उमङ्ग ।
सजि गज ले तुम हरि गोद आप, वन पांडुक शिल ऊपर सुथाप ।।
क्षीरोदधि तैं बहु देव जाय, भरि जल घट हाथों हाथ लाय ।
करि न्हवन वस्त्र भूपण सजाय, दे ताल नृत्य तांडव कराय ।।८।।
पुनि हर्ष धार हिरदै अपार, सब निर्जर रव जय जय उचार ।
तिस अवसर आनन्द हे जिनेश, हम कहिवे समरथ नांहि लेश ।।९।।
जय जादोपति श्री नेमनाथ, हम नमत सदा जुग जोर हाथ ।
तुम ब्याह समय पशुवन पुकार, सुन तुरत छुडाये दयाधार ।।१०।।
कर कंकण अरु सिर मौर बन्द, सो तोड भये छिनमें स्वछन्द ।

तवही लौकांतिक देव आय, वैराग्य वर्द्धनी थुति कराय ॥११॥
ततक्षण शिविका लायो सुरेन्द्र, आरूढ भये तापर जिनेन्द्र।
सो शिविका निज कन्धन उठाय, सुरनर खग मिल तपवन ठैराय॥
कचलौंच वस्त्र भूषण उतार, भये जती नगन मुद्रा सुधार।
हरि केश लेय रतनन पिटार, सो क्षीर उदधि मांहीं पधार ॥१३॥
जय पारसनाथ अनाथ नाथ, सुर असुर नमत तुम चरण माथ।
जुग नाग जरत कीनी सुरक्ष, यह बात सकल जग मे प्रत्यक्ष ॥१४॥
तुम सुर धनु सम लखि जग असार, तप तपत भये तन ममत क्षार।
शठ कमठ कियो उपसर्ग आय तुम मन सुमेरु नहिं डगमगाय ॥१५
तुम शुक्ल ध्यान गहि खडग हाथ, अरि चार घातिया कर सुघात।
उपजायो केवल ज्ञान भानु, आयो कुवेर हार वच प्रमाण ॥१६॥
की समोसरण रचना विचित्र, तहां खिरत भई वाणी पवित्र।
मुनि सुरनर खग तिर्यंच आय, सुन निज निज भाषा बोध पाय॥१७॥
जय वर्द्धमान अन्तिम जिनेश, पायो न अन्त तुम गुण गणेश।
तुम चार अघाती करम हान, लियो मोक्ष स्वयं सुख अचल थान ॥१८॥
तवही सुरपति वल अवधि जान, सव देवन युत बहु हर्ष ठान।
सजि निज वाहन आयो सुतीर, जहं परमौदारिक तुम शरीर ॥१६॥
निर्वाण महोत्सव कियो भूर, ले मलयागिर चन्दन कपूर।
वहु द्रव्य सुगंधित सरस सार, तामें श्री जिनवर वपु पधार ॥२०॥
निज अगनि कुमारिन मुकुट नाय, तिहँ रतननि शुचि ज्वाला उठाय।
तिस सिर मांही दीनी लगाय, सो भस्म सबन मस्तक चढाय ॥२१॥
अति हर्ष थकी रचि दीपमाल, शुभ रतन मई दश दिश उजाल।
पुनि गीत नृत्य वाजे वजाय, गुण गाय ध्याय सुरपति सिधाय ॥२२॥
सो नाथ अबै जगमें प्रत्यक्ष, नित होत दीपमाला सुलक्ष।
हे जिन तुम गुण महिमा अपार, वसु सम्यग्ज्ञानादिक सुसार ॥२३॥
तुम ज्ञानमांहि तिहुंलोकदर्व, प्रतिविम्वित हैं चर अचर सर्व।

लहि आतम अनुभव परम ऋद्धि, भये वीतराग जगमे प्रसिद्ध ।।२४।।
ह्वै बालयती तुम सबन एम, अचिरज शिव कांता वरी केम ।
तुम परम शांतिमुद्रा सु धार, किम अष्टकर्म रिपु को प्रहार ।।२५।।
हम करत विनती बार बार, कर जोर स्व मस्तक धार धार ।
तुम भये भवोदधि पार पार, मोको सुवेग ही तार तार ।।२६।।
अरदास दास ये पूर पूर, वसु कर्म शैल चक चूर चूर ।
दुख सहन करन अब शक्ति नांहिं, गहि चरण शरण कीजे निवाह।।२७
चौ०—पांचों बाल यति तीर्थेश, तिनकी यह जयमाल विशेष ।
मन वच काय त्रियोग सम्हार, जे गावत पावत भवपार ।।२८
ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति तीर्थङ्कर जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घं ।

दोहा—ब्रह्मचर्य सों नेह धरि, रचियो पूजन ठाठ ।
पाचौ बाल यतीन को, कीजे नित प्रति पाठ ।।२९।।

❀ इत्याशीर्वादः ❀

समुच्चय अर्घ

प्रभुजी अष्ट द्रव्य जु ल्यायो भावसों,
प्रभू थांका हरष हरष गुण गाऊं महाराज ।
यो मन हरख्यो प्रभू थांकी पूजा जी रे कारणे,
प्रभूजी थांकी तो पूजा भवि जन नित करै,
ताका अशुभ कर्म कटजाय महाराज । यो मन० ।।१।।
प्रभूजी थांकी तो पूजा भवि जीव जो करै.
सो तो सुरग मुकतिपद पावै महाराज । यो मन० ।।२।।
प्रभूजी इन्द्र धरणेन्द्रजी सब मिलि गाय,
प्रभूका गुणांको पार न पायो महाराज । यो मन० ।।३।।
प्रभूजी थे छो जी अनन्ताजी गुणवान,
थांनै तो सुमरयां संकट परिहरै महाराज । यो मन० ।।४।।

प्रभूजी थे छो जी साहिब तीनों लोक का,
जिनराज मैं छूंजी निपट अज्ञानी महाराज । यो मन० ॥५॥
प्रभूजी थांका तो रूपजी निरखन कारणे,
सुरपति रचिया छैं नयन हजार महाराज । यो मन० ॥६॥
प्रभूजी नरक निगोद मे भव भव मैं रुल्यो,
जिनराज सहिया छैं दु ख अपार महाराज । यो मन० ॥७॥
प्रभूजी अबतो शरणों जी थारो मैं लियो,
किस विध कर पार लगावो महाराज । यो मन० ॥८॥
प्रभूजी म्हारो तो मनडो थामेंजी घुल रह्यो,
ज्यों चकरी विच रेशम की डोरी महाराज । यो मन० ॥९॥
प्रभूजी तीन लोक में हैं जिन बिम्ब,
कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय पूजस्यां महाराज । योमन० ॥१०॥
प्रभूजी जल चन्दन अक्षत पुष्प नैवेद्य,
दीप धूप फल अर्घ चढाऊं महाराज ।
जिन चैत्यालय महाराज, सब चैत्यालय जिनराज । योमन० ॥११॥
प्रभूजी अष्टद्रव्य जु ल्यायो बनाय ।
पूजा रचाऊं श्री भगवान की महाराज । यो मन० ॥१२॥

ॐ ह्रीं भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालबंदना करै करावै भावना भावै श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पञ्चपरमेष्ठिभ्यो नम. प्रथमानुयोगकरणानुयोगचरणानुयोगद्रव्यानुयोगेभ्यो नमः दर्शनविशुद्ध्यादिषोडश कारणेभ्यो नमः उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः, सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः, जलके विषै, थलके विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड के विषै, नगर नगरी विषै, ऊर्ध्वलोक-मध्यलोक-पाताललोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः, विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थङ्करेभ्यो नमः,

पांच भरत पांचऐरावत दशक्षेत्र सम्बन्धी तीस चौवीसी के सातसौ वीस जिनालयेभ्यो नम. नंदीश्वर द्वीप सम्बन्धी बावन जिन चैत्यालयेभ्यो नम., पंचमेरु सम्बन्धी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः, सम्मेदशिखर कैलाश चम्पापुर पावापुर गिरनार आदि सिद्ध-क्षेत्रेभ्यो नम., जैनवद्री मूडवद्री राजगृही शत्रुञ्जय तारंगा चमत्कार 'महावीर स्वामी पद्मपुरी आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नम, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः ।

ओं ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं कृपालसन्तं श्रीवृपभादि महावीर पर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकर-परमदेव आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे ... ...नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे मासे .... मासे शुभे पक्षेशुभे तिथौ वासरे मुनि आर्यिकानां श्रावक श्राविकानां क्षुल्लक क्षुल्लिकानां सकल कर्म क्षयार्थं (जलधारा) अनर्घपद प्राप्तये महार्घं सम्पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

भाव पूजा वंदनास्तव समेत श्रीपंचमहागुरु भक्ति कायोत्सर्गं कारोम्यहम् ।

[यहां पर कायोत्सर्ग पूर्वक नौ वार णमोकार मंत्र जपना चहिये ।]

शांतिपाठ भाषा

शांतिपाठ वोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिये ।

चौपाई १६ मात्रा

शांतिनाथ मुख शशि उनहारि, शीलगुणव्रतसंयमधारी ।
लखन एक सौ आठ विराजै, निरखत नयन कमलदल लाजैं ॥ १ ॥
पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी ।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक, नमो शांतिहित शांति विधायक ।
दिव्य विटप पुहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा ।

छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी ॥ ३ ॥
शांति जिनेश शांति सुखदाई. जगतपूज्य पूजौ शिरनाई ।
परमशांति दीजै हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार सङ्घको ॥ ४ ॥

वसन्ततिलका

पूजै जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके ।
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके ॥
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप ।
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप ॥५॥

इन्द्रवज्रा

संपूजको को प्रतिपालकों को, यतीनको औ यतिनायकों को ।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले कीजै सुखी हे जिन शांति को दे ॥६॥

स्रग्धरा छन्द

होवै सारी प्रजा को सुख बलयुत हो धर्म धारी नरेशा ।
होवे वर्षा समै पै तिलभर न रहे व्याधियों का अन्देशा ॥
होवै चोरी न जारी सुखमय वरते हो न दुष्काल भारी ।
सारे ही देश धारैं जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी ॥ ७ ॥

दोहा—घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज ।
शान्ति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज ॥

मन्दाक्रान्ता

शास्त्रों का हो पठन सुखदा लाभ सत्संगती का ।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोप ढांकूं सभीका ॥
बोलूं प्यारे वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ ।
तोलौं सेऊँ चरण जिनके मोक्ष जौलौं न पाऊँ ॥

आर्य्या

तव पद मेरे हियमें, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में ।
तबलौं लीन रहौं प्रभु, जबलौं पाया न मुक्ति पद मैंने ॥ १० ॥

अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझ से ।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुडाहु भवदुख से ॥ ११ ॥
हेजगबन्धु जिनेश्वर, पाऊँ तव चरण शरण वलिहारि ।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी ॥ १२ ॥
(परिपुष्पांजलि क्षेपण)

यहां पर नौ वार णमोकार मंत्र जपना चाहिये ।

भजन

नाथ ! तेरी पूजा को फल पायो, मेरे यो निश्चय अब आयो ॥टेक॥
मेंढक कमल पांखड़ी मुख ले, वीर जिनेश्वर धायो ।
श्रेणिक गज के पगतल मूवो, तुरत स्वर्गपद पायो ॥ नाथ ॥ १ ॥
मैनासुन्दरी शुभ मन सेती, सिद्धचक्र गुणगायो ।
अपने पति को कोढ़ गमायो, गंधोदक फल पायो ॥ नाथ ॥ २ ॥
अष्टापद में भरत नरेश्वर, आदिनाथ मन लायो ।
अष्टद्रव्य से पूज्या प्रभूजी, अवधि ज्ञान दरशायो ॥ नाथ ॥ ३ ॥
अञ्जन से सब पापी तारे, मेरो मन हुलसायो ।
महिमा मोटी नाथ तुम्हारी, मुक्तिपुरी सुखपायो ॥ नाथ ॥ ४ ॥
थकि थकि हारे सुर नर खगपति, आगम सीख जितायो ।
देवेन्द्र कीर्ति गुरु ज्ञान मनोहर, पूजा ज्ञान वतायो ॥ नाथ ॥ ५ ॥

भाषा स्तुति ।

तुम तरणतारण भवनिवारण, भविकमन आनन्दनो ।
श्री नाभिनन्दन जगतवन्दन, आदिनाथ निरंजनो ॥ १ ॥
तुम आदिनाथ अनादि सेऊं सेय पदपूजा करूं ।
कैलाश गिरि पर ऋषभ जिनवर, पदकमल हिरदै धरूं ॥ २ ॥
तुम अजितनाथ अजीत जीते, अष्टकर्म महाबली ।
यह विरद सुनकर शरण आयो, कृपा कीज्यो नाथजी ॥ ३ ॥

तुम चन्द्रवदन सु चन्द्रलच्छन चन्द्रपुरी परमेश्वरो ।
महासेननन्दन, जगतवन्दन चन्द्रनाथ जिनेश्वरो ॥ ४ ॥
तुम शांति पांचकल्याण पूजों, शुद्धमनवचकाय जू ।
दुर्भिक्ष चोरी पापनाशन, विघन जाय पलाय जू ॥ ५ ॥
तुम बालब्रह्म विवेकसागर, भव्य कमल विकाशनो ।
श्री नेमिनाथ पवित्र दिनकर, पापतिमिर विनाशनो ॥ ६ ॥
जिन तजी राजुल राजकन्या, कामसेन्या वश करी ।
चारित्र रथ चढ़ि भये दुलह, जाय शिवरमणी वरी ॥ ७ ॥
कंदर्प दर्प सुसर्पलच्छन, कमठ शठ निर्मल कियो ।
अश्वसेननन्दन जगतवंदन सकलसंघ मंगल कियो ॥ ८ ॥
जिनधरी बालकपणे दीक्षा, कमठ मान विदारकैं ।
श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र के पद, मैं नमों शिरधारकैं ॥ ९ ॥
तुम कर्मघाता मोक्षदाता, दीन जानि दया करो ।
सिद्धार्थ नन्दन जगतवन्दन, महावीर जिनेश्वरो ॥ १० ॥
छत्र तीन सोहैं सुरनर मोहैं, वीनती अब धारिये ।
करजोडि सेवक बीनवैं प्रभु आवागमन निवारिये ॥ ११ ॥
अब होउ भव भव स्वामि मेरे, मैं सदा सेवक रहों ।
करजोड़ यो वरदान मांगूं मोक्षफल जावत लहौं ॥ १२ ॥
जो एक मांही एक राजै एक मांहि अनेकनो ।
इक अनेककी नहीं संख्या नमूं सिद्ध निरंजनो ॥ १३ ॥
चौ०—मैं तुम चरण कमल गुणगाय, बहुविधि भक्तिकरों मनलाय ।
जनम जनम प्रभु पाऊं तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि ॥ १४ ॥
कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय ।
बार बार मैं विनती करूं, तुम सेये भवसागर तरूं ॥ १५ ॥
नाम लेत सब दुख मिटजाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय ।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूं चरण तव सेव ॥ १६ ॥

जिन पूजा तैं सब सुख होय, जिन पूजा सम अवर न कोय।
जिन पूजा तैं स्वर्ग विमान, अनुक्रम तैं पावैं निर्वाण ॥ १७ ॥
मैं आयो पूजन के काज, मेरो जनम सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊं शीश, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश ॥ १८ ॥

दोहा—सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान।
मो गरीब की बीनती, सुन लीज्यो भगवान ॥ १९ ॥
पूजन करते देवकी, आदि मध्य अवसान।
सुरगन के सुख भोगकर, पावैं मोक्ष निदान ॥ २० ॥
जैसी महिमा तुमविषैं, और धरैं नहीं कोय।
जो सूरज में ज्योति है, नहिं तारागण सोय ॥ २१ ॥
नाथ तिहारे नामतैं, अघ छिनमांहिं पलाय।
ज्यों दिनकर परकाशतै अंधकार विनशाय ॥ २२ ॥
बहुत प्रशंसा क्या करूं मैं प्रभु बहुत अजान।
पूजाविधि जानूं नहीं, शरण राखि भगवान ॥ २३ ॥

इति भाषास्तुति।

विसर्जन

दोहा—बिन जाने वा जानके रही टूट जो कोय।
तुव प्रसाद तें परमगुरु, सो सब पूरन होय ॥ १ ॥
पूजनविधि जानों नहीं, नहिं जानों आह्वान।
और विसर्जन हूं नहीं, क्षमा करो भगवान ॥ २ ॥
मंत्रहीन धन हीन हूं, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव ॥ ३ ॥
आये जो जो देवगन, पूजे भक्ति प्रमान।
ते सब जावहु कृपाकर, अपने अपने स्थान ॥ ४ ॥

इत्याशीर्वादः।

आशिका लेने का मंत्र

दोहा—श्री जिनवरकी आशिका, लीजे शीश चढाव।
भव भव के पातक कटे, दुःख दूर हो जाय ॥ १ ॥

पार्श्व पूजा

पंचमेरु पूजा।

गीता छं०-तीर्थंकरोंके न्हवन जलतैं, भये तीरथ सर्वदा।
तातैं प्रदच्छन देत सुरगन, पंचमेरुन की सदा ॥
दो जलधि ढाईद्वीपमें, सब गनत मूल विराजहीं।
पूजों असी जिनधाम प्रतिमा, होंहि सुख दुख भाजहीं॥१

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूहअत्रावतरावतर, संवौषट्। ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ. ठःठः। ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह। अत्र मम सन्निहितो भव२वषट्।

अथाष्टक। चौपाई आंचलीबद्ध (१५ मात्रा)

शीतल मिष्ट सुवास मिलाय, जलसों पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पांचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाको करों प्रणाम ॥
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु, विजयमेरु, अचलमेरु, मंदिरमेरु, विद्युन्मालीमेरु, पंचमेरु सम्बन्धि अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

जल केसर करपूर मिलाय, गंधसों पूजों श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥२॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्व०
अमल अखण्ड सुगंध सुहाय, अच्छतसों पूजों श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥३॥
ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बधिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अक्षतान्०
वरण अनेक रहे महकाय, फूलनसों पूजों जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्व०
मनवांछित बहु तुरत बनाय, चरुसों पूजों श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥५॥
ॐह्रींपंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यम् निर्व०
तमहर उज्ज्वल जोति जगाय, दीपसों पूजों श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥६॥
ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्व०
खेऊं अगर परिमल अधिकाय, धूपसों पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ पांचों० ॥७॥
ॐ ह्रीं पंचमेरुसन्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्व०
सुरस सुवर्ण सुगंध सुहाय, फलसों पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पांचों० ॥८॥
ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो फलं नि०
आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ पांचों० ॥९॥
ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अर्घं नि०

जयमाला (सोरठा)

प्रथम सुदर्शन स्वामि, विजय अचल मंदिर कहा।
विद्युन्माली नाम, पंचमेरु जग में प्रगट ॥ १० ॥

वेसरी छन्द

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै। भद्रशाल वन भूपर छाजै।
चैत्यालय चारों सुखकारी। मनवचतन कर वंदना हमारी ॥ २ ॥
ऊपर पांच शतक पर सोहै। नंदनवन देखत मन मोहै ॥ चैत्या०३॥
साढे बासठ सहस उंचाई। वन सुमनस शोभै अधिकाई ॥चै०४॥
ऊचा योजन सहस छतीसं। पांडुकवन सोहै गिर शीसं ॥चै०५॥
चारों मेरु समान बखानो। भूपर भद्रसाल चहुं जानो ॥
चैत्यालय सोलह सुखकारी। मनवचतनकर वंदना हमारी ॥ ६ ॥
ऊंचे पांच शतक पर भाखे। चारों नन्दनवन अभिलाखे।
चैत्यालय सोलह सुखकारी। मनवचतन कर वदना हमारी ॥ ७ ॥
साढे पचपन सहस उतंगा। वन सौमनस चार बहुरंगा।
चैत्यालय सोलह सुखकारी। मनवचतनकर वंदना हमारी ॥ ८ ॥
उच्च अट्ठाइस सहस बताये। पांडुक चारों वन शुभ गाये।
चैत्यालय सोलह सुखकारी। मनवचतनकर वदना हमारी ॥ ९ ॥
सुर नर चारन वंदन आवैं। सो शोभा हम किम मुख गावैं।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी। मनवचतनकर वंदना हमारी ॥१०॥

दोहा—पंचमेरुकी आरती, पढै सुनै जो कोय।
'द्यानत' फल जानै प्रभू, तुरत महा सुख होय ॥११॥

नंदीश्वर द्वीप (अष्टाह्निका) पूजा

अडिल्ल छन्द

सर्व पर्व में बड़ो अठाई पर्व है।
नन्दीश्वर सुर जांहि लिये वसु दरब हैं ॥

हमें सकति सो नांहि इहां करि थापना ।
पूजों जिनगृह प्रतिमा है हित आपना ॥

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमा समूह! अत्र अवतर अवतर, संवौपट्। अत्र तिष्ठ ठः ठ· । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

कंचन मणिमय भृंगार, तीरथ नीर भरा ।
तिहुं धार दई निरवार, जामन मरन जरा ॥
नन्दीश्वर श्रीजिनधाम, बावन पुंज करों ।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंदभाव धरों ॥१॥

ओं ह्रीं मासोत्तमे मासे " मासे शुभे शुक्लपक्षे अष्टाह्निकायां महामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे एक अंजन गिरि चार दधिमुख आठ रतिकर प्रतिदिशि तेरह तेरह बावन जिन चैत्यालयेभ्यो जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।१।

भवतपहर शीतल बास, सो चन्दन नांहीं ।
प्रभु यह गुन कीजे सांच, आयो तुम ठाहीं ॥नंदी० ॥ २ ॥

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे चंदनं निर्व०

उत्तम अक्षत जिनराज, पुंज धरे सोहैं ।
सब जीते अक्षसमाज, तुम सम अरु को है ॥ नं० ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे अक्षतान् निर्व०

तुम काम विनाशक देव, ध्याऊं फूलनसों ।
लहि शील लक्ष्मी एव, छूटूं शूलनसों ॥ नंदी० ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे पुष्पं निर्व०

नेवज इन्द्रियबलकार, सो तुमने चूरा ।

चरु तुम ढिग सोहै सार, अचरज है पूरा ॥ नं० ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे नैवेद्यं निर्व०

दीपक की ज्योति प्रकाश, तुम तन मांहि लसै ।

टूटै करमन की राश, ज्ञानकणी दरसै ॥ नं० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे दीपं निर्व० ।

कृष्णागरुधूप सुवास, दशदिशि नारि वरैं ।

अति हरषभाव परकाश, मानों नृत्य करैं ॥ नंदी ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे धूपं निर्व० ।

बहुविधफल ले तिहुँकाल, आनन्द राचत हैं ।

तुम शिवफल देहु दयाल, सो हम जाचत हैं ॥ नंदी० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे फल निर्व० ।

यह अर्घ कियो निज हेतु, तुमको अरपत हौं ।

'द्यानत' कीनो शिवहेत, भूप समरपत हौं ॥ नंदी० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे अर्घं निर्व० ।

जयमाला (दोहा

कार्तिक फागुन साढ़के, अंत आठ दिन मांहि ।

नंदीश्वर सुर जात हैं, हम पूजैं इह ठांहि ॥१॥

छन्द

एकसौ त्रेसठ कोड़ि जोजन महा! लाख चौरासिया एकदिशि में लहा।
आठमों द्वीप नन्दीश्वरं भास्वरं। भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं॥
चारदिशि चार अंजनगिरो राजहीं। सहस चौरासिया एकदिशि
छाजहीं। ढोलसम गोल ऊपर तले सुन्दरं॥ भौन० ॥३॥ एक इक
चार दिशि चार शुभ बावरी। एक इक लाख जोजन अमल जल-

भरी। चहुंदिशा चार बन लाख जोजन वरं ॥ भौन० ॥४॥ सोल वापीन मधि सोलगिरि दधिमुखं। सहस दस महा जोजन लखत सुखकरं। बावरी कौण दोमांहि दो रतिकरं ॥ भौन० ॥५॥ शैल बत्तीस इक सहस जोजन कहे। चार सौले मिले सर्व बावन लहे॥ एक इक सीस पर एक जिनमन्दिरं ॥भौन०।६॥ बिंब आठ एकसौ रतनमय सोह ही। देव देवी सरव नयन मन मोह ही। पांचसै धनुष तन पद्मआसन परं ॥ भौन० ॥७॥ लाल नख मुख नयन श्याम अरु श्वेत हैं। श्याम रङ्ग भौंह सिर केश छवि देत हैं। वचन बोलत मनों हँसत कालुपहरं ॥ भौन० ॥८॥ कोटिशशि भानु दुति तेज छिप जात है। महा वैराग्य परिणाम ठहरात है। वयन नहिं कहैं लखि होत सम्यकधरं ॥ भौन० ॥९॥

सोरठा—नन्दीश्वर जिनधाम, प्रतिमा महिमा को कहैं।
'द्यानत' लीनों नाम, यहै भगति सब सुख करै॥

ॐ ह्रीं श्री नदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे पूर्णाऽर्घ्यं निर्व०

सोलहकारण पूजा

अडिल्ल—सोलहकारण भाय तीर्थङ्कर जे भये,
हरषे इन्द्र अपार मेरु पर ले गये।
पूजा करि निज धन्य लखों बहु चावसों,
हम हूँ षोडश कारण भावैं भावसों॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकम्

कंचन भारी निर्मल नीर, पूजूं जिनवर गुण गंभीर।

परम गुरु हो, जै जै नाथ परम गुरु हो ॥
दर्श विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थङ्कर पद पाय ।
परम गुरु हो जै जै नाथ परम गुरु हो ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि १, विनयसम्पन्नता २, शीलव्रतेष्वनतीचार ३, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग ४, संवेग ५, शक्तितस्त्याग ६, शक्तितस्तप ७, साधुसमाधि ८, वैयावृत्यकरण , अर्हद्भक्ति १०, आचार्यभक्ति ११, वहुश्रुतभक्ति १२, प्रवचनभक्ति १३, आवश्यकापरिहाणि १४, मार्गप्रभावना १५, प्रवचनवात्सल्य १६, इति षोडशकारणेभ्यो नमः जलम् ।

चंदन घसों कपूर मिलाय, पूजूं श्रीजिनवर के पांय ।
परमगुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ दर्श० ॥२॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो चन्दनं ।

तंदुल धवल अखंड अनूप, पूजूं जिनवर तिहुँ जग भूप ।
परमगुरु हो जय जय नाथ परमगुरु हो ॥ दर्श० ॥३॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो अक्षत । निर्व० ॥

फूल सुगन्ध मधुप गुंजार पूजूं जिनवर जग आधार ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ दर्श० ॥४॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो पुष्पं । निर्व० ॥

सज नेवज वहु विधि पकवान, पूजूं श्रीजिनवर गुणखान ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ दर्श० ॥५॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नैवेद्यम् । निर्व० ॥

दीपक ज्योति तिमिर क्षयकार, पूजूं श्रीजिन केवलधार ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ दर्श० ॥६॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो दीपम् । निर्व० ॥

अगर कपूर गन्ध शुभ खेय, श्री जिनवर आगे महकेय ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ दर्श० ॥७॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो धूपम् । निर्व० ॥

श्रीफल आदि बहुत फल सार, पूजूं जिन वांछित दातार ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ दर्श० ॥८॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो फलं । निर्व० ॥

जल फल आठों द्रव्य चढाय, 'द्यानत' वरत करों मनलाय ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ दर्श० ॥६॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अर्घम् । निर्व० ॥

जाप—ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यै नम , ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नतायै नमः, ॐ ह्रीं शीलव्रताय नम , ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगाय नमः, ॐ ह्रीं सम्वेगाय नम., ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागाय नमः, ॐ ह्रीं शक्तितस्तपसे नमः, ॐ ह्रीं साधुसमाध्यै नम , ॐ ह्रीं वैयावृत्यकरणाय नमः, ॐ ह्रीं अर्हद्भक्त्यै नमः, ॐ ह्रीं आचार्यभक्त्यै नमः, ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्त्यै नमः, ॐ ह्रीं प्रवचनभक्त्यै नमः, ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाण्यै नमः, ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनायै नमः, ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सलत्वाय नमः ।

जयमाला

दोहा—षोडशकारण गुण करै, हरै चतुरगति वास ।
पाप पुण्य सब नास कै, ज्ञान भानु परकास ॥

चोपाई

दर्श विशुद्धि धरे जो कोई, ताको आवागमन न होई ।
विनय महा धारे जो प्राणी, शिव वनिताकी सखी बखानी ॥ २ ॥

शील सदा दृढ़ जो नर पाले, सो औरन की आपद टाले।
ज्ञान अभ्यास करे मन माहीं, ताके मोह महातम नाहीं ॥ ३ ॥
जो संवेग भाव विस्तारै, स्वर्ग मुक्ति पद आप निहारै।
दान देय मन हर्ष विशेषै, इह भव यश परभव सुख देखै ॥ ४ ॥
जो तप तपै खपै अभिलाषा, चूरे कर्म शिखर गुरु भाषा।
साधुसमाधि सदा मन लावै, तिहुँ जग भोग भोगि शिव जावै ॥५॥
निशि दिन वैयावृत्य करैया, सो निश्चय भवनीर तरैया।
जो अरहन्त भक्ति मन आनै, सो जन विषय कषाय न जानै ॥६॥
जो आचारज भक्ति, करै हैं, सौ निरमल आचार धरै हैं।
बहुश्रुतवन्त भक्ति जो करई, सो नर संपूरण श्रुत धरई ॥ ७ ॥
प्रवचन भक्ति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानन्द दाता।
षट् आवश्य काल जो साधै, सोही रत्नत्रय आराधै ॥८॥
धर्म प्रभाव करे जो ज्ञानी, तिन शिव मारग रीति पिछानी।
वात्सल अंग सदा जो ध्यावै, सो तीर्थंङ्कर पदवी पावै ॥ ९ ॥

दोहा—ये ही षोडश भावना, सहज धरै व्रत जोय।
देव इन्द्र नागेन्द्र पद, 'द्यानत' शिव पद होय ॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अर्घम् निर्वपा०।

सवैया तेईसा

सुन्दर षोडशकारण भावना निर्मल चित्त सुधारक धारै,
कर्म अनेक हने अति दुर्धर जन्म जरा भय मृत्यु निवारै।
दुःख दरिद्र विपत्ति हरै भव सागरको पर पार उतारै।
'ज्ञान' कहे यहि षोडशकारण कर्म निवारण सिद्धि सुधारै ॥

इत्याशीर्वादः।

दशलक्षणधर्म पूजा

उत्तम छिमा मार्दव आर्जव भाव है।
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव है ॥

आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दश सार है।

चहुँगति दुखतैं काढि मुकति करतार है ॥१॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्रावतरावतर। संवौषट्।

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्।

सोरठा—हेमाचल की धार, मुनिचित सम, शीतल सुरभि।

भव आताप निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥ १ ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्यादिदशलक्षणधर्माय जलं नि० ॥१॥

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा।

भव आताप निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥ २ ॥

ओं ह्रीं उत्तम क्षमादिदशलक्षणधर्माय चंदनं नि० ॥ २ ॥

अमल अखंडित सार, तंदुल चन्द्र समान शुभ।

भव आताप निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षतान् नि० ॥ ३ ॥

फूल अनेक प्रकार, महकै ऊरधलोक लों।

भव आताप निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय पुष्पं नि० ॥ ४ ॥

नेवज विविध निहार, उत्तम षटरस संजुगत।

भव आताप निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नैवेद्यम् नि० ॥५॥

बाति कपूर सुधार दीपक जोति सुहावनी।

भव आताप निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय दीपं नि० ॥ ६ ॥

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता ।
भव आताप निवार दशलक्षण पूजौं सदा ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय धूपं नि० ॥ ७ ॥

फलकी जाति अपार, घ्राण नयन मनमोहनो ।
भव आताप निवार दशलक्षण पूजौं सदा ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय फलं नि० ॥ ८ ॥

आठों दरव संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों ।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अर्घम् नि० ॥ ६ ॥

अङ्ग पूजा

सोरठा—पीडैं दुष्ट अनेक, वांधि मार बहु विधि करैं ।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै पीतमा ॥ १ ॥

चौपई मिश्रित गीता छन्द ।

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह भव जस परभव सुखदाई ।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुनको औगुन कहै अयानो ॥
कहि है अयानो वस्तु छीने, वांध मार बहु विधि करैं ।
घरते निकारैं तन विदारैं, वैर जो न तहां धरैं ॥
जे करम पूरव किये खोटे, सहैं क्यों नहिं जीयरा ।
अति क्रोध अगनि बुझाय प्रानी, साम्य जल ले सीयरा ॥१॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मान महाविषरूप, करहिं नीचगति जगत में ।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावैं प्राणी सदा ॥

उत्तम मार्दवगुन मन माना, मान करनको कौन ठिकाना ।
वस्यो निगोदमाहितैं आया, दमरी रूकन भाग विकाया ॥

रूकन विकाया भाग वशतैं, देव इकइन्द्री भया।
उत्तम मुश्रा चांडाल हुश्रा भूप कीड़ों में गया॥
जीतव्य-यौवन-धन गुमान, कहा करे जल बुदबुदा।
करि विनय वहुगुन वड़े जनकी, ज्ञानका पावै उदा।
ओं ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥
कपट न कीजै कोय, चोरन के पुर ना वसे।
सरल सुभावी होय. ताके घर बहु संपदा॥
उत्तम आर्जवरीति बखानी, रञ्चक दगा वहुत दुखदानी।
मनमें होय सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सौं करिये॥
करिये सरल तिहुँ जोग अपने, देख निरमल आरसी।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट प्रीति अंगारसी॥
नहिं लहै लछमी अधिक छलकर, करमबंध विशेषता।
भय त्याग दूध विलाव पीवै, आपदा नहिं देखता॥३॥
ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कठिन वचन मति बोल, पर निन्दा अरु झूठ तज।
सांच जवाहर खोल, सतवादी जगमें सुखी॥
उत्तम सत्यवरत पालीजै, पर विश्वासघात नहिं कीजै।
सांचे झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो॥
पेखो तिहायत पुरुष सांचे को, दरव सब दीजिये।
मुनिराज श्रावक की प्रतिष्ठा, सांच गुन लख लीजिये॥
ऊंचे सिंहासन वैठि वसुनृप, धरम का भूपति भया।
वसु झूठसेती नरक पहुंचा, सुरग में नारद गया॥४॥
ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
धरि हिरदै संतोष, करहु तपस्या देहसौं।
शौच सदा निरदोष, धरम बड़ो संसार में॥
उत्तम शौच सर्व जग जानो, लोभ पापको बाप बखानो।

आसा फास महा दुखदानी, सुख पावै संतोषी प्रानी ॥
प्रानी सदाशुचि शील जप तप, ज्ञान ध्यान प्रभावतैं।
नित गंगजमुन समुद्र न्हाये, अशुचिदोष सुभावतैं ॥
ऊपर अमल मल भर्यौ भीतर, कौन विधि घट शुचि कहैं।
बहु देह मैली सुगुण थैली, शौच गुन साधु लहै ॥५॥
ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्री मन वश करो।
संजमरतन संभाल, विषयचोर बहु फिरत हैं ॥
उत्तम संयम गहु मन मेरे, भवभव के भाजैं अघ तेरे।
सुरग नरकपशुगति में नांही, आलस हरन करन सुख ठांही ॥
ठांही पृथ्वी जल अग्नि मारुति, रूंख त्रस करुना धरो।
सपरसन रसना घ्रान नैना, काम मन सब वश करो॥
जिस विना नहिं जिनराज सीझे, तू रुल्यो जग कीचमें।
इक घरी मत विसरो करो नित, आयु जममुख बीच में ॥६॥
ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तप चाहैं सुर राय, 'करमशिखर को वज्र है।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करे निज शकतिसम॥
उत्तम तप सब मांहि बखाना, करमशिखर को वज्र समाना।
वस्यो अनादि निगोद मंझारा, भूविकलत्रय पशुतन धारा।
धारा मनुष तन महा दुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता।
श्री जैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषयपयोगता ॥
अति महादुरलभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरै।
नर भव अनूपम कनक घरपर, मणिमयी कलसा धरै ॥७॥
ॐ ह्रीं उत्तमतपधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दान चार परकार, चार संघको दीजिये।
धन विजली उनहार, नरभव लाहो लीजिये ॥

उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषधि शास्त्र अभय आहारा।
निहचै रागद्वेष निरवारे, ज्ञाता दोनों दान संभारै।
दोनों संभारै कूप जलसम, दरब घरमें परिनया॥
निज हाथ दीजे साथ लीजे खाया खोया बह गया।
धनि साध शास्त्र अभयदिवैया, त्याग राग विरोध को।
बिन दान श्रावक साधु दोनों, लहै नाहीं बोधको॥७॥
ओं ह्रीं उत्तम त्याग धर्माङ्गाय अर्घ्यं निवपामीति स्वाहा।

परिग्रह चौविस भेद, त्याग करैं मुनिराजजी।
तिसनाभाव उछेद, घटती जान घटाइये॥

उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह चिन्ता दुखही मानो।
फांस तनकसी तनमें सालै, चाह लंगोटी की दुख भालै।
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि मुद्रा धरैं।
धनि नगनपर तन नगन ठाड़े, सुर असुर पायनि परैं॥
घरमांहि तृष्णा जो घटावैं, रुचि नहीं संसारसौं।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर उपकारसौं॥ ८॥
ओं ह्रीं उत्तम आकिञ्चन्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील बाड़िनौ राख, ब्रह्मभाव अन्तर लखो।
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर भव सदा॥

उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ।
सहैं बानवर्षा बहु सूरे, टिकैं न नयन बान लखि कूरे॥
कूरे तियाके अशुचितन में, काम रोगी रति करैं।
बहु मृतक सड़हिं मसानमाहीं, काक ज्यों चोंचें भरैं॥
संसार में विषबेलि नारी, तजि गये जोगीश्वरा।
'द्यानत' धरम दश पैड़ि चढ़िके, शिवमहल में पग धरा॥ ९॥
ओं ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा:—दशलच्छन वन्दौं सदा, मनवांछित फलदाय।
कहौं आरती भारती, हम पर होय सहाय ॥ १ ॥

वेसरी छंद।

उत्तम छिमा जहां मन होई, अन्तर बाहर शत्रु न कोई।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नाना भेद ज्ञान सब भासै ॥ २ ॥
उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्यागि सुगति उपजावे।
उत्तम सत्य वचन मुख बौलै, सो प्रानी संसार न डोलै ॥ ३ ॥
उत्तम शौच लोभ परिहारी, संतोषी गुण रतन भंडारी।
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै ले साता ॥ ४ ॥
उत्तम तप निरवांछित पाले, सो नर करम शत्रु को टाले।
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोग भूमि सुर शिवसुख होई ॥ ५ ॥
उत्तम आकिंचन व्रत धारै, परमसमाधि दशा विस्तारै।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुर सहित मुकतिफल पावै ॥ ६ ॥

दोहा—करे करमकी निरजरा, भवपींजरा विनाशि।
अजर अमरपदको लहै, 'द्यानत' सुखकी राशि ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमा, मार्दव आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्यदशलक्षण धर्माय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयंभू स्तोत्र भाषा।

चौपाई।

राजविषै जुगलनि सुख कियो, राज त्याग भवि शिवपद लियो।
स्वय बोध स्वयम्भू भगवान, वन्दौं आदिनाथ गुणखान ॥ १ ॥
इन्द्र छीरसागर जल लाय, मेरुन्हवाये गाय बजाय।
मदन विनाशक सुख करतार, बन्दौं अजित अजितपदकार ॥२॥

शुक्ल ध्यानकरि करमविनाशि, घाति अघाति सकल दुखराशि।
लह्यो मुकतिपद सुख अधिकार, वन्दौं संभव भवदुख टार ॥३॥
माता पच्छिम रयनमंझार, सुपने सोलह देखे सार।
भूप पूछि फल सुनि हरषाय, वन्दौं अभिनन्दन मनलाय ॥४॥
सर्व कुवादवादी सरदार, जीते स्यादवादधुनिधार।
जैन धरम परकाशक स्वामि, सुमतिदेवपद करहुं प्रणामि ॥५॥
गर्भ अगाऊ धनपति आय, करी नगर शोभा अधिकाय।
बरसे रतन पंचदश मास, नमौं पदमप्रभु सुखकी रास ॥६॥
इन्द फनिन्द नरिन्द त्रिकाल, वानी सुनि सुनि होंहि खुस्याल।
द्वादशसभा ज्ञानदातार, नमो सुपारसनाथ निहार ॥७॥
सुगुन छियालीस हैं तुम मांहि, दोष अठारह कोऊ नाहिं।
मोह महातमनाशक दीप, नमों चन्द्रप्रभु राख समीप ॥८॥
द्वादश विध तप करम विनाश, तेरह भेद चरित परकाश।
निज अनिच्छ भवि इच्छकदान, वन्दौं पहुपदन्त मन आन ॥९॥
भविसुखदाय सुरगतैं आय, दशविध धरम कह्यो जिनराय।
आप समान सबनि सुख देह, वन्दौं शीतल धर्म सनेह ॥१०॥
समता सुधा कोपविष नाश, द्वादशाङ्ग वानी परकाश।
चारसंघ-आनन्द-दातार, नमौं श्रेयांस जिनेश्वर सार ॥११॥
रतनत्रयचिरमुकुटविशाल, सोभै कंठ सुगुन मनिमाल।
मुक्तिनार भरता भगवान, वासुपूज्य वन्दौं धर ध्यान ॥१२॥
परम समाधि-स्वरूप जिनेश, ज्ञानी ध्यानी हित उपदेश।
कर्मनाशि शिवसुख विलसंत, वन्दौं विमलनाथ भगवन्त ॥१३॥
अन्तर बाहिर परिग्रह डारि, परम दिगम्बरव्रतको धारि।
सर्व जीवहित-राह दिखाय, नमों अनन्त वचन मन लाय ॥१४॥
सात तत्त्व पञ्चासति काय, अरथ नवों छ दरव बहुभाय।
लोक अलोक सकल परकास, वन्दौं धर्मनाथ अविनाश ॥१५॥

पंचम चक्रवरति निधिभोग, कामदेव द्वादशम मनोग।
शांतिकरन सोलम जिनराय, शान्तिनाथ बन्दौं हरषाय ॥१६॥
बहुथुति करैं हरष नहिं होय, निन्दे दोष गहैं नहिं कोय।
शीलवान परब्रह्मस्वरूप, वन्दौं कुंथुनाथ शिवभूप ॥१७॥
द्वादशगण पूजैं सुखदाय, थुति वन्दना करे अधिकाय।
जाकी निजथुति कबहुँ न होय, वन्दौं अरजिनवर-पद दोय ॥१८॥
परभव रतनत्रय-अनुराग, इह भव ब्याह समय वैराग।
बालब्रह्मपूरनव्रतधार, बन्दौं मल्लिनाथ जिनसार ॥१९॥
बिन उपदेश स्वयं वैराग थुति लोकांत करैं पगलाग।
नमः सिद्ध कहि सब व्रत लेहि, वन्दौं मुनिसुव्रत व्रत देहिं ॥२०॥
श्रावक विद्यावंत विहार, भगतिभावसों दियो आहार।
बरसी रतनराशि ततकाल, वन्दौं नमिप्रभु दीनदयाल ॥२१॥
सब जीवन की वन्दी छोर, रागद्वेष द्वै बन्धन तोर।
रजमति तजि शिवतिय सों मिले, नेमिनाथ वन्दौं सुख निले ॥२२॥
दैत्य कियो उपसर्ग अपार, ध्यान देखि आयो फनिधार।
गयो कमठ शठ मुख कर श्याम, नमो मेरुसम पारस स्वामि ॥२३॥
भवसागरतैं जीव अपार धरमपोत में धरे निहार।
डूबत काढे दया विचार वर्द्धमान वन्दौं बहुबार ॥२४॥
दोहा—चौवीसों पद कमलजुग, वन्दौं मनवचकाय।
'द्यानत' पढ़ै सुनै सदा, सो प्रभु क्यों न सहाय ॥

॥ इति ॥

रत्नत्रय पूजा

दोहा—चहुंगतिफणिविषहरनमणि, दुख पावक जलधार।
शिवसुख सुधासरोवरी, सम्यक्त्रयी निहार ॥१॥

ॐ ह्रीं सम्यगरत्नत्रय! अत्रावतरावतर, संवौषट्। ॐ ह्रीं

सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सोरठा—क्षीरोदधि उनहार, उज्ज्वल जल अति सोहनो ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥२॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय जन्म रोग विनाशनाय जलं नि० ।

चन्दनकेशरगार, परिमल महा सुगन्धमय ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥३॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० ।

तंदुल अमल चितार, वासमति सुखदायके ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥३॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ।

महकैं फूल अपार, अलि गुंजैं ज्यों थुति करैं ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥४॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि० ।

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगन्धयुक्त ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥५॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० ।

दीप रतनमय सार, जोति प्रकाशै जगत में ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥६॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० ।

धूप सुवास विथार, चन्दन अगर कपूर की ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥७॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि० ।

फल शोभा अधिकार, लौंग छुहारे जायफल ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥८॥
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० ।
आठ दरब निरधार, उत्तमसों उत्तम लियो ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥९॥
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि० ।
सम्यक्दर्शनज्ञान, व्रत शिवमग तीनों मयी ।
पार उतारण जान, 'द्यानत' पूजों व्रत सहित ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय पूर्णार्घ्यं नि० ।

दर्शन पूजा

दोहा—सिद्ध अष्टगुण मय प्रकट, मुक्त जीव सोपान ।
ज्ञानचरित्र जिहं बिन अफल, सम्यग्दर्श प्रधान ॥१॥
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ. ।
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।
सोरठा—नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै, मल छय करै ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥ १ ॥
ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जलं नि०
जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै ।
सम्यक्दशनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥ २ ॥
ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय चंदनं नि० ।
अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अक्षतान् नि० ।

पुहुप सुवास उदार खेद हरै मन शुचि करै ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय पुष्पं नि० ।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय नैवेद्यं नि० ।

दीप ज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अंग पूजौं सदा ॥ ६ ॥

ओं ह्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय दीपं नि० ।

धूप घ्रानसुखकार, रोग विघन जड़ता हरै ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अंग पूजौं सदा ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय धूपं नि० ।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिव फल करै ।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अंग पूजौं सदा ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय फलं नि० ।

जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
सम्यक्दर्शनसार आठ अंग पूजौं सदा ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं नि० ।

जयमाला (दोहा)

आप आप निहचै लखै, तत्त्व प्रीति व्योहार ।
रहित दोष पच्चीस है, सहित अष्टगुन सार ॥ १० ॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द ।

सम्यक्दरसन रतन गहीजै, जिनवच मे संदेह न कीजै ।
इह भव विभव चाह दुखदानी, पर भव भोग चहै मत प्रानी ॥
प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरम गुरु प्रभु परखिये ।
परदोप ढकिये धरम डिगते को, सुथिर कर हरखिये ॥
चउसंघ को वात्सल्य कीजे, धरम की परभावना ।
गुण आठसों गुन आठ लहि कै, इहां फेर न आवना ॥ २ ॥

ओं ह्रीं अष्टांगसहितपन्चविंशतिदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान पूजा ।

दोहा–पंचभेद जाके प्रकट, ज्ञेय प्रकाशन भान ।
मोह–तपन–हर–चंद्रमा, सोई सम्यक्ज्ञान ॥१॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ ठः ठः ।
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट ।

सोरठा–नीर सुगंध अपार, तृषा हरै मल छय करै ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजों सदा ॥ १ ॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल केशर घनसार ताप हरे शीतल करे ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥ २ ॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठभेद पूजौं सदा ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दीपज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
धूप घ्रानसुखकार, रोगविघन जड़ता हरै ।
सम्यक्ज्ञान विचार. आठ भेद पूजौं सदा ॥ ७ ॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
श्रीफलआदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥ ८ ॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।
सम्यक्ज्ञान विचार आठ भेद पूजौं सदा ॥ ९ ॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला। (दोहा)

आप आप जानै नियत, ग्रन्थपठन व्योहार।
संशय विभ्रम मोह विन, अष्टअङ्ग गुनकार ॥१॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द।

सम्यक्ज्ञानरतन मन भाया। आगम तीजा नैन वताया ॥

अच्छर अरथ शुद्ध पहिचानौ । अच्छर अरथ उभय संग जानौ ॥
जानौ सुकाल पठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइये ।
तपरीति गहि वहु मान देकै, विनय गुन चित लाइये ।
ए आठ भेद करम उछेदक ज्ञानदर्पण देखना ।
इस ज्ञानहीसों भरत सीजा, और सब पटपेखना ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चारित्र पूजा

दोहा—विषयरोग औषधि महा, दवकषाय जलधार ।
तीर्थंकर जाकों धरैं, सम्यक्चारितसार ॥ १ ॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ ।
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् ।

सोरठा ।

नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरे मल छय करे ।
सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजों सदा ॥ १ ॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जलं निर्व० ।
जलकेसर घनसार, ताप हरै शीतल करै ।
सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजों सदा ॥ २ ॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय चन्दनं निर्व० ।
अछत अनूप निहार, दारिद नासै सुख भरै ।
सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजों सदा ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अक्षतान् निर्व० ।
पुहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ।

सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय पुष्पं निर्व० ।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै ।

सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय नैवेद्यं निर्व० ।

दीपजोति तमहार, घटपट परकाशै महा ।

सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय दीपं निर्व० ।

धूप घ्राण सुखकार, रोग विघन जडता हरै ।

सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय धूप निर्व० ।

श्रीफलआदि विथार, निश्चय सुरशिवफल करै ।

सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥ ८ ॥

ओं ह्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय, फलं निर्व० ।

जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।

सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अर्घं निर्वपा० ।

जयमाला–दोहा

आप आप थिर नियत नय, तपसंजम व्योहार ।

स्वपर दया दोनों लिये, तेरहविध दुखहार ॥ १० ॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द

सम्यक्चारित रतन संभालो । पांच ताप तजिकै व्रत पालो ॥

पंचसमिति त्रय गुपति गहीजै । नरभव सफल करहु तन छीजै ॥१॥

छीजै सदा तनको जतन यह, एक संयम पालिये।
वहु रुल्यो नरक निगोद मांही, विषय कषायनि टालिये।
शुभ करम जोग सुघाट आया, पार हो दिन जात है।
'द्यानत' धरम की नाव वैठो, शिवपुरी कुशलात है ॥१॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घं निर्व०।

समुच्चय जयमाला।

सम्यकदरशन ज्ञान व्रत, इन बिन मुकति न होय।
अंध पंगु अति आलसी, जुदे जलैं दवलोय ॥ १ ॥

चौपाई

तापै ध्यान सुथिर बन आवै ताकै करमबंध कट जावै।
तासौं शिवतिय प्रीति बढावै, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावै ॥२॥
ताको चहुँगति के दुःख नांही, सो न परै भवसागर मांही।
जनम जरामृत्यु दोष मिटावै, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावै ॥३॥
सोई दशलच्छनको साधै, सो सौलह कारण आराधै।
सो परमातम पद उपजावै, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावै ॥४॥
सोई शक्रचक्रिपद लेई, तीनलोक के सुख विलसेई।
सो रागादिक भाव बहावै, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावै ॥५॥
सोई लोकालोक निहारै, परमानन्द दशा विस्तारै।
आप तिरै औरन तिरवावै, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावै ॥६॥

दोहा—एक स्वरूप प्रकाशजिन, वचन कह्यो नहीं जाय।
तीनभेद व्यौहार सव, 'द्यानत' को सुखदाय ॥७॥

ओं ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ जिनपूजा

नाभिराय मरुदेविके नंदन, आदिनाथ स्वामी महाराज।
सर्वार्थसिद्धितैं आप पधारे, मध्यलोक मांही जिनराज॥
इन्द्रदेव सब मिलकर आये, जन्म महोत्सव करने काज।
आह्वानन सब विधि मिलकरके, अपने कर पूजे प्रभु पांय॥

ओं ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ओं ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ओं ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

अष्टक।

क्षीरोदधिके उज्ज्वल जल ले, श्री जिनवर पद पूजन जाय।
जन्म जरा दुख मेटन कारन, ल्याय चढाऊं प्रभुजीके पांय॥
श्रीआदिनाथके चरण कमलपर, वलि वलिजाऊं मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजौं प्रभु पांय॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं।

मलयागिरि चंदन दाह निकंदन, कञ्चन झारी में भर ल्याय।
श्रीजीके चरण चढ़ावो भविजन, भवआताप तुरत मिटिजाय॥श्री.

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं।

शुभशालि अखंडित सौरभमंडित, प्रासुक जलसों धोकर ल्याय।
श्रीजीके चरण चढ़ावो भविजन अक्षयपदको तुरत उपाय।श्री.

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व०।

कमल केतुकी बेल चमेली, श्री गुलाबके पुष्प मंगाय।
श्रीजीके चरण चढ़ावो भविजन, कामवाण तुरत नसिजाय॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ।

नेवज लीना षट रस भीना, श्रीजिनवर आगे धरवाय ।
थाल भराऊं क्षुधा नसाऊं ल्याऊं प्रभुके मंगल गाय ॥श्री.॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।

जगमग जगमग होत दशोंदिशि, ज्योति रही मंदिरमें छाय ।
श्रीजीके सन्मुख करत आरती, मोहतिमिर नासै दुखदाय ॥श्री.

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि० ।

अगर कपूर सुगन्ध मनोहर तगर कपूर सुद्रव्य मिलाय ।
श्रीजीके सन्मुख खेय धुपायन कर्म जरे चहुंगति मिटिजाय ।श्री.

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप नि० ।

श्रीफल और बदाम सुपारी, केला आदि छुहारा ल्याय ।
महामोक्षफल पावन कारन, ल्याय चढाऊं प्रभुजीके पॉय ॥श्री.

ओं ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० ।

शुचि निरमल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हरषाय ।
दीप धूप फल अर्घ सुलेकर, नाचत ताल मृदङ्ग वजाय ॥श्री.

ओं ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि० ।

पंचकल्याणक । (दोहा)

सर्वारथसिद्धितैं चये, मरुदेवी उर आय ।
दोज असित आषाढ़ की, जजूं तिहारे पाँय ॥

ओं ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीतिं स्वाहा ।

चैतवदी नौमी दिना, जनम्या श्रीभगवान ।
सुरपति उत्सव अति करया, मैं पूजौं धर ध्यान ॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तृणवत् ऋद्धि सब छांडिके, तप धारयो वन जाय।
नौमी चैत्र असेतकी, जजूं तिहारे पाय॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां तपकल्याणक प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि एकादशी, उपज्यो केवलज्ञान।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजौं इह थान॥

ओं ह्रीं फाल्गुण कृष्णैकादश्या ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ चतुर्दशि कृष्णकी, मोक्ष गये भगवान।
भवि जीवोंको बोधिके, पहुंचे शिवपुर थान॥

ओं ह्रीं माघ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्ताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं नि पामीति स्वाहा।

जयमाला।

आदीश्वर महाराज मैं विनती तुमसे करूँ।
चारों गति के मांहिं मैं दुखपायो सो सुनो।
अष्टकर्म मैं हूँ एकलो, यह दुष्ट महादुख देत हो।
कबहूँक इतर निगोद में मोकूं पटकत करत अचेत हो॥
म्हारी दीनतणी सुन वीनती ॥ १ ॥
प्रभु कबहुँक पटक्यो नरक में, जठै जीव महादुख पाय हो।
नित उठि निरदई नारकी, जठै करत परस्पर घात हो॥ म्हारी०
प्रभु नरकतणा दुख अब कहूँ जठै करै परस्पर घात हो।
कोइयक बांध्यो खंभसों, पापी दे मुद्गरकी मार हो॥

कोइयक काटें करोतसों, पापी अंगतणी दोय फाड़ हो ।।म्हा०।।
प्रभु इह विधि दुख भुगत्या घणा, फिर गति पाई तिरयंच हो ।
हिरणा बकरा बाछला पशु दान गरीब अनाथ हो ।।म्हा०
प्रभु मैं ऊँट बलद भैंसा भयो, ज्यांपै लदियो भार अपार हो ।
नहिं चाल्यो जठै गिर पर्‌यो, पापी दे सोटन की मार हो ।।म्हा०
प्रभु ! कोइयक पुण्य संजोगसूं मैं तो पायो स्वर्ग निवास हो ।
देवांगना संग रमि रह्यो, जठै भोगनिको 'परिताप हो ।।म्हा०
प्रभु संग अप्सरा रमि रह्यो, कर कर अति अनुराग हो ।
कबहुंक नंदनवन विषै प्रभु कवहुक वन-गृह मांहि हो ।म्हा०
प्रभु इह विधि काल गमायकैं, फिर माला गई मुरझाय हो ।
देव थिती सब घट गई, फिर उपज्यो सोच ? पार हो ।म्हा०
सोच करंता तन खिर पड्यो, फिर उपज्यो गरभ में जाय हो ।।
प्रभु गर्भतणा दुख अब कहूँ, जठै सकड़ाईकी ठौर हो ।
हलन चलन नहिं करसक्यो जठै सघन कीच घनघोर हो ।।म्हा०
माता खावै चरपरो फिर लागै तन संताप हो ।
प्रभु ज्यों जननी तातो भखै, फिर उपजै तन संताप हो ।।म्हा०
ओंधे मुख झूल्यो रह्यो फेर निकसन कौन उपाय हो ।
कठिन कठिन कर नीसर्‌यो, जैसे निसरै जंती मैं तार हो ।।म्हा०
प्रभु फिर निकसत धरत्यां पड्यो फिर लागी भूख अपार हो ।
रोय रोय विलख्यो घणो दुख वेदनको नहिं पार हो ।।म्हा०
प्रभु दुख मेटन समरथ धनो यातैं लागूं तिहारे पांय हो ।
सेवक अरज करै प्रभू ! मोकू भवोदधि पार उतार हो ।।म्हा०

दोहा:—श्रीजीकी महिमा अगम है, कोई न पावै पार ।
मैं मति अल्प अज्ञान हों, कौन करै विस्तार ।।

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

विनती ऋषभ जिनेशकी, जो पढसी मनलाय।
स्वर्गों में संशय नहीं, निश्चय शिवपुर जाय॥

इत्याशीर्वादः।

श्रीआदिनाथजिन–पूजा

अडिल्ल

परम पूज्य वृषभेष स्वयंभूदेव जू,
पिता नाभि मरुदेवि करैं सुर सेव जू।
कनक-वरण तन तुङ्ग धनुष पन-शत तनों,
कृपा-सिंधु इत आइ तिष्ठ ममदुख हनो॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिन अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठः।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

छंद द्रुतविलंबित तथा सुन्दरी

हिमवनोद्भव-वारि सुधारिकैं, जजत हौं गुन-बोध उचारिकैं।
परम-भाव सुखोदधि दीजिए, जनम मृत्यु जरा छय कीजिए॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं नि.।

मलय-चन्दन दाह-निकंदनं, घसि उभै करमें करि वंदनं।
जजत हौं प्रशमाश्रम दीजिए, तपत ताप त्रिधा छै कीजिए॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

अमल तंदुल खण्ड-विवर्जितं, सित निशेश-हिमामिय-तर्जितं।
जजत हौं तसु पुंज धरायजी, अखय संपति द्यो जिनरायजी॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभजिनेन्द्रायाऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व०।

कमल चम्पक केतकि लीजिए, मदन-भंजन भेट धरीजिए।
परम शील महा सुखदाय हैं, समर-सूल निमूल नशाय हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्राय कामविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०।
सरस मोदन मोदक लीजिए, हरन भूख जिनेश जजीजिए।
सकल आकुल-अन्तक-हेतु हैं, अतुल शांत-सुधारस देतु हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।
निबिड मोह-महातम छाइयो, स्व-पर-भेद न मोहि लखाइयो।
हरन-कारन दीपक तासके, जजत हौं पद केवल भासके॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं।
अगर-चन्दन आदिक लेयकें, परम पावन गंध सुखेयकें।
अगनि-संग जरै मिस धूमके, सकल कर्म उड़े यह घूमके॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्रायाऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व०।
सुरस पक्व मनोहर पावने, विविध लै फल पूज रचावने।
त्रिजगनाथ कृपा अब कीजिए, हमहि मोक्ष महाफल दीजिए॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० स्वाहा।
जल-फलादि समस्त मिलायकैं, जजत हौं पद मंगल गायके।
भगत-वत्सल दीन-दयालजी, करहु मोहि सुखी लखि हालजी॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० स्वाहा।

पञ्चकल्याणक

द्रुतविलम्बित तथा सुन्दरी

असित दोज अषाढ़ सुहावनी, गरभ-मंगलको दिन पावनी।
हरि-सची पितु-मातहिं सेवही, जगत हैं हम श्रीजिनदेव ही॥
ॐ ह्रीं अषाढकृष्णद्वितीयादिने गर्भमङ्गलप्राप्त श्रीवृषभदेवाय अर्घं नि०

असित चैत सुनौमि सुहाइयो, जनम-मंगल ता दिन पाइयो।
हरि महागिरिपै जजियो तबै, हम जजैं पद-पंकजको अबै॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवमीदिने जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीवृषभ० अर्घं नि०
असित नौमि सुचैत धरे सही, तप विशुद्ध सबै समता गही।
निज सुधारससों भर लाइयो, हम जजैं पद अर्घ चढ़ाइयो॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवमीदिने दीक्षामङ्गलप्राप्ताय श्रीवृषभ० अर्घं नि०
असित फागुन ग्यारसि सोहनों, परम केवलज्ञान जग्यो भनो।
हरि-समूह जजैं तहँ आइकैं, हम जजैं इत मंगल गाइकैं॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां ज्ञानमङ्गलप्राप्ताय श्रीवृषभ० अर्घं०
असित चौदसि माघ विराजई, परम मोक्ष सुमंगल साजई।
हरि-समूह जजे कैलाशजी, हम जजैं अति धार हुलासजी॥
ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्रीवृषभनाथाय अर्घं०

जयमाला—घत्तानन्द

जय जय जिन-चंदा आदि-जिनंदा, हनि भव-फंदा-कंदा जू।
वासव-शत-वंदा धरि आनंदा, ज्ञान अमंदा नंदा जू॥

छन्द मोतियदाम

त्रिलोक-हितंकर पूरन पर्म, प्रजापति विष्णु चिदातम धर्म।
जतीसुर ब्रह्म-विदांवर बुद्ध, वृपंक अशंक क्रियांबुधि शुद्ध॥
जबै गर्भागम-मंगल जान, तबै हरि हर्ष हिये अति आन।
पिता-जननीपद सेव करेय, अनेक प्रकार उमंग भरेय॥
जये जब ही तबही हरि आय, गिरींद्रविपै किय न्हौन सुजाय।
नियोग समस्त किये तित सार, सुलाय प्रभू पुनि राज-अगार॥
पिता-कर सोंपि कियो तित नाट, अमंद अनंद समेत विराट।
सुथान पयान कियो फिर इंद, इहां सुर-सेव करैं जिन-चंद॥

किये चिरकाल सुखाश्रित राज, प्रजा सब आनदको तिन साज।
सुलिप्त सुभोगनि मे लखि जोग, कियो हरिने यह उत्तम योग ॥
निलंजन नाच रच्यो तुम पास, नवों रस-पूरित भाव विलास।
बजै मिरदग द्रम द्रम जोर, चलै पग झारि झनांझन झोर ॥
घनाघन घंट करै धुनि मिष्ट, बजै मुहचंग सुरान्वित पुष्ट।
खडी छिन पास छिनहि आकाश, लघू छिन दीरघ आदि विलास॥
ततच्छन ताहि विलै अवलोय, भये भवतैं भय-भीत वहोय।
सुभावत भावन वारह भाय, तहाँ दिव-ब्रह्म-ऋषीश्वर आय॥
प्रवोध प्रभू सुगये निज धाम, तवै हरि आय रची शिवकाम ;
कियो कचलोंच पिराग-अरन्य, चतुर्थम ज्ञान लह्यो जग-धन्य ॥
धरो तव योग छ मास प्रमान, दियो शिरियंस तिन्हैं इख दान।
भयो जव केवलज्ञान जिनेद्र, समौसृत-ठाठ रच्यो सु धनेद्र॥
तहाँ वृषतत्त्व प्रकाशि अशेष, कियो फिर निर्भय-थान प्रवेश।
अनंत गुनातम श्रीसुख-राश, तुम्हैं नित भव्य नमैं शिव-आश॥

घत्तानन्द

यह अरज हमारी, सुनि त्रिपुरारी, जनम जरा मृति दूर करो।
शिव-संपति दीजे, ढील न कीजे, निज लख लीजे कृपा धरो ॥

ॐ ह्रीं वृषभदेवजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द आर्या

जो ऋषभेश्वर पूजे, मन-वच तन भाव शुद्ध कर प्रानी।
सो पावै निश्चैसों, भुक्ति औ मुक्ति सार सुख थानी ॥

इत्याशीर्वाद:, पुष्पाजलिं क्षिपामि।

चन्द्रप्रभु भगवान की पूजा

चारुचरन आचरन, चरन चितहरनचिहनचर ।
चंदचंदतनचरित, चंदथल चहत चतुर नर ॥
चतुक चंड चकचूरि, चारि चिदचक्र गुनाकर ।
चंचल चलितसुरेश, चूलनुत चक्र धनुरहर ॥
चरअचरहितू तारनतरन, सुनत चहकि चिरनंद शुचि ।
जिनचंदचरन चरच्यो चहत, चितचकोर नचि रच्चि रुचि ॥१॥

दोहा—धनुष डेढसौ तुङ्ग तन, महासेन नृपनंद ।
मातु लछमनाउर जये, थापों चंदजिनन्द ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवत. अवतर संवौपट्
ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठ ।
ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट ।

गंगाहृदनिरमलनीर, हाटकभृंगभरा ।
तुम चरन जजों वरवीर, मेटो जनमजरा ॥
श्रीचंदनाथद्युति चंद, चरनन चंद लगै ।
मनवचतन जजत अमंद—आतमजोति जगै ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं ।

श्रीखंड कपूर सुचंग, केशर रंग भरी ।
घसि प्रासुक जलके संग, भवआताप हरी ॥श्रीचंद्र०॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं ।

तंदुल सित सोमसमान, सम लय अनियारे ।
दिय पुंज मनोहर आन, तुम पदतर प्यारे ॥श्रीचंद्र०॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।

सुरद्रुमके सुमन सुरंग, गंधित अलिआवै ।

तासों पद पूजत चंग, कामविथा जावै ॥श्रीचंद्र०॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसानाय पुष्पं० ।

नेवज नानापरकार, इन्द्रियबलकारी ।

सो लै पद पूजों सार आकुलताहारी ॥श्रीचंद्र०

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं० ।

तमभंजन दीप संवार, तुमढिग धारतु हों ।

मम तिमिरमोह निरवार, यह गुन धारतु हों ॥श्रीचंद्र०॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं० ।

दशगंधहुतासनमांहि, हे प्रभु खेवतु हों ।

मम करम दुष्ट जरि जांहि, यातें सेवतु हों ॥श्रीचंद्र०॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं० ।

अति उत्तमफल सु मंगाय, तुम गुनगावतु हों ।

पूजौं तन मन हरषाय, विघन नशावतु हों ॥श्रीचंद्र०॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं० ।

सजि आठों दरव पुनीत, आठों अंग नमों ।

पूजों अष्टमजिन मीत, अष्टम अवनि नमों ॥श्रीचंद्र०॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घम्० ।

पञ्चकल्याणक

कलिपंचमचैत सुहात अली, गरभागममंगल मोद भली ।

हरि हर्षित पूजित मातु पिता, हम ध्यावत पावत शर्मसिता ॥१॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्णपञ्चम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं०

कलि पौषईकादशि जन्म लियो, तब लोकविषै सुखथोक भयो।
सुर ईशजजैं गिरशीश तबै। हम पूजत हैं नुतशीश अबै ॥२॥
ओंह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं
तप दुद्धर श्रीधर आप धरा, कलिपौष इकादशि पर्व वरा।
निज ध्यानविषै लवलीन भये, धनि सो दिन पूजत विघ्न गये ॥३॥
ओं ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां निःक्रमणमहोत्सवमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-
जिनेन्द्राय अर्घम् ॥३॥
वर केवल भानु उद्योत कियो, तिहुं लोकतणों भ्रम मेट दियो।
कलि फाल्गुनसप्तमि इन्द्रजजे, हम पूजहिं सर्व कलंक भजे ॥४॥
ओं ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-
जिनेन्द्राय अर्घम् ॥४॥
सित फाल्गुन सप्तमि मुक्ति गये, गुणवंत अनंत अबाध भये।
हरि आय जजे तित मोदधरे, हम पूजत ही सब पाप हरे ॥५॥
ओं ह्रीं फाल्गुन शुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-
जिनेन्द्राय अर्घम् ॥५॥

जयमाला

दोहा—हे मृगांक अंकित चरण, तुम गुण अगम अपार।
गणधरसे नहिं पार लहिं, तौ को वरनत सार ॥ १ ॥
पै तुम भगति हिये मम, प्रेरे अति उमगाय।
तातैं गाऊं सुगुण तुम, तुमही होऊ सहाय ॥ २ ॥
जय चन्द्र जिनेन्द्र दयानिधान, भवकानन हानन दवप्रमान।
जय गरभ जनम मंगल दिनन्द, भव जीवविकाशन शर्म कन्द ॥३॥
दशलक्षपूर्व की आयु पाय, मनवांछित सुख भोगे जिनाय।
लखि कारण है जगतैं उदास, चिंत्यो अनुप्रेक्षा सुखनिवास ॥४॥

तित लोकांतिक बोध्यो नियोग, हरि शिविका सजि धरियो अभोग।
तापै तुम चढि जिनचन्द्राय, ताछिनकी शोभा को कहाय ।।५।।
जिन अंग सेत सित चमर ढार, सित छत्र शीस गलगुलकहार ।
सित रतनजडित भूषण विचित्र, सित चन्द्रचरणचरचैं पवित्र ।।६।।
सित तनद्युति नाकाधीश आप, सित शिविका कांधे धरि सुचाप ।
सित सुजस सुरेश नरेश सर्व, सित चित में चिन्तत जात पर्व ।।७।।
सित चन्दनगरतैं निकसि नाथ, सित वन मे पहुंचे सकल साथ ।
सितशिला शिरोमणि स्वच्छछांह, सित तप तिन धारयो तुम जिनाह
सित पयको पारण परमसार, सित चन्द्रदत्त दीनों उदार ।
सित कर मे सो पयधार देत, मानों बांधत भवसिन्धु सेत ।।६।।
मानों सुपुण्यधारा प्रतच्छ, तित अचरज पन सुर किय ततच्छ ।
फिर जाय गहन सित तपकरंत, सित केवलज्योति जग्यो अनंत ।।१०।।
लहि समवसरणरचना महान, जाके देखत सब पापहान ।
जहँ तरु अशोक शोभै उतंग, सब शोकतनो चूरै प्रसंग ।।११।।
सुर सुमनवृष्टि नभतें सुहात । मनु मन्मथ तज हथियार जात ।। बानी
जिन मुखसों खिरत सार । मनु तत्त्वप्रकाशन मुकुरधार ।। १२ ।।
जहँ चौसठ चमर अमर ढुरंत । मनु सुजस मेघझरि लगिय तंत ।
सिंहासन है जहँ कमलजुक्त । मनु शिवसरवर को कमलशुक्त ।।१३।।
दुंदुभि जित बाजत मधुर सार । मनु करम जीत को है नगार ।।
सिर छत्र फिरै त्रय श्वेतवर्ण । मनु रतन तीन त्रयताप हर्ण ।।१४।।
तन प्रभातनों मंडल सुहात । भवि देखत निजभव सातसात ।। मनु
दर्पणद्युति यह जगमगाय । भविजन भव मुख देखत सुआय ।।१५।।
इत्यादि विभूति अनेक जान । बाहिज दीसत महिमा महान ।।
ताको वरणत नहिं लहत पार । तौ अन्तरंग को कहै सार ।।१६।।
अनअंत गुणनिजुत करि विहार । धरमोपदेश दे भव्य तार ।।
फिर जोगनिरोधि अघाति हान । सम्मेदथकी लिय मुकतिथान ।।१७।।

'वृन्दावन' वन्दत शीश नाय। तुम जानत हो मम उर जु भाय॥
तातैं का कहौं सु वार वार। मनवांछित कारज सार सार॥१८॥

घत्ता—जय चंदजिनंदा आनंदकंदा, भवभय भंजन राजै हैं।
रागादिकद्वंदा हरि सब फंदा, मुकुतिमांहि थिति साजैं हैं॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दरव मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचन्द जजैं॥
ताकै भव भवके अघ भाजै, मुक्तसार सुख ताहि सजैं॥२०॥
जमके त्रास मिटैं सब ताके, सकल अमंगल दूर भजैं।
'वृन्दावन' ऐसो लखि पूजत, जातैं शिवपुरि राज रजैं॥२१॥

इत्याशीर्वादः

श्री शीतलनाथ जिन पूजा

है नगर भद्दिल भूप दृढ़रथ सुष्टु नंदा ता त्रिया,
तजि अच्युत-दिवि अभिराम शीतलनाथ सुत ताके प्रिया।
इच्वाकुवंशी अंक श्रीतरु हेम-वरण शरीर है,
धनु नवे उन्नत पूर्व लख इक आयु सुभग परी रहे॥

सोरठा—सो शीतल सुख-कंद, तजि परिग्रह शिव-लोक गे।
छूट गयो जग-धंद, कारयत तौ आह्वान अब॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्रावतरावतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

नित तृषा-पीड़ा करत अधिकी दाव अबके पाइयो,
शुभ कुम्भ कंचन-जड़ित गंगा-नीर भरि ले आइयो।
तुम नाथ शीतल करो शीतल मोहि भवकी तापसों,

मैं जजौं युग पद जोरि करि मो काज सरसी आपसों ॥
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं०
जाकी महकसों नीम आदिक होत चन्दन जानिये,
सो सूक्ष्म घिसके मिला केसर भरि कटोरा आनिये । तुम०
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं०
मैं जीव संसारी भयो अरु मर्यो ताको पार ना,
प्रभु पास अक्षत ल्याय धारे अखय-पदके कारना । तुम०
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि०
इन मदन मोरी सकति थोरी रह्यो सब जग छायके,
ता नाश कारन सुमन ल्यायो महाशुद्ध चुनायके । तुम०
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि०
क्षुध-रोग मेरे पिंड लागो देत मांगे ना धरी.
ताके नसावन काज स्वामी ले चरू आगे धरी । तुम०
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०
अज्ञान तिमिर महान अन्धकार करि राखो सबै,
निज पर सुभेद पिछान कारण दीप ल्यायों हूं अबै । तुम०
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०
जे अष्ट कर्म महान अतिबल घेरि मो चेरा कियो,
तिन केर नाश विचारि के ले धूप प्रभु ढिंग खेपियो । तुम०
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०
शुभ मोक्ष मिलन अभिलाप मेरे रहत कबकी नाथजू,
फल मिष्ट नाना भांति सुथरे ल्याइयौ निज हाथ जू । तुम०
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

जल गंध अक्षत फल चरु दीपक सुधूप कही महा,
फल ल्याय सुन्दर अरघ कीन्हों दोष सो वर्जित कहा। तुम०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि०

पंचचल्याणक

चैत वदी दिन आठ, गर्भावतार लेत भये स्वामी।
सुर नर असुरन जानी, जजहूं शीतल प्रभू नामी॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथ० अर्घं०

माघ वदी द्वादशि को, जन्मे भगवान् सकल सुखकारी।
मति श्रुति अवधि विराजे, पूजौं जिन-चरण हितकारी॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथ०अर्घं०

द्वादशि माघ वदीमें, परिग्रह तजि वन बसे जाई।
पूजत तहां सुरासुर, हम यहां पूजत गुणगाई॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तप.कल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथ०अर्घं०

चौदशि पूस वदीमें, जग-गुरु केवल पाय भये ज्ञानी।
सो मूरति मनमानी, मैं पूजौं जिन-चरण सुखखानी॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथ०अर्घं०

आश्विन सुदी अष्टमी दिन, मुक्ति पधारे समेदगिरिसेती।
पूजा करत तिहारी, नसत उपाधि जगतकी जेती॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथ०अर्घं०

जयमाल

जय शीतल जिनवर, परम धरमधर, छविके मन्दिर शिव-भरता।
जय पुत्र सुनन्दा, के गुण वृन्दा, सुखके कंदा, दुख-हरता॥
जय नासादृष्टी, हो परमेष्टी, तुम पदनेष्टी अलख भये।

जय तपो चरनमा, रहत चरनमा, सुआचरणमा, कलुष गये ॥

स्रग्विणीछंद

जय सुनन्दा के नन्दा तिहारी कथा, भाषि को पार पावे कहावे यथा। नाथ तेरे कभी होत भव-रोग ना इष्ट-वियोग अनिष्ट-संयोग ना ॥ अग्निके कुण्डमें वल्लभा रामकी, नाम तेरे बची मो सती कामकी ॥ नाथ० ॥ द्रोपदी चीर वाढो तिहारी सही, देव जानी सवोंमे सुलजा रही ॥नाथ०॥ कुष्ट राखो न श्रीपालको जो महा, अब्धिसे काढ़ लीनों सितावी तहां ॥ नाथ० ॥ अंजना कोटि फांसी गिरो जो हतो, औ सहाई तहां तो विना को हतो ॥नाथ०॥ शैल फूटो गिरो अंजनीपूतके, चोट जाके लगी ना तिहारे तके ॥नाथ०॥ कूदियो श घ्र ही नाम तो गायके, कृष्ण काली नथो कुंडमें जायके ॥नाथ०॥ पांडवा जे घिरे थे लखागारमे, राह दीन्हीं तिन्हें तू महाग्यार मे ॥नाथ०॥ सेठको शूलिकापै धरो देखके, कीन्ह सिंहासन आपनो लेखके ॥नाथ०॥ जो गनाये इन्हें आदि देके सबै, पाद परसादते भे सुखारी सबै ॥ नाथ०॥ वार मेरी प्रभू देर कीन्हीं कहा, कीजिये दृष्टि दयाकी मोपे अहां ॥ नाथ० ॥ धन्य तू धन्य तू धन्य तू मैनहा, जो महा पंचमो ज्ञान नीके लहा ॥नाथ०॥ कोटि तीरथ हैं तेरे पदोंके तले, रोज ध्यावे मुनि सो बतावें भले ॥नाथ०॥ जानिके यों भली भांति ध्याऊं तुम्हे, भक्ति पाऊं यही देव दीजे मुझे ॥ नाथ० ॥

गाथा—आपद सब दीजे भार झोंकि यह पढ़त सुनत जयमाल,
हे पुनीत ! करण अरु जिह्वा वरते आनंद जाल ।
पहुँचे जहँ कबहूँ पहुँच नहीं नहिं पाई सो पावे हाल ।
नहीं भयो कभी सो होय सवेरे भाषत मनरंगलाल ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा—भो शीतल भगवान, तो पद पक्षी जगत में।
हैं जेते परवान, पक्ष रहे तिन पर बनी ॥

इत्याशीर्वादः

श्री वासुपूज्य जिन पूजा

छन्द रूप कवित्त।

श्रीमत वासुपूज्य जिनवर पद, पूजन हेत हिये उमगाय।
थापों मनवचतन शुचि करके, जिनकी पाटल देव्या माय।
महिष चिह्न पद लसै मनोहर, लाल वरन तन समतादाय।
सो करुनानिधि कृपा दृष्टि करि, तिष्ठहु सुपरितिष्ठ यहँ आय।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

छन्द जोगी रासा। आंचली वद्ध 'जिनपद पूजों लवलाई'

गंगा जल भरि कनक कुम्भ में, प्रासुक गन्ध मिलाई।
करम कलंक विनाशन कारन, धार देत हरषाई ॥ जिन० ॥
वासुपूज्य वसुपूजतनुजपद, वासव सेवत आई।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ॥जिन०॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ॥१॥
कृष्णागरु मलयागिरि चंदन, केशर संग घसाई।
भव आताप विनाशन कारन, पूजों पद चितलाई ॥वासु०॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनम् ॥२॥

देवजीर सुखदास शुद्ध वर, सुवरन थार भराई ।
पुंज धरत तुम चरनन आगें, तुरित अखयपद पाई ॥वासु०॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ॥३॥
पारिजात संतान कल्पतरु,-जनित सुमन वहु लाई ।
मीन केतु मद भंजन कारन, तुम पद पद्म चढ़ाई ॥वासु०॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं० ॥४॥
नव्य गव्य आदिक रसपूरित, नेवज तुरत उपाई ।
क्षुधा रोग निरवारन कारन, तुम्हें जजौं शिरनाई ॥वासु०॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ॥५॥
दीपक जोत उदोत होत वर, दशदिश में छवि छाई ।
तिमिर मोहनाशक तुमको लखि, जजौं चरन हरषाई ॥वासु०॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं० ॥६॥
दशविध गन्ध मनोहर लेकर, वातहोत्र में ढाई ।
अष्ट करम ये दुष्ट जरतु हैं, धूप सु धूम उडाई ॥वासु०॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकरमदहनाय धूपं निर्वपा० ॥७॥
सुरस सुपक्व सुपावन फल लै, कंचन थार भराई ।
मोक्ष महाफलदायक लखि प्रभु, भेंट धरो गुनगाई ॥वासु०॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपा० ॥८॥
जल फल दरव मिलाय गाय गुन, आठों अङ्ग नमाई ।
शिवपदराज हेतु हे श्रीपति ! निकट धरों यह लाई ॥वासु०॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व० ॥९॥

पञ्चकल्याणक

कलिछट्ठि असाढ़ सुहायौ, गरभागम मंगल पायौ।
दशमें दिवितें इत आये, शतइन्द्र जजे सिर नाये ॥१॥

ॐ ह्रीं अषाढ़कृष्णषष्ठयां गर्भमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजि० अर्घ्यं

कलि चौदाश फागुन जानौं, जनमे जगदीश महानौं।
हरि मेरु जजे तब जाई, हम पूजत हैं चितलाई ॥२॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीवासुपू० अर्घ्यं।

तिथि चौदस फागुन श्यामा, धरियो तप श्रीअभिरामा।
नृप सुन्दरके पय पायो, हम पूजत अति सुख थायो ॥३॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीवासुपू० अर्घ्यं।

वदि भादव दोइज सौहै, लहि केवल आतम जो है।
अन अन्त गुनाकर स्वामी, नित वन्दौं त्रिभुवन नामी ॥४॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णद्वितीयायां केवलज्ञानमंडिताय श्रीवासु० अर्घ्यं।

सित भादव चौदशि लीनौं, निरवान सुथान प्रवीनौं।
पुर चंपा थानक सेती, हम पूजत निज हित हेती ॥५॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा—चम्पापुर में पंचवर, कल्याणक तुम पाय।
सत्तर धनु तन शोभनो, जय जय जय जिनराय॥

महा सुख सागर आगर ज्ञान, अनन्त सुखामृत मुक्त महान।
महाबल मण्डित खण्डित काम, रमा शिव संग सदा विसराम ॥२॥
सुरिन्द फनिन्द खगिन्द नरिन्द, मुनिन्द जजैं तित पादरविन्द।
प्रभु तुम अन्तर भाव विराग, सुबालहितें व्रतशील सों राग ॥३॥

कियो नहिं राज उदास सरूप, सुभावन भावत आतम रूप।
अनित्य शरीर प्रपंच समस्त, चिदातम नित्य सुखाश्रित वस्त ॥४॥
अशर्न नहीं कोऊ शर्न सहाय, जहां जिय भोगत कर्म विपाय।
निजातम कै परमेसुर शर्न, नहीं इनके बिन आपदहर्न ॥५॥
जगत्त जथा जल बुदबुद येव, सदा जिय एक लहै फलभेव।
अनेक प्रकार धरी यह देह, भ्रमैं भव कानन आनन नेह ॥६॥
अपावन सात कुधात भरीय, चिदातम शुद्ध सुभाव धरीय।
धरैं इनसों जब नेह तबेव, सुआवत कर्म तबै वसुभेव ॥७॥
जबै तन भोग जगत्त उदास, धरै तब संवर निर्जर आस।
करै जब कर्म कलंक विनाश, लहै तब मोक्ष महासुख राश ॥८॥
तथा यह लोक नराकृत नित्त, विलोकिय ते षट द्रव्य विचित्त।
सुआतम जानन बोध विहीन, धरै किन तत्त्व प्रतीत प्रवीन ॥९॥
जिनागम ज्ञानरु संयम भाव, सबै जिन ज्ञान विना विरसाव।
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल, सुभाव सबै जिहतें शिव हाल ॥१०॥
लयो सब जोग सुपुन्य वशाय, कहो किम दीजिए ताहि गॅवाय।
विचारत यों लौकान्तिक आय, नमे पदपङ्कज पुष्प चढाय ॥११॥
कह्यो प्रभु धन्य कियो सुविचार, प्रबोधि सु येम कियो जु विहार।
तबै सौधर्म तनों हरि आय, रची शिविका चढि आप जिनाय॥
धरै तप पाय सुकेवल बोध, दियो उपदेश सुभव्य संबोध।
लियो फिर मोक्ष महा सुख राश, नमें नित भक्त सोई सुख आश॥

घत्तानंद—नित वासव वन्दत, पाप निकंदत, वासुपूज्य व्रत ब्रह्मपती।
भवसंकल खंडित, आनंद मंडित, जय जय जय जयवंत जती॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

सोरठा—वासुपूज पद सार, जजैं दरव विधि भावसों।
सो पावै सुखसार, भुक्ति मुक्ति को जो परम ॥१५॥

इत्याशीर्वाद.

श्री अनन्तनाथ जिन पूजा

कवित्तछन्द (मात्रा ३१)

पुष्पोत्तर तजि नगर अजुध्या, जनम लियो सूर्या उर आय।
सिंहसेन नृपके नन्दन, आनन्द अशेष भरे जगराय ॥
गुन अनंत भगवंत धरे, भवद्वंद हरे तुम हे जिनराय।
थापतु हौं त्रयवार उचरिकैं, कृपासिंधु तिष्ठहु इत आय ॥१॥

ॐ ह्रीं अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

[अष्टक] छंद गीता तथा हरिगीता (मात्रा २८)

शुचि नीर निरमल गंगको लै, कनकभृंग भराइया।
मलकरम धोवन हेत मन वच काय, धार ढराइया ॥
जगपूज परम पुनीत मीत, अनंत संत सुहावनों।
शिवकन्तवन्त महन्त ध्यावौं, भ्रंततन्त नशावनों ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

हरिचंद कदलीनंद कुंकुम, दंदताप निकंद है।
सब पापरुज संताप भंजन, आपको लखि चंद है ॥ज०॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्व०

कनशालदुति उजियाल हीर, हिमालगुलकनितैं घनी।
वसु पुंज तुम पदतर धरत, पद लहत स्वच्छ सुहावनी ॥ज०॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०

पुष्कर अमरतरु जनित वर, अथवा अवर कर लाइया।
तुम चरण पुष्करतर धरत, सब समरशूल नशाइया ॥ज०॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपा०

पकवान नैना घ्राण रसना, को प्रमोद सु दाय है।
सो ल्याय चरण चढ़ाय रोग, क्षुधाय नाश कराय है ॥ज०॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०

तममोहभानन जानि आनंद, आनि शरण गही अबै।
वर दीप धारौं वार तुमढिग, सुपरज्ञान जु द्यो सबै ॥ज०॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व०

यह गंध चूरि दशांग सुन्दर, धूम्रध्वज में खेय हौं।
वसुकर्म भर्म जराय तुम ढिग, निजसुधातम वेय हौं ॥ज०॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति०

रसथक पक्क सुभक्क चक्क, सुहावनें मृदुपावनें।
फलसारवृन्द अमन्द ऐसो, ल्याय पूज रचावनें ॥ज०॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति०

शुचिनीर चंदन शालिचंदन, सुमन चरु दीवाधरौं।
अरु धूप जुत फल अर्घ करि, करजोरजुग विनती करौं ॥ज०॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपा०

पञ्चकल्याणक अर्घ

छंद सुन्दरी तथा द्रुतविलंबित

असित कातिक एकम भावनौं, गरभको दिन सो गिन पावनौं।
किय सची तित चर्चन चावसौं, हम जजैं इत आनंद भावसौं ॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदि गर्भमंगलमंडितायश्रीअनंतनाथजि० अर्घं

जनम जेठवदी तिथि द्वादशी, सकल मंगल लोकविषैं लशी।
हरि जजे गिरिराज समाजतैं, हम जजैं इत आतमकाजतैं ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीअनंतनाथजि० अर्घं

भवशरीर विनश्वर भाइयो, असित जेठदुवादशि गाइयो।
सकल इन्द्र जजे तित आइकैं, हम जजैं इत मंगल गाइकैं ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां नि:क्रमणमहोत्सवमंडिताय श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपा० ।

असित चैत अमावसको सही, परम केवलज्ञान जग्यो कही।
लहि समोसृत धर्म धुरंधरो, हम समचेत विघ्न सबै हरो ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां केवलज्ञानप्राप्तये श्रीअनंतनाथजि० अर्घं

असित चैततुरी तिथि गाइयो, अघतघाति हने शिव पाइयो।
गिरि समेद जजे हरि आयकैं, हम जजैं पद प्रीति लगाइकैं ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां मोक्षमंगलप्राप्तये श्रीअनंतनाथजि० अर्घं नि०

जयमाला।

तुम गुन वरनन येम जिम, खंविहाय करमान।
तथा मेदिनी पदनि करि, कीनों चहत प्रमान ॥ १ ॥
जय अनन्त रवि भव्यमन, जलजवृन्द विहसाय।
सुमति कोकतिय थोक सुख, वृद्ध कियो जिनराय ॥ २ ॥

जै अनन्त गुनवन्त नमस्ते, शुद्धध्येय नितसन्त नमस्ते।
लोकालोकविलोक नमस्ते, चिन्मूरत गुनथोक नमस्ते ॥ ३ ॥
रत्नत्रयधर धीर नमस्ते, करमशत्रुकरिकीर नमस्ते।
चार अनन्त महन्त नमस्ते, जै जै शिवतियकन्त नमस्ते ॥ ४ ॥
पंचाचारविचार नमस्ते, पंचकरणमदहार नमस्ते।
पंच-पराव्रत-चूर नमस्ते, पंचमगतिसुखपूर नमस्ते ॥ ५ ॥
पंचलब्धिधरनेश नमस्ते, पंचभावसिद्धेश नमस्ते।
छहों दरबगुन जान नमस्ते, छहों काल पहिचान नमस्ते ॥ ६ ॥

छहों कायक्लेश नमस्ते, छह सम्यक् उपदेश नमस्ते ।
सप्तविंशनववह्नि नमस्ते, जय केवलअपरह्नि नमस्ते ॥ ७ ॥
सप्त तत्त्वगुन भनन नमस्ते, सप्त शुभ्रगत हनन नमस्ते ।
सप्त भङ्ग के ईश नमस्ते, सातों नयकथनीश नमस्ते ॥ ८ ॥
अष्टकरममलदल्ल नमस्ते, अष्टजोगनिरशल्ल नमस्ते ।
अष्टम धराधिराज नमस्ते, अष्ट-गुननि सिरताज नमस्ते ॥ ६ ॥
जै नवकेवल-प्राप्त नमस्ते, नव पदार्थथिति आप्त नमस्ते ।
दशों धरम धरतार नमस्ते, दशौं बन्धपरिहार नमस्ते ॥ १० ॥
विघ्न-महीधर बिज्जु नमस्ते, जै ऊरधगति-रिज्जु नमस्ते ।
तनकनकं दुति पूर नमस्ते, इक्ष्वाकुजनसूर नमस्ते ॥ ११ ॥
धनु पचासतन उच्च नमस्ते, कृपासिन्धु गुन शुच्च नमस्ते ।
सेही-अङ्क निशङ्क नमस्ते, चितचकोर मृगअङ्क नमस्ते ॥ १२ ॥
रागदोषमदटार नमस्ते, निज विचार दुखहार नमस्ते ।
सुर-सुरेश-गन-वंद नमस्ते, 'वृन्द' करो सुखकंद नमस्ते ॥ १३ ॥

घत्तानन्द छन्द ।

जय जय जिनदेवं, सुरकृतसेवं, नितकृतचित हुल्लासधरं ।
आपद उद्धारं, समतागारं, वीतरागविज्ञान भरं ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्द—मदावलिप्तकपोल तथा रोड़क छन्द (मात्रा २४)

जो जन मनवचकायलाय, जिन जजै नेह धर ।
वा अनुमोदन करै, करावै पढै पाठ वर ॥
ताके नित नव होय, सुमंगल आनन्ददाई ।
अनुक्रमतैं निरवान, लहैं सामग्री पाई ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः । परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत ।

श्री शान्तिनाथ जिन पूजा

(कवि वृन्दावन कृत)

छन्द-या भवकानन में चतुरानन, पापपनानन घेरि हमेरी।
आतमजान न मान न ठान न, वान न हो न दई सठ मेरी॥
तामद भानन आपही हो, यह छान न आन न आननटेरी।
आनगही शरनागत को, अब श्रीपतजी पत राखहु मेरी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं शान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ: ठः।
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

छन्द-हिमगिरिगतगंगा धार अभंगा, प्रासुक सङ्गा, भरिभृङ्गा।
जरमरनमृतंगा, नाशिअघंगा, पूजि पदङ्गा मृदुहिंगा॥
श्रीशांतिजिनेशं, नुतचक्रेशं वृषचक्रेशं चक्रेशं।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं, दयामृतेशं, मक्रेशं ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं नि०।

वर बावन चंदन, कदली नंदन, घनआनन्दन सहित घसों।
भवतापनिकंदन ऐरा नंदन, वंदि अमंदन चरन बसों ॥श्री०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं नि०।

हिमकरकरि लज्जत, मलयसुसज्जत, अच्छत जज्जत, भरि थारी।
दुखदारिद गज्जत, सतपदसज्जत, भवभयभज्जत, अति भारी।श्री

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।

मंदार सरोजं कदली जोजं, पुंज भरोजं, मलयभरं।
भरि कंचन थारी, तुमढिग धारी, मदनविदारी, धीरधरं ॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०।

पकवान नवीने, पावन कीने, षटरस-भीने, सुखदाई ।
मनमोदनहारे, क्षुधा-विदारे, आगैं धारे, गुन गाई ॥श्री०॥
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।
तुम ज्ञान प्रकाशे, भ्रमतम नाशे, ज्ञेय विकाशे सुखरासे ।
दीपक उजियारा, यातैं धारा, मोह निवारा, निज भासे ॥श्री०
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०
चन्दन करपूरं करि वर चूरं, पावक भूरं माहि जुरं ।
तसु धूम उड़ावै, नाचत आवै, अलि गुंजावै, मधुर सुरं॥श्री०
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ।
बादाम खजूरं, दाडिम पूरं, निंबुक भूरं, लै आयो ।
तासों पद जजों, शिव फल सज्जों, निजरसरज्जों उमगायो॥श्री
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।
वसु द्रव्य संवारी तुम ढिंग धारी, आनन्दकारी दृगप्यारी ॥
तुम हो भवतारी, करुनाधारी, यातैं थारी, शरनारी ॥श्री०
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम नि० ।

पंचकल्याणक

असित सॉतय भादव जानिये, गरभ-मंगल तादिन मानिये ।
शचि कियो जननी पद चर्चनं, हम करैं इत ये पद अर्चनं ॥
ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।
जनम जेठ चतुर्दशि श्याम है, सकलइंद्र सु आगत धाम है ।
गजपुरै गज साजि सबै तबै, गिरि जजे इत मैं जजि हों अबै ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् नि० ।

भव शरीर सुभोग असार है, इमि विचार तबै तप धार है।
भ्रमर चोदश जेठ सुहावनी, धरमहेत जजों गुन पावनी ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्ण चतुर्दश्यां निःक्रमणमहोत्सवमण्डिताय श्री शान्ति-नाथ जिनेन्द्राय अर्घम् नि० ।

शुकल पौष दशे सुखराश है, परम-केवलज्ञान प्रकाश है।
भवसमुद्रउधारन देवकी, हम करैं नित मंगल सेवकी ॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

असित चौदश जेठ हनें अरी, गिरि समेदथकी शिव-तियवरी।
सकल इन्द्र जजैं तित आइकैं, हम जजैं इत मस्तक नाइकैं ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

जयमाला (छन्द दशोद्धता)

शान्ति शान्तिगुनमंडिते सदा जाहि ध्यावत सुपंडिते सदा ॥
मैं तिन्हें भगत मंडिते सदा । पूजि हो कलुप खंडिते सदा ॥ १ ॥
मोच्छहेत तुम ही दयालहो । हे जिनेश गुनरत्नमाल हो ।
मैं अबै सुगुन-दाम ही धरों । ध्यावतें तुरित मुक्ति-तियवरों ॥ २ ॥

छन्द पद्धरी

जय शान्तिनाथ चिद्रूपराज । भवसागर में अद्भुत जहाज ॥
तुम तजि सरवारथ सिद्धथान । सरवारथजुत गजपुर महान ॥१॥
तित जनम लियौ आनन्द धार । हरि ततछिन आयो राजद्वार ॥
इन्द्रानी जाय प्रसूत-थान । तुमको कर में लै हरष मान ॥ २ ॥

हरि गोददेय सो मोदधार। सिर चमर अमर ढारत अपार ॥
गिरराज जात तिय शिला पांड। तापै थाप्यौं अभिषेक मांड ॥
तित पंचम उदधितनों सु वार। सुर कर कर करि ल्याये उदार ॥
तब इंद्रसहसकर करि अनंद। तुम सिर धारा ढारयौ सुनन्द ॥
अघ घघ घघ घघ धुनि होत घोर। भभ भभ भभ धध धध कलश शोर ॥ द्रमद्रम द्रमद्रम बाजत मृदंग। झन नन नन नन नन नूपुरंग ॥५॥ तन नन नन नन नन तनन तान। घन नन नन घंटा करत ध्वान। ताथेई थेई थेई थेई थेई सुचाल। जुत नाचत नावत तुमहि भाल ॥६॥ चट चट चट अटपट नटत नाट। झट झट झट हट नट शट विराट। इमि नाचत राचत भगत रंग सुर लेत जहां आनन्द संग ॥७॥ इत्यादि अतुल मंगल सुठाट। तित बन्यौ जहाँ सुरगिरि विराट ॥ पुनि करि नियोग पितु सदन आय। हरि सौंप्यौ तुम तित वृद्ध थाय ॥८॥ पुनि राजमाहिं लहि चक्ररत्न। भोग्यो छखंड करि धरम जत्न ॥ पुनि तप धरि केवल-रिद्धि पाय। भवि जीवन को शिवमग-बताय ॥९॥ शिवपुर पहुँचे तुम हे जिनेश। गुनमंडित अतुल अनन्त भेष ॥ मैं ध्यावतु हौं नित शीश नाय। हमरी भवबाधा हरि जिनाय ॥१०॥ सेवक अपनों निज जान जान। करुना करि भौभय भान भान ॥ यह विघन-मूल-तरु खंड खंड। चितचिन्तित आनन्द मन्ड मन्ड ॥११॥

श्रीशान्ति महंता, शिवतिय कन्ता, सुगुन अनंता, भगवन्ता ॥
भव भ्रमन हनन्ता, सौख्यअनन्ता, दातारं तारनवन्ता ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

शान्तिनाथ जिनके पदपंकज, जो भवि पूजैं मनवचकाय।
जनम जनम के पातक ताके, ततछिन तजिकै जाय पलाय ॥

मनवांछित सुख पावै सो नर, बाँचै भगतिभाव अतिलाय।
तातैं 'वृन्दावन' नित वन्दे, जातैं शिवपुर राजकराय ॥१॥

इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री शांतिनाथ जिन पूजा।

(श्री बख्तावरलालजी कृत)

सर्वारथ सुविमान त्यागि गजपुर में आये।
विश्वसेन भूपाल तासुके बाल कहाये॥
पंचम चक्री भये द्वादशवें राजैं॥
मैं सेऊं तुम चरन तिष्ठिये जो दुख भाजैं॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

पंचम उदधि तनो जल निर्मल, कंचन-कलश भरे हरषाय।
धार देत ही श्रीजिन सन्मुख, जन्मजरा मृतु दूर पलाय॥
शांतिनाथ पंचमचक्रेश्वर, द्वादश मदन तनौ पद पाय।
जाके चरण कमल के पूजैं, रोग शोक दुख-दारिद जाय॥१॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरारोगविनाशाय जलं०।

मलयागिरि चंदन, कदलीनंदन, कुंकुम जलके संग घिसाय।
भव आताप विनाशनकारन, चरचूं चरन सबै सुखदाय॥शां०॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं नि०।

उज्ज्वल अच्छत पुंज मनोहर, शशिमरीच तिस देख लजाय।
पुंजकिये तुमआगैं श्रीजिन, अक्षयपदके हेत बनाय॥शां०॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।

सुरपुनीत अथवा अवनीके कुसुम मनोहर लिये मंगाय ।
भेंट धरत तुम चरननके ढिंग, तत्खिन कामबाण नसि जाय ।शां.
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ।
भांति भांति के सद्य मनोहर, कीनै मैं पकवान संभार ।
भरि थारी तुम सनमुख लायो, छुधावेदनी तुरत नशाय ।।शां.
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय छुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि० ।
घृतसनेह कपूर लायकरि, दीपक ताके देत प्रजार ।
जगमग जोति होति मंदिर में, मोह-अंधकौं देत सुटार ।।शां०
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीप नि०
देवदारु कृष्णागरु चंदन, तगर कपूर सुगंध बनाय ।
खेऊं अष्टकरम जारनको, धूप धनंजय मांहि सु डारि ।।शां०
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ।
नारंगी बादाम सु केला, एला दाडिम फल सहकारि ।
कंचन थाल माहिं धर लायो, अरचत ही पाऊं शिवनारि ।।शां.
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं० ।
जल फलादि वसु द्रव्य सम्हारे, अर्घ चढाऊं मंगल गाय ।
'बखतावर' के तुमही साहब, दीजे शिवपुरराज कराय ।।शां०।।
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् नि० ।

पंचकल्याणक ।

भादों सप्तमि श्यामा, सर्वारथ त्याग नागपुर आये ।
माता एरा नामा, मैं पूजूं अर्घ शुभ लाये ।।
ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री शान्तिनाथ जि०
जनमे तीरथनाथं, वर जेठ असित चतुर्दशी सोहै ।

हरिगण नावैं माथं, मैं पूजूं शान्तिनाथ जुग जो है ॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीशां० जिने. अर्घम्
चौदसि जेठ अंधारी, काननमें जाय जोग प्रभु लीना।
नौ निधि रतन सु छारी, मैं वन्दूं आतमसार जिन चीना ॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां निःक्रमणमहोत्सवमंडिताय श्रीशां.जि०
पौष दसैं उजियारा, अरिघात ज्ञानभानु जिन पाया।
प्रातहार्य वसु धारा, मैं सेऊं सुरनर जासु यश गाया ॥
ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीशां. जि. अर्घम्।
सम्मेदशैल भारी, हनिकर अघाति मोक्ष जिन पाई।
जेठ चतुर्दशि कारी, मैं पूजूं सिद्धथान सुखदाई ॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीशां. जिनें. अर्घ

जयमाला। (छप्पय)

भये आप जिनदेव जगत में सुख विस्तारे,
तारे भव्य अनेक तिन्हों के संकट टारे ॥
टारे आठों कर्म मोक्षसुख तिनको भारी,
भारी विरद निहार लही मैं शरण तिहारी।
तिहारे चरणनकूं नमूं, दुख दरिद्र संतापहर,
हर सकल कर्म छिन एकमें, शांतिजिनेश्वर शांति कर।

दोहा—सारंग लक्षण चरन मे उन्नत धनु चालीस।
हाटकवर्ण शरीरद्युति, नमौं शांति जुगईस ॥

छन्द भुजंगप्रयात।

प्रभु आपने सर्वके फन्द तोड़े, गिनाऊं कछू तिन्हों नाम थोड़े।
पड़ो अंबुधे बीच श्रीपाल राई, जपौ नाम तेरो भये थे सहाई ॥१॥
धरौ रायने सेठ को सूलिकापै, जपी आपके नामकी सार जापैं।

भये थे सहाई तवै देव आए, करी फूल वर्षा सुवृष्टि वढाये ॥४॥
जवै लाखके धाम वह्नि प्रजारी, भयौ पांडुकापै महाकष्ट भारी।
तवै नाम तेरे तनी टेर कीनी, करी थी विदुरने वही राह दीनी ॥५
हरी द्रौपदी धातकी खण्ड माहीं, तुम्ही ह्वां सहायी भला और नाहीं।
लियो नाम तेरो भलो शील पालौ, बचाई तहां तैं सवै दुःख टालौ
जवै जानकी रामने जो निकारी, धरै गर्भको भार उद्यान डारी।
रटौ नाम तेरौ सवै सुक्खदायी, करी दूर पीड़ा छिन ना लगाई ॥७॥
विसन सात सेवै करै तस्कराई, सुअंजन जु तारो घड़ी ना लगाई।
सहे अंजना चंदना दुख जेते, गये भाग सारे जरा नाम लेते ॥८॥
घड़े वीचमे सासुने नाग डारौ, भलो नाम तेरो जु सोमा सम्हारौ।
गई काढनेको भई फूलमाला, भई है विख्यातं सवै दुःख टाला ॥९॥
इन्हैं आदि देकैं कहांलौं बखानौं, सुनौ वृद्धभारी तिहूं लोक जानौ।
अजी नाथ! मेरी जरा ओर हेरो, बड़ी नाव तेरी रती बोझमेरो।
गहो हाथ स्वामी! करो वेग पारा, कहूँ क्या अबै आपनी मैं पुकारा।
सबै ज्ञानके बीच भासी तुम्हारे, करो देर नाहीं अहो संत प्यारे ॥११

घत्ता—शांति तुम्हारी, कीरति भारी, सुर नर नारी गुणमाला।
'बखतावर' ध्यावै, रतन सुगावै, मम दुखदारिद सब टाला॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घम् नि०

अजी एरानंदं, छवि लखत हैं आय अरनं।
धरैं लज्जा भारी, करत थुति सो लाग चरनं॥
करै सेवा सोई, लहत सुख है सार छिनमें।
घने दीना तारे, हम चहत हैं वास तिनमें॥

इत्याशीर्वादः।

श्री नेमिनाथजिन पूजा ।

छन्द लक्ष्मी, तथा अर्द्ध लक्ष्मीधरा

जयति जय जयति जय जयति जय नेमकी, धर्म अवतार दातार शिव चैन की । श्री शिवानन्द भौफन्द निकन्द ध्यावैं जिन्हैं इन्द्र नागेन्द्र ओ मैनकी । परम कल्याण के देन हारे तुम्हीं, देव तो एव तातें करौं एन की । थापि हो वार त्रय शुद्ध उच्चार के, शुद्धता धार भौपार कूं लेन की ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिन ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः !
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

दाता मोक्षके श्री नेमिनाथ जिनराय दाता० ॥टेक॥
गंग नदी जल प्रासुक लीनौ, कंचन भृंग भराय ।
मनवचतनतें धार देत ही सकल कलङ्क नसाय ॥
दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय, दाता० ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्व० ।

हरिचन्दनजुत कदली नन्दन कुंकुम संग घसाय ।
विघ्नतापनाशके कारन, जजौं तिहारे पाय ॥२॥ दाता०

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्व० ।

पुण्य राशि तुम यश सम उज्ज्वल, तन्दुल शुद्ध मंगाय ।
अखयसौख्य भोगनके कारण पुञ्ज धरौं गुणगाय ॥दाता०॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० ।

पुंडरीक तृण द्रुमको आदिक, सुमन सुगन्धित लाय ।

दर्पकमन्मथभञ्जनकारन जजहुं चरन लवलाय ॥दाता०४॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०।
घेवर बावर खाजे साजे, ताजे तुरित मंगाय।
क्षुधा वेदनी नाश करणको, जजहुँ चरण उमगाय ॥दाता०५॥
ओं ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०।
कनकदीप नवनीत पूरकर, उज्ज्वल जोति जगाय।
तिमिर मोहनाशक तुमको लखि, जजहुं चरन हुलसाय॥दा०
ओं ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दोपं निर्व०।
दशविध गन्ध मंगाय मनोहर, गुञ्जत अलिगण आय।
दशोंबंध जारन के कारन खेवों तुम ढिग लाय ॥दा० ७॥
ओं ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व०।
सुरसवरण रसना मन भावन, पावन फल सु मंगाय।
मोक्ष महाफल कारन पूजों, हे जिनवर तुम पायं ॥दा०८॥
ओं ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व०।
जल फल आदि साज शुचि लीने, आठों दरव मिलाय।
अष्टम छितिके राज करनकों, जजों अंग वसु नाय ॥दा०९॥
ओं ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपा०।

पंच कल्याणक

सित कातिक छट्ठ अमंदा, गरभागम आनन्द कन्दा।
शचि सेव सिवापद आई, हम पूजत मनवच काई ॥१॥
ओं ह्रीं कार्तिकशुक्ला षष्ठयां गर्भमंगलप्राप्ताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् निर्व०।
सित सावन छट्ठि अमंदा, जनमे त्रिभुवन के चन्दा।

पितु समुद महासुख पायो, हम पूजत विघन नसायो ॥२॥

ओं ह्रीं श्रावणशुक्ला षष्ठ्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् निर्व० ।

तजि राजमति व्रतलीनों, सित सावन छट्टि प्रवीनों ।
शिव नारि तबै हरपाई, हम पूजैं पद शिर नाई ॥३॥

ओं ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् निर्व० ।

सित आसिन एकम चूरे, चारों घाति अति कूरे ।
लहि केवल महिमा सारा, हम पूजैं अष्ट प्रकारा ॥४॥

ओं ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञानप्राप्तायश्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् निर्व० ।

सित षाढ अष्टमी चूरे, चारों अघातिया कूरे ।
शिव ऊर्जयन्त तैं पाई, हम पूजैं ध्यान लगाई ॥५॥

ॐ ह्रीं आषाढ शुक्ला अष्टम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् निर्व० ।

जयमाला ।

दोहा—श्याम छवि तनु चाप दश, उन्नत गुणनिधि धाम ।
शंख चिन्ह पदमें निरखि, पुनि पुनि करों प्रणाम ॥ १ ॥

पद्धरिछन्द

जय जय जय नेमि जिनंद चन्द, पितु समुद देन आनन्द कन्द ।
शिवमात कुमुद मन मोद दाय, भविवृन्द चकोर सुखी कराय ॥२॥
जय देव अपूरव मारतंड, तम कीन ब्रह्मसुत सहज खण्ड ।
शिव तिय मुख जलज विकानेश, नहि रहा सृष्टि में तम अशेष ॥३॥
भवि भीत कोक्क कीनो अशोक, शिव मग दरशायो शर्म थोक ।

जय जय जय जय तुम गुण गंभीर, तुम आगम निपुण पुनीत धीर ॥
तुम केवल जोति विराजमान, जय जय जय जय करुणा निधान ।
तुम समवशरण मे तत्त्व भेद, दरशायो जाते नशत खेद ॥ ६ ॥
तित तुमको हरि आनन्द धार, पूजत भगती जुत बहु प्रकार ।
पुनि गद्य पद्य मय सुजश गाय, जय बल अनंत गुणवन्त राय ॥७॥
जय शिव शंकर ब्रह्मा महेश, जय बुद्ध विधाता विष्णुवेष ।
जय कुमति मतंगन को मृगेन्द्र, जय मदन ध्वांतको रवि जिनेन्द्र ॥८॥
जय कृपा सिन्धु अविरुद्ध बुद्ध, जय ऋद्धि सिद्धि दाता प्रबुद्ध ।
जय जग जन मन रंजन महान, जय भवसागर महं सुष्ठुयान ॥६॥
तुम भगति करैं ते धन्य जीव, ते पावैं दिव शिवपद सदीव ।
तुमरो गुण देव विविध प्रकार, गावत नित किन्नर की जुनार ॥१०॥
वर भगति माहिं लवलीन होय, नाचैं ताथेइ थेइ थेइ वहोय ।
तुम करुणा सागर सृष्टि पाल, अब मोकों वेगि करो निहाल ॥११॥
मैं दुख अनन्त वसु करम जोग, भोगे सदीव नहिं और रोग ।
तुम को जग में जान्यो दयाल, हौं वीतराग गुण रतन माल ॥१२॥
तातैं शरणा अब गही आय, प्रभु करो वेगि मेरी सहाय ।
यह विघन करम मम खण्ड खण्ड, मनवांछित कारज मण्ड मण्ड ॥१३
संसार कष्ट चक चूर चूर, सहजानन्द मम उर पूर पूर ।
निज पर प्रकाश बुद्धि देह देह, तजि के विलंब सुधि लेह लेह ॥१४
हम जांचत हैं यह बार बार, भव सागर ते मो तार तार ।
नहीं सह्यो जात यह जगत दुःख, तातें विनवो हे सुगुन मुक्ख ।१५।

घत्तानंद

श्री नेमिकुमारं जितमदमारं, शीलागारं, सुखकारं ।
भवभयहरतारं शिवकरतारं, दातारं धर्माधारं ॥ १६ ॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मालिनी—सुख, धन, जस, सिद्धी पुत्र पौत्रादि वृद्धी।
सकल मनसि सिद्धी होति है ताहि ऋद्धी॥
जजत हरषधारी नेमिको जो अगारी।
अनुक्रम अरि जारी सो वरै मोक्षनारी॥ १६॥
इत्याशीर्वादः।

श्रीपाश्वनाथ पूजा।

गीताछन्द।

वर स्वर्ग आनतको विहाय, सुमात वामा सुत भये।
अश्वसेनके पारस जिनेश्वर, चरन जिनके सर नये॥
नवहाथ उन्नत तन विराजै, उरग लच्छन पद लसैं।
थापूं तुम्हें जिन आय तिष्ठो., करम मेरे सब नसैं॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट्।
अथाष्टक—नाराच छन्द।

क्षीरसोमके समान अंबुसार लाइये,
हेमपात्र धारकैं सु आपको चढ़ाइये।
पार्श्वनाथदेव सेव आपकी करूं सदा,
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा॥ १॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०
चंदनादि केशरादि स्वच्छ गन्ध लीजिये।
आप चर्न चर्च मोहताप को हनीजिये॥ पार्श्व०॥ २॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं०।

फेन चंदके समान अक्षतान् लाइकैं।
चर्ण के समीप सार पुञ्जको रचाइकैं ॥ पार्श्व० ॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं०।
केवड़ा गुलाब और केतकी चुनायकैं।
धार चर्ण के समीप कामको नसाइकैं ॥ पार्श्व० ॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं०
घेवरादि बावरादि मिष्ट सद्य में सने।
आप चर्ण चर्चते क्षुधादि रोगको हनैं ॥ पार्श्व० ॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुद्रोगविनाशनाय नैवेद्यं०
लाय रत्नदीपको सनेहपूरके भरूं।
वातिका कपूर वारि-मोह ध्वांतकूं हरूं ॥ पार्श्व० ॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं०।
धूपगन्ध लेयकैं सु अग्निसंग जारिये।
तास धूपके सुसंग अष्ट कर्म वारिये ॥ पार्श्व० ॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं०।
खारिकादि चिरभटादि रत्नथाल मैं भरूं।
हर्षधारिकैं जजूं सुमोक्ष सुक्खको वरूं ॥ पार्श्व० ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं०।
नीरगंध अक्षतान् पुष्प चरु लीजिये।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घतैं जजीये ॥ पार्श्व० ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं०।

पंच कल्याणक।

शुभआनत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये।

वैशाखतनी दुतिकारी, हम पूजैं विघ्न निवारी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीवैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ० ।

जनमे त्रिभुवन सुखदाता, एकादशि पौष विख्याता ।
श्यामा तन अद्भुत राजै, रवि कोटिक तेज सु लाजै ॥२॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममङ्गल प्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अ०

कलि पौष इकादशि आई, तब बारह भावना भाई ।
अपने कर लोंच सु कीना, हम पूजैं चरन जजीना ॥३॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अ०

कलि चैत चतुर्थी आई, प्रभु केवलज्ञान उपाई ।
तब प्रभु उपदेश जु कीना, भवि जीवनको सुख दीना ॥४॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थीदिने केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ० ।

सित सातैं सावन आई, शिवनारि वरी जिनराई ।
सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजैं मोक्ष कल्याना ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ० ।

जयमाला ।

पारसनाथ जिनेन्द्रतने वच, पौनभखी जरतें सुन पाये ।
करयो सरधान लह्यो पद आन भयो पद्मावति शेष कहाये ॥
नाम प्रताप टरै संताप सु भव्यनको शिवशरम दिखाये ।
हे विश्वसेनके-नंद भले, गुणगावत हैं तुमरे हरखाये ॥ १ ॥

दोहा—केकी–कंठ समान छवि, वपु उतंग नव हाथ ।
लक्षण उरग निहारपग, वंदों पारसनाथ ॥ २ ॥

पद्धरि छन्द ।

रची नगरी छहमास अगार, बने चहुँगोपुर शोभ अपार ।
सुकोटतनी रचना छवि देत, कंगूरनपैं लहकैं वहुकेत ॥ ३ ॥
बनारस की रचना जु अपार, करी बहुभांति धनेश तैयार ।
तहाँ बिश्वसेन नरेंद्र उदार, करैं सुख वाम सु दे पटनार ॥ ४ ॥
तज्यो तुम आनत नाम विमान, भये तिनके वर नंदन आन ।
तवै सुरइन्द्र नियोगन आय, गिरिंद करी विधि न्हौन सु जाय ॥५॥
पिता घर सौंपि गये निज धाम, कुवेर करैं वसु जाम सु काम ।
बढै जिन दोज मयंक समान, रमैं वहु बालक निर्जर आन ॥६॥
भये जब अष्टम वर्ष कुमार, धरे अणुव्रत्त महासुखकार ।
पिता जब आनकरी अरदास, करौ तुम व्याह वरैं मम आस ॥७॥
करी तब नाहिं रहे जगचन्द, किये तुम काम कषाय जु मंद ।
चढे गजराज कुमारन संग, सु देखत गंगतनी सु तरंग ॥ ८ ॥
लख्यो इक रंक करैं तप घोर, चहुँदिशि अग्नि वलै अति जोर ।
कहीं जिननाथ अरे सुन भ्रात, करैं वहु जीवन की मत घात ॥९॥
भयो तब कोप कहैं कित जीव, जले तब नाग दिखाय सजीव ।
लख्यो यह कारण भावन भाय, नये दिव ब्रह्मऋषीसुर आय ॥१०॥
तवहि सुर चार प्रकार नियोग, धरी शिविका निज कंध मनोग ।
कियो वन मांहि निवास जिनंद, धरे व्रत चारित आनद कंद ॥११॥
गहे तहं अष्टम के उपवास, गये धनदत्त तने जु अवास ।
दियो पयदान महा-सुखकार, भई पनवृष्टि तहा तिहिं वार ॥१२॥
गये तब काननमाहिं दयाल, धर्‌यो तुम योग सवहिं अघटाल ।
तवै वह धूम सुकेत अयान, भया कमठाचरको सुर आन ॥ १३ ॥
करै नभगौन लखे तुम धीर, जु पूरव वैर विचार गहीर ।
कियो उपसर्ग भयानक घोर, चली वहु तीक्षण पवन झकोर ॥१४॥
रह्यो दसहूं दिशि में तम छाय, लगी वहु अग्नि लखी नहिं जाय ।

झुरुण्डन के विन मुंड दिखाय, पड़ै जल मूसलधार अथाय ॥१५॥
तबै पदमावति कंथ धनिंद, चले जग आय जहां जिनचंद।
भग्यो तब रंक सु देखत हाल, लह्यो त्रव केवल ज्ञान विशाल ॥१६॥
दियो उपदेश महा हितकार, सुभव्यन बोधि समेद पधार।
सुवर्णभद्र जहँ कूट प्रसिद्ध, वरी शिव नारि लही वसुरिद्ध ॥१७॥
जजूं तुम चरन दुहूँ कर जोर, प्रभू लखिये अब ही मम ओर।
कहे 'बखतार' रत्न बनाय, जिनेश हमे भवपार लगाय ॥ १८ ॥

घत्ता।

जय पारस देवं सुरकृत सेवं वंदत चरण सुनागपती।
करुणा के धारी परउपकारी, शिवसुखकारी कर्महती ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल।

जो पूजै मनलाय भव्य पारस प्रभु नितही,
ताके दुख सब जांय भीत व्यापै नहिं कितही।
सुख संपति अधिकाय पुत्र मित्रादिक सारे,
अनुक्रमसों शिव लहै 'रतन' इमि कहै पुकारे ॥२०॥

इत्याशीर्वाद (पुष्पांजलि)

श्री महावीर जिन पूजा

श्रीमत वीर हरै भवपीर भरै सुख सीर अनाकुलताई।
केहरि अङ्क अरीकरदंक नये हरि पंकति मौलि सुआई॥
मैं तुमको इत थापतु हौं प्रभु भक्ति समेत हिये हरपाई।
हे करुणाधन धारक देव! इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई॥

ओं ह्रीं श्रीवर्धमान जिनेन्द्र! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

क्षीरोदधि सम शुचि नीर, कञ्चन भृङ्ग भरो।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातैं धार करौं।
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति नायक हो।
जय वर्धमान गुण धीर सन्मति दायक हो ॥ १ ॥ जलं
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय ॥जल०॥
मलयागिर चन्दन सार, केसर संग घसौं।
प्रभु भव आताप निवार, पूजत हिय हुलसौं। श्रीवीर० ।चंद०।
तन्दुल सित शशि सम शुद्ध, लीने थार भरी।
तसु पुञ्ज धरौं अविरुद्ध, पाऊं शिवनगरी ।श्रीवीर०।अक्ष०॥
सुरतरु के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे।
सो मनमथ भञ्जन हेत, पूजां पद थारे। श्रीवीर०। पुष्पं०॥
रस रज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी ।श्रीवीर०। नैवे०
तम पदतर हे सुख नेह, दीपक जोवत हौं।
तुम पदतर हे सुख गेह, भ्रमतम खोवत हौं ।श्रीवीर०। दीपं०
हरिचन्दन अगर कपूर, चूर सुगन्ध करा।
तुम पदतर खेवत भूर आठों कर्म जरा। श्रीवीर० । धूपम्॥
ऋतु फल कलवर्जित लाय, कञ्चन थार भरौं।
शिवफल हित हे जिनराय तुम ढिग भेंट धरौं।श्रीवीर०। फलं०
जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरो।
गुण गाऊं भवदधि पार, पूजत पाप हरों। श्रीवीर० । अर्घ्यम्॥९॥

पंच कल्याणक

मोहि राखो हो शरना, श्रीवर्धमान जिनरायजी, मोहि०

गरभ पाढ सित छट्ठलियो तिथि, त्रिशलाउर अघहरना।
सुर सुरपति तित सेवकरी नित, मैं पूजों भवतरना। मोहि०
ॐ ह्रीं आषाढ शुक्लाषष्ठ्यांगर्भमंगलमडिताय श्रीमहावीरायऽर्घ्यम्।
जनम चैत सित तेरस के दिन ,कुण्डलपुर कनवरना,
सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो मैं पूजों भव हरना। मोहि०
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहा० अर्घ्यं।
मंगसिर असित मनोहर दशमी ता दिन तप आचरना,
नृपकुमार घर पारण कीनो मैं पूजों तुम चरना। मोहि०
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यांतपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीरायऽर्घ्यं।
शुकल दशैं वैशाख दिवस अरि घाति चतुक चय करना।
केवल लहि भवि भवसर तारे जजों चरन सुखभरना। मोहि०
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीमहावीरायऽर्घ्यं।
कार्तिक श्याम अमावस शिव तिय पावापुरतैं परना,
गणफणिवृन्द जजैं नितबहुविधि मैं पूजों भव हरना। मोहि०।
ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णामावश्यायां मोक्षकल्याणकमंडिताय श्रीमहावीर जिनाय अर्घ्यम्०।

जयमाला

गनधर अशनिधर चक्रधर हर धर गदाधर वरवदा।
अरु चाप धर विद्यासुधर त्रिशूल धर सेवहिं सदा॥
दुख हरन आनंद भरन तारन तरन चरन रसाल है।
सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत भाल की जयमाल है॥१॥
घत्ता—जय त्रिशलानन्दन-हरिकृतवन्दन जगदानन्दन चन्दवरं,
भवतापनिकन्दन तनमनकन्दन रहित सपन्दन नयनधरं॥२॥

त्रोकट छन्द ।

जय केवल भानुकला सदनं, भवि कोक विकासन कंजवनं ।
जग जीत महारिपु मोह हरं, रजज्ञान दृगांवर चूर करं ॥ १ ॥
गर्भादिक मङ्गल मण्डित हो, दुख दारिद को नित खण्डित हो ।
जगमांहि तुम्हीं सत पण्डित हो, तुमही भव भावविहण्डित हो ॥२॥
हरिवंश सरोजनकों रवि हो, बलवन्त महन्त तुमही कवि हो ।
लहि केवल धर्म प्रकाश कियो, अबलों सोइ मारग राजति यो ॥३॥
पुनि आप तने गुनमांहि सही, सुरमग्न रहे जितने सबही ।
तिनकी वनिता गुनगावत है, लय ताननि सों मन भावत हैं ॥४॥
पुनि नाचत रङ्ग उमङ्ग भरी, तुव भक्ति विषै पग एम धरि ।
झननं झननं झननं झननं, सुर लेत तहां तननं तननं ॥५॥
घननं घननं घन घण्ट बजे, दृम दृम दृम दृम मरदङ्ग सजै ।
गगनांगन गर्भ गता सुगता, ततता ततता अतता वितता ॥६॥
धृगतां धृगतां गति बाजत है सुरताल रसाल जु छाजत है ।
सननं सननं सननं नभ मे, इक रूप अनेक जु धारि भ्रमैं ॥ ७ ॥
केई नारि सुवीन बजावति हैं, तुमरो जस उज्ज्वल गावति हैं ।
करताल विषै करताल धरैं, सुरताल विशाल जु नाद करैं ॥ ८ ॥
इन आदि अनेक उछाह भरी, सुर भक्ति करै प्रभुजी तुमरी ।
तुम ही जगजीवन के पितु हो, तुम ही विनकारन के हितु हो ॥९॥
तुम ही सब विघ्न विनाशन हो, तुम ही निज आनन्द भासन हो ।
तुमही चित चिंतित दायक हो, जगमांहि तुम्हीं सब लायक हो ॥१०॥
तुमरे पन मङ्गल मांहि सही, जिय उत्तम पुण्य लियो सब ही ।
हम तो तुमरी शरनागत हैं, तुमरे गुनमे मन पागत हैं ॥११॥
प्रभु मो हिय आप सदा बसिये, जब लौं वसु कर्म नहीं नसिये ।
तबलों तुम ध्यान हिये वरतो, तबलों श्रुतचिंतन चित्तरतो ॥१२॥
तबलों व्रत चारित चाहत हों, तबलों शुभ भाव सुगाहत हो ।

तबलों सत सङ्गति नित्त रहो, तबलों मम संजम चित्त गहो ॥१३॥
जबलों नहिं नाश करों अरिको, शिवनारि वरों समता धरिकों।
यह द्यो तबलों हमको जिनजी, हम जाचतु हैं इतनी सुनजी ॥१४॥
घत्ता-श्रीवीर जिनेशा, नमत सुरेशा, नाग नरेशा, भगति भरा।
'वृन्दावन' ध्यावै, विघन नशावै, वांछित पावै, शर्मवरा ॥
ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा।
दोहा-श्रीसन्मति के जुगल पद, जो पूजै धर प्रीत।
'वृन्दावन' सो चतुर नर, लहै मुक्ति नवनीत ॥
इत्याशीर्वादः।

—:देव पूजा:—

दोहा—प्रभु तुम राजा जगतके, हमें देय दुख मोह।
तुम पद पूजा करत हूं, हमपै करुणा होहि ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहित श्रीजिनेन्द्र भगवन् अत्रावतरावतर संवौषट्! ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहितश्रीजिनेन्द्रभगवन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहितश्रीजिनेंद्रभगवन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

छन्द त्रिभङ्गी।

बहु तृषा सतायो, अति दुख पायो, तुमपे आयो जल लायो।
उत्तम गंगाजल, शुचि अति शीतल, प्रासुक निर्मल, गुन गायो ॥
प्रभु अन्तरजामी, त्रिभुवननामी, सबके स्वामी, दोष हरो।
यह अरज सुनीजै, ढील न कीजै, न्याय करीजै, दया धरो ॥१

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहित श्रीजिनेन्द्र भगवद्भ्यो जन्ममृत्युविनाशाय जलं०।

अघतपत निरन्तर, अगनिपटन्तर, मो उर अन्तर, खेद करयो।
लै बावन चंदन, दाहनिकंदन, तुमपदवंदन, हरप धरयो।प्र०।

ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो भवतापनाशाय चन्दनं नि०।

औगुन दुखदाता, कह्यो न जाता, मोहि असाता, बहुत करै।
तन्दुलगुनमण्डित, अमल अखण्डित, पूजत पंडित, प्रीतिधरै।प्र.

ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।

सुरनर पशुको दल काम महाबल बात कहत छल मोहि लिया।
ताके शर लाऊं फूल चढाऊं भगति बढाऊं खोल हिया।।प्रभु०

ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०।

सब दोपनमांही, जासम नाहीं, भूख सदा ही मो लागै। सद
घेवर बावर, लाडू बहु धर, थार कनक भर, तुम आगै।।प्रभु०

ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो क्षुधारोगनाशाय नैवेद्यं नि०।

अज्ञान महातम, छाय रह्यो मम, ज्ञान ढक्यो हम, दुख पावैं।
तम मेटनहारा, तेज अपारा, दीप संवारा, जस गावैं।।प्रभु०।।

ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो मोहान्धकार विनाशाय दीपं०।

इह कर्म महावन, भूल रह्यो जन, शिवमारग नहिं पावत हैं।
कृष्णागरुधूपं, अमल अनूपं, सिद्धस्वरूपं ध्यावत हैं।।प्रभु०।।

ओं ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं०।

सबते जोरावर, अन्तराय अरि, सुफल विघ्न करि डारत हैं।
फलपुञ्ज विविध भर, नयनमनोहर, श्री जिनवर पद धारत हैं।।प्र.

ओं ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं०।

आठों दुखदानी, आठ निशानी, तुम ढिंग आनि निवारन हो।

दीननिस्तारन, अधम उधारन 'द्यानत' तारन, कारन हो ॥प्र.

ओं ह्रीं अष्टा० जिनेन्द्रभवद्भ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

जयमाला

दोहा—गुण अनंत को कहि सकै, छियालीस जिनराय ।
प्रगट सुगुन गिनती कहूँ, तुम ही होहु सहाय ॥१॥

एक ज्ञान केवल जिनस्वामी, दो आगम अध्यातम नामी ।
तीन ताल विधि परगट जानी, चार अनन्तचतुष्टय ज्ञानी ॥२॥
पञ्च परावर्तन परकासी, छहों दरब गुन परजय भासी ।
सातभङ्गवानी परकाशक, आठों कर्म महारिपु नाशक ॥३॥
नव तत्त्वनके भाखनहारे, दश लच्छनसों भविजन तारे ।
ग्यारह प्रतिमाके उपदेशी, बारह सभा सुखी अकलेशी ॥४॥
तेरहविधि चारितके दाता, चोदह मारगनाके ज्ञाता,
पन्द्रह भेद प्रमाद निवारी, सोलह भावन फल अविकारी ॥५॥
तारे सत्रह अङ्क भरत भुव, ठारै थान दान दाता तुव ।
भाव उनीस जु कहे प्रथम गुन, बीस अङ्कगणधरजोकी धुन ॥६॥
इकइस सर्व घातविधि जानै, बाइस बंध नवम गुणथानैं ।
तेइस निधि अरु रतन नरेश्वर, सो पूजै चौवीस जिनेश्वर ॥७॥
नाश पचीस कपाय करी हैं, देशघाति छब्बीस हरी हैं ।
तत्त्व दरव सत्ताइस देखे, मति विज्ञान अठाइस पेखे ॥८॥
उनतोस अङ्क मनुष सब जाने, तीस कुलाचल सर्व बखाने ।
इकतीस पटल सुधर्म निहारे, बत्तीस दोष समाइक टारे ॥९॥
तेतीस सागर सुखकर आये, चौंतीस भेद अलब्धि बताये ।
पैंतीस अच्छर जप सुखदाई, छत्तिस कारन रीति मिटाई ॥१०॥
सैंतिस मग कहि ग्यारह गुनमें, अडतिस पद लहि नरक अपुनमें ।
उनतालीस उदीरन तेरम, चालिस भवन इन्द्र पूजें नम ॥११॥

इकतालीस भेद आराधन, उदै बियालीस तीर्थंकर भन।
तैंतालीस बन्ध ज्ञाता नहिं, द्वार चवालीस नर चौथेमहिं ॥१२॥
पैंतालीस पल्यके अक्षर, छियालीस बिन दोष मुनीश्वर।
नरक उदै न छियालिस मुनिधुन, प्रकृतछियालीस नाश दशमगुन
छियालीस घन राजु सात भुव, अङ्क छियालीस सरसों कहि कुव।
भेद छियालीस अन्तर तपवर, छियालीस पूरन गुन जिनवर।
अडिल्ल—मिथ्यातपन निवारण चंद्र समान हो। मोहतिमिर वारनको कारन भान हो॥ काम कषाय मिटावन मेघ मुनीश हो। 'द्यानत' सम्यकरतनत्रयगुनईश हो ॥१५॥
ओं ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशत्गुणसहितश्रीजिनेन्द्रभगवद्भ्यो पूर्णाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ सरस्वती पूजा

शास्त्रजो को उच्चासन पर विरामान करके पूजा करनी चाहिये

दोहा—जनम जरा मृत्यु क्षय करै, हरै कुनय जडरीति।
भवसागरसों ले तिरै, पूजै जिनवचप्रीति ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनी! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ। अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

क्षीरोदधि गंगा, विमल तरंगा, सलिल अभंगा, सुखसंगा।
भरि कंचन झारी, धार निकारी, तृषा निवारी, हित चंगा।
तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञान मई।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी, पूज्य भई ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै जलं नि०।

करपूर मंगाया, चन्दन आया, केशर लाया, रंग भरी।

शारदपद वन्दौं, मन अभिनन्दौं, पापनिकंदौं, दाहहरी ।।तीर्थ०

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखदास कमोदं, धारकमोदं, अतिअनुमोदं चंदसमं । बहु-
भक्ति बढ़ाई, कीरति गाई, होहु सहाई, मात ममं ।।तीर्थ०।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्तीदेव्यै अक्षतान् निर्वपा० ।। ३ ।।

बहुफूलसुवासं, विमलप्रकाशं, आनन्दरासं लाय धरे । मम
काम मिटायो, शील बढायो, सुख उपजायो दोप हरे । तीर्थ०

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्तीदेव्यै पुष्पं निर्वपा० ।। ४ ।।

पकवान बनाया, बहुघृत लाया, सब विध भाया, मिष्ट महा ।
पूजूं थुति गाऊं, प्रीति बढाऊं, क्षुधा नसाऊं, हर्ष लहा । तीर्थ०

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै नैवेद्यं निर्वपा० ।। ५ ।।

करि दीपक ज्योतं, तम छयहोतं, ज्योति उदोतं, तुमहि चढ़ै ।
तुमको परकाशक, भरमविनाशक, हम घट भाशक ज्ञानबढ़ै ।तीर्थ.

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै दीपं निर्वपा० ।। ६ ।।

शुभगंध दशोंकर, पावकमें धर, धूप मनोहर खेवत हैं । सब
पाप जलावैं, पुण्य कमावैं, दास कहावै, सेवत हैं ।। तीर्थ०

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै धूपं निर्वपा० ।। ७ ।।

बादाम छुहारी, लौंग सुपारी, श्रीफल भारी ल्यावत हैं ।
मनवांछित दाता, मेट असाता, तुम गुन माता ध्यावत हैं ।।तीर्थ०

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै फलं विर्वपा० ।। ८ ।।

नयननिसुखकारी, मृदुगुनधारी, उज्ज्वल भारी, मोल धरै ।
शुभगंधसम्हारा, वसन निहारा, तुमतर धारा ज्ञान धरै ।। तीर्थ०

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घं निर्वपा० ॥ ६ ॥

जल अन्दन अच्छत, फूल चरू चत, दीप धूप अति, फल लावैं।
पूजाको ठानत, जो तुम जानत, सो नर 'द्यानत' सुख पावै ॥तीर्थं०

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यैऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

सोरठा—ओंकार धनिसार, द्वादशांग वाणी विमल।
नमों भक्ति उरधार, ज्ञान करै जडता हरै ॥

पहला आचारांग बखानो, पद अष्टादस सहस प्रमानो।
दूजा सूत्रकृत अभिलापं, पद छत्तीस सहस गुरुभाषं ॥ १ ॥
तीजा ठाना अंग सुजानं, सहज छियालिस पद सरधानं।
चौथा समवायांग निहारं, चौसठ सहस लाख इकधारं ॥ २ ॥
पञ्चम व्याख्याप्रगपति दरशं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं।
छट्ठा ज्ञातृकथा विस्तारं, पांचलाख छप्पन हज्जारं ॥ ३ ॥
सप्तम उपासकाध्ययनंगं, सत्तर सहस ग्यारह लख भंगं।
अष्टम अन्तकृतं दश ईसं, सहस अठाईस लाख तेईसं ॥ ४ ॥
नवम अनुत्तरदश सुविशालं, लाख बानवै सहस चवालं।
दशम प्रश्न व्याकरण विचारं, लाखतिरानव सोल हजार ॥५॥
ग्यारम सूत्रविपाक सुभाखं, एक कोड़ चौरासी लाखं।
चार कोड़ि अरु पन्द्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरुशाखं ॥६॥
द्वादश दृष्टिवाद पन भेदं, इकसौ आठ कोड़िपन वेदं।
अड़सठ लाख सहस छप्पन हैं, सहित पञ्चपद मिथ्याहन हैं ॥७॥
इक सौ बारह कोडि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो।
ठावन सहस पञ्च अधिकाने, द्वादश अङ्ग सर्व पद माने ॥८॥
कोड़ि इकावन आठहि लाखं, सहस चुरासी छहसौ भाखं।
साढे इकइस श्लोक बताये, एक एक पदके ये गाये ॥९॥
घत्ता—जा बानीके ज्ञानमें, सूझै लोक अलोक।

'द्यानत' जगजयवन्त हो, सदा देत हों धोक ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै पूर्णार्घ्यं निर्वपामी।त०

इति सरस्वती पूजा।

गुरु पूजा

दोहा—चहुँ गति दुखसागरविषैं, तारनतरन जिहाज।
रतनत्रयनिधि नगन तन, धन्य महा मुनिराज ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीआचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुसमूह! अत्रावतरावतर, संवौषट्। ॐ ह्रीं श्रीआचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः। ॐ ह्रीं श्रीआचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्।

शुचि नीर निरमल छीरदधिसम सुगुरु चरन चढ़ाइया।
तिहुं धार तिहुं गदटार स्वामी, अति उछाह बढ़ाइया॥
भवभोगतनवैराग धार, निहार शिव तप तपत हैं।
तिहुं जगतनाथ अराध साधु सु पूज नित गुन जपत हैं ॥१॥

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्य. जलं नि० ॥१॥

करपूर चन्दन सलिलसौं घसि, सुगुरुपद पूजा करौं।
सब पाप ताप मिटाय स्वामी, धरम शीतल विस्तरौं॥भव०।१।

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्य चन्दनं नि० ॥२॥

तन्दुल कमोद सुवास उज्ज्वल, सुगुरु पगतर धरत हैं।
गुनकार औगुनहार स्वामी, वन्दना हम करत हैं ॥भव०॥३॥

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः अक्षतान् नि० ॥३॥

शुभफूलरासप्रकाश परिमल, सुगुरुपांयनि परत हौं।
निरवार मार उपाधि स्वामी, शील दृढ़ उर धरत हौं ॥भव०।४

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्य पुष्पं नि० ॥ ४ ॥

पकवान मिष्ट सलौन सुन्दर, सुगुरु पांयन प्रीतिसौं ।
कर क्षुधारोग विनाश स्वामी, सुथिर कीजे रीतिसौं ॥भव०।५

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः नैवेद्यं नि० ॥५॥

दीपक उदोत सजोत जगमग, सुगुरु पद पूजौं सदा ।
तमनाश ज्ञानउजास स्वामी, मोहि मोह न हो कदा ॥भव०।६

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्य. दीपं ॥६॥

बहु अगर आदि सुगंध खेऊं सुगुण पद पद्महि खरे ।
दुख पुञ्जकाठ जलाय स्वामी, गुण अखय चितमें धरे ॥भ०॥

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ।

भर थार पूग बदाम बहुविधि, सुगुरुक्रम आगें धरौं ।
मंगल महाफल करो स्वामी, जोर कर विनती करौं ॥भव०॥

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यासर्वसाधुगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।

जल गंध अक्षत फूल नेवज, दीप धूप फलावली ।
'द्यानत' सुगुरुपद देहु स्वामी, हमहिं तार उतावली ॥भव०॥

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. ।

अथ जयमाला

दोहा—कनककामिनी विषयवश, दीसै सब संसार ।
त्यागी वैरागी महा, साधु सुगुरु भंडार ॥ १ ॥
तीन घाटि नवकोड सब, बंदौ शीश नवाय ।
गुन तिन अट्ठाईस लौं कहूँ आरती गाय ॥ २ ॥

एक दया पालैं मुनिराजा. रागद्वेष द्वै हरन परं ।
तीनों लोक प्रगट सब देखैं, चारौं आराधननिकरं ॥
पंच महाव्रत दुद्धर धारैं, छहों दरब जानें सुहितं ।

सातभंग वानी मन लावैं, पावैं आठ रिद्ध उचित ॥३॥
नवों पदारथ विधिसौं भाखैं, वंध दशौं चूरन करनं।
ग्यारह शंकर जानै मानै, उत्तम वारह व्रत धरनं।
तेरह भेद काठिया चूरे, चौदह गुणथानक लखियं।
महाप्रमाद पंचदश नाशे शील कषाय सबै नखियं ॥४॥
वंधादिक सत्रह सब चूरे, ठारह जन्म न मरन मुनं।
एक समय उनईस परीषह, वीस प्ररूपनि में निपुनं ॥
भाव उदीक इकीसौ जानैं, बाइस अभखन त्याग करं।
अहिंमिंदर तेईसौं वंदे, इन्द्र सुरग चौवीस वरं ॥५॥
पच्चीसौं भावन नित भावैं, छब्बिस अङ्गउपंग पढैं।
सत्ताइससों विषय विनाशैं अट्ठाईसौ गुण सु बढैं।
शीतसमय सर चौपटवासी ग्रीषमगिरिसिर जोग धरैं।
वर्षा वृत्ततरैं थिर ठाडे, आठ करम हनि सिद्ध वरैं ॥६॥
दोहा—कहां कहां लों भेद मैं, बुध थोडी गुण पूर।
'हेमराज' सेवक हृदय, भक्ति भरी भरपूर ॥ ७ ॥
ओं ह्रीं आचार्योपाध्याय सर्वसाधुगुरुभ्यो अर्घ्यं नि० ॥

शांतिपाठ संस्कृत।

(शांतिपाठ बोलते समय दोनों हाथों से पुष्पवृष्टि करते रहें)

दोधकवृत्त।

शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रं।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तममंबुज नेत्रं ॥ १ ॥
पञ्चमभीप्सित चक्रधराणां, पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च।
शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः षोडशतीर्थकरं प्रणमामि ॥ २ ॥
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ।
आतपवारणचामरयुग्मे यस्य विभाति च मंडलतेजः ॥ ३ ॥

त जगदर्चितशांतिजिनेन्द्र शांतिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्वगणाय तु यच्छतु शांति मह्यमरं पठते परमां च ॥ ४ ॥

वसंततिलका छन्द।

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुण्डलहाररत्नै,शक्रादिभिः सुरगणैःस्तुतपादपद्माः।
ते मे जिना प्रवरवंशजगत्प्रदीपास्तीर्थंकराः सततशांतिकरा भवन्तु।

इन्द्रवज्रा।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः ॥६॥

स्रग्धरावृत्तं।

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः।
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यांतु नाशम्।
दुर्भिक्षं चोरमारी क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥ ७ ॥

अनुष्टुप.–प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः।
कुर्वन्तु जगत शांतिं वृषभाद्या जिनेश्वराः ॥ ८ ॥

प्रथमं करणम् चरणं द्रव्यं नमः। अथेष्ट प्रार्थना।

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः सङ्गतिः सर्वदार्यैः।
सद्वृत्तानां-गुणगणकथा दोषवादे च मौनम्।
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे।
सम्पद्यन्तां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ॥ ९ ॥

आर्यावृत्तं।

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनम्।
तिष्ठतु जिनेन्द्र! तावद्यावन्निर्वाणसंप्राप्तिः ॥ १० ॥
अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणञ्च जं मए भणियं।
तं खमउ णाणदेव य मज्झ वि दुक्खक्खयम् दिंतु ॥ ११ ॥

दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणञ्च बोहिलाहो य।
मम होउ जगतबान्धव तव जिणवर चरणसरणेण ॥ १२ ॥

संस्कृत प्रार्थना।

त्रिभुवनगुरो! जिनेश्वर! परमानन्दैककारणम् कुरुष्व।
मयि किंकरेऽत्र करुणां यथा तथा जायते मुक्तिः ॥ १३ ॥
निर्विण्णोहम् नितरामर्हन् बहुदुक्खया भवस्थित्या।
अपुनर्भवाय भवहर! कुरु करुणामत्र मयि दीने ॥ १४ ॥
उद्धर मां पतितमतो विषमाद् भवकूपतः कृपां कृत्वा।
अर्हन्नलमुद्धरणे त्वमसीतिपुनर्पुनर्वच्मि ॥ १५ ॥
त्वं कारुणिकः स्वामी त्वमेव शरणं जिनेश! तेनाहं।
मोहरिपुदलितमानं फूत्करणं तव पुरः कुर्वे ॥ १६ ॥
ग्रामपतेरपि करुणा परेण केनाप्युपद्रुते पुंसि
जगतां प्रभो! न किं तव, जिन! मयि खलु कर्मभिः प्रहते ॥१७॥
अपहर मम जन्म दयां, कृत्वेत्येकवचसि वक्तव्ये।
तेनातिदग्ध इति मे देव! बभूव प्रलापित्वं ॥ १८ ॥
तव जिनवर! चरणाब्जयुगं करुणामृतशीतलं यावत्।
संसारतापतप्तः करोमि हृदि तावदेव सुखी ॥ १९ ॥
जगदेकशरण भगवन्! नौमि श्रीपद्मनंदितगुणौघ!
किं बहुना कुरु करुणामत्र जने शरणमापन्ने ॥ २० ॥

परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

विसर्जन संस्कृत।

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर! ॥ १ ॥
आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥ २ ॥

मंत्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥ ३ ॥
आहूता ये पुरा देवाः लब्धभागा यथाक्रमं ।
ते मयाऽभ्यर्चिता भक्त्या सर्वे यांतु यथास्थिति ॥ ४ ॥
सर्वमंगलमांगल्यं सर्वकल्याणकारकम् ।
प्रधानं सर्व धर्माणां जैनं जयतु शासनम ॥ ५ ॥

दीप मालिका विधान ।

निर्वाणोत्सव

शुभ मिती कार्तिक कृष्णा अमावस्या के प्रात काल करीब ४ बजे शौचादि से निवृत्त होकर स्नानादि प्रातःकालीन क्रियायें करके श्रीमहावीर स्वामी का निर्वाण कल्याणक उत्सव मनाने के लिये श्रीमंदिरजी मे जाना चाहिये । वहाँ पर खूब ठाठ-बाटसे नृत्य महोत्सव, गायनवादित्रादि के साथ नित्यनियम पूजा करके श्रीमहावीर स्वामी की पूजा करनी चाहिये । महावीर स्वामी की पूजा मे गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणक का अर्घ चढाने के बाद प्रिय मधुर ध्वनि से निर्वाण काण्ड बोले, फिर मोक्ष कल्याणक का पद्य बोलकर उपस्थित सभी स्त्री-पुरुषों को अर्घ सहित निर्वाणजी का लाडू चढाना चाहिये । इस वक्त वादित्रादि की ध्वनि से मंदिर को गुंजायमान कर देना चाहिये ।

दीपावली-पूजा ।

जिस दिन दिवाली हो उस दिन सायंकाल मे शुभ वेला नक्षत्र मे निम्न प्रकार पूजा करके नई वही का मुहूर्त करें तथा दीपमालिका की रोशनी करें ।

एक ऊंची चौकी पर थाल या रकेबी रखकर उसमे केशर से ॐ लिखना चाहिये । उसी चौकी के आगे दूसरी चौकी पर

शास्त्रजी या जिनवाणी की पुस्तक विराजमान करना चाहिये। इन दोनों चौकियों के आगे एक छोटी चौकी पर पूजा की सामग्री तैयार रखना चाहिए और इसी के पास एक दूसरी छोटी चौकी पर थाल रखकर उसमें पूजा की सामग्री चढ़ाना चाहिये। पूजा करने वाले को पूर्व या उत्तर मुख करके पूजा करनी चाहिये। जो कुटुम्ब मे बड़ा हो या दूकान का मालिक हो वह चित्त मे एकाग्रता करके पूजा करे और उपस्थित सब लोग पूजा बोले तथा शान्ति से सुने। इसके बाद व्यापारी की बही मे केशर से स्वस्तिक लिखकर तथा दवात कमल के मौली बांधकर सामने रख लेना चाहिये। पूजा प्रारम्भ करने के पहले उपस्थित सब सज्जनों को नीचे लिखा श्लोक बोलकर केशर का तिलक कर लेना चाहिए।

तिलक मंत्र।

मंगल भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं कुंदकुंदाद्यो, जैनधर्मोऽस्तु मंगलं ॥१॥

तिलक करने के बाद साधारण नित्य नियम पूजा करके महावीर स्वामी की और सरस्वती की पूजा करना चाहिए। सरस्वती पूजा मे फल चढाने के बाद वस्त्र का पद्य बोलकर शास्त्रजी के लिए एक शुद्ध वस्त्र या वेष्टन चढाना चाहिए। पूजा कर चुकने के पश्चात् रकेबी मे कपूर प्रज्वलित करके सबको खडे होकर खूब ललित ध्वनि से नीचे लिखी आरती बोलनी चाहिये।

* जिनवाणी माता की आरती *

जय अम्बे वाणी, माता जय अम्बे वाणी।

तुमको निश दिन ध्यावत सुरनर मुनि ज्ञानी ॥टेर॥ श्रीजिन गिरते निकसी, गुरु गौतम वाणी। जीवन भ्रम तम नाशन दीपक दरशाणी॥ जय० ॥१॥ कुमति कुलाचल चरण, वज्र सु सरधानी।

नव नियोग निक्षेपण, देखन दरपाणी ॥ जय० ॥ २ ॥ पातक पंक पखालन, पुण्य पाणी । मोहमहार्णव डूबत, तारण नौकाणी ॥जय० ॥ ३ ॥ लोकालोक निहारण, दिव्य नेत्र स्थानी । निज पर भेद दिखावन, सूरज किरणानी ॥ जय०॥४॥ श्रावक मुनिगण जननी, तुमही गुणखानी । सेवक लख शुभदायक, पावन परमाणी ॥जय०॥

पश्चात नीचे लिखे अनुसार बहियों मे स्वस्तिकादि लिखकर वीर सम्वत्, विक्रम सम्वत, ईस्वी सन, मिती, वार, तारीख आदि लिखना चाहिये ।

श्री महावीरस्वामिने नम. ।

श्री
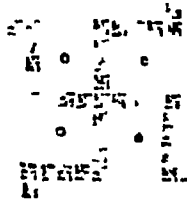
श्री श्री

श्री लाभ — श्री श्री श्री — श्री शुभ

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्रीऋषभाय नम — श्रीमहावीरस्वामिने नम.

श्रीगौतमगणधराय नम — श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै नमः

श्री केवलज्ञानलक्ष्मीदेव्यै नम ।

संक्षिप्त सूतकविधि।

सूतक मे देव शास्त्र गुरु की पूजन प्रक्षालादिक करना तथा मंदिरजी की जाजम वस्त्रादिको स्पर्श नहीं करना चाहिये। सूतक का समय पूर्ण हुये बाद पूजनादि करके पात्रदानादि करना चाहिये।

१—जन्म का सूतक दश दिन तक माना जाता है।

२—यदि स्त्री का गर्भपात (पांचवे छठे महिने मे) हो तो जितने महिने का गर्भपात हो उतने दिन का सूतक माना जाता है।

३—प्रसूता स्त्री को ४५ दिन का सूतक होता है, कहीं कहीं चालीस दिन का भी माना जाता है। प्रसूतिस्थान एक मास तक अशुद्ध है।

४—रजस्वला स्त्री चौथे दिन पति के भोजनादिक के लिये शुद्ध होती है परन्तु देव पूजन, पात्रदान के लिये पाचवें दिन शुद्ध होती है। व्यभिचारिणी स्त्री के सदा ही सूतक रहता है।

५—मृत्यु का सूतक तोन पीढी तक १२ दिनका माना जाता है। चौथी पीढी मे छह दिनका, पांचवी छठी पीढी तक चार दिनका, सातवीं पीढी मे तीन, आठवीं पीढी मे एक दिन रात, नवमी पीढी में स्नानमात्र में शुद्धता होती है।

६—जन्म तथा मृत्यु का सूतक गोत्र के मनुष्य को पांच दिन का होता है। तीन दिनके बालक की मृत्यु का तीन दिन तक का माना जाता है। इनके आगे बारह दिन का।

७—अपने कुल के किसी गृहत्यागी का सन्यास-मरण, वा किसी कुटुम्बी का संग्राम मे मरण होजाय तो एक दिनका सूतक माना जाता है।

८—यदि अपने कुलका कोई देशांतर में मरण करे और १२ दिन से पहले खबर सुने तो शेष दिनों का ही सूतक मानना चाहिये।

यदि १२ दिन पूर्ण हो गये हों तो स्नान मात्र सूतक जानो।
९—गौ, भैंस, घोड़ी आदि पशु अपने घर में जने तो एक दिन का सूतक और घर के बाहर जने तो सूतक नहीं होता। दासी, दास तथा पुत्री के घर मे प्रसूति होय तो एक दिन, मरण होय तो तीन दिन का सूतक होता है। यदि घर से बाहर हो तो सूतक नहीं। जो कोई अपने को अग्नि आदिक में जलाकर वा विष, शस्त्रादि से आत्महत्या करे तो छह महीने तक सूतक होता है। इसी प्रकार और भी विचार है सो आदिपुराण से जानना।
१०—बच्चा हुये बाद भैंसका दूध १५ दिन तक, गाय का दूध १० दिन तक, बकरी का ८ दिन तक अभक्ष्य (अशुद्ध) होता है। देश भेद से सूतक विधान मे कुछ न्यूनाधिक भी होता है परन्तु शास्त्र की पद्धति मिलाकर ही सूतक मानना चाहिये।

शांतिधारा पाठ।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय २ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते। ओं ह्रीं क्रौं मम पाप खंड २ हन २ दह २ पच २ पाचय २ अर्हन् झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्वः पः हः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः द्रां द्रीं द्रावय २ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठ: ठः अस्माकं श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शांतिरस्तु कान्तिरस्तु कल्याणमस्तु स्वाहा। एवं अस्माकं कार्यसिद्ध्यर्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थं श्रीमद्भगवदर्हत्सर्वज्ञपरमेष्ठिपरमपवित्राय नमोनमः। अस्माक श्री शांति भट्टारकपादपद्मप्रसादात् सद्धर्म श्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु स्वशिष्यपरशिष्यवर्गा प्रसीदंतु नः।

ओं वृषभाद्याः श्री वर्द्धमानपर्यंताश्चतुर्विंशत्यर्हंतो भगवंतः सर्वज्ञाः परममंगलनामधेयाः मे इहामुत्र च सिद्धिं तनोतु च सद्धर्म-कार्येषु इहामुत्र च सिद्धिं प्रयच्छंतु नः ।

ओं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थंकराय श्रीमद्रत्नत्रयरुपाय दिव्यतेजोमूर्तये प्रभामंडलमंडिताय द्वादशगणसहिताय अनंतचतुष्टयसहिताय समवशरणकेवलज्ञानलक्ष्मीशोभिताय अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसंयुक्ताय परमेष्ठीपवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयंभुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय अनंतसंसारचक्रप्रमर्दनाय अनंतज्ञानदर्शनवीर्य सुखास्पदाय त्रैलोक्यवशंकराय सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे उपसर्ग-विनाशनाय घातिकर्मक्षयंकराय अजराय अभवाय अस्माकं * "अमुकराशिनामधेयानां" व्याधिं हन्तु । श्रीजिनपूजनप्रसादात् मम सेवकस्य सर्वदोषरोगशोकभयपीडाविनाशनं भवतु !

ओं नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगाप-मृत्युविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षाम डामरविनाशनाय सर्वारिष्टशांतिकराय ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसानमः मम सर्वविघ्नशांतिं कुरु २ तुष्टिं पुष्टिं कुरु २ स्वाहा । मम कामं छिंद छिंद भिंद भिंद । रतिकामं छिंद २ भिंद २ बलिकामं छिंद २ भिंद २ । क्रोधं पापं वैरं च छिंद २ भिंद २ । अग्निवायुभयं छिंद २ भिंद २ । सर्वशत्रुविघ्नं छिंद २ भिंद २ । सर्वोपसर्गं छिंद २ भिंद २ । सर्वविघ्नं छिंद २ भिंद २ । सर्वराज्यभयं छिंद २ भिंद २ । सर्वचौरदुष्टभयं छिंद २ भिंद २ । सर्व सर्पवृश्चिकसिंहादिभय छिंद २ भिंद २ । सर्व ग्रहभयं छिंद २ भिंद २ । सर्वदोषं व्याधिं डामरं च छिंद २ भिंद २ । सर्व परमंत्रं

---

* अपनी राशि तथा नाम बोलना चाहिए ।

छिंद् २ भिंद २। सर्वात्मघातं पराघातं च छिंद् २ भिंद् २। सर्वं शूलरोगं कुक्षि-रोगं अक्षि-रोगं शिरो-रोगं ज्वर-रोगं च छिंद २ भिंद् २। सर्वं नरमारिं छिंद् २ भिंद २। सर्वं गजाश्वगोमहिषअजमारिं छिंद् २ भिंद २। सर्वशस्यधान्यवृक्षलतागुल्मपत्र पुष्पफलमारिं छिंद २ भिंद् २। सर्वराष्ट्रमारिं छिंद् २ भिंद् २। सर्वं विषयं छिंद् २ भिंद् २। सर्वक्रूरवेतालशाकिनीडाकिनी भयं छिंद् २ भिंद् २। सर्ववेदनीयं छिंद् २ भिंद् २। सर्वमोहनीयं छिंद् २ भिंद् २। सर्वापस्मारिं छिंद् २ भिंद् २। सर्वभगवती दुर्भगवतीभयं छिंद् २ भिंद् २। ममाशुभकर्मजनित दुःखान छिंद् २ भिंद् २। दुष्टजनकृतान् मंत्रतंत्र-दृष्टिमुष्टिछलछिद्र-दोषान् छिंद् २ भिंद् २। सर्वदुष्टदेवदानववीरनरनाहरसिंह-योगनीकृतदोषान् छिंद् २ भिंद २। सर्वअष्टकुलीनागजनित-विषयान् सव थावरजंगम वृश्चिक सर्पादिकृतदोषान् छिंद २ भिंद २। सर्वसिंहाष्टपदादिकृतदोषान् छिंद २ भिंद २। परशत्रुकृतमारणो-च्चाटनविद्वेषनमोहनवशीकरणादिदोषान् छिंद् २ भिंद २। ॐ ह्रीं × अमुकाय चक्रविक्रमसत्वतेजोबलशौर्यशांति पूरय २ सर्वं जीवानन्दनं जनानंदनं भव्यानंदनं गोकुलानंदनं च कुरु २। सर्वं राजानंदनं कुरु २। सर्वग्रामनगरखेड़ा कर्वटमंडवं द्रोणामुख संवाहनानंदनं कुरु २। सर्वानंदनं कुरु २ स्वाहा।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिव्यसनविवर्जितम।
अभयक्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते॥

श्रीशांतिरस्तु! शिवमस्तु! जयोऽस्तु! नित्यमारोग्यमस्तु! तव पुष्टिसमृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु! सुखमस्तु! अभिवृद्धिरस्तु! दीर्घायुरस्तु! कुलगोत्रधनं सदास्तु! सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभि-वृद्धिरस्तु।

× अपना नाम बोलना चाहिए।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असिआउसा अनाहतविद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वशांतिं कुरु स्वाहा।

आयुर्वल्ली विलासं सकलसुखफलैर्द्राघयित्वाश्वनल्पं।
धीरं हीरं शरीरं निरमसुपनयत्त्वा तनोत्त्वच्छ कीर्तिं॥
सिद्धि वृद्धि समृद्धि प्रथयतु तरणि स्फूर्यदुच्चैः प्रतापं।
कीर्ति शांति समाधिं वितरतु भवतामुत्तमा शांतिधारा॥

इति शांतिधारा।

तीसरा अध्याय

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

नरेंद्रं फणींद्रं सुरेंद्रं अधीशं, शतेंद्रं सु पुजैं भजैं नाय शीशं।
मुनींद्रं गणेंद्रं नमों जोड़ि हाथं, नमो देवदेवं सदा पार्श्वनाथं॥१॥
गजेंद्रं मृगेंद्रं गह्यो तू छुड़ावै, महाआगतैं नागतैं तू बचावै।
महावीरतैं युद्ध में तू जितावै, महा रोगतैं बंधतै तू छुड़ावै॥२॥
दुखी दुःख हर्ता सुखी सुक्खकर्त्ता, सदा सेवकों को महानंद भर्त्ता।
हरे यक्ष राक्षस भूतं पिशाचं, विषं डाकिनी विघ्न के भय अवाचं॥३
दरिद्रीनको द्रव्य के दान दीने, अपुत्रीनकों तै भले पुत्र कीने।
महासंकटों से निकारै विधाता. सबै संपदा सर्व को देहि दाता॥४॥
महाचोर को वज्रको भय निवारै, महापौन के पुञ्जतै तू उबारै।
महाक्रोध की अग्नि को मेघ-धारा, महालोभ-शैलेश को वज्रभारा।
महामोह अंधेर को ज्ञान भानुं, महाकर्मकांतारको दौं प्रधानुं।
किये नागनागिनअधोलोकस्वामी, हर्यो मान तू दैत्यको हो अकामी
तुही कल्पवृक्षं तुही कामधेनुं, तुही दिव्य चिंतामणी काम एनं।
पशू नर्क के दुःखतैं तू छुड़ावै, महास्वर्ग में मुक्ति में तू बसावै॥७॥
करै लोह को हेमपाषाण नामी, रटै नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी।

करै सेव ताकी करें देव सेवा, सुनै वैन सोही लहै ज्ञान मेवा ॥८॥
जपै जाप ताको नहीं पाप लागै, धरै ध्यान ताके सबै दोष भागै।
बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे, तुम्हारी कृपातें सरे काज मेरे। ६
दोहा—गणधर इन्द्र न कर सकैं तुम विनती भगवान।
'द्यानत' प्रीति निहारकैं, कीजे आप समान ॥१०॥

आलोचना पाठ।

दोहा—वंदौ पांचों परमगुरु, चौवीसों जिनराज।
करूं शुद्ध आलोचना, शुद्धिकरण के काज ॥१॥

सखी छंद चौदह मात्रा।

सुनिये जिन अरज हमारी, हम दोष किये अति भारी।
तिनकी अब निर्वृत्ति काजा, तुम शरण लही जिनराजा ॥२॥
इक वे ते चउ इंद्री वा, मनरहित सहित जे जीवा।
तिनकी नहिं करुणा धारी, निरदइ ह्वै घात विचारी ॥३॥
समरंभ समारंभ आरंभ, मनवचतन कीने प्रारंभ।
कृत कारित मोदन करिकै, क्रोधादि चतुष्टय धरिकै ॥४॥
शत साठ जु इमि भेदनतैं, अघ कीने पर छेदनतैं।
तिनकी कहुं कोलौ कहानी, तुम जानत केवलज्ञानी ॥५॥
विपरीत एकांत विनयके, संशय अज्ञान कुनय के।
वश होय घोर अघ कीने, वचतैं नहिं जाय कहीने ॥६॥
कुगुरुनकी सेवा कीनी, केवल अदयाकरि भीनी।
याविधि मिथ्यात भ्रमायो, चहुँगति मधि दोष उपायो ॥७॥
हिंसा पुनि झूठ जु चोरी, परवनितासों दृग जोरी।
आरम्भपरिग्रह भीनो, पनपाप जु या विधि कीनों ॥८॥
सपरस रसना घ्रानननको, दृग कान विषयसेवनकों।
वसु कर्म किये मनमानी, कछु न्याय अन्याय न जानी ॥९॥

फल पंच उदंबर खाये, मधु मांस मद्य चितचाहे।
नहिं अष्टमूलगुणधारी, विषयन सेये दुखकारी ॥ १० ॥
दुइवीस अभख जिनगाये, सो भी निशदिन भुंजाये।
कुछु भेदाभेद न पायो, ज्यौं त्यौं करि उदर भरायो ॥ ११ ॥
अनंतानुजुबंधी जानो, प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानो।
सञ्वलन चौकरी गुनिये, सब भेद जु षोडप मुनिये ॥ १२ ॥
परिहास अरति रति शोग, भय ग्लानि तिवेद संजोग।
पन वीस जु भेद भये इम, इनके वश पाप किये हम ॥ १३ ॥
निद्रावश शयन कराई, सुपने मधि दोष लगाई।
फिर जाग विषयवन धायो, नानाविधि विषफल खायो ॥ १४ ॥
आहार निहार विहारा, इनमें नहिं जतन विचारा।
बिन देखी धरी उठाई, बिन शोधी वस्तु जु खाई ॥ १५ ॥
तब ही परमाद सतायो, बहुविधि विकलप उपजायो।
कुछ सुधिबुधि नाहिं रही है, मिथ्यामति छाय गयी है ॥ १६ ॥
मरयादा तुमढिग लीनी, ताहू में दोष जु कीनी।
भिन भिन अब कैसे कहिये, तुम ज्ञानविषैं सब पइये ॥ १७ ॥
हा हा ! मैं दुठ अपराधी, त्रसजीवनराशि विराधी।
थावरकी जतन न कीनी, उर में करुना नहिं लीनी ॥ १८ ॥
पृथिवी बहु खोद कराई, महलादिक जागां चिनाई।
पुनि बिन गाल्यो जल ढोल्यो, पंखातैं पवन बिलोल्यो ॥ १९ ॥
हा हा मैं अदयाचारी, बहु हरितकाय जु विदारी।
तामधि जीवन के खंदा, हम खाये धरि आनन्दा ॥ २० ॥
हा हा ! परमाद बसाई, बिन देखे अगनि जलाई।
तामधि जे जीव जु आये, ते हू परलोक सिधाये ॥ २१ ॥
बीध्यो अन राति पिसायो, ईंधन बिन सोधि जलायो।
झाडू ले जागां बुहारी, चिंवटी आदिक जीव विदारी ॥ २२ ॥

जल छानि जिवानी कीनी, सो हू पुनि डारि जु दीनी।
नहिं जलथानक पहुँचाई, किरिया विन पाप उपाई ॥ २३ ॥
जल मल मोरिन गिरवायो, कृमिकुल वहु घात करायो।
नदियन विच चीर धुवाये, कोसनके जीव मराये ॥ २४ ॥
अन्नादिक शोध कराई, ता मे जु जीव निसराई।
तिनका नहिं जतन कराया, गलियारे धूप डराया ॥ २५ ॥
पुनि द्रव्य कमावन काजे, बहु आरंभ हिंसा साजे।
किये तिसनावश भारी, करुना नहिं रंच विचारी ॥ २६ ॥
ताको जु उदय अब आयो, नाना विधि मोहिं सतायो।
फल भुञ्जत जियदुख पावैं, वचतैं कैसे करि गावैं ॥ २७ ॥
तुम जानत केवलज्ञानी, दुख दूर करो शिवथानी।
हम तो तुम शरण लही है, जिन तारन विरद सही है ॥ २८ ॥
जो गांवपति इक होवे, सो भी दुखिया दुख खोवे।
तुम तीन भुवन के स्वामी, दुख मेटहु अंतरजामी ॥ २९ ॥
द्रौपदिको चीर वढ़ायो, सीता प्रति कमल रचायो।
अञ्जन से किये अकामी, दुख मेटहु अंतरजामी ॥ ३० ॥
मेरे अवगुण न चितारो. प्रभु अपनो विरद निहारो।
सब दोषरहित करि स्वामी, दुख मेटहु अन्तरजामी ॥ ३१ ॥
इन्द्रादिक पदवी न चाहूँ, विषयनि मे नाहिं लुभाऊं।
रागादिक दोष हरीजै, परमातम निजपद दीजै ॥ ३२ ॥

दोहा—दोषरहित जिनदेवजी, निजपद दीज्यो मोय।
सब जीवन के सुख बढे, आनन्द मंगल होय ॥
अनुभव माणिक पारखी, जौंहरी आप जिनंद।
ये ही वर मोहि दीजिये, चरण शरण आनंद ॥

॥ इति ॥

भाषा सामायिक पाठ

अथ प्रथम प्रतिक्रमण कर्म

काल अनंत भ्रम्यो जगमें सहिया दुख भारी । जन्ममरण नित किये पाप को ह्वै अधिकारी ।। कोटि भवांतरमाहिं मिलन दुर्लभ सामायिक । धन्य आज मैं भयो योग मिलियो सुखदायक ।। १ ।। हे सर्वज्ञ जिनेश किये जे पाप जु मैं अब । ते सब मनवच-काय योग की गुप्ति बिना लभ ।। आप समीप हजूरमाहिं मैं खड़ो २ सब । दोष कहूं सो सुनो करो नठ दुःख देहिं जब ।। ।। क्रोध मान मद लोभ मोह मायावशि प्रानी । दुःख सहित जे किये दया तिनकी नहिं आनी ।। बिना प्रयोजन एकेंद्रिय बि ति चउ पंचेंद्रिय । आप प्रसादहिं मिटै दोष जो लाग्यो मोहि जिय ।। ३ ।। आपस में इक ठौर थापि करि जे दुख दीने । पेलि दिये पगतलें दावकरि प्राण हरीने ।। आप जगत के जीव जिते तिन सबके नायक । अरज करौं मैं सुनो दोष मेटो सुखदायक ।। ४ ।। अंजन आदिक चोर महा घनघोर पापमय । तिनके जे अपराध भये ते क्षमा क्षमा किय ।। मेरे जे अब दोष भये ते क्षमों दयानिधि । यह पडिकोणो कियो आदि षटकर्म माहिं विधि ।। ५ ।।

अथ द्वितीय प्रत्याख्यान कर्म

जो प्रमादवशि होय विराधे जीव घनेरे । तिनको जो अपराध भयो मेरे अघ ढेरे ।। सो सब झूठो होउ जगतपति के परसादे । जा प्रसादतैं मिले सर्व सुख दुःख न लाधै ।। ६ ।। मैं पापी निर्लज्ज दयाकरि हीन महाशठ । किये पाप अति घोर पापमति होय चित्त दुठ ।। निंदूं हूँ मैं बारबार निज जियको गरहूँ । सब विध धर्म उपाय पाय फिर पापहिं करहूँ ।। ७ ।। दुर्लभ है नरजन्म तथा श्रावककुल भारी । सतसंगति संयोग धर्म जिन श्रद्धाधारी ।।

जिनवचनामृतधार समावर्तै जिनवानी । तौहू जीव संहारे धिक धिक धिक हम जानी ॥८॥ इन्द्रियलंपट होय खोय जिन ज्ञानजमा सब । अज्ञानी जिम करै तिसि विधि हिंसक ह्वै अब ॥ गमना गमन करतो।जीव विराधे भोले । ते सब दोष किये निंदूं मन वच तन तोले ॥ ९ ॥ आलोचनविधथकी दोष लागे जु घनेरे । ते सब दोष विनाश होउ तुमतैं जिन मेरे ॥ बार बार इस भांति मोह मद दोष कुटिलता । ईर्षादिकतै भये निंदिये जे भयभीता ॥ १० ॥

अथ तृतीय सामायिक कर्म ।

सब जीवनमें मेरे समताभाव जग्यो है । सब जिय मो सम समता राखो भाव लग्यो है ॥ आर्त्त रौद्र द्वय ध्यान छॉडि करिहूँ सामायिक । संयम मो कब शुद्ध होय यह भाव बधायक ॥ ११ ॥ पृथिवी जल अरु अग्नि वायु चउ काय वनस्पत । पंचहि थावर-माहिं तथा त्रस जीव बसैं जित ॥ बे इन्द्रिय तिय चउ पचेंद्रियमाहिं जीव सब । तिनतैं क्षमा कराऊं मुझ पर क्षमा करो अब ॥१२॥ इस अवसर में मेरे सब सम कंचन अरु तृण । महल मशान समान शत्रु अरु मित्र हि सम गण ॥ जामन मरन समान जानि हम समता कीनी । सामायिकका काल जितै यह भाव नवीनी ॥ १३ ॥ मेरो है इक आतम तामैं ममत जु कीनौ । और सबै मम भिन्न जानि समतारस भीनौ ॥ मात पिता सुत बंध मित्र तिय आदि सबै यह । मौतैं न्यारे जानि जथारथरूप कर्यो गह ॥ १४ ॥ मैं अनादि जगजालमांहि फॅसि रूप न जाण्यो । एकेंद्रिय दे आदि जंतुको प्राण हराण्यो ॥ ते अब जीवसमूह सुनो मेरी यह अरजी । भवभव को अपराध क्षमा कीज्यो करि मरजी ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थ स्तवन कर्म ।

नमूं ऋषभ जिनदेव अजित जिन जीत कर्मकों । संभव भव-दुखहरण करण अभिनंद शर्मकों ॥ सुमति सुमतिदातार तार भव-

सिंधु पारकर। पद्मप्रभ पद्माभ भानि भवभीति प्रीतिधर ॥ १६ ॥
श्रीसुपार्श्वकृत पास नाश भव जास शुद्ध कर। श्रीचंद्रप्रभ चंद्रकांति
सम देहकांति धर ॥ पुष्पदंत दमि दोषकोश भवि पोप रोपहर।
शीतल शीतल करन हरन भवताप दोषहर ॥ १७ ॥ श्रेयरूप जिन
श्रेय ध्येय नित सेय भव्यजन। वासुपूज्य शतपूज्य वासवादिक भव-
भय हन ॥ विमल विमलमति देन अंतगत हैं अनंत जिन। धर्म शर्म
शिवकरन शांति जिन शांतिविधायिन ॥१८॥ कुन्थ कुन्थ मुखजीव-
पालअरनाथ जाल हर। मल्लि मल्लसम मोहमल्ल मारन प्रचार
धर। मुनिसुव्रत व्रतकरण नमत सुरसंघहि नमि जिन। नेमिनाथ
जिन नेमि धर्मरथ मांहि ज्ञान धन ॥ १९ ॥ पार्श्वनाथ जिन पार्श्व
उपलसम मोक्षरमापति। वर्द्धमान जिन नमूं वमूं भवदुःख
कर्मकृत ॥ याविध मैं जिनसंघरूप चउवीस संख्यधर। स्तवूं नमूं
हूं बार बार वन्दौं शिवसुखकर ॥ २० ॥

अथ पंचम वंदना कर्म।

वंदूं मैं जिनवीर धीर महावीर सुसन्मति। वर्द्धमान अतिवीर
वंदि हौं मनवचतनकृत ॥ त्रिशलातनुज महेश धीश विद्यापति बंदूं।
वंदूं नितप्रति कनकरूपतनु पाप निकंदूं ॥ २१ ॥ सिद्धारथ नृपनंद
द्वन्द दुखदोष मिटावन। दुरित दवानल ज्वलित ज्वाल जगजीव
उधारन ॥ कुण्डलपुर करि जन्म जगतजिय आनंदकारन। वर्ष
बहत्तरि आयु पाय सबही दुख टारन ॥ २२ ॥ सप्त हस्त तनु तुङ्ग
भंग कृत जन्म मरण भय। बालब्रह्ममय ज्ञेय हेय आदेय ज्ञानमय ॥
दे उपदेश उधारि तारि भवसिंधु जीवधन। आप बसे शिवमांहि
ताहि वंदौं मनवचतन ॥ २३ ॥ जाके वंदनथकी दोष दुख दूरहि
जावै। जाके वंदनथकी मुक्ति तिय सन्मुख आवै ॥ जाके
वंदनथकी वंद्य होवैं सुरगनके। ऐसे वीर जिनेश वन्दिहूं क्रमयुग
तिनके ॥ २४ ॥ सामायिक षट्कर्ममांहि वंदन यह पंचम।

वंदे वीरजिनेंद्र इन्द्रशतवंद्य वंद्य मम ॥ जन्म मरण भय हरो करो अघ शांत शांतिमय । मैं अघकोश सुपोप दोपको दोष विनाशय ।२५।

अथ षष्टम कायोत्सर्ग कर्म ।

कायोत्सर्ग विधान करूं अन्तिम सुखदाई । काय त्यजनमय होय काय सवका दुखदाई ॥पूरव दक्षिण नमूं दिशा पश्चिम उत्तर मैं । जिनगृह वंदन करूं हरूं भव पापतिमिर मैं ॥ २६ ॥ शिरोनती मैं करूं नमूं मस्तक कर धरिकै । आवर्त्तादिक क्रिया करूं मनवच-मदहरिकै ॥ तीन लोक जिनभवनमांहि जिन हैं जु अकृत्रिम । कृत्रिम हैं द्वयअर्द्धद्वीपमांहि वदौं जिम ॥ २७ ॥ आठकोड़िपरि छप्पन लाख जु सहस सत्याणूं । चारि शतकपरि असी एक जिनमंदिर जाणूं ॥ व्यंतर ज्योतिषमांहि संख्य रहिते जिनमंदिर । जिनगृह वंदन करूं हरहु मम पाप संघकर ॥ २८ ॥ सामायिक सम नाहिं और कोउ वैर मिटायक । सामायिक सम नाहिं और कोउ मैत्रीदायक ॥ श्रावक अणुव्रत आदि अंत सप्तम गुणथानक । यह आवश्यक किये होय निश्चय दुखहानक ॥ १६ ॥ जे भवि आतम काज करण उद्यमके धारी । ते सब काज विहाय करो सामायिक सारी ॥ राग दोप मद मोह क्रोध लोभादिक जे सब । बुध 'महाचंद्र' विलाय जाय तातै कीज्यो अब ॥

इति सामायिक भाषापाठ समाप्त ।

सामायिक पाठ (भाषा)

[श्री पं० रामचन्द्र उपाध्याय कृत]

नित देव ! मेरी आत्मा धारण करे इस नेमको,
मैत्री करे सब प्राणियोंसे, गुणिजनोंसे प्रेमको ।
उनपर दया करती रहे जो दुःख-ग्राह-ग्रहीत हैं,
उनसे उदासीसी रहे जो धर्मके विपरीत हैं ॥१॥

करके कृपा कुछ शक्ति ऐसी दीजिए मुझमें प्रभो,
तलवारको ज्यों म्यानसे करते विलग हैं हे विभो।
गतदोष आत्मा शक्तिशाली है मिली मम अंगसे,
उसको विलग उस भाँति करने के लिए ऋजु ढंगसे ॥२॥
हे नाथ ! मेरे चित्तमें समता सदा भरपूर हो,
सम्पूर्ण ममताकी कुमति मेरे हृदय से दूर हो।
बनमें, भवनमें, दुःखमें सुखमें नहीं कुछ भेद हो,
अरि-मित्रमें, मिलने-बिछुड़नेमें न हर्ष न खेद हो ॥३॥
अतिशय घनी तम-राशिको दीपक हटाते हैं यथा,
दोनों कमल-पद आपके अज्ञान-तम हरते तथा।
प्रतिविम्बसम स्थिररूप वे मेरे हृदय में लीन हों,
मुनिनाथ ! कीलित तुल्य वे उर पर सदा आसीन हों ॥४॥
यदि एक-इन्द्रिय आदि देही घूमते फिरते मही,
जिनदेव ! मेरी भूलसे पीड़ित हुए होवें कहीं।
टुकड़े हुए हों, मल गये हों, चोट खाये हों कभी,
तो नाथ ! वे दुष्टाचरण मेरे बनें झूठे सभी ॥५॥
सन्मुक्तिके सन्मार्गसे प्रतिकूल पथ मैंने लिया,
पञ्चेन्द्रियों चारों कषायोंमें स्वमन मैंने दिया।
इस हेतु शुद्ध चरित्रका जो लोप मुझसे हो गया,
दुष्कर्म वह मिथ्यात्व को हो प्राप्त प्रभु ! करिए दया ॥६॥
चारों कषायोंसे, वचन, मन, कायसे जो पाप है—
मुझसे हुआ, हे नाथ ! वह कारण हुआ भव-ताप है।
अब मारता हूँ मैं उसे आलोचना-निन्दादिसे,
ज्यों सकल विषको वैद्यवर है मारता मन्त्रादिसे ॥७॥
जिनदेव ! शुद्ध चरित्रका मुझसे अतिक्रम जो हुआ,
अज्ञान और प्रमादसे व्रतका व्यक्तिक्रम जो हुआ।

अतिचार और अनाचरण जो जो हुए मुझसे प्रभो !
सबकी मलिनता मेटनेको प्रतिक्रम करता विभो ! ॥८॥
मनकी विमलता नष्ट होनेको अतिक्रम है कहा,
औ शीलचर्याके विलंघन को व्यतिक्रम है कहा।
हे नाथ ! विषयोंमे लपटनेको कहा अतिचार है,
आसक्त अतिशय विषयमें रहना महाऽनाचार है ॥९॥
यदि अर्थ, मात्रा, वाक्य में पदमें पड़ी त्रुटि हो कहीं,
तो भूलसे ही वह हुई, मैंने उसे जाना नहीं।
जिनदेववाणी ! तो क्षमा उसको तुरत कर दीजिए,
मेरे हृदयमें देवि ! केवलज्ञानको भर दीजिए ॥१०॥
हे देवि ! तेरी वन्दना मैं कर रहा हूँ इस लिए,
चिन्तामणिप्रभ है सभी वरदान देनेके लिए।
परिणामशुद्धि, समाधि मुझमे बोधिका संचार हो,
हो प्राप्ति स्वात्माकी तथा शिवसौख्यकी, भव पार हो ॥११॥
मुनिनायकोंके वृन्द जिसको स्मरण करते हैं सदा,
जिसका सभी नर अमरपति भी स्तवन करते हैं सदा।
सच्छास्त्र वेद-पुराण जिसको सर्वदा हैं गा रहे,
वह देवका भी देव बस मेरे हृदय में आ रहे ॥१२॥
जो अन्तरहित सुबोध-दर्शन और सौख्यस्वरूप है,
जो सब विकारों से रहित, जिससे अलग भवकूप है।
मिलता बिना न समाधि जो, परमात्म जिसका नाम है,
देवेश वह उर आ बसे मेरा खुला हृद्धाम है ॥१३॥
जो काट देता है जगतके दुःखनिर्मित जालको,
जो देख लेता है जगतकी भीतरी भी चालको।
योगी जिसे हैं देख सकते, अन्तरात्मा जो स्वयम्,
देवेश वह मेरे हृदय-पुरका निवासी हो स्वयम् ॥१४॥

कैवल्यके सन्मार्गको दिखला रहा है जो हमें,
जो जननके या मरणके पड़ता न दुःख-सन्दोहमें।
अशरीर हो त्रैलोक्यदर्शी दूर है कुकलंकसे,
देवेश वह आकर लगे मेरे हृदयके अंकसे ॥१५॥
अपना लिया है निखिल तनुधारी-निवहने ही जिसे,
रागादि दोष-व्यूह भी छू तक नहीं सकता जिसे।
जो ज्ञानमय है, नित्य है, सर्वेन्द्रियोंसे हीन है,
जिनदेव देवेश्वर वही मेरे हृदयमें लीन है ॥१६॥
संसारकी सब वस्तुओंमे ज्ञान जिसका व्याप्त है,
जो कर्म-बन्धन-हीन, बुद्ध, विशुद्ध, सिद्धिप्राप्त है।
जो ध्यान करनेसे मिटा देता सकल कुविकारको,
देवेश वह शोभित करे मेरे हृदय-आगार को ॥१७॥
तम-संघ जैसे सूर्य-किरणों को न छू सकता कहीं,
उस भाँति कर्म-कलंक दोषाकर जिसे छूता नहीं।
जो है निरंजन वस्त्वपेक्षा, नित्य भी है, एक है,
उस आप्तप्रभुकी शरणमें हूँ प्राप्त, जो कि अनेक है ॥१८॥
यह दिवसनायक लोकका, जिसमें कभी रहता नहीं,
त्रैलोक्य-भासक ज्ञान-रवि पर है वहाँ रहता सही।
जो देव स्वात्मामें सदा स्थिर-रूपताको प्राप्त है,
मैं हूँ उसी की शरणमें, जो देववर है, आप्त है ॥१९॥
अवलोकने पर ज्ञानमे जिसके सकल संसार ही—
है स्पष्ट दिखता, एकसे है दूसरा मिलकर नहीं।
जो शुद्ध, शिव है, शान्त भी है, नित्यताको प्राप्त है,
उसकी शरणको प्राप्त हूँ, जो देववर है, आप्त है ॥२०॥
वृक्षावली जैसे, अनलकी लपटसे रहती नहीं,
त्यों शोक, मन्मथ, मानको रहने दिया जिसने नहीं।
भय, मोह, नींद, विषाद, चिन्ता भी न जिसको व्याप्त है,

उसकी शरणमें हूँ गिरा, जो देववर है, आप्त है ॥२१॥
विधिवत शुभासन घासका या भूमिका बनता नहीं,
चौकी, शिलाको ही शुभासन मानती बुधता नहीं।
जिससे कषायारीन्द्रियां खटपट मचाती हैं नहीं,
आसन सुधी जनके लिए है आतमा निर्मल वही ॥२२॥
हे भद्र! आसन, लोक-पूजा, संघकी संगति तथा,
ये सब समाधीके न साधन वास्तविक में है प्रथा।
सम्पूर्ण बाहर-वासनाको इस लिए तू छोड़ दे,
अध्यात्ममें तू हरघड़ी होकर निरत रति जोड़ दे ॥२३॥
जो बाहरी है वस्तुयें, वे हैं नहीं मेरी कहीं,
उस भांति हो सकता कहीं उनका कभी मैं भी नहीं।
यों समझ बाह्याडम्बरोंको छोड़ निश्चित-रूपसे,
हे भद्र! हो जो स्वस्थ तू बच जायगा भवकूपसे ॥२४॥
निजको निजात्मा-मध्यमें ही सम्यगवलोकन करे,
तू दर्शन-प्रज्ञानमय है, शुद्धसे भी है परे।
एकाग्र जिसका चित्त है, तू सत्य इसको मानना,
चाहे कहीं भी हो, समाधिप्राप्त उसको जानना ॥२५॥
मेरी अकेली आतमा परिवर्तनोंसे हीन है,
अतिशय विनिर्मल है सदा सद्‌ज्ञानमें ही लीन है।
जो अन्य सब हैं वस्तुयें वे ऊपरी ही हैं सभी,
निज कर्मसे उत्पन्न हैं अविनाशिता क्यों हो कभी ॥२६॥
है एकता जब देह के साथमें जिसकी नहीं,
पुत्रादिकोंके साथ उसका ऐक्य फिर क्यों हो कहीं।
जब अंग-भरसे मनुजके चमड़ा अलग हो जायगा,
तो रोंगटोंका छिद्रगण कैसे नहीं खो जायगा ॥२७॥
संसाररूपी गहनमें है जीव बहु दुख भोगता,

वह बाहरी सब वस्तुओंके साथ कर संयोगता।
यदि मुक्तिकी है चाह तो फिर जीवगण! सुन लीजिए,
मनसे, वचनसे, कायसे उसको अलग कर दीजिए ॥२८॥
देही! विकल्पित जालको तू दूर कर दे शीघ्र ही,
संसार-वनमें डोलनेका मुख्य कारण है यही।
तू सर्वदा सबसे अलग निज आतमाको देखना,
परमातमाके तत्त्वमें तू लीन निजको लेखना ॥२९॥
पहले समयमें आतमाने कर्म हैं जैसे किए,
वैसे शुभाशुभ फल यहाँ पर सांप्रतिक उसने लिए।
यदि दूसरे के कर्मका फल जीवको हो जाय तो,
हे जीवगण! फिर सफलता निज कर्मकी खो जाय तो ॥३०॥
'अपने उपार्जित कर्म-फलको जीव पाते हैं सभी,
उसके सिवा कोई किसी को कुछ नहीं देता कभी'।
ऐसा समझना चाहिए एकाग्र मन होकर सदा,
'दाता अपर है भोगका' इस बुद्धिको खोकर सदा ॥३१॥
सबसे अलग परमातमा है, अमितगतिसे वन्द्य है,
हे जीवगण! वह सर्वदा सब भाँति ही अनवद्य है।
मनसे उसी परमातमा को ध्यानमें जो लायगा,
वह श्रेष्ठ लक्ष्मीके निकेतन मुक्ति-पदको पायगा ॥३२॥
पढ़कर इन द्वात्रिंश पद्यको, लखता जो परमात्मवन्द्यको।
वह अनन्यमन हो जाता है, मोक्ष-निकेतनको पाता है ॥३३॥

निर्वाणकाण्ड (गाथा)

अट्ठावयम्मि उसहो चम्पाए वासुपुज्जजिणणाहो। उज्जंते णेमि जिणो पावाए णिव्वुदो महावीरो ॥१॥ वीसं तु जिणवरिंदा अमरासुरवंदिदा धुदकिलेसा। सम्मेदे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो

तेसिं ॥२॥ वरदत्तो य वरंगो सायरदत्तो य तारवरणयरे । आहुट्ठय-कोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥३॥ णेमिसामि पज्जण्णो संवु-कुमारो तहेव अणिरुद्धो । बाहत्तरिकोडीओ उज्जन्ते सत्तसयासिद्धा । ॥४॥ रामसुवा वेण्णि जणा लाडणरिंदाण पंचकोडीओ । पावागिर-वर सिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ ५ ॥ पंडुसुआ तिण्णिजणा दविडणरिंदाण अट्ठकोडीओ । सत्तुञ्जयगिरि सिहरे णिव्वाणगया णमो तेसि ॥५॥ संते जे बलभद्दा जदुवणरिंदाण अट्ठकोडिओ । गजपंथे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥७॥ रामहणू सुग्गीओ गवयगवाक्खो य णीलमहणीलो । णवणवदीकोडीओतुङ्गीगिरिणि-व्वुदे वदे ॥८॥ णंगाणंगकुमारा कोडीपंचद्धमुणिवरा सहिया । सुवण्ण-गिरिवर सिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥६॥ दहमुहरायस्य सुवा कोडीपञ्चद्धमुणिवरा सहिया । रेवाउहयतडग्गे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१०॥ रेवाणइए तीरे पश्चिमभायम्मि सिद्धवरकूडे । दो चक्की दह कप्पे आहुट्ठयकोडिणिव्वुदे वंदे ॥११॥ वडवाणीवरणयरे दक्खिणभायम्मि चूलगिरिसिहरे । इ दजीदकुम्भयपणो णिव्वाणगया णमो तेसिं ।१२। पावागिरिवरसिहरे सुवण्णभद्दाइमुणिवरा चउरो। चलणाणईतडग्गे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१३॥ फलहोडीवरगामे पश्चिमभायम्मि दोणगिरिसिहरे । गुरुदत्ताइमुणिंदा णिव्वाणगया णमो तेसि ॥१४॥ णायकुमारमुणिंदो वालमहावालि चेव अज्झेया । अट्ठावयगिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसि ॥१५॥ अचलपुरवरण-यरे ईसाणे भाए मेढगिरिसिहरे । आहुट्ठयकोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१६॥ वंसत्थलवरणियरे पच्छिमभायम्मि कुंथुगिरि-सिहरे । कुलदेसभूसणमुणी णिव्वाणगया णमा तेसिं ॥१७॥ जस रहरायस्स सुआ पंचसयाइं कलिंगदेसम्मि । कोडिसिलाकोडिमुणी णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१८॥ पासस्स समवसरणे सहिया वरद-त्तमुणिवरा पंच । रिस्सिंदे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ।१६

[अतिशयक्षेत्रकाण्डम्]

पासं तह अहिणंदण णायदहि मंगलाउरे वंदे। अस्सारम्भे पट्टणि मुणिसुव्वओ तहेव वंदामि० ॥ १ ॥ बाहुवलि तह वंदमि पोयणपुरहत्थिणापुरे वंदे। शांति कुंथुव अरिहो वाणारसिए सुपासपासं च ॥ २ ॥ महुराए अहिछित्ते वीरं पासं तहेव वंदामि। जंबुमुणिंदो वंदे णिव्वुइपत्तोवि जंबुवणगहणे ॥ ३ ॥ पंचकल्याण-ठाणइं जाणवि संजायमज्झलोयम्मि। मणवयकायसुद्धी सव्वं सिरसा णमस्सामि ॥४॥ अग्गलदेवं वंदमि वरणयरे णिवडकुंडली वंदे। पासं सिवपुरि वंदमि होलागिरिसिखदेवम्मि ॥५॥ गोमटदेवं वंदमि पंचसयं धणुहदेहउच्चंतं। देवा कुणति वुट्टी केसरिकुसुमाण तस्स उवरिम्मि ॥ ६ ॥ णिव्वाणठाण जाणिवि अइसयठाणाणि अइसए सहिया। संजादमिच्चलोए सव्वे सिरसा णमस्सामि ॥७॥ जो जण पढइ तियाल णिव्वुइकंडंपि भावसुद्धीए। भुंजदि णरसुर सुक्खं पच्छा सो लहइ णिव्वाणं ॥ ८ ॥

इति अइसइखित्तकंडं।

निर्वाणकांड (भाषा)।

दोहा:—वीतराग वंदौ सदा, भावसहित सिर नाय।
कहूँ कांड निर्वाणकी, भाषा सुगम बनाय ॥ १ ॥

चौपई १५ मात्रा

अष्टापद आदीसुरस्वामि, वासुपूज्य चंपापुरि नामि। नेमिनाथ-स्वामी गिरनार। वंदौ भावभगति उरधार ॥२॥ चरम तीर्थंकर चरम शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर॥ शिखरसमेद जिनेसुर वीस, भावसहित वंदौ निशदीस ॥ ३ ॥ वरदत्तराय रु इन्द्र मुनिंद, सायरदत्त आदि गुणवृन्द ॥ नगरतारवर मुनि अठकोडि, वंदौं भावसहित करजोडि ॥ ४ ॥ श्री गिरनार शिखर विख्यात, कोडि

बहत्तर अरु सौ सात। शंबु प्रद्युम्न कुमार द्वै भाय, अनिरुध आदि नमूं तसु पाय ॥ ५ ॥ रामचंद्र के सुत द्वै वीर, लाडनरिंद आदि गुणधीर। पाँच कोडि मुनि मुक्ति मंझार, पावागिरि वंदौं निरधार ॥ ६ ॥ पांडव तीन द्रविडराजान, आठकोडि मुनि मुकति पयान। श्रीशत्रुंजयगिरि के शीस, भाव सहित वंदौ निशदीस ॥७॥ जे बलभद्र मुकति में गये, आठकोडि मुनि औरहु भये। श्री गज पंथ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूं तिहुंकाल ॥८॥ राम हणू-सुग्रीव सुडोल, गवयगवाख्य नील महानील। कोडि निन्याणवे मुक्ति पयान, तुंगीगिर वंदौ धरि ध्यान ॥६॥ नंग अनंग कुमार सुजान, पाचकोडि अरु अर्ध प्रमान। मुक्ति गये सोनागिर शीश, ते वंदौ त्रिभुवनपति ईश ॥१०॥ रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवातट सार। कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वंदौं धरि परम हुलास ॥११ रेवा नदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जह छूट। द्वै चक्री दश कामकुमार, आडकोडि वंदौं भव पार ॥१२॥ बडवानी बडनगर सुचग दक्षिण दिशि गिरिचूल उतंग। इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते वंदौं भवसागर तर्ण ॥१३॥ सुवरण भद्र आदि मुनिचार, पावागिरि वर शिखर मंझार। चेलना नदीतीर के पास, मुक्ति गये वन्दौं नित तास ॥१४॥ फलहोडी वड़गाम अनूप, पश्चिम दिशा द्रोणगिरि रूप। गुरुदत्तादि मुनीसुर जहा, मुक्ति गये वन्दौ नित तहां ॥१५॥ बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय। श्री अष्टापद मुक्ति मंझार, ते वन्दौं नित सुरत सभार ॥१६॥ अचलापुर की दिश ईसान, तहा मेढगिरि नाम प्रधान। साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूं चितलाय ॥१७॥ वंस-स्थल वनके ढिग होय, पश्चिमदिशा कुंथुगिरि सोय। कुल-भूषण दिशि-भूषण नाम, तिनके चरणनि करूं प्रणाम ॥१८॥ जसधर राजा के सुत कहे, देश कलिंग पांचसौ लहे। कोटिशिला मुनि

कोटि प्रमान, वन्दन करूं जौरजुगपान ॥१६॥ समवसरण श्री-पार्श्व जिनंद, रेसिंदीगिरि नयनानंद। वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दौं नित धरम जिहाज ॥२०॥ मथुरापुर पवित्र उद्यान, जंबूस्वामीजी निर्वाण। चरम केवली पंचमकाल, ते वंदौं नित दीन दयाल ॥२१॥ तीन लोक के तीरथ जहां, नित प्रति वन्दन कीजै तहा। मनवचकायसहित सिर नाय, वन्दन करहिं भविक गुणगाय ॥ २२ ॥ सम्वत् सतरहसौ इकताल, आश्विन शुदि दशमी सुविशाल। 'भैया' वन्दन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकांड गुणमाल ॥ २३ ॥

॥ इति ॥

मेरी भावना

जिसने रागद्वेषकामदिक जीते, सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया॥
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
भक्ति-भाव से प्रेरित हो यह चित्त उसी में लीन रहो ॥ १ ॥
विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्य-भाव धन रखते हैं।
निज-परके हित साधन मे जो, निशिदिन तत्पर रहते हैं॥
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुख समूह को हरते हैं ॥ २ ॥
रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन ही जैसी चर्या में यह चित्त सदा अनुरक्त रहे॥
नहीं सताऊँ किसी जीव को; झूंठ कभी नहीं कहा करूँ।
पर धन *वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ ॥ ३ ॥
अहंकार का भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ।

*महिलाएँ वनिता के स्थान पर 'भर्त्ता' पढ़ें।

देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या-भाव धरूँ ॥
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य-व्यवहार करूँ।
बने जहाँ तक इस जीवन में औरों का उपकार करूँ ॥ ४ ॥
मैत्रीभाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दीन-दुखी जीवों पर मेरे, उरसे करुणा स्रोत बहे ॥
दुर्जन क्रूर-कुमार्ग रतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्यभाव रखूँ मैं उन पर ऐसी परणति हो जावे ॥ ५ ॥
गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहां तक उनकी सेवा करके यह मन सुख पावे ॥
होऊँ नहीं-कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे ॥ ६ ॥
कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊं या, मृत्यु आज ही आ जावे ॥
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे ॥ ७ ॥
होकर सुख मे मग्न न फूले, दुख में कभी न घबरावे।
पर्वत नदी-श्मसान-भयानक, अटवी से नहिं भय खावे ॥
रहे अडोल-अकम्प निरन्तर, यह मन दृढतर बन जावे।
इष्ट-वियोग अनिष्ट-योग मे सहनशीलता दिखलावे ॥ ८ ॥
सुखी रहे सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे।
वैर-पाप अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावे ॥
घर घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृतदुष्कर हो जावे।
ज्ञान-चरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्मफल सब पावे ॥९॥
ईति-भीति व्यापे नहिं जगमें, वृष्टि समय पर हुआ करे।
धर्म-निष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे ॥
रोग-मरी-दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शांति से जिया करे।

परम अहिंसा धर्म जगत में फैल सर्वहित किया करे ॥ १० ॥
फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय-कटुक-कठोर शब्द नहिं, कोई मुख से कहा करे ॥
बनकर सब 'युग-वीर' हृदय से देशोन्नति रत रहा करे।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुख संकट सहा करे ॥ ११ ॥

दुःख–हरण स्तुति ।

श्रीपति जिनवर करुणायतनं, दुखहरण तुम्हारा बाना है।
मत मेरी बार अबार करो, मोहि देहु विमल कल्याना है ॥ टेक ॥
त्रैकालिक वस्तु प्रत्यक्ष लखो, तुमसौं कछु बात न छाना है।
मेरे उर आरत जो बरतैं, निहचै सब सो तुम जाना है ॥
अवलोक विथा मत मौन गहो, नहिं मेरा कहीं ठिकाना है।
हे राजिवलोचन सोचविमोचन, मैं तुग सौं हित ठाना है ॥श्री०॥१॥
सब ग्रन्थनि में निरग्रन्थनि ने, निरधार यही गणधार कही।
जिननायक ही सब लायक हैं, सुखदायक छायक 'ज्ञानमही ॥
यह बात हमारे कान परी, तब आन तुम्हारी शरण गही।
क्यों मेरी बार विलम्ब करो, जिननाथ सुनो यह बात सही ॥श्री०
काहू को भोग मनोग करो, काहू को स्वर्ग विमाना है।
काहू को नागनरेशपती, काहू को ऋद्धि निधाना है।
अब मोपर क्यों न कृपा करते, यह क्या अंधेर जमाना है।
इनसाफ करो मत देर करो, सुखवृन्द भजो भगवाना है ॥श्री०॥२॥
खल कर्म मुझे हैरान किया, तब तुमसों आन पुकारा है।
तुम ही समरत्थ न न्याय करो, तब बंदे का क्या चारा है।
खल घालक पालक बालक का, नृपनीति यही जगसारा है।
तुम नीतिनिपुन त्रैलोक पती, तुमही लगि दौर हमारा है ॥श्री०॥४॥
जबसे तुमसे पहचान भई तबसे तुमही को माना है।
तुमरे ही शासन का स्वामी, हमको शरना सरधाना है।

जिनको तुमरी शरनागत हैं, तिनसौं यमराज डराना है।
यह सुजस तुम्हारे सांचे का सव गावत वेद पुराना है ॥श्री०॥५॥
जिसने तुमसे दिलदर्द कहा, तिसका तुमने दुख हाना है।
अघ छोटा मोटा नाशि तुरत, सुख दिया तिन्हें मनमाना है।
पावकसों शीतल नीर किया, औ चीर वढ़ा असमाना है।
भोजन था जिसके पास नहीं, सो किया कुवेर समाना है ॥श्री०॥६॥
चिंतामणि पारस कल्पतरु, सुखदायक ये परधाना है।
तव दासनके सव दास यही, हमरे मनमें ठहराना है।
तुम भक्तन को सुरइन्द्रपदी, फिर चक्रवर्त्ति पद पाना है।
क्या वात कहौ विस्तार वढे, वे पावै मुक्ति ठिकाना है ॥श्री०॥७॥
गति चार चौरासी लाख विषै चिन्मूरत मेरा भटका है।
हो दीनवन्धु करुणानिधान अवलौं न मिटा वह खटका है॥
जव जोग मिला शिवसाधनका तव विघन कर्मने हटका है।
अव विघन हमारे दूर करो, सुख देहु निराकुल घटका है ॥श्री॥८॥
गजग्राहग्रसित उद्धार लिया, ज्यों अंजन तस्कर तारा है।
ज्यों सागर गोपदरूप किया, मैना का संकट टारा है॥
ज्यों शूलीतें सिंहासन औ वेडीको काट विडारा है।
त्यों मेरा संकट दूर करो प्रभु मोकूं आश तुम्हारा है ॥ श्री०॥९॥
ज्यों फाटक टेकत पांय खुला, औ सांप सुमन कर डारा है।
ज्यों खड्गकुसुमका माल किया वालक का जहर उतारा है॥
ज्यों सेठ विपत चकचूर पूर, घर लक्ष्मीसुख विस्तारा है।
त्यों मेरा सकट दूर करो प्रभु मोकूं आश तुम्हारा है ॥ श्री०॥१०॥
यद्यपि तुमको रागादि नहीं यह सत्य सर्वथा जाना है।
चिन्मूरति आप अनंतगुनी, नित शुद्धदशा शिवथाना है।
तद्यपि भक्तन की भीड़ हरो, सुखदेत तिन्हें जु सुहाना॥
यह शक्ति अचिन्त्य तुम्हारीका क्या पावै पारसयाना है ॥श्री०॥११

दुख खंडन श्री सुखमण्डनका, तुमरा प्रण परम प्रमाना है।
वरदान दया जस कीरत का तिहुँ लोकधुजा फहराना है॥
कमलाधरजी! कमलाकरजी, करिये कमला अमलाना है।
अब मेरी विथा अवलोकि रमापति, रंच न वार लगाना है॥श्री०॥१२
हो दीनानाथ अनाथ हितू, जन दीन अनाथ पुकारी है।
उदयागत कर्म विपाक हलाहल, मोह विथा विस्तारी है॥
ज्यों आप और भवि जीवन की, ततकाल विथा निरवारी है।
त्यों 'वृन्दावन' यह अर्ज करै, प्रभु आज हमारी बारी है॥
श्रीपति०॥१३॥ × ×

महावीर–सन्देश

यही है महावीर सन्देश।
विपुलाचल पर दिया गया जो प्रमुख धर्म उपदेश॥ यही०
सब जीवों को तुम अपनाओ हर उनके दुख क्लेश।
असद्भाव रक्खो न किसी से हो अरि क्यों न विशेष॥ यही०॥
वैरी का उद्धार श्रेष्ठ है कीजे सुविधा विशेष।
वैर छुटे उपजे मति जिससे वही यत्न यत्नेश॥ २॥ यही०
घृणा पाप से हो, पापी से नहीं कभी लव लेश।
भूल सुझाकर प्रेम मार्ग से करो उसे पुण्येश॥ ३॥ यही०
तज एकान्त कदाग्रह दुर्गुण बनो उदार विशेष।
रह प्रसन्न चित्त करो मनन तुम यही तत्त्व उपदेश॥ ४॥ यही०
तजो राग-द्वेष भय इन्द्रिय मोह कषाय अशेष।
धरो धैर्य सम चित्त रहो औ' सुख दुख में सविशेष॥ ५॥ यही०
अहंकार ममकार तजो जो अवनतिकार विशेष।
तप-संयम में रत हो त्यागो तृष्णाभाव अशेष॥ ६॥ यही०
'वीर' उपासक बनो सत्य के तज मिथ्याऽभिनिवेश।

विपदाओं से मत घबराओ धरो न कोपाऽऽवेश ॥ ७ ॥ यही०
संज्ञानी संदृष्टि बनो और तजो भाव संक्लेश ।
सदाचार पालो दृढ होकर रहे प्रमाद न लेश ॥ ८ ॥ यही०
सादा रहन सहन भोजन हो सादा भूषा वेष ।
विश्व प्रेम जागृत कर उर में करो कर्म निःशेष ॥ ९ ॥ यही०
हो सब का कल्याण भावना ऐसी रहे हमेश ।
दया लोक सेवा रत चित्त हो और न कुछ आदेश ॥१०॥ यही०
इस पर चलने से ही होगा विकसित स्वात्म प्रदेश ।
आतम "ज्योति" जगेगी ऐसे, जैसे उदित दिनेश ॥११॥ यही०

❀ भक्तामर स्तोत्र ❀

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा—
मुद्योतकं दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यकप्रणम्य जिनपादयुगं युगादा—
वालंबनं भवजले पततां जनानां ॥ १ ॥

यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा—
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ—
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहं ।
बालं विहाय जलसंस्थितमिंदुबिंब—
मन्यः क इच्छति जनः सहसा गृहीतुं ॥ ३ ॥

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।
कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्यां ॥ ४ ॥
सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश !
कर्त्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगी मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥
अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥
त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजां ।
आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारं ॥ ७ ॥
मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद—
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥ ॥८ ॥
आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं,
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हंति ।

दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,

पद्माकरेषु जलजानि विकासभांजि ॥ ९ ॥

नात्यद्भुतं भुवनभूषण ! भूतनाथ !

भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः ।

तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किं वा,

भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥

दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं,

नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।

पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिंधोः,

क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥

यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,

निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत !

तावंत एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां,

यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,

निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानं ।

विंबं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य,

यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पं ॥ १३ ॥

संपूर्णमंडलशशांककलाकलाप—

शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ।

ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं,

कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टं ॥ १४ ॥

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि—
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन,
किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥
निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥
नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ।
नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः,
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र लोके ॥ १७ ॥
नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानां ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥
किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमःसु नाथ ।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥
ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।

तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥
मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥
स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान् ,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥
त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस—
मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पंथाः ॥२३॥
त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुं ।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात् ,
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ।
धाताऽसि धीर शिवमार्गविधेर्विधानाद् ,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोसि ॥२५॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिनभवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै—
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश !
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः,
स्वप्नांतरेपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥ २७ ॥

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख—
माभातिरूपममलं भवतो नितांतं ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातं ।
बिंबं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥

कुंदावदातचलचामरचारुशोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतं ।
उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार—
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥

छत्रत्रयं तव विभाति शशांककांत—
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापं ।

मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं,
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वं ॥ ३१ ॥

गंभीरताररवपूरितदिग्विभाग—
स्त्रैलोक्यलोकशुभसंगमभूतिदक्षः ।
सद्धर्मराज जयघोषणघोषकःसन् ,
खे दुंदुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥ ३२ ॥

मंदारसुंदरनमेरुसुपारिजात—
संतानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा ।
गंधोदबिंदुशुभमंदमरुत्प्रपाता,
दिव्यादिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ॥ ३३ ॥

शुम्भत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपंती ।
प्रोद्यद्दिवाकरनिरंतरभूरिसंख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्यां ॥३४॥

स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्टः,
सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः ।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व,
भाषास्वभावपरिणामगुणैः प्रयोज्यः ॥ ३५ ॥

उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांती,
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३६ ॥

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र,
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतांधकारा,
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥ ३७॥

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोल-मूल—
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपं ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तम्,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानां ॥२८॥

भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त—
मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३९ ॥

कल्यांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगं ।
विश्वं जिघित्सुमिव संमुखमापतंतं,
त्वन्नामकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषं ॥ ४० ॥

रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतं ।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्तशंक—
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥४१॥

वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद—
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनां ।

उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,

त्वत्कीर्त्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ४२ ॥

कुंताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह—

वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।

युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा—

स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ४३ ॥

अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र—

पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ ।

रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा—

स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजंति ॥४४॥

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः,

शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ।

त्वत्पादपंकजरजोऽमृतदिग्धदेहा,

मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४५ ॥

आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा,

गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ।

त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः,

सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥ ४६ ॥

मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि—

संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोत्थं ।

तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,

यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४७ ॥

स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया विविधवर्णविचित्रपुष्पां ।
धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं,
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४८ ॥

इति श्रीमानतुंगाचार्य विरचितमादिनाथस्तोत्रं (भक्तामर स्तोत्रं)

मोक्ष-शास्त्रं

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृतां ।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वंदे तद्गुणलब्धये ॥
त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं नवपदसहितं जीवषट्कायलेश्याः ।
पंचान्ये चास्तिकाया व्रतसमितिगतिज्ञानचारित्रभेदाः ॥
इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवनमहितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः ।
प्रत्येति श्रद्दधाति स्पृशति च मतिमान् यः स वै शुद्धदृष्टिः ॥१॥
सिद्धे जयप्पसिद्धे चउविहाराहणाफलं पत्ते ।
वंदित्ता अरहंते वोच्छं आराहणाकमसो ॥२॥
उज्जोवणमुज्जवणं णिव्वाहणं साहणं च णिच्छरणं ।
दंसणणाणचरित्तं तवाणमाराहणा भणिया ॥ ३ ॥

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥१॥ तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनं ॥२॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥३॥ जीवाजीवास्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वं ॥ ३ ॥ नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ॥५॥ प्रमाणनयैरधिगमः ॥६॥ निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः ॥ ७ ॥ सत्संख्या-

क्षेत्रस्पर्शनकालांतरभावाल्पबहुत्वैश्च ॥ ८ ॥ मतिश्रुतावधि-मनःपर्ययकेवलानि ज्ञानं ॥९॥ तत्प्रमाणे ॥१०॥ आद्ये परोक्षं ॥११॥ प्रत्यक्षमन्यत् ॥१२॥ मतिः स्मृतिः संज्ञा चिंताभिनिबोध इत्यनर्थान्तरं ॥१३॥ तदिंद्रियानिंद्रियनिमित्तं ।१४। अवग्रहेहावायधारणाः ।१५। बहुबहुविधक्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ।१६। अर्थस्य ।१७। व्यंजनस्यावग्रहः ।१८। न चक्षुरनिन्द्रियाभ्यां ॥ १९ ॥ श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदं ॥२०॥ भवप्रत्ययोवधिर्देवनारकाणां ॥२१॥ क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणां ॥२२॥ ऋजुविपुलमती मनःपर्ययः ॥२३॥ विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥ २४ ॥ विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्यययोः ॥ २५ ॥ मतिश्रुतयोर्निबंधो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥२६॥रूपिष्ववधेः॥२७॥ तदनंतभागे मनःपर्ययस्य ॥२८॥ सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥२९॥ एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥३०॥ मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ॥३१॥ सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥३२॥ नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरूढैवंभूता नयाः ॥३३॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ च ॥ १ ॥ द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमं ॥२॥ सम्यक्त्वचारित्रे ॥३॥ ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ॥ ४ ॥ ज्ञानाज्ञानदर्शन-

लब्धयश्चतुस्त्रित्रिपंचभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ॥ ५ ॥ गतिकषायलिंगमिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिद्धलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः ॥ ६ ॥ जीवभव्याभव्यत्वानि च ॥७॥ उपयोगो लक्षणं ॥८॥ सद्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ॥९॥ संसारिणो मुक्ताश्च ॥१०॥ समनस्काऽमनस्काः ॥११॥ संसारिणस्त्रसस्थावराः ॥१२॥ पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः ॥१३॥ द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ॥१४॥ पंचेन्द्रियाणि ॥१५॥ द्विविधानि ॥ १६ ॥ निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियं ॥१७॥ लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियं ॥१८॥ स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुः श्रोत्राणि ॥१९॥ स्पर्शरसगंधवर्णशब्दास्तदर्थाः॥२०॥ श्रुतमनिन्द्रियस्य ॥ २१ ॥ वनस्पत्यन्तानामेकं ॥ २२ ॥ कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ॥२३॥ संज्ञिनः समनस्काः ॥२४॥ विग्रहगतौ कर्मयोगः ॥२५॥ अनुश्रेणि गतिः ॥२६॥ अविग्रहा जीवस्य ॥२७॥ विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ॥२८॥ एकसमयाऽविग्रहा ॥२९॥ एकं द्वौ त्रीन्वानाहारकः ॥ ३० ॥ संमूर्च्छनगर्भोपपादा जन्म ॥ ३१ ॥ सचित्तशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ॥ ३२ ॥ जरायुजांडजपोतानां गर्भः ॥ ३३ ॥ देवनारकाणामुपपादः ॥ ३४ ॥ शेषाणां सम्मूर्च्छनं ॥ ३५ ॥ औदारिकवैक्रियिकाहारकतैजसकार्मणानि शरीराणि ॥ ३६ ॥ परं परं सूक्ष्मं ॥ ३७ ॥ प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात् ॥ ३८ ॥ अनन्तगुणे परे ॥ ३९॥ अप्रती-

घाते ॥ ४० ॥ अनादि संबंधे च ॥ ४१ ॥ सर्वस्य ॥४२॥ तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥ ४३ ॥ निरुपभोगमन्त्यं ॥४४॥ गर्भसम्मूर्च्छनजमाद्यं ॥४५॥औपपादिकं वैक्रियिकं ॥४६॥ लब्धिप्रत्ययं च ॥४७॥ तैजसमपि ॥४८॥ शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ॥४९॥ नारकसंमूर्छिनो नपुंसकानि ॥५०॥ न देवाः ॥५१॥ शेषास्त्रिवेदाः ॥५२॥ औपपादिकचरमोत्तमदेहाऽसंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ॥५३॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

रत्नशर्करावालुकापंकधूमतमोमहातमःप्रभाभूमयो घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाःसप्ताऽधोऽधः ॥१॥ तासु त्रिंशत्पञ्चविंशतिपञ्चदशदशत्रिपंचोनैकनरकशतसहस्राणि पंच चैव यथाक्रमम् ॥२॥ नारका नित्याऽशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः ॥३॥ परस्परोदीरितदुःखाः ॥४॥ संक्लिष्टाऽसुरोदीरितदुःखाश्च प्राक्चतुर्थ्याः॥५॥तेष्वेकत्रिसप्त-दश सप्तदश-द्वाविंशति-त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः ॥६॥ जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ॥७॥ द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः ॥८॥ तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ॥९॥ भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥१०॥ तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ॥११॥ हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममयाः ।१२।

मणिविचित्रपार्श्वा उपरि मूले च तुल्यविस्ताराः ॥१३॥ पद्महापद्मतिगिञ्छकेशरिमहापुण्डरीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि ॥१४॥ प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्द्धविष्कम्भोह्रदः ॥१५॥दशयोजनावगाहः॥१६॥तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ॥१७ तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ॥१८॥ तन्निवासिन्यो देव्यः श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिकपरिषत्काः ॥१९॥ गंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकांतासीतासीतोदानारीनरकांतासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ॥२०॥ द्वयोर्द्वयोःपूर्वा पूर्वगाः ॥२१॥ शेषास्त्वपरगाः ॥२२॥ चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गंगासिन्ध्वादयो नद्यः ॥२३॥ भरतः षड्विंशतिपञ्चयोजनशतविस्तारः षट्चैकोनविंशतिभागा योजनस्य ॥ २४ ॥ तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारावर्षधरवर्षा विदेहान्ताः॥२५॥उत्तरा दक्षिणतुल्याः॥२६॥भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ॥२७॥ ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः ॥२८॥ एकद्वित्रिपल्योपमस्थितयो हैमवतकहारिवर्षकदैवकुरवकाः ॥२९॥ तथोत्तराः ॥३०॥ विदेहेषु संख्येयकालाः ॥३१॥ भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशतभागः ॥३२॥ द्विर्धातकीखण्डे ॥३३॥ पुष्करार्द्धे च ॥३४॥ प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः ॥३५॥ आर्याम्लेच्छाश्च ॥३६॥ भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ॥३७॥ नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ॥३८॥ तिर्यग्योनिजानां च ॥३९॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

देवाश्चतुर्णिकायाः ॥१॥ आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्याः ॥२॥ दशाष्टपञ्चद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ॥३॥ इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषदात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चैकशः ॥४॥ त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यन्तरज्योतिष्काः ॥ ५ ॥ पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ॥ ६ ॥ कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ॥ ७ ॥ शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवीचाराः ॥ ८ ॥ परेऽप्रवीचाराः ॥ ९ ॥ भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः ॥ १० ॥ व्यन्तरा किन्नरकिंपुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः ॥ ११ ॥ ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च ॥ १२ ॥ मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ॥१३॥ तत्कृतः कालविभागः ॥१४॥ बहिरवस्थिताः ॥१५॥ वैमानिकाः ॥ १६ ॥ कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ॥ १७ ॥ उपर्युपरि ॥१८॥ सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्ठशुक्रमहाशुक्रशतारसहस्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयन्तजयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥ १९ ॥ स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्या विशुद्धीन्द्रियावधिविषयतोधिकाः ॥ २० ॥ गतिशरीपरिग्रहाभिमानतो हीनाः ॥ २१ ॥ पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ॥२२॥ प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ॥२३॥ ब्रह्मलोकालया लौकान्तिकाः ॥ २४ ॥ सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ॥२५॥ विजयादिषु द्विचरमाः ॥ २६ ॥ औपपादिक-

मनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ॥ २७ ॥ स्थितिरसुरनाग-सुपर्णद्वीपशेषाणां सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीनमिताः ॥२८॥ सौधर्मैशानयोः सागरोपमेऽधिके ॥ २९ ॥ सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त॥३०॥त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपंचदशभिरधिकानि तु ॥३१॥ आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥३२॥ अपरा पल्योपममधिकम् ॥३॥ परतः परतः पूर्वापूर्वानन्तराः ॥३४॥ नारकाणां च द्वितीयादिषु ।३५। दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ॥३६॥ भवनेषु च ॥३७॥ व्यन्तराणां च ॥ ३८ ॥ परा पल्योपममधिकम् ॥३९॥ ज्योतिष्काणां च ॥ ४० ॥ तदष्टभागोऽपरा ॥ ४१॥ लोकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ॥ ४२ ॥

इति तत्त्वर्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गलाः ॥ १ ॥ द्रव्याणि ॥२॥ जीवाश्च ॥३॥ नित्यावस्थितान्यरूपाणि ॥४॥ रूपिणः पुद्गलाः ॥५॥ आ आकाशादेकद्रव्याणि ॥६॥ निष्क्रियाणि च ॥७॥ असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानां ॥८॥ आकाशस्यानन्ताः ॥९॥ संख्येयाऽसंख्येयाश्च पुद्गलानां॥१०॥नाणोः ॥११॥ लोकाकाशेऽवगाहः ॥ १२ ॥ धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ॥१३॥ एकप्रदेशादिषु भाज्याः पुद्गलानां ॥१४॥ असंख्येयभागादिषु जीवानां ॥१५॥ प्रदेशसंहारविसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ॥१६॥ गतिस्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकारः ॥१७॥ आकाशस्यावगाहः ॥ १८ ॥ शरीरवाङ्मनःप्राणापानाः पुद्गलानां ॥ १९ ॥ सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च ॥२०॥

परस्परोपग्रहो जीवानां ॥२१॥ वर्तनापरिणामक्रियाः परत्वा-परत्वे च कालस्य ॥२२॥ स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः ॥ २३ ॥ शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायातपो-द्योतवन्तश्च ॥२४॥ अणवः स्कन्धाश्च ॥२५॥ भेदसंघातेभ्यः उत्पद्यन्ते ॥२६॥ भेदादणुः ॥२७॥ भेदसंघाताभ्यां चाक्षुषः ॥२८॥ सद्द्रव्यलक्षणं ॥२९॥ उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ॥३०॥ तद्भावाव्ययं नित्यं ॥३१॥ अर्पितानर्पितसिद्धेः॥३२॥ स्निग्धरूक्षत्वाद्बन्धः ॥३३॥ न जघन्यगुणानां ॥३४॥ गुणसाम्ये सदृशानां ॥३५॥ द्व्यधिकादिगुणानां तु ॥३६॥ बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च ॥३७॥ गुणपर्ययवद् द्रव्यं ॥३८॥ कालश्च ॥३९॥ सोऽनन्तसमयः ॥४०॥ द्रव्या-श्रया निर्गुणा गुणाः ॥४१॥ तद्भावः परिणामः ॥४२॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पंचमोऽध्याय ॥

कायवाङ्मनःकर्म योगः ॥१॥ स आस्रवः॥२॥ शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य ॥३॥ सकषायाकषाययोः साम्परायिके-र्यापथयोः ॥४॥ इन्द्रियकषायाव्रतक्रियाः पंचचतुःपंच-पंचविंशतिसंख्याः पूर्वस्य भेदाः ॥५॥ तीव्रमन्दज्ञाताज्ञात-भावाधिकरणवीर्य-विशेषेभ्यस्तद्विशेषः ॥६॥ अधिकरणं जीवाऽजीवाः ॥७॥ आद्यं संरम्भसमारम्भारम्भयोगकृतकारि-तानुमतकषायविशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ॥८॥ निर्वर्त्तना-निक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परं ॥९॥ तत्प्रदोषनि-ह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयोः ॥१०॥

दुःखशोकतापाक्रन्दनवधपरिदेवनान्यात्मपरोभयस्थानान्यसद्वे-द्यस्य ।।११।। भूतव्रत्यनुकम्पादानसरागसंयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य ।।१२।। केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ।।१३।। कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ।।१४।। बह्वारम्भपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ।।१५।। माया तैर्यग्योनस्य ।।१६।। अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य ।।१७।। स्वभावमार्दवं च ।।१८।। निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषां ।।१९।। सरागसंयमसंयमासंयमाकामनिर्जराबालतपांसि दैवस्य ।।२०।। सम्यक्त्वं च ।।२१।। योगवक्रताविसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ।।२२।। तद्विपरीतं शुभस्य ।।२३।। दर्शनविशुद्धिर्विनय-सम्पन्नता शीलव्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधुसमाधिर्वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्यबहु-श्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्गप्रभावना प्रवचनवत्स-लत्वमिति तीर्थकरत्वस्य ।।२४।। परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्-गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ।।२५।। तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ।।२६।। विघ्नकरणमन्तरा-यस्य ।।२७।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः ।

हिंसाऽनृतस्तेयाऽब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतं ।।१।। देश-सर्वतोणुऽमहती ।।२।। तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पंचपंच ।।३।। वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमित्यालोकितपानभोजनानि पंच ।।४।। क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्यानान्यनुवीचिभाषणं

च पंच ॥ ५ ॥ शून्यागारविमोचितावासपरोपरोधाकरण-भैक्ष्यशुद्धिसधर्माविसंवादाः पंच ॥ ६ ॥ स्त्रीरागकथाश्रवण-तन्मनोहरांगनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टरसस्वशरीरसंस्का-रत्यागाः पंच ॥ ७ ॥ मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषयरागद्वेषवर्ज-नानि पंच ॥ ८ ॥ हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनं ॥ ९ ॥ दुःखमेव वा ॥ १० ॥ मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थ्यानि च सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमानाविनयेषु ॥ ११ ॥ जगत्कायस्वभावौ वा संवेगवैराग्यार्थं ॥१२॥ प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा ॥१३॥ असदभिधानमनृतं ॥१४॥ अदत्तादानं स्तेयं ॥१५॥ मैथुनमब्रह्म ॥१६॥ मूर्छा परिग्रहः ॥१७॥ निःशल्यो व्रती ।१८। अगार्यनगाराश्च ।१९। अणुव्रतोऽगारी ।२०। दिग्दे-शानर्थदंडविरतिसामायिकप्रोपधोपवासोपभोगपरिभोगपरिमाणा-तिथिसंविभागव्रतसम्पन्नश्च ॥२१॥ मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ॥२२॥ शंकाकांक्षाविचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ॥ २३ ॥ व्रतशीलेषु पंच पंच यथाक्रमं ॥ २४ ॥ बन्धवधच्छेदातिभारारोपणान्नपाननिरोधाः ॥२५॥ मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटलेखक्रियान्यासापहारसाकारमं-त्रभेदाः ॥२६॥ स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरुद्धराज्याति-क्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूपकव्यवहाराः ॥२७॥ परवि-वाहकरणेत्वरिकापरिगृहीतापरिगृहितागमनानंगक्रीडाकामती-व्राभिनिवेशाः ॥२८॥ क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासी-दासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः ॥२९॥ ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रम-

क्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तराधानानि ॥३०॥ आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्द-रूपानुपातपुद्गलक्षेपाः ॥ ३१ ॥ कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ॥ ३२ ॥ योगदुः-प्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ॥ ३३ ॥ अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ॥३४॥ सचित्तसम्बन्धसम्मिश्राभिषवदुःपक्वाहाराः ॥३५॥ सचित्तनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः ॥३६॥ जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानानि ॥ ३७ ॥ अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानं ॥ ३८ ॥ विधिद्रव्यदातृपात्र-विशेषात्तद्विशेषः ॥ ३९ ॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ।

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बन्धहेतवः ॥१॥ सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते स बन्धः ।२। प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशास्तद्विधयः ।३। आद्यो ज्ञानदर्श-नावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः ॥४॥ पंचनव-द्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपंचभेदा यथाक्रमं ॥ ५ ॥ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानां ॥ ६ ॥ चक्षुरचक्षुरवधिकेव-लानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च ।७। सदसद्वेद्ये ॥ ८ ॥ दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेदनी-याख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यक-षायकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुंनपुंसकवेदाः अनंतानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः

क्रोधमानमायालोभाः ॥ ९ ॥ नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि ॥१०॥ गतिजातिशरीरांगोपांगनिर्माणबन्धनसंघातसंस्थान-संहननस्पर्शरसगंधवर्णानुपूर्व्यागुरुलघूपघातपरघातातपोद्योतो-च्छ्वासविहायोगतयः प्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्म-पर्याप्तिस्थिरादेययशः कीर्तिसेतराणि तीर्थकरत्वं च ॥११॥ उच्चैर्नीचैश्च ॥१२॥ दानलाभभोगोपभोगवीर्याणां ॥१३॥ आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः परा स्थितिः ॥१४॥ सप्ततिर्मोहनीयस्य ॥१५॥ विंशतिर्नामगोत्रयोः ॥१६॥ त्रायस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः ॥१७॥ अपरा द्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य ॥१८॥ नामगोत्रयोरष्टौ ॥१९॥ शेषाणामन्तमुहूर्ता ॥२०॥ विपाकोऽनुभवः ॥२१॥ स यथा-नाम ॥२२॥ ततश्च निर्जरा ॥२३॥ नामप्रत्ययाः सर्वतोयोग-विशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्त-प्रदेशाः ॥२४॥ सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यं ॥२५॥ अतोन्यत्पापं ॥२६॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे अष्टमोऽध्यायः ॥

आश्रवनिरोधः संवरः ॥१॥ स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षा-परिषहजयचारित्रैः ॥२॥ तपसा निर्जरा च ॥३॥ सम्यग्यो-गनिग्रहो गुप्तिः ॥४॥ ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समि तयः ॥५॥ उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागा-किंचन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ॥६॥ अनित्याशरणसंसारैकत्वा-न्यत्वाशुच्यास्रवसंवरनिर्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्वाख्यात —

तत्त्वानुचिंतनमनुप्रेक्षाः ॥७॥ मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ॥८॥ क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशवधयाचनाऽलाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाऽज्ञानादर्शनानि ॥६॥ सूक्ष्मसांपरायछद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ॥१०॥ एकादश जिने ॥११॥ बादरसांपराये सर्वे ॥१२॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥१३॥ दर्शनमोहांतराययोरदर्शनालाभौ ॥१४॥ चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्याक्रोशयाचनासत्कारपुरस्काराः १५॥ वेदनीये शेषाः ॥१६॥ एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकोनविंशतेः ॥१७॥ सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपराययथा—ख्यातमिति चारित्रं ॥१८॥अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः ॥१६॥ प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरं ॥२०॥ नवचतुर्दशपंचद्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ।२१। आलोचनप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापनाः ।२२। ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ॥२३॥ आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानां ॥२४॥ वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाऽम्नायधर्मोपदेशाः ॥२५॥ बाह्याभ्यंतरोपध्योः ।२६। उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिंतानिरोधो ध्यानमांतर्मुहूर्त्तात् ॥२७॥ आर्त्तरौद्रधर्म्यशुक्लानि ॥२८॥ परे मोक्षहेतू ॥२६॥ आर्त्तममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः ॥३०॥ विपरीतं मनोज्ञस्य ॥३१॥ वेदनायाश्च ॥३२॥ निदानं च

॥३३॥ तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानां ॥३४॥ हिंसाऽनृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः ॥३५॥ आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यम् ॥३६॥ शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ॥३७॥ परे केवलिनः ॥३८॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवर्तीनि ॥ ३९ ॥ त्र्येकयोगकाययोगायोगानां ॥४०॥ एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे ॥ ४१ ॥ अवीचारं द्वितीयं ॥ ४२ ॥ वितर्कः श्रुतं ॥ ४३ ॥ वीचारोऽर्थव्यंजनयोगसंक्रांतिः ॥ ४४ ॥ सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानंतवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशांत-मोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः ॥ ४५ ॥ पुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रंथस्नातका निर्ग्रंथाः ॥ ४६ ॥ संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिंगलेश्योपपादस्थानविकल्पतः साध्याः ॥४६।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोऽध्यायः ॥

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणांतरायक्षयाच्च केवलं ॥ १ ॥ बंधहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो मोक्षः ॥ २ ॥ औपशमिकादिभव्यत्वानां च ॥ ३ ॥ अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्यः ॥४॥ तदनंतरमूर्ध्वं गच्छंत्यालोकांतात् ॥ ५ ॥ पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च ॥ ६ ॥ आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतलेपालांबुवदेरंडबीजवदग्निशिखावच्च ॥७॥ धर्मास्तिकायाभावात् ॥ ८ ॥ क्षेत्रकालगतिलिंगतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनांतरसंख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥९॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्यायः ।

कोटिशतं द्वादशं चैव कोट्यो लक्षाण्यशीतिस्त्र्यधिकानि चैव।
पंचाशदष्टौ च सहस्रसंख्यामेतद्श्रुतं पंचपदं नमामि ॥१॥
अरहंत भासियत्थं गणहरदेवेहि गंथियं सव्वं।
पणमामि भत्तिजुत्तो, सुदणाणमहोवयं सिरसा ॥२।
अक्षरमात्रपदस्वरहीनं व्यंजनसंधिविवर्जितरेफम्।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे।
दशाध्याये परिच्छिन्ने तत्त्वार्थे पठिते सति।
फलं स्यादुपवासस्य भाषितं मुनिपुंगवैः ॥४॥
तत्वार्थसूत्रकर्त्तारं गृद्ध्रपिच्छोपलक्षितम्।
वंदे गणीन्द्रसंजातमुमास्वामिमुनीश्वरम् ॥५॥
जं सक्कइ तं कीरइ, जं पुण सक्कइ तहेव सद्दहणं।
सद्दहमाणो जीवो पावइ अजरामरं ठाणं ॥६॥
तव यरणं वयधरणं, संजमसरणं च जीवदयाकरणम्।
अंते समाहिमरणं, चउविह दुक्खं णिवारेई ॥७॥

इति तत्त्वार्थसूत्रापरनाम तत्त्वार्थाधिगमोक्षशास्त्रं समाप्तम्।

महावीराष्टकस्तोत्र।

शिखरिणी।

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः, समं भांति ध्रौव्यव्यय-जनि-लसंतोऽन्तरहिताः। जगत्साक्षी मार्गप्रकटनपरो भानुरिव यो, महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)

॥ १ ॥ अताम्रं यच्चक्षु कमलयुगलं स्पंदरहितं, जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यंतरमपि । स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला । महावीर० ॥ २ ॥ नमन्नाकेंद्राली मुकुटमणिभाजालजटिलं, लसत्पादांभोजद्वयमिह यदीयं तनुभृता । भवज्ज्वालाशांत्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि । महावीर० ॥३॥ यदर्चाभावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह, क्षणादासीत्स्वर्गी गुणगणसमृद्ध सुखनिधिः । लभंते सद्भक्ता' शिवसुखसमाजं किमु तदा । महावीर० ॥ ४ ॥ कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगततनुर्ज्ञाननिवहो विचित्रात्माप्येको नृपतिवरसिद्धार्थतनय' । अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोद्भुतगतिः ।महा० ॥५॥ यदीया वाग्गंगा विविधनयकल्लोलविमला, वृहज्ज्ञानांभोभिर्जगति जनतां या स्नपयति। इदानीमप्येषा वुधजनमरालै परिचिता, महावीर० ॥६॥ अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी काम सुभट , कुमारावस्थायामपि जिनवलाद्येन विजितः । स्फुरन्नित्यानंदप्रशमपदराज्याय स जिनः । महावीर०॥७॥ महामोहातंकप्रशमनपराकस्मिकभिषक् , निरापेक्षो वंधुर्विदितमहिमा मंगलकरः । शरण्यः साधूनां भवभयभृत.मुत्तमगुणो । महावीर० ॥८॥

महावीराष्टकं स्तोत्रं भक्त्या भागेंदुना कृत ।
य पठेच्छ्रृणुयाच्चापि स याति परमां गतिं ॥

महावीराष्टक स्तोत्र (भाषा)

चेतन अचेतन तत्त्व जेते, हैं अनन्त जहान में । उत्पाद व्यय ध्रुवमय मुकुरवत् , लसत जाके ज्ञान मे । जो जगतदरशी जगत में सन्मार्ग दर्शक रवि मनो । ते वीर स्वामीजी हमारे, नयन पथगामी वनो ॥१॥ टिमिकार विन जुग कमल लोचन, लालिमा तैं रहित हैं । वाह्य अन्तर की क्षमाको, भविजनों से कहत हैं । अति परम पावन शान्तिमुद्रा, जासु तन उज्ज्वल घनो । ते वीर स्वामीजी हमारे

नयन पथगामी वनो ॥२॥ जिहिं स्वर्गवासी विपुल सुरपति नम्र तन वह नमत हैं । तिन मुकुटमणि के प्रभा मंडल पद्म पद मे लसत हैं ॥ जिन मात्र सुमरन रूप जलसे, हनै भव आतप घनो । ते वीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी वनो ॥३॥ मन मुदित ह्वै मंडूक ने प्रभु पूजवे मनसा करी । ततछन लही सुर सम्पदा, वहुऋद्धि गुणनिधि सों भरी ॥ जिहिं भक्ति सों सद्भक्तजन लहैं, मुक्तिपुर को सुख घनो । ते वीर स्वामीजी हमारे, नयन पथगामी वनो॥४॥ कंचन तपतवत ज्ञाननिधि हैं, तदपि ज्ञान वर्जित रहैं । जो हैं अनेक तथापि इक, सिद्धार्थ सुत भव रहित हैं ॥ जो वीतरागी गति रहित हैं, तदपि अद्भुत गति पनो । ते वीर स्वामीजी हमारे, नयन पथ गामी वनो ॥५॥ जिनकी वचन मय अमल सुरसरि, विविध नय लहरैं धरे । जो पूर्ण ज्ञान स्वरूप जल से, न्हवन भविजन को करें ॥ तामैं अजों लगि घने पंडित, हंस ही सोहत मनो । ते वीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी वनो ॥ ६ ॥ जाने जगत की जंतु जनता, करी स्ववश तमाम है । है वेग जाको अमिट ऐसो, विकट अतिभट काम है ॥ ताकों स्वबल से प्रौढवय में शांति शासन हित हनो । ते वीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी वनो ॥ ७ ॥ भयभीत भव में साधुजन को शरण उत्तम गुण भरे । निस्वार्थ के ही जगत वांधव, विदित यश मंगल करे ॥ जो मोह रूपी रोग हनिवे वैद्यवर अद्भुत मनो । ते वीर स्वामीजी हमारे नयन-पथ गामी वनो ॥८॥

दोहा—महावीर अष्टक रच्यो, भागचन्द रुचि ठान ।
पढै सुनैं जो भाव सों, ते पावे निरवान ॥

भक्तामर-स्तोत्र भाषा

स्वर्गीय पण्डित हेमराजजी कृत

दोहा—आदि पुरुष आदीश जिन, आदि सुविधिकरतार ।
धरमधुरन्धर परमगुरु, नमों आदि अवतार ॥ १ ॥

चौपाई १५ मात्रा

सुरनतमुकुटरतन छवि करैं, अंतरपापतिमिर सब हरैं ।
जिनपद वंदों मनवचकाय, भवजल पतित उद्धरन सहाय ॥ १ ॥
श्रुतिपारग इन्द्रादिकदेव, जाकी थुति कीनी कर सेव ।
शब्दमनोहर अरथ विशाल, तिस प्रभु की वरनों गुणमाल ॥ २ ॥
विबुधवंद्यपद मैं मतिहीन, होय निलज थुति-मनसा कीन ।
जलप्रतिबिंब बुद्ध को गहै, शशिमण्डल बालक ही चहै ॥ ३ ॥
गुणसमुद्र तुम गुण अविकार, कहत न सुरगुरु पावैं पार ।
प्रलयपवन उद्धत जलजन्तु, जलधि तिरै को भुज बलवंतु ॥ ४ ॥
सो मैं शक्तिहीन थुति करूं, भक्तिभाववश कछु नहीं डरूं ।
ज्यों मृग निजसुत पालन हेत, मृगपति सनमुख जाय अचेत ॥ ५ ॥
मैं शठ सुधी हंसन को धाम, मुझ तव भक्ति बुलावै राम ।
ज्यों पिक अम्बकली परभाव, मधुऋतु मधुर करे आराव ॥ ६ ॥
तुम जस जंपत जन छिनमाहिं, जनमजनमके पाप नसाहिं ।
ज्यों रवि उगै फटै ततकाल, अलिवत नील निशातमजाल ॥ ७ ॥
तव प्रभावतैं कहूं विचार, होसी यह थुति जनमनहार ।
ज्यों जल कमलपत्र पैं परै, मुक्ताफल की दुति विस्तरै ॥ ८ ॥
तुम गुण महिमा हतदुखदोष, सो तो दूर रहो सुख पोष ।
पापविनाशक है तुम नाम, कमलविकाशी ज्यों रविधाम ॥ ९ ॥
नहिं अचम्भ जो होहिं तुरन्त, तुमसे तुम गुण बरनत सन्त ।
जो गरीब को आप समान, करे न सो निंदत धनवान ॥ १० ॥

इकटक जन तुमको अविलोय, और विषै रति करै न सोय।
कोकरि छीर जलधिजलपान, छीरनीर पीवै मतिमान॥ ११॥
प्रभु तुम वीतराग गुणलीन, जिन परमाणु देह तुम कीन।
हैं तितने ही ते परमानु, यातैं तुम सम रूप न आनु॥ १२॥
कहँ तुम मुख अनुपम अविकार, सुरनरनागनयनमनहार।
कहाँ चन्द्र मण्डल सकलंक, दिन मे ढाकपत्रसम रंक॥ १३॥
पूरणचन्द्र जोति छबिवंत, तुमगुण तीन जगत लंघंत।
एकनाथ त्रिभुवन आधार, तिन विचरत को करे निवार॥ १४॥
जो सुरतियविभ्रमआरम्भ, मन न डिग्यौ तुम तौ न अचंभ।
अचल चलावै प्रलय समीर, मेरुशिखर डगमगै न धीर॥ १५॥
धूम रहित वाती गतनेह, परकाशै त्रिभुवन घर येह।
वातगम्य नाहीं परचंड, आप दीप सम बलो अखण्ड॥ १६॥
छिपहु न लुपहु राहुकी छांहि, जगपरकाशक हो छिनमांहि।
घन अनवर्त्त दाह विनिवार, रवि तैं अधिक धरौ गुणसार॥ १७॥
सदा उदित विदलिततमसोह, विघटित मेघ राहु आरोह।
तुम मुखकमल अपूरव नन्द, जगतविकाशी ज्योति अमंद॥ १८॥
निशिदिन शशिरविको नहिं काम, तुव मुखचंद हरै तमधाम।
जो स्वभावतैं उपजै नाज, सजल मेघतैं कौनहु काज॥ १९॥
जो सुबोध सोहै तुम माहि, हरिहर आदिक में सो नाहि।
जो दुति महारतन में होय, काचखण्ड पावै नहिं सोय॥ २०॥

नाराचछन्द–सराग देव देख मैं भला विशेष मानिया,
स्वरूप जाहि देख वीतराग तू पिछानिया।
कछू न तोहि देखके जहां तुही विशेखिया,
मनोग चित्तचोर और भूल हू न देखिया॥ २१॥

अनेक पुत्रवंतिनी नितंबिनी सपूत हैं,
न तो समान पुत्र और माततैं प्रसूत है।

दिशा धरत तारिका अनेक कोटि को गिनै,
दिनेश तेजवत एक पूर्व ही दिशा जनै ॥ २२ ॥
पुराण हो पुमान हो पुनीत पुन्यवान हो,
कहैं मुनीश अन्धकार नाशको सुभान हो।
महंत तोहि जानके न होय वश्य कालके;
न और मोहि मोखपंथ देव तोहि टालके ॥ २३ ॥
अनत नित्य चित्त के अगम्य रम्य आदि हो,
असंख्य सर्वव्यापि विष्णु ब्रह्म हो अनादि हो।
महेश कामकेतु योग-ईश योग-ज्ञान हो,
अनेक एक ज्ञानरूप शुद्ध संत मान हो ॥ २४ ॥
तुही जिनेश बुद्ध है सुबुद्धि के प्रमानतैं,
तुही जिनेश शकरौ जगत्त्रयैं विधानतैं।
तुही विधात है सही सुमोखपंथ धारतें,
नरोत्तमो तुही प्रसिद्ध अर्थके विचारतैं ॥ २५ ॥
नमो करूं जिनेश तोहि आपदा निवार हो,
नमो करूं सुभूरि भूमिलोक के सिंगार हो।
नमो करूं भवाब्धिनीरराशिशोख हेतु हो,
नमो करूं महेश तोहि मोक्ष पंथ देतु हो ॥ २६ ॥

चौपाई १५ मात्रा

तुम जिन पूरन गुणगण भरे, दोष गरब करि तुम परिहरे।
और देवगण आश्रय पाय, सुपन न देखे तुम फिर आय ॥२७॥
तरुअशोकतर किरन उदार, तुम तन शोभित है अविकार।
मेघ निकट ज्यों तेज फुरंत, दिनकर दिपै ज्यों तिमिर निहंत ॥२८॥
सिंहासन मणिकिरण विचित्र, तापर कंचनवरन पवित्र।
तुम तनु शोभित किरणविथार, ज्यों उदयाचल रवि तमहार ॥२९॥
कुंद पुहुप सित चमर ढुरंत, कनक वरण तुम तन शोभंत।

ज्यों सुमेरुतट निर्मल कांति, झरना झरैं नीर उमगांति ॥ ३० ॥
ऊंचे रहैं सूरि दुति लोप, तीन छत्र तुम दिपैं अगोप।
तीन लोक की प्रभुता कहैं, मोती झालरसों छवि लहैं ॥ ३१ ॥
दुंदुभि शब्द गहर गम्भीर, चहुँदिशि होय तुम्हारे धीर।
त्रिभुवनजन शिवसंगम करैं, मानो जय २ रव उच्चरैं ॥ ३२ ॥
मद पवन गंधोदक इष्ट, विविध कल्पतरु पुहुप सुवृष्ट।
देव करैं विकसित दल सार, मानों द्विजपंकति अवतार ॥ ३३ ॥
तुमतन भामण्डल जिनचन्द, सब दुतिवंत करत है मंद।
कोटि संख रवि तेज छिपाय, शशि निर्मल निशि करै अछाय ॥३४॥
स्वर्ग मोक्ष मारग संकेत, परम धरम उपदेशन हेत।
दिव्य वचन तुम खिरैं अगाध, सबभाषागर्भित हितसाध ॥ ३५ ॥
दोहा—विकसित सुवरन कमल दुति, नख दुति मिलि चमकाहिं।
तुमपद पदवी जहं धरैं, तहं सुर कमल रचाहिं ॥३६॥
जैसी महिमा तुम विषै, और धरैं नहिं कोय।
सूरज में जो ज्योति है नहिं तारागण होय ॥३७॥

षट्पद

मतअवलिप्तकपोल–मूल, अलिकुल झंकारैं,
तिन सुन शब्द प्रचंड, क्रोध उद्धत अति-धारैं।
कालवरन विकराल, कालवत् सन्मुख आवैं,
ऐरावत सो प्रबल, सकल जन भय उपजावैं।
देखि गयन्द न भय करैं, तुम पद महिमालीन,
विपतिरहित सम्पतिसहित, वरतैं भक्त अदीन ॥३८॥
अति मदमत्तगयंद, कुम्भथल नखन विदारैं,
मोती रक्त समेत, डारि भूतल सिंगारैं।
बांकी दाढ विशाल, बदन में रसना लोलैं,
भीम भयानक रूप देखि जन थरहर डोलैं,

ऐसे मृगपति पगतलैं, जो नर आयो होय,
शरण गये तुम चरण की बाधा करै न सोय ॥३९॥
प्रलयपवन कर उठी आग जो तास पटतर,
वमैं फुलिंगशिखा उतंग पर जलैं निरंतर।
जगत समस्त निगल्ल, भस्म कर देगी मानों,
तड़तड़ाट दव अनल, जोर चहुंदिशा उठानों।
सो इक छिन में उपशमै, नाम नीर तुम लेत,
होय सरोवर परिणमै, विकसित कमल समेत ॥४०॥
कोकिलकंठ समान श्यामतन क्रोध जलंता,
रक्तनयन फुंकार, मार विष-कण उगलंता।
फण को ऊंचो करै, वेग ही सनमुख धाया।
तब जन होय निशंक, देख फणपति को आया।
जो चापै निज पांवतैं, व्यापै विष न लगार,
नागदमनि तुम नामकी, है जिनके आधार ॥४१॥
जिस रण माहिं भयानक, रव कर रहे तुरंगम,
घन सम गज गरजाहिं, मत्त मानों गिरि जंगम।
अति कोलाहल माहिं; बात जहँ नहीं सुनीजै,
राजन को परचंड, देख बल धीरज छीजै॥
नाथ तिहारे नाम तैं, सो छिन मांहि पलाय,
ज्यों दिनकर परकाशतैं, अन्धकार विनशाय ॥४२॥
मारे जहां गयन्द, कुम्भ हथियार विदारे,
उमगे रुधिर-प्रवाह, वेग जलसों विस्तारे,
होय तिरन असमर्थ, महाजोधा बलपूरे,
तिस रन में जिन तोय, भक्त जे हैं नर सूरे॥
दुर्जय अरिकुल जीत के, जय पावैं निकलंक।
तुम पदपंकज मन बसैं, ते नर सदा निशंक ॥४३॥

नक्र चक्र मगरादि, मच्छकरि भय उपजावै,
जामें वड़वा अग्नि, दाहतै नीर जलावै।
पार न पावे जास, थाह नहिं लहिए जाकी,
गरजें अति गम्भीर, लहर को गिनति न ताकी ॥
सुख सों तिरैं समुद्र को, जे तुम गुण सुमराहिं,
लोल कलोलन के शिखर, पार थान ले जांहि ॥ ४४ ॥
महा जलोदर रोग, भार पीड़ित नर जे हैं,
वात पित्त कफ कुष्ट, आदि जो रोग गहे हैं।
सोचत रहे उदास, नांहि जीवन की आशा,
अति घिनावनी देह, धरैं दुर्गन्ध निवासा ॥
तुम पद पंकज धूल को, जो लावें निज अङ्ग,
ते निरोग शरीर लहिं, छिन में होहिं अनङ्ग ॥ ४५ ॥
पांव कंठ तैं जकर बांध सांकल अति भारी,
गाढी वेड़ी पैर मांहि जिन जांघ विदारी।
भूख प्यास चिन्ता शरीर, दुख जे विललाने,
शरण नांहि जिन कोय, भूप के वन्दीखाने ॥
तुम सुमरत स्वयमेवही, वन्धन सव खुल जाहिं,
छिन मे ते सम्पति लहैं, चिन्ता भय विनसाहिं ॥ ४६ ॥
महामत्त गजराज, और मृगराज दवानल,
फनपति रण परचंड, नीरनिधि रोग महावल।
बन्धन ये भए आठ, डरपकर मानों नाशैं,
तुम सुमरत छिनमाहिं, अभय थानक परकाशैं ॥
इस अपार संसार में, शरण नाहिं प्रभु कोय,
यातैं तुम पद भक्त को, भक्ति सहाई होय ॥ ४७ ॥
यह गुणमाल विशाल, नाथ तुम गुणन संवारी,
विविधि वर्णमय पुहुप, गूंथ मैं भक्ति विथारी।

जे नर पहिरै कंठ भावना मन में भावै,
मानतुंग ते निजाधीन, शिव लक्ष्मी पावै ॥
भाषा भक्तामर कियो, 'हेमराज' हितहेत,
जे नर पढ़ैं सुभाव सौं, ते पावैं शिव खेत ॥ ४८ ॥

समाधि मरण छोटा

(चाल योगीरासा)

गौतम स्वामी बन्दों नामी मरण समाधि भला है ।
मैं कब पाऊं निशदिन ध्याऊं गाऊं वचन कला है ।
देव धर्म गुरु प्रीति महा दृढ सात व्यसन नहीं जाने ।
त्यागि बाईस अभक्ष संयमी बारह व्रत नित ठानै ॥१॥
चक्की चूली उखरी बुहारी पानी त्रस ना विरोधे ।
बनिज करे पर द्रव्य हरे नहीं छहों करम इमि सोधे ॥
पूजा शास्त्र गुरुन की सेवा संयम तप चहुँ दानी ।
पर उपकारी अल्प अहारी सामायिक विधि ज्ञानी ॥२॥
जाप जपे तिहुँ योग धरे दृढ तनु की ममता टारे ।
अन्त समय वैराग्य सम्हारे ध्यान समाधि विचारे ॥
आग लगे अरु नाव जब डूबे धर्म विघन जब आवे ।
चार प्रकार आहार त्यागि के मन्त्र सु मन मे ध्यावे ॥३॥
रोग असाध्य जरा बहु देखे कारण और निहारे ।
बात बड़ी है जो बनि आवे भार भवन को डारे ॥
जो न बने तो घर में रह करि सब सों होय निराला ।
मात पिता सुत त्रिय को सौंपे निज परिग्रह अहि काला ॥४॥
कुछ चैत्यालय कुछ श्रावक जन कुछ दुखिया धन देई ।
क्षमा क्षमा सब ही सों कहिके मनकी शल्य हनेई ॥

शत्रुन सों मिल मिल कर जोरे मैं वहु करी है बुराई।
तुमसे प्रीतम को दुख दीने ते सब बकसो भाई ॥५॥
धन धरती जो मुख सों मांगे सो सब दे सन्तोषे।
छहों काय के प्रानी ऊपर करुणा भाव विशेषे ॥
ऊंच नीच घर बैठ जगह इक कुछ भोजन कुछ पयले।
दूध धारी क्रम क्रम तज के छाछ अहार गहेले ॥६॥
छाछ त्यागि के पानी राखे पानी तजि संथारा।
भूमि मांहि थिर आसन मांडे साधर्मी ढिंग प्यारा ॥
जब तुम जानो यह न जपै है तब जिनवाणी पढिये।
यों कहि मौन लियो संन्यासी पंच परम पद लहिये ॥७॥
चार अराधन मन में ध्यावे बारह भावन भावे।
दश लक्षण मन धर्म विचारे रत्नत्रय मन ल्यावे ॥
पैंतिस सोलह षटपन चारों दुइइक वरण विचारे।
काया तेरी दुख की ढेरी ज्ञान मई तूं सारे ॥८॥
अजर अमर निज गुणसो पूरे परमानन्द सुभावे।
आनन्द कन्द चिदानन्द साहब तीन जगतपति ध्यावे।
क्षुधा तृषादिक होई परीषह सहे भाव सम राखे।
अतीचार पांच सब त्यागे ज्ञान सुधारस चाखे ॥९॥
हाड़ मांस सब सूख जाय जब धरम लीन तन त्यागे।
अद्भुत पुण्य उपाय सुरग मैं सेज उठे ज्यों जागे ॥
तहां ते आवे शिव पद पावे विलसे सुक्ख अनन्तो।
'द्यानत' यह गति होय हमारी जैन धरम जयवन्तो ॥१०॥

॥ इति समाधिमरणं समाप्तम् ॥

बारह भावना मंगतराय कृत

दोहा

वन्दूं श्री अरहन्तपद, वीतराग विज्ञान ।
वरणूं बारह भावना, जगजीवनहित जान ॥१॥

विश्नुपद छन्द

कहां गये चक्री जिन जीता, भरतखंड सारा ।
कहां गये वह रामरु लछमन जिन रावन मारा ॥
कहां कृष्ण रुक्मिणि सतभामा, अरु संपति सगरी ।
कहां गये वह रङ्गमहल अरु, सुवरन की नगरी ॥२॥
नहीं रहे वह लोभी कौरव जूझ मरे रन में ।
गये राज तज पांडव वनको, अगनि लगी तनमें ॥
मोहनींद से उठ रे चेतन, तुझे जगावन को ।
हो दयाल उपदेश करैं गुरु, बारह भावन को ॥ ३ ॥

अथिर भावना

सूरज चाँद छिपै निकलै ऋतु फिर फिर कर आवै ।
प्यारी आयू ऐसी वीते, पता नहीं पावै ॥
पर्वतपतितनदी सरिता जल वहकर नहिं हटता ।
स्वास चलत यों घटै काठ ज्यों, आरेसों कटता ॥४॥
ओसबूंद ज्यों गलै धूप में, वा अंजुलि पानी ।
छिन छिन यौवन छीन होत है क्या समझै प्रानी ॥
इन्द्रजाल आकाश नगर सब जगसंपति सारी ।
अथिर रूप संसार विचारो सब नर अरु नारी ॥५॥

अशरण भावना

कालसिंहने मृगचेतनको, घेरा भव-वन में ।
नहीं बचावनहारा कोई, यों समझो मन में ॥

मन्त्र यन्त्र सेना धन सम्पति, राज पाट छूटे।
वश नहिं चलता काल लुटेरा, काय नगरि लूटै ॥६॥
चक्ररतन हलधरसा भाई, काम नहीं आया।
एक तीरके लगत कृष्णकी विनश गई काया॥
देव धर्म गुरु शरण जगतमें, और नहीं कोई।
भ्रमसे फिरै भटकता चेतन, युँही उमर खोई ॥७॥

संसार भावना

जनममरन अरु जरारोगसे, सदा दुखी रहता।
द्रव्य क्षेत्र अरु कालभावभव, परिवर्त्तन सहता॥
छेदन भेदन नरक पशुगति, वध बन्धन सहना।
रागउदयसे दुख सुरगतिमें, कहां सुखी रहना ॥८॥
भोगि पुण्यफल हो इकइन्द्री, क्या इसमें लाली।
कुतवाली दिन चार वही फिर, खुरपा अरु जाली॥
मानुपजन्म अनेक विपतिमय, कहीं न सुख देखा।
पंचमगति सुख मिलै शुभाशुभका मेटो लेखा ॥९॥

एकत्व भावना

जन्मै मरै अकेला चेतन, सुखदुख का भोगी।
और किसी का क्या इक दिन यह, देह जुदी होगी॥
कमला चलत न पैंड जाय मरघट तक परिवारा।
अपने अपने सुख को रोवैं, पिता पुत्र दारा॥ १० ॥
ज्यों मेले में पंथीजन मिलि नेह फिरैं धरते।
ज्यों तरवरपै रैंन बसेरा पंछी आ करते॥
कोस कोई दो कोस कोई उड़ फिर थक थक हारै।
जाय अकेला हँस सगमें, कोइ न पर मारै ॥११॥

भिन्न भावना

मोहरूप मृगतृष्णा जगमें मिथ्या जल चमकै।

मृग चेतन नित भ्रम में उड़ उठ, दौड़ैं थक थककै।
जल नहिं पावे प्राण गमावै, भटक भटक मरता।
वस्तु पराई मानै अपनी, भेद नहीं करना ॥१२॥
तू चेतन अरु देह अचेतन, यह जड़ तू ज्ञानी।
मिले अनादि यतनतैं बिछुड़ै ज्यों पय अरु पानी ॥
रूप तुम्हारा सबसों न्यारा, भेद ज्ञान करना।
जौलौं पुरुष थकै न तौलौं उद्यमसों चरना ॥ १३ ॥

अशुचि भावना

तू नित पोखै यह सूखै ज्यों धोवै त्यों मैली।
निश दिन करै उपाय देहका, रोगदशा फैली ॥
मात-पिता रज-वीरज मिलकर, बनी देह तेरी।
मांस हाड़ नश लहू राधकी, प्रकट व्याधि घेरी ॥१४॥
काना पौंडा पड़ा हाथ यह चूसै तो रोवै।
फलै अनन्त जु धर्म ध्यान की, भूमिविषै बोवै ॥
केसर चन्दन पुष्प सुगंधित, वस्तु देख सारी।
देह परसते होय अपावन, निशदिन मल जारी ॥१५॥

आस्रव भावना

ज्यों सरजल आवत मोरी त्यों, आस्रव कर्मनको।
दर्वित जीव देश गहै जब पुद्गल भरमन को ॥
भावित आस्रवभाव शुभाशुभ, निश दिन चेतन को।
पाप पुण्य के दोनों करता, कारण बंधन को ॥१६॥
पन मिथ्यात योग पन्द्रह द्वादश अविरत जानो।
पंचरु बीस कषाय मिले सब सत्तावन मानो ॥
मोहभाव की ममता टारै, पर परणत खोते।
करे मोखका यतन निरास्रव, ज्ञानी जन होते ॥ १७ ॥

संवर भावना

ज्यों मोरी में डाट लगावैं, तब जल रुक जाता।
त्यों आस्रव को रोकै संवर, क्यों नहिं मन लाता॥
पंच महाव्रत समिति गुप्तिकर वचन काय मनको।
दशविधर्म परीषह बाइस, बारह भावनको॥ १८॥
यह सब भाव सतावन मिलकर, आस्रव को खोते।
सुपन दशासे जागे चेतन, कहां पड़े सोते॥
भाग शुभाशुभ रहित शुद्ध भावन संवर पावै।
डांट लगत यह नाव पड़ी मझधार पार जावै॥ १६॥

निर्जरा भावना

ज्यों सरवर जल रुका सूखता, तपन पड़ै भारी।
संवर रोकै, कर्म निर्जरा ह्वै सोखन हारी॥
उदय भोग सविपाक मय, पकजाय आम डाली।
दूजी है अविपाक पकावै, पालविषै माली॥ २०॥
पहली सबके होय नहीं, कुछ सरैं काम तेरा।
दूजी करै जु उद्यम करके मिटै जगतफेरा॥
संवर सहित करो तप प्रानी, मिलै मुक्ति राणी।
इन,दुलहिन की वही सहेली, जानै सब ज्ञानी॥२१॥

लोक भावना

लोक अलोक अकाश मांहि थिर, निराधार जानो।
पुरुषरूप कर-कटी भये षट द्रव्यनसों मानों॥
इसका कोई न करता हरता, अमिट अनादी, है।
जीवरु पुद्गल नाचै यामैं, कर्म उपाधी है॥२२॥
पाप पुन्यसों जीव जगतमें, नित सुख दुख भरता।
अपनी करनी आप भरै शिर,-औरन के धरता॥

मोहकर्म को नाश मेटकर,-सब जगकी आसा।
निज पद्में थिर होय लोकके, शीश करो बासा ॥२३॥

बोधिदुर्लभ भावना

दुर्लभ हैं निगोद से थावर अरु त्रसगति पानी।
नरकाया को सुरपति तरसै सो दुर्लभ प्रानी ॥
उत्तम देश सुसंगति दुर्लभ, श्रावककुल पाना।
दुर्लभ सम्यक दुर्लभ संयम, पंचम गुणठाना ॥२४॥
दुर्लभ रत्नत्रय आराधन, दीक्षा का धरना।
दुर्लभ मुनिवर को व्रत पालन, शुद्धभाव करना ॥
दुर्लभ ते दुर्लभ है चेतन, बोधि ज्ञान पावे।
पाकर केवल ज्ञान नहीं फिर इस भव में आवै ॥२५॥

धर्म भावना

हो मुछंद जग पाप करै सिर,-करता के लावै।
कोई छिनक कोई करता से, जगमैं भटकावैं ॥२६॥
वीतराग सर्वज्ञ दोष बिन, श्रीजिनकी वानी।
सप्त तत्त्वका वर्णन जामे, सबको सुखदानी ॥
इनका चिंतवन बारबार कर श्रद्धा उर धरना।
"मंगत" इसी जतनतैं इकदिन, भवसागर तरना ॥२७॥

॥ इति मुलतानपुरनिवासी मगतरायजी कृत बारह भावना ॥

बारह भावना

(भूधरदासकृत)

राजा राणा छत्रपति, हथियन के असवार। मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी वार ॥ १ ॥ दल बल देवी देवता, मात पिता परिवार। मरती विरियाँ जीवको, कोई न राखनहार ॥ २ ॥ दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णा वश धनवान। कहीं न सुख संसार में, सब जग देखो छान ॥३॥ आप अकेला अवतरे, मरे अकेला

होय । यूं कब हू इस जीव का, साथी सगा न कोय ॥ ४ ॥ जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपना कोय । पर संपति पर प्रगटये, पर हैं परिजन लोय ॥ ५ ॥ दिपे चाम चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह । भीतर या सम जगत में, और नहीं घिनगेह ॥ ६ ॥

सोरठा—मोह नींदके जोर, जगवासी घूमे सदा । कर्मचोर चहुँ ओर, सरवस लूटे सुध नहीं ॥ ७ ॥ सतगुरु देय जगाय, मोहनींद जब उपशमे । तब कुछ बने उपाय, कर्म चोर आवत रुके ॥ ८ ॥

दोहा—ज्ञान दीप तप तेल भर, घर सोधै भ्रम छोर । याविधि बिन निकसे नहीं, बैठे पूर्व चोर ॥ ॥ पंचमहाव्रत संचरण, सुमति पंच परकार । प्रबल पंच इन्द्री विजय, धार निर्जरा सार ॥ १० ॥ चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान । तामें जीव अनादि से, भरमत है बिन ज्ञान ॥ ११ ॥ यांचे सुरतरु देय सुख, चिंतन चिंता रैन । बिन याचे बिन चिंतवे, धर्म सकल सुख दैन ॥ १२ ॥ धनकन कंचन राजसुख, सर्व सुलभकर जान । दुर्लभ है संसारमें, एक यथारथ ज्ञान ॥ १३ ॥

❀ इति सपूर्णम् ❀

श्री चौबीस तीर्थंकरों के चिह्न ।

वृषभनाथ का 'वृषभ' जु जान । अजितनाथ के 'हाथी' मान ॥
संभवजिनके 'घोड़ा' कहा । अभिनंदनपद 'बन्दर' लहा ॥ १ ॥
सुमतिनाथ के 'चकवा' होय । पद्मप्रभ के 'कमल' जु जोय ॥
जिनसुपास के 'सथिया' कहा । चंद्रप्रभ पद 'चंद्र' जु लहा ॥
पुष्पदन्त पद 'मगर' पिछान । 'कल्पवृक्ष' शीतल पद मान ॥
श्री श्रेयांस पद 'गेंड़ा' होय । वासुपूज्य के 'भैंसा' जोय ॥ ३ ॥
विमलनाथपद 'शूकर' मान । अनन्तनाथके 'सेही' जान । धर्मनाथ के 'वज्र' कहाय । शांतिनाथ पद 'हिरन' लहाय ॥ ४ ॥ कुन्थुनाथके

पद 'अज' चीन । अरजिनके पद चिह्न जु 'मीन' ॥ मल्लिनाथ पद 'कलश' कहा । मुनिसुव्रत के 'कछुआ' लहा ॥ ५ ॥ 'लालकमल' नमिजिन के होय । नेमिनाथ-पद 'शंख' जु जोय ॥ पार्श्वनाथ 'सर्प' जु कहा । वर्द्धमान पद 'सिंह' हि लहा ॥ ६ ॥

— मेरी द्रव्य पूजा —

[प० जुगलकिशोरजी मुख्तारकृत]

कृमिकुल कलित नीर है जिसमें मच्छ कच्छ मेंढक फिरते ।
हैं मरते औ वहीं जनमते, प्रभो मलादिक भी करते ॥
दूध निकाले लोग छुड़ाकर, वच्चे को पीते पीते ।
हैं उच्छिष्ट अनीतिलब्ध यो, योग तुम्हारे नहिं दीखे ॥१॥
दही घृतादिक भी वैसे हैं कारण उनका दूध यथा ।
फूलों को भ्रमरादिक सूंघे, वे भी हैं उच्छिष्ट तथा ॥
दीपक तो पतंग कालानल, जलते जिनपर कीट सदा ।
त्रिभुवन सूर्य, आपको अथवा दीप दिखाना नहीं भला ॥२॥
फल मिष्टान्न अनेक यहां पर, उसमे ऐसे एक नहीं ।
मलप्रिया मक्खी ने जिसको, आकर प्रभुवर छुआ नहीं ॥
यों अपवित्र पदार्थ अरुचिर, तू पवित्र सब गुण घेरा ।
किस विधि पूजू क्या हि चढाऊं, चित्त डोलता है मेरा ॥३॥
औ आता है ध्यान तुम्हारे क्षुधा तृषा का लेश नहीं ॥
नाना रस युत अन्न पान का, अतः प्रयोजन रहा नहीं ॥
नहिं वांछा न विनोद भाव नहिं, राग अंशका पता कहीं ।
इससे व्यर्थ चढाना होगा, औषध सम जब रोग नहीं ॥४॥
यदि तुम कहो रत्न वस्त्रादिक, भूषण क्यों न चढ़ाते हो ।
अन्य सदृश पावन हैं अर्पण, करते क्यों सकुचाते हो ॥

तो तुमने नि सार समझ जब, खुशी खुशी उनको त्यागा।
हो वैराग्य-लीनमति स्वामिन्! इच्छा का तोड़ा तागा ॥५॥
तब क्या तुम्हें चढ़ाऊं वे ही, करूं प्रार्थना ग्रहण करो।
होगी यह तो प्रकट अज्ञता, तव स्वरूप की सोच करो॥
मुझे धृष्टता दीखे अपनी, और अश्रद्धा बहुत बड़ी।
हेय तथा सत्यक्त वस्तु यदि, तुम्हें चढाऊं घड़ी घड़ी ॥६॥
इससे युगल हस्त मस्तक पर, रखकर नम्रीभूत हुआ।
भक्ति सहित मैं प्रणमूं तुमको, बार बार गुणलीन हुआ॥
संस्तुति शक्ति समान करूं औ, सावधान हो नित तेरी।
काय वचन की यह परिणति ही, अहो द्रव्य पूजा मेरी ॥७॥
भाव भरी इस पूजा से ही, होगा आराधन तेरा॥
होगा तव सामीप्य प्राप्त औ, सभी मिटेगा जग फेरा॥
तुझमें मुझमें भेद रहेगा, नहीं स्वरूप से तब कोई।
ज्ञानानन्द कला प्रकटेगी, थी अनादि से जो खोई ॥८॥

श्री जिन-सहस्रनाम स्तोत्रम्।

स्वयंभुवे नमस्तुभ्यमुत्पाद्यात्मानमात्मनि। स्वात्मन्यैव तथोद्भूतवृत्तयेऽचिंत्यवृत्तये ॥१॥ नमस्ते जगतां पत्ये लक्ष्मीभर्त्रे नमोस्तु ते। विदांवर नमस्तुभ्यं नमस्ते वदतांवर ॥२॥ कर्मशत्रुहनं देवमामनंति मनीषिणः। त्वामानमत्सुरेन्मौलिभामालाभ्यर्चितक्रमम् ॥३॥ ध्यानदुर्घणनिर्भिन्नघनघाति महातरुः। अनंतभवसंतानजयादासीरनन्तजित् ॥४॥ त्रैलोक्यनिर्जयावाप्त-दुर्दर्पमतिदुर्जयं। मृत्युराजं विजित्यासीज्जन्मृत्युंजयो भवान् ।५। विधुताशेषससारबंधनो भव्यबांधव। त्रिपुरारिस्त्वमेवासि जन्ममृत्युजरांतकृत् ॥६॥ त्रिकालविजयाशेषतत्त्वभेदात् त्रिधोत्थितं। केवलाख्यं दधच्चक्षुस्त्रिनेत्रोसि त्वमोशिता ॥७॥ त्वामंधकांतकं प्राहुर्मोहांधासुरमर्दनात्। अर्द्धन्ते नारयो यस्मादर्ध-

नारीश्वरोऽस्यत ॥८॥ शिवः शिवपदाध्यासाद् दुरितारिहरो हर. । शंकर. कृतशं लोके शभवस्त्वं भवन्मुखे ॥६॥ वृषभोसि जगज्ज्येष्ठ. पुरु पुरुगुणोदयैः । नाभेयो नाभिसभूतेरिक्ष्वाकुकुलनंदन' ॥१०॥ त्वमेक पुरुषस्कधस्त्वं द्वे लोकस्य लोचने । त्वं त्रिधा बुद्धसन्मार्ग-स्त्रिज्ञस्त्रिज्ञानधारक ॥११॥ चतु -शरण-मांगल्यमूर्तिस्त्वं चतुरस्रधी । पंचब्रह्ममयो देव पावनस्त्वं पुनीहि मां ॥१२॥ स्वर्गावतरणे तुभ्यं सद्योजातात्मने नम' । जन्माभिषेकवामाय वामदेव नमोस्तु ते ॥१३॥ सन्निष्क्रांतावघोराय परं प्रशममीयुषे । केवलज्ञानससिद्धावीशानाय नमोस्तुते ॥ ४॥ पुरस्तत्पुरुषत्वेन विमुक्तिपदभागिने । नमस्तत्पुरुपावस्थां भाविनीं तेऽद्य विभ्रते ॥ १५ ॥ ज्ञानावरणनिर्ह्रासान्नमस्तेऽनन्तचक्षुषे । दर्शनावरणोच्छेदान्नमस्ते विश्वदृश्वने ॥१६॥ नमो दर्शनमोहघ्ने क्षायिकामलदृष्टये । नमश्चारित्रमोहघ्ने विरागाय महौजसे ॥१७॥ नमस्तेऽनन्त-वीराय नमोऽनन्त-सुखात्मने । नमस्तेऽनन्त-लोकाय लोकालोकविलोकिने ॥१८॥नमस्तेऽन्त-दानाय नमस्तेऽनन्त-लब्धये । नमस्तेऽनन्त-भोगाय नमोऽनन्तोपभोगिने ॥१६॥ नमः परम-योगाय नमस्तुभ्यमयोनये । नम परमपूताय नमस्ते परमर्षये ॥२०॥ नमः परम-विद्याय नम. परमतच्छिदे । नमः परमतत्त्वाय नमस्ते परमात्मने ॥२१॥ नमः परमरूपाय नमः परमतेजसे । नमः परममार्गाय नमस्ते परमेष्ठिने ॥२२॥ परमर्द्धिजुषे धाम्ने परमज्योतिषे नम' । नम पारेतम -प्राप्तधाम्ने परतरात्मने ॥२३॥ नम. क्षीणकलंकाय क्षीणबन्ध नमोऽस्तुते । नमस्ते क्षीणमोहाय क्षीणदोषाय ते नम. ॥२४॥ नमः सुगतये तुभ्य शोभनां गतिमीयुषे । नमस्तेतींद्रियज्ञानसुखायादिन्द्रियात्मने ॥२५॥ कायबन्धननिर्मोक्षादकायाय नमोस्तुते । नमस्तुभ्यमयोगाय योगिनामधियोगिने ॥ २६ ॥ अवेदाय नमस्तुभ्यमकषायाय ते नमः । नमः परमयोगीन्द्रवन्दितांघ्रिद्वयायते ॥ २७ ॥ नम' परमविज्ञान नम.

परमसंयम । नमः परमदृग्दृष्टपरमार्थाय ते नम ॥ २८ ॥ नमस्तु-भ्यमलेश्याथ शुक्ललेश्यांशकस्पृशे । नमो भव्येतरावस्थाव्यतीताय विमोक्षणे ॥२६॥ संज्ञ्यसंज्ञिद्वयावस्थाव्यतिरिक्तामलात्मने । नमस्ते वीतसंज्ञाय नमः क्षायिकदृष्टये ॥ ३० ॥ अनाहा ाय तृप्ताय नम' परमभाजुपे । व्यतीताशेषदोपाय भवाब्धेपारमीयुपे ॥३१॥ अजराय नमस्तुभ्यं नमस्तेऽतीतजन्मने। अमृत्यवे नमस्तुभ्यमचलायाक्षरात्मने ॥३२॥ अलमास्तां गुणस्तोत्रमनंतास्तावका गुणा । त्वन्नामस्मृति-मात्रेण पर्यु पासिसिषामहे ॥३३॥ एवं स्तुत्वा जिन देव भक्त्या-परमया सुधीः । पठेदष्टोत्तरं नाम्नां सहस्र पाप शांतये ॥३४॥

पुष्पांजलिं ।

इति प्रस्तावना

(अथ भगवज्जिनसेनाचार्य कृत स्तोत्रं)

प्रसिद्धाष्टसहस्रेद्धलक्षणं त्वां गिरां पतिम् ।
नाम्नामष्टसहस्रेण तोष्टुमोऽभीष्टसिद्धये ॥ १ ॥

तद्यथा

श्रीमान्स्वयंभूर्वृषभः शंभव' शंभुरात्मभू । स्वयंप्रभः प्रभुर्भोक्ता विश्वभूरपुनर्भवः ॥२॥ विश्वात्मा विश्वलोकेशो विश्वतश्चक्षुरक्षरः । विश्वविद्विश्वविद्येशो विश्वयोनिरनश्वरः ॥ ३ ॥ विश्वदृश्वा विभु-र्धाता विश्वेशो विश्वलोचनः। विश्वव्यापी विधिर्वेधा. शाश्वतो विश्व-तोमुखः ॥ ४ ॥ विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठो विश्वमूर्तिर्जिनेश्वरः । विश्व-दृग्विश्वभूतेशो विश्वज्योतिरनीश्वरः ॥ ५ ॥ जिनो जिष्णुरमेयात्मा विश्वरीशो जगत्पतिः । अनन्तचिदचिन्त्यात्मा भव्यबन्धुरबन्धनः ॥ ६ ॥ युगादिपुरुषो ब्रह्मा पञ्चब्रह्ममयः शिवः । परः परतरः सूक्ष्म-परमेष्ठी सनातनः ॥७॥ स्वयंज्योतिरजोऽजन्मा ब्रह्मयोनिरयोनिजः ।

मोहारिविजयी जेता धर्मचक्री दयाध्वजः ॥८॥ प्रशान्तारिरनन्तात्मा योगी योगीश्वरार्चितः। ब्रह्मविद् ब्रह्मतत्त्वज्ञो ब्रह्मोद्याविद्यतीश्वर ॥९ शुद्धो बुद्धः प्रबुद्धात्मा सिद्धार्थः सिद्धशासनः। सिद्धः सिद्धान्तविद् ध्येयः सिद्धसाध्यो जगद्धित ॥ १० ॥ सहिष्णुरच्युतोऽनन्त प्रभविष्णुर्भवोद्भव। प्रभूष्णुरजरोऽजर्यो भ्राजिष्णुर्धीश्वरोऽव्यय. ॥ ११ ॥ विभावसुरसंभूष्णु स्वयंभूष्णुः पुरातनः। परमात्मा परंज्योतिस्त्रिजगत्परमेश्वरः ॥१२॥ इति श्रीमदादिशतम् ॥ १ ॥

दिव्यभाषापतिर्दिव्य. पूतवाक्पूतशासनः। पूतात्मा परमज्योतिर्धर्माध्यक्षो दमीश्वरः ॥ १ ॥ श्रीपतिर्भगवानर्हन्नरजा विरजाः शुचिः। तीर्थकृत्केवलीशान्तः पूजार्हः स्नातकोऽमलः ॥ २ ॥ अनन्तदीप्तिर्ज्ञानात्मा स्वयबुद्धः प्रजापतिः। मुक्तः शक्तो निराबाधो निष्कलो भुवनेश्वरः ।३। निरञ्जनो जगज्ज्योतिर्निरुक्तोक्तिर्निरामयः। अचलस्थितिरक्षोभ्यः कूटस्थ स्थाणुरक्षयः ॥ ४ ॥ अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता प्रणेता न्यायशास्त्रकृत्। शास्ता धर्मपतिर्धर्म्यो धर्मात्मा धर्मतीर्थकृत् ॥ ५ ॥ वृषध्वजो वृषाधीशो वृषकेतुर्वृषायुध.। वृषो वृषपतिर्भर्ता वृषभाङ्को वृषोद्भवः ।६। हिरण्यनाभिर्भूतात्मा भूतभृद्भूतभावनः। प्रभवो विभवो भास्वान् भवो भावो भवान्तक ॥ ७ ॥ हिरण्यगर्भःश्रीगर्भ प्रभूतविभवोऽभवः। स्वयंप्रभः प्रभूतात्मा भूतनाथो जगत्पतिः। सर्वादिः सर्वदृक् सार्वः सर्वज्ञः सर्वदर्शनः। सर्वात्मा सर्वलोकेश सर्ववित्सर्वलोकजित् ॥९॥ सुगति. सुश्रुतः सुश्रुक् सुवाक् सूरिर्बहुश्रत.। विश्रुत विश्वत. पादो विश्वशीर्ष. शुचिश्रवाः ॥ १० ॥ सहस्रशीर्ष. क्षेत्रज्ञः सहस्राक्ष. सहस्रपात्। भूतभव्यभवद्भर्ता विश्वविद्यामहेश्वरः ॥ ११ ॥ इति दिव्यादिशतम् ॥ २ ॥

स्थविष्ठः स्थविरो ज्येष्ठ पृष्ठः प्रेष्ठो वरिष्ठधीः। स्थेष्ठो गरिष्ठो बंहिष्ठ श्रेष्ठो निष्ठो गरिष्ठगीः ॥ १ ॥ विश्वभृद्विश्वसृट् विश्वेट विश्वभुग्विश्वनायकः। विश्वाशीर्विश्वरूपात्मा विश्वजिद्विजितान्तकः॥

विभवो विभयो वीरो विशोको विजरो जरन् । विरागो विरतोसङ्गो विविक्तो वीतमत्सरः ॥ ३ ॥ विनेयजनताबन्धुर्विलीनाशेषकल्मषः । वियोगो योगविद्विद्वान्विधाता सुविधिः सुधीः ॥ ४ ॥ क्षान्तिभाक्पृथिवीमूर्तिः शान्तिभाक्सलिलात्मकः । वायुमूर्तिरसङ्गात्मा वह्निमूर्तिरधर्मधक् ॥५॥ सुयज्वा यजमानात्मा सुत्वा सुत्रामपूजितः । ऋत्विग्यज्ञपतिर्यज्ञो यज्ञाङ्गममृतं हविः ॥६॥ व्योममूर्तिरमूर्तात्मा निर्लेपो निर्मलोऽचल. । सोममूर्तिः सुसौम्यात्मा सूर्यमूर्तिर्महाप्रभः ॥७॥ मंत्रविन्मन्त्रकृन्मन्त्री मन्त्रमूर्तिरनंतग. । स्वतन्त्रस्तन्त्रकृत्स्वान्तः कृतान्तान्त कृतान्तकृत् ॥८॥ कृती कृतार्थ. सत्कृत्य· कृतकृत्य कृतक्रतुः । नित्यो मृत्युंजयो मृत्युरमृतात्माऽमृतोद्भवः ॥९॥ ब्रह्मनिष्ठः परंब्रह्म ब्रह्मात्मा ब्रह्मसंभवः । महाब्रह्मपतिर्ब्रह्मेट् महाब्रह्मपदेश्वरः ॥ १० ॥ सुप्रसन्न. प्रसन्नात्मा ज्ञानधर्मदमप्रभु· । प्रशमात्मा प्रशान्तात्मा पुराणपुरुषोत्तमः ॥११॥ इति स्थविष्ठादिशतम् ॥ १२ ॥

महाशोकध्वजोऽशोकः कः स्रष्टा पद्मविष्टरः । पद्मेश पद्मसम्भूतिः पद्मनाभिरनुत्तरः ॥१॥ पद्मयोनिर्जगद्योनिरित्यः स्तुत्य. स्तुतीश्वरः । स्तवनार्हो हृषीकेशो जितजेयः कृतक्रिय· ॥ २ ॥ गणाधिपो गणज्येष्ठो गण्यः पुण्यो गणाग्रणी । गुणाकरो गुणाम्भोधिर्गुणज्ञो गुणनायकः ॥३॥ गुणादरी गुणोच्छेदी निर्गुण पुण्यगीर्गुणः । शरण्यः पुण्यवाक्पूतो वरेण्यः पुण्यनायकः ॥४॥ अगण्यः पुण्यधीर्गण्यः पुण्यकृत्पुण्यशासनः । धर्मारामो गुणग्रामः पुण्यापुण्यनिरोधकः ॥ ५ ॥ पापापेतो विपापात्मा विपात्मा वीतकल्मषः । निर्द्वन्द्वो निर्मदः शान्तो निर्मोहो निरुपद्रवः ॥ ६ ॥ निर्निमेषानिराहारो निःक्रियो निरुपप्लवः । निष्कलंको निरस्तैना निर्धूताङ्गो निराश्रय ॥ ७ ॥ विशालो विपुलज्योतिरतुलोचिन्त्यवैभवः । सुसंवृतः सुगुप्तात्मा सुभुत्सुनयतत्त्ववित् ॥ ८ ॥ एकविद्यो महाविद्यो मुनिः परिवृढः पतिः । धीशो विद्यानिधिः साक्षी विनेता विहतान्तकः ॥९॥

पिता पितामहः पाता पवित्रः पावनो गतिः। त्राता भिषग्वरो वर्यो वरदः परमः पुमान् ॥१०॥ कविः पुराणपुरुषो वर्षीयान्वृषभः पुरुः। प्रतिष्ठाप्रभवो हेतुर्भुवनैकपितामहः ॥११॥ इति महादिशतम् ॥ ४ ॥

श्रीवृक्षलक्षणः श्लक्ष्णो लक्षण्यः शुभलक्षणः। निरक्षः पुण्डरीकाक्षः पुष्कलः पुष्करेक्षणः ॥ १ ॥ सिद्धिदः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धात्मा सिद्धिसाधनः। बुद्धबोध्यो महाबोधिर्वर्धमानो महर्द्धिकः ॥ २ ॥ वेदाङ्गो वेदविद्वेद्यो जातरूपो विदांवरः। वेदवेद्यः स्वसंवेद्यो विवेदो वदतांवरः ॥३॥ अनादिनिधनोऽव्यक्तो व्यक्तवाग्व्यक्तशासनः। युगादिकृद्युगाधारो युगादिर्जगदादिजः ॥ ४ ॥ अतीन्द्रोऽतीन्द्रियो धीन्द्रो महेन्द्रोऽतीन्द्रियार्थदृक्। अनिन्द्रियोऽहमिन्द्राच्यो महेन्द्रमहितो महान् ॥५॥ उद्भवः कारणं कर्ता पारगो भवतारकः। अग्राह्यो गहनं गुह्यं परार्घ्यः परमेश्वरः ॥६॥ अनन्तर्द्धिरमेयर्द्धिरचिन्त्यर्द्धिः समग्रधीः। प्राग्र्यः प्राग्रहरोऽभ्यग्रः प्रत्यग्रोऽग्र्योऽग्रिमोऽग्रजः ॥७॥ महातपा महातेजा महोदर्को महोदयः। महायशा महाधामा महासत्त्वो महाधृतिः ॥८॥ महाधैर्यो महावीर्यो महासम्पन्महाबलः। महाशक्तिर्महाज्योतिर्महाभूतिर्महाद्युतिः ॥ ९ ॥ महामतिर्महानीतिर्महाक्षांतिर्महोदयः। महाप्राज्ञो महाभागो महानंदो महाकविः ॥१०॥ महामहा महाकीर्तिर्महाकांतिर्महावपुः। महादानो महाज्ञानो महायोगो महागुणः ॥११॥ महामहपतिः प्राप्तमहाकल्याणपञ्चकः। महाप्रभुर्महाप्रातिहार्याधीशो महेश्वरः ॥ १२ ॥ इति श्रीवृक्षादिशतम् ॥ ५ ॥

महामुनिर्महामौनी महाध्यानी महादमः। महाक्षमो महाशीलो महायज्ञो महामखः ॥१॥ महाव्रतपतिर्मह्यो महाकांतिधरोऽधिपः। महामैत्री महामेयो महोपायो महोमयः ॥२॥ महाकारुण्यको मंता महामंत्रो महायतिः। महानादो महाघोषो महेज्यो महसांपतिः ॥३॥ महाध्वरधरो धुर्यो महौदार्यो महिष्ठवाक्। महात्मा महसांधाम महर्षिर्महितोदयः ॥४॥ महाक्लेशांकुशः शूरो महाभूतपतिर्गुरुः। महा-

पराक्रमोऽनंतो महाक्रोधरिपुर्वशी ॥५॥ महाभवाब्धिसंतारिर्महामोहाद्रि सूदनः। महागुणाकर. क्षांतो महायोगीश्वरः शमी ॥ ६ ॥ महाध्यानपतिर्ध्याता महाधर्मा महाव्रत । महाकर्मारिरात्मज्ञो महादेवो महेशिता ॥७॥ सर्वक्लेशापह साधु. सर्वदोपहरो हरः। असंख्येयोऽप्रमेयात्मा शमात्मा प्रशमाकरः ॥८॥ सर्वयोगीश्वरोऽचिन्त्यः श्रुतात्मा विष्टरश्रवाः। दांतात्मा दमतीर्थेशो योगात्मा ज्ञानसर्वगः ॥९॥ प्रधानमात्मा प्रकृतिः परमः परमोदयः। प्रक्षीणबंध· कामारि· क्षेमकृत्क्षेमशासन· ॥१०॥ प्रणव प्रणय· प्राण· प्राणदः प्रणतेश्वर· । प्रमाण, प्रणिधिर्दक्षो दक्षिणोध्वर्यु रध्वर· ॥ ११ ॥ आनंदो नंदनो नन्दो वन्द्योऽनिंद्यऽभिनंदन· । कःमहा कामद· काम्यः कामधेनुररिंजयः ॥ १२ ॥ इति महामुन्यादिशतम् ॥ ६ ॥

असंस्कृतः सुसंस्कार· प्राकृतो वैकृतांतकृत्। अंतकृत्कांतगुः कांतश्चिंतामणिरभीष्टद ॥ १ ॥ अजितो जितकामारिरमितोऽमितशासन·। जितक्रोधो जितामित्रो जितक्लेशो जितांतक· ॥ २ ॥ जिनेन्द्रः परमानन्दो मुनीन्द्रो दुन्दुभिस्वन । महेन्द्रवन्द्यो योगीन्द्रो यतीन्द्रो नाभिनन्दनः ॥ ३ ॥ नाभेया नाभिजोऽजातः सुव्रतो मनुरुत्तमः। अभेद्योऽनत्ययोऽनाश्वानधिकेऽधिगुरुः सुधीः॥ ४ ॥ सुमेधा विक्रमी स्वामी दुराधर्षो निरुत्सुकः। विशिष्टः शिष्टभुक् शिष्टः प्रत्ययः कामनोऽनघः ॥ ५ ॥ क्षेमी क्षेमकरोऽक्षय्यः क्षेमधर्मपतिः क्षमी। अग्राह्यो ज्ञाननिग्राह्यो ध्यानगम्यो निरुत्तरः ॥ ६ ॥ सुकृती धातुरिज्यार्हः सुनयश्चतुराननः। श्रीनिवासश्चतुर्वक्त्रश्चतुरास्यश्चतुर्मुखः ॥७॥ सत्यात्मा सत्यविज्ञानः सत्यवाक्सत्यशासनः। सत्याशी सत्यसन्धान· सत्यः सत्यपरायणः ॥ ८ ॥ स्थेयान् स्थवीयान्नेदीयान्दवीयान्दूरदर्शनः । अणोरणीयाननणुर्गुरुराद्यो गरीयसान् ॥ ९ ॥ सदायोगः, सदाभोगः सदातृप्तः सदाशिवः। सदागतिः,सदासौख्यः सदाविद्यः सदोदयः ॥ १० ॥ सुघोपः सुमुखः

सौम्य सुखदः सुहितः सुहृत् । सुगुप्तोगुप्तिभृद् गोप्ता लोकाध्यक्षो दमीश्वर. ॥ ११ ॥ इति असंस्कृतादिशतम् ॥ ७ ॥

बृहद्बृहस्पतिर्वाग्मी वाचस्पतिरुदारधीः । मनीषी धिषणो धीमाञ्छेमुषीशो गिरांपति ॥ १ ॥ नैकरूपो नयोतुङ्गो नैकात्मा नैकधर्मकृत् । अविज्ञेयोऽप्रतर्क्यात्मा कृतज्ञः कृतलक्षणः ॥ २ ॥ ज्ञानगर्भो दयागर्भो रत्नगर्भः प्रभास्वर । पद्मगर्भो जगद्गर्भो हेमगर्भ सुदर्शनः ॥३॥ लक्ष्मीवांस्त्रिदशाध्यक्षो दृढीयानिन ईशिता । मनोहरो मनोज्ञाङ्गो धीरो गम्भीरशासन ॥ ४ ॥ धर्मयूपो दयायोगो धर्मनेमिमुनीश्वरः। धर्म-चक्रायुधो देव. कर्महा धर्मघोषणः ॥५॥ अमोघवागमोघाज्ञो निर्मलोऽमोघशासनः। सुरूपः सुभगस्त्यागी समयज्ञ. समाहित ॥ ६ ॥ सुस्थित स्वास्थ्यभाक्स्वस्थो नीरजस्को निरुद्धवः । अलेपो निष्कलङ्कात्मा वीतरागो गतस्पृहः ॥७॥ वश्येन्द्रियो विमुक्तात्मा निःसपत्नो जितेन्द्रिय. । प्रशान्तोऽनन्तधामर्षिर्मङ्गलं मलहानघ. ॥ ८ ॥ अनीदृगुपमाभूतो दृष्टिर्दैवमगोचरः । अमूर्तो मूर्तिमानेको नैको नानैकतत्त्वदृक् ॥ ९ ॥ अध्यात्मगम्यो गम्यात्मा योगविद्योगिवन्दित. । सर्वत्रग सदाभावी त्रिकाललिषयार्थदृक् ॥ १० ॥ शंकरः शंवदो दान्तो दमी क्षान्तिपरायणः । अधिपः परमानन्दः परात्मज्ञः परात्परः ॥ ११ ॥ त्रिजगद्वल्लभोऽभ्यर्च्यस्त्रिजगन्मङ्गलोदयः । त्रिजगत्पतिपूजाङ्घ्रिस्त्रिलोकाग्रशिखामणिः ॥ १२ ॥ इति बृहदादिशतम् ॥ ८ ॥

त्रिकालदर्शी लोकेशो लोकधाता दृढव्रतः । सर्वलोकातिगः पूज्य. सर्वलोकैकसारथि. ॥१॥ पुराणपुरुष पूर्वःकृतपूर्वाङ्गविस्तरः । आदिदेवः पुराणाद्यः पुरुदेवोऽधिदेवता ॥२॥ युगमुखो युगज्येष्ठो युगादिस्थितिदेशकः । कल्याणवर्णः कल्याणः कल्यः कल्याणलक्षणः ॥३॥ कल्याणप्रकृतिर्दीप्रकल्याणात्मा विकल्मपः । विकलङ्कः कलातीतः कलिलघ्नः कलाधरः ॥४॥ देवदेवो जगन्नाथो जगद्बन्धु-

जगद्विभुः । जगद्धितैषी लोकज्ञः सर्वगो जगदग्रजः ॥ ५ ॥ चराचर-गुरुर्गोप्यो गूढात्मा गूढगोचरः । सद्योजातः प्रकाशात्मा ज्वलज्ज्वलन-सप्रभः ॥६॥ आदित्यवर्णो भर्माभः सुप्रभः कनकप्रभः । सुवर्णवर्णो रुक्माभः सूर्यकोटिसमप्रभः ॥७॥ तपनीयनिभस्तुङ्गो बालार्काभोऽनलप्रभः । सन्ध्याभ्रबभ्रुर्हेमाभस्तप्तचामीकरच्छविः ॥८॥ निष्टप्त-कनकच्छायः कनत्काञ्चनसन्निभः । हिरण्यवर्णः स्वर्णाभः शात-कुम्भनिभप्रभः ॥ ९ ॥ द्युम्नाभो जातरूपाभस्तप्त-जाम्बूनदद्युतिः । सुधौतकलधौतश्रीः प्रदीप्तो हाटकद्युतिः ॥ १० ॥ शिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः स्पष्टः स्पष्टाक्षरः क्षमः । शत्रुघ्नोऽप्रतिघोऽमोघः प्रशास्ता शासिता स्वभूः ॥ ११ ॥ शान्तिनिष्ठो मुनिज्ज्येष्ठः शिवतातिः शिवप्रदः । शान्तिदः शान्तिकृच्छान्तिः कान्तिमान्कामितप्रदः ॥१२॥ श्रेयोनिधिरधिष्ठानमप्रतिष्ठः प्रतिष्ठितः । सुस्थिरः स्थावरः स्थाणुः प्रथीयान्प्रथितः पृथुः ॥१३॥ इति त्रिकालदर्श्यादिशतम् ॥६॥ अर्घम् ।

दिग्वासा वातरशनो निर्ग्रन्थेशो निरम्बरः । निष्किञ्चनो निरा-शंसो ज्ञानचक्षुरमोमुहः ॥ १ ॥ तेजोराशिरनन्तौजा ज्ञानाब्धिः शीलसागरः । तेजोमयोऽमितज्योतिर्ज्योतिर्मूर्तिस्तमोपहः ॥ २ ॥ जगच्चूडामणिर्दीप्तः शंवान्विघ्नविनायकः । कलिघ्नः कर्मशत्रुघ्नो लोकालोकप्रकाशकः ॥३॥ अनिद्रालुरतन्द्रालुर्जागरूकः प्रभामयः । लक्ष्मीपतिर्जगज्ज्योतिर्धर्मराजः प्रजाहितः ॥ ४ ॥ मुमुक्षुर्बन्धमोक्षज्ञो जिताक्षो जितमन्मथः । प्रशान्तरसशैलूषो भव्य-पेटकनायकः ॥ ५ ॥ मूलकर्ताखिलज्योतिर्मलघ्नो मूलकारणम् । आप्तो वागीश्वरः श्रेया-ञ्छ्रायसोक्तिर्निरुक्तवाक् ॥ ६ ॥ प्रवक्ता वचसामीशो मारजिद्विश्व-भाववित् । सुतनुस्तनुनिर्मुक्तः सुगतो हतदुर्नयः ॥ ७ ॥ श्रीशः श्रीश्रितपादाब्जो वीतभीरभयंकरः । उत्सन्नदोषो निर्विघ्नो निश्चलो लोकवत्सलः ॥ ८ ॥ लोकोत्तरो लोकपतिर्लोकचक्षुरपारधीः । धीर-धीर्बुद्धसन्मार्गः शुद्धः सूनृतपूतवाक् ॥ ९ ॥ प्रज्ञापारमितः प्राज्ञो

यतिर्नियमितेन्द्रिय. । भदन्तो भद्रकृद्भद्रः कल्पवृक्षो वरप्रदः ॥ १० ॥ समुन्मूलितकर्मारिः कर्मकाष्ठाशुशुक्षणिः । कर्मण्यःकर्मठ प्रांशुर्हेयादेयविचक्षणः ॥ ११ ॥ अनन्तशक्तिरछेद्यस्त्रिपुरारिस्त्रिलोचन· । त्रिनेत्रस्त्र्यम्बकस्त्र्यक्षः केवलज्ञानवीक्षण ॥१२॥ समन्तभद्रः शान्तारिधर्माचार्यो दयानिधि· । सूक्ष्मदर्शी जितानङ्गः कृपालुर्धर्मदेशक ॥ १३ ॥शुभंयु सुखसाद्भूत· पुण्यराशिरनामय· ।धर्मपालो जगत्पालो धर्मसाम्राज्यनायक· ॥१४॥ इति दिग्वासाद्यष्टोत्तरशतम् ॥१५॥

इत्यष्टाधिकसहस्रनामावली समाप्ता ।

धाम्नां पते तवामूनि नामान्यागमकोविदैः ।समुच्चितान्यनुध्यायन्पुमान्पूतस्मृतिर्भवेत् ॥१॥ गोचरोऽपि गिरामासां त्वमवाग्गोचरो मत । स्तोता तथाप्यसंदिग्धं त्वत्तोऽभीष्टफलं भजेत् ॥ २ ॥ त्वमतोऽसि जगद्बन्धुस्त्वमतोऽसि जगद्भिषक् । त्वमतोऽसि जगद्धाता त्वमतोऽसि जगद्धित· ॥ ३ ॥ त्वमेकं जगतां ज्योतिस्त्वं द्विरूपोपयोगभाक् । त्वं त्रिरूपैकमुक्त्यंगः स्वोत्थानन्तचतुष्टय ॥ ४ ॥ त्वं पञ्चब्रह्मतत्त्वात्मा पञ्चकल्याणनायक । षड्भेदभावतत्त्वज्ञस्त्वं सप्तनयसंग्रह ॥ ५ ॥ दिव्याष्टगुणमूर्तिस्त्वं नवकेवललब्धिक । दशावतार निर्धार्यो मां पाहि परमेश्वर ॥ ६ ॥ युष्मन्नामावलीदृब्धविलसत्स्तोत्रमालया । भवन्तं परिवस्यामः प्रसीदानुगृहाण न· ॥ ७ ॥ इदं स्तोत्रमनुस्मृत्य पूतो भवति भाक्तिक । य· स पाठं पठत्येनं सस्यात्कल्याण भाजनम् ॥ ८ ॥ तत· सदेदं पुण्यार्थी पुमान् पठति पुण्यधी· । पौरुहूतीं श्रियं प्राप्तु परमामभिलाषुक ॥ ९ ॥ स्तुत्वेति मघवा देवं चराचरजगद्गुरुम् । ततस्तीर्थविहारस्य व्यधात्प्रस्तावनामिमाम् ॥ १० ॥ स्तुति· पुण्यगुणोत्कीर्ति स्तोता भव्य प्रसन्नधी । निष्ठितार्थो भवांस्तुत्य फलं नैश्रेयसं सुखम् ॥११॥ य स्तुत्यो जगतां त्रयस्य न पुनः स्तोता स्वयं कस्यचित ॥ ध्येया योगिजनस्य यश्च नितरां ध्याता स्वयं कस्यचित् । यो

नेतृ न् नयते नमस्कृतिमलं नन्तव्यपक्षेक्षणः । स श्रीमान् जगतां त्रयस्य च गुरुर्देवः पुरुः पावनः ॥१२॥ तं देवं त्रिदशाधिपार्चितपदं घातिक्षयानन्तरं, प्रोत्थानन्तचतुष्टयं जिनमिन भव्याब्जिनीनामिनम्। मानस्तम्भविलोकनानतजगन्मान्य त्रिलोकीपतिं, प्राप्ताचिन्त्यवहिर्विभूतिमनघं भक्त्या प्रवन्दामहे ॥ १३ ॥

इति भगवज्जिनसेनाचार्य विरचितादिपुराणान्तर्गतं जिन-सहस्रनाम स्तवनम् ॥

संकट हरण स्तुति

हो दीन वन्धु श्रीपति, करुणानिधानजी ।
अब मेरी विथा क्यों न हरो, वार क्या लगी ॥ टेक ॥

मालिक हो दो जहान के जिनराज आपही । ऐबो हुनर हमारा तुम से छिपा नहीं । वेजान में गुनाह जो मुझसे वना सही । कंकरी के चोर को कटार मारिये नहीं । हो दीन० ॥१॥

दुख दर्द दिलका आपसे जिसने कहा सही । मुश्किल कहर वहर से लई है भुजा गही ॥ सव वेद और पुराण में प्रमाण है यही । आनन्द कन्द श्री जिनेन्द्र देव है तुही । दीन० ॥ २ ॥

हाथी पै चढ़ी जाती थी सुलोचना सती । गंगा में ग्राह ने गही गजराज की गति ॥ उस वक्त में पुकार किया था तुम्हें सती । भय टार के उभार लिया हो कृपापती । हो दीन० ॥ ३ ॥

पावक प्रचण्ड कुण्ड में उमण्ड जब रहा । सीता से शपथ लेने को तब रामने कहा ॥ तुम ध्यान धार जानकी पग धारनी तहां । तत्काल ही सर स्वच्छ हुआ कमल लहलहा । हो दीन० ॥ ४ ॥

जब द्रौपदी का चीर दुशासन ने था गहा । सवही सभा के लोग कहते थे ह हा ह हा । उस वक्त भीर पीर में तुमने करी सहा ।

पड़दा ढका सती का सुयश जगत में रहा । हो दीन० ॥ ५ ॥

सम्यक्त्व शुद्धशीलवन्ति चन्दना सती । किसके नजीक लगती थी जाहिर रती रती । वेड़ी में पड़ी थी तुमें जब ध्यावती हुती । तब वीर धीर ने हरी दुख द्वन्द की गति । हो दीन० ॥ ६ ॥

श्रीपाल को सागर विषै जब सेठ गिराया । उसकी रमा से रमने को आया था वेहया ॥ उस वक्त संकट में सती तुम को जो ध्याया । दुख द्वन्द फन्द मेट के आनन्द बढ़ाया । हो दीन०॥७॥

हरषेण की माता को जब सौत सताया । रथ जैन का तेरा चले पीछे से बताया ॥ उस वक्त के अनशन में सती तुम को जो ध्याया । चक्रीश हो सुत उसके ने रथ जैन चलाया । हो दीन०॥८॥

जब अंजना सती को हुआ गर्भ उजाला । तब सासुने कलक लगा घर से निकाला ॥ बन वर्ग के उपसर्ग में सती तुम को चितारा । प्रभु भक्तियुत जानके भय देव निवारा ॥ हो दीन०॥९॥

सोमा से कहा जो तू सती शील विशाला । तो कुम्भ में से काढा भला नाग ही काला । उस वक्त तुम्हें ध्याय के सती हाथ जो डाला । तत्काल ही वह नाग हुआ फूल की माला ॥ हो दी०॥१०॥

जब कुष्ठरोग था हुआ श्रीपाल राज को । मैना सती तब आप की पूजा, इलाज को । तत्काल ही सुन्दर किया श्रीपालराज को । वह राज भोग भोग गया मुक्तिराज को ॥ दीन० ॥ ११ ॥

जब सेठ सुदर्शन को मृषा दोष लगाया । रानी के कहे भूपने सूली पे चढाया ॥ उस वक्त तुम्हें सेठ ने निज ध्यान मे ध्याया । शूली उतार उसको सिंहासन पै बिठाया । हो दीन० ॥ १२ ॥

जब सेठ सुधन्नाजी को वापी में गिराया । ऊपर से दुष्ट था उसे वह मारने आया ॥ उस वक्त तुम्हें सेठ ने दिल अपने में ध्याया । तत्काल ही जंजाल से तब उसको बचाया ॥ हो दीन० ॥ १३ ॥

इक सेठ के घर में किया दारिद्र ने डेरा। भोजन का ठिकाना भी न था सांझ सवेरा। उस वक्त तुम्हें सेठ ने जब ध्यान में घेरा। घर उसके में तब कर दिया लक्ष्मी का बसेरा ॥ हो दीन०॥१४॥

बलि वाद में मुनिराज सों जब पार न पाया। तब रात को तलवार ले शठ मारने आया॥ मुनिराज ने निज ध्यान में मन लीन लगाया। उस वक्त हो परतक्ष तहां देव बचाया॥ हो दीन० ॥१५॥

जब राम ने हनुमन्त को गढ़ लंक पठाया। सीता की खबर लेने को फिरफौर सिधाया। मग बीच दो मुनिराज की लख आग में काया। झट वारि मूसल धार से उपसर्ग बुझाया॥ हो दीन० ॥१६॥

जिननाथ ही को माथ नवाता था उदारा। घेरे में पड़ा था वह कुम्भकरण विचारा। उस वक्त तुम्हें प्रेम से संकट में उचारा। रघुवीर ने सब पीर तहां तुरत निवारा। हो दीन० ॥ १७॥

रणपाल कुंवर के पड़ी थी पॉव में बेरी। उस वक्त तुम्हें ध्यान में ध्याया था सबेरी। तत्काल ही सुकुमार की सब झड़ पड़ी बेरी। तुम राजकुंवर की सभी दुख दन्द निवेरी॥ हो दिन० ॥ १८॥

जब सेठ के नन्दन को डसा नाग जु कारा। उस वक्त तुम्हें पीर में धरधीर पुकारा। तत्काल ही उस बाल का विषभूरि उतारा। वह जाग उठा सो के मानो सेज सकारा॥ हो दीन० ॥ १६

मुनि मानतुङ्ग को दई जब भूप ने पीरा। ताले में किया बन्द भरी लोहे जञ्जीरा॥ मुनीश ने आदीश की थुति की है गंभीरा। चक्रेश्वरी तब आन के झट दूर की पीरा॥ हो० ॥२०॥

शिवकोटि ने हठ था किया सामन्तभद्र सों। शिवपिण्ड की वन्दन करो शंकों अभद्र सों॥ उस वक्त स्वयम्भू रचा गुरु भाव

भद्र सों। जिन चन्द्र की प्रतिमा तहां प्रगटी सुभद्रसों ॥ हो०॥२१॥

सूवे ने तुम्हें आनके फल आम चढाया। मैंढक ले चला फूल भरा भक्ति का भाया ॥ उन दोनों को अभिराम स्वर्गधाम बसाया। हम आपसे दातार को लख आज ही पाया ॥ हो० ॥ २२ ॥

कपि स्वान सिंह नवल अज बैल विचारे। तिर्यंच जिन्हें रञ्च न था बोध चितारे ॥ इत्यादि को सुरधाम दे शिवधाम में धारे। हम आपसे दातार को प्रभु आज निहारे ॥ हो० दिन०॥२३

तुम ही अनन्त जन्तु का भय भीर निवारा। वेदो-पुराण में गुरु गणधर ने उचारा ॥ हम आपकी शरणागति मे आके पुकारा। तुम हो प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष इच्छिताकारा। हो दिन० ॥२४॥

प्रभु भक्त व्यक्त भक्तियुक्त मुक्ति के दानी। आनन्द कन्द वृन्द को हो मुक्ति के दानी। मोहि दीन जान दीनबन्धु पातक भानी। संसार विषम क्षार तार अन्तरजामी ॥ हो दिन० ॥ २५ ॥

करुणा निधान बान को अब क्यों न निहारो। दानी अनन्त दान के दाता हो सम्भारो ॥वृषचन्द नन्द वृन्द का उपसर्ग निवारो। संसार विषमक्षार से प्रभु पार उतारो। हो दीन बन्धु श्रीपति करुणा निधानजी। अब मेरी विथा क्यों ना हरो बार क्या लगी ॥ २६ ॥

॥ सम्पूर्णम् ॥

वैराग्य भावना

दोहा—बीज राख फल भोगले, ज्यों किसान जग मांहि।
त्यों चक्री सुख मे मगन, धर्म विसारै नांहि ॥

योगीरासा वा नरेन्द्र छन्द

इस विधि राज्य करे नर नायक भोगे पुण्य विशाला।
सुखसागर मे मग्न निरंतर जात न जानो काला ॥
एक दिवस शुभकर्म योग से क्षेमंकर मुनि वन्दे।

देखे श्रीगुरु के पद पंकज लोचन अलि आनन्दे ॥ १ ॥
तीन प्रदक्षिणा दे शिरनायो कर पूजा स्तुति कीनी।
साधु समीप विनय कर बैठो चरणों दृष्टि दीनी ॥
गुरु उपदेशी धर्म शिरोमणि सुन राजा वैरागी।
राज्य रमा वनितादिक जो रस सो सब नीरस लागी ॥
मुनि सूरज कथनी किरणावलि लगत भर्म बुद्धि भागी।
भव तन भोग स्वरूप विचारो परम धर्म अनुरागी ॥
या संसार महा वन भीतर भर्म छोर न आवे।
जन्मन मरन जरादों दावे जीव महादुख पावे ॥ ३ ॥
कबहूं कि जाय नर्क पद भुंजे छेदन भेदन भारी।
कबहूँ कि पशु पर्याय धरे तहाँ वध बन्धन भयकारी ॥
सुरगति में परि सन्मति देखे राग उदय दुख होई।
मानुष योनि अनेक विपति भय सब सुखी नहिं कोई ॥ ४ ॥
कोई इष्ट वियोगी विलखे कोई अनिष्ट संयोगी।
कोई दीन दरिद्री दीखे कोई तन का रोगी ॥
किस ही घर कलिहारी नारी कै वैरी सम भाई।
किस ही के दुख बाहर दीखे किस ही उर दुचिताई ॥ ५ ॥
कोई पुत्र बिना नित झूरै होय मरै तव रोवै।
खोटी संतति से दुख उपजे क्यों प्राणी सुख सोवै ॥
पुण्य उदय जिनके तिनको भी नाहीं सदा सुख साता।
यह जग बास यथारथ दीखे सबही हैं दुख दाता ॥ ॥ ६ ॥
जो संसार विषै सुख हो तो तीर्थंकर क्यों त्यागे।
काहे को शिव साधन करते संयम से अनुरागे ॥
देह अपावन अथिर घिनावन इसमें सार न कोई।
सागर के जल से शुचि कीजै तो भी शुद्ध न होई ॥ ७ ॥
सप्त कुधातु भरी मल मूत्र से चर्म लपेटी सो है।

अन्तर देखत या सम जग में और अपावन को है ॥
नव मल द्वार श्रवैं निश वासर नाम लिये घिन आवे ।
व्याधि उपाधि अनेक जहाँ तहाँ कौन सुधी सुख पावे ॥ ८ ॥
पोषत तो दुःख दोष करे अति सोपत सुख उपजावे ।
दुर्जन देह स्वभाव बराबर मूरख प्रीति बढावे ॥
राचन योग्य स्वरूप न याको विरचन योग्य सही है ।
यह तन पाय महातप कीजै इसमें सार यही है ॥ ९ ॥
भोग बुरे भव भोग बढावे वैरी हैं जग जी के ।
वे रस होंय विपाक समय अति सेवत लागे नीके ॥
वज्र अग्नि विपसे विषधर से हैं अधिक दुखदाई ।
धर्म रत्न को चोर प्रबल अति दुर्गति पंथ सहाई ॥ १० ॥
मोह उदय यह जीव अज्ञानी भोग भले कर जाने ।
ज्यों कोई जन खाय धतूरा सो सब कंचन माने ॥
ज्यों-ज्यों भोग संयोग मनोहर मन वांछित जन पावे ।
तृष्णा डाकिनि त्यों-त्यों भंके लहर लोभ विप लावे ॥ ११ ॥
मैं चक्री पद पाय निरंतर भोगे भोग घनेरे ।
तोभी तनिक भये ना पूरण भोग मनोरथ मेरे ॥
राज समाज महा अघ कारण वैर बढावन हारा ।
वेश्या सम लक्ष्मी अति चंचल इसका कौन पत्यारा ॥ १२ ॥
मोह महा रिपु वैर विचारे जग जीव संकट टारे ।
कारागार वनिता वेड़ी परजन है रखवारे ॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण तप ये जिय को हितकारी ।
ये ही सार असार और सब यह चक्री चित धारी ॥ १३ ॥
छोड़े चौदहरत्न नवोनिधि और छोड़े संग साथी ।
कोड़ि अठारह घोड़े छोड़े चौरासी लख हाथी ॥
इत्यादिक सम्पति बहु तेरी जीर्ण तृणवत् त्यागी ।

नीति विचार नियोगी सुत को राज्य दियो बड़भागी ॥ १४ ॥
होइ निःशल्य अनेक नृपति संग भूषण बसन उतारे।
श्री गुरुचरण धरी जिन मुद्रा पंच महाव्रत धारे ॥
धन्य यह समझ सुबुद्ध जगोत्तम धन्य यह धैर्य्य धारी।
ऐसी सम्पति छोड़ बसे वन तिन पद धोंक हमारी ॥ १५ ॥
दोहा—परिग्रह पोट उतार सब. दीनो चारित्र पथ।
निज स्वभाव मे थिर भये, वज्रनाभि निर्ग्रंथ ॥
इति वैराग्य भावना सम्पूर्णम।

गुरुस्तुति।

बन्दौं दिगम्ब गुरुचरन, जग तरन तारन जान। जे भरम भारी रोगको, हैं राज वैद्य महान ॥ जिनके अनुग्रह विन कभी, नहीं कटैं कर्म जजीर। ते साधु मेरे मन बसो, मेरी हरौ पातक पीर ॥ १ ॥ यह तन अपावन अशुचि है, संसार सकल असार। ये भोग विष पकवान से, इस भांति सोच विचार ॥ तप विरचि श्रीमुनि वन बसे, सब त्यागि परिग्रहभीर। ते साधु मेरे मन बसौ, मेरी हरौ पातक पीर ॥२॥ जे कांच कंचन सम गिनैं, अरि मित्र एक सरूप। निंदा बड़ाई सारिखी, वन खंड शहर अनूप। सुख दुःख जीवन मरन में, नहिं खुशी नहिं दिलगीर। ते साधु मेरे मन बसौ, मेरी हरौ पातक पीर ॥३॥ जे बाह्य परवत वन बसैं, गिरि गुहा महल मनोग। सिल सेज समता सहचरी, शशिकरण दीपकजोग ॥ मृग मित्र भोजन तप मई, विज्ञान निरमल नीर। ते साधु मेरे मन बसौं, मेरी हरौ पातक पीर ॥४॥ सूखै सरोवर जल भरे, सूखैं तरंगनि-तोय। वाटैं बटोहि ना चलैं, जहँ घाम गरमी होय। तिस काल मुनिवर तप तपैं, गिरि शिखर ठाड़े धीर। ते साधु मेरे मन बसौ, मेरी हरौ पातक पीर ॥५॥ घनघोर गरजैं घनघटा, जल परै पावसकाल। चहुँओर चमकै

वीजुरी, अति चलै शीतल व्याल (र)। तरुहेट तिष्ठैं तब जती, एकांत अचल शरीर। ते साधु मेरे मन वसौ, मेरी हरो पातक पीर ॥५॥ जब शीतमास तुसारसौं, दाहैं सकल वनराय। जब जमै पानी पोखरां, थरहरैं सबकी काय ॥ तब नगन निवसैं चौहटैं, अथवा नदी के तीर। ते साधु मेरे मन बसौ, मेरी हरो पातक पीर ॥७॥ कर जोर 'भूधर' बीनवै, कब मिलैं वे मुनिराज। यह आस मनकी कब मेरे मरे मगरे काज ॥ संसार विषम विदेशमे, जे विना कारण वीर। ते साधु मेरे मन बसौ, मेरी हरो पातक पीर ॥८॥

गुरुस्तुति (२) दोहा (राग = भरथरी)।

ते गुरु मेरे मन वसौ, जे भव-जलधि-जिहाज। आप तिरे पर तारहीं, ऐसे श्री ऋषिराज ॥गुरु०॥ १ ॥ मोह महारिपु जीतिकैं, छांड्यो सब घरबार। होय दिगम्बर वन बसे, आतम शुद्ध विचार ॥ ते गुरु ॥ २ ॥ रोगउरग-बिल वपु गिण्यो, भोग भुजंग समान। कदलीतरु संसार है, त्याग्यो सब यह जान ॥ ते गुरु० ॥३॥ रत्नत्रय निधि उर धरैं, अरु निरग्रन्थ त्रिकाल। मार्‌यो काम पिशाचको, स्वामी परम दयाल ॥ ते गुरु० ॥ ४ ॥ पंच महाव्रत आदरैं, पांचौ समिति-समेत। तीन गुपति पालैं सदा, अजरअमर-पद हेत ॥ ते गुरु० ॥५॥ धर्म धरैं दसलच्छणी, भावैं भावना सार। सहैं परीषह बीस द्वै, चारित-रतन भंडार ॥ ते गुरु० ॥६॥ जेठ तपै रवि आकरौ, सूखै सरवरनीर। शैल-शिखर मुनि तप तपैं, दाझै नगन शरीर ॥ ते गुरु० ॥७॥ पावस रैन डरावनी, वरसे जलधर धार। तरुतल निवसैं साहसी, बाजै झंझाब्यार ॥ ते गुरु० ॥८॥ शीत पड़ै कपि-मद गलैं, दाहै सब वनराय। ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय॥ ते गुरु० ॥९॥ इहि विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार। लागे सहज सरूपमें, तनसौ ममत निवार ॥ते गुरु०॥

॥१०॥ पूरव भोग न चिंतवैं, आगम बांछा नाहि। चहुँगतिके दुखसौं डरैं, सुरत लगी शिवमाहिं ॥ ते गुरु० ॥११॥ रंगमहल मे पौढते, कोमल सेज बिछाय। ते पच्छिम निशि भूमिमें सौवै संवरि काय ॥ ते गुरु० ॥ १२ ॥ गज चढि चलते गरवसौं, सेना सजि चतुरंग। निरखि निरखि पग वे धरैं, पालैं करुणा अंग ॥तेगुरु०॥ ॥१३॥ वे गुरु चरण जहां धरे, जगमें तीरथ जेह। सो रज मम मस्तक चढ़ो, 'भूधर' मांगे येह ॥ ते गुरु० ॥१४॥

श्री शांतिनाथ स्तव

शान्तिनाथ ! जगपूज्य, दयालो,
देवेन्द्र, विश्वसुत, शुद्ध सुवर्ण देह,
तेरे मनोरम पद द्वय में रचो ये—
सद्भाव भक्ति परि पूरित चित्त मेरा ॥ १ ॥
कैसी मनोज्ञ रमणीय, सुशान्त तेरी—
ध्यानस्थ मूर्ति भगवन् यह सोहती है,
संसार ताप हरणार्थ मनो स्वयं ही—
श्री शान्ति की सकल आकर ही खड़ी हो ॥ २ ॥
तेरे प्रभो वचन की विमल प्रभा से,
अज्ञान अन्ध तल है किसका न जाता ?
विद्यु च्छटा अनुपम स्थिर शक्ति शाली,
जो छा रहे तम कहां फिर है दिखाता ॥ ३ ॥
हे नाथ ! दर्शन किये तव शान्ति आवे.
आवे न पास दुख दारिद, क्लेश जावे,
छावे महा जगत में यश, रत्न पावे
धावे सुमार्ग पर, ठोकर भी न खावे ॥ ४ ॥

आकाश चुम्बन करे भगवान तेरी—
प्रासाद सुन्दर, ध्वजा उड़ती वहां सो—
जो आत्मसिद्धि करके जग जीतते हैं,
उनका प्रभाव यह है, बतला रही है ॥ ५ ॥
आनन्द-मंगल सदा उस ठौर होवे,
आरोग्य-सौख्य-धन-धान्य समृद्धि होवे,
विद्वेष भाव सबका सब दूर होवे,
होवे जहां भजन-पूजन नित्य तेरा ॥ ६ ॥
हे शान्तिनाथ भगवान तुझे नमूं मैं,
देवाधिदेव जगदीश तुझे नमूं मैं,
त्रैलोक्य-शान्ति कर देव तुझे नमूं मैं,
स्वामिन् नमूँ जिन नमूँ भगवन् नमूँ मैं ॥ ७ ॥
तू बुद्ध तू जिन मुनिन्द्र विभू स्वयम्भू,
तू राम कृष्ण जगदीश दयालु दाता,
अल्ला, रहीम, रहमान, खुदा करीम,
तू गाड, तू अहुरमज्द, महेश, मौला ॥ ८ ॥
है ज्ञान दर्पण महोज्ज्वल नाथ तेरा,
आश्चर्य कारक महा जिसमे पड़े हैं—
त्रैलोक्य के सकल भाव त्रिकाल के भी,
होवे भविष्य उसमें अति उच्च मेरा ॥ ९ ॥
जो शुद्ध बुद्ध कर निर्मल वृत्तियों को—
श्रीशांतिनाथ प्रभु के स्तव को पढेंगे,
होंगे सभी विमलकीर्ति महासुखी वे;
संसार को अतुलशान्ति भरा करेंगे ॥ १० ॥

पार्श्वनाथ स्तव

हे पार्श्वनाथ, परमेश, महोपदेशी,

हे अश्वसेन सुत, शामलशालि देह।

वामाङ्गजात, करुणाकर लोक-वन्द्यो,

तेरे सदा चरण ही मम आसरा है॥ १॥

ससार का तरण तारण तू कहाया,

तेरा किये स्मरण हर्ष न कौन पाया,

पाया सुभक्ति तव जो वह मोक्ष पाया,

तेरे सदा चरण ही मम आसरा है॥ २॥

तूने सहे कमठ के उपसर्ग भारी,

तूने अनन्त जग के उपकार कीन्हे।

आदर्श भव्य जन का भगवान है तू,

तेरे सदा चरण ही मम आसरा है॥ ३॥

तूने कुमारपन से सब योग साधा,

भाई सदा सकल जीवन की भलाई।

तत्त्वार्थ का मरम मानव को जताया,

तेरे सदा चरण ही मम आसरा है॥ ४॥

निर्व्याज वन्धु जगनायक तू जगत् का,

तेरी करे न किसका हित दिव्य वाणी।

तेरे प्रभाव किसके हिये पै पड़े ना,

तेरे सदा चरण ही मम आसरा है॥ ५॥

वारूद आग लगने पर ज्यों उड़े, त्यों,

नाना भवोद्भव महागिरि पापके भी।

देवेन्द्र! दर्शन किये तव नष्ट होते,

तेरे सदा चरण ही मम आसरा है॥ ६॥

जो साम्यभाव धर जीव दया प्रचारे,
हैं क्रूर जन्तुगण भी उनके हितैषी।
ये बात नाथ अहिच्छत्र बता रहा है,
तेरे सदा चरण ही मम आसरा है ॥ ७ ॥
तू वीतराग भगवान्! मुनीन्द्र है तू,
इष्टोपदेश—कर तू जग पूज्य है तू।
मेरा 'नमोस्तु' भगवान् तुझको हमेशा,
तेरे सदा चरण ही मम आसरा है ॥ ८ ॥
हो देश मे सब जगह सुख शांति पूरी,
हिंसा प्रवृत्ति जग से उठ जाय सारी।
पावे प्रमोद सब राष्ट्र कुटुम्ब मेरा,
कल्याण तू कर सदा भगवन् नमस्ते ॥ ९ ॥
जो भव्य शुद्ध यनके स्तव को पढ़ेगा,
कल्याण भाव जगका हिय मे धरेगा।
सम्मान्य हो सकल का हित वो करेगा,
संसार के कुपथ सागर को तिरेगा ॥ १० ॥

श्री वीर स्तव

श्रीमान्, महावीर, विभो मुनिन्दो,
देवाधिदेवेश्वर, ज्ञानसिन्धो,
स्वामिन् तुम्हारे पदपद्म का हो—
प्रेमी सदा ही यह चित्त मेरा ॥ १ ॥
स्वामिन्, किसी का न बुरा विचारूँ,
सन्मार्ग पै मैं चलते न हारूँ।
तत्त्वार्थ श्रद्धान सदैव धारूँ,
दो शक्ति, हो उत्तम शील मेरा ॥ २ ॥

सदा भलाई सबकी करूँ मैं,
सामर्थ्य पा जीव दया धरूँ मैं।
संसार के क्लेश सभी हरूँ मैं,
हो ज्ञान, चारित्र विशुद्ध मेरा ॥ ३ ॥
स्वामिन्, तुम्हारी यह शान्त मुद्रा,
किसके लगाती हिय में ना छुद्रा,
कहे उसे क्या यह बुद्धि क्षुद्रा,
स्वीकारिये नाथ प्रणाम मेरा ॥ ४ ॥
प्रभो तुम्हीं हो निकटोपकारी,
प्रभो तुम्हीं हो भवदुखहारी,
प्रभो तुम्हीं हो शुचिपथचारी।
हो नाथ साष्टांग प्रणाम मेरा ॥ ५ ॥
जो भव्य पूजा करते तुम्हारी,
होती उन्हीं की गति उच्च धारी,
प्रसिद्ध है 'दादुरफूल' वारी,
सम्पूर्ण निश्चय नाथ मेरा ॥ ७ ॥
मेरी प्रभो दर्शन शुद्धि होवे,
सद्भावना पूर्ण समृद्धि होवे,
पांचों व्रतों की शुभ सिद्धि होवे,
सद्बुद्धि पै हो अधिकार मेरा ॥ ७ ॥
आया नहीं गौतम विज्ञ जौलों,
खिरी न वाणी तव दिव्य तौलौं,
पियूष से पात्र भरा सतौलों,
मैं पात्र होऊँ अभिलाष मेरा ॥ ८ ॥
प्रभो तुम्हें ही दिन रात ध्याऊँ,
सदा तुम्हारे गुणगान गाऊँ,

प्रभावना खूब करूं कराऊँ,
कल्याण होवे सब भांति मेरा ॥ ६ ॥
श्री वीर के मारग पै चले जो,
श्रीवीर पूजा मन से करे जो,
सद्भव्य वीर स्तव को पढे जो,
वे लब्धियाँ पा सुख पूर्ण होवे ॥ १० ॥

ऋषि-मंडल-स्तोत्र

आद्यंताक्षरसंलक्ष्यमक्षरं व्याप्य यत्स्थितम् ।
अग्निज्वालासमं नादं विन्दुरेखासमन्वितं ॥ १ ॥
अग्निज्वालासमाक्रान्तं मनोमलविशोधनं ।
दैदीप्यमानं हृत्पद्मे तत्पदं नौमि निर्मलं ॥ युग्मं ॥
ॐ नमोऽर्हद्भ्य· ईशेभ्य· ॐ सिद्धेभ्यो नमो नमः
ॐ नम· सर्वसूरिभ्यः उपाध्यायेभ्य. ॐ नम. ॥ ३ ॥
ॐ नम· सर्वसाधुभ्य· तत्त्वदृष्टिभ्यः ॐ नमः ।
ॐ नम शुद्धवोधेभ्यश्चारित्रेभ्यो नमो नमः ॥ ४ ॥
श्रेयसेस्तु श्रीयेस्त्वेनदर्हदाद्यष्टकं शुभं ।
स्थानेष्वष्टसु संन्यस्तं पृथग्वीजसमन्वितम् ॥ ५ ॥
आद्य पदं शिरो रक्षेत् परं रक्षतु मस्तकं ।
तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे तुर्यं रक्षेच्च नासिकाम् ॥ ६ ॥
पंचमं तु मुखं रक्षेत् षष्ठं रक्षतु घंटिकां ।
सप्तमं रक्षेन्नाभ्यंतं पादांतं चाष्टमं पुनः ॥ ७ ॥ युग्मं ॥
पूर्वं प्रणवत· सांतः सरेफो द्वित्रिपंचपान् ।
सप्ताष्टदशसूर्यांकान् श्रितो विंदुस्वरान् पृथक् ॥ ८ ॥
पूज्यनामाक्षराद्यास्तु पंचदर्शनवोधकं ।
चारित्रेभ्यो नमो मध्ये ह्रीं सांतसमलंकृतं ॥ ६ ॥

जंबूवृत्तधरो द्वीपः क्षीरोदधि-समावृतः ।
अर्हदाद्यष्टकैरष्टकाष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ॥ १ ॥
तन्मध्ये संगतो मेरुः कूटलक्षैरलंकृतः ।
उच्चैरुच्चैस्तरस्तारतारामंडलमंडितः ॥ २ ॥
तस्योपरि सकारांतं बीजमध्यास्य सर्वगं ।
नमामि बिम्बमार्हत्यं ललाटस्थं निरंजनं ॥ ३ ॥ विशेषकं ॥
अक्षयं निर्मलं शांतं बहुलं जाड्यतोज्झितं ।
निरीहं निरहंकारं सारं सारतरं घनम् ॥ ४ ॥
अनुद्धभूतं शुभं स्फीतं सात्विकं राजसं मतं ।
तामसं विरसं बुद्धं तैजस शर्वरीसमं ॥ ५ ॥
साकारं च निराकारं सरसं विरसं परं ।
परापरं परातीतं परं परपरापरं ॥ ६ ॥
सकलं निष्कलं तुष्टं निर्भृतं भ्रांतिवर्जितं ।
निरंजनं निराकांक्षं निर्लेपं वीतसंशयं ॥ ७ ॥
ब्रह्माणमीश्वरं बुद्धं शुद्धं सिद्धमभंगुरं ।
ज्योतिरूपं महादेवं लोकालोकप्रकाशकं ॥८॥ कुलकं ॥
अर्हदाख्यः सवर्णान्तः सरेफो बिंदुमंडितः ।
तूर्यस्वरसमायुक्तो बहुध्यानादिमालितः ॥९॥
एकवर्णं द्विवर्णं च त्रिवर्णं तुर्यवर्णकं ।
पंचवर्णं महावर्णं सपरं च परापरं ॥१०॥ युग्मं ॥
अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे ऋषभाद्या जिनोत्तमाः ।
वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥११॥
नादश्चंद्रसमाकारो बिंदुर्नीलसमप्रभः ।
कलारुणसमा सांतः स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥१२॥
शिरःसंलीन ईकारो विनीलो वर्णतः स्मृतः ।
वर्णानुसारिसंलीनं तीर्थकृन्मंडलं नमः ॥ १३ ॥युग्मं ।

चंद्रप्रभपुष्पदन्तौ नादस्थितिसमाश्रितौ ।
बिन्दुमध्यगतौ नेमिसुव्रतौ जिनसत्तमौ ।। १४ ।।
पद्मप्रभवासुपूज्यौ कलापदमधिश्रितौ ।
शिर ईस्थितिसंलीनौ पार्श्वपार्श्वौ जिनोत्तमौ ।।१५ ।।
शेषास्तीर्थंकरा: सर्वे रह-स्थाने नियोजिताः ।
मायाबीजाक्षरं प्राप्तश्चतुर्विंशतिरर्हतां ।। १६ ।।
गतरागद्वेषमोहाः सर्वपापविवर्जिताः ।
सर्वदा सर्वलोकेषु ते भवन्तु जिनोत्तमाः ।। १७ ।। कलापकं ।
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वांगं मां मा हिंसतु पन्नगाः ।। १८ ।।
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वांगं मां मा हिंसतु नागिनी ।। १९ ।।
देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादितसर्वांगं मां मा हिंसतु गोनसाः ।। २० ।।
देवदेवस्य...... मा हिंसतु वृश्चिकाः ।। २१ ।। *
देवदेवस्य...... मा हिंसतु काकिनी ।। २२ ।।
देवदेवस्य ...... मा हिंसतु डाकिनी ।। २३ ।।
देवदेवस्य......मा हिंसतु साकिनी ।। २४ ।।
देवदेवस्य...... मा हिंसतु राकिनी ।। २५ ।।
देवदेवस्य......मा हिंसतु लाकिनी ।। २६ ।।
देवदेवस्य......मा हिंसतु शाकिनी ।। २७ ।।
देवदेवस्य......मा हिंसतु हाकिनी ।। २८ ।।

---

*नोट-—२० वे श्लोक के बाद २१ वें में भी २० वें श्लोक की भांति पाठ पढते हुए अन्त में 'गोनसा:' के स्थान पर वृश्चिका: तथा २२ व २३, २४ आदि में क्रमशः काकिनी, डाकिनी आदि बोलना चाहिए ।

देवदेवस्य ·· ··· मा हिंसतु राक्षसाः ॥ २९ ॥
देवदेवस्य·········मा हिंसतु व्यंतराः ॥ ३० ॥
देवदेवस्य·········मा हिंसतु भेकसाः ॥ ३१ ॥
देवदेवस्य··· ·· मा हिंसतु ते ग्रहाः ॥ ३२ ॥
देवदेवस्य········ मा हिंसतु तस्कराः ॥ ३३ ॥
देवदेवस्य·········मा हिंसतु वह्नयः ॥ ३४ ॥
देवदेवस्य ·· ··· मा हिंसतु शृङ्गिणः ॥ ३५ ॥
देवदेवस्य ·· ·····मा हिंसतु दंष्ट्रिणः ॥ ३६ ॥
देवदेवस्य·········मा हिंसतु रेलपाः ॥ ३७ ॥
देवदेवस्य·········मा हिंसतु पक्षिणः ॥ ३८ ॥
देवदेवस्य·········मा हिंसतु मुद्गलाः ॥ ३९ ॥
देवदेवस्य·········मा हिंसतु जृंभकाः ॥ ४० ॥
देवदेवस्य·········मा हिंसतु तोयदाः ॥ ४१ ॥
देवदेवस्य·········मा हिंसतु सिंहकाः ॥ ४२ ॥
देवदेवस्य ·······मा हिंसतु शूकराः ॥ ४३ ॥
देवदेवस्य ······ मा हिंसतु चित्रकाः ॥ ४४ ॥
देवदेवस्य ······ मा हिंसतु हस्तिनः ॥ ४५ ॥
देवदेवस्य ·· ·····मा हिंसतु भूमिपाः ॥ ४६ ॥
देवदेवस्य·········मा हिंसतु शत्रवः ॥ ४७ ॥
देवदेवस्य ·······मा हिंसतु ग्रामिणः ॥ ४८ ॥
देवदेवस्य·········मा हिंसतु दुर्जनाः ॥ ४९ ॥
देवदेवस्य ·······मा हिंसतु व्याधयः ॥ ५० ॥

श्रीगौतमस्य या मुद्रा तस्या या भुवि लब्धयः ।
ताभिरभ्यधिकं ज्योतिरर्हः सर्वनिधीश्वरः ॥ ५१ ॥
पातालवासिनो देवा देवा भूपीठवासिनः ।
स्वःस्वर्गवासिनो देव सर्वे रक्षंतु मामितः ॥ ५२ ॥

येऽवधिलब्धयो ये तु परमावधिलब्धयः ।
ते सर्वे मुनयो दिव्या मां संरक्षतु सर्वतः ॥ ५३ ॥
ॐ श्रीं ह्रींश्च धृतिर्लक्ष्मीः गौरी चंडी सरस्वती ।
जया वा विजया क्लिन्नाऽजिता नित्या मदद्रवा ॥ ५४ ॥
कामांगा कामबाणा च सानंदा नंदमालिनी ।
माया मायाविनी रौद्री कला काली कलिप्रिया ॥ ५५ ॥
एताः सर्वा महादेव्यो वर्तंते या जगत्त्रये ।
मम सर्वाः प्रयच्छंतु कान्ति लक्ष्मीं धृतिं मतिं ॥ ५६ ॥
दुर्जना भूतवेताला: पिशाचा मुद्गलास्तथा ।
ते सर्वे उपशाम्यंतु देवदेवप्रभावतः ॥ ५७ ॥
दिव्यो गोप्य: सुदुष्प्राप्यः श्री ऋषिमंडलस्तवः ।
भाषितस्तीर्थनाथेन जगत्त्राणकृतोऽनघ ॥ ५८ ॥
रणे राजकुले वह्नौ जले दुर्गे गजे हरौ ।
श्मशाने विपिने घोरे स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५९ ॥
राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं पदभ्रष्टा निजं पदं ।
लक्ष्मीभ्रष्टाः निजं लक्ष्मीं प्राप्नुवंति न संशयः ॥ ६० ॥
भार्यार्थी लभते भार्यां पुत्रार्थी लभते सुतं ।
धनार्थी लभते वित्तं नरः स्मरणमात्रतः ॥ ६१ ॥
स्वर्णे रूप्येऽथवा कांस्ये लिखित्वा यस्तु पूजयेत ।
तस्यैवेष्टमहासिद्धिर्गृहे वसति शाश्वती ॥ ६२ ॥
भूर्जपत्रे लिखित्वेदं गलके मूर्ध्नि वा भुजे ।
धारितः सर्वदा दिव्य सर्वभीतिविनाशनं ॥ ६३ ॥
भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः पिशाचैर्मुद्गलैस्तथा ।
वातापित्तकफोद्रेको मुच्यते नात्र संशयः ॥ ६४ ॥
भूर्भुवः स्वस्त्रयीपीठवर्त्तिनः शाश्वता जिनाः ।
तैः स्तुतैर्वंदितैर्दृष्टैर्यत्फलं तत्फलं स्मृतेः ॥ ६५ ॥

एतद्गोप्यं महास्तोत्रं न देयं यस्य कस्यचित् ।
मिथ्यात्ववासिनो देये बालहत्या पदे पदे ॥ ६६ ॥
आचाम्लादितपः कृत्वा पूजयित्वा जिनावलिं ।
अष्टसाहस्रिको जाप्यः कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ६७ ॥
शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठंति दिने दिने ।
तेषां न व्याधयो देहे प्रभवंति च संपदः ॥ ६८ ॥
अष्टमासावधि यावत् प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ।
स्तोत्रमेतन्महातेजस्त्वर्हद्बिंबं स पश्यति ॥ ६६ ॥
दृष्टे सत्यार्हते बिंबे भवे सप्तमके ध्रुवं ।
पदं प्राप्नोति विश्रस्तं परमानंदसंपदा ॥ ७० ॥ युग्मं
इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं स्तुतीनामुत्तमं परं ।
पठनात्स्मरणाज्जाप्यात् सर्वदोषैर्विमुच्यते ॥ ७१ ॥

कल्याण मन्दिर स्तोत्र

भाषानुवाद

दोहा—परमज्योति परमातमा, परमज्ञान परवीन ।
वंदों परमानंदमय, घट घट अन्तरलीन ॥ १ ॥

चौपाई (१५ मात्रा)

निर्भयकरन परम परधान । भवसमुद्र जलतारण जान ॥
शिव मन्दिर अघहरण अनिन्द । वन्दहूँ पास चरण अरविन्द ॥२॥
कमठमानभंजन वरवीर । गरिमासागर गुण गम्भीर ॥
सुरगुरु पार लहैं नहिं जासु । मैं अजान जपों जस तासु ॥ ३ ॥
प्रभुस्वरूप अति अगम अथाह । क्यों हमसे इह होय निवाह ॥
ज्यों दिनअंध उलूको पोत । कहि न सकै रविकिरन उदोत ॥ ४ ॥
मोहहीन जानै मनमांहि । तोउ न तुमगुण वरणे जांहि ॥

प्रलयपयोधि करै जल वौन । प्रगटहिं रतन गिनै तिहि कौन ॥ ५ ॥ तुम असंख्य निर्म्मलगुणखानि । मैं मतिहीन कहों निजवानि । ज्यों बालक निज बाँह पसार । सागरपरिमित कहै विचार ॥ ६ ॥ जो जोगीन्द्र करहिं तप खेद । तउ न जानहीं तुम-गुणभेद ॥ भगतिभाव मुझ मन अभिलाख । ज्यों पंखी बोलहिं निज भाख ॥ ७ ॥ तुम जस महिमा अगम अपार । नाम एक त्रिभुवन आधार ॥ आवै पवन पद्मसर होय । ग्रीषमतपत निवारै सोय ॥ ८ तुम आवत भविजन मनमाहिं । कर्मनिबंध शिथिल हो जांहिं ॥ ज्यों चंदनतरु बोलहिं मोर । डरहिं भुजङ्ग लगे चहुँओर ॥ ९ ॥ तुम निरखत जन दीनदयाल । संकटते छूटहिं ततकाल ॥ ज्यों पशु घेर लेहिं निशिचोर । ते तज भागहिं देखत भोर ॥ १० ॥ तू भविजन तारक किम होइ । ते चित धार तिरहिं लै तोह ॥ यह ऐसे करि जान स्वभाव । तिरै मसक ज्यो गर्भितवाउ ॥ ११ ॥ जिन सब देव किये वश वाम । तैं छिनमैं जीत्यो सो काम ॥ ज्यों जल करै अग्निकुलहानि । बड़वानल पीवै सो पानि ॥१२॥ तुम अनत गुरुवागुण लिये । क्योंकरभक्ति धरूं निज हिये ॥ ह्वै लघुरूप तिरहिं संसार । प्रभुमहिमा है अथक अपार ॥ १३ ॥ क्रोध निवार कियो मनशांति । कर्म सुभटजीते किहिं भांति ॥ यह पटतर देखहु संसार। नीलवृक्ष ज्यों दहै तुसार ॥ १४ ॥ मुनिजनहिये कमल निज टोहि । सिद्धरूप समध्यावहिं तोहि ॥ कमल-कर्णिका विन नहिं और । कमलबीज उपजन की ठौर ॥ १५ ॥ जब तुह ध्यानधरैं मुनि कोय । तब विदेश परमातम होय ॥ जैसे धातु शिलातन त्याग । कनक-स्वरूप धरैं जब आग ॥ १६ ॥ जाके मन तुम करहु निवास । बिनस जाय क्यों विग्रह तास ॥ ज्यों महन्त बिच आवै कोय । विग्रह मूल निवारै सोय ॥१७॥ करहिं विबुध जे आतम ध्यान । तुम प्रभावते होय निदान ॥ जैसे नीर सुधा अनुमान । पीवत विष

विकार की हान ॥१८॥ तुम भगवंत विमल गुणलीन। सकलरूप मानहिं मतिहीन॥ ज्यों नीलिया रोग दृग गहै। वर्ण विवर्ण सबसौं कहै॥१६॥

दोहा—निकट रहैं उपदेश मुनि, तरुवर भये अशोक।
ज्यों रवि ऊगत जीव सब, प्रगट होत भुविलोक॥२०॥
सुपनवृष्टि जो सुरकरहि, हेठ बीटमुख सोहि।
त्यों तुम सेवत सुमनजन, वंध अधोमुख होहिं॥२१॥
उपजी तुम हिय उदधितैं, वाणी सुधा समान।
जिहिं पीवत भविजन लहहिं, अजर अमर पदथान॥२२॥
कहहिं सार तिहुंलोक को, ये सुरचामर दोय।
भावसहित जो जिन नमें, तसुगति ऊरध होय॥२३॥
सिंहासन गिरि मेरु सम, प्रभुधुनि गरजित घोर।
श्याम सुतन घनरूप लख, नाचत भविजन मोर॥२४॥
छवि हत होंहि अशोकदल, तुम भामंडल देख।
वीतराग के निकट रह, रहत न राग विशेख॥२५॥
शीखि कहै तिहुँलोकको, यह सुरदुन्दुभि नाद।
शिवपथ सारथिवाह जिन, भजहू तज परमाद॥२६॥
तीन छत्र त्रिभुवन उदित, मुक्तागण छविदेत।
त्रिविधिरूप धर मनहुं शशि, सेवत नखतसमेत॥२७॥

पद्धरिछन्द।

प्रभु तुम शरीर दुति रतन जेम। परताप पुंज जिम शुद्ध हेम॥ अति धवलसुजस रूपा समान। तिनके गढ तीन विराजमान॥२८॥ सेवहिं सुरेन्द्र कर नमित भाल। तिन शीस मुकुट तज देहिं माल॥ तुव चरण लगत लहलहैं प्रीति। नहिं रमहि और जन सुमनरीति॥१६॥ प्रभुभोग विमुख तन कर्म दाह। जन पार करत भवजन निवाह॥

ज्यों माटीकलश सुपक्क होय। ले भार अधोमुख तिरहि तोय ॥ ३० ॥ तुम महाराज निर्धन निराश। तज विभव विभव सव जग विकाश ॥ अच्चर स्वभावसैं लिखैं न कोय। महिमा अनन्त भगवत सोय ॥ ३१ ॥ कोप्यो सु कमठ निज वैर देख। तिन करी धूल वर्षा विशेष ॥ प्रभु तुम छाया नहिं भई हीन। सो भयो पापी लंपट मलीन ॥ ३२ ॥ गरजंत घोर घन अंधकार। चमकंत विज्जु जल-मुसलधार ॥ वरपंत कमठ धरध्यान रुद्र, दुस्तर करन्त निजभवसमुद्र ॥ ३३ ॥

वस्तु छन्द

मेघमाली मेघमाली आप वल फोरि।
भेद तुरत पिशाचगण, नाथ पास उपसर्ग करण।
अग्नि जाल झलकत मुख, धुनि करंत जिमि मत्तवारण ॥
कालरूप विकराल तन, मुंडमाल तिह कंठ।
ह्वै निशंक वह रंकनिज, करे कर्म दृढगंठ ॥

चौपाई।

जे तुम चरणकमल तिहुँकाल। सेवहिं तजमाया जंजाल। भाव भगति मन हरप अपार। धन्य २ जग तिन अवतार ॥ ३५ ॥ भव-सागर महं फिरत अजान। मैं तुम सुजस सुन्यो नहीं कान ॥ जो प्रभुनाम मंत्र मन धरै। तासों विपति भुजंगम डरै ॥३६॥ मनवांछित फल जिनपदमाहिं। मैं पूरव भव पूजे नाहिं ॥ माया मगन फिरयो अज्ञान। करहिं रंकजन मुझ अपमान ॥३७॥ मोहतिमिर छायो दृग मोंहि। जन्मांतर देख्यो नहिं तोंहि ॥ तो दुर्जन मुझ संगति गहैं। मरमछेद के कुवचन कहैं ॥३८॥ सुन्यो कान जस पूजे पाय। नैनन देख्यो रूप अघाय। भक्तिहेतु न भयो चित चाव। दुखदायक किरिया विन भाव ॥३९॥ महाराज शरणागत पाल।

पतितउधारन दीनदयाल ।। सुमिरण करहूँ नाथ निज शीस । मुझ दुख दूर करहु जगदीस ।।४०।। कर्मनिकन्दनमहिमासार । अशरण-शरण सुजश विसतार ।। नहिं सेये प्रभु तुमरे पाय । तो मुझ जन्म अकारथ जाय ।।४१।। सुरगण वन्दित दया निधान । जगतारण जगपति जग जान ।। दुखसागर ते मौहि निकासि । निर्भय थान देहु सुखराशि ।।४२।। मैं तुम चरण कमल गुन गाय । बहुविधि भक्ति करी मन लाय ।। जन्म जन्म प्रभु पावहूँ तोहि, यह सेवा फल दीजे मोहि ।।४३।।

दोधकान्त बेसरी छन्द, षट्पद

इहि विधि श्री भगवन्त सुजस जे भविजन भाषहिं । ते निज पुण्य भंडार, संच चिर पाप प्रणाशहिं ।। रोम रोम हुलसंति अंग प्रभु गुण मन ध्यावहिं । स्वर्ग सम्पदा भुंज, वेग पंचमगति पावहिं । यह कल्याण मन्दिर कियो, कुमुद चन्द्र की बुद्धि । भाषा कहत बनारसी, कारण समकित शुद्धि ।।४४।। × × ×

एकीभाव स्तोत्र

दोहा छन्द ।

वादिराज मुनिराजके, चरण कमल चितलाय ।
भाषा एकीभाव की, करूं स्वपर सुखदाय ।।

जो अति एकीभाव भयो मानो अनिवारी । समुझै कर्म्म प्रबन्ध करत भव भव दुःखभारी ।। ताहि तिहारी भक्ति जगत रविजो निरवारै । सो अब और क्लेश कौनसो नाहिं बिदारै ।। १ ।। तुम जिन जोतिस्वरूप दुरित अन्धियारि निवारी । सो गणेश गुरु कहैं तत्त्व विद्याधन धारी ।। मेरे चितधर मांहि बसो तेजोमय यावंत । पापतिमिर अवकाश वहां सो क्यों कर पावत ।। २ ।। आनंद आंसू वदन धोय तुम सो चित सानै । गदगद सुर सो

सुयश मंत्र पढ पूजा ठानै ॥ ताके बहुविधि व्याधिव्याल चिर काल निवासी । भाजैं थानक छोड़ देहवमियों के वासी ।३। दिवसे आवनहार भये भवि भाग उदय बल । पहले ही सुर आय कनकमय कीन महीतल ॥ मन गृह ध्यान दुवार आय निवसो जगनामी । जो सुवर्ण तन नरो कौन यह अचरज स्वामी ॥ ४ ॥ प्रभु सब जगके विना हेतु बांधव उपकारी । निरावर्ण सर्वज्ञ शक्ति जिनराज तिहारी ॥ भक्ति रचित मम चित्त सेज नित वास करोगे । मेरे दुःख सन्ताप देख किमि धीर धरोगे ॥५॥ भववन मे चिर काल भ्रम्यो कुछ कही न जाई । तुम शुति कथा पियूष वापिका भागन पाई ॥ शशितुषार घनसार हार शीतल नहिं जा सम । करत न्होन तिस मांहि क्यों न भव ताप बुझै मम ॥ ६ ॥ श्रीविहार परिवाह होत शुचि रूप सकल जग । कमल कनक आभास सुरभि श्रीवास धरत पग ॥ मेरो मन सर्वंग परम प्रभुको सुख पावै । अब सो कौन कल्याण जो न दिन दिन ढिग आवै ॥ ७ ॥ भव तज दुखपद बसे काम मद सुभट संघारे । जो तुमको निरखंत सदा प्रियदास तिहारे । तुम वचनामृत पान भक्ति अंजुलिसो पीवैं । तिन्हें भयानक क्रूर रोग रिपु कैसे छीवै ॥ ८ ॥ मानथभ पाषाण आन पाषाण पटंतर । ऐसे और अनेक रत्न दीखैं जग अन्तर । देखत दृष्टिप्रमाण मानमद तुरत मिटावै । जो तुम निकट न होय शक्ति यह क्यों कर पावै ॥ ९ ॥ प्रभुतन पर्वत परस पवन उरमे निवहे हैं । तासों ततक्षण सकल रोगरज वाहि रहे हैं । जाके ध्यानाहूत बसो उर अंबुज मांहीं । कौन जगत उपकार करण समरथ सो नाहीं ॥ १० ॥ जन्म जन्मके दुःख सहे सब ते तुम जानो । याद किये मुझ हिये लगैं आयुध सो मानो । तुम दयालु जगपाल स्वामि मैं शरण गही है । जो कुछ करना होय करो परणाम वही है ॥ ११ ॥ मरण समय तुम नाम मंत्र

जीवक तैं पायो। पापाचारी स्वान प्राण तज अमर कहायो। जो मणि माला लेय जपै तुम नाम निरन्तर। इन्द्र संपदा लहै कौन संशय इस अन्दर ॥ १२ ॥ जे नर निर्मल ज्ञान मान शुचि चारित साधैं। अनवधि सुख की सार भक्ति ताली नहिं हाथैं। सो शिव वांछक पुरुष मोक्षपट-केम उघारे। मोह मुहर दिढ़ करी मोक्षमन्दिर के द्वारे ॥ १३ ॥ शिवपुर केरो पंथ पापतम सो अति छायो। दुख स्वरूप बहु कपट खांड सो विकट बतायो ॥ स्वामी सुख सो तहा कौन जनमारग लागै। प्रभु प्रवचन मणिदीप जौन के आगैं आगैं ॥ १४ ॥ कर्म पलट भूमाहिं दबी आत्म निधि भारी। देखत अति सुख होय विमुखजन नाहिं उघारी ॥ तुम सेवक तत्काल ताहिं निश्चय कर धारैं। स्तुति कुदाल सों खोद वंद भू कठिन विदारैं ॥१५॥ स्याद्वाद गिर उपज मोक्ष सागर लों धाई। तुम चरणांवुज परम भक्ति गंगा सुखदाई। मोचित निर्मल थयी न्होन रुचि पूरव तामैं। अब वह हो न मलीन कौन जिन संशय यामैं ॥ १६ ॥ तुम शिवसुखमय प्रकट करत प्रभु चितवन तेरो। मैं भगवान् समान भाव यों वरतै मेरो ॥ यदपि झूठ है तदपि तृपत निश्चल उपजावै। तुम प्रसाद सकलक जीव वांछित फल पावै ॥ १७ ॥ वचनजलधि तुम देव सकल त्रिभुवन में व्यापै। भंग तरंगिनी विकथ वाद मल मलिन उथापै ॥ मन सुमेरु सों मथै ताहि जे सम्यकज्ञानी। परमामृत सों तृपत होहिं ते चिर लों प्राणी ॥ १८ ॥ जो कुदेव छवि हीन वसन भूषण अभिलाषै। वैरी सो भयभीत होय सो आयुध राखै। तुम सुन्दर सर्वंग शत्रु समरथ नहिं कोई ॥ भूषण वसन गदादि ग्रहण काहे को होई ॥ १९ ॥ सुरपति सेवा करैं कहा प्रभु प्रभुता तेरी। सो शलाघना लहै मिटै जग सो जब फेरी। तुम भव जलधि जहाज़ तोहि शिव कंत उचरिये। तुही जगत जनपाल नाथ थुति की थुति करिये ॥ २० ॥ बचन जाल जड़ रूप आप

चिन्मूरति झांई । तातै थुति आलाप नाहिं पहुंचै तुम तांई । तो भी निष्फल नाहिं भक्ति रस भीने वायक । सन्तन को सुरतरु समान वाञ्छित वर दायक ।। २१ ।। कोप कभी नहिं करो प्रीत कवहुँ नहिं धारो । अति उदास वेचाह चित्त जिनराज तिहारौ ।। तदपि आन जग वहै वैर तुम निकट न लहियै । यह प्रभुता जग तिलक कहां तुम विन सरधैये ।। २२ ।। सुर तिय गावैं सुयश सर्व गति ज्ञान स्वरूपी । जो तुम को थिर होहि नमें भवि आनन्द रूपि ।। ताहि क्षेमपुर चलन वाट वाकी नहिं हो है । श्रुत के सुमरण माहिं सो न कव ही नर मोहै ।। २३ ।। अतुल चतुष्टयरूप तुमें जो चितमे धारै । आदर सो तिहुं काल माहिं जग थुति विस्तारै ।। सो सुकृत शिवपन्थ भक्ति रचना कर पूरै । पंचकल्याणक ऋद्धि पाय निश्चय दुख चूरै ।। २४ ।। अहो जगतपति पूज्य अवधि ज्ञानी मुनि हारे । तुमगुण कीर्तन मांहि कौन हम मन्द विचारे ।। स्तुति छल सों तुम विषै देव आदर विस्तारे । शिव सुख पूरण हार कल्प तरु येही हमारे ।। २५ ।। वादिराज मुनिराज शब्दविद्या के स्वामी । वादिराज मुनिराज तर्कविद्या पति नामि ।। वादिराज मुनिराज काव्य करता अधिकारी । वादिराज मुनिराज वडे भविजन उपकारी ।। २६ ।।

दोहा–मूल अर्थ वहुविधि कुसुम, भाषा सूत्र मझार ।।
भक्तिमाल 'भूधर' करी, करो कंठ सुखकार ।। १ ।।

।। इति एकीभावभाषा स्त्रोम् ।।

नामावली स्तोत्र ।

छंद नयमालिनी २६ मात्रा ।

जय जिनंद सुख कंदनमस्ते । जय जिनंद जिन फंद नमस्ते ।।
जय जिनद वरवोध नमस्ते । जय जिनंद जित क्रोध नमस्ते ।। १ ।।

पाप ताप हर इन्दु नमस्ते । अर्हं वरन जुत विन्दु नमस्ते ॥ शिष्टाचार विशिष्ट नमस्ते । इष्ट मिष्ट उत्कृष्ट नमस्ते ॥ २ ॥ पर्म धर्म वर शर्म नमस्ते । मर्म भर्म घन धर्म नमस्ते ॥ दृगविशाल वर भाल नमस्ते । हृद दयाल गुनमाल नमस्ते ॥ ३ ॥ शुद्धबुद्ध अविरुद्ध नमस्ते । रिद्धिसिद्ध वर वृद्धि नमस्ते ॥ वीतराग विज्ञान नमस्ते । चिद्विलास धृत ध्यान नमस्ते ॥४॥ स्वच्छ गुणांबुधि रत्न नमस्ते । सत्व हितंकर यत्न नमस्ते ॥ कुनयकरी मृगराज नमस्ते । मिथ्या खग वर बाज नमस्ते ॥ ५॥ भव्य भवोदधि तार नमस्ते । शर्मामृत सित सार नमस्ते ॥ दरश ज्ञान सुखवीर्य नमस्ते । चतुरानन धर धीर्य नमस्ते ॥ ६ ॥ हरिहर ब्रह्मा विष्णु नमस्ते । मोह मर्दमनु जिष्णु नमस्ते ॥ महादान महाभोग नमस्ते । महाज्ञान मह जोग नमस्ते ॥ ७ ॥ महा उग्र तप सूर नमस्ते । महा मौन गुण भूरि नमस्ते ॥ धरम चक्रि वृष केतु नमस्ते । भवसमुद्रशत सेतु नमस्ते ॥ ॥ ८ ॥ विद्याईश मुनीश नमस्ते । इन्द्रादिक नुत शीस नमस्ते ॥ जय रत्नत्रय राय नमस्ते । सकल जाव सुखदाय नमस्ते ॥ अशरण शरण सहाय नमस्ते । भव्य सुपन्थ लगाय नमस्ते । निराकार साकार नमस्ते । एकानेक अधार नमस्ते ॥१०॥ लोकालोक विलोक नमस्ते । त्रिधा सर्व गुण थोक नमस्ते ॥ सल्ल दल्लदल मल्ल नमस्ते । कल्ल मल्ल जितलल्ल नमस्ते ॥ ११ ॥ भुक्ति मुक्ति दातार नमस्ते । उक्ति सुक्ति शृंगार नमस्ते । गुण अनन्त भगवन्त नमस्ते । जै जै जै जयवन्त नमस्ते ॥ १२ ॥

यह पढ़ कर जिन भगवान के चरणों के आगे पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिए ।

अथ पखवाडा

बानी एक नमों सदा, एक दरब आकाश।
एक धर्म अधर्म दरब, पडवा शुद्ध प्रकाश ॥

दोज दुनंद सिद्ध संसार, संसारी त्रस थावर धार।
सुपर दया दोनों मन धारो, राग दोष तजि समता कारो ॥
तीज त्रिपात दान नित भजो तीन काल सामायिक सजो।
व्यय उत्पाद ध्रौव्य पद साध, मन वच वन थिर होय समाध।
चौथ चार विधि दान विचारु, चारों आराधन संभार।
मैत्री आदि भावना चार, चार बन्धसों भिन्न निहार।
पांच पंच लब्धि लहि जीव भज परमेष्ठी पंच सदीव।
पांच भेद स्वाध्याय बखान, पांचों पैतारे पहचान ॥
छठ छः लेश्या के पुरनाम. पूजा आदि करो परकाम।
पुद्गल के जानों षट् भेद, छहों काल लखि कै सुख वेद ॥
सातैं सात नरक से डरो, सात खेत धन जलसों भरों।
सातैं नय समझो गुणवन्त, सात तत्त्व सरधाकरि सन्त ॥
आठे आठ दरस के अंग, ज्ञान आठ विध सहो अभंग।
आठ भेद पुजा जिन राय, आठ योग कीजे मन लाय ॥
नौमी शील बाढि नव पाल, प्रायश्चित नौ भेद संभाल।
नौ क्षायिक गुण मनमें राख, नौ कषाय की तजि अभिलाख ॥
दशमी दश पुद्गल पर जाय, दशों बंध हर चेतन राय।
जनमत दश अतिशय जिनराज, दशविधि परिग्रह सों क्या काज॥
ग्यारह ग्यारह भाव समाज, सब अहमिन्द्र ग्यारह राज ॥
ग्यारह जोग सुरलोक मझार, ग्यारह अंग पढ़े मुनिसार ॥
बारह बारह विधि उपयोग, बारह प्रकृति दोष की रोग।
बारह चक्रवर्ति लखि लेहू, बारह अव्रत को तज देहु ॥

तेरसि तेरह श्रावक थान, तेरह भेद मनुज पहचान।
तेरह राग प्रकृति सब निंद, तेरह भाव अयोग जिनंद।
चौदस चौदह पूरब जान, चौदह वाहिज अंग बखान।
चौदह अन्तर परिग्रह डार, चौदह जीव समास विचार॥
मावस सम पन्द्रह परमाद, करम भूमि पन्द्रह अनाद।
पंच शरीर पन्द्रह रूप, पन्द्रह प्रकृति हरे मुनि भूप॥
सोलह कषाय राह घटाय, सोलह कला सम भावन भाय।
पूरनमासी सौलै ध्यान, सौलै स्वर्ग कहे भगवान्॥
सब चर्चा की चर्चा एक, आतम पर पुद्गल पर टेक।
लाख कोटि ग्रन्थन को सार, भेद ज्ञान अरु दया विचार॥
दोहा—गुण विलास सब तिथि कही, है परमारथ रूप।
पढ़े सुने जो मन धरे, उपजे ज्ञान अनूप॥

वैराग्यभावना भजन

संत साधू बन के विचरूं, वह घड़ी कब आयगी।
शांति तब मेरे वैराग्य की छा जायगी॥ टेक॥
मोह ममता त्याग दूं सब कुटुम्ब परिवार से।
छोड़ दूं झूठी लगन धन धाम और घर बार से।
मोह तजदूं महलो-मंदिर और चमन गुलजार से॥
बन में जा डेरा करूँ मुँह मोड़ इस संसार से॥१॥
इस जगत में जो पदारथ आ रहे मुझको नजर,
थिर नहीं हैं एक इनमें, हैं यह सब के सब अथिर।
जिन्दगी का क्या भरोसा, यह रही हर दम गुजर॥
दम है जब तक दम में दम है दममें दम से बे खबर॥२॥
कौनसी वह चीज है जिस पर लगाऊँ दिल यहाँ,
आज जीवन बन रहा, जो कल भला वह फिर कहाँ।

माल ओ धन की सब हकीकत है जमाने पर अयां ॥
क्या भरोसा लक्ष्मी का अब यहां और कल वहां ॥३॥
बाप मां अरु बहन भाई, बेटा बेटी नार क्या,
सब सगे अपनी गरज के यार क्या परवार क्या।
बात मतलब से करे सब जगत क्या संसार क्या ॥
बिन गरज पूछे न कोई बात क्या तकरार क्या ॥ ४ ॥
था अकेला हूं अकेला अरु अकेला ही रहूं,
जो पड़े दुख में सहे अरु जा पड़े सो मैं सहूँ।
कौन है अपना सहायक कौन का शरणा गहूँ ॥
फिर भला किसको जगतमें अपना हमराही कहूँ ॥ ५ ॥
ज्ञान रूपी जल से अग्नि क्रोध की शीतल करूँ,
मान माया लोभ राग अरु द्वेष आदिक परिहरूँ।
वश में विषयों को करूँ अरु सब कषायों को हरूँ ॥
शुद्ध चित आनन्द में मैं ध्यान आतम का धरूँ ॥ ६ ॥
जगके सब जीवों से अपना प्रेम हो अरु प्यार हो,
और मेरी इस देह से संसार का उपकार हो।
ज्ञान का प्रचार हो अरु देश का उद्धार हो ॥
प्रेम अरु आनन्द का व्यवहार घर घर द्वार हो ॥ ७ ॥
काल सर पर काल का खंजर लिए तैयार है,
कौन बच सकता है इससे इसका गहरा वार है।
हाय जब हर हर कदम पर इस तरह से हार है ॥
फिर न क्यों वह राह पकडूं सुख का जो भंडार है ॥ ८ ॥
प्रेम का मंदिर बना कर ज्ञान देव कूं दूं बिठा।
और आनन्द शांतिके घड़ियाल घण्टे दूं बजा ॥
और पुजारी बनके दूं मैं सबको आतम रस चखा।
यह करूँ उपदेश जगमें कर भला होगा भला ॥ ९ ॥

आय वह कब शुभ घड़ी जब वन विचरता मैं फिरूँ।
शांति से तव शांति गंगा का मैं निर्मल जल पिऊँ॥
"ज्योति" से गुणज्ञान की अज्ञान सब जग का दहूँ।
होय सब जग का भला यह बात मैं हर दम चहूँ॥ १०॥

भावना भजन

भावना दिन रात मेरी सब सुखी संसार हो।
सत्य संयम शील का व्यवहार घर घर बार हो॥ टेक॥
धर्म का प्रचार हो अरु देश का उद्धार हो।
और यह उजड़ा हुआ भारत चमन गुलजार हो॥ १॥
रोशनी से ज्ञान का संसार में परकाश हो।
धर्म की तलवार से हिंसा का सत्यानाश हो॥
शांति अरु आनन्द का हर एक घर में वास हो।
वीर वाणी पर सभी संसार का विश्वास हो॥ ३॥
रोग और भय शोक होवें दूर सब परमात्मा।
करसके कल्याण "ज्योति" सब जगत की आत्मा॥ ४॥

पद्मावती स्तोत्र

जिन शासनी हंसासनी पद्मासनी माता॥
भुज चारते फल चारु दे पद्मावती माता॥ टेक॥
जब पार्श्वनाथजी ने शुक्ल ध्यान अरम्भा,
कमठेश ने उपसर्ग तब किया था अचम्भा।
निज नाथ सहित आय के सहाय किया है,
जिन नाथ को निज माथ पै चढाय लिया है॥ जिन०॥ १॥
फन तीन सुमन लीन तेरे शीश विराजैं।
जिनराज तहां ध्यान धरें आप विराजैं।
फणिइन्द ने फनि की करी जिनन्द पै छाया,

उपसर्ग वर्ग मेटि के आनन्द बढाया ॥ जिन० ॥ २ ॥
जिन पार्श्व को हुवा तभी केवल सुज्ञान है,
समवादिसरन की वनी रचना महान है।
प्रभू ने दिया धर्मार्थ काम मोक्ष दान है,
तव इन्द्र आदि ने किया पूजा विधान है ॥ जिन० ॥ ३ ॥
जव से किया तुम पार्श्व के उपसर्ग का विनाश,
तव से हुवा जस आपका त्रैलोक में प्रकाश।
इन्द्रादि ने भी आपके गुण मे किया हुलास,
किस वास्ते कि इंद्र खास पार्श्व का है दास ॥ जिन० ॥ ४ ॥
धर्मानुराग रंग से उमंग भरी हो,
संध्या समान लाल रंग अंग धरी हो,
जिन संत शीलवंत पै तुरंत खड़ी हो,
मनभावती दरसावती आनन्द वढ़ी हो ॥ जिन० ॥ ५ ॥
जिन धर्म की प्रभावना का भाव किया है,
तिन साध-ने आपकी सहाय लिया है।
तव आपने उस वात को वनाय दिया है,
जिन धर्म का निशान फहराय दिया है ॥ जिन० ॥ ६ ॥
था वौद्ध ने तारा का किया कुम्भ मैं थापन,
अकलंकजी से करते रहे वाद वेहापन।
तव आपने सहाय किया धाय मात धन,
तारा का हरा मान हुवा वोध उत्थापन ॥ जिन० ॥ ७ ॥
इत्यादि जहां धर्म का विवाद पड़ा है,
तहां आपने परवादियों का मान हरा है,
तुमसे यह स्याद्वाद का निशान खरा है,
इस वास्ते हम आपसे अनुराग धरा है ॥ जिन० ॥ ८ ॥
तुम शब्द ब्रह्मरूप मन्त्र मूर्ति धरैया,

चिन्तामनी समान कामना की भरैया,
जप जाप जोग नैन की सब सिद्ध करैया,
परवाद के पुरयोग की तत्काल हरैया ॥ जिन० ॥ ६ ॥
लखि पार्श्व तेरे पास शत्रु त्रास तें भाजें,
अंकुश निहार दुष्ट जुष्ट दर्प को त्याजै।
दुख रूप खर्व गर्व को वह वज्र हरै है,
कर कंज में इक कंज सो सुख पुंज भरै है ॥ जिन० ॥ १० ॥
चरणारविन्द में है नूपुरादि आभरनं,
कटि में है सार मेखला प्रमोद की करनं।
उर में है सुमन माल सुमन भान की माला;
पट रंग अङ्ग संग सों सोहै विशाला ॥ जिन० ॥ ११ ॥
करकंज चारु भूषन सों भूरि भरा है,
भवि वृंद को आनन्द कंद पूरि करा है।
जुग भान कान कुंडल सों जोति धरा है,
शिर शीस फूल २ सों अतूल धरा है ॥ जिन० ॥ १२ ॥
मुख चन्द को अमंग देख चंद भी थम्भा,
छवि हेर हार हो रहा रम्भा को अचम्भा।
हग तीन सहित लाल तिलक भाल धरे हैं;
विकसित मुखारविन्द सों आनन्द भरे हैं ॥ जिन० ॥ १३ ॥
जो आपको त्रिकाल लाल चाल सो ध्यावै,
विकराल भूमिपाल उसे भाल झुकावै।
जो प्रीत सो प्रतीति सपरीति बढावे,
सो ऋद्धि सिद्धि वृद्धि नवो निधि को पावें ॥ जिन० ॥ १४ ॥
जो दीप दान के विधान से तुम्हें जपै,
तो पाप के निधान तेज पुंज से दिपै।
जो भेद मंत्र वेद में निवेद किया है,

सो बाध के उपाध सिद्ध साध लिया है ॥ जिन० ॥ १५ ॥
धन धान्य का अर्थी है सो धन धान्य को पावै,
संतान का अर्थी है सो संतान खिलावै ।
निजराज का अर्थी है सो फिर राज लहावै ।
पद भ्रष्ट सुपद पायकै मनमोद बढावै ॥ जिन० ॥ १६ ॥
ग्रह क्रूर व्यन्तराल व्याल जाल पूतना,
तुम नाम के सुन हांक सों भागे हैं भूतना ।
कफ वात पित्त रक्त रोग शोक शाकिनी,
तुम नाम तैं डरी मही परात डाकिनी ॥ जिन० ॥ १७ ॥
भयतीत की हरनी है तुही मात भवानी,
उपसर्ग दुर्ग द्रावती दुर्गावती रानी ।
तुम सकटा समस्त कष्ट काटनी दानी,
सुख सार की करनी, तू शंकरीश महारानी ॥ जिन० ॥ १८ ॥
इस वक्त में जिन भक्त को दुख व्यक्त सतावै,
ये बात तुझे देखिके क्या दर्द ना आवै ।
सब दिन से तो करती रही जिन भक्त पै छाया,
किस वास्ते उस बात को ऐ मात भुलाया ॥ जिन० ॥ १९ ॥
हो मात मेरे सर्व ही अपराध छिमा कर,
होता नहीं क्या बाल से कुचाल यहां पर,
कुपुत्र तो होते हैं जगत मांहि सरासर,
माता न तजै तिनसों कभी नेह जन्म भर ॥ जिन० ॥ २० ॥
अब मात मेरी बात को सब भांत सुधारो,
मन कामना को सिद्ध करो विघ्न विदारो ।
मति देर करो मेरी ओर नेक निहारो,
करकंज की छाया करो दुख दर्द निवारो ॥ जिन० ॥ २१ ॥
ब्रह्मांडनी खलमर्दनी सुखमंडनी ख्याता,

दुख टारिके परिवार सहित दे मुझे साता।
तज के बिलम्ब अम्बजी अवलम्ब दीजिये,
वृष चन्द नन्द वृन्द को आनन्द कीजिये ॥ निज० ॥ २२ ॥
जिन धर्म से डिगने का कहीं आपड़े कारन,
तो लीजिये उबार मुझे भक्त उधारन।
निज कर्म के संजोग से जिस जौन में जावो,
तहां दीजिये सम्यक्त्व जो शिव धाम को पावो ॥जिन०॥२३॥
जिन शासनी हंसासनी पद्मावती माता,
भुज चारतें फल चारु दे पद्मावती माता ॥ जिन० ॥ २४ ॥

शास्त्र-भक्ति

अकेला ही हूँ मैं कर्म सब आये सिमटिके।
लिया है मैं तेरा शरण अब माता सटकि के॥
भ्रमावत है मोको-करम दुख देता जनम का।
करूं भक्ति तेरी, हरो दुख माता भ्रमण का॥ १ ॥
दुखी हुआ भारी, भ्रमत फिरता हूँ जगत में,
सहा जाता नाहीं अकल घबराई भ्रमण में।
करूंक्या मा मोरी, चलत वश नाहीं मिटन का॥ करूं भक्ति।२।
सुनो माता मोरी, अरज करता हूँ दरद में,
दुखी जानो मोकों, डरप कर आया शरण में।
कृपा ऐसी कीजे, दरद मिट जाये मरण का॥ करूं भक्ति ॥३॥
पिलावे जो मोकों सुबुधिकर प्याला अमृत का,
मिटावे जो मेरा, सरब दुख सारे फिरन का,
पड़ूँ पावां तेरे हरो दुख सारा फिकर का॥ करूं भक्ति० ॥४॥

सवैया

मिथ्यातम नासवे को, ज्ञान के प्रकाशवे को।
आपा परकासवे को भानुसी वखानी है॥
छहों द्रव्य जानवे को, वसु विधि भानवे को।
स्व-पर पिछानवे को परम प्रमानी है॥
अनुभौ बतायवे को जीव के जतायवे को।
काहू न सतायवे को भव्य उर आनी है॥
जहाँ तहाँ तारवे को, पार के उतारवे को।
सुख विस्तारवे को, ऐसी जिन वाणी है॥ ५॥

दोहा—जिनवाणी की स्तुति करे, अल्प बुद्धि परमान।
"पन्नालाल" विनती करै, दे माता मोहि ज्ञान॥ ६॥
हे जिन वाणी भारती, तोहि जपूं दिन रैन।
जो तेरा शरणा गहै, सुख पावै दिन रैन॥ ७॥
जा वानी के ज्ञान तैं, सूझै लोकालोक।
सो वाणी मस्तक चढो, सदा देत हों धोक॥ ८॥

॥ इति॥

श्री सिद्धचक्र की आरती

जय सिद्धचक्रदेवा जय सिद्धचक्रदेवा

करत तुम्हारी निशदिन मन से सुर नर मुनि सेवा। जय०
ज्ञानावर्ण दर्शनावरणी मोह अन्तराया।
नाम गोत्र वेदनी आयु को नाशि मोक्ष पाया। जय० ॥ १॥
ज्ञान अनंत अनंत दर्श सुख बल अनंत धारी।
अव्यावाध अमूर्ति अगुरुलघु अवगाहन धारी॥ जय० ॥ २॥
तुम अशरीर शुद्ध चिन्मूरति स्वातम रसभोगी।
तुम्हें जपैं आचार्योपाध्याय सर्वसाधु योगी॥ जय० ॥ ३॥

ब्रह्मा विष्णु महेश सुरेश गणेश तुम्हें ध्यावें।
भविअलि तुम चरणाम्बुज सेवत निर्भय पद पावें ॥जय०॥४॥
संकट-टारण अधम उधारन भवसागर तरणा।
अष्ट दुष्ट रिपुकर्म नष्ट करि जन्ममरण हरणा ॥ जय० ॥ ५ ॥
दीन दुखी असमर्थ दरिद्री निर्धन तन-रोगी।
सिद्धचक्र को ध्याय भये ते सुर नर सुख-भोगी ॥ जय० ॥ ६ ॥
डाकिन शाकिन भूत पिशाचिन व्यंतर उपसर्गा।
नाम लेत भगि जांय छिनक में सब देवी दुर्गा ॥ जय० ॥ ७ ॥
वन रन शत्रु अग्नि जल पर्वत विषधर पंचानन।
मिटें सकल भय कष्ट, करें जे सिद्धचक्र सुमिरन ॥ जय० ॥ ८ ॥
मैना सुन्दरि कियो पाठ यह पर्व अठाइनि में।
पति-युत सात शतक कोढिन का गया कुष्ट छिन में ॥जय०॥९॥
कार्तिक फागुन साढ आठ दिन सिद्धचक्र पूजा।
करें शुद्ध भावों से 'मक्खन' लहें न पद पूजा ॥ जय० ॥१०॥

भजन सिद्धचक्र

श्रीसिद्धचक्र का पाठ करो दिन आठ, ठाठ से प्राणी,
फल पायो मैना रानी ॥ टेक ॥

मैना सुन्दरि इक नारी थी, कोढी पति लखि दुखियारी थी,
नहिं पड़े चैन दिन रैन व्यथित अकुलानी ॥ फल० ॥ १ ॥
जो पति का कष्ट मिटाऊंगी, तो उभयलोक सुख पाऊंगी,
नहिं अजागल-स्तनवत निष्फल जिन्दगानी ॥ फल० ॥ २ ॥
इक दिवस गई जिन मंदिर में, दर्शन करि अति हर्षी उर में,
फिर लखे साधु निर्ग्रंथ दिगम्बर ज्ञानी ॥ फल० ॥ ३ ॥
बैठी मुनि को करि नमस्कार, निज निन्दा करती बार बार,
भरि अश्रु नयन कही मुनिसौं दुखद कहानी ॥ फल० ॥ ४ ॥

बोले मुनि पुत्री धैर्य धरो, श्री सिद्धचक्र का पाठ करो,
नहिं रहे कुष्ट की तन में नाम निशानी ॥ फल० ॥ ५ ॥
मुनि साधु वचन हर्षी मैना, नहिं होय झूठ मुनि के बैना,
करिके श्रद्धा श्री सिद्धचक्र की ठानी ॥ फल० ॥ ६ ॥
जब पर्व अठाई आया है, उत्सवयुत पाठ कराया है,
सबके तन छिडका यंत्र-न्हवन का पानी ॥ फल० ॥ ७ ॥
गंधोदक छिडकत वसुदिन में, नहिं रहा कुष्ट किंचित तन में,
भई सात शतक की काया स्वर्ण समानी ॥ फल० ॥ ८ ॥
भवभोग भोगि योगेश भये श्रीपाल कर्म हनि मोक्ष गये,
दूजे भव मैना पावै शिव रजधानी ॥ फल० ॥ ९ ॥
जो पाठ करे मन वच तन से, वे छूट जांय भवबन्धन से
'मक्खन' मत करो विकल्प कहा जिनवानी ॥ फल० ॥ १० ॥

शास्त्र स्वाध्याय का मंगलाचरण

ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ जय जय जय,
नमोस्तु ! नमोस्तु !! नमोस्तु !!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।
ओंकारं बिन्दुसंयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः
कामदं मोक्षदं चैव, ओंकाराय नमो नमः ॥ १ ॥
अविरलशब्दघनौघप्रक्षालितसकलभूतलमलकलङ्का ।
मुनिभिरूपासिततीर्था सरस्वती हरतु नो दुरितान् ॥२॥
अज्ञानतिमिरान्धानां ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ ३ ॥
श्री परमगुरवे नमः, परम्पराचार्य गुरवेनमः सकलकलुषविध्वं-सकं, श्रेयसां परिवर्धकं, धर्मसम्बन्धकं, भव्यजीवमनः प्रतिबोध-

कारकमिदं शास्त्रं श्री (ग्रन्थ का नाम) नामधेयं, अस्य मूल ग्रथंकर्तारः सर्वज्ञदेवास्तदुत्तरग्रंथकर्त्तारः श्रीगणधरदेवा: प्रतिगणधरदेवा-स्तेषां वचोनुसारमासाद्य श्री (आचार्य का नाम) आचार्येण विरचितम्, श्रोतारः सावधानतया शृण्वन्तु ।

मंगल भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी,
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम् ॥

आत्मकीर्त्तन

हूँ स्वतन्त्र निश्चल निष्काम, ज्ञाता दृष्टा आतमराम ॥टेक॥
मैं वह हूँ जो हैं भगवान, जो मैं हूँ वह हैं भगवान।
अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यहां राग वितान ॥१॥
मम स्वरूप है सिद्धसमान, अमितशक्ति सुखज्ञान निधान।
किन्तु आशवश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अजान ॥२॥
सुख दुख दाता कोई न आन, मोह राग रुष दुख की खान
निजको निज परको पर जान, फिर दुख का नहिं लेश निशान॥३॥
जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम, विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम।
राग त्याग पहुंचे निज धाम, आकुलता का फिर क्या काम ॥४॥
होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जग का करता क्या काम।
दूर हटो परकृत परिणाम, सहजानन्द रहूं अभिराम ॥५॥

एक भक्त पुजारी

शास्त्र सुने मालाएं फेरी, प्रतिदिन बना पुजारी,
किन्तु रहा जैसे का तैसा, हुआ न मन अविकारी।
साठ साल की उम्र हो चली; फिर भी ज्ञान न जागा,
सच तो होगा यह कह देना, जीवन रहा अभागा ॥१॥

नहालिया हो गया शुद्ध; आ खड़ा हुआ प्रभु पद में,
त्याग सका न वासना मन की, डूबा गहरे मद में।

इधर धूप क्षेपण करता मन उधर सुलगता जाता,
भाव शून्य केवल शरीर, पूजा का पुन्य कमाता ॥२॥
कहता फिर पूजा है निष्फल, संकट नहीं मिटाती,
वही मशक्कत वही गरीबी, सुख न सामने लाती ।
बढा न पैसा भी इतना, जो सब पर रोब जमाता,
विद्युत वायु फैन से लेता, या मोटर दौड़ाता ॥३॥
नहीं सोचता यह पूजा क्या ? जिसमे चित चंचल है,
बहू बेटियों पर कुदृष्टि, या अरु कोई छल बल है ।
जिसको कहते हैं पूजा, जिसके हम भक्त पुजारी,
उसकी पुण्य कथा सुनलो शिक्षाप्रद कल्मष हारी ॥४॥
भक्त लीन था प्रभु पूजा में, निज विकारता खोकर
घर से एक खबर आती है, दुखकर और भयंकर ।
नौ जवान इकलौता बेटा, अभी सांप ने काटा,
चल जल्दी घर, तोड दिया आहों ने सन्नाटा ॥५॥
सुनता है सुनकर कहता है, मैं ही क्या कर लूंगा,
पूजा छोड भगूं, आखिरजीवन तो डाल न दूंगा ।
सुनकर स्त्री मंदिर में रोती रोती आती है,
कहती है कठोर हो, क्या पूजा अब भी भाती है ॥६॥
अरे ! छोड़ चल दो पूजा को, फिर भी समय मिलेगा,
चला गया बच्चा तो दुख, दिल से न कभी निकलेगा ।
ऐसी भी पूजा क्या, जो बच्चे का रहम भुलाती,
जल्दी चलो, खोफ से मेरी, धड़क रही है छाती ॥७॥
हाय ! अचेत पड़ा है बे सुध, तन में भरा जहर है,
मुंह से झाग दे रहा है, पल पल प्राणों का डर है ।
सब तुमको धिक्कार रहे, कहते ये कैसा नर है ?
निरमोही के सीने मे दिल है, अथवा पत्थर है ? ॥८॥

बोला जाकर जो उपाय समझो, वह करो कराओ,
मेरी पूजा में न प्रियतमे, बाधा तुम पहुंचाओ।
पूजा को तुम व्यर्थ समझकर ही ऐसा कहती हो,
लेकिन यह सच्चा उपाय है, पर तुम भूल रही हो ॥९॥

प्रभु से अधिक कौन है विषहर कौन अधिक उपकारी,
जिसकी चरण शरण में जाऊं, बनकर दीन भिखारी।
इन चरणों की सेवा से जो, फल दुनियां पाती है,
वैसी वस्तु मिसाल देखने में न कहीं आती है ॥१०॥

प्रभु पूजा मेरा उपाय है, जो संकट मोचक है,
अब तो दुःख के सबब और भी यह भी आवश्यक है।
नारी चली क्रोध में डूबी, रोती और बिलखती
विवश हताश दर्द साँसों पर, जीवन कायम रखती ॥११॥

भक्त लगा पूजा में, प्रभु छवि में अपने को खोने,
सोचा नहीं हुआ क्या आगे, क्या जाता है होने।
इतने में बच्चे को लेकर, गृहणी फिर आ धमकी,
भीड़ साथ में थी, रोते सब लेकर सूरत गम की ॥१२॥

वेदी के समीप बच्चे को, नाखुश होकर डाला,
कहने लगी बचा लो इसको पूजा-कर के लाला।
पूजा महा मंत्र है इसका, वह ही जहर हरेगी,
जो मैं बचा पाई तो सचमुच, बनी बात बिगड़ेगी ॥१३॥

नहीं भक्त ने उत्तर में, भूले भी शब्द निकाला,
प्रभु की नजरों में, अपनी आंखों को बेशक डाला।
उसी लगन से पूजा में, वह हुआ दृढव्रती, तन्मय,
फिर जय हो जाने में क्या हो भी सकता था संशय ॥१४॥

मुर्झाये मन मुदित हुये, मुख खिंची हर्ष की रेखा,
जब निर्विष होते बालक को सब ने सन्मुख देखा।

उठा कुमार नींद से सोकर ही जैसे जागा हो,
जीवन की दुंदुभी श्रवण कर, महाकाल भागा हो ॥१५॥

धन्य धन्य जय के नारों से, सब ने गगन गुंजाया,
लोगों ने अचरज माता ने, अपना बच्चा पाया।
कहने लगे धन्य पूजा, और धन्य अनन्य पुजारी,
श्रद्धा और भक्तिमय पूजा है, अतीव सुखकारी ॥१६॥

"भगवत्" पूजा की महानता, कहले किस का वस है,
किस में इतनी ताकत है, किस में इतना साहस है ?

देवस्तवन

(अनुवादक प० नाथूरामजी प्रेमी)

शक्र-*सरीखे शक्तिवानने, तजा गर्व गुण गाने का।
किन्तु न मैं साहस छोड़ूंगा, विरदावली+बनाने का ॥
अपने अल्पज्ञान से ही मैं, बहुत विषय प्रकटाऊंगा।
इस छोटे वातायन×से हो सारा, नगर दिखाऊंगा ॥१॥
तुम सब-दर्शी देव, किन्तु तुमको न देख सकता कोई।
तुम सबके हो ज्ञाता, पर तुमको न जान पाता कोई ॥
'कितने हो', 'कैसे हो' यों कुछ कहा न जाता हे भगवान।
इससे निज अशक्ति बतलाना, यही तुम्हारा स्तवन महान ॥
बालक सम अपने दोषों से जो जन पीडित रहते हैं।
उन सबको हे नाथ ! आप भवताप-रहित नित करते हैं ॥
यों अपने हित और अहित का, जो न ध्यान धरने वाले।
उन सबको तुम बाल-वैद्य हो, स्वास्थ्यदान करनेवाले ॥३॥
भक्तिभाव से सुमुख आपके रहने वाले सुख पाते।
और विमुखजन दुख पाते हैं राग द्वेष नहिं तुम लाते ॥

* इन्द्र। + स्तोत्र। × खिडकी।

अमल सुद्युतिमय चारु-आरसी, सदा एकसी रहती ज्यों।
उसमें सुमुख विमुख दोनों ही देखें छाया ज्यों की त्यों ॥४॥
प्रभु की सेवा करके सुरपति बीज स्वसुख के बोता है।
हे अगम्य! अज्ञेय! न इससे, तुम्हें लाभ कुछ होता है॥
जैसे छत्र सूर्य के सन्मुख, करने से दयालु जिनदेव।
करने वाले को होता, सुखकर आतपहर स्वयमेव॥ ५॥
धनिकों को तो सभी निधन लखते हैं, भला समझते हैं।
पर निधनों को तुम सिवाय जिन, कोई भला न कहते हैं।
जैसे अन्धकारवासी उजियालेवाले को देखे।
वैसे उजियालावाला नर, नहिं तमवासी को देखे॥ ६॥
बिन जाने भी तुम्हें नमन करने से जो फल फलता है।
वह औरों को देव मान, नमने से भी नहिं मिलता है॥७॥
जो इस जगके पार गये, पर जाय न पाय जिनका पार।
ऐसे जिनपति के चरणों की, लेता हूँ मैं शरण उदार॥ ८॥

वीर-शासन

जिसकी दया-दृष्टि से हिंसक जन्तु बने थे दया-निधान।
किया असंख्यों जीवधारियों का जिसने जग का कल्याण॥
मृग, शावक औ शेर, अजा जल एक घाट पर पीते थे।
एक ठोर मिल मोद मनाते सभी भेड़िये चीते थे॥
हिंसा-सी पिशाचिनी को दे डाला जिसने निर्वासन।
वन्दनीय उस वीर-प्रभु का धन्य धन्य वह प्रिय शासन॥१॥
ऊंच नीच का भेद मिटाकर बांधा समता का सम्बन्ध।
भर दी नर-रूपी पुष्पों में दया भाव को नूतन गन्ध॥
राग-द्वेष दुर्भाव मिटाकर हृदय सुमन सब दिये मिला।
बिखरी मानवता के माला के मोती सब दिये मिला॥

दिया अहिंसा की देवी को अति ऊंचा पावन आसन।
वन्दनीय उस वीर प्रभु का धन्य-धन्य वह प्रिय शासन ॥२॥
जिनके चरणों पर इन्द्रादिक नाना रत्न चढ़ाते थे।
ध्यानमग्न जिनके शरीर से वन पशु देह खुजाते थे॥
बाघ निदाघ समय में जिनकी छाया को अपनाते थे।
नाग सूंड रख जिस मुनिवर के चरणों में सो जाते थे॥
खग करते थे निकट बैठकर णमोकारका उच्चारण।
वन्दनीय उस वीर-प्रभु का धन्य धन्य वह प्रिय शासन ॥३॥
खिल उठती थी उषा देखकर जिनका दिव्य अलौकिक तेज।
प्रकृति बिछा देती थी नीचे हरी मखमली दूर्वा-सेज॥
मेघ तान देते थे जिनके सिर पर शीतल छाया छत्र।
दर्शन करने मानो प्रभु के होते थे नभ पर एकत्र॥
प्रभु-तन आभा बिजली बनकर करती थी नभ मे गर्जन।
वन्दनीय उस वीर प्रभु का धन्य-धन्य वह प्रिय शासन ॥४॥

श्रवणबेल्गोल-स्तवन

तुम प्राचीन कलाओं का आदर्श विमल दरशाते
भारतके ध्रुव गौरव-गढ़ पर जैन-केतु फहराते
कला-विश्व के सुप्त प्राण पर अमृत-रस बरसाते
निधियों के हत साहस में नवनिधि-सौरभ सरसाते
आओ इस आदर्श कीर्ति के दर्शन कर हरषाओ
वन्दनीय हे जैनतीर्थ तुम युग-युग में जय पाओ ॥१॥
शुभस्मरण कर तीर्थराज हे शुभ्र अतीत तुम्हारा
फूल-फूल उठता है अन्तस्तल स्वयमेव हमारा
सुरसरि-सदृश बहा दी तुमने पावन गौरव-धारा
तीर्थक्षेत्र जग में तुम हो देदीप्यमान ध्रुवतारा

खिले पुष्प की तरह विश्व में नवसुगन्ध महकाओ
वन्दनीय हे जैनतीर्थ तुम युग युगमें जय पाओ ॥२॥
दिव्य विंध्यगिरि भव्य चन्द्रगिरिकी शोभा है न्यारी
पुलकित हृदय नाच उठता है हो बरबस आभारी
श्रुत-केवली सुभद्रबाहु सम्राट् महा यश धारी
तप तप घोर समाधिमरण कर यहीं कीर्ति विस्तारी
उठो पूर्वजों की गाथाएं जग का मान बढ़ाओ
वन्दनीय हे जैनतीर्थ तुम युग-युगमें जय पाओ ॥३॥
सात-आठ सौ शिलालेख का है तुममें दुर्लभ धन
श्रावक-राजा सेनानी श्राविका-आर्यिका मुनिजन
धीर-वीर-गम्भीर कथाएं धर्म-कार्य संचालन
उक्त शिलालेखों में है इनका सुन्दरतम वर्णन
दर्शन कर इस पुण्य क्षेत्रका जीवन सफल बनाओ
वन्दनीय हे जैनतीर्थ तुम युग-युगमें जय पाओ ॥४॥
पशु रक्षा पर प्राण दिये जिन लोगोंने हँस-हँस कर
वीर-बधू सायिब्बे* लड़ी पति-संग समरके स्थल पर
चन्द्रगुप्त सम्राट् मौर्यका जीवन अति उज्ज्वलतर
चित्रित है इसमें इन सबका स्मृति-पट महामनोहर
आ-आ एक बार तुम भी इसके दर्शन कर जाओ
वन्दनीय हे जैनतीर्थ तुम युग-युगमें जय पाओ ॥५॥
मन्दिर अति-प्राचीन कलामय यहां अनेक सुहाते
दुर्लभ मानस्तम्भ मनोहर अनुपम छवि दिखलाते
यहां अनेकानेक विदेशी दर्शनार्थ हैं आते
यह विचित्र निर्माण देख आश्चर्यचकित रह जाते
अपनी निरुपम कला देखने देशवासियों ! आओ

* इसका प्राकृत नाम शावियब्बे हैं।

वन्दनीय हे जैनतीर्थ तुम युग-युगमें जय पाओ ॥६॥

प्रतिमा गोम्मटदेव बाहुबलि की अति गौरवशाली
देखो कितनी आकर्षक है चित्त-लुभानेवाली
बढ़ा रही शोभा शरीर पर चढ़ लतिका शुभशाली
मानों दिव्य कलाओं ने अपने हाथों ही ढाली
इस उन्नति के मूल केन्द्र में जीवन ज्योति जगाओ
वन्दनीय हे जैनतीर्थ तुम युग-युगमे जय पाओ ॥७॥

ऊंचे सत्तावन सुफीट पर नभसे शीश लगाए
शोभा देती जैन धर्म का उज्ज्वल यश दरशाए
जिसने कौशल-कला-कलाविद् के सम्मान बढ़ाए
देख-देख हैदर-टीपू-सुल्तान जिसे चकराए
आओ इसका गौरव लख अपना सम्मान बढ़ाओ
वन्दनीय हे जैनतीर्थ तुम युग-युगमे यश पाओ॥८॥

गंग-वंश के राचमल्ल नृप विश्व-कीर्ति-व्यापक हैं
नृप-मन्त्री चामुण्डरायजी जिसके संस्थापक हैं
जो निर्माण हुआ नौसे नव्वे में यशवर्द्धक है
राज्य-वंश मैसूर आजकल जिसका संरक्षक है
उसकी देख रेख रक्षामें अपना योग लगाओ
वन्दनीय हे जैनतीर्थ तुम युग-युगमें जय पाओ ॥९॥

कहे लेखनी पुण्य-तीर्थ क्या गौरव-कथा तुम्हारी
विस्तृत कीर्ति-सिन्धु तरने मे है असमर्थ विचारी
नत मस्तक अन्तस्तल तन-मन-धन तुम पर बलिहारी
शत-शत नमस्कार तुम को हे नमस्कार अधिकारी
फिर सम्पूर्ण विश्वमे अपनी विजय-ध्वजा फहराओ
वन्दनीय हे जैनतीर्थ तुम युग-युग मे जय पाओ ॥१०॥

चतुर्थ अध्याय

—: जैन व्रत कथा संग्रहः—

रोहिणी व्रत कथा

सोरठा—वासपूज्य जिनराज, भव दधि तरण जिहाज सम।
भव्य लहैं सुख साज, नाम लेव पातक हरें॥ १॥

दोहा—शारद वंदों भाव सो, गुरु के लागों पांय।
कथा रोहिणी व्रत कहौं, सुनो भव्य चितलाय॥ २॥

चौपई।

जंबू द्वीप मध्य शुभ जानि, दक्षिण भरत क्षेत्र सुखखानि।
मगध देश पूरण दिशि सार, राजमही पुर वसै अपार॥ ३॥
श्रेणिक तहाँ नृपति परचंड, तिन लीनों अरिजन पर दंड।
पटरानी चेलना सुजानि, धर्म धुरन्धर शील निधान॥ ४॥
बैठ्यो सभा सिंहासन सदा, वनमाली फल लायो तदा।
छह रितु के फल देखे राय, राजा पूछत मन वचकाय॥ ५॥
सत्य कहो ए पाये कहां, धन भूमि ये उपजे जहां।
करि प्रणाम सो विनवै एव, विपुलाचलि आये जिन देव॥६॥
वर्द्धमान को आगम भयो, समोसरण सुरपति निरमयो।
राजा सुनियो जिनवर नाम, सात पैंड चल कियो प्रणाम॥७॥
बहुत दान वन मालिये दयो, बजै निशान मुदित मन कियो।
राजारानी परिजन योग, वंदन चले नगर के लोग॥ ८॥
समोशरण रचना देखियो, जन्म सुफल अपनो लेखियो।
मध्यम स्थल वंदे जिन राय, राजा भक्ति करी बहु पाय॥ ९॥
पुनि गणधर को कियो प्रणाम, नर कोठे में बैठो जाय।
द्वै विधि धर्म सुन्यो मन लाय, रोम रोम आनन्दो राय॥१०॥
फिर नरपति करजोरि सु कही, अति प्रमोद ताके मन सही।

स्वामी मो पर कृपा करेव, व्रत रोहिणी कहो जिन देव ॥११॥
किहि विधि करों कहो विधि सोय, सो व्रत करैं कहा फल होय।
तब गणधर बोले मुनिराय, जिन यह व्रत पालौ सुखदाय ॥१२॥
ताको सकल कहों विरतन्त, चपापुर एक बसैं महन्त।
राजा राज करे मघवान, सकल जननिकौ राखै मान ॥१३॥
ता घर रानी लक्ष्मीमती, सुन्दर शीलवन्त गुण सती।
सात पुत्र कन्या रोहिनी, तात मात भ्रात मोहिनी ॥१४॥
एक दिवस पूछो मुनिराय, रोहिणी व्रत कहिए समझाय।
अवधिज्ञान करि मुनिवर कहैं, हस्तनागपुर पट्टन लहैं ॥१५॥
राजा वीतशोक परवीन, दयावन्त गुणवन्त नवीन।
विद्युत प्रभा तिया तसुनाम, पुत्र अशोक कहा तसु धाम ॥१६॥
सो अशोक रोहिनी पति होय, सुनि राजा आनन्दो सोय।
राजा तासु स्वयम्वर रच्यो, बहुविधि भूमि सुवर्ण मे खच्यो ॥१७॥
देश देश नृप कुमर बुलाय, सिंहासन बैठिका दिवाय।
कन्या आई मण्डप मांझ, मनो सभा मे फूली सांझ ॥१८॥
रोहिणी देखि अशोक कुमार, रूपवन्त गुण तेज अपार।
ततक्षण कुमर रोहिनि वर्‍यो, जै जैकार सकल नर कर्‍यो ॥१९॥
भयो विवाह सकल विधि जोग, सुख सों विदा भये सव लोग।
रोहिनी घर लेगयो अशोक, दिन दिन वांछित भोगै भोग॥२०॥
सुख सो रहत बहुत दिन गये, सात पुत्र ताके घर भये।
अष्टम लघु बेटा ता अङ्क, दिन दिन भुगतै सुरक मयंक ॥२१
दुख की बात न जाने कोय, सुपने हू दुख कैसे होय।
कुमर अशोक रोहीनी धाम, महल सतखने बैठी जाम ॥२२॥
एक धनी को सुत मरि गयो, ता घर महा शोक दुःख भयो।
तब रोहीनी बोली हम जोइ, इन घर कहा महोच्छव होइ॥२३॥
मैं नहिं सुनो कहूं इहि भांति, कौन गीत गावें दिन राति।

सखी गीत सिखवां इह मोहि, सब आभरण मैं देहों तोहि ।।२४।।
सुनि बसन्तसेना अनखाय, हे पुत्री तू बौरी भाय।
याके घर भयो पुत्र वियोग, करें दुःख सब परियन लोग।।२५।।
ऐसी गति यह वाकी भई, सो काहू मत दीजो दई।
तासो फिर बोली रोहिणी, मेरे हू जिय इच्छा घणी ।।२६।।
पुत्र शोक यह कैसो होय, सो तुम सखी बताओ मोय।
राजा वचन न सक्यौ सम्हारि, पुत्र महल तैं दीनों डारि ।।२७।।
चित रोहिणी निर्मल भाय, ततक्षण देवनि करी सहाय।
अन्तरीक्ष हाथन पर लयौ, कंचन मणि सिंहासन दयो ।।२८।।
तापर बालक क्रीडा करे, नेक नहीं चित अन्तर डरे।
यह अचरज देख्यौ, नरनारि, बहुतक आये कोतुक धारि।।२९।।
नगर लोग सब करै विचार, पुन्यवन्त रोहिन वर नारि।
कुमर अशोक पुत्र देखियौ, सुफल जन्म अपनो लेखियो ।।३०।।
यह विरतन्त रहौ यह ठौर, अब यह कथा चली पुनि और।
तह पुर वारह गहन मंझार, चारण मुनि आये तिहिं वार ।।३१।।
रूप कुम्भ सुर्ण कुम्भ मुनीश, वंदन गयो नगर को ईश।
छह रितु के फल फूल रु जहां, सभा मध्य मुनि बैठे तहां ।।३२।।
नाग मोर मूसा मंझार, मृग पर सिंह न करे विकार ।
राजा मुनि की पूजा करी, गुरू की भक्ति हिये में धरी ।।३३।।
द्विविध धर्म सुनि कियो प्रकाश, सुनि करि गयो चित्त को त्रास ।
पुनि अशोक पूछै मुनिराय, मो यह त्रिया रोहिनी आय ।।३४।।
शोक नाम जानै नहिं कोय, कहा पुण्य तैं यह फल होय।
तब मुनि यह बोले मुनिराय, पूरब पुण्य सुनो चितलाय ।।३५।।
यहै नगर वसुपाल नरेन्द्र, रानी तासु यशोमति चन्द्र ।
सेठि बसै धन मित्र सुनाम, भार्या धन मित्रा तसु धाम ।।३६।।
सेठि गृह इक पुत्रि भई, दुरगंधा अति दुखिता ठई ।

ताहिं सुनों ब्याहै नहिं कोय, सेठि चित्त अति दुखितो होय ।।३७।।
तहां धनमित्र वनिक इक रहै, वसुकांता वनिता सुख लहै।
पुत्र एक श्रीखेण जु भयो, सौ दुरबुद्धि कुमङ्गति गयो ।।३८।।
मात विसन सेवै दिन राति, कोऊ न ताको व्याहै जाति।
जूआ खेल धन हारयो सवै, चौरी चित आरंभ्यौ तवै ।।३६।।
चोरी करण गयो इक जाम, सो कुतवाल पकरियौ ताम।
बांधि पाय दीनो लटकाय, वहुतक कष्ट दिखायो ताहि ।।४०।।
ता मारग निकस्यौ धन मित्र ताहि देखि करुणा भई चित्त।
दै धनि तोहि छुडावों जवैं, मो दुरगंधा व्याहौं अवैं ।।४१।।
तिन मानी जु सेठ की वात, तिन दै द्रव्य छुड़ायौ प्रात।
ताहि दई दुरगंधा व्याहि, सो पुनि नैन न देखी जाय ।।४२।।
व्याहि छोडि देशांतर गयौ, फिर तव ताहि अधिक दुःख भयो।
ताकर भीख न भिक्षुक लेइ, ताको कोई न आदर देइ ।।४३।।
सर्व श्री वाई को नाम, सो पुनः मिली पिता के धाम।
दुरगंधा दुख कहियो ताम, कहा पाप मैं कीनों जाम ।।४४।।
तातैं मैं दुरगंधा भई, हा हा वचन कहत सो ठई।
अव तुम मोपर कर उपकार, तातै पूरव मिटै विकार ।। ४५ ।।
वाई कहै चलो मुनि पास, वे सव कहै पूर्व भव त्रास।
अमृतश्रवा मुनीश्वर जवै, सो वन माहिं यो हों चीतवै ।। ४६ ।।
वाहिर नगर दियौ पुनि जोग, वन्दन गये नगरके लोग।
कहै सेठ मुनि सों करि भाय, मेरे दुरगंधा धिय आय ।। ४७ ।।
कौन पाप मैंने ओतरी, वहोरि व्याहि करि पति परिहरी।
कौन पाप तैं भयो वियोग, सो कहिये हम सों संजोग ।। ४८ ।।
वार वार विनवै सौ एव, मोहि भवांतर कहि जिन देव।
सुनि मुनिवर वोले तिहिं वार, सोरठि देशि नगर गिरनारि ।। ४६ ।।
तिहि पुर राज करैं भूपाल, रानी सिंधुमति सुकुमाल।

ऋतु बसन्त वन विहरन गये, सब नर नारि अनंदित भये ॥ ५० ॥
राजा चित नगर तब करो, नजर मांहि एक मुनिवर परौ।
पटरानी सौं कही बुलाय, भोजन देउ नगर मे जाय ॥ ५१ ॥
राजा वचन न टारो गयो, रानी चित्त कोप अति भयौ।
बैठी सुखासन मंदिर गई, कोपवन्त मुनिवर पैं भई ॥ ५२ ॥
कटुक तूंबरी खवाई तहाँ, लै अहार मुनि वन गए जहाँ।
तब सन्यास लियौ मुनिराय, भयो जु देव सुरग में जाय ॥ ५३ ॥
रानी सिंधुमती की बात, राजा सुनी सबै परभात।
इन पापिन नैं कुकर्म कियौ, कटु तूंबी मुनि भोजन दियौ ॥ ५४ ॥
जो मैं याके संगमे रहों, याके पाप नर्क दुःख सहों।
राजा कोप न सक्यौ संभारि, तबै नगर तै दई निकारि ॥ ५५ ॥
सो पुनि रुद्र ध्यान तै मरी, छट्टे नरक जाय अवतरी।
पंचम चतुर्थ तीसरे दोय, प्रथम नर्क धरि भव भव सोय ॥ ५६ ॥
छेदन भेदन मुदिगर मार, सूला रोपन दुःख अपार।
जेते कष्ट नरक में सहे, ते सब हम पर जात न कहे ॥ ५७ ॥
मैंढक जौंक भई जल मांहि, सूकर कूकर ए सब मांहि।
गाय जु भैस भई परि जानि, सो मरि गई दुरगंधा आनि ॥ ५८ ॥
मुनिके वचन सुनें सब साह, पुनि याकौ किम होय निवाह।
अब ऐसौ दीजै उपदेश, पूर्व जन्म कौ जाय कलेश ॥ ५९ ॥
सुनि करि वचन कहै मुनिराय, व्रत रोहिनी करो मन लाय।
सुनि दुरगंधा जोरे हाथ, मो पर कृपा करौ मुनिराय ॥ ६० ॥
किहिं विधि व्रत रोहिनी करों, कह विधान चित्तमे धरों।
मुनिवर कहैं सुनौं भवि लोय, जादिन बक्त रोहिनी होय ॥ ६१ ॥
ता दिन सब छांडौ आरम्भ, पूजा भाव धरो व्रत थम्भ।
करि उपवास कथा रुचि सुनौं, पात्र दान दै सुकृत लुनौं ॥ ६२ ॥
उत्तम व्रत नौ बरस प्रमाण, मध्य सात पांच लघु जान।

चेदी मांहि मॉडनौ रचौ चन्दोपक रचना सब सचौ ॥ ६३ ॥
जब यह व्रत संपूरण होय, तब उद्यापन कीजै लोय ।
बहु पकवान बनावौ भलै, बहु विधि जिन पूजौ अघ टले ।
यहविधि निशि जागरण कराय, तब व्रत गुरु भंडार धराय ॥ ६४ ॥
चारि संघ को दान जु देय, खरचि लक्ष्मी जग लाहौ लेय ।
सकल नातनों लाड्डू सेव, द्रव्य सहित श्रावक घर देव ॥ ६५ ॥
औषधि अभयदान रुचिलाय, पुस्तक गुरु को देय लिखाय ।
सुनि दुरगंधा आनन्द भयो, तिन रोहिनी व्रत गुरु पै लयौ ॥ ६६ ॥
लै व्रत सो अपने घर जाय सब दुरगन्ध सु गई पलाय ।
करि व्रतिन उद्यापन कर्‌यो, अन्तर पाप तिमिर सब हर्‌यो ॥६७॥
अन्त समाधि मरण सौ मरी, पहले स्वर्ग जाय अवतरी ।
तहाँ बहुत सुख भुगते जाय, सो यह रोहिणी अवतरी आय ॥६८॥
यह व्रत पाल्यो सो अभिराम, तातैं शोक न जाने नाम ।
मुनिवर वचन सुनैं जब राय, रोहिणी सहित जु पूजे पाय ॥६९॥
पुनि अशोक आनन्द्योराय, मेरे भव कहिए समझाय ।
मुनिवर कहैं भील वन रहै, महापाप सो निशि दिन वहै ॥ ७० ॥
तिन मुनिको उपसर्ग जु कियो, ताके पाप नर्क दुख लियौ ।
क्रम क्रमकरि नर देहि लही, मुनि समीप ह्वै शुभ गति गही ॥७१॥
तो तप करि सुर भयौ महत्त, धर्म ध्यान करि लीनौ अन्त ।
सो तुम भये अशोक कुमार, पूरब पुन्य जो लियौ अपार ॥७२॥
सुने भवांतर अति सुख भयौ, तिन रौहिनी व्रत गुरु पै लयौ ।
भुक्ति मुक्ति व्रत कीनों राय, उद्यापन विधि सर्व कराय ॥ ७३ ॥
रहत बहुत दिन बीते जहां, वासपूज्य जिन आये तहां ।
तब वनपाल जतायौ दयौ, नगर लाग आनन्दित भयो ॥ ७४ ॥
राजा रानी परियन लोग, बन्दन चले नगर के लोग ।
समोसरण बन्दे जिनराय, पूजा भक्ति करी चित्त लाय ॥ ७५ ॥

नर कोठे में बैठन लयौ, धर्म श्रवण चित अन्दर दयो।
राय अशोक जु दिक्षा लई, तप वल गणधर शुद्धि जु भई ॥ ७६ ॥
पुनि केवल मुक्ति जु गयौ, अजर अमर पद निर्मल लयौ।
धर्म श्री बाई के अन्त, रोहिनी दिक्षा लई तुरन्त ॥ ७७ ॥
अन्त समाधि चित्त में धारि, सोलम स्वर्ग जाय अवतार।
अर रोहिनी के सुत है आठ, तिनहुँ भव्य लियौ तज पाठ ॥७८॥
तप वल स्वर्ग मुक्ति फल लयौ, जन्म मरण सकल दुख गयौ।
यह विधान गौतम नैं भणौं, श्रेणिक राय भाव धरि सुणौं ॥ ७९ ॥
बहुत भव्य व्रत लीनो जाय, दुःख दारिद्र दिन दया मिटाय।
रोहिनी कथा सम्पूर्ण भई, जो पूरव परकाशी सही ॥ ८० ॥
"हेमराज" यह कही विचारि, गुरुमुख सकल शास्त्र अवधारि।
जो व्रत कथा कोष में कही, सो विधि वन्ध चौपाई भई ॥ ८१ ॥
नगर वीर पुल गोल प्रवीन, दया दान तिन कोमल लीन।
विधि हो दान सुपात्र हिं देय, खरचि लक्ष्मी जस कौं लेय ॥ ८२ ॥
निशि दिन गुरु मुख पढ़ै पुराण, गुणी जननि कों राखै मान।
जुगल वेद रिविचंद वखानि, बृध जन मत संवत सर मानि ॥८३॥
पोष सुदि रवि दिन द्वादशी, मंगलवार रोहिनी सची।
कवि जन भगति गात अति भई, तब यह धर्म कथा वरनाई ॥८४॥
रोहिनी व्रत पालै जो कोइ, सो नर नारि अमर पद होइ।
इल लखि भविजनकर मनलाय, भव भवके दुख जाय पलाय ॥८५॥
दोहा—"मुन्नालाल" ऐसे कहैं, सुनौं चित्त मन लाय।
मन वच लाय जो करैं भवि, सो निश्चै तरि जाय ॥ ८६ ॥

❀ समाप्त ❀

निशि भोजन कथा

दोहा

नमों शारदा सार बुध, करैं हरैं अघ लेप।
निशि भोजन भुञ्ज की कथा, लिखूं सुगम सक्षेप ॥१॥

चौपाई छन्द

जम्बू द्वीप जगत विख्यात। भरत खण्ड छवि कहिये न जात ॥
तहां देश कुरु जगल नाम। हस्तनागपुर उत्तम ठाम ॥
यशोभद्र भूपति गुणवास। रुद्रदत्तद्विज प्रोहित तास ॥
अश्वमास तिथि दिन आराध। पहिली पड़वा कियो सराध ॥
बहुत विनय सों नगरी तने। नौति जिमाये ब्राह्मण घने ॥
दान मान सबहिं को दियो। आप विप्र भोजन नहिं कियो ॥
इतने राय पठायो दास। प्रोहित गयो राय के पास ॥
राज काज कछु ऐसौ भयो। करत करावत सब दिन गयो ॥
घर में रात रसोई करी। चूल्है ऊपर हाँड़ी धरी ॥
हींग लैन उठि बाहर गई। यहाँ विधाता औरहिं ठई ॥
मैंडक उछल परो ता माहिं। विप्र तहाँ कछु जानों नाहिं ॥
बेंगन छोंक दिये तत्काल। मैंडक मरो होय बेहाल ॥
तबहुं विप्र नहिं आयो धाम। धरी उठाय रसोई ताम ॥
पराधीन को ऐसी बात। औसर पायो आधी रात ॥
सोय रहे सब घरके लौग। आग न दीवा कर्म संजोग ॥
भूखो प्रोहित निकसे प्रान। ततछिन बैठो रोटी खान ॥
बैंगन भोले लीनो ग्रास, मैंढक मुँह में आयो तास ॥
दांतन चले चब्यो नहिं जबै। काढ़ धरो थाली में तबै ॥
•प्राप्त हुए मैंढक पहिचान। तौभी विप्र न करी गिलानि ॥
तिथि पूरी कर छोड़ी काय। पशु की योनी उपजो आय ॥

॥ सौरठा छन्द ॥

घुघू[१] काग[२] बिलाव[३] सांवर[४] गिरध परेवरुआ[५]।
सूकर[६] अजगर[७] भाव बाघ[८] गोह[९] जक में मगर[१०]।
दश भव इह विधि थाय, दसों जन्म नरक हैं गयो।
दुर्गति कारण पाय, फला पाप बट बीजवत॥

॥ दोहा ॥

निशि भोजन करिये नहीं, प्रगट दोष अविलोय।
परभव सब सुख संपजे, यह भव रोग न होय॥

॥ छन्द छप्पय ॥

कीड़ी बुध बलहरे कंप गद करे कसारी। मकड़ी कारण पाय कोढ़ उपजे दुःख भारी। जुआं जलोदर जने फाँस गल विथा बढ़ावे। बाल सबै सुरभंग बमन माखी उपजावे॥ तालुवे छिद्र बीछू भखत और व्याधि वहु करहिं सव। यह प्रगट दोष निश-असन के हर भव दोष परोक्ष फल॥

॥ दोहा छन्द ॥

जो अघ इहि भव दुख करे, परभव क्यों न करेय।
डसत साँप पीड़े तुरत, जहर क्यों न दुख देय॥
सुवचन सुन डाहारजै, मूरख मुदित न होय।
मणिधर फण फेरे सही, नदी साँप नहीं होय॥
सुवचन सत गुरु के वचन, और न सुवचन कोय।
सत गुरु वही पिछानिये, जा उर लोभ न होय॥
भूधर सुवचन सांभलो, स्वपर पक्षकर कौन।
समुद्र रेणु का जो मिले, तोडे ते गुण कौन॥

इति निशि भोजन भुंज कथा सम्पूर्णम्।

ब्रह्मगुलाल मुनी की कथा

कुकुभ छन्द

स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनि की सुनो कथा अचरजकारी।
हँसी खेल मे सांग रचा और जिनमत की दीक्षा धारी।टेक
अद्भुत रूप अनूपम विद्या, मरधानी जिन दर्शन का।
पड कुसंग मे स्वांग खेलता, रास रचै वृन्दावन का॥
कभी राम कभी कृष्ण रूप धर, सीता राधा रुक्मणि का।
मन को मोहै लोग चकित हों समा देख यह जोवन का॥
इक दिन राजकुंवर महलों मे, बैठे जोड़ सभा भारी।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की, सुनो कथा अचरज कारी॥ हँसी०
चर्चा चली कठिन है सबमे, धरै सिंह का जो बाना।
वही गरज हो, वही पराक्रम, वही चाल हो मस्ताना॥
ब्रह्मगुलाल कही, नहिं मुश्किल, चोट फेट से घबराना।
राजकुंवर ने एक खून का, लिखकर दे दिया परवाना॥
भरी सभा में गरज कड़क कर आया केहरि बलधारी।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की सुनो कथा अचरज कारी॥ हँसी०
यारो ने बकरी का बच्चा बाधा यों धरके मन मे।
देखें कैसा है यह जोगी, दया धर्म आराधन मे॥
कहा कुंवर ने अरे सिंह तू, क्या करता होगा वन मे।
नहीं मारता देख उधर, क्या खडा सामने आगन मे॥
शेर नहीं है तू कोई गीदड, धिक् धिक् तेरी महतारी।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की सुनो कथा अचरज कारी॥ हँसी०
सुनके कुंवर के वचन अजा सुत,—देख क्रोध मन में आया।
पूंछ उठाके धरी कान पैं, लहू जो नैनों में छाया॥
अग समेट उठाकर पंजे, कूद कुंवर सनमुख धाया॥

आसपास के भागे सगरे, कुछ ऐसा धरका खाया ॥
लगा तमाचा गिरा सिंहासन, कुंवर प्राण का परिहारी।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की, सुनो कथा अचरजकारी ॥ हँसी०
ब्रह्मगुलाल बुला राजा ने, मन्त्र सोच यों फरमाया।
हाय कर्मगति यही लिखी थी, हमें पेश जो कुछ आया ॥
होनहार सो हुई जिन्दगी, जग मे है तरुवर छाया।
निपट उदासी दूर करन को, हमने तुमको बुलवाया ॥
जैन मुनी का भेष बनाकर, दे कोई शिक्षा हितकारी।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की, सुनो कथा अचरज कारी ॥ हँसी०
आकै घरपै बात कही यह, सब कुनबे के लोगन को।
समय आगया करैं नाश हम, कर्म पाप के रोगन को ॥
सुन मथुरामल यार महाव्रत, धार निरोधे योगन को।
यही समझ के सबने मान, कठिन है तजना भोगन को ॥
भाई भावन बारह निशको, मनमें मुनी शिव अधिकारी।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनि की, सुनों कथा अचरज कारी ॥ हँसी०
प्रातःकाल पंचों की साक्षी, प्रतिमा सम्मुख तिथि ठानी।
हाथ जोड़कर करी बीनती, काल दोष में गुरु हानी ॥
तातें श्री जिनबिम्ब लेत हूँ, दिक्षा वर्णत जिनवानी।
पंच मुष्टि से लोंच बालकर, कमंडलु अरु पीछी आनी ॥
मारग सोध गमन का पहुंचे, जहां सभा बैठी सारी।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की, सुनो कथा अचरज कारी ॥ हँसी०
दोहा—(राजा) देख भेष होके चकित, भूप कहा सिरनाय।
शोक रहित कीजे हमें, दे शिक्षा मुनिराय ॥
ब्रह्म०—कीजे कोटि उपाव, कोऊ न सुख दुख दे सकै।
तजके मन भ्रम भाव, निज हित का उद्यम करो ॥
राजन रोष न कीजिये यह जगरूप विचार। टेक

ज्ञान चढे गज ज्ञान पै, उदै स्वान निहार ॥
भौसत भौसत थक रहे, ताको अगम अपार ॥
कर्म उदैसों क्या डरो, यह जगरूप विचार ॥ टेक
सुख दुःख परणति कर्म की, दोऊ बन्धन रूप ।
पचमगति विन सुख नहीं, जगहै दुखका कूप ॥
मन की दुविधा परिहरो, यह जग रूप विचार ॥ टेक ॥
हम अज्ञान दशा विषै, किये पाप जो घोर ।
छेदेंगे तप धारकैं, तन ममता को छोर ॥
हमरे हाथ कुंवर मरों, यह जगरूप विचार ॥ टेक ॥
तज कै रागरु दोप को, तन मे समता लाय ।
मौन धरौ कह भूपसों यो वे श्री मुनिराय ॥
जो मन आवै सो करो, ये जगरूप विचार ॥ टेक ॥

॥ कुकुभ छन्द ॥

देख अवस्था मुनि रूप की राव सभी छल को त्यागा ।
कहा, होय कै परगट मांगो तुमको जो अच्छा लागा ॥
ब्रह्मगुलाल मुनी बोले वैराग भाव में मन पाका ।
क्षमा कीजिए हम बनवासी इच्छा को तोड़ा तागा ॥
ले कमण्डलु पीछी सब कुछ छोड़ चले पर उपकारी ।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनीकी, सुनो कथा अचरज कारी ॥ हँसी०
सब नगरी में फैली चर्चा, हाहाकार करे सारे ।
आगै मुनिवर पीछै सगरे, जन धारो पर मन मारे ॥
मात पिता औ नारी तीनों, चले साथ अति दुखियारे ।
पहुंचे वन में बैठ गये मुनि मोह फॉस नाशन हारे ॥
तीनों में अब प्रश्नोत्तर यों होते हैं बारी बारी ।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की सुनो कथा अचरजकारी ॥ हँसी०

नरेन्द्र छन्द (जोगी रासा)

माता–बस बस बेटा अब घर चलिये, क्यों बैठे वन के माँही।
हँसी खेल में साँग भरा था, क्या सोची मन के मांही॥
मुनि–किसका घर क्या आना जाना ममत न कुछ इस तन मांही।
कैसा साँग लगे अब हम तो लागे मोक्ष यतन मांही॥
माता–मेरे जिगर का टुकडा बेटा, मेरी बगल का पाला।
मुझ दुखिया छोड़ चले, अब क्यों वैराग संभाला॥
मुनि–बिछुड़े बार अनंती मिलमिल, नया ढंग में क्या डाला।
माता कौन कौन है बेटा, है इक साँग निराला॥
माता–नही जानूं थी मैं इस दिन को, है यह भरी जवानी।
यों दीपक गुल कर जाओगे, कुछ छोड़ी नहीं निशानी।
मुनि–नहीं जवानी और बुढापे, की कुछ जुदी कहानी।
इक दिन जिसको समझे अपनी, होगी वही बिगानी॥
नारी–मुझे छोड़ मंझधार चले हो, मुझे बताओ प्यारे।
किसका तकूं सहारा दिन अब, कैसे कटे हमारे॥
मुनि–नारी की पर्याय बुरी है, पराधीन दुख सारे।
छिदै स्त्री लिंग धर्म की—सेवन शरण तुम्हारे॥
नारी–भरी जवानी जोग लिया, तुम मन में कुछ न विचारा।
भरी पड़ी है उमर अभी, क्यों छोड़ा संग हमारा॥
मुनि–वृद्ध अवस्था और लड़कपन दोनों दुख को धारा।
एक जवानी में वन आवै, सोचै सोचन हारा॥ २०॥

॥कुकुभ छन्द॥

होकर गये निराश बुलाकर, मथुरामल की नारी को।
कहा सभी ने हाहा धिकधिक, ऐसी समझ तुम्हारी को॥
आप रहे घर बैठ विपति में, चोड़ छाड़ सब यारी को।

भेजो उसको जाकर लावै, कहते हमे लाचारी को ॥
किया तंग जब औरत ने तब, मथुरामल या मन धारी ।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की सुनो क्या अचरज कारी ॥हँसी०
वह हठग्राही कभी न आवै, कहा किसी का न मानै ।
चले गये वह अब हमको भी कहा यहा छप्पर छाने ॥
जो संयम कुछ हम भी सेवे यारी को इक जग जाने ।
कहा नार से लो जाते हैं, तुम मत लगियो पछताने ॥
उस बिन हम भी घर नहिं आवें, यही प्रतिज्ञा सुखकारी ।
स्वामी ब्रह्मगुलाल मुनी की सुनो कथा अचरज कारी ॥ हँसी०

दोहा—वन में जाकर यों कहा, सुनिये ब्रह्मगुलाल ।
कहा धरा मुनिव्रत विषै, दो उत्तर गुणमाल ॥

नरेन्द्र छन्द (जोगी रासा)

मथुरामल—बालपने में विद्या सीखे निज अरु पर हितकारी ।
तरुण अवस्था भोग जोग की वृद्धपने में वारी ॥
विना भोग के जोग लिया, तज सुन्दर कामिन प्यारी ।
कोमल सेज तजो साईंजी, क्या मन मांहि विचारी ॥
मुनी—भोग विषै हैं रोग घनेरे, लावें अंत उदासी ।
कामिनि सेज दिना दश की फिर पड़े गले मे फाँसी ॥
पाँच इन्द्री के विषय अग्नि हैं, भोग सबै त्रण रासी ।
ज्यों ज्यों सेवें त्यों त्यों भडकै, सुखी सदा बनवासी ॥
मथुरामल—सुख में रहना खाना पीना, दया धर्म का धरना ।
पाल अणुव्रत चार दान दे, वैयाव्रत का करना ॥
करना पर उपकार धार, संन्यास अंत में मरना ।
ऐसे उत्तम गृहाचार को, तज कै क्यों दुख भरना ॥
मुनी—घर वस हो नहिं सकती, पूरण पुन्य पाप की हानी ।
लोहे अरु सोने की बेडी, दोनों बंध निशानी ॥

धार महाव्रत मिलै मोक्ष जो, परम हितू सुखदानी।
ऐसे यती धर्म की महिमा, सारे जग ने जानी॥
मथुरामल—हीन संहनन काल पाँचवाँ निर्बल है यह काया।
यह मन चंचल फिरै भटकता रहै न थिर ठहराया॥
कैसे हो निर्वाण महाव्रत, धरके क्या फल पाया।
वहा मसल हो दुविधा मे ना, मिलै राम ना माया॥
मुनी—धर्म ध्यान की कर उपासना, चंचल मन ठहरावै।
घर को त्याग वास कर वन मे आशा सभी घटावै।
समिति गुप्ति व्रत पाल देह तव विदेह को जावै।
धरके दिक्षा इसी काल यों, जीव मुकति पद पावै॥

॥ कुकुभ छन्द ॥

गये मनाने को मथुरामल, यती धर्म महिमा जानी।
क्षुल्लक होकर साथ हो लिए, भोग वासना सब हानी॥
दिया धर्म उपदेश जगत को, जो।लौं तन अस्थिति ठानी।
मङ्गल ऐसे काठ संग मे लोहा तैरति है पानी॥
वह वैराग कुतूहल वांचो, मन लाकर सब नरनारी॥ ब्रह्म०

॥ इति शुभम् ॥

कवि हेमराजजी कृत—

अष्टाह्निकाव्रत कथा

दोहा—चरण नमूं जिनराज के, जाते दुरित नशाय।
शारद बन्दूं भाव से, सतगुरु सदा सहाय॥ १॥

चौपाई

जम्बूद्वीप सुदर्शन मेरा। रहो ताहि लवनोदधि घेरा॥
मेरुसे दक्षिण भारत क्षेत्र। मगध देश सुख सम्पति हेत॥ २॥

राजगृह नगरी शुभ वसै । गढ मठ मंदिर सुन्दर लसैं ॥
श्रेणिक राज करे सु प्रचंड । जिन लीनो अरिगण परदंड ॥ ३ ॥
पटरानी चेलना सुजान । सदा करैं जिन पूजा दान ॥
सभामध्य वैठो सो राय । वनमाली आयो शिर नाय ॥ ४ ॥
दो कर जोड करै सो सेव । विपुलाचल आये जिन देव ॥
वर्द्धमान को आगम सुनो । जन्म सुफल चित्त अपने गुनो ॥ ५ ॥
राजा रानी पुरजन लोग । वन्दन चले पूजने जोग ॥
चलत चलत सो पहुँचे तहाँ । समोसरण जिनवर को जहाँ ॥ ६ ॥
दे प्रदक्षिणा भीतर गये । वर्द्धमान के चरणों नये ॥
पुनि गणधर को कियो प्रणाम । हर्षित चित्त भयो अभिराम ॥ ७ ॥
दशविध धर्म सुनो जिन पास । जाते गयो चित्त को त्रास ॥
दो कर जोडि नृपति वीनयो । अति प्रमोद मेरे मन भयो ॥ ८ ॥
प्रभु दयाल अव कृपा करेव । व्रत नंदीश्वर कहो जिनदेव ॥
अरु सव विधि कहिये समझाय । भावसहित यों पूछो राय ॥ ९ ॥
अवधिज्ञानधर मुनिवर कहैं । कोशलदेश स्वर्ग सम रहैं ॥
ताके मध्य अयोध्यापुरी । धन कन सुखी छतीसों कुरी ॥ १० ॥
ता पुर राज करै हरिषैन । महा तेज वल पूरण सैन ॥
वशइक्ष्वाकु चक्री भयो आन । ताकी आनि खंड छह जान ॥ ११ ॥
पाट वंध रानी नृप तीन । गंधारी जेठी गुणलीन ॥
प्रिय मित्रा रूपश्री नाम । साधे धर्म अर्थ अरु काम ॥ १२ ॥
सुखसे रहत वहुत दिन भये । ऋतु वसन्त वन राजा गये ॥
जल क्रीड़ा वनक्रीड़ा करें । हास्य विलास प्रीति अनुसरें ॥ १३ ॥
ता वनमध्य कल्पद्रुम मूल । चन्द्रकांति मणि शिलानुकूल ॥
मण्डपलता अधिक विस्तार । चारण मुनि आये तिहिंवार ॥ १४ ॥
अरिंजय अमितंजय नाम । सोम, दयालु धर्म के धाम ॥
राजा रानी पुरजन नारि । देखे मुनि तिन दृष्टि पसारि ॥ १५ ॥

सब नर नगर आनंदित भये। क्रीड़ा तजि मुनि वंदन गये॥
त्रिया पुरुष चरणों अनुसरे। अष्ट द्रव्य मुनि पूजे खरे॥ १६॥
धर्मध्यान कहो मुनिराय। श्रद्धा सहित सुनो कर भाय॥
राजा प्रश्न करो मुनि पास। सुनो धर्म चित भयो हुलास॥ १७॥
दलवल सहित सम्पदा घनी। और भूमि षटखंड जो तनी॥
महा पुण्य जो यह फल होइ। गुरु विन ज्ञान न पावैं कोई॥ १८॥
बार बार विनवे कर सेव। पूरव कहो भवान्तर देव॥
अवधिज्ञानवल मुनिवर कहे। पुर अहिक्षेत्र वनिक इक रहे॥१६॥
सुखित कुवेर मित्र ता नाम। साधे धर्म अर्थ अरु काम॥
जेठ पुत्र श्रीवर्म्मकुमार। मध्यम जयवर्मा गुणसार॥ २०॥
लघु जयकीर्ति कीर्ति विख्यात। तीनों शुभ आनंदित गात॥
एक दिवस उपजो शुभकर्म। वनमैं आये मुनि सौधर्म॥ २१॥
सेठ पुत्र मुनिवर वंदियो। श्रीवर्म्माजु अठाई लियो॥
नंदीश्वरव्रत विधि से पाल। भव भव पापपुंज को जाल॥ २२॥
अंत समाधिमरण को पाय। इस पुर वज्रवाहु नप आय॥
ताके विमला रानी जान। तुम हरषेन पुत्र भये आन॥ २३॥
पूरव व्रत पालो अभिराम। तातैं लहो सुक्ख को धाम॥
जयवर्म्मा जयकीरति वीर। निकट भव्य गुण साहस धीर॥ २४॥
वंदे गुरु जु धुरन्धर देव। मन वच काय करी वहु सेव॥
तव मुनि पंच अणुव्रत दिये। दोनों भाव सहित व्रत लिये॥ २५॥
अरुनंदीश्वर व्रत तिन लियो। अंत समाधिमरण तिन कियौ॥
हस्तनागपुर शुभ जहँ वसै। तहाँ विमलवाहन नृप लसै॥ २६॥
ताके नारि श्रीधरा नाम। आरिंजय अमितंजय धाम॥
पुत्र युगल हम उपजे तहाँ। पूर्वपुण्य फल पायौ तहाँ॥ २७॥
गुरु समीप जिन दीक्षा लई तपवल चारण पदवी भई॥
यासे हम तुम पूरव भ्रात। देखत उपजो प्रेम सुगात॥ २८॥

पूरव व्रत नंदीश्वर कियौ। तातै राज चक्रपद लियौ ॥
अब फिर व्रत नंदीश्वर करो। तातै स्वर्ग मुक्तिपद धरो ॥ २६ ॥
तब हरिषेण कहैं कर जोड़ि। व्रत नंदीश्वर कहौ बहोरि ॥
मुनिवर कहैं दीप आठमो। तास नाम नंदीश्वर भनो ॥ ३० ॥
ताके चहुं दिश परवत परे। अञ्जन दधिमुख रतिकर धरे ॥
तेरह तेरह दिशि दिशि जान। ये सब पर्वत बावन मान ॥ ३१ ॥
पर्वत पर्वत पर जिन गेह। वह परिणाम सुनो कर नेह ॥
सौ योजन ताका आयाम। अरु पचास विस्तार सुताम ॥ ३२ ॥
उन्नत है योजन पच्चीस। सुर तहँ आय नवावे शीश ॥
अष्टोत्तर सौ प्रतिमा जान। एक एक चैत्यालय मान ॥ ३३ ॥
गोपुर मणिमय के सु प्रकार। छत्र चमर ध्वज वंदनवार ॥
प्रातिहार्य विधि शोभा भली। तिन रविकोटि सोम छविछली ॥३४॥
तासु दीप मे सुरपति आय। पूजा भक्ति करें बहु भाय ॥
देव अव्रती व्रत नहिं करैं। भाव भक्तिकर पातिक हरैं ॥ ३५ ॥
तासु दीप सम्बन्धी सार। व्रत नंदीश्वर को अधिकार ॥
यहाँ कही जिनवरसु प्रकाशि। आदि अनादि पुण्य की राशि ॥३६॥
जो व्रत भव्य भाव से करें। भव २ जन्म जरा भय हरैं ॥
ता व्रत को सुनिये अधिकार। वर्ष वर्ष में त्रय त्रय बार ॥ ३७ ॥
आषाढ़ कातिक अरु जो फाग। शाखा तीन करो अनुराग ॥
आठों दिन आठैं पर्यंत। भक्ति सहित कीजै व्रत संत ॥ ३८ ॥
सात दिन एकाशन करो। कर संयम जिनवर मन धरो ॥
आठैं के दिन कर उपवास। जातैं छूटे कर्म का त्रास ॥ ३९ ॥
करो प्रथम जिनका अभिषेक। जातैं पातिक जाय अनेक ॥
अष्ट प्रकारी पूजा करो। मुख परमेष्ठि पंच उच्चरो ॥ ४० ॥
ता दिन व्रत नंदीश्वर नाम। ताका फल सुनियो अभिराम ॥
फल उपवास लक्ष दश जाम। श्रीजिनवर ने करो बखान ॥ ४१ ॥

दूजे दिन जिन पूजा करो। पात्रदान दे पातिक हरो ॥
अष्ट विभूति नाम दिन सोय। ता दिन एकाशन कर लोय ॥ ४२ ॥
फल उपवास सहस दश होई। अब तीजा दिन सुनिये लोई ॥
जिनपूजा कर पात्र हि दान। भोजन पानी भात प्रमान ॥ ४३ ॥
नाम त्रिलोकसार दिन कहो। साठ लाख प्रोपधफल कहो ॥
चतुर्थ दिनकर अवमौदर्य। नाम चतुर्मुख दिन मोहर्य ॥ ४४ ॥
तहं उपवास लक्षफल होड। पंचमदिन विधि करियो सोइ ॥
जिनपूजा एकाशन करो। हयलक्षण जु नाम दिनधरो ॥ ४५ ॥
फलचौरासी लाख उपवास। जातैं जाय भ्रमण भव त्रास ॥
षष्ठम दिन जिनपूजा दान। भोजन भात आमली पान ॥ ४६ ॥
तादिन नाम स्वर्ग सौपान। व्रत चालीस लक्ष फल जान ॥
सप्तम दिन जिन पूजा दान। कीजै भविजन का सनमान ॥४७॥
सब सम्पत्ति नाम दिन सोइ। भोजन भात त्रिवेली होय ॥
फल उपवास लक्षको जान। अष्टम दिन व्रत चित मे आन ॥४८॥
कर उपवास कथा रुचि सुनो। पात्र दान दे सुकृत गुनो ॥
इन्द्रध्वज व्रत दिन तसु नाम। सुमरो जिनवर आठों जाम ॥४९॥
तीन कोड़ि अरु लाख पचास। यह फल होय हरे सब त्रास ॥
इस विध आठ वर्ष में होय। भाव सहित कीजै भविलोय ॥५०॥
उत्तम सात वर्ष विधि जान। मध्यम पांच तीन लघु मान ॥
उद्यापन विधि पूर्वक सचो। वेदी मध्य मांड़नो रचो ॥५१॥
जिन पूजा जु महा अभिषेक। चन्द्रोपम ध्वजं कलशु अनेक ॥
छत्र चमर सिंहासन करो। बहुविधि जिन पूजो अघ हरो ॥५२॥
चारों दान सुपात्रहिं देउ। बहुत भक्तिकर विनय करेउ ॥
बहुविध जिन प्रभावना होय। शक्तिमान करो भविलोय ॥
उद्यापन की शक्ति न होय। तो दूनो व्रत कीजो लोय ॥
जिन यह व्रत कीनो अभिराम। तिन पद लयो मुक्तको धाम ॥५४॥

यह व्रतपुण्य महाफल लियो। प्रथम ऋषभजिनवर ने कियो॥
अनन्तवीर्य अपराजित पाल। चक्रवर्ति पदवी भई हाल॥५५॥
श्रीपाल मैना सुन्दरी। व्रत कर कुष्ठव्याधि सब हरी॥
बहुतक नरनारी व्रत करो। तिन सब अजर अमर पद धरो॥५६॥
सुनो विधान राय हरिषैण। अति प्रमोद मुख जंपे बैन॥
सब परिवार सहित व्रत लियो। मुनिवर धर्म प्रीतिकर दियो॥५७॥
व्रत कर फिर उद्यापन करो। धर्म ध्यान कर शुभ पद धरो॥
अन्त समाधिमरण को पाय। भयो देव हरिषैण सु राय॥५८॥
पर्यायांतर लैहै मुक्ति। श्रेणिक सुनी सकल व्रत युक्ति॥
गौतम कहो सकल अधिकार। सुनो मगधपति चित्त उदार॥५९॥
जो नरनारी यह व्रत करे। निश्चय स्वर्ग मुक्तिपद धरें॥
सकट रोग शोक सब जाहिं। दुख दरिद्रता दूर पलाहिं॥६०॥
यह व्रत नंदीश्वर की कथा। हेमराज परकाशी यथा॥
शहर इटावा उत्तम थान। श्रावक करे धर्म शुभ ध्यान॥६१॥
सुने सदा ये जैन पुरान। गुणीजनों का राखें मान॥
तिहिठां सुना धर्म सम्बन्ध। कीनो कथा चौपाई बंध॥६२॥
पढे सुने देव उपदेश। लहैं भाव से पुण्य अशेष।
जाके नाम पाप मिट जांय। ता जिनवर के वंदों पांय॥६३॥इति॥

❀ त्रैलोक्य तिलक व्रत कथा ❀

(प० पन्नालालजी साहित्याचार्य कृत)

येन सद्ध्यानशस्त्रेन, छिन्नं कर्मकदम्बकं।
त्रैलोक्यभ्रमणातीतं, वन्दे तं सिद्धसन्मतिम्॥

असंख्यात द्वीप समुद्रों से भरे हुए मध्यलोक मे सब से

❀ इस व्रत को "त्रिलोक तीजव्रत" और "रोट तीजव्रत" भी कहते हैं।

पहिला जम्बू द्वीप नाम का महाद्वीप है। यह एक लाख योजन विस्तार वाला है और चारों ओर से लवण समुद्र द्वारा वेष्टित है। इसी जम्बूद्वीप के दक्षिण मे एक भरत नाम का क्षेत्र है। उसके बीच में पूर्व से पश्चिम तक लम्बा विजयार्ध नाम का पर्वत पड़ा हुआ है तथा हिमवत् पर्वत से निकली हुई गंगा और सिन्धु महानदियां भी इसी क्षेत्र में वहती हैं। इस कारण से इस क्षेत्र के छह खण्ड हो जाते हैं। इन छह खण्डों में मध्य का आर्यखण्ड कहलाता है और शेष के पांच खण्ड म्लेच्छ खण्ड कहलाते हैं। तीर्थंकर आदि महापुरुप आर्यखण्ड ही में उत्पन्न होते हैं। इस आर्यखण्ड में अङ्ग. बङ्ग, कलिङ्ग आदि अनेक अच्छे अच्छे देश हैं, उन्हीं देशों में एक कुरुजांगल नाम का देश भी है जो खूब ही हरा भरा रहता है। उसी देश में एक हस्तिनागपुर नाम का नगर है जो अनेक तीर्थंकरों के गर्भ जन्म और तप कल्याणक होने से अतिशय पवित्र है।

किसी समय वहां पर कामदुक राजा राज्य करते थे। राजा कामदुक बहुत नीतिवान और बलवान् थे। इनकी रानी का नाम कमललोचना था। कमललोचना यथार्थ में कमललोचना ही थी- उसके नेत्र कमलों के समान अतिशय सुन्दर थे। राजा और रानी धर्मसेवन करते हुए आनन्द से समय व्यतीत करते थे। समय पाकर उनके विशाखदत्त नाम का पुत्र हुआ। राजा कामदुक के एक वरदत्त नाम का मन्त्री था। मन्त्री की पत्नी का नाम विशालाक्षी था। उन दोनों से एक विजय सुन्दरी नाम की पुत्री हुई जो बहुत ही रूपवती थी। राजकुमार विशाखदत्त ने तरुण होने पर उसी विजयसुन्दरी के साथ विवाह किया था।

कितने ही दिन बाद राजा कामदुक की मृत्यु हो गई, जिससे समस्त राज परिवार और प्रजाजन बहुत ही दुखी हुए। परन्तु मात्र शोक करने से ही तो गई वस्तु की प्राप्ति नहीं हो सकती।

राजकुमार विशाखदत्त ने राज्य का भार ग्रहण किया और नीतिपूर्वक प्रजा का पालन करना शुरू कर दिया, परन्तु पिता के वियोग से वह हमेशा खेदखिन्न रहा करता था। एक दिन वह उदासचित बैठा हुआ था कि वहां विहार करते हुए ज्ञान-सागर नाम के मुनिराज आये। राजा ने उठकर उन्हें नमस्कार किया और उच्चासन पर बैठा कर उनकी बड़ी स्तुति की। मुनि-राज ने धर्मवृद्धि रूप आशीर्वाद देकर राजा विशाखदत्त को इस रीति से धर्मोपदेश दिया कि जिससे उसका समस्त शोक नष्ट हो गया। उपदेश देकर मुनिराज यथेष्ट स्थान पर विहार कर गये और राजा न्यायपूर्वक प्रजा का पालन करने लगा।

किसी समय उस नगरी मे अनेक आर्यिकाओं के साथ विहार करती हुई संयमभूषण नाम की आर्यिका पधारी। वे समस्त आर्यिकाओं की गणिनी अर्थात् स्वामिनी थी। नगरी के समस्त स्त्री-पुरुष उनके दर्शन करने के लिए गये। रानी विजयसुन्दरी भी साजबाज के साथ आर्यिका के दर्शन करने गई। आर्यिका ने सबको धर्मोपदेश दिया। उपदेश हो चुकने के बाद रानी ने विनय सहित पूछा कि हे स्वामिनी! मेरे योग्य कोई ऐसा व्रत बताइये जिसके करने से मेरा जन्म सफल हो और इस निन्दनीय स्त्री पर्याय से छुटकारा पाकर मोक्ष प्राप्त कर सकूं। आर्यिका ने रानी को निकट भव्य जानकर उसे त्रैलोक्य तिलक (त्रिलोक तीज) व्रत करने का आदेश

दिया। रानी के पूछने पर आर्यिका ने उसको नीचे लिखे अनुसार विधि बतलाई—

यह व्रत भाद्रमास के शुक्ल पक्ष की तृतीया के दिन किया जाता है। व्रत के दिन उपवास करना चाहिये और हर प्रकार के आरम्भ आदि का त्याग कर प्रमाद रहित हो धर्मध्यान करना चाहिए। मन्दिरजी में तीन लोक की रचना कर उसमें अकृत्रिम चैत्यालयों की स्थापना कर विधिपूर्वक पूजा करनी चाहिये। और तीनों काल 'ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्ध्यकृत्रिम-जिनचैत्यालयेभ्यो नमः।' इस मन्त्र का जाप करना चाहिये। ❀

रात का समय भी धर्मध्यान में ही बिताना चाहिये। इस प्रकार यह व्रत तीन वर्ष तक करना चाहिये। उसके बाद उत्साह पूर्वक शक्ति के अनुसार व्रत का उद्यापन करना चाहिये। यदि उद्यापन करने की सामर्थ्य न हो तो व्रत को दूना करना चाहिये। उद्यापन के समय हर प्रकार के तीन तीन उपकरण मन्दिरजी में भेट करे, शास्त्रदान दे, चतुर्विध संघ को चार प्रकार का दान देवे और अपने भावों की विशुद्धि उत्तरोत्तर बढ़ाने का प्रयत्न करे। विधिपूर्वक व्रत का पालन करने से शीघ्र ही यथेष्ट फल की प्राप्ति होती है।

❀ कहीं कहीं पर ऐसा भी विधान है कि भूत भविष्यत् और वर्तमान काल सम्बन्धी तीन चौबीसी का मांडना बनाकर तीन चौबीसी की पूजा करना चाहिए। और 'ॐ ह्रीं त्रिकाल-सम्बन्धीत्रिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योः नमः' इस मन्त्र का जाप करना चाहिये। परन्तु तत्त्व दृष्टि से विचार करने पर दोनों का प्रयोजन एक ही मालूम होता है। क्योंकि यह सब शुभोपयोग की वृद्धि तथा चित्त की चंचलता के रोकने के साधन मात्र हैं।

इस प्रकार विधि सुनकर रानी ने उक्त व्रत को आर्यिका तथा अन्य समस्त संघ की साक्षीपूर्वक ग्रहण किया और यत्न सहित उसका पालन किया। आयु के अन्त मे समाधिमरण करके अच्युत नाम के १६ वें स्वर्ग मे देव हुई। व्रत के प्रभाव से उसका स्त्रिलिङ्ग छिद गया। वहाँ उसने मनवांछित अनेक सुख भोगे और अकृत्रिम चैत्यालयों के साक्षात् दर्शन तथा धर्मध्यान करते हुए समय विताया।

आयु पूर्ण होने पर मगधदेश के कंचनपुर नगर में राजा सुपिंगल और राणी कमलोचना के सुमंगल नाम का पुत्र हुआ। एक दिन वह अपने इष्टमित्रों के साथ वन क्रीडा के लिये गया था कि वहां उसकी दृष्टि एक दिगम्बर मुनिराज पर पड़ी। मुनिराज के दर्शन करते ही राजपुत्र सुमंगल के हृदय मे भारी ममता उत्पन्न होगई। वह मुनिराज को नमस्कार कर विनय सहित उनके पास ही बैठ गया और पूछने लगा कि हे ऋपिराज! आपके दर्शनकर मेरे हृदय में भारी ममता उत्पन्न हो रही है सो इसका क्या कारण है? राजपुत्र के वचन सुनकर मुनिराज कहने लगे कि हे वत्स! तू इस भव से तीसरे भव मे हस्तिनापुर के राजा विशाखदत्त की विजयसुन्दरी नामकी रानी थी, उस समय मैं संयम-भूपण नाम की आर्थिका थी, मेरे उपदेश से तुमने त्रैलोक्य तिलक व्रत (त्रिलोक तीजव्रत) ग्रहण किया था और उसके प्रभाव से तुम सोलहवें स्वर्ग मे देव हुई। वहाँ से चयकर यहाँ राजा सुपिंगल की कमलोचना रानी से सुमङ्गल नाम का राजपुत्र हुआ है और मेरा जीव भी संयम-भूपण आर्यिका के बाद स्वर्ग में देव हुआ। तथा वहां से चलकर यहाँ मनुष्य पर्याय मे उत्पन्न हुआ। ससार को अनित्य समझकर मैंने जिन दीक्षा धारण करली है। पूर्व भव के स्नेह के कारण ही मुझे देखकर तेरे हृदय में ममता

उत्पन्न हुई है। यह जीव संसार मे इसी प्रकार घूमता फिरता है इसलिये किसी से हर्ष विवाद नहीं करना चाहिये।

मुनिराज के वचन सुनकर सुमङ्गल के हृदय मे वैराग्य उत्पन्न हो आया जिससे उसने उसी समय जिनदीक्षा धारण करली और कठिन तपस्या कर केवल ज्ञान प्राप्त किया। सुमंगल केवली ने आर्य देशों में विहार कर धर्म का उपदेश दिया और अष्टकर्मों को नष्ट कर मोक्षपद प्राप्त किया।

इस प्रकार रानी विजयसुन्दरी ने त्रैलोक्य तिलक व्रत का पालन कर स्वर्ग मोक्ष के सुख प्राप्त किये। यदि श्रद्धा सहित अन्य भव्य भी इसे धारण करें, तो इच्छानुसार फल प्राप्त कर सकते है।

※ इति ※

दुधारस (द्वादशी) कथा

प्रथम नमों श्रीवीर जिनन्द, वन्दों सद्‌गुरु पद अरविन्द।
जास प्रसाद कहूँ शुभ कथा, गौतम गणधर भाषी यथा ॥ १ ॥
समोशरण में श्री महावीर, धर्म कथा भाषी गम्भीर।
तदनन्तर श्रेणिक वीनवे, मुझ मन आनन्दो हवै अवै ॥ २ ॥
स्वामी नरक उधारी कथा. व्रत विधान मुनि वाने यथा।
गौतम गणधर भाषी तदा, सोहि नर नारि सुनो चित मुदा ॥ ३ ॥
जम्बू द्वीप भरतवर जान, सोरठ देश महा सु वखान।
उजवन्ति नगरी अभिराम, पद्मप्रभु जहाँ राजा नाम ॥ ४ ॥
पद्मावती रानी तस गेह, सती शिरोमणि कहिये तेह।
सेठ बसे धनदत्त है नाम, स्वयं-प्रभा सेठानी धाम ॥ ५ ॥
एक दिवस तहाँ मुनि संचरा, मिहिताश्रव नामैं गुण भरा।
तव सूखा ते सफला भया, माली फल ले नृप पै गया ॥ ६ ॥

सुन वृत्तान्त बहुतसा दीध, मुनिपद बन्दन मनसा कीध ।
आनन्द भेरी बजवाई राय, हरखवन्त तहाँ पहुंचो जाय ॥ ७ ॥
धनदत्त सेठ आयो नृप सङ्ग, मुनि वंदिये गमन करन्त ।
भव्य जीव प्रति-बोधन काज, धर्म कथा भाखो मुनिराज ॥ ८ ॥
मद मात्सर्य नृप नहीं धरी, कर जोडे तहाँ विनती करी ।
स्वामी सब जीवन हितकार, भाषो श्रावक धर्म विचार ॥ ६ ॥
तब मुनि भाषै धर्म स्वरूप, धर्म रतन जग मांहि अनूप ।
धर्म तनो समकित है मूल, सहित गुणाष्टक धरि अनुकूल ॥१० ॥
आठ मूल गुण चित मे धरो, सकल अभक्ष सदा परिहरो ।
पांच अणुव्रत साते शील, बारह व्रत हैं ये सब मील ॥ ११ ॥
श्रीजिन भाषित यह जो मर्म, आदर छै श्रावक नौ धर्म ।
दान सुपात्रै विधसूं करै, अन्त सल्लेखना व्रत अनुसरै ॥ १२ ॥
मुनि वचनै प्रीति हो राय, कर जोडे वन्दै मुनि राय ।
नगर प्रवेश कियो नृप नरै, सब जन मुनि को जश उच्चरै ॥ १३ ॥
धनदत्त जो घर आयो तान, निज नारी सु भाखै आन ।
मुझ मन हर्ष आवै अतिगनौ, पूजादान करै सब तनौ ॥ १४ ॥
दान से सम्पत्ति बाढै घनी, दान से सेव करे सुर धनी ।
दान मे सब मन वाञ्छित फलै, दान संकट दूर ही टलै ॥ १५ ॥
दान से लहिये भोग विलास, दान से होवै पाप विनास ।
दान से पावै सुजस अपार, दान कोई न दीये बेकार ॥ १६ ॥
दान से पुण्य प्रताप अपार, दान से होवे जय जयकार ।
दान से स्वर्ग मुक्ति सुख जान, दान को फल भाखो भगवान ॥१७॥
इस ही हेत है दान प्रधान, अन्न दान उत्तम सुख खान ।
भोजन शीघ्र सम्भारो तुम्हें, दान सुपात्र ही देस्यूं हमैं ॥ १८ ॥
जिस घर मुनिवर भोजन करै, भव सागर से सुख सौ तरैं ।
सेठ वचन सन सेठानी जवै, प्रीतम सन मुझ विनती हवै ॥१६॥

हूँ ऋतुवन्ती अति अपवित्र, किम करिये मुनि भक्ति विचित्र।
जे निरदूषण लेय आहार, अन्तराय टाले सु विचार ॥२०॥
जब शुद्ध होऊं प्रीतम तुम सुनो, आहार मुनिवर को देऊ घनो।
नार वचन सन कीनो कोप, मम कर धर्म तनू तू लोप॥ २१॥
उत्तर दियो क्यूं निरभय पणैं, कुलाचार छोड़ो किम बणैं।
तू पापिनि निर्लज्ज अपार, तुम सम कृपण नहीं संसार॥ २२॥
दान देत जो करे अन्तराय, ते पापी चांडाल कहाय।
अनन्त ससारी नरक ही परै, श्री जिनवर ऐसे उच्चरैं॥ २३॥
मद कर सेठ चढ़ौं हठ घनौ, तड़क भड़क नारी जो भनौं।
दान दिये जो थाकौ पाप, ते मुझ थाप्यो मुझ न संताप॥ २४॥
तिहिवेला भोजन विधि करी, शुभ चित कर संशय परिहरो।
फिर फिर सेठ कहै इन परै, दान से शुभ मंगल विस्तरे॥ २५॥
सेठ वचन तब मानों नार, कीनों आहार विविध प्रकार।
मुनिवर के प्रतिलाबो मुदा, भक्ति अशुचि तैं दीनों तदा॥ २६॥
ले आहार मुनी वनमें गयो, इक चित ध्यानरूढ तहां भयो।
सेठ तनै जब उदियो पाप, आप कियो भुगते है आप॥ २७॥
सर्व शरीर भई वेदना, सहै निरन्तर वो दुःख घना।
जीमें को नहीं उसके साथ, को नहि जल पीवे तसु हाथ॥ २८॥
गलत कुष्ठ भयो तसु अङ्ग, कर्म बली जगमाहीं अभंग।
वहुत व्यतीत गयो इमकाल, प्रगटौ पुण्य उदय सुविशाल॥२९॥
आये हुये थे मुनिव्रत पाल, सिहिताश्रव बन मे गुण माल।
नरपति वन्द्यौ सद्गुरु पाय, सुनी सुधर्म कथा चितलाय॥३०॥
तब मुनि बोले सुन शुभ मती, अशुचि पतौ मन लायौ जती।
तिन कारन दुख पायौं घनो, ये फल अभुक्ति दान ते तनौ॥३१॥
तबै सेठ पूछे मुनि प्रतै, ये दुख मिटे कियो किन प्रतैं।
गुरु बोले सुन तू धनदत्त, यह उपाय करो इक चित्त॥३२॥

नर्क-उधारी जे व्रत करें, ते भव भव के दुख परिहरे।
कह्यो मुनिवर किस विधि यह कथा, कौन मास पालन हो जथा ॥३३॥
तब मुनि बोले मुनि गुणवन्त, भादों सुदी द्वादशि दिन संत।
निरमल व्रत कीजै शुभ ध्यान, कीजै निशि,जागरण प्रधान ॥३४॥
जिन प्रतिमा आमल मम कुम्भ, ढाल विलौको धार अभङ्ग।
पूजा विधि शुभ अष्ट प्रकार, कीजै उच्छव बहु विस्तार ॥ ३५ ॥
द्वादश वर्ष तनो अवसान, कर उद्यापन यह विधि आन।
यथा शक्ति मुनि दीजै दान, संघ तनौ कीजै सन्मान ॥ ३६ ॥
विविध महोच्छव कीजै चङ्ग, इस विधि व्रत पालो मन रंग।
जो उद्यापन शक्ति न होय तो दूनो व्रत करियो सोय ॥ ३७ ॥
मुनि वन्द लीनौ व्रत सन्त, आयो निज घर सेठ तुरन्त।
व्रत फल ही से भयो निरोग, प्रगटौ पुन्य तनौ संयोग ॥ ३८ ॥
अन्य दिवस धनदत्त सुजान, भव तन भोग विरक्त बखान।
मनमें चिन्ते बारह भावना, जिन दीक्षा लीनी इक मना ॥३९॥
बारह भेद तपें तप घना, बन्धन तोडे कर्मन हना।
केवल लहिके मुक्ति गयो, आतम निधि को ध्यातो भयो ॥४०॥
जो नर नारी यह व्रत करे, ते भव भव के दुख परिहरैं।
इस भव पावै भोग विलास, पर भव पावे स्वर्ग विलास ॥४१॥
श्रेणिक आगे गौतम स्वामी, यह कथा भाषो अभिरामी।
यह दुधारस व्रत की कथा, चन्द भनै मैं भाषी तथा ॥४२॥

॥ इति दुधारस कथा समाप्त ॥

सुगन्ध दशमी व्रत कथा

वर्द्धमान बन्दौं जिनराय, गुरु गौतम बन्दों सुखदाय।
सुगन्ध दशमी व्रत की कथा, वर्द्धमान सुप्रकाशी यथा ॥ १ ॥
मगध देश राजगृह नाम, श्रेणिक राज करे अभिराम।

नाम चैलना गृह पटरानि, चन्द्ररोहिणी रूप समानि ॥ २ ॥
नृप बैठो सिंहासन परे, वनमाली फल लायो हरे।
कर प्रणाम वच नृप से कहो, चित्त प्रमोद से ठाडो रहो ॥ ३ ॥
वर्द्धमान आये जिन स्वामि, जिन जीतो उद्यम करि काम।
इतनी सुनत नृपति उठ चला, परिजन युत दलवल सैं भला ॥४॥
समोशरण वन्दे भगवान, पूजो भक्ति धारि वहु मान।
नर कोठे बैठा नृप जाय, हाथ जोडि पूछे शिर नाय ॥ ५ ॥
सुगन्ध दशमी व्रत फल भाषि, ता नर की कहिये अब साखि।
गणधर कहे सुनो मगधेश, जम्बूद्वीप विजयार्द्ध प्रदेश ॥ ६ ॥
शिव मन्दिरपुर उत्तरश्रेणी, विद्याधर प्रीतकर जैनी।
कमलावती नारि अति रूप, सुर कन्या से अधिक अनूप ॥ ७ ॥
सागरदत्त वसे तहां साह, जाके जिन व्रत में उत्साह।
धनवत्ता वनिता गृह कहीं, मनोरमा ता पुत्री सही ॥ ८ ॥
सुगुप्ताचार्य गृह आइयो, देख मुनीन्द्र दुःख पाइयो।
कन्या मुनि की निन्दा करी, कुछ मन मे नहिं शंका धरी ॥ ९ ॥
नग्न गात दुर्गंध शरीर, प्रगट पने देही नहिं चीर।
मुख ताम्बूल हतो मुनि अंग, नाख्यो सुख को कीनो भंग ॥ १० ॥
भोजन अन्तराय जब भयो, मुनि उठ जाय ध्यान वन दियो।
समताभाव धरै उर मांहि, किंचित् खेद चित्त में नाहिं ॥११॥
बीती अवधि समय कछु गयो, मनोरमा को काल सुभयो।
भई गधी पुनि कूकरि ग्राम, अपर ग्रामभई सूकरि नाम ॥ १२ ॥
मगध सुदेश तिलकपुर जान, विजयसैन तहँका नृप मान।
चित्ररेखा ता रानी कही, ता पुत्री दुर्गन्धा भई ॥ १३ ॥
एक समय गुरु वन्दन गयो, पूजा कर विनती को ठयो।
मो पुत्री दुर्गंध शरीर, कहो भवांतर गुण गंभीर ॥ १४ ॥
राजा वचन मुनीश्वर सुने, मुनि वृत्तांत राय से भने।

सब वृत्तांत हालि जो जान, सुनि राजा से कह्यो बखान ॥ १५ ॥
सुन दुर्गंधा जोडे हाथ, मोपर कृपा करो मुनिनाथ।
ऐसा व्रत उपदेशो मोहि, यासो तनु निरोग अब होहि ॥ १६ ॥
दयावंत बोले मुनिराय, सुन पुत्री व्रत चित्त लगाय।
समता भाव चित में धरो, तुम सुगन्ध दशमी व्रत करो ॥ १७ ॥
यह व्रत कीजे मनवच काय, यासैं रोग शोक सब जाय।
दुर्गंधा विनवे मुनि पाय, कहिये सविध महा मुनिराय ॥ १८ ॥
ऐसे वचन सुनै मुनि जबै, तव बोले पुत्री सुन अबैं ॥
भादों शुक्ल पक्ष जब होय, दशमी दिन आराधो सोय ॥ १६ ॥
चारों रस की धारा देव, मन में राखो श्रीजिन देव।
शीतलनाथ की पूजा करो, मिथ्या मोह दूर परिहरो ॥२०॥
व्रत के दिन छोड़ो आरम्भ, यासैं मिटे कर्म का दंभ।
याके करत पाप क्षय जाय, सो दस वर्ष करो मन लाय ॥२१॥
अब यह व्रत सम्पूर्ण होय, उद्यापन कीजे चित जोय।
दश श्रीफल अमृतफल जान, नीबू सरस सदा फल आन ॥२२॥
दश दीजे पुस्तक लिखवाय, यह विधि सव मुनि दई बताय।
विधि सुन दुर्गंधा व्रत लयो, सब दुर्गंध ततक्षण गयो ॥२३॥
व्रत कर आयु जो पूरण करी, दशवें स्वर्ग भई अप्सरी।
जिन चैत्यालय बंदन करे, सम्यक् भाव सदा उर धरे ॥ २४ ॥
भरत क्षेत्र मँह मगध सुदेश, भूति तिलकपुर बसे अशेष।
राजा महीपाल तहां जान, मदन सुन्दरी त्रिया बखान ॥ २५ ॥
दशवें दिव से देवी आन, ताके पुत्री भई निदान।
मदनावली नाम धर तास, अति सुरूप तन सकल सुवास ॥ २६ ॥
बहुत बात को कहे बखान, सुर कन्या मानों उरमान।
कौसांबीपुर मदन नरेन्द्र, रानी सती करे आनन्द ॥ २७ ॥
पुरुषोत्तम सुत सुन्दर जान, विद्यावन्त सुगुण की खान।

जो सुगन्ध मदनावलि जाय, सो पुरुषोत्तम को परनाय ॥ २८ ॥
राजा मदन सुन्दरी बाल, सुख से जात न जानो काल।
एक दिवस मुनिवर वंदियो, धर्म श्रवण मुनिवर पर कियो ॥ २९ ॥
हाथ जोड पूछे तब राय, महामुनींद्र कहो समझाय।
मो गृह रानी मदनावली, ता शरीर सौरभता भली ॥ ३० ॥
कौन पुन्य से सुभग सुरूप, सुरवनिता से अधिक अनूप।
राजा वचन मुनीश्वर सुने, सब वृत्तान्त राय से भने ॥ ३१ ॥
जैसे दुर्गंधा व्रत लहो, तैसी विधि नरपति से कहो।
सुने भवांतर जोड़े हाथ, दिक्षाव्रत दीजे मुनिनाथ ॥ ३२ ॥
राजा ने जब दीक्षा लई, रानी तब अर्जिका भई।
तपकर अन्त स्वर्ग को गई, सोलम स्वर्ग प्रतेन्द्र सो भई ॥ ३३ ॥
बाइस सागर काल जो गयो, अन्तकाल ता दिव से चयो।
भरत सुक्षेत्र मगध वह देश, वसुधा अमर केतुपुर वेश ॥ ३४ ॥
ता नृपगेह जन्म उन लही, जो प्रतेन्द्र अच्युत दिव कही।
कनककेतु कंचन द्युति देह, वनिता भोग करे शुभगेह ॥ ३५ ॥
अमर केतु मुनि आगमन भया, कनक केतु तहं वंदन गयो।
सुनो सुधर्म श्रवण संयोग, तजे परिग्रह अरु भव भोग ॥ ३६ ॥
घात घातिया केवल लयो, पुनि अघात हनि शिवपुर गयो।
व्रतसुगन्ध दशमी विख्यात, ता फल भई सुरभि युत गात ॥ ३७ ॥
यह व्रत पुरुष नारि जो करे, सो दुख संकट भूल न परे।
शहर गहेली उत्तमवास, जैन धर्म को जहां प्रकाश ॥ ३८ ॥
सब श्रावक व्रत संयम धरे, पूजा दान से पातक हरे।
उपदेशी विश्व भूषण सही, हेमराज पंडित ने कही ॥ ३९ ॥
मन वच पढ़े सुने जो कोय, ताको अजर अमर पद होय।
यातै भविजन पढ़ो त्रिकाल, जो छूटे विधि के भ्रम जाल ॥ ४० ॥

॥ श्री सुगन्ध दशमी व्रत कथा भाषा सम्पूर्णम् ॥

भगवान बाहुबली

श्री सुकौशल स्वामी

अनन्त चतुर्दशी व्रत कथा

दोहा—अनन्तनाथ वन्दों सदा, मन में कर बहु भाव।
सुर असुर सेवत जिन्हैं, होय मुक्ति पर चाव ॥
जम्बूद्वीप द्वीपन में सार, लख योजन ताका विस्तार।
मध्य सुदर्शन मेरु वखान, भरत क्षेत्र ता दक्षिण जान ॥ २ ॥
मगध देश देशों शिर-मणी, राजगृह नगरी अति बनी।
श्रेणिक महाराज गुणवंत, रानी चेलना गृह शोभन्त ॥ ३ ॥
धर्मवंत गुण तेज अपार, राजा राय महागुण सार।
एक दिवस विपुलाचल वीर, आये जिनवर गुण गम्भीर ॥४॥
चार ज्ञान के धारक कहे, गौतम गणधर सो संग रहे।
छः ऋतु के फल देखे नयन, वनमाली ले चलो ऐन ॥ ५ ॥
हर्ष सहित वनमाली भयो, पुष्प सहित राजा पे गयो।
नमस्कार कर जोड़े हाथ, मो पर कृपा करो नरनाथ ॥ ६ ॥
विपुलाचल उद्यान कहंत, महामुनीश्वर तहां वसंत।
सुन राजा हर्षित भयो, बहुत दान माली को दियो ॥ ७ ॥
सप्त ध्वनि बाजे बाजंत, प्रजा सहित राजा चालंत।
दे प्रदक्षिणा बैठो राव, जिनवर देख करो चित चाव ॥ ८ ॥
द्वै विधि धर्म कहो समुझाय, जासों पाप सर्व जरजाय।
खग तहां आयो एक तुरंत, सुन्दर रूप महा गुणवंत ॥ ९ ॥
नमस्कार जिनवर को करो, जय जयकार शब्द उच्चरो।
ताहि देख अचरज अति भयो, राजा श्रेणिक पूछत भयो ॥१०॥
सेना सहित महागुण खानि, को यह आया सुन्दर वाणि।
याकी बात कहो समझाय, ज्ञानवंत मुनिवर तुम आय ॥११॥
गौतम बोले बुद्धि अपार, विजय नगर कहो अतिसार।
मनो कुम्भ राजा राजंत, श्रीमती रानी का कंत ॥१२॥

ताका पुत्र अरिंजय नाम, पुण्यवंत सुन्दर गुणधाम ।
पूर्व तप कीनो इन जोय, ताका फल भुगते सब सोय ॥१३॥
ताकी कथा कहूँ विस्तार, जंम्बूद्वीप द्वीपो मे सार ।
भरतक्षेत्र तामें सुखकार, कौशल देश विराजे सार ॥१४॥
परम सुखद नगरी तहँ जान, विप्र शोम शर्मा गुण खान ।
सोमिल्या भामिन ता कही, दुख दरिद्र की पूरित मही ॥१५॥
पूरव पाप किये जे घने, ताको दुख भुगते ही बने ।
सुन राजा याको वृत्तांत, नगर २ सो भ्रमैं दुखांत ॥१६॥
देश विदेश फिरे सुख आश, तोहु न पावे सुक्ख निवास ।
भ्रमत २ सो आयो तहां, समोशरण जिनवर को जहां ॥१७॥
दोहा—अनंतनाथ जिनराज का, समोशरण तिहिंवार ।
सुर नर अति हर्षित भये, देख महा द्युतिसार ॥१८॥
विप्र देख हर्षित भयो, समोशरण वंदन को गयो ।
वंदि जिनेश्वर पूछे सोई, कहा पाप मैं कीनो होई ॥१९॥
दरिद्र पीड़ा रहे शरीर, सो तो व्याधि हरो गम्भीर ।
गणधर कहें सुनो द्विजराय, अनंत व्रत कीजे सुखदाय ॥२०॥
तव विप्र बोला कर भाय, किस विधि होई सो देहु बताय ।
किस प्रकार या व्रत करो, कहो विधान चित्त मे धरो ॥२१॥
भादों मास सुक्ख की खान, चौदह शुक्ल कही सुखदान ।
कर स्नान शुद्ध हो जाय, तव पूजे जिनवर सुखदाय ॥२२॥
गुरु वंदना करो चितलाय, या विध से व्रत लेयं बनाय ।
त्रिकाल पूजे श्रीजिनदेव, रात्रि जागरण कर सुख लेख ॥२५॥
गीतरुनृत्य महोत्सव ज्ञान, धारा जिनवर करो वखान ।
व्रत चतुर्दशी विधि से धरे, ता पीछे उद्यापन करे ॥२४॥
करे प्रतिष्ठा चौदह सार, यासैं पाप होई जर छार ।
झारी धारी अधिक अनूप, चरण कलश देवे शुभ रूप ॥२५॥

दीवट झालर सङ्कुल माल, और चंदोवे उत्तम जाल।
छत्र सिंहासन विधि से करे, तातें सर्व पाप परिहरे ॥२६॥
चार प्रकार दान दीजिये, याते अतुल सुक्ख लीजिये।
अन्त अवस्था ले संन्यास, ताते मिले स्वर्ग का वास ॥२७॥
उद्यापन की शक्ति न होय, कीजे व्रत दूनो भवि लोय।
विप्र कियो व्रत विधि सों आय, सब दुख तासु गयो विलाय ॥२८॥
अंतकाल धरके संन्यास, ताते पायो स्वर्ग निवास।
चौथे स्वर्गदेव सो जान, महा ऋद्धि ताके सो वखान ॥२९॥
विजयार्द्ध गिरी उत्तम ठौर, कांचीपुर पत्तन शिरमौर।
राजा तहं अपराजित वीर, विजया तासु प्रिया गम्भीर ॥३०॥
ताको पुत्र अरिंजय नाम, तिन यह आय कियो परणाम।
कंचनमय सिंहासन आन, ता पर भूप बैठो सुख खान ॥३१॥
व्योम पटल विनशत लख संत, उपजो चित्त वैराग महंत।
राज पुत्र को दियो बुलाय, आप लई दीक्षा शुभ भाय ॥३२॥
सही परिषह दृढ़ चितधार, तातें कर्म भये अति क्षार।
घात घातिया केवल भयो, सिद्धि बुद्धि सो पद निर्मयो ॥३३॥
रानी ने व्रत कीनों सही, देव देह दिव अच्युत लही।
तहां सुक्ख भुगते अधिकार्य, तहां से आय भयो नर राय ॥३४॥
यह ऋद्धी पाई शुभ सार, फिर तप कर विधि कीने क्षार।
तहां सो मुक्तिपुर को गयो, ऐसो तिन व्रत को फल लयो ॥३५॥
ऐसा व्रत पाले जो कोई, स्वर्ग मुक्ति पद पावे सोई।
विनय सागर गुरु आज्ञा कारी, हरि किल पाठ चित्त मे धारी ॥३६॥
तब यह कथा करी मन ल्याय, यथा शास्त्र मे वरणी आय।
विधि पूर्वक पाले जो कोय, ताको अजर अमर पद होय ॥३७॥

इति अनन्त चौदश व्रत कथा सम्पूर्ण।

रत्नत्रय व्रत कथा

दोहा—अरहनाथ को वन्दि के, वन्दों सरस्वति पांव।
रत्नत्रय व्रत की कथा, कहूँ सुनो मन लाय ॥१॥

चौपाई

जम्बूद्वीप भरत शुभ क्षेत्र, मगध देश सुख सम्पति हेत।
राजगृह तहां नगर वसाय, राजा श्रेणिक राज कराय ॥२॥
विपुलाचल जिन वीर कुंवार, केवल ज्ञान विराजत सार।
माली आय जनावो दियो, तत्क्षण राजा वन्दन गयो ॥३॥
पूजा वन्दन कर शुभ सार, लाग्यो पूछन प्रश्न विचार।
हे स्वामी रत्नत्रय सार, व्रत कहिये जैसा व्यवहार ॥४॥
दिव्य ध्वनि भगवान वताय, भादों सुदि द्वादस शुभ भाव।
कर स्नान स्वच्छ पट श्वेत, पहिनो जिन पूजन के हेत ॥५॥
आठों द्रव्य लेय शुभ जाय, पूजो जिनवर मन वचकाय।
जीरण नूतन जिनके गेह, बिंब धराओ तिनमें तेह ॥६॥
हेम रूप्य पीतल के यन्त्र, तांबा यथा भोज के पत्र।
यन्त्र करो वहु मन थिर देव, रत्नत्रय के गुण लिख लेव ॥७॥
निशंकादि दर्शन गुण सार, संशय रहित सो ज्ञान अपार।
अहिंसादि महाव्रत सार, चारित्र के ये गुण हैं धार ॥८॥
ये तीनों के गुण हैं आदि, इन्हें आदि जेते गुण वाद।
शिव मारग के साधन हेत, ये गुण धारे व्रती सुचेत ॥९॥
भादों माघ चैत में जान, तीनों काल करो भवि आन।
या विधि तेरह वर्ष प्रमान, भावना भावे गुणहि निधान ॥१०॥
लवङ्गादि अष्टोत्तर आन, जपो मन्त्र मन कर श्रद्धान।
पुनि उद्यापन विधि जो एह, कलशा चमर छत्र शुभ देह ॥११॥
संघ चतुर्विध को आहार, वस्त्राभरण देउ शुभसार।
बिंब प्रतिष्ठा आदि अपार, पूजों श्री जिन हो भवपार ॥१२॥

दोहा—इस विध श्रीमुख धर्म सुन, मनो चित्तधर भाय।
किनने फल पायो प्रभु, सो भापो समझाय॥ १३॥

चौपाई

जम्बूद्वीप अलकृत हेर, रह्यो ताहि लवणोदधि घेर।
मेरु सु दक्षिण दिश है सार, है सो विदेह धर्म अवतार॥ १४॥
कच्छवती सुदेश तहँ बसे, वीतशोकपुर तामे लसे।
वैश्रव नाम तहां का राय, करै राज्य सुरपति सम भाय॥ १५॥
माली आय जनावो दियो, विपुल बुद्धि प्रभु वन मे ठयो।
इतनी सुन नृप वन्दन गयो, दान बहुत माली को दियो॥ १६॥
हे स्वामी रत्नत्रय धर्म, मोसां कहौ मिटै सब भर्म।
तब स्वामी ने सब विधि कही, जो पहिले सो प्रकाशी सही॥१७॥
पंचामृत अभिषेक सु ठयो, पूजा प्रभु की कर सुख लयो।
जागिरनादि ठयो बहु भाव, इस विधि व्रत कर वैश्रव राय॥ १८॥
भाव सहित राजा व्रत करो, धर्म प्रतीत चित्त अनुसरो।
षोडश भावना भावत भयो, अन्त समाधिमरण तिन कियो॥१६॥
गोत्र तीर्थङ्कर बांध्यो सार, जो त्रिभुवन मे पूज्य अपार।
सर्वार्थ सिद्धि पहुंचो जाय, भयो तहां अहमेंद्र सुभाय॥ २०॥
हस्त मात्र तन ऊँचो भयो, तेतिस सागर आयु सो लयो।
दिव्य रूप सुख को भण्डार, सत्य निरूपण अवधि विचार॥ २१॥
सौधमेन्द्र विचारी घरी, यक्षेश्वर को आज्ञा करी।
वेग देश निर्माप्यो जाय, थापो सुथरा पुर अधिकाय॥ २२॥
कुम्भराय राजा तहुँ वसै, देवी प्रजावती तिस लसे।
श्री आदिक तहा देवी आय, गर्भ से सोधना कीनी जाय॥ २३॥
रत्न वृष्टि नृप आगन भई, पन्द्रह मास लो वरसत गई।
सर्वार्थ-सिद्धि से सुर आय, प्रजावती कुक्ष उपजाय॥ २४॥
मल्लिनाथ नाम जो पाय, दोज चन्द्रसम वढत सुभाय।

जब विवाह मंगल विधि भई, तब प्रभु चित विरागता लई ॥ २५ ॥
दीक्षा धर बन में प्रभु गये, घाति कर्म हनि निर्मल ठये।
केवल ले निर्माण सो जाय, पूजा करी सुरन सब आय ॥ २६ ॥
यह विधान श्रेणिक ने सुनो, व्रत लीने चित अपने गुणो।
भक्ति विनय कर उत्तम भाय, पहुँचे अपने गृह को आय ॥ २७ ॥
या विधि जो नर नारी करे, सो भव सागर निश्चय तिरे।
नलिन कीर्त्ति मुनि संस्कृत कही, ब्रह्मज्ञान भाषा निरमई ॥ २८ ॥

॥ श्री रत्नत्रय कथा सम्पूर्णम् ॥

श्री रविव्रत कथा

॥ चौपाई ॥

श्रीसुखदायक पार्श्व जिनेश, सुमति सुगति दाता परमेश ॥
सुमिरों शारद पद अरविंद, तिन कर व्रत प्रगटो सानन्द ॥ १ ॥
वाणारस नगरी सुविशाल, प्रजापाल प्रगटो भूपाल ॥
मतिसागर तहां सेठ सुजान, ताका भूप करे सन्मान ॥ २ ॥
तासु त्रिया गुण सुन्दरि नाम, सात पुत्र ताके अभिराम ॥
षट् सुत भोग करें परणीत, बाल रूप गुण धर सुविनीत ॥ ३ ॥
सहस्रकूट शोभित जिनधाम, आये यतिपति खंडित काम ॥
सुनि मुनि आगम हर्षित भये, सर्व लोग वन्दन को गये ॥ ४ ॥
गुरु वाणी सुनि के गुणवती, सेठिन तबे करी वीनती ॥
प्रभु सुगम व्रत देहु बताय, जासै रोग शोक भय जाय ॥ ५ ॥
करुणानिधि भाषै मुनिराय, सुनो भव्य तुम चित्त लगाय ॥
जब आषाढ सुदि पक्ष विचार, तब कीजे अन्तिम रविवार ॥ ६ ॥
अनशन अथवा लघु अहार, लवणादिक जो करे परिहार ॥
नवफल युत पंचामृत धार, बहु प्रकार पूजो भवहार ॥ ७ ॥
उत्तम फल इक्यासी जान, नव श्रावक घर दीजे आन ॥
या विधि करो नव वर्ष प्रमाण, याते होय सर्व कल्याण ॥ ८ ॥

अथवा एक वर्ष एकसार, कीजै रविव्रत मनहि विचार ॥
सुन साहुन निज घर को गई, व्रत निन्दा कर निंदित भई ॥ ६ ॥
व्रत निन्दा से निर्धन भये, सात पुत्र अयोध्यापुर गये ॥
तहां जिनदत्त सेठ गृह रहे, पूर्व दुकृत का फल लहे ॥ १० ॥
मात पिता गृह दुःखित सदा, अवधिसहित मुनि पूछे तदा ॥
दयावन्त मुनि ऐसे कहो, व्रत निन्दा से तुम दुःख लहो ॥ ११ ॥
सुन गुरु वचन वहुरि व्रत लयो, पुण्य थयो घर में धन भयो ॥
भवि जन सुनो कथा सम्बन्ध, जहां रहते थे वे सब नन्द ॥ १२ ॥
एक दिवस गुणधर सुकुमार, घास ले आये गृह द्वार ॥
क्षुधावन्त भावज पे गयो, दन्त विना नहिं भोजन दयो ॥ १३ ॥
वहुरि गये जहां भूलो दन्त, देखो तासे अहि लिपटन्त ॥
फणपति की तहां विनती करी, पद्मावति प्रकटी तिहिं घरी ॥१४॥
सुन्दर मणिमय पारसनाथ, प्रतिमा पंचरत्न शुभ हाथ ॥
देकर कहो कुंवर कर भोग, करो क्षणक पूजा संयोग ॥ १५ ॥
आन विम्ब जिन घर मे धरो, तिहँकर तिनको दारिद्र हरो ॥
सुख विलास सेवें सब नन्द, नित-प्रति पूजों पार्स जिनेन्द्र ॥ १६ ॥
साकेता नगरी अभिराम, जिन प्रसाद राचा शुभ धाम ॥
करा प्रतिष्ठा पुण्य संयोग, आये भविजन संग सो लोग ॥ १७ ॥
संघ चतुर्विधि को सम्मान, कियो दियो मन वांछित दान ॥
देख सेठ तिनकी सम्पदा, जाय कही भूपति से तदा ॥ १८ ॥
भूपति गृह पूछी वृत्तंत, सत्य कहो गुणधर गुणवन्त ॥
देख सुलक्षणता को रूप, अत्यानन्द भयो सो भूप ॥ १६ ॥
भूपति तब तनुजा सुन्दरी, गुणधर को दीनी गुणभरी ॥
कर विवाह मंगल सानन्द, हय गय पुरजन परमानन्द ॥ २० ॥
मन वांछित पाये सुख भोग, विस्मित भये सकल पुर लोग ॥
सुख सो रहत बहुत दिन भये, तब सब वन्धु वनारस गये ॥ २१ ॥

मात पिता के परशे पांय, अत्यानन्द हृदय न समाय ॥
विघटो विषम विषम वियोग, भयो सकल पुरजन संयोग ॥ २२ ॥
आठ सात सोलह के अंक, रवि व्रत कथा रचो अकलंक ।
थोड़े अर्थ ग्रन्थ विस्तार, कहैं कवीश्वर जो गुणसार ॥ २३ ॥
यह व्रत जो नर नारि करें, सो कबहूँ दुर्गति नहिं परें ।
भाव सहित सो शिव सुख लहै, भानुकीर्त्ति मुनिवर इमि कहैं ॥२४॥
इति श्री रविव्रत कथा सम्पूर्ण ॥

दशलक्षण व्रत कथा

दोहा—प्रथम वन्दि जिनराज के, शारद गणधर पांय ।
दशलक्षण व्रत की कथा, कहूँ अगम सुखदाय ॥ १ ॥

चौपाई

विपुलाचल श्रीवीर कुवार, आये भावभंजन भरतार ।
सुन भूपति तहां वन्दन गयो, सकल लोक मिलि आनंद भयो ॥१॥
श्रीजिन पूजे गनधर चाव, स्तुति करी जोड़कर भाव ।
धर्म कथा तहां सुनी विचार, दान शील तप भेद अपार ॥ ३ ॥
भव दुख क्षायक दायक शर्म, भाख्यौ प्रभू दशलक्षण धर्म ।
ताको सुनि श्रेणिक रुचि धरी, गुरु गौतम से विनती करी ॥ ४ ॥
दशलक्षण व्रत कथा विशाल, मुझ को भाषो दीनदयाल ।
बोले गुरु सुन श्रेणिक चन्द्र, दिव्य ध्वनि कही वीर जिनेन्द्र ॥ ५ ॥
खण्ड धातुकी पूरव भाग, मेरु थकी दक्षिण अनुराग ।
सीतोदा उपकंठी सही, नगरी विशालाक्ष शुभ कही ॥ ६ ॥
नाम प्रीतकर भूपति बसै, प्रियंकरी रानी तिसु लसै ।
सुता मृगांकरेखा तसु जान, मतिशेखर तसु मंत्री प्रधान ॥ ७ ॥
शशि प्रभा ताकी वर नार, सुता कामसेना निरधार ।
राज सेठ गुण सागर जान, शील सुभद्रा नारि बखान ॥ ८ ॥

सुता मदनरेखा तसु खरी, रूपकला लक्षण गुण भरी।
लक्षण भद्र नाम कुतवाल, शशिरेखा नारी गुणमाल ॥ ९ ॥
कन्या ता घरे रोहिनी, ये चारों वरणी गुरु तनी।
शास्त्र पढ़े गुरु पास विचार, स्नेह परस्पर वढा अपार ॥ १० ॥
मास बसंत भयो निरधार, कन्या चारों बनहिं मंझार।
गई मुनीश्वर देखे तहां, तिनको वन्दन कीनो वहां ॥ ११ ॥
चारों कन्या मुनी से कही, त्रिया लिङ्ग ज्यों छूटै सही।
ऐसा व्रत उपदेशो अवै, यासे नर तनु पावे सवै ॥ १२ ॥
बोले मुनि दशलक्षण सार, चारों करो होय भवपार।
कन्या वोली किहि विधि करें, किस दिनतैं व्रत को हम धरें ॥१३॥
तव गुरु बोले वचन रसाल, भादों मास कहो गुणमाल।
धवल पचमी दिन से सार, पंचामृत अभिषेक उतार ॥ १४ ॥
पूजार्चन कीजे गुणमाल, जिन चौवीस तनी शुभ साल।
उत्तम क्षमा आदि अतिसार, दशमी ब्रह्मचर्य गुणधार ॥ १५ ॥
पुष्पांजलि इस विधि दीजिये, तीनों काल भक्ति कीजिये।
इस विधि दश वासर आचरो, नियमित व्रत शुभ कार्य करो ॥१६॥
उत्तम दश अनशन कर योग मध्यम व्रत कांजी का भोग।
भूमि शयन कीजे दश राति, ब्रह्मचर्य पालो सुख भांति ॥ १७ ॥
इस विधि दश वर्ष जव जांय, तव तक व्रत कीजे घरभाय।
फिर व्रत उद्यापन कीजिये, छत्र चमर आदिक दीजिये ॥ १८ ॥
औषधि अभय शास्त्र आहार, पंचामृत अभिषेक हि सार।
माडनों रचि पूजा कीजिये, छत्र चमर आदिक दीजिये ॥ १९ ॥
उद्यापन की शक्ति न होय, तो दूनो व्रत कीजिये सोय।
पुण्य तनो सचय भण्डार, परभव पावे मोक्ष अपार ॥२०॥
तव चारों कन्या व्रत लियो मुनिवर भक्ति भाव लख दियो।
यथा शक्ति व्रत पूरण करो, उद्यापन बिधि से आचरो ॥२ ॥

अन्तकाल वे कन्या चार, सुमिरण करो पंच नवकार।
चारों मरण समाधि सु कियो, दशवें स्वर्ग जन्म तिन लियो ॥२२॥
षोडश सागर आयु प्रमण, धर्म ध्यान सेवैं तहां जान।
सिद्ध क्षेत्र में करे बिहार, क्षायक सम्यक उदय अपार ॥२३॥
सुभग अवन्ती देश विशाल, उज्जैनी नगरी गुणमाल।
स्थूलभद्र नामा नरपती, रानी चार सो अति गुणवती ॥२४॥
देव गर्भ में आये चार, तो रानी के उदर मझार।
प्रथम सुपुत्र देव प्रभु भयो, दूजों सुत गण चन्द्र भाषियो ॥२५॥
पद्म प्रभु तीनों बलवीर, पद्म सारथी चौथे वीर।
जन्म महोत्सव तिन को करो, अशुभ दोष ग्रह दीनों हरो ॥२६॥
निकल प्रभा राजा की सुता, ते चारों परणी गुणयुता।
प्रथम सुता सो ब्राह्मी नाम, दुतिय कुमारी सो गुणधाम ॥२७॥
रूपवती तीजी सुकुमाल, मृगाक्ष चौथी सो गुणमाल।
करो व्याह घर को आइयो, सकल लोक घर आनन्द कियो ॥२८॥
स्थूलभद्र राजा इक दिना, भोग विरक्त भयो भवतना।
राज पुत्र को दीनो सार, वन में जाय योग शुभ धार ॥२९॥
तप कर उपजो केवल ज्ञान, वसु विधि हनि पायो निर्वाण।
अब वे पुत्र राज को करें, पुण्य का फल पावे ते धरें ॥३०॥
चारों बांधव चतुर सुजान, अहि निशि धर्म तनो फल मान।
एक समय विरक्त सो भयो, आतम कार्य चिन्तवन ठयो ॥३१॥
चारों बान्धव दिक्षा लई, वन में जाय तपस्या जई।
निज मनमें चिद्रूप अराधि, शुकल ध्यान को पायो साधि ॥३२॥
सर्व विमल केवल ऊपनो, सुख अनन्त तब ही सो ठनो।
करो महोत्सव देव कुंवार, जय जय शब्द भयो तिहिं वार ॥३३॥
शेष कर्म निर्वल तिन करे, पहुँचे मुक्तिपुरी मे भरे।
अगम अगोचर भव जल पार, दशलक्षण व्रत के फल सार ॥३४॥

वीर जिनेश्वर कही सुजान, शीतल जिनके बाढे मान।
गौतम गणधर भाषी सार, सुनि श्रेणिक आये दरबार ॥३५॥
जो यह व्रत नर नारी करे, ताके गृह सम्पति अनुसरे।
भट्टारक श्री भूषण वीर, तिनके चेला गुण गम्भीर ॥३६॥
ब्रह्मज्ञान सागर सुविधार, कही कथा दशलक्षण सार।
मन वचतन व्रत पाले जोई, मुक्ति रमासुख भोगे सोई ॥३७॥
॥ सम्पूर्ण ॥

आकाश पंचमी व्रत कथा

सौराष्ट्र देश में तिलकपुर नाम का एक विशाल नगर था। वहाँ महीपाल नाम का राजा और विचक्षणा नाम की रानी थी। उसी नगर मे भद्रशाह् नाम का एक व्यापारी रहता था। उसकी स्त्री नन्दा थी, लड़की का नाम विशाला था, कन्या सुन्दरी होते हुए भी मुँह् पर श्वेत कुष्ट होने से कुरूप हो गई। माता-पिता चिन्तित थे, किन्तु उपाय ही क्या था, तथापि धर्माचारण से कुछ कम हो रहा था।

एक दिन एक वैद्य आया और उसने सिद्धचक्र की आराधना करके औषधि दी। रोग दूर हो गया। पिता ने उसी वैद्य से उसका विवाह् कर दिया। पश्चात् पिंगल वैद्य स्त्री को साथ लेकर देशाटन करता हुआ चितौड़गढ की ओर गया। वहां पर लोगों ने उसे मारकर सब धन लूट लिया। विशाला विधवा अनाथ होकर चली और भटकती हुई जिनालय में पहुंची। वन्दना करके गुरु से अपनी सब करुण कहानी उसने सुनाई। अनन्तर गुरु से अपना कल्याण मार्ग बताने को कहा। तब मुनिराज ने कहा—बेटी सुनोः—यह जीव सदा अपने पूर्वकृत कर्मों का फल भोगा करता है। तू पूर्व जन्म में वेश्या थी

और गाने मे भी निपुण थी। एक समय सोमदत्त नामक मुनि-राज वहां आये। सभी उसके पास वन्दना करने के लिये गये। उनमें कुछ विधर्मी भी थे जो उनसे वाद विवाद करने लगे, यहां तक कि धर्मभ्रष्ट करने के लिये तुझे उनके पास भेजा। तू भी माया जाल फैलाने से वाज न आई। अन्त में सब को हार खानी पडी। वे जरा भी विचलित न हुए। उसी के परि-णामस्वरूप तेरी देह मे कुष्ट है। अब यदि तू धर्माचरण करेगी तो इस पाप से शीघ्र मुक्त हो सकेगी। २५ मूल दोषों का त्याग कर तब निर्मल सम्यग्दर्शन हो सकेगा। अहिंसा आदि व्रतों के पालन के साथ आकाश पंचमी व्रत का पालन कर।

यह व्रत भादों सुदी पंचमी को किया जाता है। चार प्रकार का आहार त्याग कर उपवास धारण कर जिनालय में भगवान् की पूजा करे। रात्रि में खुले स्थान जागरण करके भजन करे। २४ तीर्थंकरों की प्रतिमा स्थापना करे। वर्षा के कारण अनेक उपसर्ग या विघ्न आने पर भी स्थापना को न छोड़े। तीनों समय महामन्त्र नवकार के १०८ जप करे। इस प्रकार पांच वर्ष तक करके अन्त में उद्यापन करे।

छत्र चमर आदि मन्दिर मे भेंट करे। इस प्रकार विशाला ने श्रद्धा पूर्वक आकाश पंचमी व्रत सम्पादन किया। अनन्तर सात सागर की आयु पूर्ण कर उज्जैन नगर मे प्रियगु सुन्दर नामक राजा के यहां तारामती नामक एक रानी हुई और सदानन्द नामक उसका पुत्र हुआ। राज्य सुख भी किया। धर्मोपदेश सुनकर शुक्ल ध्यान के बल से मोक्ष पद प्राप्त किया। इसलिये जो इस व्रत का पालन करेंगे वे अवश्य ही मोक्ष पद के अनन्त सुखों को प्राप्त करेंगे।

॥ श्री आकाश पंचमी व्रत कथा भाषा सम्पूर्णम् ॥

पुष्पांजलि व्रत कथा

दोहा—वीर देव को प्रणमि करि, अर्चा करों त्रिकाल।
पुष्पांजलि व्रत की कथा, सुनो भव्य अघ टाल ॥१॥

चौपाई

पर्वत विपुलाचल पर आय। समोशरण जिनवर का पाय॥
तिहं सुन राजा श्रेणिक राय। वन्दन चले प्रियायुत भाय॥२॥
वंदन कर पूछत नृप तबै। हे प्रभु पुष्पांजलि व्रत अबै॥
मोसों कहो, करों चित लाय। कोनैं कियो कहा फल पाय॥३॥
बोले गौतम वचन रसाल। जम्बूद्वीप मध्य सुविशाल॥
सीता नदि दक्षिण दिशि सार। मंगलावती सुदेश मँझार॥४॥
दोहा—रतन संचयपुर तहां, वज्रसेन नृप राय।
जयवन्ती वनिता लसै, पुत्र विना ही थाय॥५॥

चौपाई

पुत्र चाह जिन मदिर गई। ज्ञानोदधि मुनि वंदित भई॥
हे मुनिनाथ कहो समझाय। मेरे पुत्र होय कै नाय॥६॥
दोहा—मुनि बोले हे बालकी. पुत्र होय शुभ सार।
भूमी छह खंड साधि है, मुक्ति तनों भरतार॥७॥
सुनकर मुनि के वचन तब, उपज्यो हर्ष अपार।
क्रमसों पूरे मास नव, पुत्र भयो शुभ सार॥८॥
यौवन वयस सो पाय कर, क्रीड़ा मंडप सार।
तहां व्योमसों आइयो, खग भूपर तिस वार॥९॥
रत्नशेखर को देखकर, बहुत प्रीति उर माहिं।
मेघवाहन ने पांचसौ, विद्या दीनी ताहिं॥१०॥

चौपाई—

दोनों मित्र परस्पर प्रीति। गये मेरु वन्दन तज भीति॥
सिद्धकूट चैत्यालय वंदि। आये सर्व जन मन आनन्दि॥११॥

ताकी सखी जनाई सार। वेग स्वयंवर करो तैयार।
भूरि भूप आये तत्काल। माल रत्नशेखर गल डाल ॥१२॥
धूमकेतु विद्याधर देख। क्रोध कियो मन मांहि विशेख॥
कन्या काज दुष्टता धरी। विद्या वल वहु माया करी ॥१३॥
युद्ध रत्नशेखर सों करयो। वहुत परस्पर विद्याधरो॥
जीत रत्नशेखर तिस वार। पाणिग्रहण कियो व्यवहार ॥१४॥
मदनमंजूषा रानी संग। आयो अपने गेह असंग॥
वज्रसेन को कर नमस्कार। मात तात मन सुक्ख अपार ॥१५॥
एक दिना मंदिर-गिर योग। पहुँचे मित्र सहित सव लोग॥
चारण मुनि वंदे तिहि वार। सुन्यो धर्म चित भयो उदार ॥१६॥
हे मुनि पूर्व जन्म सम्बन्ध। तीनों के तुम कहो निवन्ध॥
तव मुनि कहैं सुनो चित धार। एक मृणाल नगर सुखकार ॥१७॥
नृप मंत्री इक तहँ श्रुत कीर्ति। वन्धुमती वनिता अति प्रीति॥
एक दिना वन क्रीड़ा गयो। नारी संग रमत सो भयो ॥१८॥
पापी सर्प सो भक्षण करी। मंत्री मृतक लखी निज नारी॥
भयो विरक्त जिनालय जाय। दीक्षा लीनी मन हर्षाय ॥१९॥
यथाशक्ति तप कुछ दिन करयो। पीछे भ्रष्ट भयो तप टरयो॥
गृह आरम्भ करन चित ठन्यो। तव पुत्री मुख ऐसे भन्यो ॥२०॥
तात जु मेरु चढ़े किहिं काज। फिर भवसिंधु पड़े तज लाज॥
यों सुन प्रभावती वच सार। मंत्री कोप कियो अधिकार ॥२१॥
तव विद्या को आज्ञा करी। पुत्री को ले वन में धरी॥
विद्या जब वन में ले गई। प्रभावती मन चिंता भई ॥२२॥
अरहत भक्ति चित्त में धरी। तव विद्या फिर आई खरी॥
हे पुत्री तेरा चित जहां। वेग बोल पहुंचाऊं तहां ॥२३॥
पुत्री कही कैलाश के भाव। जिन दर्शन को अधिकहिं चाव॥
पूजा करके वैठी वहां। पद्मावति सो आई तहां ॥२४॥

इतने मध्यम देव आइयो। प्रभावती ने प्रश्न जु कियो ॥
हे देवी कहिये किस काज। आये देवी देव जु आज ॥२५॥
पद्मावती बोली वच सार। पुष्पांजलि व्रत है सु अवार ॥
भादों मास शुक्ल पंचमी। पंच दिवस आरम्भ न अमी ॥२६॥
प्रोपध यथाशक्ति व्यवहार। पूजौ जिन चौवीसी सार ॥
नाना विधि के पुष्प जु लाय। करैं एक माला जु बनाय ॥२७॥
तीन काल वह माला देव। बहुत भक्ति सों विनय करेव ॥
जपै जाप शुभ मन्त्र विचार। या विधि पंच वर्ष अवधार ॥२८॥
उद्यापन कीजै पति सार। चार प्रकार दान अधिकार ॥
उद्यापन की शक्ति न होय। तो दूनो व्रत कीजैं लोय ॥२९॥
यह सुन प्रभावती व्रत लियो। पद्मावती कृपा कर दियो ॥
स्वर्ग मुक्ति फल का दातार। है यह पुष्पांजलि व्रत सार ॥३०॥

दोहा—पद्मावति उपदेश सों, लीनों व्रत शुभ सार।
पृथ्वी पर सु प्रकाशिके, कियो भक्ति चित धार ॥३१॥
तप विद्या श्रुतकीर्ति ने, पाई अति जु प्रचण्ड।
प्रभावती व्रत खण्डने, आई सो बलवंड ॥३२॥

चौपाई

वासर तीन व्यतीते जब। पद्मावति पुनि आई तबै ॥
विद्या सब भागी तत्काल। कियो संन्यास मरण तिस बाल ॥३३॥
कल्प सोलवें मुख्य सु जान। देव भयो सो पुण्य प्रमान ॥
तहां देव ने कियो विचार। मेरा तात भ्रष्ट आचार ॥३४॥
मैं संबोधों वाको अबै। उत्तमगति वह पावै तबै ॥
यही विचार देव आइयो। मरण संन्यास तात को कियो ॥३५॥
वाही स्वर्ग भयो सो देव। पुण्य प्रभाव लियो फल एव ॥
बन्धुमती माता को जीव। उपज्यो ताही स्वर्ग अतीव ॥३६॥

दोहा—प्रभावती का जीव तू, रत्नशेखर भयो आय।
मताको जो जीव थों मदनमंजूषा थाय ॥३७॥

चौपाई

श्रुतिकीर्तिको जीव जु तहां। मंत्री मेघवाहन है यहां॥
ये तीनों के सुन पर्याय। भई सु चिंता अंग न माय ॥३८॥
सुन व्रतफल अरु गुरुकी वानि। भयो सुचित व्रत लीनों जानि॥
अपने थान बहुरि आइयो। चक्रवर्ति पद भोग सु कियो ॥३९॥
समय पाय वैरागी भयो। राजभार सब सुतको दियो॥
त्रिगुप्ति मुनिके चरणों पास। दीक्षा लीनी परम हुलास ॥४०॥
रत्नशेखर दिक्षा ली जबै। भयो मेघवाहन मुनि तबै॥
भवि जीवोंको अति सुखकार। केवल ज्ञान उपायो सार ॥४१॥
घातिकर्म निर्मूल सु करै। पाछै मुक्तिपुरी अनुसरै॥
इह विध व्रत जो पावै कोइ। अजर अमर पद पावै सोइ ॥४२॥

❀ इति पुष्पांजलि व्रत कथा सम्पूर्ण ❀

मुक्तावली व्रत कथा

दोहा—ऋषभनाथ के पद नमों, भविसरोजरवि जान।
मुक्तावलि व्रतकी कथा, कहूँ सुनो धरि ध्यान ॥ १ ॥

चौपाई

मगधदेश देशन परधान। तामैं राजगृही शुभ थान॥
राज्य करैं तहँ श्रेणिक राय। धर्मवन्त सबको सुखदाय ॥ २ ॥
ता गृह नारि चेलना सती। धर्मशील पूरण गुणवती॥
इक दिन समोशरण महावीर। आयो विपुलाचल पर वीर। ३ ॥
सुन नृप अति आनन्दित भयो। कुटुम्ब सहित वन्दन को गयो॥
पूजा कर बैठ्यो सुख पाय। हाथ जोड़कर अर्ज कराय ॥ ४ ॥
हे प्रभु मुक्तावलि-व्रत कहो। यह कर कोनै क्या फल लयो॥
तब गौतम बोले हर्षाय। सुनो कथा मुक्तावली राय ॥ ५ ॥

याही जंबूद्वीप मझार । भरतक्षेत्र दक्षिण दिशि सार ॥
अंग देश सोहै रमणीक । नगर बसै चपापुर ठीक ॥ ६ ॥
नगर मध्य इक ब्राह्मण वसै । नाम सोमशर्मा तसु लसैं ॥
ता गृह एक सुता जो भई । यौवन मद कर पूरण भई ॥ ७ ॥
इक दिन देखे श्री गुरु जवैं । नग्न गात लखि निंदी तवै ॥
अति खोटे दुर्वचन कहाय । वहुत हि ग्लानि चित्त में लाय ॥ ८ ॥
ता करि महा पाप बांधियो । आयु वितीते मरणजु कियो ॥
नरक जाय नाना दु.ख सहे । छेदन भेदन जाय न कहे ॥ ६ ॥
नरक आयु पूरी कर सोय । भव भ्रमि द्विज गृह पुत्री होय ॥
निर्नामिका पड्यो तिहँ नाम । अति दुर्गंधा देह निकाम ॥ १० ॥
कोइ ढिग आवै नहिं तहां । क्रमकर वड़ी भई सो वहां ॥
अन्न पान कर दुःखित महा । झूठन भखै कष्ट अति लहा ॥ ११ ॥
एक दिवस देखे मुनिराय । कर परनाम विनय सिर नाय ॥
कौन पाप मैं कीनो देव । मैं पायो अति दुःख अभेव ॥ १२ ॥
तव मुनिवर पूरव भव कहे । गुरु की निंदा सों दुःख लहे ॥
तव दुर्गन्धा जोड़े हाथ । ऐसो व्रत दीजो मोहि नाथ ॥ १३ ॥
जासों रोग शोक सव जाय । उत्तम भव पाऊँ गुरुराय ॥
तव श्री गुरु वोले हर्षाय । मुक्तावलि व्रत कर मन लाय ॥ १४ ॥
तासों सव पाप जर जाय । सुख सम्पत्ति मिलै अधिकाय ॥
तव दुर्गंधा कही विचार । कौन भांति कीजै व्रत सार ॥ १५ ॥
तव मुनिवर इम वचन कहाय । सुनो भेद व्रत को चित लाय ॥
भादों सुदि सप्तमि दिन होइ । ता दिन व्रत कीजै अवलोइ॥ १६ ॥
प्रात समय जिन मंदिर जाय । पूजा कथा सुनो मन लाय ॥
सव आरंभ तजो दिन मान । संयम शील सजो गुण जान ॥ १७ ॥
भोर भये जिन दर्शन करो । शुद्ध अशन कीजै तव खरो ॥
दूजो व्रत पूरव व्रत करो । आश्विन वदि छठि पाप जु हरो ॥१८॥

तीजे व्रत कीजे उरधार । आश्विन वदि तेरस सुखकार ॥
कर उपवास पाल गुण रसी । चौथी आश्विन सुदि ग्यारसी ॥१६॥
पचम वृत कीजे मन लाय । कार्तिक बदि बारांस सुखदाय ॥
फिर छठवां उपवास सुजान । कार्तिक शुक्ल तीज गुणखान ॥२०॥
सप्तमव्रत जिनवर ने कह्यो । कार्तिक सुदि ग्यारसि शुभ लह्यो॥
फेर कहो अष्टम व्रत लोय । मंगसिर वदि ग्यारस जब होय ॥२१॥
नवमों वृत मंगसिर सुदि तीज । ये वृत धर्मवृक्ष के वीज ॥
या विध कर नौ वर्ष प्रमान । मनवचकाय शुद्धता ठान ॥ २२ ॥
जब व्रत पूरण होय निदान । उद्यापन कीजै गुणवान ॥
श्री जिनवर अभिषेक कराय । करो मांडनो जिनगृह जाय ॥ २३ ॥
अष्ट प्रकारी पूजा करो । जन्म जन्म के पातक हरो ॥
यथाशक्ति उपकरण बनाय । श्रीजिनधाम चढ़ावो जाय ॥ २४ ॥
उद्यापन की शक्ति न होय । तो दूने व्रत कीजे सोय ॥
सब विधि सुन दुर्गंधा बाल । मनवचतन व्रत लीनों हाल ॥ २५ ॥
गुरु भाषित तिन व्रत यह कियो । पूरब भव अघ पानी दियो ॥
ताफल नारि लिंग छेदियो । प्रथमहिं स्वर्ग देव सो भयो ॥ २६ ॥
तहां आयु पूरण कर सोय । चलत भयो मथुरा को लोय ॥
श्रीधर राजा राज करंत । ताके सुत उपज्यो गुणवंत ॥ २७ ॥
नाम पद्मरथ पंडित भयो । एक दिवस वन क्रीड़ा गयो ॥
गुफा मध्य मुनिवर को देख । वन्दन कर सुन धर्म विशेष ॥ २८ ॥
तहां पूछै मुनिवर सों सोय । तुमसों अधिक प्रभा प्रभु कोय ॥
तब मुनिवर बोले सुन बाल । वासुपूज्य जिन दीप्ति विशाल ॥२६॥
चंपापुर राजैं जिनराज । तेज पुञ्ज प्रभु धर्म जहाज ॥
यह सुन धर्म विषै चित दयों । समोशरण जिन वन्दन गयो ॥३०॥
नमस्कार कर दीक्षा लई । तपकर गणधर पदवी भई ॥
अष्ट कर्म इस विधिसों जार । पहुंच्यो शिवपुर सिद्ध मँझार ॥३१॥

लखो भव्य व्रतका जु प्रभाव। राज भोग भयो शिवपुर राय॥
जो नरनारि करे व्रत सार। सुर सुख लहि पावै भवपार॥३२॥

❀ इति ❀

श्री जिन गुण सम्पत्ति व्रत कथा।

वन्दूँ आदि जिनेन्द्रपद, मन वच शीश नवाय।
जिनगुण सम्पति व्रतकथा, कहूँ भव्य सुखदाय॥

धातकी खण्ड द्वीप के पूर्व मेरु सम्बन्धी अपर विदेह क्षेत्र में गांधिल देश और पाटलीपुर नाम का नगर है। वहां नागदत्त नाम का एक सेठ और उसकी सुमति नाम की एक सेठानी रहती थी सो निर्धन होने के कारण अत्यन्त पीड़ित-चित्त रहते और वन से लकड़ी का भारा लाकर वेचते थे। इस प्रकार उदर-पूर्ति करते थे। एक दिन वह सुमति सेठानी भूख-प्यास की वेदना से व्याकुल होकर एक वृक्ष के नीचे थक कर बैठी थी—

कि इतने ही में क्या देखती है कि वहुत से नरनारी अष्ट प्रकार के पूजन के द्रव्य लिये हुए वड़े उत्साह से हर्ष सहित कहीं जा रहे हैं' तव सुमति ने आश्चर्य से उन आगन्तुकों से पूछा—क्यों! भाई आप लोग कहां जा रहे हैं और काहे का उत्सव है? तव उत्तर मिला कि अम्वर तिलक पर्वत पर पिहताश्रव नाम के केवली भगवान पधारे हैं। हम लोग सव उन्हीं की वन्दना के लिये जा रहे हैं और यह अष्ट प्रकार का द्रव्य पूजार्थ लिये जाते हैं। सुमति सेठानी यह शुभ समाचार सुन कर सहर्ष सव लोगों के साथ ही साथ प्रभुकी वन्दना के निमित्त चल दी।

इस प्रकार जव सव लोग पिहताश्रव स्वामी के निकट पहुंचे तो मन वचन काय से भक्ति पूर्वक भगवान की वन्दनापूजा की, और फिर एकाग्र चित्त होकर धर्मोपदेश सुनने के लिये बैठ गये।

स्वामी ने देवपूजा, गुरुसेवा, स्वाध्याय, संयम, तप और दान इन गृहस्थ के षट् कर्मों का उपदेश किया। पश्चात् अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य (स्वदारसन्तोष) और परिग्रह इन पंचाणुव्रतों तथा इनके रक्षक ४ शिक्षाव्रत और तीन गुणव्रत इन सात शीलों का, ऐसे बारह व्रतों का उपदेश किया और सब से प्रथम कर्त्तव्य सम्यग्दर्शन का स्वरूप समझाया।

इस प्रकार उपदेश सुनकर नरनारी अपने २ स्थान को पीछे लौटे। तब सुमति सेठानी जो अत्यन्त दरिद्रता से पीड़ित थी, अवसर पाकर श्री भगवान् से अपने दुःख की वार्ता कहने लगी– हे स्वामी ! हे दीनबन्धु, दयासागर भगवान् ! मैं अबला दरिद्रता से पीड़ित होकर नितान्त व्याकुल हुई कष्ट पा रही हूँ। कौन कारण से संपति (लक्ष्मी) मुझ से दूर रहती है और वह कैसे मुझे मिले, कि जिससे मेरा दुःख दूर होकर मेरी प्रवृत्ति भी दान पूजादि रूप हो। किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि "भूखे पेट भक्ति नहिं होय, धर्माधर्म न सूझे कोय।" इसी कहावत के अनुसार जब सब लोग धर्मोपदेश सुन रहे थे, तब वह दरिद्रा सुमति सेठानी अपने दारिद्र्य रूपी तत्त्व के विचार में ही निमग्न थी, जो कि अवसर मिलते ही झट से कह सुनाया।

स्वामी ने जिनकी दृष्टि में राजा और रंक समान हैं, उस सेठानी के चित्त को शीतल और प्रसन्न करने वाले शब्दों में इस प्रकार समझाया—

ऐ बेटी सुमति ! सुन ! पलासकूट नामक नगर में दिविलह नामक ग्रामपति रहता था। उसकी भार्या सुमती और पुत्री धनश्री रूप यौवनसंपन्ना थी। एक समय धनश्री पांच सात सखियों को लेकर वनक्रीड़ा के लिये नगर के उद्यान में गई, जहां पर एक वृक्ष के नीचे समाधि गुप्त नाम के मुनिराज ध्यान कर रहे थे।

सो यह मदोन्मत्त धनश्री मुनिराज को देखकर निन्दायुक्त वचन कहने लगी और घृणा कर श्री मुनिराज के ऊपर कुत्ते छोड़ दिये। इससे मुनिराज को बड़ा उपसर्ग हुआ, परंतु वे धीरवीर जिनगुरु अपने ध्यानसे किंचिन्मात्र भी च्युत न हुए।

परन्तु इस महापाप के कारण यह धनश्री मरकर सिंहनी हुई और सिंहनी मरकर तू धनहीन दरिद्रा नारी उत्पन्न हुई है। सो जो कोई मूढ़ नर नारी श्री गुरु को उपसर्ग करते हैं, वे ऐसी ही तथा इससे भी नीच गति को प्राप्त होते हैं।

सुमति सेठानी अपने पूर्व भवांतर सुनकर बहुत दुःखी हुई और पश्चाताप करके रोने लगी। पश्चात् कुछ धैर्य धरकर हाथ जोड़ के पूछने लगी—हे स्वामी! मेरा यह महापाप किस प्रकार छूटेगा।

तब भगवान् ने कहा कि तू सम्यग्दर्शन पूर्वक जिनगुण-सम्पत्ति व्रत पालन करे तो तेरा दुःख दूर होकर मनवांछित कार्य सिद्ध होगा।

इस व्रत की विधि इस प्रकार है कि प्रथम ही सोलहकारण भावनाएं जो तीर्थंकर प्रकृति के आश्रव का कारण हैं, उनके १६, पञ्च परमेष्ठी के पांच, अष्ट प्रातिहार्य के ८ और ३४ अतिशयों के ३४ इस प्रकार कुल ६३ उपवास या प्रोषध करें, और इन उपवास के दिनों में समस्त गृहारम्भ को त्याग कर श्री जिनेन्द्र भगवान् का अभिषेक और पूजन विधान करे। दिन में तीन बार सामायिक या स्वाध्याय करे और उद्यापन की शक्ति न होवे तो दूना व्रत करे। उद्यापन की विधि निम्न प्रकार है:— आम, जाम, केला नारंगी, बिजौरा, श्रीफल अखरोट, खारक, बादाम, द्राक्ष इत्यादि प्रत्येक प्रकार के ६३ त्रेसठ फल और भांति भांति के उत्तम पकवानों सहित अष्ट द्रव्य से भगवान की महा-

भिषेक पूर्वक पूजन करे और जिनालय में चन्दोवा, चंवर, छत्र, झालर, घण्टादि उपकरण भेट करे तथा त्रेसठ ग्रंथ लिखाकर श्रावक श्राविकाओं में ज्ञानावरण कर्म के क्षय होने के लिये बांटे व जिनालय के सरस्वती भंडारों में ग्रन्थ पधरावे, खूब उत्सव करे, अतिथियों को भोजन देवे व दीन दु:खी का यथासंभव दुख दूर करे इत्यादि।

सुमति सेठानी इस प्रकार व्रत की विधि सुन कर घर आई और श्रद्धा सहित व्रत पालन करके शक्ति अनुसार उद्यापन भी किया, सो आयु के अन्त में संन्यास मरण करके दूसर स्वर्ग में ललितांग देवकी पटरानी देवी हुई। पुण्य के प्रभाव से वह स्वयं प्रभादेवी नाना प्रकार के सुखों को भोगती हुई पश्चात् आयु पूर्ण कर वहां से चयकर इसी जम्बू द्वीप के पूर्व विदेह सम्बन्धी पुष्कलावती देश की पुण्डरीकनी नगरी में यज्ञदत्त चक्रवर्ति के लक्ष्मीपती नाम की रानी के गर्भ से श्रीमती नाम की पुत्री हुई, सो वज्रजंघ राजा के साथ ब्याही गई। एक दिन ये दम्पति वनक्रीड़ा को गये थे, सो वहां सर्पसरोवर के तट पर आये हुये चारण मुनि को आहारदान दिया और मुनिदान के प्रभाव से ये दम्पति भोगभूमि में उत्पन्न हुए। फिर वहां से चयकर श्रीमती के जीवने जम्बूद्वीप में अवतार लेकर आर्यिका के व्रत धारण किये और संन्यास पूर्वक मरण कर स्त्रीलिंग छेद दूसरे स्वर्ग में देव हुआ। फिर वहां से चयकर जम्बूद्वीप के पूर्व विदेह वत्सकावती देश की सुसीमा नगरी में सुबुधि नाम राजा की मनोरमा रानी के केशव नाम का पुत्र हुआ, सो उसने बहुत काल तक अपने पिता द्वारा प्रदत्त राज्यसुख न्याय नीति पूर्वक भोगे। पश्चात् कारण पाय वैराग्य को प्राप्त हुआ, और सीमन्धर स्वामी के निकट जिन दिक्षा धारण करके दुद्धर तपश्चरण किया। सो

तप के प्रभाव से संन्यास मरण कर सोलहवें स्वर्ग मे देव हुआ।

वहां से बावीस सागर की आयु सुख से पूर्ण करके चया सो जम्बूद्वीप के विदेह क्षेत्र में पुष्कलावती देश की पुण्डरीकनी नगरी मे कुवेरदत्त सेठ की अनन्तमती सेठाती के धनदेव नाम का पुत्र (चक्रवर्ती का भंडारी) हुआ। एक दिन वह धनदेव चक्रवर्ती के साथ मुनिराज की वंदना को गया, सो स्वामी का उपदेश सुन कर वैराग्य को प्राप्त हुआ और उसने जिनदीक्षा धारण की और तप करके संन्यास मरण कर सर्वार्थसिद्धि में अहमिन्द्र हुआ।

फिर वहां से चयकर भरतक्षेत्र के कुरुजांगल देश की हस्तिनागपुर नगरी मे श्रेयांस नाम का राजा हुआ, सो कितनेक काल राज्यसुख भोगे। पश्चात् श्री ऋषभदेव भगवान् को आहारदान दिया, जिसके कारण दानियों में प्रथम दानवीर कहलाया, जिसका कथा आज तक प्रख्यात है और लोग उस दान के दिन (वैशाख सदी ३) को अक्षय तृतीया या आखातीज कहते और उत्सव मनाते हैं क्योंकि सबसे प्रथम दान की प्रथा इन्हीं के द्वारा प्रचलित हुई है।

पश्चात वे प्रसिद्ध दानी राजा श्रेयांस भगवान् ऋषभदेव के मुख से धर्मोपदेश सुन कर जिन दिक्षा लेकर तप- करने लगे और शुक्ल ध्यान के प्रभाव से केवल ज्ञान को प्राप्त किया। इस प्रकार मति सुनाम को दरिद्रा सेठानी ने जिनगुण सम्पत्ति व्रत सम्यग्दर्शन सहित पालन कर अनुक्रम से मोक्षपद प्राप्त किया तो और भव्य जीव यदि पाले तो क्यों नहीं उत्तम फल पावेंगे? अवश्य पावेंगे।

जिनगुण सम्पत्ति व्रत करो, सुमति वणिक नर नार।
नर सुरके सुख भोगकर, फेर हुई भवपार॥

॥ इति ॥

श्रावक व्रत विधान

१—श्री अष्टाह्निका (अठाई)—कार्तिक शुक्ला ८ से १५ तक, फाल्गुण शुक्ला ८ से १५ तक, आषाढ़ शुक्ला ८ से १५ तक। उत्कृष्ट ८ साल, मध्यम ५ साल, जघन्य ३ साल।

२—श्री षोड़शकारण:—माघ कृष्णा १ से फाल्गुण कृष्णा १ तक, चैत्र कृष्णा १ से वैसाख कृष्णा १ तक, श्रावण शुक्ला १५ से आश्विन कृष्णा १ तक। उत्कृष्ट १६ वर्ष, मध्यम ५ वर्ष या २ वर्ष, जघन्य १ वर्ष।

३—श्री दशलक्षण (पर्यूषण)—माघ शुक्ला ५ से १४ तक, चैत्र शुक्ला ५ से १४ तक, भाद्रपद शुक्ला ५ से १४ तक। १० वर्ष तक।

४—श्री रत्नत्रय:—माघ शुक्ला १३ से १५ तक, चैत्र शुक्ला १३ से १५ तक, भाद्रपद शुक्ला १३ से १५ तक। १२ वर्ष तक।

५—श्री लब्धि विधान:—चैत्र सुदी १ से ३ तक, भाद्रपद शुक्ला १ से ३ तक, माघ शुक्ला १ से ३ तक। ५ वर्ष तक।

६—श्री आदित्यवार व्रत: (रविवार व्रत) अषाढ़ मास के प्रथम पक्ष में प्रथम रविवार से लेकर नव (९) रविवारों तक। यह व्रत ९ वर्ष तक करने चाहिये।

७—श्री बारह सौ चौतीस व्रत:—भादों शुक्ला १ से शुरू होते हैं। १२३४ उपवास या एकाशन करने चाहिये। यह व्रत १० वर्ष और साढ़े तीन मास में पूरे होते हैं।

८—श्री जिन गुण सम्पत्ति व्रत—इस व्रत में ६३ उपवास या प्रोषध होते हैं।

९—कवला चन्द्रायण (कवलाहार) व्रत:—यह उपवास १ महीने का होता है। प्रथम अमावस्या के दिन उपवास करना फिर

एकम के दिन १ ग्रास, दूजके दिन २ ग्रास इस प्रकार १४ ग्रास लेकर पूनम को उपवास करे फिर वदी एकम् को १४, दूज को १३ इस प्रकार घटाते जाकर वदी १४ को १ ग्रास आहार लेकर अमावस्या को उपवास करे।

१०–श्री कोकिला पंचमीः—आषाढ़ कृष्णा ५ से ५ मास तक प्रत्येक कृष्ण पक्ष की ५ को। इस प्रकार १ वर्ष की पांच २ पंचमी पांच वर्ष तक करे।

११–श्री पुष्पांजलिः—भाद्रपद शुक्ला ५ से ६ तक (५ वर्ष तक)

१२–श्री मौन एकादशी व्रतः—पौष कृष्णा १ (११ वर्ष तक)

१३–श्री जिनरात्रि व्रतः—फाल्गुण कृष्णा १४ (१४ वर्ष तक)

१४–श्री महावीर जन्म कल्याणक (वीर जयन्ती)—चैत्र शुक्ला १३

१५–श्री अक्षय तृतीयाः– वैशाख शुक्ला ३।

१६–श्री श्रुत पंचमीः—ज्येष्ठ शुक्ला ५।

१७–श्री गरुड पंचमीः—श्रावण शुक्ला ५ (५ वर्ष तक)

१८–श्री मोक्ष सप्तमी (मुकुट सप्तमीः):—श्रावण शुक्ला ७ (७ वर्ष तक)

१९–श्री अक्षय (फल) दशमीः–श्रावण शुक्ला १० (१० वर्ष तक)

२०–श्री श्रावण द्वादशीः—श्रावण शुक्ला १२ (१ वर्ष तक)

२१–श्री रक्षा बंधनः—श्रावण शुक्ला १५ (१५ वर्ष तक)

२२–श्री मेघमाला व्रतः—भादों शुक्ला १ से अश्विन शुक्ला १ तक (५ वर्ष तक)

२३–श्री रोट तीज व्रत (त्रिलोक तीज):—भाद्रपद शुक्ला ३। (३ वर्ष तक)

२४–श्री आकाश पंचमी व्रतः—भाद्रपद शुक्ला ५ (५ वर्ष तक)

२५–श्री चंदन षष्ठी व्रतः—भाद्रपद शुक्ला ६ (६ वर्ष तक)

२६-श्री शील सप्तमीव्रत:—(निर्दोष सप्तमीव्रत):-भाद्रपद शुक्ला ७ (७ वर्ष तक)
२७-श्री सुगंध दशमी:-भाद्रपद शुक्ला १० (१० वर्ष तक)
२८-श्री द्वादशी व्रत:-भाद्रपद शुक्ला १२ (१२ वर्ष तक)
२९-श्री अनन्त व्रत:-भाद्रपद शुक्ला १० से १४ तक (१४ वर्ष तक)
३०-श्री क्षमावणी व्रत:—असोज कृष्णा १
३ -श्री महावीर निर्वाणोत्सव (निर्वाण लाड्डू) कार्तिक कृष्णा १५ ।

व्रतों के जाप्य मंत्र

अष्टाह्निकाव्रत की जापें

समुच्चय—ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरसंज्ञाय नमः ।
आठ दिन की क्रम से आठ जापें ।

१ ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरसंज्ञाय नमः, २ ॐ ह्रीं अष्टमहाविभूति-संज्ञाय नमः, ३ ॐ ह्रीं त्रिलोकसागरसंज्ञाय नमः, ४ ॐ ह्रीं चतुर्मुखसंज्ञाय नमः, ५ ॐ ह्रीं पंचमहालक्षणसंज्ञाय नमः, ६ ॐ ह्रीं स्वर्गसोपानसंज्ञाय नमः, ७ ॐ ह्रीं सिद्धचक्रसंज्ञाय नमः ८ ॐ ह्रीं इन्द्रध्वजसंज्ञाय नमः ।

श्री षोडश कारण व्रत की जापें

समुच्च-ॐ ह्रीं श्रीषोडशकारणभावनाय नमः ।
पृथक् पृथक् दिन की जापें:—

१ ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धये नमः, २ ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नतायै नमः, ३ ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचाराय नमः, ४ ॐ ह्रीं श्रीअभीक्ष्णज्ञानोपयोगाय नमः, ५ ॐ ह्रीं श्री संवेगाय नमः,

६ ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्त्यागाय नमः, ७ ॐ ह्रीं श्री शक्तितस्तपसे नमः, ८ ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधये नमः, ९ ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यकरणाय नम, १० ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्त्यै नमः, ११ ॐ ह्रीं आचार्यभक्त्यै नमः १२ ॐ ह्रीं श्री वहु श्रुत भक्त्यै नम, १३ ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्त्यैं नमः, १४ ॐ ह्रीं श्री आवश्यकापरिहाणये नम., १५ ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाय नमः, १६ ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवत्सलत्वाय नमः।

श्री दशलक्षणव्रत की जापें

समुच्चयः—ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यधर्मांगाय नमः।

पृथक् पृथक् जापें:—

१ ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय नमः, २ ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय नमः, ३ ॐ ह्रीं श्री उत्तमार्जवधर्मांगाय नमः, ४ ॐ ह्रीं श्री उत्तमसत्यधर्मांगाय नमः, ५ ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्मांगाय नमः, ६ ॐ ह्रीं उत्तमसयमधर्मांगाय नमः, ७ ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपधर्मांगाय नम, ८ ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय नमः, ९ ॐ ह्रीं श्री उत्तमआकिंचन्यधर्मांगाय नमः, १० ॐ ह्रीं श्रीउत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय नमः।

श्री पंचमेरु व्रत की जापें

१ ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुजिनचैत्यालयाय नमः, २ ॐ ह्रीं श्री विजयमेरुजिनचैत्यालयाय नमः, ३ ह्रीं श्री अचलमेरुजिनचैत्यालयाय नमः, ४ ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुजिनचैत्यालयाय नम, ५ ॐ ह्रीं श्रीमंदिरमेरुजिनचैत्यालयाय नम.।

श्री रत्नत्रय व्रत की जापें

१ ॐ ह्रीं श्रीसम्यक्दर्शनप्राप्ताय नमः, २ ॐ ह्रीं श्री सम्यक् ज्ञानप्राप्ताय नम., ३ ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रप्राप्ताय नमः।

नव ग्रहों की जापें

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं श्री सूर्यग्रह अरिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥१॥ ७७०० जाप्य

ॐ ह्रीं क्रौं श्रीं क्लीं चन्द्रारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥ २ ॥ ११००० जाप्य

ॐ आं ह्रीं क्रौं श्री भौमारिष्ट निवारक पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥ ३ ॥ १०००० जाप्य

ॐ ह्रीं क्रौं आं श्री बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल अनन्त धर्म शान्ति कुन्थु अर नमि वर्द्धमान अष्ट जिनेन्द्रेभ्यो नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥ ४ ॥ ८००० जाप्य

ॐ क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गुरु अरिष्ट निवारक श्री ऋषभअजित संभव अभिनन्दन सुमति सुपार्श्व शीतल श्रेयांस अष्ट जिनेन्द्रेभ्यो नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥ ५ ॥ १९००० जाप्य

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं ह्रीं शुक्रग्रह अरिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥ ६ ॥ ११००० जाप्य

ॐ ह्रीं क्रौं श्री शनिग्रह अरिष्ट निवारक श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥ ७ ॥ २३००० जाप्य

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं ह्रूं राहु अरिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥ ८ ॥ १८००० जाप्य

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥ ९ ॥ ७००० जाप्य

श्री अनन्त चतुर्दशी मंत्र

ॐ ह्रीं अं ह् हंसी अनन्त केवली भगवान अनन्तदान-लाभ-भोगोपभोगवीर्याभिवृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

द्वादशी व्रत (दुधारस व्रत) की जापें

ॐ ह्रीं द्वीं ह्रों ह्रों ह्रौं ह्रंस अमृतवाह्नने नमः स्वाहा ।

पुष्पांजलि व्रत की जापें

समुच्च—ॐ ह्रीं पंच मेरु सम्बन्धि जिनालयेभ्यो नम ।

प्रत्येक दिन की जापें: १ ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुस्थजिनालयेभ्यो नमः २ ॐ ह्रीं विजयमेरुस्थजिनालयेभ्यो नमः । ३ ॐ ह्रीं अचल मेरुस्थजिनालयेभ्यो नम. । ४ ॐ ह्रीं मन्दरमेरुस्थजिनालयेभ्यो नमः । ५ ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुस्थजिनालयेभ्यो नमः ।

रविव्रत जाप्य मंत्र

ॐ नमः भगवते चिन्तामणिपार्श्वनाथसप्तफणमंडिताय ॐ ह्रीं श्रीधरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय मम ऋद्धि वृद्धि सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

(रविवार को पार्श्वनाथ भगवान का पूजन कर १०८ बार जाप करना चाहिए) ।

अध्याय पंचम

—:पासा केवली:—

अपने भविष्य की बात जानने की इच्छा प्रायः शिक्षित-अशिक्षित आदि सभी में देखी गई है। कोई हस्तरेखा से, तो कोई जन्म पत्री से और कई व्यक्ति तो बाजारों में पींजरे में चिड़िया लेकर बैठने वाले पेशेवर लोगों से ही अपना भविष्य-फल जानने की चेष्टा किया करते हैं। इस प्रकार मनुष्य किसी न किसी विधि से अपनी इच्छा पूर्ण किया करता है, और पैसे एवं शक्ति का अपव्यय करता रहता है। मनुष्यों की इसी भावना की पूर्ति के लिए केवलीपास या पासाकेवली की रचना की गई है। इसके

द्वारा श्रद्धावान् मनुष्य अपने भवितव्य की झांकी पा सकता है। परन्तु विधि पूर्वक क्रिया द्वारा ही कार्य सम्पन्न होता है। देखा गया है कि कई व्यक्ति रास्ते चलते, जूते पहने, खाते हुए, अशुद्ध हाथों से ही पुस्तक उठाई और शुभाशुभ देखने लगते हैं, ऐसा करना उचित नहीं।

पासा केवली से शुभाशुभ देखने के लिए मन में शान्ति एवं श्रद्धा होना आवश्यक है। प्रात काल स्नानादि क्रियाओं से स्वच्छ होकर स्वच्छ वस्त्र पहिन कर किसी पाटे, चौकी पर पुस्तक को रखकर, पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुँह करके पद्मासन या अर्द्ध पद्मासन से बैठे। उस समय सीधा स्वर चल रहा हो इसका भी ध्यान रखा जाय। फिर अपने मन में प्रश्न का विचार करे और श्री अरहंत प्रभु का ध्यान करते हुए पुस्तक में लिखे मंत्रों का उच्चारण कर तीनवार पासा डालना चाहिए। प्रत्येक वार जो वर्ण पासा के ऊपर की ओर आये उसे लिख लेना चाहिए। इस प्रकार तीन वार में तीन वर्ण आयेंगे उनका फल पुस्तक में देखकर विश्वास करना चाहिए, और उसी के अनुसार आचरण करना चाहिए।

हमारी इच्छा थी कि हम अरहंत पासा केवली को पद्य में ही दें, परन्तु साधारण लोग उससे पूरा लाभ नहीं उठा पाते। इसीलिए क्षमा प्रार्थी हैं। आशा है पाठक गण अशुद्धियों की सूचना देने की कृपा करेंगे जिससे आगामी संस्करण में शुद्ध किया जा सके।

"काशी निवासी कविवर वृन्दावन विरचित"

अरहंत पासा केवली

दोहा—श्रीमत वीर जिनेश पद, वन्दों शीस नवाय।
गुरु गौतम के चरण नमि, नमों शारदा माय॥

श्रेणिक नृप के पुण्यतें, भाषी गणधर देव।
जगत हेत अरहंत यह, नाम केवली सेव॥
चन्दन के पासा विषै, चारों ओर सुजान।
एक एक अक्षर लिखौ, श्री अरहंत विधान॥
तीन वार डारो तवै, करि वर मंत्र उचार।
जो अक्षर पासा कहैं, ताको करो विचार॥
तीन मंत्र हैं तासुके, सात सात ही वार।
थिर ह्वै पासा डालियो, करि के शुद्ध उच्चार॥
जानि शुभाशुभ तासुतैं, फल निज हृदय नियोग।
मन प्रसन्न ह्वै सुमरियो, प्रभु पद सेवहु जोग॥

* प्रथम मंत्र-ओं ह्रीं श्रीवाहुवलि लंब वाहु ओं क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षं क्षः उद्ध्र्वभुजा कुरु कुरु शुभाशुभं कथय कथय भूत-भविष्यत-वर्तमानं दर्शय दर्शय सत्यं ब्रूहि सत्यं ब्रूहि स्वाहा।

(प्रथम मंत्र सात वार जपना)

दूसरा मंत्र-ओं हः ओं सः ओं क्षः सत्यं वद सत्यं वद स्वाहा।

(दूसरा मंत्र भी सात वार जपकर पासा डालना)

तीसरा मंत्र-ओं ह्रीं श्रीं विश्वमालिनि, विश्व-प्रकशिनि अमोघ-वादिनि सत्यं ब्रूहि, सत्यं ब्रूहि एह्येहि विश्वमालिनि स्वाहा।

नोटः—मन एकत्र कर, विनय सहित अभिप्राय विचार कर श्री अरहंत भगवान के नाम के अक्षरों (अ, र, हं त,) का पासा तीन वार डालना चाहिए। जो जो अक्षर पडे, उनको मिलाकर उनका फल जाना चाहिए। जिन मार्ग में यह बड़ा निमित्त है। (वृन्दावन)

---

* यदि मंत्र के उच्चारण मे कठिनाई हो तो णमोकार मंत्र को बोलकर भी पासा डाला जा सकता है।

अथ अकारादि प्रथम प्रकरण

अ, अ, अ । यदि ये तीन अक्षर पडें, सुख और कल्याण मंगल हो, सम्मान बढे, लक्ष्मी की प्राप्ति हो, व्यापार में तथा विदेश में धन लाभ हो, युद्ध में जीत हो । राज दरबार में सम्मान मिले । सब संकट, रोग, शोक, दरिद्रता का नाश हो । सब प्रकार से कल्याण हो यह निः संदेह विश्वास करना चाहिए ।

अ, अ, र । इन तीनों का मध्यम फल होता है । मन का विचारा हुआ, पूर्व पाप के कारण बाधा पड़ने से शीघ्र सफल नहीं होगा । इस लिए मन वांछित फल प्राप्त करने के लिए अपने इष्टदेव श्री अरहंत वीतराग भगवान की आराधना करना चाहिए। इससे कुछ समय बाद इच्छित फल की प्राप्ति होगी ।

अ, अ, हं । इनका फल शुभ होता है । धन धान्य का समागम होगा । परदेश गमन से इच्छित फल की प्राप्ति होगी । भाई बन्धु से प्रेम भाव बढेगा । शत्रुओं का दमन होगा । सम्पूर्ण बाधाएं दूर होंगी । घर में पुण्य के प्रभाव से सब प्रकार का मंगल होगा । हे प्रश्न कर्त्ता ! तुम्हारा विचारा हुआ शुभ है। अतः शुभ फल की निश्चित प्राप्ति होगी ।

अ, अ, त । हे दयालु ! तेरा प्रश्न शुभ है । तेरे घर में पुत्र पौत्रादि का सुख होगा, हितैषी मित्रों से लाभ होगा । सब प्रकार के रोगादि से छुटकारा होगा । खोटे ग्रह दूर होंगे । परदेश में गये हुए भाई और मित्रों का शुभ मिलन होगा । कुल की बढवारी होगी, सज्जनों से मित्रता होगी । तेरे आगामी दिन सुख और सौभाग्य को देने वाले होंगे । तू वीतराग भगवान का सदा ध्यान किया कर ।

अ,र,अ। तेरा विचार श्रेष्ठ है, उत्तम फल का देने वाला है। प्रति दिन आनन्द की वृद्धि होगी। पाप के उदय से तेरा नष्ट हुआ धन फिर मिलेगा। राजा द्वारा सम्मान होगा। भाई बन्धुओं से मिलाप होगा। हर प्रकार से तेरी गृहस्थी सुखी होगी। अब तेरे सब पापों का अन्त हो गया है। इसलिए धर्म के प्रभाव से सुख समृद्धि का वास होगा। तू अपने कर्त्तव्य कर्म मे विश्वास पूर्वक लगा रहा।

अ, र, र। हे भाई। तेरा पुण्य बलवान है। तुझे धन का लाभ होगा, सब स्थानों में यश बढ़ेगा, जहां भी जायगा, सम्मान पायेगा और सब तेरे शुभ-चिन्तक हो जावेंगे। जल, अग्नि, मरी आदि उपद्रव तेरा कुछ भी बिगाड नहीं कर सकेंगे। शत्रु वश में होंगे, सब प्रकार के सुख की प्राप्ति होगी। यह सब तेरे धर्म का प्रभाव है। इसलिए तू धर्म का पालन मत छोडना। बस तेरा भविष्य सुखमय है।

अ, र, ह। ये तीनों वर्ण सौभाग्य, सम्पत्ति के सूचक हैं। तेरा जो मनोरथ है वह सरलता से फलित होगा। जो घर में थोडा सा क्लेश है, उसकी चिन्ता न कर। इसके लिए तू श्री महावीर प्रभुकी पूजा कर, तेरे सब विघ्न दूर होंगे। मन की चिन्ता दूर कर, मन को एकाग्र कर, तुझे सब सुखों की प्राप्ति होगी। श्री अरहंत का ध्यान कर, तुझको सब सिद्धियां प्राप्त होंगी।

अ, र, त। इन तीनों वर्णों के आने पर सब सुखों की प्राप्ति होती है। तुझे स्त्री, पुत्र और पश्चात् पौत्र का भी लाभ होगा। तेरे कुल की शोभा होगी। तुम जहां भी जाओगे, वहीं तुम्हारी कीर्ति बढ़ेगी। ससार तुम्हे प्यार करेगा। तुम्हारा प्रश्न शुभ है,

तुम्हारे मन में प्रभु का ध्यान होना चाहिए। देखो तुम्हारे ललाट पर तिल का चिह्न होना चाहिए।

अ, हं, अ। हे प्रश्न कर्त्ता! सुनो। पहले तुम्हें कुछ कष्ट होगा, परन्तु शीघ्र ही वह दुःख दूर होगा, और दिन प्रति दिन धन की बढवारी होगी, सज्जनों की संगति होगी। हे विचारक! तुमने जो सोचा है सो सब सफल होगा। तुम महावीर भगवान के नाम की तीनों (प्रातः मध्याह्न, सायकाल) समय एक एक माला फेरा करो।

अ, हं, र। जब ये तीनों अक्षर आवें तब धन-लाभ, यश-लाभ पृथ्वीकालाभ हो। राजा, भाई आदि आदर करें। बिछुडे हुए भाई इष्टजनों, धनादि का लाभ हो। हे भाई! तुम धैर्य धारण करो। तुम्हें व्यापार में परदेश में सब प्रकार सुख लाभ होगा। तुम मनका संशय दूर करो, और सर्व विघ्न विनाशक श्री पार्श्व प्रभुका स्मरण करो।

अ, हं, हं। ये तीनों अक्षर मिलने पर इष्टसिद्धि कठिन होती है। हे भाई! तेरा कार्य मुश्किल से ही सिद्ध होगा। तेरा वर्त्तमान धन भी नष्ट होता नजर आता है। क्लेश बढ़ेगा। व्यापार में हानि होगी। परदेश मे भी सिद्धि नहीं। इसलिए हे सज्जन! तू भगवान की पूजा भक्ति कर। जपदान होम कर। ४१ दिन तक स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहन कर प्रातः सायंकाल श्री पार्श्वनाथ भगवान के नाम की ५० हजार जाप दे। इसके बाद तेरा पुण्य उदय आवेगा, और इच्छित फल की प्राप्ति होगी।

अ, हं, त।-इन अक्षरों का मिलाप सब प्रकार के कल्याण और आनन्द को देने वाला है। इसलिए हे सज्जन! तुझे आज्ञा कारी पुत्र और भाइयों का समागम होगा। तुझे तेरे उद्योग में

धन, धान्य और सम्पत्ति मिलेगी। युद्ध में तेरी विजय निश्चित है। अगर तू या तेरा सम्बन्धी बन्धन में होगा तो छुटकारा पावेगा। इसलिये हे बुद्धिमान तू संदेह छोड़। तेरा सब प्रकार कल्याण होगा।

अ, त, अ। ये वर्ण तेरे कल्याण मंगल के बताने वाले हैं। तुझे तेरे प्रयत्नों से लक्ष्मी की प्राप्ति होगी, सब विघ्न बाधाओं को दूर करता हुआ, पुत्र पौत्रादि के सुखको प्राप्त करेगा, और इच्छित मणि मुक्तादि का लाभ होगा। आज से आठवें दिन तेरा भाग्य और भी अधिक श्रेष्ठ फल को देने वाला होगा।

अ, त, र। हे सज्जन! तेरे शुभ दिन हैं। तुझे सब मंगल के समान मिलेंगे। तेरे घर पर आनन्द के बाजे बजेंगे। तुझे जो प्यारे बन्धुओं की चिन्ता सता रही है। यह दूर होगी। वे धन धान्य से भरे हुए हाथी घोड़ों के साथ सुख पूर्वक तेरे से आकर मिलेंगे। तू अपने हृदय की चिन्ता दूर कर। अब तेरे सुख के दिन हैं।

अ, त, हं। हे बन्धु! तेरा अशुभ का उदय है. कहीं लाभ दिखाई नहीं देता। अभी तो तेरा हाथ का धन और जाता दीखता है। तेरे शुभ चिन्तक भाई बन्धु स्त्री पुत्र, सम्पत्ति आदि का अनिष्ट ही दिखाई पडता है और चारों ओर शत्रु ही शत्रु भरे पड़े हैं। इसलिए इन विघ्नों को दूर करने के लिए तू ६१ दिन तक "ओं ह्रीं अ, सि, आ, उ, सा, सर्वविघ्न विनाशनाय नम. स्वाहा।" इस मन्त्र की नित्य शुद्ध होकर ११-११ मालाओं से जाप दे, तेरा विघ्न दूर होगा और घर में मंगलाचार होगा।

अ, त, त। हे भव्य जीव! तुझे धन लाभ होगा। सम्पत्ति बढ़ेगी, सुख का विस्तार होगा। सब इच्छाएँ पूर्ण होंगी। प्रिय बन्धु और मित्रों का मिलाप होगा, दिन दिन लाभ ही बढ़ेगा, तू

जिस तरफ भी ध्यान देगा सब तरफ सफलता ही मिलेगी । युद्ध में वाद विवाद में तेरी विजय होगी। तू सन्देह मत कर। तू अपना पुण्य उदय समझ कर धीरज से कार्य कर, सफलता तेरे चरणों में है।

अथ रकारादि द्वितीय प्रकरण

र, अ, अ ! इन अक्षरों के पढ़ने से धन, सम्पत्ति का लाभ और सज्जनों से मिलाप होता है। सोना, चांदी, वस्त्र, गहने, नाना प्रकार के रत्न आदि इच्छित पदार्थों की प्राप्ति अवश्य होगी। रात्रि के अन्त में हाथी, घोड़े या रथ में चढे हुए फूलों की माला पहने हुए देवताओं का विमान में बैठे हुए आना दिखाई देगा।

र, अ, र । हेपृच्छक ! तुझे इच्छित फल की प्राप्ति होगी। तुम्हें व्यापार और खेती में लाभ होगा। तुम से देश और उसके निवासियों को लाभ पहुँचेगा। तुम्हें परदेश में लाभ होगा। तुम्हारे घर में सुख रहेगा भयानक युद्ध में कुल देवी तुम्हारी रक्षा करेगी, और सब प्रकार सुख का विस्तार होगा।

र, अ, हं । हे भ्राता ! तुम्हारे विचारे कार्य में लाभ की आशा नहीं। तुम्हें दु.ख, धन का नाश, शारीरिक कष्ट होगा, तुम्हारे भाई बन्धुओं का वियोग होगा। विदेश में भी तुम्हें सफलता प्राप्त न होगी। इसलिए शान्ति से अपने स्थान पर रहते हुए ही श्री जिनेन्द्रदेव की सेवा पूजा भक्ति आदि करो। इसके लिए अगर २१ दिन तक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए एक बार भोजन कर स्नान आदि क्रियाओं से शुद्ध होकर ओं ह्रीं, अ, सि, आ, उ, सा नमः इस मंत्र का सवा लाख जाप करो तो तुम्हारे सब संकट दूर होकर सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

र, अ, त । हे सज्जन ! तुम्हारा अशुभ का उदय है । चोरों द्वारा धन का चुराना, नाव मे डूब जाना, आग लगना, रोग होना आदि से अशुभ होगा । तुम्हारा किया हुआ सब उल्टा होगा, इसे कर्मों का फल समझ कर तुम्हें शोक न करना चाहिए और शान्ति से भगवान का स्मरण करते हुए परोपकार की भावना से कार्य करो ! कुछ समय बाद सफलता मिलेगी ।

र, र, अ । हे भाई ! तुम्हारा मन बडा चञ्चल है, तुम स्थिर विचार के नहीं हो । तुम धन का लाभ चाहते हो, पर अशुभ के कारण मूल का भी नाश दिखाई देता है । तुझे राजा के दण्ड, चोरों से, अग्नि से सावधान रहना चाहिए । तेरा शरीर भी निरोग नहीं रहेगा । स्त्री, पुत्र कुटुम्ब से तेरा विछोह होगा । करीब ३ सरे वर्ष मे सब सङ्कट और दुःख दूर होगा, इन दिनों में तू सदा शुभ काम करना ।

र, र, र । हे पूछने वाले ! तेरा शुभ का योग है । तुझे मन-वांछित फल प्राप्त होगा । तुझे धन, दौलत, जमीन, मकान सब मिलेंगे । तुझे कुटुम्ब मे स्त्री, पुत्र, पुत्र-वधू आदि शुभ लक्षणों वाले आज्ञाकारी मिलेंगे । व्यापार में तुझे घर में, परदेश मे सर्वत्र बडा लाभ होगा । तेरे प्रत्येक कार्य में तुझे सफलता ही सफलता प्राप्त होगी ।

र, र, हं । दो रकार के साथ हं आने पर महा फल का लाभ होता है । आनन्द देने वाली सुख सम्पत्ति सरलता से ही प्राप्त होगी । घर में नित्य आनन्द का राज होगा । नित्य धन की प्राप्ति होगी । तुम्हें, जमीन, जायदाद, देश और नगरों पर भी अधिकार मिलेगा । तुम मन मे जो विचारोगे वही मिलेगा । राजा से तुम्हें

सब प्रकार का लाभ होगा। इस प्रकार तुम्हें घर में सदा सुख का निवास होगा।

र, र, त। तुमने अपने मनमें बडा बुरा सोचा है। तुमने पर स्त्री की इच्छा से अनेकों खोटे का काम किये हैं और इसी से तुम्हारे धन का नाश हुआ है, घर में कलह हुई है। तुमने राज दण्ड भी भोगा है। इस लिए अब इस मार्ग को छोड़कर ब्रह्मचर्य को धारण करो और शुभ कार्य करो। इसी से मनुष्य जन्म सफल होगा।

र, हं, अ। ये तीनों वर्ण शुभ के सूचक हैं। स्त्री पुत्र धन मान आदि की प्राप्ति होगी। संसार में यश बढेगा। धर्म के मार्ग में मन लगेगा। युद्ध में, विदेश में, व्यापार में सब जगह शीघ्र ही विजय होगी।

र, हं, र। हे भाई! तुमने बडा उल्टा मार्ग पकडा है। तुमने जो सोचा है उसे मन से निकाल दो। इसके करने से लाभ न होगा, बल्कि सब प्रकार कष्ट ही होगा। तुम्हारे दुश्मन बहुत हैं तुम्हें कहीं भी सुख न मिलेगा। इसलिये तू इस विचारे हुए कार्य को छोडदे, और संसार के सुख को व्यर्थ समझकर सच्चे सुखकी प्राप्ति के लिए वीतराग भगवान के मार्ग को ग्रहण कर।

र, हं, हं। हे प्रश्न कर्त्ता! तेरा अशुभ का उदय है। इस लिए जो भी तू करेगा उसका खोटा ही फल मिलेगा। तुम्हारे जो मित्र बने हुए हैं उन पर विश्वास मत करो सब तुम्हारे शत्रु हैं, तुम्हारे धन का नाश कराने पर तुले हुए हैं। तुम धन की इच्छा करते हो, वह इस समय नहीं मिलेगा। इसलिए तुम धर्म की आराधना करो। भगवान की भक्ति कर भगवती पद्मावती का जाप करो। उससे कुछ समय बाद सफलता मिलेगी।

र, हं, त। अहो पूछने वाले ! इसका क्या फल कहूँ। तेरा बडा शुभ का उदय है। तुझे विद्या की प्राप्ति, कवियों मे सम्मान, व्यवहार में निपुणता मिलेगी, स्त्री और पुत्र का लाभ होगा। व्यापार में धन प्राप्त होगा। भाई बन्धुओं और मित्रों से वस्त्र और आभूषणों के साथ मिलाप होगा। परिवार के सुख के लिए नित्य कुलदेवी की पूजा कर।

र, त, अ। हे पृच्छक ! तुम्हारे सौभाग्य के दिन हैं। तुम्हारे हृदय मे जो पुत्रादि के सुखकी लालसा है, धन सुख आनन्द दायक भोजन पान की इच्छा है वह सब पूर्ण होगी। तुम्हें मन्त्र, तन्त्र और औषधि से सर्वत्र सफलता प्राप्त होगी।

र, त, र। हे सज्जन। तुम शान्ति से सुनो। तुम्हारे उद्योग से पद पद पर सफलता मिलेगी। इसलिए तुम अपने कार्य में लगे रहो, तुम्हें लाभ होगा। श्री जिनराज की सेवा से तुम्हें स्त्री पृथ्वी, धन मिलेगा। राजा द्वारा सम्मान मिलेगा। हाथी, घोड़े आभूषणों की विना चाहे ही प्राप्ति होगी।

र, त, हं। हे भाई ! तुमने पहले बहुत कष्ट भोगे हैं, पर वे अब दूर होगये। तुम्हारे हृदय में जो धन, स्त्री पुत्र गहनों की चिन्ता है वह दूर होगी। शरीर के रोग, शोक और दुःखों का नाश होकर जिनधर्म के प्रभाव से तेरे हृदय के सब मनोरथ पूर्ण होंगे।

र, त, त। हे प्रश्नकर्त्ता ! तेरा प्रश्न अच्छा है। तेरे सब कार्य सफल होंगे। इच्छित धन सम्पत्ति का लाल होगा। तुम जो विचारोगे वह सरलता से सिद्ध होगा। यह सब धर्म का प्रभाव है, इसमें सन्देह मत करो। तुम जो कल्याण के लिए तप धारण करना चाहते हो, सो तुम्हें उसमें भी सफलता मिलेगी। इसलिए

तुम वीतराग भगवान के बताये हुए तप के मार्ग को ग्रहण करो जिससे सच्चे और स्थायी सुख की प्राप्ति हो।

अथ हंकारादि तृतीय प्रकरण।

हं, अ, अ। इन तीनों वर्णों का फल चिन्ता कारक है। कष्ट, चिन्ता, कार्य विनाश, लोक-निन्दा और युद्ध में पराजय, उद्योग में असफलता मिलती है। कार्य सिद्धि के लिए जो भी प्रयत्न करते हो उसी में असफलता मिलेगी। इसलिए इस समय मौन होकर कुछ समय धर्मध्यान करो। शुभ उदय आते ही सफलता मिलेगी।

हं, अ, र। यह बहुत लाभदायक पासा पड़ा है। तुम्हारे सभी मनोरथ सफल होंगे। स्त्री एवं धर्म की प्राप्ति होगी। भाइयों से सुख पहुँचेगा। हरेक कार्य में घर में विदेश में सर्वत्र लाभ ही लाभ होगा। तुम्हारे सब रोग शोक दूर होंगे। अच्छे दिनों में भी भगवान की आराधना भक्ति पूर्वक करते ही रहना। क्योंकि धर्म ही सदा सहायक होता है।

हं, अ, हं। हे भव्य तुम बहुत सरल एवं सीधे स्वभाव के हो। तुम मित्र और शत्रु को समान समझते हो। तुमने ऐसे लोगों के लिए अपना धन खर्च किया है। परन्तु यह कलिकाल है और तुम साधु स्वभाव वाले हो। चिन्ता मत करो, तुम्हारा अच्छा समय है, गया हुआ धन मिलेगा। पुण्य की जड़ सदा हरी होती है।

हं, अ, त। हे प्रश्न-कर्त्ता! तेरा शुभ का उदय है। धर्म के प्रताप से तेरे सारे क्लेश और व्याधियां दूर हुई हैं, भगवान की प्राप्ति होगी। परदेश में धन लाभ होगा, तुझे जो धन की चिन्ता है वह पूरी होगी और स्त्री, पुत्र आभूषण तथा सकल सुखों की प्राप्ति होगी

हं, अ, र । ये तीनों वर्ण परम लाभ के सूचक हैं । तेरे सभी इच्छित कार्य पूरे होंगे, धन धान्य बढ़ेगा । देश विदेशों में यश फैलेगा । राज्य में प्रतिष्ठा बढेगी । धनादि आभूषणों से सम्मान होगा । इस तरह से तुम सब के प्रिय बनोगे ।

हं, र, र, । हे प्रश्न कर्त्ता ! तेरे वर्तमान समय में अशुभ उदय है, इसीलिए तू दुश्चिन्ताओं में फंसा हुआ है, और धन का भी नाश हुआ है । परन्तु तू घबरा मत और पुण्य कार्यों में तथा धर्म पर अटल रह शीघ्र ही लाभ होगा और देश विदेश में सम्मान तथा मित्रों, कुटुम्बीजनों से भी सुख प्राप्त होगा ।

हं, र, हं । हे सज्जन ! तेरे पासे के ये तीनों वर्ण परम शुभ हैं । तेरे को बडा लाभ होगा । पुत्र का विवाह होगा और धन मिलेगा । विरोधी भी मित्र बनकर भला करेंगे । युद्ध मे वादविवाद मे सफलता होगी । तेरा शुभ का उदय है, इसे स्थायी बनाने के लिए धर्म के कार्य कर और श्री चन्द्र-प्रभु भगवान की पूजा विशेष रूप से कर उससे तेरा कल्याण होगा ।

हं, र, त । हे पृच्छक ! तेरे मन मे कुछ चिन्ता है पर यह व्यर्थ का वहम है, तू अपने हृदय से इसे निकाल दे । तेरा सब सोचा हुआ कार्य सिद्ध होगा । उद्यम मे लक्ष्मी की प्राप्ति, मुकदमे में जीत होगी । किसी भी प्रकार की हानि न होगी । तू संयम और दान मे मन लगा, तेरे मन की चिन्ता नष्ट होकर तेरी गृहस्थी में सुख का विस्तार होगा ।

हं, हं, अ । ये वर्ण आनन्द के सूचक हैं । तेरे पास पर्याप्त लक्ष्मी है, पुत्र पौत्रादि से सुख बढेगा । बिछुडे हुए भाई, मित्र परदेश में सुखी हैं, और उनका शीघ्र ही सुखकारक मिलाप होगा ।

श्री जिनेन्द्र भगवान की सेवा के प्रताप से सब प्रकार के मंगल होंगे, और आगामी एक वर्ष में बहुत धन का लाभ होगा।

हं, हं, र। हे भाई! तुम्हारे सब प्रकार का आनन्द होगा। तुम्हारे पुत्र के विवाह की चिन्ता दूर होगी और विवाह शीघ्र होगा। तू श्री चौबीसीजी की पूजा विधान कर उससे धन, धान्य, वस्त्राभूषण की बढवारी होगी। जहां जायगा लाभ होगा। यह सब जानते हैं कि भगवान की भक्ति से तथा जप दान से सब कार्य सिद्ध होते हैं।

हं, हं, हं। इन तीनों वर्णों का फल परम लाभ का सूचक है। देश में सुख शान्ति हो, धन की प्राप्ति हो, खोई हुई जायदाद प्राप्त हो, लडाई झगडे में सफलता मिले, व्यापार में धन मिले, बन्धुओं और मित्रों से स्नेह बढे। तुम्हारे सम्पूर्ण प्रकार के आनन्द होंगे, श्रद्धा से धर्म का सेवन करो।

हं, हं, त। हे पूछने वाले! तुझे अच्छा लाभ होगा। तुम परदेश जाना चाहते हो, वहां तुम्हें धन लाभ होगा। खेती व्यापार, नौकरी, आदि में इच्छानुसार लाभ होगा। देव, गुरु, शास्त्र के प्रभाव से संसार में सुख के साधन, धन, धान्य, सोना चांदी आदि तुझे इच्छानुसार मिलेंगे। तू श्री महावीर प्रभु की सेवा में मन लगा।

हं, अ, त। ये तीनों वर्ण पूछने वाले के मन के भाव साफ प्रकट कर रहे हैं। हे पृच्छक! तू लोभ में फंस कर परधन चाहता है, यह अच्छा नहीं। तू संतोष को धारण कर लोभ को त्याग कर, जो होनहार है होकर रहेगा। परन्तु कुछ समय बाद तेरे पुण्य का उदय है, उस समय तेरा कल्याण होगा, तब तक तू वीतराग भगवान की आराधना कर।

हं, त, र । तेरे मन में दूसरे के धन की आशा लगी है, तू चाहता है, वह तुझे मिलेगा । धन की प्राप्ति, यश की वृद्धि का समागम होगा, और तेरा गया हुआ धन भी पुनः मिलेगा । इस प्रकार हे सज्जन ! तू जो भी विचारता है तेरा सब मनवांच्छित प्राप्त होगा । ऐसा समझ कर हृदय की चिन्ता दूर कर दान पुण्य आदि शुभ कार्यों को कर ।

हं, त, हं । हे पूछने वाले ! तेरा मन खोटे कर्म्मों में लगा हुआ है, तू चोरी से जुआ से सट्टा से धन चाहता है । इसीलिए तू दुःख पाता है, और बदनाम हो रहा है, और तेरा विश्वास उठ गया है । अब तू इस मार्ग को छोड़ दे और ठीक मार्ग पर चल । तेरा इच्छित कार्य पूरा होगा ।

हं, त, त । हे मित्र ! तेरे मन में जो धन, धान्य तथा सुख सम्पत्ति से भरे हुए घर की चाह है वह सफल होगी । तू चिन्ता का त्याग कर विदेश जा । वहां तुझे मंत्र, तंत्र, सम्मोहन एवं और भी जितनी विद्याएँ हैं सब प्राप्त होंगी । उनसे तेरे मन की अभिलाषा पूर्ण होगी ।

अथ तकारादि चतुर्थ प्रकरण

त, त, अ । हे पूछने वाले ! यह पासा बतलाता है कि यदि तू देव पूजा, दान पुण्यादि पवित्र कार्य करेगा तो तेरे सब लाभ की प्राप्ति होगी । जैसे बीज के बिना वृक्ष नहीं होता वैसे ही बिना पुण्य के सुख प्राप्त नहीं होता । तुझे पुत्र, पौत्र धन धान्य का लाभ और व्यापार मे धन लाभ होगा । लड़ाई में विजय होगी ।

त, अ, र । हे भाई ! तेरा प्रश्न मध्य फल दाता है । तुम्हारे

हृदय में जिस स्त्री, या पुरुष की चाह है, उसको छोड दो। तथा तुम्हारा जो धन क्षय हुआ है उसके फिर से मिलने की आशा भी त्याग दो, क्योंकि स्त्री पुरुष, धन कुटुम्ब आदि होनहार के आधीन हैं। प्रभु भक्ति में मन लगा, कुछ समय बाद तुम्हें पर्याप्त धन लाभ होगा।

त, अ, हं। हे प्रश्न-कर्त्ता! तेरे मन में दिन रात धन की चाह रहती है या नहीं? परन्तु भाई! बिना पुण्य के मिले कैसे? तेरे ये दिन वुरे हैं। लेकिन दुखी मत हो, और जिनदेव की आराधना कर भक्ति में तल्लीन होजा, तेरा शुभोदय शीघ्र ही होगा। उस समय अचानक धन लाभ होगा।

त, अ, त। ऐ भाई! तू प्रसन्न होकर सुन, तेरे हृदय में जो परदेश गमन तथा तीर्थयात्रा की इच्छा है तथा तेरे शरीर में जो रोग था पीडा है वह एक महीने में दूर होगी, और इच्छानुसार धन लाभ होगा। तुझे सब प्रकार के आनन्द प्राप्त होंगे। तू बीच का यह एक महीने का समय श्री वीर प्रभु की सेवा मे लगा।

त, र, अ। तुम्हारा डाला हुआ यह पासा प्रकट करता है कि तुझे धन की चिन्ता है, और इसीलिए तुम परदेश गमन करना चाहते हो। अतः हे सज्जन तुम जाओ। तुम्हें वहां धन का लाभ, वस्त्र, आभूषण स्त्री पुत्रादि की प्राप्ति होगी। माता, पिता, और वन्धु का समागम होगा। यह सब गुरु सेवा का फल है। इसलिए हे भाई! तुम आगे भी वीतराग भगवान की मन लगाकर सेवा करते रहो, इसी में तुम्हारा कल्याण है।

त, र, र। हे पृच्छक! तुम्हारी चिन्ता तुम्हारे पासे से ही प्रकट होती है। तुम्हारे घर में दरिद्रता ने पैर जमाये हैं, इसी लिए तुम रातदिन धन की चिन्ता करते हो, और उसी के उपाय

भी करते हो, किन्तु अभी ३ वर्ष तक तुम्हारा शुभ का उदय नहीं। अतः इस समय के वाद ही तुम्हें सुख की सामग्री प्राप्ति होगी, उसी समय तुम किसी अन्य नये कार्य में मन लगाना। उसी से तुम्हें लाभ और यश मिलेगा।

त, र, हं। हे सज्जन! यह वहुत शुभ पासा है। इसके प्रताप से तुझे सव कल्याण की सामग्री मिलेगी। जिनेन्द्र भगवान की सेवा के प्रभाव से सव विघ्न वाधाएं पल भर में दूर होंगी। धन, पुत्र, युद्ध में विजय, भाइयों के साथ प्रेम वढ़ेगा। घर मे लडाई झगड़े न होंगे। तुम्हारे सारे पाप, सन्ताप दूर होकर कल्याण की प्राप्ति होगी। तुम इस सुख को स्थायी वनाने के लिए भगवान की आराधना करते रहो।

त, र, त। यह वहुत अच्छा शकुन है। तुम्हारा मन धन की चिन्ता से दुखी है, वहुत दिन से तुम चिन्ता कर रहे हो, पर अव अच्छा समय आगया है। तुम्हें सुख की सामग्री, प्रियजनों का समागम, धन लाभ होगा। यदि परदेश गमन करो तो वहुत अधिक लाभ हो। वाद विवाद में जीत, सभ्य समाज में मान और प्रतिष्ठा मिलेगी। देव गुरु धर्म पर अटल श्रद्धा रखो।

त, हं, अ। पासा डालने पर जव ये तीन वर्ण पड़ें तो वड़ा लाभ हो। सारे विघ्न और संकट दूर हो, जहाँ भी जायें वहीं इच्छित फल की प्राप्ति हो, धन, धान्य, वस्त्र, गाय, भैंस, घोडा आदि वैभव की सामग्री का मिलाप हो। तीर्थयात्रा, परदेश गमन युद्ध, समुद्र पार सर्वत्र सफलता ही सफलता प्राप्त होगी। इसलिए हे पृच्छक! इस कल्पवृक्ष समान फलदाता शकुन का फल भोगता हुआ तू अपने इष्टदेव की सेवा में मन लगा।

त, हं, र । हे पूछने वाले ! तेरा पाप का उदय है, तेरा लिया हुआ शकुन यही बताता है, तुम दुखी हो, कष्ट पा रहे हो, तुम्हारा धन नष्ट हो गया । शरीर में भी बिमारियाँ हो रही हैं । पुत्र और मित्रों का वियोग हुआ है, जो भी विचारते हो उसी से कष्ट बढ़ते हैं । तुम्हारे घर में क्लेश पहुँचाने वाली लडाकू स्त्री है, या पुरुष है, और यही पाप दुख दे रहा है । इसलिए तू कुछ समय तक विपत्ति नाशक भगवान पार्श्वनाथ की पूजा कर इससे तुझे शान्ति मिलेगी।

त, हं, हं । हे शकुन लेने वाले ! तेरा पाप का उदय है, अतः तू कुछ दिन युद्ध में या बाद विवाद झगड़े में योग मत दे । इन कामों में तुझे कष्ट ही उठाना पड़ेगा, धन की व धर्म की हानि ही होगी । तुम्हारे घर में कलह, लडाई झगड़े चिन्ता का राज्य है, भाई बान्धव मित्र आदि भी शत्रु जैसे प्रतीत होते हैं । इसलिए अपना खोटा समय जानकर भगवान की भक्ति करता हुआ दुखनाश करने का उपाय सोच ।

त, हं त । हे भाई ! तुम्हारा शकुन मध्यम है । इसलिए जो तुम सोचते हो वह फल न होगा । कुछ दिन ठहरना ही ठीक है । पाप का उदय समझ कर चिन्ता मत करो, भावी बलवान होता है। मन में मृत्यु का भय मत कर, अज्ञान बुद्धि को छोड़ दे । सुख पाने के लिए महावीर प्रभु का स्मरण कर ।

त, त, अ । हे प्रश्न-कर्ता ! तुम्हारा शुभ का उदय है, तुम्हें महान सुख मिलेगा, धन धान्य का समागम होगा । राज्य से भी आदर होगा । व्यापार में धन प्राप्त होगा । पुत्री का विवाह साथ ही तुम्हें सुपुत्र की प्राप्ति भी होगी ।

त, त, र । हे प्रश्न-कर्त्ता ! तुम्हारा शकुन उत्तम है । तुमने सदा सुख ही पाया है, आगे भी भाई बन्धु, पुत्र धन धान्य की

वढ़वारी ही होगी। विदेश में भी सुख ही मिलेगा। सबसे मित्रता और बन्धुता का व्यवहार होगा। तुम्हारे शत्रु डर कर तुम्हारे मित्र होजायेंगे। घर मे गाय, भैंस, घोडा आदि वाहन भी रहा करेंगे।

त, त, हं। हे भाई! तुम आलस्य छोडकर उद्योग करो, तुम्हें लाभ होगा और मन की भावना पूरी होगी। तीर्थयात्रा, पूजन विधान, सब सफल होंगे। तुम्हारे घर में जो रोग शोक है वह शीघ्र दूर होगा। सब प्रकार की भोग सामग्री प्राप्त होगी। अपने मन में किसी प्रकार का सन्देह मत कर। भगवान की भक्ति से सब सुख सामग्री सरलता से प्राप्त हो जाती है।

त, त, त। हे पृच्छक! तेरा शकुन बड़ा कल्याणकारी है। तुम्हारे मन चाहे कार्य सिद्ध होंगे। घर में पुत्र पौत्रादि का जन्म होगा। धन बढ़ेगा, सुख बढ़ेगा, विवाह होंगे। नष्ट हुआ धन पुनः प्राप्त होगा। शत्र शत्रुता छोड़ेंगे। हितैपी मित्रों का मिलन होगा। तुम सदा धर्म की आराधना करते रहो, यही सब सुखों का देने वाला है।

॥ इति ॥

स्वप्नादि विचार

अशुभ स्वप्न

स्वप्न में किसी को रोते हुए देखना, भगवान की मूर्ति, चांदी रुपये भरे हुए कलश दिखाई देना, तीर्थ यात्रा करना, फलों का समूह-देखना, साबुत फल का मिलना, चांवलों का समूह देखना, सूर्य, चन्द्रमा, मछली, विना धूएं की आग, साधु देखना तथा मुरदा ले जाते हुए दिखाई देना—यह सब अच्छे फल देने वाले स्वप्न हैं। गर्भ की अवस्था में शुभ स्वप्न देखने से यह जाना जाता है कि गर्भ का जीव पुण्यात्मा है।

अशुभ स्वप्न

किसी को हँसते हुए देखना, भवगान की मूर्ति तिरछी या हिलती हुई दिखाई देना, वाल विखरे किसी स्त्री को देखना, मकान आदि से गिरते हुए दिखाई देना, खाली बर्तन का देखना, घर से चांदी सोना आदि धन का जाते हुए दिखाई पड़ना, हाथी सर्प आदि द्वारा रास्ता रोकना, दूध का विखर जाना, बिल्ली का रुदन, कव्वे गीदड की आवाज सुनाई देना, समुद्र में डूबते नजर आना, राजा का सिंहासन हिलता हुआ देखना, नाचते तथा गाते हुए दिखाई देना, विवाह, सगाई एवं शृंगार किए हुए किसी स्त्री का देखना आदि अशुभ फल देने वाले स्वप्न हैं। इनके फल से बचने के लिए, भगवान् की पूजा-भक्ति करना चाहिए। तथा हवन आदि करना चाहिए।

चलते समय सफलता के चिह्न

किसी सौभाग्यवती स्त्री का सामने से भरा वर्तन लाना, रुपये चांदी का लाते दिखाई देना। मुरदे का जाते दीखना, फूलों से भरा वर्तन, दूध का वर्तन, पानी का वर्तन सामने आना। कोई शुभ समाचार सुनना।

चलते समय असफलता के चिह्न

तेल का वर्तन सामने आना, तेल का आना, सामने, सीधे हाथ या ऊपर छींक होना, किसी का टोकना, जाते का पल्ला पकड़ना, रोने की आवाज आना, अशुभ समाचार मिलना, खाली वर्तन सामने आना, बिल्ली का रास्ता काटना, कुत्ते का रोना, कान मारना, लकड़ी का भारा सामने आना, कव्वे की आवाज सुनाई देना, तीन ब्राह्मणों का घर से एक साथ चलना, नौ स्त्रियों का एक साथ घर से बाहर जाने को निकलना, पिता

पुत्र तथा दो भाइयों का एक साथ निकलना। स्त्री के नंगे सिर बाल बखेरे दिखाई देना।

स्वर विज्ञान

परदेश गमन, नये भवन के उद्घाटन में, नये गृह के प्रवेश समय, व्यापार के लिये, वस्तुओं के खरीदते समय तथा प्रायः सभी शुभ कामों में नाक का बांया स्वर चलना शुभ माना गया है।

किसी शास्त्रार्थ करने में, विद्यारंभ मे, विघ्न-शान्ति मे, युद्ध में, व्यवहार में, भोजन में तथा इसी प्रकार के छोटे २ कामों में नाक का दाहिना स्वर चलना उत्तम माना गया है।

गमन

बॉया स्वर चले तो पूर्व तथा उत्तर दिशा मे नहीं जाना चाहिये। दाहिना स्वर चले तो दक्षिण और पश्चिम दिशा मे गमन नहीं करना चाहिए।

रात के समय बॉया स्वर तथा दिन के समय दहिना स्वर चलता हो तो यात्रा करना शुभ माना जाता है। जिस तरफ का स्वर चलता हो उसी तरफ के पैर को आगे बढ़ाना चाहिए, इससे कार्य में सफलता मिलती है।

जब दोनों स्वर चल रहे हों तो ऐसे समय में किसी भी शुभ कार्य को प्रारभ नहीं करना चाहिए।

तिथि आदि का विचार

जैन ज्योतिष शास्त्र में तिथियों के ५ भेद किये हैं। नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्णा। इन भेदों से 'रिक्ता' शुभ कार्यो में वर्जित की गई है, शेष सब ठीक हैं। कौन से दिन कौनसी तिथि होती है, इसके लिये नीचे का चक्र देख कर ज्ञान किया जाय।

१	६	११	नन्दा
२	७	१२	भद्रा
३	८	१३	जया
४	६	१४	रिक्ता
५	१०	१५	पूर्णा

श्रेष्ठ योग—

नन्दा तिथि को शुक्रवार होने पर, भद्रा को बुधवार, जया को मंगलवार, रिक्ता को शनिवार, पूर्णा को वृहस्पति पड़ने पर सिद्धि योग गिना जाता है। इस योग में किये गये सभी अच्छे कार्य फलप्रद होते हैं। नीचे दिये गये चक्र से ठीक प्रकार समझ लीजिए कि किस तिथि और कौन से वार को श्रेष्ट योग होता है। मृत्यु योग वाले खाने में जो वार लिखे हैं यदि उक्त तिथियों के दिन वे वार हों तो वे मृत्यु योग के सूचक हैं। यह अशुभ योग है। इसलिए कोई भी अच्छा कार्य इन दिनों प्रारंभ नहीं करना चाहिए।

तिथियां			शुभ-योग	मृत्यु-योग
१	६	११	शुक्र	रवि, मङ्गल
२	७	१२	बुद्ध	सोम, गुरु
३	८	१३	मङ्गल	बुध०
४	६	१४	शनि	शुक्र०
५	१०	१५	गुरु	शनि०

दिन का चौघडिया

रवि०	सो०	मं०	बुध०	वृह०	शु०	श०
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

सूचना—ऊपर के विवरण से समझना यह चाहिए कि जिस दिन जो वार हो उस दिन उस वार के नाचे लिखा 'चौघड़िया' (चार घडी का समय) सूर्य उदय होने के समय होता है। और उसे प्रथम चौघड़िया समझना चाहिए। इस पहिले चौघडिया के उतरने के बाद उस वार से छटे वार का चौघड़िया होता है। दूसरे के उतर जाने के वाद उस छटे वार के छटे वार का होता है। इसे उस दिनका तीसरा चौघडिया समझना चाहिए। जैसे: रविवार के दिन पहला उद्वेग नाम का चौघडिया कोष्टक में बताया गया है। अब आप दूसरे चौघडिये के लिए रविवार से छटे नम्बर का वार देखें तो शुक्रवार पडा। शुक्र के नीचे 'चल' लिखा है तो समझिये कि रविवार के दिन दूसरा चौघडिया 'चल' है। इसी प्रकार तीसरा चौघडिया निकालने लिए शुक्रवार से पुनः छटेवार की गिनती करेंगे तो शुक्र से पहला शुक्र, दूसरा शनि इस प्रकार छटा बुधवार पड़ा। बुधवार के नीचे लाभ आया। एक चौघड़िया १।। घंटे तक रहता है तो प्रातःकाल से सायंकाल तक ८ चौघडिये

हुये। इनमें अमृत, शुभ और लाभ ये तीनों उत्तम चौघड़िये हैं। उद्वेग, रोग और काल अशुभ होते हैं। चल नाम का मध्य है। अतः शुभ कार्य शुभ चौघड़िये में ही करना ठीक है।

रात का चौघड़िया

रवि०	सोम०	मं०	बुध०	वृह	शुक्र	श०
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

सूचनाः—इसमें दिन के कोष्ठक से केवल इतना ही अन्तर है कि दिन के चौघड़ियों में एक वार चौघड़िया उतर जाने के बाद दूसरे चौघड़ियों के लिए छटे नम्बर का वार लेकर दूसरा बनाया जाता है और इसमें पांचवॉ। शेष ऊपर के अनुसार ही समझ लेना चाहिए जैसेः—रविार के पहले चौघड़िये में शुभ योग है तो दूसरे चौघड़िये में गुरुवार पांचवें नम्बर पर होने से उनके नीचे लिखा अमृतयोग होगा। इसी प्रकार गुरुवार के बाद पांचवां नम्बर सोमवार आया तो चल योग बैठा।

दिशाशूल-विचार

वार		दिशा
सोमवार	—	पूर्व दिशा मे दिशाशूल होता है
शनिवार	—	,,
गुरुवार	—	दक्षिण दिशा में
शुक्रवार	—	पश्चिम दिशा मे
रविवार	—	,,
मंगलवार	—	उत्तर दिशा में
बुधवार	—	,,

परदेश जाने मे दिशाशूल सामने और दाहिने अच्छा नहीं माना जाता। अगर किसी को किसी आवश्यक कार्य वश जाना ही पड़े तो नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए।

मंगलवार हो तो गुड़, बुध को खांड, गुरुवार को राई शुक्र को वायविडंग, शनिवार को दही, रविवार को पान खाना चाहिए और सोमवार को काच देखना चाहिए। पश्चात् गमन करना चाहिए।

माला

जप के लिये माला उत्तम साधन है। परन्तु लोग माला के सम्बन्ध में प्रायः विवेक से काम नहीं लेते, अतः वांछित लाभ नहीं हो पाता। माला दाहिने हाथ में रखनी चाहिए। अंगूठे और अंगूठे से जो तीसरी अगुली (मध्यमा) है, इन दोनों से माला फेरना चाहिए। दूसरी (तर्जनी) अंगुली से भूलकर भी माला न फेरना चाहिए। माला फेरते समय हाथ को हृदय के पास स्पर्श करते हुए रखना चाहिए। माला मे जो सुमेरु होता है, उसे लाघना ठीक नहीं है। यदि दूसरी माला फेरनी हो तो वापस माला बदल कर फेरो।

आवर्त

आवर्त से जाप देना माला की अपेक्षा भी श्रेष्ठ है। प्राचीन काल में कर माला का ही जाप किया जाता था, क्योंकि इससे मन की एकाग्रता में अधिक सहायता मिलती थी और जाप मन की एकाग्रता के लिए ही किया जाता है। आवर्त के छः भेद हैं। यहां उनमें से दो भेदों का ही वर्णन किया गया है।

साधारण आवर्त

दाहिने हाथ की कनिष्ठा (सबसे छोटी) अंगुली के नीचे के पोरवे से जाप प्रारंभ करें। कनिष्ठा के नीचे पोरवे से दूसरा तीसरा, चौथा अनामिका (कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की) के ऊपर का, पाँचवाँ मध्यमा के ऊपर का, छट्ठा तर्जनी के ऊपर का, सातवाँ तर्जनी के मध्य का, आठवां तर्जनी के नीचे का, नवमा मध्यमा के नीचे का, दशवां अनामिका के नीचे का, ग्यारहवां अनामिका के मध्य का, बारहवां मध्यमा के बीच का इस प्रकार बारह जप हुए, सो नो बार गिन लेने से एक माला पूरी हो जाती है।

नन्दावर्त

इस आवर्त में तीन अंगुली के नौ पोरवों ही से काम लिया जाता है, और ६ पौरवों पर बारह बार गिनने से एक माला हो जाती है।

विधि:—तर्जनी अंगुली के ऊपर पौरवे से प्रारंभ कर उसके क्रमशः तीनों पौरवे, चौथा मध्यमा के नीचे का, पांचवा अनामिका के नीचे का, छटा अनामिका के मध्य का, और सातवां अनामिका के ऊपर का, आठवां मध्यमा के ऊपर का, ६ वां मध्यमा के बीच का।

महामंत्र णमोकार मंत्र

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आइरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं ।

यह मंत्रराज णमोकार मंत्र है । इससे बढकर तीन लोक में और कोई भी मंत्र नहीं है । पूर्व या उत्तर दिशा में मुंह करके पवित्र भाव से एक माला प्रति दिन फेरने से सब प्रकार का आनन्द मंगल रहता है, सब संकट दूर हो जाते हैं ।

कल्याणकारी जैन मंत्र

मन्त्रों के आराधन में कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है । सर्व प्रथम तो मन्त्र पर पूर्ण श्रद्धान हो । शरीर स्वस्थ हो । मन में विकार भाव न हो, शान्त चित्त हो । जपते-समय मंत्र में पूरा ध्यान हो । इधर-उधर मन को जाने से रोके, जगह-जगह फैलावे नहीं । अमुक काम के लिये लिये अमुक मन्त्र जप रहा हूँ ऐसा कहता न फिरे । एकान्त स्थान हो, शुद्ध जगह हो । जहां मन्त्र जाप करे वहां पूरा होने तक दूसरा काम न हो । शुरू से विधान समाप्ति तक वही धूप दान, वही दीपक, वही माला चौकी वगैरह जो काम में आ रहे हों, वही रहें । उतने समय तक ब्रह्मचर्य से रहे । एक समय शुद्ध भोजन करे । जमीन या तख्त पर सोवे । जाप की धोती, दुपटे बनियान कोरे धोये गये हों । शुभ मिती समय में प्रारम्भ करे । आनन्द-पूर्वक पूरा होने पर दीन गरीबों को दान दे, मन्दिर जी में पूजा-पाठ करावे । धूप, बाजार की कुटी हुई न लेवे । स्वयं साफ कर कूटे । घी का दीपक बराबर जलता रहे ।।

सर्वकष्ट निवारक मन्त्र

१२१ का यन्त्र

ॐ ह्रीं लक्ष्मी

१० ॐ	३० ह्रां	७० ह्रीं	११ ह्रूँ
६६ ह्रौं	२ ह्रः	अ६	सि ३१
१३ आ	७२ उ	२८ सा	८ व
२६ ष	७ ट्	१४ न	७१ मः

जाप-मन्त्र—ॐ ह्रीं लक्ष्मी सुख विधायकाय श्री महावीराय नमः।

विधि—यन्त्र को केसर घिस भोज पत्र पर बनावे, सिंहासन पर विराजमान करे। घी का दीपक सामने जलावे, मन्त्र का सवा लाख जाप करे। दोनों समय मन्त्र जपै। सिद्ध होने पर भोजपत्र लिख तावीज मे रख धूप दिखा २१ बार मन्त्र बोल सीधी भुजा में बांधे दूसरे को देवे। लक्ष्मी प्राप्ति भय निवारन गर्भ-रक्षा।

लक्ष्मीदायक मन्त्र

ॐ ह्रीं नाना लक्ष्मी विभूति विराजमानाय श्री वृषभदेवाय नमः

विधि—इस मन्त्र को ११ दिन २१ हजार जाप आदिनाथ भगवान की प्रतिमा के सन्मुख विधिवत् करे। श्री चमत्कार

(माधोपुर) या ऋषभदेव (उदयपुर) क्षेत्र में जपने से विशेष लाभ होगा।

कार्य प्रारम्भ करने से प्रथम जपै

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहंताणं पाप क्लेशापहर निर्विघ्न कार्य समाप्ति करणाय वषट्।

परदेश गमन, व्यापार, शादी, नौकरी, मकान, दूकान, बनाने आदि में प्रारम्भ मे जपै। १०८ बार विधिवत् जाप करे।

राजभय निवारक नौ अक्षर का मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हम् नमः क्षीं स्वाहाः।

पहले नो बार णमोकार मत्र पढकर बाद में इस मन्त्र की नो मालाएँ फेरे। लगातार २१ दिन तक जाप करने से सब प्रकार का राज सम्बन्धी या अन्य भय संकट दर हो जाता है।

सर्व कार्य साधक मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

इस मन्त्र का सवा लाख जाप, निरन्तर अन्तराय डाले विना करने से मन वांछित सब कार्यों की सिद्धि हो जाती है। यह मन्त्र गरीबी धनहीनता का नाश करने वाला है। उत्तर या पूर्व दिशा को ओर मुख कर के एक बार भोजन और ब्रह्मचर्य के साथ २१ दिनों में सवा लाख जाप करने से यह मन्त्र सब कार्यो की सिद्धि करता है।

ऐश्वर्यदायक मन्त्र

ॐ ह्रीं वरे सुवरे अ सि आ उ सा नमः।

इस मन्त्र का एकान्त स्थान में प्रति दिन सुबह, दोपहर और शाम को १०८ बार जाप करने से अर्थात् तीनों समय मे एक एक

माला फेरने से सब प्रकार की सम्पत्ति, लक्ष्मी और ऐश्वर्य प्रभाव की प्राप्ति होती है। किसी भी पद की प्राप्ति के लिए इसका जाप किया जा सकता है।

परिवार रक्षा मन्त्र

ॐ अरिहय सर्व रक्ष हूँ फट स्वाहा।

इस मन्त्र की एक माला प्रातः काल और एक माला सायंकाल फेरने से परिवार पर आये हुए सब आपत्ति और सङ्कट दूर हो जाते हैं। माला फेरते हुए परिवार की रक्षा का ध्यान करना चाहिए।

द्रव्य-प्राप्ति मन्त्र

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं सिद्धाणं आइरियाणं उवज्झायाणं साहूणं मम ऋद्धि वृद्धि समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र का नित्य प्रातः मध्याह्न और सायंकाल को प्रत्येक समय में बत्तीस ३२ बार मन में ही ध्यान करे। सब प्रकार की सुख, समृद्धि, व धन का लाभ और कल्याण होवे।

सात अक्षरों का मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः

यह बहुत प्राचीन और प्रभावशाली मन्त्र है। सब प्रकार के सुख सम्पत्ति सम्बन्धी मनोरथ इससे पूर्ण हो जाते हैं।

मङ्गलकारी मन्त्र

ॐ असिआउसा नमः

इस मन्त्र का सूर्योदय के समय सूर्य की ओर मुख करके १०८ बार जाप करने से (एक माला फेरने से) गृह कलह दूर हो, शान्ति हो और धन सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

कार्य सिद्धि कर्त्ता मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं कलि कुण्डस्वामिने नम'

इस मन्त्र का एक लाख जप करने से कठिन से कठिन कार्य की सिद्धि हो, दरिद्रता दूर हो, लक्ष्मी की प्राप्ति हो। यह जाप २१ दिन में पूर्ण करे। एक बार भोजन करे, ब्रह्मचर्य से रहे और भूमि पर शयन करे।

पुत्र प्रदाता मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हम् असिआउसा नमः

पुत्र रत्न की प्राप्ति के लिए इस मन्त्र का सवा लाख जाप करना चाहिए। पद्मासन लगा कर पूर्व या उत्तर को मुख रख कर ब्रह्मचर्य की साधना से जप करना चाहिए। इस मन्त्र का १२५००० जाप करने से सब प्रकार का रोग सङ्कट दूर हो जाता है। श्री महावीर भगवान् की मूर्ति के सामने बैठकर जप करने से मन्त्र में विशेषता आजाती है।

सर्व कार्य साधक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ अर्हं नमः

इस मन्त्र का तीनों काल–सवेरे, दुपहर और सायङ्काल १०८ बार जाप करने से तीनों समय में एक २ माला फेरने से सब कार्यो की सिद्धि होती है।

मङ्गल मन्त्र

ॐ ह्रीं श्री नमिऊण असुर–सुर गरुल–भुयग–परिवन्दिए गय किले से अरि हं सिद्धांयरिग उवज्झाय–सव्वसाहूणं ह्रीं श्रीं नम

यह अतीव प्रभावशाली मङ्गल मन्त्र है। इस मन्त्र का शुद्ध उच्चारण के साथ शरीर की शुद्धि रखते हुए नित्य प्रति प्रात काल २१बारजप करना चाहिए। सब प्रकार से आनन्द मंगल हो, आपत्ति संकट दूर हो।

इस घंटाकर्ण मंत्र का २१ बार नित्य जप करने से राज भय, चौर भय, अग्नि और सर्प का भय दूर होवे। सब प्रकार की भूत प्रेत बाधा भी दूर होवे।

दीपावली मंत्र

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	६
१२	७	६	३
ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं

सूचना:—दीपावली के दिन उपवास रखे, शुद्ध भाव से ब्रह्मचर्य पाले। पहली आधीरात तक "नमोत्थुणं समणस्स भगवतो महावीरस्स" इस मंत्र की माला फेरे और आधी रात के पश्चात् सूर्योदय तक "ॐ नमो भगवतो गोयमस्सखिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीण महाणस्स" इस मत्र का का जापकरे। अर्धरात्रि के समय या सूर्योदय के समय केशर या अष्टगन्ध से यह यत्र लिखे, लक्ष्मी की प्राप्ति हो, सब प्रकार से आनन्द हो।

श्री चतुर्विंशति जिन स्तोत्र

आदौ नेमि जिनं नौमि, संभवं सुविधि तथा।
धर्मनाथं महादेवं, शान्ति शान्तिकरं सदा ॥ १ ॥
अनन्तं सुव्रतं भक्त्या, नमिनाथं जिनोत्तमं।
अजितं जितकन्दर्पं, चन्द्रं चन्द्रसमप्रभम् ॥ २ ॥

आदिनाथं तथा देवं सुपार्श्वं विमलं जिनम् ।
मल्लिनाथं गुणोपेतं धनुषां पञ्चविंशतिम ॥ ३ ॥
अरनाथं महावीरं, सुमतिं च जगद्-गुरुम् ।
श्री पद्मप्रभनामानं वासुपूज्यं सुरैर्नतम् ॥ ४ ॥
शीतलं शीतलं लोके, श्रेयांसं श्रेयसे सदा ।
कुन्थुनाथं च वा मेयं, श्री अभिनन्दनं जिनम् ॥ ५ ॥
जिनानां नामभिर्वद्धः, पंचषष्टिसमुद्भवः ।
यंत्रोऽयं राजते यत्र, तत्र सौख्य निरंतरम् ॥ ६ ॥
यस्मिन् गृहे महाभक्त्या, यंत्रोऽयं पूज्यते बुधैः ।
भूत-प्रेतपिशाचादि-भयं तत्र न विद्यते ॥ ७ ॥
सकलगुणनिधानं, यंत्रमेनं विशुद्धम् ।
हृदयकमलकोषे, धीमतां ध्येयरूपम् ।
जय तिलक गुरु श्री सूरिराजस्य शिष्यो ।
वदति सुखनिदानं, मोक्षलक्ष्मीनिवासम् ॥ ८ ॥

उपसर्गहर स्तोत्र [आचार्य भद्रबाहु स्वामी]

उवसग्गहरं पासं पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहर विस निन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥ १ ॥
विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गहरोग मारी, दुट्ठजरा जंति उपसामं ॥ २ ॥
चिट्ठउ दूरे मन्तो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ ।
नर तिरिएसु विजीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणिकप्पपाद वब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इह संथुओ महायस! भत्तिब्भरनिब्भरेण हिलाइणा ।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ! ॥ ५ ॥

फलः-यह स्तोत्र महान प्रभावशाली है। उपसर्गहर स्तोत्र का मूल बीज मन्त्र यह है-'नमिऊण पास विसहरव सह जिण फुलिंग।" इसलिए यदि कोई भीषण सङ्कट आजावे तो पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठे, सब से पहिले 'श्री भद्रबाहु स्वामि प्रसादात् एष योग· फलतु" ऐसा कहे, फिर ऊपर लिखे बीज मन्त्र की एक माला फेरे और बाद मे उपसर्गहर स्तोत्र २७ वार पढे। इस प्रकार २७ दिन तक निरन्तर साधना करने से सब सङ्कट दूर हो जाते हैं।

श्री ग्रह शान्तिस्तोत्र (भद्रबाहुस्वामी कृत)

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम्।
ग्रह-शान्ति प्रवक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे ॥१॥
जन्मलग्ने च राशौ च पीडयन्ति यदा ग्रहाः।
तदा संपूजयेद् धीमान् खेचरैः सहितान् जिनान् ॥२॥
पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च।
वासुपूजस्य भू पुत्रो, बुधश्चाष्टजिनेशिनाम ॥३॥
विमलानन्त धर्माराः शान्तिकुन्थुर्नमिस्तथा।
वर्द्धमानस्तथैतेषां, पाद-पद्मे बुधं न्यसेत् ॥४॥
ऋषभाजितसुपार्श्वश्चाभिनन्दनशीतलौ।
सुमतिः सम्भवःस्वामी, श्रेयांसश्चैषु गीष्पति ॥५॥
सुविधे कथितः शुक्र· सुव्रतस्य शनैश्चरः।
नेमिनाथस्य भवेद् राहुः, केतु श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥६॥
जिनानामग्रतः कृत्वा, ग्रहाणां शान्तिहेतवे।
नमस्कारशतं कृत्वा, ग्रहाणां शान्तिहेतवे।
नमस्कारशतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतं ॥७॥
भद्रबाहुरुवाचैवं पञ्चम श्रुतकेवली।
विद्याप्रवादतः पूर्वाद्, ग्रहशान्तिरुदीरता ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चर-राहुकेतुसहिताः खेटा जिनपति-पुरतोऽवतिष्ठन्तु मम धन-धान्य जय-विजय-सुख-सौभाग्य-धृति-कीर्ति-कान्तिःशान्ति-तुष्टि-पुष्टि-वृद्धि-लक्ष्मी-धर्मार्थ-कामदाः स्युः स्वाहा ।

नोटः—ग्रहों की शान्ति क लिए यह स्तोत्र परम लाभप्रद है। २७ दिन तक निरंतर पाठ करने से सर्व प्रकार के अशुभ ग्रह शान्त होकर सुख की वृद्धि होती है ।

चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र

इस स्तोत्र का पाठ करने से सब प्रकार के कष्टों का निवारण होकर वांच्छित फल की प्राप्ति होती है ।

ॐ नमः पार्श्वनाथाय, विश्वचिन्तामणीयते ।
ह्रीं धरणेन्द्र-वैरोटिया पद्मावती युतायुते ॥ १ ॥
शान्ति-तुष्टि महापुष्टि, धृति-कीर्त्ति-विधापिते ।
ॐ ह्रीं द्विड्व्याल वेताल, सर्वाधि-व्याधिनाशिने ॥ २ ॥
जयाजिताख्या विजयाख्यापराजितयान्वितः ।
दिशांपालैर्ग्रहैर्यक्षैर्विद्यादेवीभिरन्वितः ।
ॐ असिआउसाय नमस् तत्र त्रैलोक्यनाथताम् ।
चतुःषष्ठि-सुरेन्द्रास्तं, भासन्ते छत्रचामरैः ॥ ४ ॥
श्री शंखेश्वरमण्डन पार्श्वजिन ! प्रणतकल्पतरुकल्प ।
चूरय दुष्ट व्रातं, पूरय मे वांछितं नाथ ॥ ५ ॥

श्री वज्रपञ्जर स्तोत्र (रक्षास्तोत्र)

परमेष्ठिनमस्कारं, सार नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षा-करं वज्र-पञ्जराभं स्मराम्यहम् ॥ १ ॥
ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितम् ।
ॐ नमो सव्व सिद्धाणं, मुखे मुखपटं वरम् ॥ २ ॥

ॐ नमो आयरियाणं, अङ्ग रक्षातिशायिनी ।
ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥ ३ ॥
ॐ नमो लोए सव्व साहूणं, मोचके पादयोः शुभे ।
एसो पंच-णमोयारो, शिला वज्रमयीतले ॥ ४ ॥
सव्वपावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो वहिः ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिराङ्गरखातिका ॥ ५ ॥
स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं ।
वज्रोपरि वज्रमयं ज्ञेयं विधानं देहरक्षणं ॥ ६ ॥
महाप्रभावरक्षेयं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी ।
परमेष्ठिपदोद्भूता, कथिता पूर्वे सूरिभिः ॥ ७ ॥
यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठिपदैः सदा ।
तस्य न स्याद् भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन ॥ ८ ॥

फलः—यह स्तोत्र पंचपरमेष्ठि के मन्त्र से बनाया हुआ है। यह शरीर की रक्षा के लिए कवच के समान है। इसका जो व्यक्ति भक्ति के साथ पाठ करता है, उसके शरीर पर किसी प्रकार की आधि-व्याधि का प्रभाव नहीं होता।

पंचषष्ठि यंत्र स्थापना

२२	३	६	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

सूचनाः—ऊपर लिखे चौवीसी स्तोत्र का २७ दिन तक २१ वार शुद्ध मन से ब्रह्मचर्य से रहकर एकान्त स्थान में पाठ करे। सामने भोज पत्र पर केशर से लिखा हुआ यह यंत्रराज रखे। पाठ के समय धूप खेता जाय। निरंतर २७ दिन तक विधिवत् पाठ करने से यंत्र सिद्ध होता है। इस यंत्र को चाँदी के ताबीज में रखकर दाहिने हाथ पर बांध लेने से सब प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है और भूत, प्रेत पिशाच आदि का भय, रोग शोक, कष्ट सब दूर होते हैं।

ग्रह पीडा नाशक मंत्र

१ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। सूर्य मंगल की पीडा होने पर।
२ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं। चंद्रमा और शुक्र की पीडा होने पर।
३ ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं। बुध की पीडा होने पर।
४ ॐ ह्रीं णमो आइरियाणं। गुरु-बृहस्पति की पीड़ा हो तब।
५ ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं।शनि, राहु और केतु की पीडा पर

उक्त मंत्रों में से जिस ग्रह की पीडा हो उसी का शान्ति मत्र का जाप पीडा रहे तब तक नित्य एक हजार जाप करना उचित है।

ॐ

लक्ष्मी दायक मंत्र
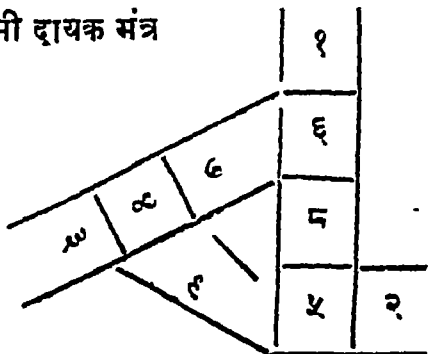
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं नमः।

विधिः—दीपमालिका के २ दिन पहले से ही दीपमालिका तक लगातार ३ दिन एकाशना रख कर ब्रह्मचर्य से रहे, और तीन दिनों मे मंत्र की ११ हजार जाप करे। जाप के समय धूपदान में धूप खेता जाय। पुन' लक्ष्मी पूजन के दिन बही खातों में केशर से मंत्र एवं यंत्र लिखे। आने वाला सारा वर्ष लाभ दायक होगा।

भूतादि की बाधा निवारक मंत्र

ॐ ह्रीं भूत प्रेत बाधा निवारक श्री पद्मप्रभु देवाय नमः स्वाहा।

उक्त मंत्र की प्रातः मध्यान्ह सायंकाल २१ दिन तक जाप देवे। जाप के समय शरीर वस्त्रादि की शुद्धि का ध्यान रखा जाय, और प्रत्येक मंत्र के साथ धूपदान में धूप खेवे तो सम्पूर्ण बाधा दूर हो। श्री पद्मपुरा अतिशय क्षेत्र में पद्म प्रभुभगवान के मदिर में बैठ कर जाप देने से विशेष लाभ हो।

कार्य सिद्धि मन्त्र
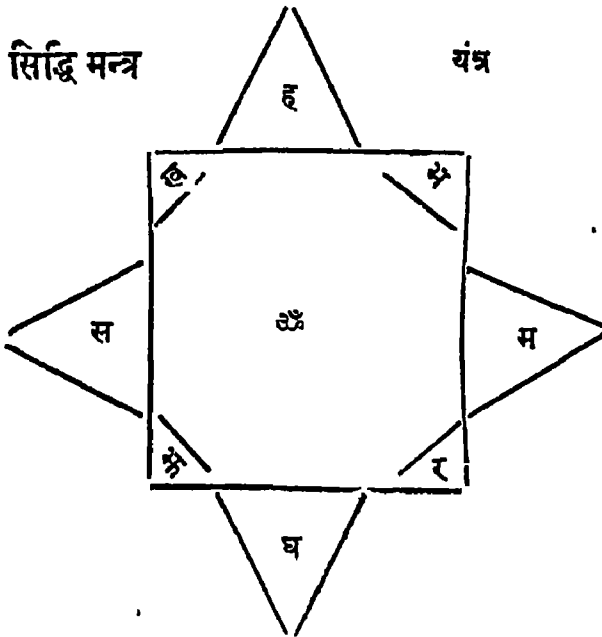
जाप्य मन्त्र शिव ॐ वज्र से वज्र जुटे काया का सङ्कट कटे श्री पार्श्वनाथ जी सहाय।

विधि—ऊपर लिखे मन्त्र की सवालाख जाप करें। २१ दिन रात्रि के ११ बजे से १ बजे तक निर्भय हो यन्त्र सामने विराजमान कर घी का दीपक जला धूपदान में अग्नि जला धूप देते हुए मन्त्र पढे। मनसा अवश्य पूरी होवे।

(विपत्ति नाशक चन्द्रप्रभु स्तोत्र)

चन्द्रप्रभु प्रभाधीशं, चन्द्रशेखर चन्दनम्।
चन्द्र लक्ष्म्याङ्क-चन्द्रकं चन्द्रबीज नमोस्तुते ॥१॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभु श्री ह्रीं कुरुकुरु स्वाहा।
इष्ट सिद्धि महाऋद्धि, तुष्टि पुष्टि कुरु मम ॥२॥
द्वादश सहस्र जपतो, बांछितार्थ-फलप्रदः।
महन्त त्रिसंध्यं जपतः सर्वार्तिव्याधिनाशनम् ॥३॥
सुरासुरेन्द्रसहितः श्री पांडवनृपस्ततः।
चन्द्रप्रभतीर्थेश श्रियं चन्द्रोज्वलां कुरु ॥४॥
श्री चन्द्रप्रभु विद्येयं, स्मृता सद्य फल प्रदा।
भवाब्धि व्याधि विध्वंश., दायिनी मेव रत्तदा ॥५॥

यह चन्द्रप्रभु स्तोत्र सर्व विपत्तियों का नाशक, शान्ति दायक चन्द्रप्रभु विद्या से गर्भित है। इसका शुद्ध मन से भगवान चन्द्र-प्रभु के सामने 'ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभु श्रीं ह्रीं कुरु कुरु स्वाहा' इस मन्त्र का १२००० जाप ११ दिन में करेगा वह मनोवांछित फल को पायेगा।

कलि कुण्ड पार्श्वनाथ मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड दण्ड स्वामिन् श्री पार्श्वनाथ जिन्नेद्राय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अतुल बल वीर्य पराक्रमाय

ममात्म विद्यां रक्ष रक्ष पर विद्यां छिंद छिंद भिंद भिंद स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रुं स्फ्रौं स्फ्रः ह्रूं ह्रः नमः स्वाहा ।

विधि—२१ दिन प्रातःकाल सायंकाल स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहन चौकी पर सिंहासन में विनायक यन्त्र की स्थापना करे। घी का दीपक जलावे । ब्रह्मचर्य से रहे । जनेऊ धारन करे । एक लाख मंत्र का जाप करे । विधिवत क्रिया करे । अन्तिम दिन हवन कुण्ड बना हवन करे । महोत्सव करे । संकट, रोग दूर होवे, धन लाभ, पुत्र लाभ, मुकदमे में जीत होवे ।

शान्ति कारक मन्त्र

ॐ ह्रीं परम शान्ति विधायक श्री शांतिनाथाय नमः । प्रतिदिन जपे सब प्रकार से शान्ति मिले ।

मस्तक पीडा निवारक मन्त्र

ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं ।
ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं ।
ॐ णमो लोए सव्व साहूणं, ॐ णमो णाणाय ।
ॐ णमो दंसणाय, ॐ णमो चरित्ताय ॥
ॐ ह्रीं त्रैलोक्य वश्यकरि ह्रीं स्वाहा ॥

विधि—आठ दिन ब्रह्मचर्य से रह एक वार भोजन कर स्नान पूर्वक शुद्ध वस्त्र पहिन २१ हजार ऊपर का मंत्र जपे । भगवान की प्रतिमा के सामने घी का दीपक जला लौंग अग्नि में क्षेपे । पश्चात् जब कभी किसी के आधा सीसी, मस्तक दर्द होवे २१ वार मंत्र बोल कर जल पिलावे । तीन दिन ऐसा करें ।

पंच परमेष्ठी जाप मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हद्भ्यो नमः
ॐ ह्रीं सर्व सिद्धेभ्यो नमः
ॐ ह्रीं श्री आचार्येभ्यो नमः
ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायेभ्यो नमः
ॐ ह्रीं अर्हं गौतमस्वामी प्रमुख सर्व साधुभ्यो नमः

परदेश गमन लाभ मंत्र

ॐ णमो अरिहंताणं ॐ णमो चग वइय चंदायइ रास तट्ठाए गिरे मोर मोर हलु हलु चुलु चुलु मयर वादिनी।

विधिः—श्री पार्श्वनाथ भगवान के सन्मुख विधिवत् दश हजार जाप जपे, शुभ मुहूर्त में परदेश गमन करे। मंगलवार के दिन व्यापार के लिए गमन न करे, न नगर में प्रवेश करे। मंत्र को चलते समय १०८ बार जाप करे। नगर मे प्रवेश करते समय भी १०८ बार जाप करे।

ताप निवारण मंत्र

ॐ णमो लोए सव्व साहूणं, ॐ णमो उवज्झायाण, ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो अरिहंताणं गऐ घीं ॥

विधिः—एक सफेद शुद्ध चादर लेकर मंत्र पढता जावे चादर के कोने को गांठ देने की तरह से मोडता जावे। १०८ बार मंत्र पढकर अन्त में गांठ देवे। यह चादर बुखार वाले को उढा देवे चन्द्रवार के बाद बुखार नहीं आवेगा।

पंच परमेष्ठी मंत्र (चक्रेश्वरी देवी गर्भित)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा भूर्भुवः स्वः चक्रेश्वरी देवी ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा। प्रत्येक दिन १०८ बार मंत्र प्रातः काल उठकर जपे, सब प्रकार का लाभ होगा।

विद्या प्राप्ति मंत्र

ॐ ह्रीं दिवस रात्रि भेद विवर्जित परम ज्ञानार्क चन्द्रातिशयाय श्री प्रथम जिनेन्द्राय नमः।

विधि—भगवान् आदिनाथ की प्रतिमा के सम्मुख या एकान्त स्थान में विधिवत् २१ हजार मंत्र जपे।

जैन रक्षा स्तोत्र

श्री जिनं भक्तितो नत्वा, त्रैलोक्याल्हादकारकम्।
जैन रक्षामहं वक्ष्ये, देहिनां देह रक्षिकाम्॥ १॥
ॐ ह्रीं आदीश्वरः पातु, शिरसि सर्वदा मम।
ॐ ह्रीं श्रीं अजितो देवो भालं रक्षतु सर्मदः॥ २॥
नेत्रयोः रक्षको भूयात्, ॐ श्रीं सम्भवो जिन।
रक्षेद् घ्राणेन्द्रिय श्रीं, क्लीं ब्लूं श्री अभिनन्दन॥ ३॥
सु जिह्वा सुमुखे पातु सुमतिः प्रणवान्वितः।
कर्णयोः ॐ ह्रीं श्रीं पृक्तः, पातु नित्यं पद्मप्रभु॥ ४॥
सुपार्श्व सप्तमः पातु ग्रीवायां ह्रीं श्रियाश्रितः।
पातु चन्द्रप्रभुः श्री ह्रीं क्रौं, पूर्व स्कंधयोर्मम॥ ५॥
सुविधि शीतलौ नाथौ, रक्षकौ करपङ्कजे।
ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं कामं, चिदानन्द मयौ शुभौ॥ ६॥
श्रेयांसो वासपूज्यो मे हृदयो सदयं यथा।
भूयाद् रक्षाकरो घोर, सारं श्री प्रणवांकितौ॥ ७॥
विमलानन्तनाथौ च, माया वीज समन्वितौ।
उदरे सुन्दरे संघौ, रक्षाया कारकौ मतौ॥ ८॥
श्री धर्मशान्ति-नामानौ, नाभिपके रहे सदा।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं संयुक्तं, पुण्यं पातां पुनः पुनः॥ ९॥

श्री कुन्थु अर-नाथश्च, सगुह्ये सकटी तटे।
भवेतामवकौ भूरिः, ॐ ह्रीं क्लीं सहितौ जिनौ ॥ १० ॥
मे पातां चास जंघायां, मल्लिश्रीमुनिसुव्रतौ।
ॐ ह्रीं द्रां द्रीं ततो द्रूं क्लूं, क्लीं श्रीं युक्तौ कृपाकरौ ॥ ११ ॥
सयत्नं रक्षकौ जानू, श्री नमि नेमि नायकौ।
राज्य राजमती मुक्तौ, प्रणवाक्षर पूर्वकौ ॥ १२ ॥
श्री पार्श्व श्री महावीरौ, पातमंघ्रौ सुसातह्रौ !
ॐ ह्रीं श्रीं च तथा वभ्र, क्लीं ह्रां ह्रीं श्रीं संयुतौ जिनौ ॥ १३ ॥
रक्षाकरौ यथा स्थाने, भवन्तु जिन-नायकाः।
कर्मक्षयकराः ध्याताः, भीतानां भय त्राटकाः ॥ १४ ॥
जैन रक्षां लिखित्वे मां, मस्तके यस्तु धारयेत्।
रविवद् दीप्यते लोके, श्रीमान् विश्वप्रियो भवेत् ॥१५॥
तस्योग्ररोग वेताला, शाकिनीभूतराक्षसाः।
एते दोपा न दृश्यन्ते, रक्षकाश्च भवन्त्यमी ॥ १६ ॥
अग्नि-सर्प-भया पापान्, भूपाल-चौर-विग्रहा।
एते दोषाः न दृश्यन्ते, रक्षकाश्च भवन्त्यमी ॥ १७ ॥
जैन रक्षामियं भक्त्याः प्रातःरुत्थाय यः पठेत्।
ईप्सितान् लभते कामान्, सम्पदश्च पदे पदे ॥ १८ ॥
श्रवणे च शुक्लाष्टम्या-मारभेत्स्तोत्रमुत्तम्।
अभिषेकं जिनेन्द्राणां, कारयेत् दिवसाष्टकम् ॥ १९ ॥
ब्रह्मचर्यं विधातव्य-मेकयुक्तं तथैव च।
शुचिकाशुभवस्त्रेण, वालंकारादिशोभितः ॥ २० ॥
नरो ऽपि यथा नारी, शुद्ध भावमुतापितान्।
दिने दिने यथा कुर्यात, जाप्यं सर्वार्थसिद्धिदं ॥ २१ ॥
एकायं विधातव्य-मुद्यापनमहोत्सवं।
पूजा विधि समायुक्तं, कर्त्तव्यं सुजनैः जनैः ॥ २२ ॥

विधि:—इस सर्व संकट उपद्रव नाशक शान्तिकारक जैन रक्षा स्तोत्र का प्रातःकाल जो शुद्ध मन हो पाठ करता है, उसको भयंकर रोग वैताल शाकिनी, भूत, राक्षस, अग्नि, सर्प, राजा, चोर और युद्ध आदि का भय नहीं होता। विशेष-किसी कार्य की सिद्धि, धन की प्राप्ति के लिये इस स्तोत्र को श्रावण सुदी अष्टमी से शुरू करे। दोनों समय आठ दिन तक विधिवत् पाठ करे। भगवान् की प्रतिमा के सामने चौकी पर घी का दीपक जलावे। १०८ बार स्तोत्र बोले। एक समय शुद्ध भोजन करें। शुद्ध वस्त्र पहन के पाठ करें। जो इस स्तोत्र को केशर के अक्षर अनार की कलम से भोज पत्र पर लिख कर मस्तक पर धारण करता है, उसको सभी प्रकार का मनवांछित लाभ होता है।

कार्यसिद्धि मंत्र

जाप मन्त्र—ॐ ह्रीं सकल कार्य सिद्धि कराय श्री वर्द्धमानाय नमः।

विधि—दोनों समय जाप करे, धन, यश, पुत्रादि लाभकारी है। किसी विशिष्ट लाभ के लिये विधिवत् सवा लाख जाप २१ दिन तक करे।

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र [संकट निवारक]

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं प्रगे।
धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय सदाश्रिते ॥ १ ॥
अट्टे मट्टे तथा छुद्रे विघट्टे छुद्र मेवहि।
छुद्रान्स्तम्भय स्तम्भय स्वाहान्तैरेभिरक्षरम् ॥२॥
पद्माष्टकदलोपेतं मायांक–जिनलांछितम्।
पत्रमध्यान्तरालेषु पत्रोपरि यथाक्रमम् ॥ ३ ॥

अष्टौ अष्टौ तथा चाष्टौ विन्यस्ताक्षर-मंडले ।
तथाष्टशतजापेन ज्वर भे कान्तरादिकम् ॥ ४ ॥
रिपुचोरमहीपाल, शाकिनीभूतसम्भवाः ।
मरण्यं देहजां भीर्ति हन्ति वद्धं भुजादिषु ॥ ५ ॥
पुष्पमालां जपित्वा च मंत्रेणाष्ट-शताधिकम् ।
प्रक्षिप्ता पोतकंठेषु, भूतम् स्वम्भपद् भयम् ॥ ६ ॥
गुग्गुलस्य गुटीनां च, शतमष्टोत्तरा हुतम् ।
दुष्टमुच्चाटयेत् सद्यः, शान्ति च कुरुते गृहे ॥७॥
श्री पार्श्वजिनसिंहस्य, नीलवर्णस्य संस्तवान् ।
लभन्ते श्रेयसं सिद्धि, प्रकुर्वन्, वांछितैः सह ॥८॥
श्री अश्वसेन कुल पंकज भाषाकरस्य ।
पद्मावति धरनि राजनि मेवितस्य ॥ ९ ॥
वामागंजस्य पद्मेस्तवाल्लभन्ते ।
भव्याश्रियं शुभगतामपि वांछितानि ॥ १० ॥

विधि—भगवान पर्श्वनाथ की मूर्ति के सामने एकाग्र मन हो १०८ वार स्तोत्र मंत्र जपे। ॐ णमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं प्रगे धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय सदाश्रिये अट्टे मट्टे तथा क्षुद्र विघट्टे क्षुद्रानस्तंभय २ स्वाहा। इस मन्त्र के जपने से एकान्तरा ज्वर, चोर, राजा, शाकिनी, भूत तथा हिंसक जन्तु सम्बन्धी भय भाग जाता है। १०८ फूलों के ऊपर मन्त्र जपकर माला वनावे, उसको कण्ठ मे धारण करे, भूत भय भाग जावे। १०८ गुग्गुल की गोली बनावे, एक एक गोली पर स्तोत्र पढकर अग्निमें गेरता जावे, दुष्ट का उच्चाटन हो जाता है। हर प्रकार की शान्ति करता है। अहिक्षेत्र मे पार्श्वनाथ के सम्मुख २१ दिन जपने से मनवांछित फल मिलता है!

श्री घंटाकरण यंत्रावली लिख्यते

यन्त्र १

ह्रीं	श्रीं	क्लीं	ऐं	ब्लूं	द्रं	ॐ	आं	क्रौ
ॐ	आं	क्रौं	ह्री	श्रीं	क्लीं	ऐं	ब्लूं	द्रं
ऐ	ब्लू	द्रं	ॐ	आं	क्रौं	ह्रीं	श्रीं	क्लीं
क्रौ	ॐ	आं	क्लीं	ह्रीं	श्रीं	द्रं	ऐं	ब्लूं
द्रं	ऐं	ब्लूं	क्रौं	ॐ	आं	क्लीं	ह्रीं	श्रीं
क्लीं	ह्रीं	श्रीं	द्रं	ऐं	ब्लूं	क्रौ	ॐ	आं
ब्लूं	द्र	ऐं	आं	क्रौ	ॐ	श्रीं	क्लीं	ह्रीं
श्रीं	क्लीं	ह्रीं	ब्लूं	द्रं	ऐं	आं	क्रौ	ॐ
आ	क्रौं	ॐ	श्रीं	क्लीं	ह्रीं	ब्लूं	द्रं	ऐं

ये यंत्र प्रणवु पत्र गोरोचन कुमकुम कस्तूरी केशर कपूर श्री गंध चंदन अनामिकार रक्तेन काढून भुजपत्रलीऊण तीन दिवस पूजा कढून मिर बांधोन रात्रि शयन करावे। भूत भविष्यत वर्तमान सांगेल ॥ १ ॥

विधि—तीन दिन तक (ॐ ह्रीं घंटाकर्ण नमोस्तु ते ॐ नरवीर ठ. ठः स्वाहा)

फल—रात्रि को सोते समय स्वप्न मे भूत भविष्यत वर्तमान चिन्तित बात का फल मालूम हो।

घंटाकरण

यन्त्र

ब्लूं	द्रां	ॐ	आं	क्रौ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	ऐं
श्रीं	क्लीं	ऐं	ब्लूं	द्रां	ॐ	आं	क्रौं	ह्रीं
आं	क्रौं	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	ऐं	ब्लूं	द्रां	ॐ
ऐं	श्रीं	क्लीं	ॐ	ब्लूं	द्रां	ह्रीं	आं	क्रौ
ह्रीं	आं	क्रौं	ऐं	श्रीं	क्लीं	ॐ	ब्लूं	द्रां
ॐ	ब्लूं	द्रां	ह्रीं	आं	क्रौ	ऐं	श्रीं	क्लीं
क्रौं	ह्रीं	आं	क्लीं	ऐं	श्रीं	द्रां	ॐ	ब्लूं
द्रां	ॐ	ब्लूं	क्रौं	ह्रीं	आं	क्लीं	ऐं	श्रीं
क्लीं	ऐं	श्रीं	द्रां	ॐ	ब्लूं	क्रौं	ह्रीं	आं

लक्ष्मी प्राप्ति, आकर्षण, मंत्र ।

बार १०८ रात्रि अष्टगन्धे रात्रि लिखित्वा भाग्य बढै ।

विधिः—रात्रि समय में भोज पत्र पर यन्त्र लिख १०८ बार अग्नि में अष्ट गन्ध खेय यंत्र को धूनी दिखावे ।

ॐ ह्री घंटाकर्ण नमोस्तु ते ॐ नर वीर ठः ठः स्वाहा ।

इस घंटाकर्ण मंत्र को १०८ बार बोले ।

फलः—लक्ष्मी प्राप्ति, सन्तान लाभ ।

विनोद प्रश्नावली

गमन होय ॐॐॐ❀	राज मिलाप ❀❀ॐॐ	व्यापार ॐॐ❀❀	परीक्षा में ❀❀ॐ❀ पास हो
सतान प्राप्ति ❀ॐॐॐ	परदेश गमन ❀ॐ❀ॐ	पास न हो ॐॐ❀ॐ	संतान दुख ॐ❀ॐ❀
सुख प्राप्ति ॐॐॐॐ	सम्मानित हो ❀❀❀❀	जीत हो ❀ॐॐ❀	संकट ॐ❀ॐॐ
इच्छित प्राप्ति ❀❀❀ॐ	द्रव्य लाभ ॐ❀❀ॐ	हार हो ❀ॐ❀❀	भय ॐ❀❀❀

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

प्रश्नकर्त्ता को शुद्ध हो, शांतचित्त णमोकार महामन्त्र का नौ बार शुद्ध उच्चारण करके प्रश्न को चित्त में समझ कर प्रश्न नीचे लिखे ॐ ह्रीं श्री इन चारों पंक्तियों पर नम्बर बार उंगली रखे

और गितनी करे। सम संख्या होने पर ꩜, और विषम संख्या होने पर ❀ यह निशान अङ्कित करे।

उदारण:—जैसे आपने प्रथम लाइन के ❀ इस चिन्ह में से किसी एक पर अंगुली रखी। अब आप यह गिनें कि आप की अंगुली वाला चिन्ह कौन से नम्बर पर है। मान लीजिये कि आप का चिन्ह ८ नम्बर वाला है तो यह सम संख्या है सम के लिये आप अलग कागज पर ꩜ लिख लें। इसी प्रकार दूसरी लाइन के चिन्ह पर अंगुली रख कर गिने यदि इसका नम्बर ७—६—११ आदि है तो यह विपम सख्याएँ हैं। इसका चिन्ह❀ (फूल) है, अब आप पहले वाले ꩜ के आगे ❀ लिखलें। इसी प्रकार तीसरी और चौथी लाइन के चिन्हों पर अंगुली रखकर सम या विषम संख्या के अनुसार अपने कागज पर चिन्ह बना लें और फिर प्रश्नावली के १६ खानों में देखें। उसमें आपको अपने प्रश्न का फल मिल जायगा।

अध्याय ६

नैमित्तिक पूजायें

तत्त्वार्थसूत्र पूजा

पट द्रव्य को जामें कह्यो जिनराज-वाक्य प्रमाण सो,
किय तत्त्व सातों का कथन जिन-आप्त-आगम मानसों।
तत्त्वार्थ सूत्रहिं शास्त्र सो पूजौं भविक मन धारि के,
लहि ज्ञान तत्त्व विचार भल शिव जा भवोदधि पारके॥

जामें पट द्रव्यहि कह्यौ, कह्यो तत्त्व पुनि सात।
सो दश सूत्रहि थापि के, जजें कर्म कटि जात॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवद्वादशांगसारभूत श्री तत्त्वार्थसूत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः। अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट्।

सुरसरी कर नीर सुलाय के, करि सुप्रासुक कुम्भ भरायके।
जजन सूत्रहि शास्त्रहि को करों, लहि सुतत्त्व-ज्ञानहि शिववरों॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयदारु पवित्र मंगाय के, घसि कपूरवरेण मिलाय के।
जजन सूत्रहि शास्त्रहि० ॥ चंदनं०

भिनव शालि सुगंधित लाय के, खंडविवर्जित थाल भरायके।
जजन सूत्रहि शास्त्र ॥ अक्षतं०

सुमन वेल चमेलिहि केवरा, जिन सुगंधदशोंदिश विस्तरा।
जजन सूत्रहि शास्त्रहि० ॥ पुष्पं०

वर सुहाल सुफेनिहि मोदका, रसगुला रसपूरित ओदका।
जजन सूत्रहि शास्त्रहि० ॥ नैवेद्यं०

घृत कपूर मणीकर दीयरा, करि उद्योत हरौं तम हीयरा।
जजन सूत्रहि शास्त्रहि० ॥ दीपं०

बहु सुगंधित धूप दशांग ही, धरि हुताशन धूम उठाव ही।
जजन सूत्रहि शास्त्रहि० ॥ धूपं०

क्रमुक दाख बदाम अनार ला, नरंगि नीबुहि आमहि श्रीफला।
जनन सूत्रहि शास्त्रहि० ॥ फलं०

जल सुचन्दनआदिकद्रव्य ले, अरघके भरि थालहि ले भले।जजन सूत्रहि शास्त्रहि को करों, लहि सुतत्त्व ज्ञानहिं शिववरों।अर्घ

विमल विमल वाणी, श्री जिनवर बखानी,
सुन भये तत्वज्ञानी ध्यान-आत्म पाया है।
सुरपति मनमानी सुरगण सुखदानी,
सु भव्य उर आनी, मिथ्यात्व हटाया है।
समझहि सब नीके, जीव समवशरण के,
निज २ भाषा मांहि अतिशय दिखानी है।
निरअक्षर अक्षर के अक्षरन सो शब्द के,
शब्द सों पद बने जिन जू बखानी है॥

पादाकुलक छन्द

संसार मोह में मोह तरा, प्रकटी जिनवाणी मोहहरा।
ऊद्धरत होत तम नाश करा, प्रणमामि सूत्र जिनवाणिवरा॥
अति मानसरोवरो भील खरा, करुणारस पूरि नीर भरा।
दश धर्म बहे शुभ हंस तरा, प्रणमामि सूत्र जिनवाणिवरा॥
कल्पद्रुम के सम जान तरा, रत्नत्रय के शुभ पुष्ट वरा।
गुण तत्त्व पदार्थन पात्र करा, प्रणमामि सूत्र जिनवाणिवरा॥
वसुकर्म महारिपु दुष्ट खरा, तसु उपजी फैली वेलि वरा।
तसु नाशन काहि कुठार करा, प्रणमामि सूत्र जिनवाणिवरा॥
मद मायरु लोभऽरु क्रोध धरा, ए कषाय महादुखदाय तरा।
तिन नाशि भवोदधि पार करा, प्रणमामि सूत्र जिनवाणिवरा॥
वर षोडश कारण भाव धरा, षट् कायन रक्षण नियम करा।
मद आठहु मदि के गर्द करा, प्रणमामि सूत्र जिनवाणिवरा॥
जिनवाणि न जाने त्रिजगत फिरा, जड़ चेतनभाव न भिन्नकरा।
नहिं पायो आतम बोध वरा, प्रणमामि सूत्र जिनवाणिवरा॥
शुभकर्म उद्योत कियो हियरा, जिनवाणिहि ज्ञान जग्यो जियरा।
भवभरमणहर शिवमार्ग धरा, प्रणमामि सूत्र जिनवाणिवरा॥

सुत कन्हैयालाल परणाम करा, भगवानदास जिहि नाम धरा।
जिनवाणि वसो नित तिहि हियरा, प्रणमामि सूत्र जिनवाणिवरा।।
जिन वाणी माता, सब सुख दाता, भव भरमणहर मुक्तिकरा।
शुभ सूत्रहि शास्त्रहि, वारहि वारहि दास जोरिकर नमन करा।।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थ सूत्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पूजै ध्यावैं भक्ति बढ़ावै जिन वाणी सेती,
ते पावहिं धन धान्य संपदा पुत्र पौत्र जेती।
निरुग शरीर लहैं कीरति जग हरै भ्रमण फेरी,
अनुक्रम सेती लहैं मोक्षथल तहं के होय वसेरी।।

इत्याशीर्वादः। इति श्री तत्त्वार्थ सूत्र पूजा समाप्त।

श्री भक्तामर स्तोत्र पूजा

ओं जय जय जय। नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु

अनुष्टुप—परमज्ञान वाणासि घातिकर्म प्रघातिनं।
महा धर्म प्रकर्त्तारं, वंदेऽहमादिनायकं ।।१।।
भक्तामर-महास्तोत्रं, मंत्रपूजां करोम्यहं।
सर्वजीव हितागारं, आदिदेवं नमाम्यहं ।।२।।

ओं ह्रीं श्री आदिदेव अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। ओं ह्रीं श्री आदिदेव अत्र तिष्ठ तिष्ट ठः ठः स्थापनं। ओं ह्रीं श्री आदिदेव अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टकं।

सुरसुरीनदसंभृत जीवनैः, सकलतापहरैः सुखकारकैः। वृषभनाथवृषांकसमन्वितं, शिवकरं प्रयजे हत किल्विषं ।।१।। ओं ह्रीं वृषभनाथ जिनेन्द्राय जलं।

मलय चंदन मिश्रित कुंकुमैः सुरभितागत षट्पद नंदनैः ।
॥वृषभ०॥ चंदनं ॥२॥
कमल जाति समुद्भवतंदुलैः परम पावन पंच सुपुंजकैः ।
॥वृषभ०॥ अक्षतं ॥३॥
जलजचंपक जातिसुमालती, वकुलपाड़ल कुंद सु पुष्पकैः ।
॥वृषभ०॥ पुष्पं ॥४॥
वटक खज्जक मंडुक पायसैं विविध मोदक व्यंजक सदृशैः ।
वृषभ० । नैवेद्यं ॥५॥
रविकर द्युति सन्निभदीपकैः प्रबल मोह घनांधनिवारकैः ।
वृषभ० । दीपं ॥६॥
स्वगुरु धूपभरैर्घटनिष्ठतैः प्रतिदिशं मिलितालि समूहकैः ।
वृषभ० । धूपं ॥७॥
सरसनिंवुकलांगलि दाड़िमैः कदलिपुंगकपित्थ शुभैःफलैः।
वृषभ० । फलं ॥८॥
सलिल गंध सुभाक्षतपुष्पकैश्चरुसु दीपसुधूप फलार्घकैः ।
जिनपतिं च यजे सुखकारकं, वदति मेरु सु चन्द्र यतीश्वरं ।
अर्घं ॥९॥

प्रत्येक श्लोक पूजा

(भक्तामर स्तोत्र का एक एक श्लोक पढ़ कर नीचे लिखे क्रम से ओं ह्रीं बोल कर अर्घ चढ़ाना चाहिये ।

ओं ह्रीं प्रणतदेव समूह मुकुटाग्रमाण महापापांधकार विनाशकाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं गणधर चारण समस्त रूपींद्रचंद्रादित्यसुरेन्द्रनरेन्द्रव्यं-तरेन्द्रनान्द्रगे चतुर्विधमुनींद्रस्तवितचरणारविंदाय श्रीआदिपरमेश्व-राय अर्घं ॥ २ ॥

ओं ह्रीं विगतबुद्धिगर्व्वोपहारसहित श्रीमानतुंगाचार्य भक्तिसहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घं ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं त्रिभुवनगुणसमुद्र चंद्रकांतमणितेजशरीरसमस्तसुरनाथ स्तवित श्री आदिपरमेश्वराय अर्घं ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं समस्त गणधरादि मुनिवर प्रतिपालक मृगबालवत् श्री आदिनाथ परमेश्वराय अर्घं ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्री जिनेन्द्र चन्द्रभक्ति सर्वसौख्य-तुच्छभक्ति वहु सुखदाय-काय श्रीजिनेन्द्राय आदि परमेश्वराय अर्घं ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं अनन्त भव पातक सर्व विघ्नविनाशकाय तव, स्तुतिसौख्य दायकाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घं ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं जिनेन्द्र स्तवन सत्पुरुषचित्त चमत्काराय श्रीआदि परमेश्व-राय अर्घं ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं जिनपूजनस्तवन कथाश्रवणेन समस्त पाप बिनाशकाय जगत्त्रय भव्यजीव भवविघ्ननाशसमर्थाय च श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यगुणमंडितसमस्तोपमासहिताय श्री आदि परमेश्व-राय अर्घं ॥ १० ॥

ओंह्रीं श्रीजिनेन्द्राय दर्शनेन अनंतभव संचित अघसमूह विनाश-काय श्रीप्रथम जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ११ ॥

ओं ह्रीं त्रिभुवल शांन्तिस्वरूपाय त्रिभुवन तिलकाय मानाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घम् ॥ १२ ॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यविजयरूप अतिशय अनंतचंद्र तेजजित सदातेज पूजमानाय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घम् ॥ १३ ॥

ओं ह्रीं शुभगुणातिशयरूप त्रिभुवनजीत जिनेन्द्र गुण विराजमानाय श्रीप्रथमजिनेन्द्राय अर्घम् ॥ १४ ॥
ओं ह्रीं मेरुचन्द्र अचलशील शिरोमणि व्रतोद्यराजमंडित चतुर्विध वनिता विरहित शीलसमुद्राय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घम् ॥१५॥
ओं ह्रीं धूम्रस्नेह वातादि विघ्नरहिताय त्रैलोक्य परमकेवलदीपकाय श्रीप्रथमजिनेन्द्राय अर्घम् ॥ १६ ॥

ओं ह्रीं राहु चन्द्र पूजित कर्म प्रकृति क्षयति निरावरण ज्योतिरूप लोकद्वयावलोके सदोदयादि परमेश्वराय अर्घम् ॥ १७ ॥
ओं ह्रीं नित्योदय रूप और राहु करके हू नाग्रसे जाय ऐसे त्रिभुवन सर्व कला सहित विराजमानाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घ ॥१८॥
ओं ह्रीं चन्द्र सूर्योदयास्ता रजनी दिवस रहित परम केवलोदय सदादीप्ति विराजमानाय श्री आदि देवाय आदि परमेश्वराय अर्घ ॥ १९ ॥

ओं ह्रीं अन्यदेव ज्ञानरहित सर्वज्ञ परम ज्योति केवलज्ञान सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घम् ॥ २० ॥
ओं ह्रीं त्रिभुवन मनमोहन जिनेन्द्ररूप अन्य दृष्टान्त रहित परम वोध मंडिताय श्री जिनाय अर्घम् ॥ २१ ॥
ओं ह्रीं त्रिभुवन वनितोपमारहित श्री जिनवर माताजनित जिनेन्द्र पूर्व दिग भास्कर केवल ज्ञान भास्कराय श्री आदि ब्रह्मा जिनाय अर्घम् ॥ २२ ॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्य पावनादित्यर्ण परमाष्टोत्तर शतलक्षण नव शत व्यंजनाय समुदाय-एक सहस्र अष्ट मंडिताय श्री आदिजिनेन्द्राय अर्घम् ॥ २३ ॥

ओं ह्रीं अनेकानेकत्रिभुवन दैवत्व सेविताय सेविकाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घ ॥ २४ ॥

ओं ह्रीं बुद्धिदर्शक शेषधर ब्रह्मादि समस्तानन्तनाममहिताय श्री आदि जिनेन्द्राय अर्घं ॥ २५ ॥

ओं ह्रीं अधोमध्योर्द्ध्वं लोकत्रय कृताहोरात्रिनमस्कार समस्तार्तिरौद्र विनाशक त्रिभुवनेश्वर भवोदधि तरण-तारण समर्थाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घम् ॥ २६ ॥

ओं ह्रीं परमगुणाश्रित एकादि अवगुणरहिताय श्री आदि परमेश्वर राय अर्घं ॥ २७ ॥

ओं ह्रीं अशोक वृक्ष प्रातिहार्य सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥ २८ ॥

ओं ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्य सहिताय श्री प्रथम जिनेन्द्राय अर्घं॥२६॥

ओं ह्रीं चतुः षष्ठि चामर प्रातिहार्य सहिताय श्रीप्रथम जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ३० ॥

ओं ह्रीं छत्रत्रय प्रातिहार्य सहिताय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं॥३१॥

ओं ह्रीं अष्टादश कोटि वादित्र प्रातिहार्थे सहिताय श्री परमादि जिनाय अर्घं ॥३२॥

ओं ह्रीं समस्त पुष्प जाति वृष्टि प्रातिहार्य सहिताय श्री आदि जिनेन्द्राय अर्घं ॥३३॥

ओं ह्रीं कोटि भास्कर प्रभा मण्डित भामंडल प्रातिहार्य सहिताय श्री परमादि जिनाय अर्घं ॥३४॥

ओं ह्रीं सलिल जलधर पटलगर्जितध्वनि योजन प्रमाण प्रातिहार्य सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥३५॥

ओं ह्रीं हेम कमलोपरि गमन देवकृतातिशय सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥३६॥

ओं ह्रीं धर्मोपदेश समये समवशरण विभूति मंडिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥३७॥

ओं ह्रीं मस्तकगलितरण सुर गजेन्द्र महादुर्द्धर भय विनाशकाय श्री जिनादि परमेश्वराय अर्घं ॥३८॥

ओं ह्रीं आदिदेव नाम प्रसादान्महासिंह भय विनाशकाय श्री युगादि परमेश्वराय अर्घं ॥३९॥

ओं ह्रीं महावह्नि विश्वभक्षण समर्थ जिननाम जल विनाशकाय श्री आदि ब्रह्मणे अर्घं ॥४०॥

ओं ह्रीं रक्तनयन सर्प जिन नागदमन्योषधि समस्त भय विनाशकाय श्री जिनादि परमेश्वराय अर्घं ॥४१॥

ओं ह्रीं महासंग्राम भयविनाशकाय सर्वांगरक्षणकराय श्री प्रथम जिनेन्द्राय अर्घं ॥४२॥

ओं ह्रीं महारिपुयुद्धे जयदायकाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घं ॥४३॥

ओं ह्रीं महासमुद्र चलित वातमहादुर्जय भय विनाशकाय श्री जिनादि परमेश्वराय अर्घं ॥४४॥

ओंह्रीं दश प्रकार ताप जलंधराष्टादश कुष्ट सन्निपात महद्रोग-विनाशकाय परमकामदेवरूपप्रकटाय श्री जिनेश्वराय अर्घं ॥४५॥

ओं ह्रीं महाबंधन आपाद कंठ पर्यन्त वैरिकृतोपद्रव भय विनाशकाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥४६॥

ओं ह्रीं सिंह गजेन्द्र राक्षस भूत पिशाच शाकिनी रिपु परमोपद्रव भय विनाशकाय श्री जिनादि परमेश्वराय अर्घं ॥४७॥

ओं ह्रीं पठक पाठक श्रोता व श्रद्धावान मानतुंगाचार्यादि समस्त जीव कल्याणदाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥४८॥

वन सुगंध तंदुल पुष्पकैः प्रवर मोदक दीपक धूपकैः ।
फल वरैः परमात्म-पदप्रदं, प्रवियजे श्री आदि जिनेश्वरं ॥

ओं ह्रीं अष्ट चत्वारिंशत्कमलेभ्यः पूर्णार्घं ।

जयमाला

श्लोक—प्रमाणद्वय कर्त्तारं स्यादस्तिवाद वेदकं ।
द्रव्यतत्त्व-नयागारमादिदेवं नमाम्यहं ॥ १ ॥

छन्द

आदि जिनेश्वर भोगागारं, सर्वं जीववर दया सुधारं ।
परमानंदरमासुखकंदं, भव्यजीव हितकरणममंदं ॥ २ ॥
परम पवित्र वंशवर मंडण, दुख दारिद्र काम बल खंडन ।
वेदकर्म दुर्जय बल दंडण, उज्ज्वल ध्यान प्रति शुभ मंडण॥३॥
चतु अस्सीलक्ष पूर्व जीवित पर, धनुष पंचशत मानस जिनवर ।
हेमवर्णरूपौघ विमल कर, नगर अयोध्या स्थानक व्रत धर ॥४॥ नाभिराज परमात्म सुवेता, माता मरुदेवी गुण नेता । सोल स्वप्न पर भेद विख्याता, त्रिभुवननायक पुत्र विधाता ॥५॥ गर्भकल्यानक सुरपति कीधा, जन्म कल्याणक मेरु शिर सीधा । स्वयं स्वयंभू दीक्षा धारी, केवल बोध सु त्रिभुवन प्यारी ॥६॥ अष्ट गुणाकर सिद्ध दिवाकर, परम धर्म विस्तारण जय भर । शीत ताप रहितं भव हारी, सर्व सौख्य निरुपम गुणधारी ॥७॥

घत्ता—जय आदि सु ब्रह्मा, त्रिभुवन ब्रह्मा, ब्रह्मास्वात्म स्वरूप परं । जय बोध सु ब्रह्मा, पंच सु ब्रह्मा, ब्रह्मा सुमति जलधि निकरं ।

ॐ ह्रीं आदि परमदेवाय जलमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

शार्दूलविक्रीडित

देवोऽनेक भवार्जितो गत महा पापः प्रदीपानलः ।
देवः सिद्धवधू विशाल हृदयालंकार हारोपमः ॥
देवोष्टादश दोष भिदुर घटा दुर्भेद पंचाननो ।
भव्यानां विदधातु वांछित फलं श्री आदिनाथो जिनः ॥

श्लोक—लक्ष्मीचंद्रगुरुर्जीतो मूल संघ विदाग्रणी ।
पट्टाभयचंद्रो देवो दयानंदि विदांवरः ॥
रत्नकीर्ति कुमुदेन्दु सुमतिः सागरोदितः ।

भक्तामर महास्तोत्र पूजा चक्री गुणाधिका ॥
इति श्री मानतुङ्गाचार्य विरचित भक्तामर स्तोत्र पूजा समाप्ता ।

भक्तामर ऋद्धि मंत्र

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा ।

(मंत्र) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ।

(विधि) श्रद्धापूर्वक प्रतिदिन ऋद्धि और मंत्र १०८ बार जपने से समस्त विघ्न नाश होते हैं ॥१॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं (मंत्र) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं नमः (विधि) श्रद्धा सहित लगातार ७ दिन तक १००० बार ऋद्धि-मंत्र जपने से समस्त रोग शान्त हो जाते हैं ॥२॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं ।

(मंत्र) ओं ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धेभ्यो बुद्धेभ्यः सर्वसिद्धिदायकेभ्यो नमः स्वाहा ।

(विधि) श्रद्धापूर्वक सात दिन तक प्रतिदिन त्रिकाल १०८ बार ऋद्धि मंत्र जपने से सर्व सिद्धियां प्राप्त होती हैं ॥३॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं (मंत्र) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं जलयात्राज देवताभ्यो नमः स्वाहा (विधि सात दिन तक प्रति दिन १००० बार श्रद्धा पूर्वक ऋद्धि-मंत्र जपने तथा २१ कंकरियों को क्रमशः एक २ कंकरी को उक्त मंत्र से मंत्रित कर जल में डालने से जाल में मछलियां नहीं फंसती ॥४॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाण (मंत्र) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं सर्व संकटनिवारणेभ्यः सुपार्श्व यक्षेभ्यो नमो नमः स्वाहा ।

(विधि) श्रद्धा सहित ७ दिन तक प्रतिदिन ऋद्धि-मंत्र का १००० बार जप करने से सब तरह के संकट शमन हो जाते हैं।।५।।

(ऋद्धि। ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं (मंत्र) ॐ ह्रीं श्रां श्रीं श्रं श्रः हं सं थ थ ठः ठः सरस्वती भगवति विद्या प्रसादं कुरु कुरु स्वाहा।

(विधि) २१ दिन तक प्रतिदिन १००० बार ऋद्धि मंत्र को श्रद्धा सहित जपने से बहुत शीघ्र विद्या आती है।।६।।

(ऋद्धि, ओं ह्रीं अर्हम् णमो बीज बुद्धीणं (मंत्र) ॐ ह्रीं हं सं श्रां श्रीं क्रौं क्लीं सर्वदुरितसंकटक्षुद्रोपद्रवकष्ट निवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

(विधि) २१ दिक तक प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि-मंत्र भाव सहित जपने से किसी प्रकार का विप नहीं चढता। तथा ककरी को १०८ बार मंत्रित कर सर्प के सिर पर मारने से सर्प कीलित हो जाता है।।७।।

(ऋद्धि ॐ ह्रीं अर्हम् णमो अरिहंताणं णमो पादाणुसारिणं (मंत्र) ॐ ह्रां ह्रीं हं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा। ॐ ह्रीं लक्ष्मण रामचन्द्र देवाय नमोनमः स्वाहा (विधि) १२ दिन तक प्रति दिन श्रद्धा सहित ऋद्धिमंत्र का जाप करने से सब प्रकार के अरिष्ट मिट जाते हैं।।८।।

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं णमो संभिण्ण सोदराण ह्रां ह्रीं हूं फट् स्वाहा (मंत्र) ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं भ्वीं रः रः हं हः नमः स्वाहा (विधि) श्रद्धापूवक चार कंकरी १०८ बार मंत्र कर चारों दिशाओं में फेंकने से पथ कीलित हो जाता है तथा सप्तभय भाग जाते हैं।।९।।

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं (मंत्र) जन्म सध्यानतो जन्मतो वा मनोत्कर्षधृतावादिनोर्यानाक्षान्ताभावे प्रत्यक्षा बुद्धान्मनो

ओं ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः श्रां श्रीं श्रूं श्रः सिद्धबुद्धकृतार्थो भव भव वषट् सम्पूर्णं स्वाहा (विधि) श्रद्धा पूर्वक नमक की ७ डली लेकर प्रत्येक को १०८ बार मंत्रित कर खाने से कुत्ते के विष का असर नहीं होता ॥१०॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धीणं (मंत्र) ओं ह्री श्रीं क्लीं श्रां श्रीं कुमति निवारिण्यै महामायायै नमः स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित २१ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि-मंत्र जपने से जिसे बुलाने की उत्कंठा हो वह आ सकता है ॥११॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो वोहि बुद्धीणं (मंत्र) ॐ श्रां श्रों श्र अः सर्व राजा प्रजा मोहिनी सर्वजन वश्यं कुरु कुरु स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ४२ दिन तक प्रति दिन १००० ऋद्धि-मंत्र जपना चाहिए। एक पाव तिल तैल को उक्त मंत्र से मंत्रित कर हाथी को पिलाने से उसका मद उतर जाता है ॥१२॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो ऋजुमदीणं (मंत्र) ओं ह्रीं श्रीं ह्रः सः ह्रौं ह्रां ह्रीं द्रां द्रौं द्रः मोहनी सर्वजनवश्यं कुरु २ स्वाहा।

(विधि) श्रद्धा सहित ७ दिन तक प्रति दिन १००० ऋद्धि-मंत्र का जप करने तथा ७ कंकरियों को १०८ बार मंत्रित कर चारों ओर फेंकने से चोर चोरी नहीं कर पाते और रास्ते में भय नहीं रहता ॥१३॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो विपुल मदीणं (मंत्र) ॐ नमो भगवती गुणवती महा मानसी स्वाहा (विधि) श्रद्धा पूर्वक ५ कंकरियों को २१ बार मंत्रित कर चारों ओर फेंकने से आधि-व्याधि शत्रु आदि का भय मिट जाता है और लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो दशपुव्वीणं (मंत्र) ॐ नमो भगवती गुणवती सुसीमा पृथ्वी वज्रशृंखला मानसी महामानसी

स्वाहा (विधि) श्रद्धापूर्वक १४ दिन १००० जाप करे। २१ बार तेल मंत्रित कर मुख पर लगाने से सभा सम्मान बढता है ॥१५॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदश पुव्वीणं (मंत्र) ॐ णमो सुगंगला सुसीमा नाम देवी सर्व समीहितार्थ वज्र शृंखलां कुरु कुरु स्वाहा (विधि) ६ दिन तक प्रतिदिन श्रद्धा सहित १००० ऋद्धि मंत्र जपने से राज-दरबार में प्रतिवादी की हार होती है; और शत्रु का भय नहीं रहता ॥१६॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठांग महानिमित्त कुशलाणं (मंत्र) ॐ णमो णमि ऊण अट्ठे मट्ठे क्षुद्र विघट्ठे क्षुद्रपीडां जठरपीड़ां भंजय भंजय सर्व पीड़ा सर्वरोग निवारणं कुरु कुरु स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ७ दिन तक १००० जाप जपना चाहिये, अछूता पानी २१ बार मंत्रित कर पिलाने से शारीरिक सभी रोग दूर हो जाते हैं ॥१७॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउणायद्धिपत्ताणं (मंत्र) ॐ नमो भगवते जय विजय मोहय २ स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ७ दिन तक १००० जाप जपना चाहिये। १०८ बार ऋद्धि मंत्र जपने से शत्रु सैन्य स्तम्भित हो जाती है ॥१८॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं (मंत्र) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः यक्ष ह्रीं वषट् नमः स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि-मंत्र को १०८ बार जपने से अपने पर प्रयोग किये गये दूसरे के मंत्र जादू टोना टोटका मूठ उच्चाटनादि का भय नहीं रहता ॥१९॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं (मंत्र) ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रः शत्रुभय निवारणाय ठः ठः नमः स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित प्रतिदिन ऋद्धि-मंत्र को १०८ बार जपने से सन्तान सम्पत्ति सौभाग्य वृद्धि और विजय की प्राप्ति होती है ॥२०॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं (मंत्र) ॐ नमः श्री

मणिभद्र जय विजय अपराजित सर्व सौभाग्यं सर्व सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित मंत्र को ४२ दिन तक १०८ बार जपने से सब अपने वशवर्ती होते हैं और सुख सौभाग्य बढ़ता है ॥२१॥

(ऋद्धि) ह्रीं ॐ अर्हं णमो आगासगामिणं (मंत्र) ॐ णमो श्री वीरेहिं जृंभय २ मोहय मोहय स्तम्भय स्तम्भय अवधारणं कुरु कुरु स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित हल्दी की गांठ को मंत्रित कर चबाने से डाकिनी शाकिनी भूत पिशाच चुडैलादि भाग जाते हैं ॥२२॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं (मंत्र) ॐ नमो भगवती जयावती मम समीहितार्थ मोक्ष-सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा (विधि) श्रद्धासहित ऋद्धि-मंत्र को १०८ बार जपकर अपने शरीर की रक्षा करे, पश्चात् इसी मंत्र से झाडने पर प्रेत बाधा दूर होती है ॥२३॥

• (ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठि विसाणं (मन्त्र) ॐ नमो अरहंताणं स्थावर जंगम वायकृतिमं सकलविषं यद्भक्तेः अप्रणमिताय ये दृष्टिविषयान्मुनीन्ते वड्ढमाण स्वामी सर्व हितं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा झ्रां झ्रौं स्वाहा (विधि) राख मंत्रित कर शिर में लगाने से शिर पीड़ा दूर होती है ॥२४॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं (मंत्र) ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा झ्रों झ्रौं स्वाहा। ओं नमो भगवते जय विजयापराजिते सर्व सौभाग्यं सर्व सौख्यं कुरु २ स्वाहा। (विधि) श्रद्धा सहित प्रति दिन ऋद्धि मंत्र के जपने से नजर उतरती है और अग्नि का असर आराधक पर नहीं होता ॥ २५ ॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं (मंत्र) ओं नमो ॐ ह्रीं श्री क्लीं ह्रूं ह्रूं परजन शांति व्यवहारे जयं जयं कुरु२ स्वाहा। विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र द्वारा तेल को मंत्रित कर सिर पर

लगाने से आधा शीशी (अर्द्ध शिर) की पीड़ा दूर होती है ॥२६॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं (मंत्र) ओं णमो चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणी चक्रेणानुकूलं साधय २ शत्रूनुन्मूलयोन्मूलय स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र की उपासना से आराधक को शत्रु भी हानि नहीं पहुंचा सकता ॥ २७ ॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हम् णमो महातवाणं (मंत्र) ओं नमो भगवते जय-विजयं जृंभय २ मोहय मोहय सर्वसिद्धि सम्पत्ति सौख्यं कुरु २ स्वाहा (विधि) प्रति दिन श्रद्धा सहित ऋद्धि-मंत्र १०८ बार जपने से सभी अच्छे कार्य सिद्ध होते हैं और व्यापार में भी लाभ होता है ॥ २८ ॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं (मंत्र) ओं ह्रीं णमो णमिऊण पासं विसहर फुलिंगमंतो विसहर नाम रकार मंतो सर्व सिद्धि मीहे इह समरंताणं मण्णे जा गई कप्पदुमंच्चं सर्व सिद्धि ॐ नमः स्वाहा। (विधि) श्रद्धा सहित प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि मंत्र जपने से हर प्रकार की नेत्र पीड़ा दूर होती है ॥ २६ ॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं (मंत्र) ओं नमो अट्ठ मुट्ठे क्षुद्रविघट्ठे क्षुद्रान् स्तम्भय २ रक्षां कुरु कुरु स्वाहा (विधि) श्रद्धा पूर्वक ऋद्धि मंत्र की अराधना करने से शत्रु का शौर्य नष्ट होता है ॥ ३० ॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण परक्कमाणं (मंत्र) ओं उवसग्गहरं पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं विसहर विसणिण्णासिणं मंगल कल्लाण आवासं ओं ह्रीं नमः स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि-मंत्र को जपने से राज्य मान्यता होती है और हर जगह सम्मान प्राप्त होता है ॥ ३१ ॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हम् णमो घोर गुण बंभचारिणी (मंत्र) ओं नमो ह्रां ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्रः सर्व दोष निवारणं कुरु २ स्वाहा।

(विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि-मन्त्र द्वारा कुंआरी कन्या के हाथ से काटे गये सूत को मन्त्रित कर गले में बांधने से संग्रहणी तथा उदर की भयानक पीडा दूर होती है ॥ ३२ ॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं (मंत्र) ओं ह्रीं श्रीं क्ली ब्लूं ध्यान सिद्धि परम योगीश्वराय नमो नमः स्वाहा।

(विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र द्वारा कच्चे धागे को मंत्रित कर हाथ में बांधने से एकांतरा तिजारी तापज्वरादि सब रोग दूर होते हैं ॥ ३३ ॥

ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहि पत्ताणं (मंत्र) ओं णमो ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रौं पद्मावत्यै नमो नमः स्वाहा। (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र द्वारा कच्चे धागे को मंत्रित कर कमर में बांधने से असमय में गर्भ का पतन नहीं होता ॥ ३४ ॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं (मंत्र) ओं नमो जय विजयापराजिते महालक्ष्मी अमृतवर्षिणी अमृतस्राविणी अमृतं भव भव वषट् सुधायै स्वाहा। (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मन्त्रकी अराधना से चोरी मरी मृगी दुर्भिक्ष राजभय आदि नष्ट हो जाते हैं ॥ ३५ ॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं (मंत्र) ओं ह्रीं श्रीं कलिकुण्डदण्डस्वामिन् आगच्छ २ आत्ममन्त्रान् आकर्षय २ आत्म मंत्रान् रक्ष २ परमंत्रान् छिन्द २ मम समीहितं कुरु २ स्वाहा। (विधि श्रद्धा सहित १२००० ऋद्धि मंत्र का जाप जपने से सम्पत्ति का लाभ होता है ॥ ३६ ॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं (मंत्र) ओं नमो भगवते अप्रतिचक्रे ऐं क्लीं ब्लूं ओं ह्रीं मनोवांछित सिद्धयै नमो नमः अप्रतिचक्रे ह्रीं ठः ठः स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र द्वारा थोड़ा सा जल मंत्रित कर मुंह पर छींटा देने से दुर्जन पुरुष

वश में हो जाया करते हैं और उनकी जुबान वन्द होजाती है ।३७।

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो मणवलीणं (मंत्र) ॐ नमो भगवते महानागकुलोच्चाटनी कालदष्टमृतकोस्थापिनी परमंत्र प्रणाशिनी देवि शासन देवते ह्रीं नमो नम. स्वाहा । (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र का आराधन करने से हस्ति का मद नाश होता है और अर्थ-प्राप्ति होती हैं । ३८ ॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो वचवलीणं (मंत्र) ओं नमो एपु वृत्तेपु वर्द्धमान तव भय हरं वृत्ति वर्णायेपु मंत्राः पुनः स्मर्तव्या अतोना परमंत्र निवेदनाय नमः स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मन्त्र का आराधन करने से जंगल का राजा सिंह भी परास्त हो जाता है और सर्प का भय भी नहीं रहता ॥ ३९ ॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो कायवलीणं (मंत्र) ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रां ह्रीं अग्नि उपशम शान्ति कुरु २ स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र का आराधन करने से अग्नि का भय मिट जाता है ।

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं (मंत्र) ओं नमो श्रां श्रीं श्रूं श्रौ जलदेवि कमले पद्म हृदि निवासिनी पद्मोपरि संस्थिते सिद्धिं देहि मनोवांछितं कुरु २ स्वाहा ! (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र जपने और झाडने से सर्प का विप उतर जाता है ॥ ४१ ॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीण (मंत्र) ओं नमो नमिऊण विपधर विप प्रणाशन रोग शोक दोप ग्रह कप्पदुमच्चजाई सुहनाम गहणसकल सुहदे ओं नमः स्वाहा । (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मंत्र की आराधना से भयकर युद्ध का भय मिट जाता है ।४२।

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं (मंत्र) ओं नमो चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणी जिनशासनसेवा-कारिणी क्षुद्रोपद्रव-विनाशिनि धर्म-शांति-कारिणी नमः शान्ति कुरु २ स्वाहा । (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मन्त्र जपने से भय मिटता है और

सब प्रकार की शांति प्राप्त होती है ॥ ४३ ॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो अमीयसवीणं (मंत्र) ओं नमो रावणाय विभीषणाय कुंभकरणाय लंकाधिपतये महाबल पराक्रमाय मनश्चिंतितं कुरु २ स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मन्त्र की आराधना से सब प्रकार की आपत्तियां हट जाती हैं ॥ ४४ ॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं (मन्त्र) ओं नमो भगवती क्षुद्रोपद्रवशांतिकारिणी रोगकष्टज्वरोपशमेनं शान्ति कुरु २ स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मन्त्र की आराधना से सब रोग नाश होते हैं तथा उपसर्ग आदि का भय नहीं होता ॥४५॥

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं (मन्त्र) ओं णमो ह्रां ह्रीं श्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ठः ठः जः जः क्ष्रां क्ष्रीं क्ष्रूं क्ष्रौं क्ष्रः क्षय· स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मन्त्र की आराधना से आराधक बंधनों से निर्मुक्त होकर निर्भय हो जाता है ॥ ४६ ॥

(ऋद्धि)ओं ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं (मंत्र) ओं नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः क्षयः श्रीं ह्रीं फट् स्वाहा (विधि) श्रद्धा सहित प्रतिदिन ऋद्धि मंत्र को १०८ बार जपने से शत्रु वश में होता है। विजय लक्ष्मी प्राप्त होती है और शस्त्रादि के घाव शरीर में नहीं हो पाते ॥४७॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्व साहूणं (मन्त्र)ॐ ह्रीं अर्हं णमो भगवते महति महावीर वड्ढमाण बुद्धिरिसीणं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र- अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा ॐ नमो बंभचारिणे अट्ठारह सहस्सासीलांग रथ धारिणे नमः (विधि) श्रद्धा सहित ४६ दिन तक १०८ वार ऋद्धि मंत्र जपने से मनोवांछित समस्त कार्यों की सिद्धि होती है ॥ ४८ ॥

रविव्रत पूजा

अडिल्ल—यह भविजन हितकार, सु रविव्रत जिन कही ।
करहु भव्यजन लोक सुमन देके सही ॥
पूजों पार्श्व जिनेन्द्र, त्रियोग लगाय के ।
मिटै सकल सन्ताप मिले निधि आयके ॥
मतिसागर इक सेठ कथा ग्रन्थन कही ।
उन्हीं ने यह पूजा कर आनन्द लही ॥
तातें रविव्रत सार सो भविजन कीजिये ।
सुख सम्पति सन्तान, अतुल निधि लीजिये ॥

दोहा—प्रणमो पार्श्व जिनेश को, हाथ जोड़ शिर नाय ।
परभव सुख के कारने, पूजा करूँ बनाय ॥
ऐतवार व्रत के दिना, एही पूजन ठान ।
ता फल स्वर्ग सम्पति लहैं, निश्चय लीजे मान ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः प्रतिष्ठापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अष्टक

उज्ज्वल जल भर कर अति लायो रतन कटोरन माहीं ।
धार देत अति हर्ष बढ़ावत जन्म जरा मिट जाहीं ॥
पारसनाथ जिनेश्वर पूजो रविव्रत के दिन भाई ।
सुख सम्पति बहु होय तुरत ही आनन्द मंगलदाई ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मलयागिरि केशर अति सुन्दर कुंकुम रंग बनाई ।
धार देत जिन चरनन आगे भवआताप नशाई । पारस० । चंदनम् ॥ २

मोती सम अति उज्ज्वल तन्दुल ल्याओ नीर पखारो ।
अक्षय पद के हेतु भावसों श्री जिनवर ढिग धारो । पार०। अक्षतं ॥३॥
केला अर मचकुन्द चमेली पारिजात के फल ल्यायो ॥
चुन चुन श्री जिन अग्र चढ़ाऊं मनवांछित फल पावो ॥ पारस.।पुष्पं ।
बाबर फेनी गूजा आदिक घृत में लेत पकाई ।
कञ्चन थार मनोहर भर के चरनन देत चढाई । पारस० नैवेद्यं ॥
मणिमय दीप रतनमय लेकर जगमग जोति जगाई ।
जिनके आगे आरति करके मोह तिमिर नश जाई । पारस०॥
चूरनकर मलयागिरि चंदन धूप दशांग बनाई ।
तट पावक में खेय भावसों कर्म नाश हो जाई । पारस० धूपं ॥
श्रीफल आदि बदाम सुपारी भाँति भाँति के लावो ।
श्रीजिनचरण चढ़ाय हरष कर तातैं शिवफल पावो । पारस० । फलं ॥
जल गन्धादिक अष्ट दरब ले अर्घ बनाओ भाई !
नाचत गावत हर्ष भावसों कञ्चन थार भराई । पारस० ॥ अर्घं ॥
गीता छंद--मन वचन काय विशुद्ध करके पार्श्वनाथ सुपूजिये ।
जल आदि अर्घ बनाय भविजन भक्तिवंत सुहूजिये ॥
पूज्य पारस नाथ जिनवर सकल सुख दातार जी ।
जे करत हैं नरनार पूजा लहत सुक्ख अपारजी । पूर्णार्घं

जयमाला

दोहा—यह जग में विख्यात है, पारसनाथ महान ।
जिनगुण की जयमालिका, भाषा करों बखान ॥

पद्धरी छन्द

जय जयप्रणमों श्री पार्श्वदेव, इन्द्रादिक तिनकी करत सेव ।
जय जय सु बनारस जन्म लीन्ह, तिहुँलोक विषै उद्योत कीन ॥
जय जिनके पितु श्री विश्वसेन, तिनके घर भए सुख चैन एन ।
जय वामादेवी मात जान, तिनके उपजे पारस महान ॥२॥

जय तीन लोक आनन्द देन, भविजन के दाता भए एन।
जय जिनने प्रभुका शरण लीन, तिनकी सहाय प्रभुजी सो कीन॥३॥
जय नाग नागनी भए अधीन, प्रभु चरनन लाग रहे प्रवीन।
तजके सो देह स्वर्ग सुजाय, धरणेन्द्र पद्मावती भये आय॥४॥
जे अञ्जन चोर अधर्मि जान, चोरी तज प्रभु को धरैं ध्यान।
जे मतिसागर इक सेठ जान, जिन रविव्रत पूजा करी ठान॥५॥
जय मृत्यु भये स्वर्गे सुजाय, ऋद्धी अनेक उनने सुपाय।
तिनके सुत थे परदेशमांहि, जिन अशुभ कर्म काटे सु ताहि॥६॥
जे रविव्रत पूजन करी सेठ, ता फलकर सबसे भई भेट।
जिन जिनने प्रभु का शरण लीन, तिन रिद्ध सिद्ध पाई नवीन॥७॥
जै रविव्रत पूजा करहि जेय, ते सुक्ख अनन्तानन्त लेय।
धरणेन्द्र पद्मावति हुए सहाय, प्रभु भक्ति जान तत्काल जाय॥८॥
पूजा विधान इहिविध रचाय, मन वचन काय तीनों लगाय।
जो भक्ति भाव जयमाल गाय, सो ही सुख सम्पति अतुल पाय॥९॥
बाजत मृंदग बीनादि सार, गावत नाचत नाना प्रकार।
तन नन नन नन नन ताल देत, सन नन नन नन सुर भर सुलेत॥१०
ता थेई थेई थेई पग धरत जाय, छम २ छम २ घुंघरू बजाय।
जे करहिं नृत्य इहि भाँत भाँत, ते लहहिं सुक्ख शिवपुर सुजात॥११॥

दोहा—रविव्रत पूजा पार्श्व की, करे भविक जन कोय।
सुख सम्पति इह भव लहै, तुरत सुरग पद होय॥

॥ पूर्णार्घम् ॥

अडिल्ल—रविव्रत पार्श्व जिनेन्द्र पूज्य भव मन धरे।
भव भव के आताप सकल छिन में टरे॥
होय सुरेन्द्र नरेन्द्र आदि पदवी लहै।
सुख सम्पति सन्तान अटल लक्ष्मी रहै॥

फेर सर्व विध पाय भक्ति प्रभु अनुसरै ।
नाना विध सुख भोग बहुरि शिव तिय वरै ॥

इत्याशीर्वादः

रविव्रत जाप्यमंत्र

ॐ नमो भगवते चिंतामणिपार्श्वनाथाय सप्तफणामण्डल-मंडिताय ॐ ह्रीं श्री धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय मम ऋद्धि-सिद्धि वृद्धि सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा । (१०८ लवंग से जाप्य करे प्रत्येक-मंत्र पर अग्नि में लौंग छोड़े)

श्री कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा

ह्रींकारं ब्रह्मरुद्धं स्वपरिकलितं वज्ररेखाष्टभिन्नम् ।
वज्रस्याग्रांतराले प्रणवमनुपमानद्दतं संश्रणीयं ॥
वर्णान्ताद्यान्सपिंडान् हभमरघझसखान् वेष्टयेत्तद्वदन्ते ।
वज्राणां यन्त्रमेतत् परकृतमशुभं दुष्टविद्यां विहन्ति ॥१॥
पिंडस्थान्पापनोदान् हभमरघझसखान् शांतियुक्तान्विदध्यु. ।
शाकिन्यो यान्तु नाशं वरलकयहसैस्तेन युक्तै र्महोग्राः ॥
यन्त्रं श्रीखण्डलिप्तं लिखतु शुचिवसाः कांस्यपात्रे सुमंत्री ।
लेखिन्या दर्भजात्यानिखिलजनहितं तस्य सौख्यं विभर्ति ॥२॥
अर्कश्चन्द्रः कुजः सौम्यः गुरुः शुक्रः शनैश्चरः ।
राहुः केतुः ग्रहाः शान्ति यान्ति यन्त्रस्थापने ॥ ३ ॥
सिद्धं विशुद्धं महिमानिवेशं, दुष्टारिमारिग्रहदोपनाशम् ।
सर्वेषु योगेषु परं प्रधानं, संस्थापये श्रीकलिकुण्डयंत्रम् ॥ ४ ॥

ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं, कलिकुण्डदण्ड श्रीपार्श्वनाथ धरणेन्द्र पद्मावती-सेवित अतुल-बलवीर्यपराक्रम सर्वविघ्न-विनाशक ! अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अष्टक

गङ्गापगातीर्थसुनीरपूरैः शीतैः सुगन्धैर्घनसारमिश्रैः ।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतुं, समर्चये श्रीकलिकुण्डयन्त्रम ॥ १ ॥

ओम ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्ड—श्रीपार्श्वनाथाय धरणेन्द्र—पद्मावती-सेविताय अतुल—बलवीर्यपराक्रमाय सर्वविघ्नविनाशनाय हम्ल्व्यूं भम्ल्व्यूं म्म्ल्व्यूं र्म्ल्व्यूं घम्ल्व्यूं भम्ल्व्यूं स्म्ल्व्यूं खम्ल्व्यूं जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

श्रीचन्दनैर्गन्धविलुब्धभृङ्गैः, मर्योत्तमैर्गन्धविलासयुक्तैः ।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतु, समर्चये श्रीकलिकुण्डयन्त्रम् । चंदनं ।
चन्द्रावदातैः सरलैः सुगन्धैर्रनिघपात्रेर्वरशालिपुञ्जैः ।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतुं, समर्चये श्रीकलिकुण्डयन्त्रम् ॥ अक्षतं ।
मन्दारजातीवकुलादिकुन्दैः, सौरभ्यरम्यैः शतपत्रपुष्पैः ।
दुष्टोपसेर्गैकविनाशहेतुं समर्चये श्रीकलिकुण्डयन्त्रम ॥ पुष्प ।
घाप्पायमाणैः घृतपूरपूरैः, नानाविधैः पात्रगतैरसाढ्यैः ।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतुं, समर्चये श्रीकलिकुण्ड यन्त्रम । नैवेद्यं ।
विश्वप्रकाशैः कनकावदातैर्दीपैः सुकपूरमयैर्विशालैः ।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतुं, समर्चये श्रीकलिकुण्डयन्त्रम ॥ दीपं
कपूरकृष्णागुरुचन्दनाद्यैः धूपैः सुगन्धीकृतदिग्विभागैः ।
दुष्टोपसर्गैकविनाहेतुं, समर्चये श्रीकलिकुण्डयन्त्रम । धूप
खर्जूरराजादनालिकेरैः, पुङ्गीफलैर्मोचफलाभिसारैः ।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतुं, समर्चये श्रीकलिकुण्डयन्त्रम् ॥ फलं
जलगन्धाक्षतपुष्पनैवेद्यैः दीपधूपफलनिकरैः ।
श्रीकलिकुण्डाय वरं ददामि कुसुमांजलिं विमलम् ॥

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्डश्रीपार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावतीसेविताय अतुलबलवीर्यपराक्रमाय सर्वविघ्नविना-

शनाय हम्ल्व्र्यूं भम्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं र्म्ल्व्र्यूं ह्म्ल्व्र्यूं मम्ल्व्र्यूं स्म्ल्व्र्यूं रम्ल्व्र्यूं अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाल

वरसम्मत्त विहूसणाहं, भव्वयणाहं जिणवर सुमिरणो।
णासइ पाउ असेस लहु तमु जेम दिवायर विथरणो॥ १
सुदुद्धरअञ्जनपव्वयकाउ, दिसाकरि तामण मेह णिणाउ।
सदापुवि चिगुण देह करिंदु, मणम्मि भणंतिहं देउजिणंदु॥ १
पसुत्त समुट्ठिउ दन्ति समूहु, महावल लोल तुलाविय जीहु।
सरोसुण देह कमं ण मइन्दु। मणम्मि०॥ २
तमालमहीरुह भंपइसीसु दिणेसरसणिहु लोयण भीसु।
पसण्णु हवेइ पिसाइ रउद्दु। मणम्मि०॥ ३
वियंभियवेल णहंगणि बोलु, जलुब्भव जीव पयासिय रोलु।
अथाहुं वि गोपयमित्त समुद्दु। मणम्मि।
फुरंतफमाणिरुद्धदियंतु, तिलोयखयंकरु णाइं कयन्तु।
वले वि ण डक्कइकूरु फणिंद। मणम्मि०॥ ५
दुसञ्चर तोरणिपव्वदुग्गि, असङ्ख महीरुड भीसणमग्गि।
कहिं पिण लग्गइ तक्कर विंद। मणम्मि०॥ ६
धिएणइंसित्तउ तिवु जलन्तु, जगत्तउजालइणाडगिलितु।
मणोसिद्धी वेइ मुहं जिम चन्दु। मणम्मि०॥ ७
णिमीलियवन्धवसज्जणचक्खु, अणेय पयार पयासिय दुक्खु।
विहट्टइ सुक्खलवन्धु रउद्द। मणम्मि०॥ ८
णमोहरइन्दियसोक्खणिवार, भयंदरसूलसिलेसमसार।
पणासइ रोउ तहाजरविंदु। मणम्मि०॥ ६
दुलंघु रणम्पिणु पासइवूहु, ण मारि वि सक्कइ सत्त समूहु।
किवाणु वि होइ अलंकर विंदु। मणम्मि०॥ १०
घत्ता–घरस्वगि दुमायन्तहं गारुडियहं गारुडिम फिट्टइ विसुजिहं।

भव्वयणह णायणाणं दिजिणु सुमरन्तहं उवमग्गुतिहं ॥
छन्द—कन्दर्पद्विपकुंभदारणहरिः कर्म्माद्रिभेदाशनि ।
मिथ्याज्ञानतमोविनाशतरणिः क्रोधादि यत्नीश्वरः ॥
अज्ञानद्रुमखण्डनैकफरशु मुक्त्यंगनांवल्लभः ।
श्रीमन पार्श्वजिनेश्वरो भयहरो कुर्यात्सिता मङ्गलं ॥

शार्दूल छन्द

प्रोद्यत्सन्मणिनागनायकफटाटोपोल्लसन्मण्डपम ।
सद्भक्त्यानमदिन्द्रमौलिमणिभाभास्वत्पदाम्भोरुहम ॥
प्रोन्मीलन्नवनीरदालिपटलीशङ्कासमुत्पादकम् ।
ध्यायेन श्रीकलिकुण्डदण्डविलसन्चण्डोग्रपार्श्वप्रभुम ॥

छन्द

सुमिद्ध विशुद्ध विबोधनिधान । विकाशितविश्व विवेकविधान ।
विडम्बितकाम जगज्जय चंड । सदा सदयोदय जय कलिकुंड ॥१॥
पयोधि-पयोधर-धीर निनाद । निराकृत-दुर्मत-दुर्मदवाद ।
असत्यपथैकपतत्यविदण्ड । सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड ॥२
निराकुल निर्मलशील निरीह । निराश निरञ्जन संयमसिंह ।
विपाटित-दुष्ट-मदद्विपगण्ड । सदा सदयोदय जय कलिकुंड ॥३
कपाल-चतुष्टय-काष्ठ-कुठार । निरामय नित्य नरामर सार ।
विदीर्ण-घनाघन-विघ्न-करंड । सदासदयोदय जय कलिकुंड ॥४
अनल्प-वितल्प विलीन विकल्प । विशल्य विशूल विसर्प विदर्प ।
विरोग विभोग विखंड विमुंड । सदा सदयोदय जय कलिकुंड ॥५
फणेश नरेश सुरेश महेश । दिनेश शुभेश गणेश गुणेश ।
वितर्क विकासित-सत्कजखंड । सदा सदयोदय जय कलिकुंड ॥६
विशोक विशङ्क विमुक्तकलङ्क । विकासित विश्व विदूरित-पङ्क ।
कलामत केवल चिन्मयपिंड । सदा सदयोदय जय कलिकुंड ॥७

निकन्दितमोहमहीरुहकन्द । वरप्रद सत्पद सम्पदमन्द ।
त्रिदंड-विखंडित माय-विहंड । सदा सदयोदय जय कलिकुंड ॥८

मालिनी छन्द

कलिलदमनदक्षंयोगियोगोपलक्षंह्यविकलकलिकुंडोद्दंडपार्श्वप्रचंडं
शिवसुखशुभसंपद्वासबल्लीवतंसंप्रतिदिनमहमीढेचद्धमानर्द्धिसिद्धयं

आशीर्वादः । स्रग्धरा छन्द

सर्पत्सर्पत्सदर्पोत्फटतरलतरोत्तारफुत्कारवेला-
संघट्टोत्पत्तिवाताहतशठकमठोद्भूतजीमूतजातः ।
खेलत्स्वर्गापगांतजलधितललसल्लोलडिंडीरपिंड-
व्याजाच्छ्रीपार्श्वराजोज्ज्वलविजयवशो राजहंसोऽवताद्वः ॥१

अथ आनन्द स्तवन छन्द

प्रणम्य देवेन्द्रनुतं जिनेन्द्रं सर्वज्ञमज्ञप्रतिवोधसज्ञं ।
स्तोष्ये सदाहं कलिकुंडयन्त्रं सर्वांगविघ्नौघविनाशदक्षम् ॥१
नित्यं स्मरंतोपि हियेपि भक्त्या शक्त्या स्तुवंतोपि जपन्सुमन्त्रं ।
पूजां प्रकुर्वन् हृदये दधानाः सचेप्सितं यच्छति यन्त्रराज ॥२
गृहांगणे कल्पतरुः प्रसूतश्चिंतामणिस्तस्य करे लुलोठ ।
गौस्तस्य तुल्यास्ति च कामधेनोर्यस्यास्ति भक्तिः कलिकुंडयन्त्रे॥३
नमामि नित्यं कलिकुण्डयन्त्रं सदा पवित्रं कृतरत्नपात्रम् ।
रत्नत्रयाराधनभावलभ्यं सुरासुरैर्वंदितमाद्यमीढ्यम् ॥४॥
सिंहेभसर्पाग्निजलाब्धिचौरविपादयोऽन्ये च सदापि विघ्नाः ।
व्याध्यादयो राजकुलोद्भवं भयं नश्यंत्यवश्यं कलिकुण्डपूजया॥५॥
दुःखादिवन्धं निगड निदानं त्रुट्यन्ति शीघ्रं प्रजपन्सुमन्त्रम् ।
ज्वरातिसारग्रहणीविकाराः प्रयांति नाशं कलिकुण्डपूजया ॥६॥
वन्ध्यापि नारी वहुपुत्रयुक्ता संसारशक्ता प्रियचित्तरक्ता ।
यस्यास्ति चित्ते कलिकुण्डर्चिता नमाम्यहं तं सततं त्रिकालम्॥७॥

अनर्थसर्वप्रतिघातदक्षं सौख्यं यश. शान्तिकपौष्टिकाढ्यम् ।
नमाम्यहं तं कलिकुण्डयन्त्रं विनिर्गतं यज्जिनराजवक्त्रात् ॥८॥

मालिनी छन्द

भुवनमदननिंद्य देवराजाभिवन्द्यं
पठति च वरभक्त्या सर्वदा योपि शांत्यै ।
सकलसुखमनल्पं कल्पयावत्प्रपेदे
विनिहतविपविघ्नं यन्त्रराजप्रभावात् ॥१॥

॥ महार्घं ॥

जाप्य मन्त्र १

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्ड श्रीपार्श्वनाथ धरणेन्द्रपद्मावतीसेवित अतुलबलवीर्यपराक्रम ममात्मविद्यां रक्ष रक्ष परविद्यां छिंधि छिंधि भिंधि भिंधि स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रौ स्फ्रः नम स्वाहा ॥ १ ॥

द्वितीय मन्त्र २

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ धरणेन्द्रपद्मावतीसेवित ममेप्सितं कार्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥ २ ॥

तृतीय मन्त्र ३

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्डस्वामिन्नतुलबलवीर्य पराक्रम ममात्मविद्यां रक्ष रक्ष परविद्यां छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्ध स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रौं स्फ्र हूं फट् स्वाहा ॥ ३ ॥

मंत्रस्तोत्रम्

श्रीमद्देवेन्द्र–वद्यामल–मणि–मुकुट ज्योतिषाञ्चक्रवाडै-
र्व्यालीढं पादपीठं शठ–कमठ–कृतोपद्रवावाधितस्य ।
लोकाऽलोकावभासि–स्फुरदुरु–विमल–ज्ञान–सद्दीपदीप–
प्रध्वस्तध्वान्तजालस्य वितरतु सुखं पार्श्वनाथस्य नित्य ॥ १ ॥

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः प्रभास्वन्मरकत–मणिभाऽऽक्रान्त मूर्तिर्हि वं मं
वं सं तं वीजमन्त्रैः कृतसकलगजत् क्षेम–रक्षोरु–रक्षः।
क्षां क्षीं क्षूं क्षौं समस्त–क्षिति–तल–महित ज्योतिरुद्योतितीर्थं
क्षैं क्षों क्षौं क्षः क्षीं बीजात्मक-सकल-तनो-पार्श्वनाथस्य नित्यम् ॥२॥
ह्रींकारं रेफयुक्तं रर रर रर रां देव सं संयुतं ह्रीं।
क्लीं क्लूं द्रां द्रीं सुरेभं भयदमलकुला पंचकोद्भाषि ह्रूं ह्रूं॥
द्रूं द्रूमत्युष्णवर्णैरणिलमिह जगन्मे विधेद्ध्याशु वश्यं।
वौं वं मंत्रं पठन्तं त्रिजगदधिपते ! पार्श्व ! मां रक्ष नित्यं॥ ३॥
ओं क्रों ह्रीं सर्ववश्यं कुरु कुरु सरसं क्रामणं तिष्ठ मक्षं
हैं हैं हैं रक्ष रक्ष प्रभलभलमहाभैरवातिभीतेः।
द्रां द्रीं द्रूं द्रावय द्रावय हन हन फट् फट् वषट् भिन्धि भिन्धि।
स्वाहा मंत्रं पठन्तं त्रिजगदधिपते ! पार्श्व ! मां रक्ष नित्यम् ॥४॥
हं जं र्व्यों क्ष्वीं च हंसः कुवलयकलितैः रंजितांगप्रसूनैं।
जं वं ह्वः पक्षि हं हं हर हर हंतं पक्षिपःपक्षिकोपम्।
वं जं हं सः सर सर सर सूंस स्वधावीजमंत्रैः–
स्त्रायस्व स्थावरादि–प्रबल-विष-सुसंहारिम्भदः पार्श्वनाथः॥५॥
क्षां क्षीं क्षूं क्षौ क्षः एतैरहिपति–रतमंत्राक्षरैरीथ नित्यं।
ह्रा ह्राकारीभ्रनादैं ज्वलदनलशिखाकल्पदीर्घोर्ध्वकेशैः।
पिंगाक्षैः लोलजिह्वै विषम–विषधराऽलंकृतैस्तीक्ष्णदंष्ट्रैः।
भूतैः प्रेतैःपिशाचैरनरवकृतमहोपद्रवाद्रक्षरक्ष॥ ६॥
ओं औं क्रः शाकिनीनां सपदि हरमदं छिंद भिंद द्वयं च
रमौ दमं तं दिव्यदीर्घागतिमतिकथितस्तम्भनं संविधेहि।
फट् फट् फट् सर्वरोगग्रहमरण भयोच्चाटनं चैव पार्श्वं।
त्रायस्वाशेषदोषादमरनरवरैर्नूतपादारविन्दः॥ ७॥
इत्थं मन्त्राक्षरोत्थं वचनमनुपमं पार्श्वनाथस्य नित्यम्।
विद्वेषोच्चाटनस्तंभनवशकृत पापरोगापहेनि।

प्रोत्सर्पज्जंगम स्थावरविषम विषध्वंशनं स्वायुरारो-
ग्यैश्वर्यापाद् भक्त्या स्मरति पठति यो स्तौति तस्येष्टसिद्धि ॥८॥

॥ महार्घं ॥

श्री ऋषि मण्डल पूजा भाषा

स्थापना ॥ दोहा ॥

चौबीस जिन पद प्रथम नमि, दुतिय सुगणधर पाय।
त्रितिय पंच परमेष्ठि को, चौथे शारद माय॥
मन वच तन ये चरन युग, करहुँ सदा परनाम।
ऋषि मण्डल पूजा रचों, बुधि बलद्यो अभिराम॥

अडिल्ल छन्द—चौबीस जिन वसु वर्ग पंच गुरु जे कहे।
रत्नत्रय चव देव चार अवधी लहे॥
अष्ट ऋद्धि चव दोय सूर ह्रीं तीन जू।
अरहन्त दश दिग्पाल यन्त्र में लीन जू॥

दोहा—यह सब ऋषि मंडल विषैं, देवी देव अपार।
तिष्ठ तिष्ठ रक्षा करो, पूजूं वसु विधि सार॥

ओं ह्रीं वृषभादि चौबीस तीर्थङ्कर अष्ट वर्ग अर्हन्तादि पंच-पद दर्शन ज्ञान चारित्र सहित चतुर्निकाय देव, चार प्रकार अवधिधारक श्रमन. अष्ट ऋद्धि संयुक्त बीस चार सूरि तीन ह्रीं अर्हन्त बिम्ब दश दिग्पाल यन्त्र सम्बन्धी परम देवाय अत्र अव-तर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्॥

अथाष्टक हरिगीता छन्द।

जल क्षीर उदधि समान निर्मल तथा मुनि चित सारसो।
भर भृङ्ग मणिमय नीर सुन्दर तृषा तुरत निवारसो॥

जहँ सुभग ऋषि मण्डल विराजैं पूजि मन वच तन सदा।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा ॥

ओं ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय यन्त्र सम्बन्धि परम देवाय जलं ॥ १ ॥

मलय चन्दन लेय सुन्दर गंध सों अलि झंकरैं।
सो लेहु भविजन कुंभ भरिके तप्त दाह सबै हरैं ॥
जहँ सुभग ऋषि० ॥ तिस मनो० ॥ चंदनं ॥
इन्दु किरण समान सुन्दर जोति मुक्ता की हरैं।
हाटक रकेबी धारि भविजन अखय पद प्राप्ती करैं॥
जहँ सुभग ऋषि० ॥ तिस मनो० ॥ अक्षतं ॥
पाटल गुलाब जुही चमेली मालती वेला घने।
जिस सुरभितें कलहंस नाचत फूल गुन्थि माला बने।
जहँ सुभग ऋषि० ॥ तिस मनो० ॥ पुष्पं० ॥
अर्धं चन्द्र समान फेनी मोदकादिक ले घने।
घृत पक्व मिश्रित रस सु पूरे लख क्षुधा डायनि हने ॥
जहँ सुभग ऋषि० ॥ तिस मनो० नैवेद्यं ॥
मणि दीप ज्योति जगाय सुन्दर वा कपूर अनूपकं।
हाटक सुथाली मांहि धरिके वारि जिनपद भूपकं ॥
जहँ सुभग ऋषि० ॥ तिस मनो० दीपं ॥
चन्दन सु कृष्णागरु कपूर मंगाय अग्नि जराइये।
सो धूप-धूम्र आकाश लागी मनहुँ कर्म उड़ाइये।
जहँ सुभग ऋषि० । तिस मनो० ॥ धूपं ॥
दाडिम सु श्रीफल आम्र कमरख और केला लाइये।
मोक्ष फल के पायवे की आश धरि करि आइये ॥
जहँ सुभग ऋषि० । तिस मनो० ॥ फलं ॥
जल फलादिक द्रव्य लेकर अर्घ सुन्दर कर लिया।

संसार रोग निवार भगवन् वारि तुम पद में दिया ॥
जहँ सुभग ऋषिमण्डल विराजें पूजि मन वच तन सदा ।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा ॥
ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय यन्त्रसम्बन्धि परमदेवायार्घं ।

अर्घावली—अडिल्ल छन्द

वृषभ जिनेश्वर आदि अन्त महावीरजी ।
ये चउवीस जिनराज हनों भवपीर जी ॥
ऋषि मण्डल विच ह्रीं विषै राजै सदा ।
पूजूँ अर्घ बनाय होय नहिं दुख कदा ॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय वृषभादिचतुर्विंशति तीर्थङ्कर परम देवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

आदि कवर्ग सु अन्तजानि शासापहा ।
ये वसुवर्ग महान यन्त्र में शुभ कहा ॥
जल शुभ गंधादिक वर द्रव्य मँगाय के ।
पूजहूँ दोउ करजोर शीश जिन नाय के ॥

ओं ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय अष्टवर्ग कवर्गादि शापासाहा हम्ल्व्यूंरूँ परमयंत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

कामिनी मोहनी छन्द

परम उत्कृष्ट परमेष्टी पद पाँच को ।
नमत शत इन्द्रखगवृन्द पद साँच को ॥
तिमिर अघनाश करण को तुम अर्क हो ।
अर्घ लेय पूज्य पद देत बुद्धि तर्क हो ॥

ओम् ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थायपंचपरमेष्ठिपरमदेवायार्घं०

सुन्दरी छन्द

सुभग सम्यग् दर्शन ज्ञान जू । कह चारित्र सुधारक मान जू ॥
अर्घ सुन्दर द्रव्य सु आठ ले । चरण पूजहुं साज सु ठाठ ले ॥

ओं ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशनसमर्थेभ्य सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनवासी देव व्यन्तर जोतिषी कल्पेन्द्र जू।
जिनगृह जिनेश्वर देवराजै रत्न के प्रतिबिम्ब जू॥
तोरण ध्वजा घण्टा विराजै चँवर ढुरत नवीन जू।
वर अर्घ ले तिन चरण पूजों हर्ष हिय अति लीन जू॥

ओं ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय भवनेन्द्र-व्यंतरेन्द्र ज्योतिपेन्द्र कल्पेन्द्र चतुःप्रकारदेवगृहे श्रीजिनचैत्यालयसंयुक्तायार्घं।

दोहा—अवधि चार प्रकार मुनि, धारत जे ऋषिराय।
अर्घ लेय तिन चर्ण जजि, विघन सघन मिट जाय॥

ओं ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समथभ्यो चतुःप्रकार अवधिकारक मुनिभ्यो अर्घं० ॥

भुजंगप्रयात छन्द

की आठ ऋद्धि धरे जे मुनीशं। महा कार्यकारी बखानी गनीशं॥
जल गंध आदि दे जजों चर्न मेरे।
लहों सुख सवेरे हरो दुःख फेरे॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्यो अष्टऋद्धिसहित मुनिभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री देवी प्रथम बखानी, इन आदिक चौबीसों मानी।
तत्पर जिन भक्ति विषै हैं, पूजत सब रोग नशै हैं॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्यो श्री आदि चतुर्विंशति-देविभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

❀ हन्सा छन्द ❀

यन्त्र विषै वरन्यौ तिनकोन, ह्रीं तहँतीन युक्त सुखभौन।
जल फलादि वसु द्रव्य मिलाय, अर्घ सहित पूजूँ शिरनाय॥

ओं ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय त्रिकोणमध्ये तीन ह्रीं संयुक्ताय अर्घं नि०

❀ तोमर छन्द ❀

दस आठ दोष निरवारि, छियालीस महागुण धारि।
वसु द्रव्य अनूप मिलाय, तिन चर्न जजों सुखदाय॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय अष्टादशदोषरहिताय छियालीसमहागुणयुक्ताय अरहन्त परमेष्ठिने अर्घं।

❀ सोरठा ❀

दश दिश दस दिग्पाल, दिशानाम, सो नामवर।
तिनगृह श्रीजिन आलं, पूजौं मैं वन्दौं सदा।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रविनाशनसमर्थेभ्यो दश दिग्पालेभ्यो जिन भक्तियुक्तेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—ऋषि मंडल शुभयन्त्र के, देवी देव चितारि।
अर्घ सहित पूजहुँ चरन, दुख दारिद्र निवारि॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्यो ऋषिमण्डल सम्बन्धि-देवीदेवेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा—चौवीसों जिन चरन नमि, गणधर नाऊँ भाल।
शारद पद पंकज नमूँ, गाऊँ शुभ जयमाल॥

जय आदीश्वर जिन आदि देव, शत इन्द्र जजैं मैं करहुं सेव।
जय अजित जिनेश्वर जे अजीत, जे जीत भये भव तें अतीत॥
जय सम्भव जिन भवकूप मॉहि, डूबत राखहु तुम शर्ण आंहि।
जय अभिनन्दन आनन्द देत, ज्यों कमलों पर रवि करत हेत॥
जय सुमति सुमति दाता जिनन्द, जै कुमति तिमिर नाशन दिनन्द।
जय पद्मालंकृत पद्मदेव, दिन रैन करहुं तव चरन सेव॥
जय श्रीसुपार्श्व भवपाश नाश, भवि जीवनकूँ दियो मुक्तिवास।
जय चन्द जिनेश दया निधान, गुणसागर नागर सुख प्रमान॥
जय पुष्पदन्त जिनवर जगीश, शत इन्द्र नमत नित आत्मशीश।

जय शीतल वच शीतल जिनेन्द, भवताप नशावत जगत चन्द ॥
जय जय श्रेयांस जिन अति उदार, भवि कण्ठ मांहि मुक्ता सुहार ।
जय वासुपूज्य वासव खगेश, तुम स्तुत करि पुनि नमि हैं हमेश ॥
जय विमल जिनेश्वर विमल देव, मलरहित विराजत करहुं सेव ।
जय जिन अनन्त के गुण अनन्त, कथनो कथ गणधर लहे अंत ॥
जय धर्म धुरन्धर धर्मवीर, जय धर्म चक्र शुचि ल्याय वीर ।
जयशान्ति जिनेश्वर शान्तिभाव, भववन भटकत शुभमग लखाय॥
जय कुन्थु कुन्थुवा जीव पाल, सेवक पर रक्षा करि कृपाल ।
जय अरहनाथ अरि कर्म शैल, तपवज्र खण्ड लहि मुक्ति गैल ॥
जय मल्लि जिनेश्वर कर्म आठ, मल डार जु पायो मुक्ति ठाठ ।
जय सुव्रत मुनिसुव्रत धरन्त, जय सुव्रत व्रत पालत महन्त ॥
जय नमि नमत सुर वृन्द पाय, पद पङ्कज निरखत शीश नाय ।
जय नेमि जिनेन्द्र दया निधान, फैलायो जग में तत्त्व ज्ञान ।
जय पारस जिन आलस निवारि, उपसर्ग रुद्र कृत जीत धारि ।
जय महावीर महाधीरधार, भवकूप थकी जग तैं निकारि ॥
जय वर्ग आठ सुन्दर अपार, तिन भेद लखत वुध करत सार ।
जय परमपूज्य परमेष्ठि सार, जिन सुमरत वरसे आनन्द धार ॥
जय दर्शन ज्ञान चरित्र तीन ये रत्न महा उज्ज्वल प्रवीन ।
जय चार प्रकार सुदेव सार, तिनके गृह जिन मन्दिर अपार ॥
जो पूजै वसुविधि द्रव्य ल्याय, मैं इत जजि तुम पद शीश नाय ।
जो मुनिवर धारत अवधि चारि, तिन पूजैं भवि भवसिन्धु पार ॥
जो आठ ऋद्धि मुनिवर धरन्त, ते मोपै करुणा करि महन्त ।
चौबीस देवि जिन भक्ति लीन, वन्दन ताको सु परोक्ष कीन ॥
जे ह्रीं तीन त्रिकोण मांहिं, तिन नमत सदा आनन्द पाहिं ।
जय जय जय श्री अरहन्त बिम्ब, तिन पद पूजूं मैं खोइ डिम्ब ॥
जो दस दिग्पाल कहे महान, जे दिशा नाम सो नाम जान ।

ऋषिमंडल यंत्र का वलयाकार

कलिकुंडदंड यंत्र
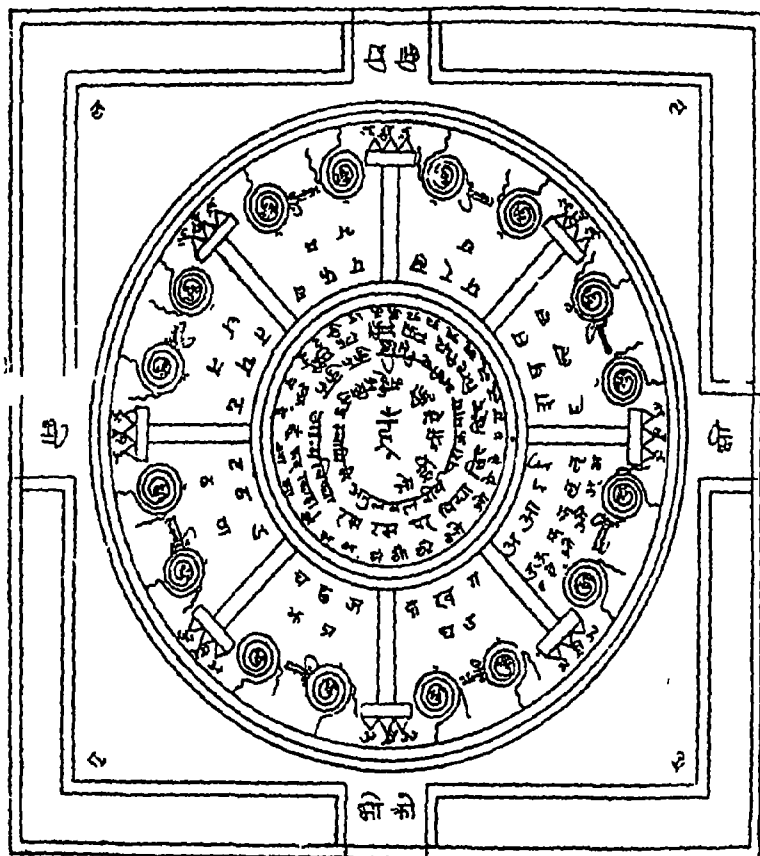
जे तिनके गृह जिनराज धाम, जे रत्नमई प्रतिमाभिराम ॥
ध्वज तोरन घन्टा युक्तसार, मोतिन माला लटके अपार।
जे ता मधि वेदी है अनूप, तहं राजत हैं जिनराज भूप ॥
जय मुद्रा शान्ति विराजमान, जा लखि वैराग्य वढ़े महान।
जे देवि देव सु आय आय, पूजैं तिन पद मन वचन काय ॥
जल मिष्ट सु उज्ज्वल पय समान, चन्दन मलयागिर को महान
अत्तत अनियारे सुलाय, जे पुष्पन की माला वनाय ॥
चरु मधुर विविध ताजी अपार, दीपक मणिमय उद्योतकार।
जे धूप सु कृष्णागरु सुखेय, फल विविध भांति के मिष्ट लेय ॥
वर अर्घ अनूपम करत देव, जिनराज चरण आगे चढ़ेव।
फिर मुखतें स्तुति करते उचार, हो करुनानिधि संसार तार ॥
मैं दुःख सहे संसार ईश, तुमतें छानी नाहीं जगीश।
जे इहि विधि मौखिक स्तुति उचार, तिन नशत शीघ्र ससार भार ॥
इह विधि जो जन पूजन कराय, ऋषि मंडल यत्र सु चित्त लाय।
जे ऋषि मण्डल पूजा करन्त, ते रोग शोक संकट हरन्त ॥
जे राजा रन कुल वृद्धि जान, जल दुर्ग सुगज केहरि वखान।
जे विपत चोर अरु कहि मसान, भय दूर करै यह सकल जान ॥
जे राजभ्रष्ट ते राज पाय, पद भ्रष्ट थकी पद शुद्ध थाय।
धन अर्थी जन पावै महान, यामें संशय कछु नाहिं जान ॥
भार्या अर्थी भार्या लहन्त, सुत अर्थी सुत पावे तुरन्त।
जे रूपा सोना ताम्रपत्र, लिख तापर यन्त्र महा पवित्र ॥
ता पूजैं भागे सकल रोग, जे वात पित्त ज्वर नाशि शोग।
तिन गृह तैं भूत पिशाच जान, ते भाग जांहि संशय न आन ॥
जे ऋषि मण्डल पूजा करन्त, ते सुख पावत लहि लहैं न. अन्त।
जब ऐसी मैं मन मांहि जान, तव भाव सहित पूजा सुठान ॥
वसुविधि से सुन्दर द्रव्य ल्याय, जिनराज चरण आगे चढाय।

फिर करत आरती शुद्ध भाव, जिनराज सभी लख हर्ष आव ॥
तुम देवन के हो देव देव, इक अरज चित्त में धारि लेव।
जे दीन दयाल दया कराय, जो मै दुखिया इह जग भ्रमाय॥
जे इस भव में वास लीन, जे काल अनादि गमाय दीन।
मैं भ्रमत चतुर्गति विपिन मांहि, दुख सहै सुख को लेश नांहि॥
ये कर्म महारिपु जोर कीन, जे मनमाने ते दुःख दीन।
ये काहे को नहिं डर धराय, इनतैं भयभीत भयो अघाय॥
यह एक जन्म की बात जान, मैं कह न सकत हूँ देवमान।
जब तुम अनन्त परजाय जान, दरशायो संसृति पथ विधान॥
उपकारी तुम बिन और नांहि, दीखत मोकों इस जगत मांहि।
तुम सब लायक ज्ञायक जिनेन्द, रत्नत्रय सम्पति द्यो अमन्द॥
यह अरज करूं मैं श्री जिनेश, भव भव सेवा तुम पद हमेश।
भव भव में श्रावक कुल महान, भव भव में प्रकटित तत्त्वज्ञान॥
भव भव में व्रत हो अनागार, तिस पालन तैं हों भवाब्धि पार।
ये योग सदा मुझको लहान, हे दीनबन्धु करुणा निधान॥
"दौलत" आसेरी मित्र दोय, तुम शरण गही हरषित सुहोय।

छन्द घत्ता

जो पूजे ध्यावे, भक्ति बढ़ावे, ऋषि मण्डल शुभ यन्त्र तनी।
या भव सुख पावे, सुजस लहावे पर भव स्वर्ग सुलक्ष धनी॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशनसमर्थाय रोगशोक-सर्व सङ्कट-हराय, सर्वशान्ति-पुष्टिकराय, श्री वृषभादि चौबीस तीर्थङ्कर अष्ट वर्ग अरहंतादि पंचपद दर्शन ज्ञान चारित्र सहित चतुर्णिकाय देव चव प्रकार अवधिकधारक श्रमण अष्ट ऋद्धि संयुक्त वीस चार सूरि तीन ह्रीं अर्हंत बिम्ब दशदिग्पाल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

आशीर्वाद

ऋषि मण्डल शुभ यन्त्र को, जो पूजे मन लाय।
ऋद्धि सिद्धि ता घर बसै, विघन सघन मिट जाय ॥
विघन सघन मिट जाय, सदा सुख वो नर पावे।
ऋषि मण्डल शुभ यन्त्र तनी, जो पूज रचावै ॥
भाव भक्ति युत होय, सदा जो प्राणी ध्यावै।
या भव में सुख भोग, स्वर्ग की सम्पति पावै ॥
या पूजा परभाव मिटे, भव भ्रमण निरन्तर।
यातैं निश्चय मान करो, नित भाव भक्तिधर ॥

इत्याशीर्वादः। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

॥ इति श्री ऋषि मण्डल पूजा संपूर्णम् ॥

सम्वत् भूव ग्रह मांहि, सावन सार असेत।
पहर रात याकी रही, पूर्ण करी सुख हेत ॥

॥ इतिः ॥

नवग्रह निवारक समुच्चय पूजा

अर्कचंद्र कुज सौम गुरु शुक्र शनिश्चर राहु।
केतु ग्रहारिष्ट नाशने श्रीजिनपूज रचाहु ॥

ओं ह्रीं सर्व ग्रह विघ्न अरिष्टनिवारक श्री चतुर्विंशति जिन अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

क्षीर सिंधु समान उज्ज्वल नीर निरमल लीजिये।
चौवीस श्री जिन चरण आगे धार त्रय शुभ दीजिये ॥
रवि सौम भूमिज सौम्य गुरु कवि शनितम पूत केतवे।
पूजिये चौबीस जिन ग्रहारिष्ट नाशन हेतवे ॥

ओं ह्रीं सर्व ग्रहारिष्ट निवारक चतुर्विंशति जिनेभ्यो जलं० ।
श्री खंड कुंकुम हित सुमिश्रित घिसों मनकर चाव सो ।
चौबीस श्री जिनराज अघहर चरण चरचों भावसों ॥ रवि.चं.
अक्षत अखंडित शालि सम्भव पुंज मुक्ता फल समं ।
चौबीसश्रीजिनचरण पूजत नासह्वै नवग्रह भ्रमं ॥रवि. अक्षतं.
कुन्द कमल गुलाव केतिक मालती जाही जुही ।
कामबान विनाश कारण पूजि जिनमाला गुही ॥ रवि. पुष्पं.॥
फेनी सुपारी पूवा पापर लेहु मोदक घेवरं ।
शत छिद्र आदिक विविध व्यञ्जन क्षुधाहरबहुसुखकरं ॥रवि.नैवेद्य
मणिमय जगमग जोति तम हर प्रभू आगे लाइये ।
अज्ञाननाशक जिन प्रकाशक मोहतिमिर नसाइये ॥रवि० दीपं॥
कृश्नागरु घन सार मिश्रित लौंग, चन्दन लेइये ।
ग्रहारिष्ट नाशनहेत भविजन धूप जिनपद खेइये ॥ रवि० धूपं॥
वादाम पिस्ता सेव श्रीफल मोच निंबू सद फलं ।
चौबीस श्रीजिनचरण पूजत मनोवांछित शुभफलं ॥रवि.फलं
जल गंध सुमन अखण्ड तन्दुल चरु सु दीपक धूपकं ।
फल द्रव्यशुद्ध दधी च मिश्रित अर्घ देय अनूपकं ॥रवि. ।अर्घम्

प्रत्येक अर्घ

अडिल्ल—सलिल गंधले फूल सुगन्धित लीजिए ।
तन्दुल ले चरु दीपक धूप खेवीजिये ॥
फल ले अर्घ वनाय प्रभू पद पूजिये ।
रवि अरिष्ट को दोष तुरत तहँ धूजिये ॥
ॐ ह्रीं रवि अरिष्ट निवारक श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अर्घम् ॥ १ ॥
जल चन्दन बहु फूल सु तन्दुल लीजिये ।
दुग्ध शर्करा सहित सु व्यंजन कीजिये ॥
दीप धूप फल अर्घ बनाय धराजिये ।

शीश जिनन्द को नाय अरिष्ट हरीजिये ॥
ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्ट निवारक चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घम् ॥ २ ॥

सुरभित जल श्री खंड कुसुम तन्दुल भले ।
व्यंजन दीपक धूप सदा फल सो रले ॥
वासुपूज्य जिनराय अर्घ शुभ दीजिये ।
मंगल ग्रह को रिष्ट नाश कर लीजिये ॥
ॐ ह्रीं भौमारिष्ट निवारक वासुपूज्य जिनाय नमः अर्घम् ॥ ३ ॥

शुभ सलिल चंदन सुगन अक्षत क्षुधाहरचरु लीजिये ।
मणिदीप धूप सुफल सहित वसु दरव अर्घ जू दीजिये ॥
विमलनाथ अनन्तनाथ सु धर्मनाथ जु शांतये ।
कुंथ अर जु नमि जिन महावीर आठ जिन यजे ।
ॐ ह्रीं सोम ग्रहारिष्ट निवारक अष्ट जिनाय अर्घम् ॥ ४ ॥

जल चन्दन फूलं तंदुल मूलं चरु दीपक ले धूप फलं ।
वसु विधि से अर्चें वसुविधि चर्चें कीजै अविचल मुक्ति धरं ॥
ऋषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति सुपारस नाथ वरं ।
शीतलनाथ श्रेयांस जिनेश्वर पूजत सुर गुरु दोष हरं ॥
ॐ ह्रीं सुर गुरु दोष निवारक वसु जिनवराय अर्घम् ॥ ५ ॥

जल चन्दन ले पुष्प और अक्षत घने ।
चरु दीपक बहु धूप सु फल अति सोहने ॥
गीत नृत्य गुण गाय अर्घ पूरन करैं ।
पुष्पदन्त जिन पूज शुक्र दूषण हरै ॥
ॐ ह्रीं शुक्रारिष्ट निवारक पुष्पदन्त जिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

प्राणी नीरादिक वसु दर्व ले मन वच काय लगाय ।
अष्ट कर्म को नाश ह्वै अष्ट महा गुण पाय हो ।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ॥
प जी रवि सुत सहज दुख जाय ।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ।

ओं ह्रीं शनि अरिष्ट नाशक मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ७ ॥

जल गंध पुष्प अखण्ड अक्षत चरु मनोहर लीजिये।
दीप धूप फलौघ सुन्दर अर्घ जिन पद दीजिये ॥
जब राहु गोचर राशि में दुख देइ दुष्ट सुभावसों।
तब नेमि जिनके भाव सेती चरण पूजे चावसों ॥

ओं ह्रीं राहु अरिष्टनाशक नेमिनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ॥ ८ ॥

जल चन्दन सुमन सुलाय तंदुल अघ हारी।
चरु दीप धूप फल लाय अर्घ करों भारी ॥
मैं पूजों मल्लि जिनेश पारस सुखकारी ॥
ग्रह केतु अरिष्ट निवार मन सुख हितकारी ॥

ओं ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक मल्लि पारस जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८ ॥

रवि शशि मङ्गल सौम्म गुरु भृगु शनि राहु सुकेतु।
इनको रिष्ट विचार कर अर्चे जिन सुख हेतु ॥

ओं ह्रीं सर्व ग्रहारिष्ट निवारकचतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं ॥६॥

जयमाला

दोहा—श्री जिनवर पूजा किये, ग्रह अरिष्ट मिट जाय।
पञ्च ज्योतिषी देव सब, पूजि नमें प्रभु पाय ॥

पद्धड़ी छन्द

जय जय दिन आदि महन्त देव, जय अजित जिनेश्वर करहु सेव।
जय जय संभव संभव विचार, जय जय अभिनन्दन जगत सार ॥
जय सुमति सुमति दायक विशेष, जय पद्म प्रभु लखि पद्म रेख।
जय जय सुपास हर करम पास, जय चन्द्रप्रभू सुख के निवास ॥३॥
जय पुष्पदंत कर कर्म अन्त, जय शीतल जिन शीतल करन्त।
जय श्रेय करन श्रेयांस देव, जय वासुपूज्य पूजत सुमेव ॥ ४ ॥
जय विमल विमल कर जगत जीव, जय जय अनन्त सुखलहि सदीव
जय धर्म धुरन्धर धर्मनाथ, जय शांति जिनेश्वर मुक्ति नाथ ॥५॥

जय कुंथनाथ शिव सुख निधान, जय अरह जिनेश्वर सुकृत खान ।
जय मल्लिनाथ पद पद्म भास, जय मुनिसुव्रत कर व्रतप्रकाश ॥६॥
जय जय नमि देव दयाल सन्त, जय नेमनाथ जस गुण अनन्त ।
जय पारस प्रभु सङ्कट निवार, जय वर्द्धमान आनन्द कार ॥७॥
नव ग्रह अरिष्ट जब होय जाय, तब पूजों श्री जिनदेव पाय ।
मन वच तन कर सुख सिंधु होय, ग्रह शांति रीति इह कहिये लोय ॥८

घत्ता—चौबीसों जिनदेव प्रभु ग्रह सम्बन्ध विचार ।
पुनि पूजों प्रत्येक तुम ज्यों सुख पावो सार ॥

ओं ह्रीं नवग्रह निवारक चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं ।

श्री नवग्रह निवारक पूजा समाप्त

पद्मावती पूजा

॥ छप्पय ॥

जग जीवन को शरण, हरण भ्रम तिमिर दिवाकर ।
गुण अनन्त भगवन्त कंथ, शिवरमणि सुखाकर ॥
किशनवदन्त लजिमदन, कोटिशशिसदन विराजें ।
उरगलच्छन पगधरण, कमठ मदखडन साजें ॥
अनन्त चतुष्टय लच्छिकर, भूषित पारस देव ।
त्रिविधिनमौं शिरनाय के, करूँ पद्मावति सेव ॥१॥

दोहा—आह्वानन बहुविधिकरों, इस थल तिष्ठो आय ।
सत्य मात पद्मावती, दर्शन दीजो धाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्त धरणेन्द्र भार्या श्री पद्मावती महादेवी अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्रतिष्ठतिष्ट ठ ठ स्थापनं । अत्रमम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधिकरणं ॥

गङ्गा ह्रदनीरं सुरभिसमीरं आक्रतक्षीरं ले आयो ।
रतनन की झारी भरिकरि धारी आनन्द कारी चितचायो ॥

पद्मावतिमाता जगविख्याता, दे मोहि साता मोद भरी।
मैं तुम गुणगाऊँ हर्ष बढ़ाऊँ, वलिवलि जाऊँ धन्यघरी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पार्श्वनाथ-भक्तधरणेन्द्र भार्यायै श्री पद्मावत्यै महादेव्यै जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

गोशीरघिसायो केशरलायो, गंध बनायो स्वच्छमई।
आतापविनाशे चितहुल्लासे सुरभि प्रकाशे शीतमई ॥पद्मा०॥चंदनं ॥
मुक्ताउनहारं अक्षतसारं, खण्ड निवारं गन्धभरे।
शशिज्योतिसमानं मिष्टमहानं शक्तिप्रमानं पुञ्जधरे ॥पद्मा० ॥अक्षतं॥
चम्पा रु चमेली केतकिसेली, गंधजुफैली चहुँ ओरी।
चितभ्रमरलुभायो मनहरखायो तुमढिग आयो सुनमोरी॥पद्मा० ॥पुष्पं॥
घेवरघृतसाजे खुरमाखाजे, लाडू ताजे थार भरे।
नैनन सुखदाई तुरत बनाई कीरत गायी अग्र धरे ॥पद्मा०॥नैवेद्यं॥
दीपकशशिजोतं तमक्षयहोतं ज्ञानउद्योतं छायरहो।
कुमतिविनाशी सुमतिप्रकाशी, समताभापी शरन लह्यो ॥पद्मा०॥दीपं॥
कृष्णागरुधूपं सुरभि अनूपं, मनवचनरूपं खेवतहौं।
दशदिश अलि छाये वाद्य बजाये, तुम चरणाग्रे सेवतुहौं ॥पद्मा. धूपं॥
बादाम सुपारी श्रीफलभारी आनन्दकारी भरिथारी।
तुम चरन चढाऊँचित उमगाऊँवांछित पाऊँ वलिहारी ॥पद्मा. फलं ॥
जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु चित दीप धूप फल लाय धरे।
शुभ अर्घ बनायौं पूजनधायो तूर बजायो नृत्य करे ॥ पद्मा० ॥

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पार्श्वनाथ भक्तधरणेन्द्रभार्यायै श्री पद्मावत्यै महादेव्यै अर्घं निर्वपामीतिं स्वाहा।

अथ जयमाला

श्री पद्मावति माय, गुण अनेक तन शोभते।
अब वर्णन जयमाल, के, सुनौं सुजन मनलायके ॥१॥

पद्धडी छन्द

जय तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ, प्रणमूं तिरकाल नवाय माथ।
तिनमुख ते वानी खिरी सार, सब जीवन को आनन्दकार॥
छद्मस्थ अवस्था को जु वर्ण, सुनियो भविचित्त लगाय कर्ण।
इक दिन हय चढ़ि पार्श्वनाथ, अरु सखा अनेकों लिये साथ॥
गंगा तट आये मोद ठान, तहां तापस कुतप करै अयान।
इक काष्ठथूल में नागदोय, तापसको कुछ नहिं ज्ञान सोय॥
वह काष्ठ अग्नि में दियो लगाय, उरगनिको संकट परो आय।
यह भेद जान श्रीपार्श्वदेव, तापस के ढिंग आये स्वयमेव॥
तासों बोले नहिं ज्ञान तोय, हिंसामय तप करि कुगति होय।
चीरौ जु काष्ठ तत्काल सोय, काढे सुनागिनी नाग दोय॥
तिनके जु कंठगत रहे प्रान, पारस प्रभु करुणाधर महान।
तिनके वचनामृत हैं महान, निर्मल भावों से सुने कान॥
तत्काल पुण्यसमुदाय होय, उत्तम गति बन्धकियो सुदोय।
संन्यास कियो मन को लगाय, धरणेन्द्र पद्मावति लहाय॥
सोही पद्मावति मात सार, नित प्रति पूजौं मैं बार बार।
बहुतें जीवन उपकार कीन, मेरी वारी में बहुत दीन॥
जल आदिक वसु विधि द्रव्यलाय, गुणगान गाय बाजे बजाय।
घननन घननन घण्टा अरन्त, तननन २ नूपुर तुरन्त॥
ताथेइथेइ २ घुन्घुरु करंत, झुकि झुकि झुकिझुकिफिर पग धरंत।
बाजत सितार मिरदंग साज, वीना मुरली मधुरी अवाज॥
करि नृत्यगान बहु गुण बखान, कहलौ महिमा वरनें अयान।
"सेवक" पर सदा सहाय कीन, विनती मोरी सुनियो प्रवीन॥

घत्ता

पद्मावति माता तुमगुण गाता आनन्द दाता कष्ट हरौ।
सुनि माता मोरी शरण जु तोरी, लखि मम ओरी धीर धरो॥

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पद्मावति देव्यै ॥ पूर्णार्घं ॥
दोहा—हे माता मम उर विषैं, पूरण तिष्ठो आय।
रहै सदैव दयालुता, कहता सेवक आय॥

इत्याशीर्वादः।

श्री क्षेत्रपाल पूजा

क्षेत्रपालाय यज्ञेस्मिन्, अत्र क्षेत्राधिरक्षणे।
बलिं ददामि यस्याग्रे, वेद्यां विघ्नविनाशने॥ २॥

ओं क्लीं आं क्रों ह्रीं अत्र क्षेत्रपाल कुमुदांजन चामर पुष्पदंत जयविजय अपराजितमणिभद्र पंच क्षेत्रपाला अत्रावतरावत अवतरत संवौषट आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

सद्यनाति सुगंधेन, स्वच्छेन, बहुलेन च।
स्नापनं क्षेत्रपालस्य, तैलेन प्रकरोम्यहं॥ १॥
ओं आं श्रों क्रों क्रौं श्री क्षेत्रपालाय कुमुदांजनचामर पुष्पदंत जय विजय अपराजित मणिभद्र पंच क्षेत्रपालाय तैलम्॥
सिंदूरैरस्णाकारै-पीतवर्णो सुसंभवैः।
चर्चनं क्षेत्रपालस्य, सिंदूरैः प्रकरोम्यहं॥ सिंदूरं॥
सद्यपूतैः महाग्निगधैः समांगल्यै ससर्पिडकैः।
क्षेत्रपालमुखे दद्यात् गुडं विघ्नविनाशिनेः॥ ३॥ गुडं
तिलपिंडस्नु पिंडेन माषस्य वकुलादिभिः।
ददामि क्षेत्रपालस्य विश्वविघ्नविनाशिने॥ ४ तिलं
भो क्षेत्रपाल जिनस्यति पंकभाला, दंष्ट्रा कराल जिनशासन-वैरि काला। तैलापि जन्मगुड चंदन पुष्प धूपैः,
भौग्यं प्रतिच्छ जगदीश्वर जन्म काले॥ अर्घं ५॥

अथाष्टक

क्षीर हीर गौर नीरपुर वारि धारया। मन्द बूंद चन्दनादि सौरभेन सारया। भूत प्रेत राक्षसादि दुष्ट कष्ट नाशनं,
शान्ति सिद्धि ऋद्धि वृद्धि क्षेत्रपाल चर्चनं ॥ १ जलं
अर्क तर्क वर्जनैरनर्घ चन्द्रनन्दनैः, कुंकुमादि मिश्रितै रणद्भिः
पट पदाश्रितैः। भूत प्रेत० शान्ति० ॥ चंदनं
औषधीश सिंधुफेन हार भासमुज्ज्वलैः। अक्षतै सुलक्षणैः ज्योति
खंडवर्जितैः ॥ भूत० ॥ शांति ॥ अक्षतं
पारिजात वारिजात कुन्द हेम केतको, मालती सुचंपकादि
सार पुष्प मालया ॥ भूत० शांति ॥पुष्पं ॥
व्यंजनेन पायसादिभिः समं लसद्रसैः, मोदकोदनादि स्वर्ण
भाजन सुसंस्थितैः ॥ भूत० ॥ शान्ति ॥ नैवेद्यं
रत्न धेनु सर्पिपादि दीपकै शिखोज्वलैः, वारि धार तोय कोप
कंपरूप वर्जितैः ॥ भूत० ॥ शान्ति० ॥ दीपं
सिल्पता मिता गुरु प्रधूप केल मिश्रितैः, वाद्यमान वर्धमान
माननी मनोहरैः ॥ भूत० ॥ शान्ति ॥ धूपं
श्रीफलं च कर्कटी सुदाडिमादिभिःफलैः। स्वादभि सौरभादिष्ट
जंजरादि मोदनैः भूत० ॥ शान्ति० ॥ फलं
जीवनाश्रिताऽगुरु द्रवाक्षतैः प्रसूनकैः, चारु चरु प्रदीपकैः
धूपकै. फलोत्करैः। भूत० ॥ शान्ति० ॥ अर्घं

लक्ष्मं धान्यकरं जगतसुखकरं सुदीर्घकायावरं
रात्रौ जागरवाहन सुखकरं वरवारपाणीधरं ॥
निर्विघ्नं भयनाशनं भयहरं भूतादिरक्षाकरं।
वन्दे श्रीजिनसेवकं हरिहरं श्री क्षेत्रपालं परं ॥

जयमाला

सुरासुर खेचर पूजित पाद, गुणाकर सुन्दर कृत शुभनाद।

मनोहर पन्नगकण्ठ विशाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल ॥१॥
सुडाकिन शाकिन नाशन वीर। सुजाकिन राकिन भ्रंशन धीर।
अनोपम मस्तक शोभित वाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल ॥२॥
सुलंकिन हाकिन पन्नग त्रास, कुभूपति तसकर दुर्भिक्ष नाश।
निशाकर शेखर मंडित भाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल ॥३॥
समुदगल सादूवल सूकर वृन्द, सुरक्षस भोजस, दुर्लभ कन्द।
सदामल कोमल अङ्गविशाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्रसुपाल ॥४॥
सुचित्रक कञ्जरसागर पार, सु दुर्जन सैचन शत्रु संहार।
सुकम्पित किन्नर भूत रसाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल ॥५॥
सुऋद्धि समृद्धि सुदायक सूर, सुपुत्र सुमित्र कलित्रकपूर।
सुरंजित वासुर कांतिविशाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल ॥६॥
सुकन्दुर कुण्डल हार सुवाद्य, सुशेखर सुस्वर किंकिन नाद।
भयंकर भीपण भासुर काल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल ॥७॥
सु कामिनि खेलत दिव्य शरीर सु वाहन हासन मोदन धीर।
सुभाषत राजत विश्व विशाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल॥८॥
सुथापित निरमल जैन सु वाक्य, न कंपित दुर्भिक्ष दुस्तर साक्य।
प्रकाशित जैन सुधर्म रसाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल ॥९॥
सु भापित श्रेय सु भव्य सुवंश, महोदय जैन सरोवर हंस।
महाशुभ सागर केलि विशाल, सदाशुभ हो जय क्षेत्र सुपाल॥१०॥

घत्ता—असम सुखसारं त्रीक्षा द्रषा करालं।
रचकर करज डीलं, दीर्घ जिह्वाकरालं॥
सुघट विकृत चक्रं शांति दास प्रशस्यं।
भजतु नमतु जैनं, भैरवं क्षेत्रपालं॥

ॐ आ श्रीं क्लीं क्रीं श्री क्षेत्रपालाय कुमुदांजन चामर पुष्पदंत, जय विजय अपराजित मणिभद्र पंच क्षेत्रपालाय महार्घं॥

क्षेत्रपाल स्तुति

क्षेत्रपाल तुम रक्षा करते, भवि जीवन के दुःख सब हरते ।
जो जिन भक्त करै मन लाई, तिन ऊपर जब संकट आई ॥१॥
तिन की तुमने रक्षा कीना, दुख को टारि शांति तुम कीनी ।
दुर्जन मोचक शत्रु विदारक, रिद्धि सिद्धि तुम सब सुखदायक॥२॥
पुत्र कलत्र नारि को देवो, धन सम्पति सुख सब ही देवो ।
भूत प्रेतादिक सब भय मानै, दुर्भिक्ष आदिक दुख सब हानैं ॥३॥
जो तुम को धर ध्यान मनावै, उसकी सब वांछा हो जावैं ।
तुमरे नाम लेत से राई, दुख सब छिन मे जाय पलाई ॥ ४ ॥
क्षेत्रपाल पूजूं जिन सेवक, नर अरु नारि बाल तुम "सेवक"।
इत्यादिक गुण कहां तक गाऊँ, मनवांछित वर तुमसे पाऊं॥५॥

॥ इति ॥

आरती क्षेत्रपाल

करूँ आरती क्षेत्रपाल की, जिन पद सेवक रक्षपाल की । टेक ॥
विजय वीर अरु मणिभद्र की, अपराजित भैरव आदि की ॥करूँ०
शिर पर मणिमय मुकुट विराजै, कर मे आयुध त्रिशूल जु राजै।करूँ०
कूकर वाहन शोभा भारी, भूत प्रेत दुष्टन भयकारी ॥ करूँ०
लंकेश्वर ने ध्यान जो कीना. अङ्गद आदि उपद्रव कीना । करूँ०
जभी आपने रक्षा कीनी, उपद्रव टार शान्त मय कीनी ॥ करूँ०
जिन भक्तन की रक्षा करते, दुख दारिद्र सभी भय हरते । करूँ०
पुत्रादि वांछा पूरी करते, इसीलिये हम आरती करते ॥ करूँ०

अध्याय सप्तम

सिद्ध क्षेत्र पूजाएं

श्री सम्मेद शिखर पूजा विधान

दोहा—सिद्ध क्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्ट सु थान ॥
शिखर समेद सदा नमौं, होय पापकी हान ॥ १ ॥
अगिनित मुनि जहँ ते गए, लोक शिखर के तीर ।
तिनके पद पंकज नमौं, नासै भवकी पीर ॥ २ ॥

अडिल्ल छन्द—है वह उज्ज्वल क्षेत्र सु अति निर्मल सही ।
परम पुनीत सुठौर महा गुनकी मही ॥
सकल सिद्धि दातार महा रमनीक है ।
बंदौ निजसुख हेत अचल पद देत है ॥ ३ ॥

सोरठा—शिखर सम्मेद महान, जग में तीर्थ प्रधान है ॥
महिमा अद्भुत जान, अल्पमती मैं किम कहौं ॥४॥

पद्धरी छन्द

सरस उन्नत क्षेत्र प्रधान है । अति सु उज्ज्वल तीर्थ-महान है ॥
करहि भक्तिसु जे गुनगायन कै । वरहि शिव सुर नर सुख पाय कै ॥

अडिल्ल छन्द—सुर हरि नरपति आदि सु जिन वंदन करैं ॥
भव सागर तैं तिरे, नहीं भवदधि परैं ॥
सुफल होय जो जन्म सो जे दर्शन करैं ॥
जन्म जन्म के पाप सकल छिन में टरैं ॥ ६ ॥

पद्धरी छन्द

श्री तीर्थंकर जिनवरसु बीस । अरु मुनि असंख्य सब गुनन ईश ॥
पहुँचे जहँतैं केवल सुधाम । तिन सबको अब मेरा प्रणाम ॥७॥

गीता छन्द—सम्मेदगढ़ है तीर्थ भारी सबन को उज्ज्वल करे।
चिरकाल के जे कर्म लागे दरश तैं छिन में टरे॥
है परम पावन पुन्य दायक अतुल महिमा जानिये।
है अनूप सरूप गिरिवर तासु पूजा ठानिये॥ ८॥

दोहा—श्री सम्मेद शिखर महा, पूजों मन वच काय।
हरत चतुर-गति दुःख को मन वांछित फल दाय॥ ९॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रे अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

※ अथाष्टक ※

क्षीरोदधि सम नीर सु उज्ज्वल लीजिये।
कनक कलश में भरके धारा दीजिए॥
पूजौं शिखर सम्मेद सु मन बच काय जू।
नरकादिक दुख टरैं अचल पद पाय जू॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं॥

पयसौं घिस मलयागिरि चन्द ल्याइये।
केसर आनि कपूर सुगन्ध मिलाइये॥ पूजौं०॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चं०।

धवल सु उज्ज्वल खासे धोयके।
हेम वरनके थार भरौं शुचि होयके॥ पूजौं०

ओं ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं॥

फूल सुगन्ध सुल्याय हरष सो आन चढ़ायो।
रोग शोक मिट जाय मदन सब दूर पलायो॥ पूजौं०

ओं ह्रीं सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाणविध्वंसनाय पुष्प॥

षट्रस नैवेद्य कनक थारी भर ल्यायो।
क्षुधा निवारण हेतु सु पूजौं मन हरषायो॥ पूजौं०

ओं ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ॥

लेकर मणिमय दीप सुज्योति उद्योत हो।
पूजत होत-स्वज्ञान मोह तम नाश हो। पूजौं०

ओं ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं॥

दश विधि धूप अनूप अग्नि में खेवहूँ।
अष्ट कर्म को नाश होत सुख पावहूँ॥ पूजौं०

ओं ह्रीं श्री सम्मेदशिखिरसिद्धक्षेत्रेभ्योअष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं॥

केला लोंग सुपारी श्रीफल ल्याइये।
फल चढाय मन वांछित फल सु पाइये॥ पूजौं०

ओं ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं॥

जल गंधाक्षत फूल सु नेवज लीजिये।
दीप धूप फल लेकर अर्घ चढ़ाइये॥ पूजौं०

ओं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्या अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घम्॥

॥ पद्धरी-छन्द ॥

श्री वीस तीर्थङ्कर हैं जिनेन्द्र। अरु हैं असंख्य वहुते मुनेन्द्र।
तिनकौं कर जोर करों प्रणाम। तिनको पूजों तज सकल काम॥

ओं ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घम्।

ढाल जोगीरासा

श्री सम्मेद शिखर गिर उन्नत शोभा अधिक प्रमानों।
विंशति तिह पर कूट मनोहर अद्भुत रचना जानों॥
श्री तीर्थङ्कर बीस तहां से शिवपुर पहुँचे जाई।
तिनके पद पंकज युग पूजौं प्रत्येक अर्घ चढाई॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम सिद्धवर कूट मनोहर आनन्द मङ्गल दाई।
अजित प्रभु जहँते शिव पहुँचे पूजों मन वचकाई॥
कोड़ि जु अस्सी एक अरव मुनि चौवन लाख सुगाई।

कर्म काट निर्वाण पधारे तिनकौ अर्घ चढाई ॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धवरकूंटते श्री अजितनाथ जिनेद्रादि एक अरब अस्सी कोड चौवन लाख मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

धवल कूट सो नाम दूसरो है सबको सुखदाई ।
सम्भव प्रभु सो मुक्ति पधारे पाप तिमिर मिट जाई ॥
धवल दत्त हैं आदि मुनीश्वर नव कोड़ा कोड़ी जानो ।
लक्ष वहत्तर सहस बयालिस पंच शतक ऋषि मानो ॥
कर्म नाश कर अमरपुरी गए वन्दों शीस नवाई ।
तिनके पदयुग जजौं भाव सौं हरष हरष चित लाई ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर धवल कूटतैं सम्भवनाथ जिनेन्द्र मुनि नव कोड़ा कोड़ी बहत्तर लाख ब्यालीस हजार पांच से मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम ॥ ३ ॥

चोपाई

आनन्द कूट महा सुख दाय । प्रभु अभिनन्दन शिवपुर जाय ।
कोड़ा कोड़ी बहत्तर जान । सतर कोड़ि लाख छत्तिस मान ॥
सहस बयालिस शतक जु सात । कहें जिनागम में इस भांत ।
ये ऋषि कर्म काट शिव गये । तिनके पद युग पूजत भये ॥

ॐ ह्रीं श्री आनन्द कूटतें अभिनन्दननाथ जिनेन्द्रादि मुनि बहत्तर कोड़ा कोड़ी अरु सत्तर कोड़ि छत्तीस लाख ब्यालीसहजार सात सै मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्योअर्घम निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

अडिल्ल छन्द–अविचल चौथी कूट महासुखधाम जी ।
जहँ ते सुमति जिनेश गए निर्वाण जी ॥
कोड़ा कोडी एक मुनीश्वर जानिये ।
कोडि चौरासि लाख बहत्तर मानिये ॥
सहस इक्यासी और सात सै गाइये ॥

कर्म काट शिव गये तिन्हें सिर नाइये ।
सो थानक मैं पूजौ मन वच काय जू ।
पाप दूर हो जाय अचल पद पाय जू ॥

ॐ ह्रीं श्री अविचल कूटतैं श्री सुमति जिनेन्द्रादि मुनि एक कोड़ा कोड़ि चौरासी कोड़ि बहत्तर लाख इक्यासी हजार सात से मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् ॥ ५ ॥

अड़िल छंद—मोहन कूट महान परम सुंदर कहौ ।
पद्मप्रभु जिनराय जहां शिवपद लहौ ॥
कोडि निन्यानवे लाख सातसौ जानियो ।
सहस तेतालिस और मुनीश्वर मानिये ॥
कहें जवाहरदास सु दोय कर जोर कै ।
अविनाशी पद देउ कर्म को खोय कै ॥

ॐ ह्रीं श्रीं मोहन कूटतैं श्री पद्मप्रभु मुनि निन्यानवे कोडि सत्तासी लाख तेतालीस हजार सातसै सत्तावन मुनि निर्वाण पद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा—कूटप्रभास महान्, सुन्दर जनमन मोहनो ।
श्री सुपार्श्व भगवान मुक्ति गये भव नाश कर ॥
कोड़ा कोड़ि उनचास कोडि चोरासी जानिये ।
लाख बहत्तर जान, सात सहस अरु सातसे ॥
और कहे बयालीस, जहं ते मुनि मुक्ति गये ।
तिनको नमूं नित शीष दास जवाहर जोर कर ॥

ॐ ह्रीं प्रभास कूटतें श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि उनचास कोड़ा कोड़ि बहत्तर लाख सात हजार सात से बियालिस मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् ॥७॥

दोहा—पावन परम उतङ्ग है ललित कूट है नाम ।
चन्द्र प्रभु मुक्ति गये, बन्दों आठों याम ॥

नवसै अरब जु जानिये, चौरासी ऋषि मान।
कोडि बहत्तर इमि कहे, अस्सी लाख प्रमान॥
सहस चौरासी पांचसैं पचपन मुनिवर जान।
ललित कूट से शिव गये, वन्दत करों प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री ललित कूटतैं श्री चंद्र प्रभु जिनेन्द्रादि मुनि नवसै चौरासी अरब बहत्तर कोड अस्सी लाख चौरासी हजार पांचसै पचपन मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो अर्घम॥ ८॥

॥ पद्धडी छन्द॥

श्री सु प्रभ कूट सुनाम जान। जहं पुष्पदंत को मुक्त थान।
मुनि कोड़ा कोडी कहे जु भाख। नव ऊपर नव धर कहे लाख॥१॥
चार शतक कहे सहस सात। ऋषि अस्सी और कहे विख्यात।
मुनि मुक्ति गये वसु कर्म काट। वंदों कर जोर नवाय माथ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री सुप्रभ कूटतैं पुष्पदन्त जिनेन्द्रादि मुनि एक कोड़ा कोडी निन्यानवे लाख सात हजार चार से अस्सी मुनि मुक्तिपद प्राप्तेभ्योसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम॥ ९॥

सुभग विद्युतकूट सु जानिये। परम अद्भुत तापर मानिये॥
गये शिवपुर शीतलनाथजी। नमहुं तिन पदकरिधरि माथजी॥
मुनि जु कोडि वियालीस जानहू। मुनि जु कोडाकोडि अष्टहु मानहू
कहे और जु लाख वत्तीस जू। सहस वयालीस कहे यतीश जू॥
और नौ सैं पांच सुजानिये। गये मुनि शिवपुर को मानिये॥
करहि पूजा जे मन लाय कै। धरहि जन्म न भव में आयकैं॥

ॐ ह्रीं सुभग विद्युत कूटतैं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि मुनि अठारह कोडा कोडि वियालिस कोडि वत्तीस लाख वियालिस हजार नौ सो पांच मुनि मुक्तिप्राप्त सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं॥१०॥

ढाल जोगी रासा

कूटजू संकुल परम मनोहर श्रेयांस जिनराई।

कर्म नाश कर अमरपुरी गये. वन्दों शीश नवाई ॥

कोड़ा कोडि जु है छियानवे छियानवे कोड़ प्रमानो।
लाख छियानवे साढ़े नवसै इकसठ मुनीश्वर जानो ॥
ता ऊपर व्यालिस कहे हैं श्री मुनि के गुण गावै।
त्रिविध योग कर जो कोई पूजै सहजानन्द पद पावै॥

ॐ ह्रीं संकुल कूटते श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि मुनि छियानवे कोडा कोडि छियानवे लाख साढ़े नौ हजार वियालिस मुनि मुक्ति-पद प्राप्तेभ्योसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥ ११ ॥

॥ कुसुमलता छन्द ॥

श्री सुवीरकुल संकुल कूट परम सुन्दर सुखदाई।
विमल नाथ भगवान जहां पंचम गति पाई ॥
सात शतक मुनि और बयालिस जानिये ॥
सत्तर कोड सात लाख हजार छै मानिये ॥

ॐ ह्री श्रीसंकुल कूटतैं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्रादि मुनि सत्तर कोड सात लाख छह हजार सातसै व्यालिस मुनि मुक्तिपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२ ॥

कूट स्वयंभू नाम परम सुन्दर कहो।
प्रभु अनंत जिननाथ जहां शिवपद लहो ॥
मुनि जु कोडा कोड़ि छियानवे जानिये।
सत्तर कोड जु सत्तर लाख बखानिये ॥
सत्तर सहस जु और सातसै गाइये।
मुक्ति गये मुनि तिन पद शीश नवाइये ॥
कहे जवाहरदास सुनो मन लायकै।
गिरवर को नित पूजो मन हरषायकै ॥

ॐ ह्री स्वयम्भू कूटतै श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रादि मुनि छियानवे

कोड़ा कोड़ि सत्तर लाख सात हजार सातसैं मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥ १३ ॥

चौपाई—कूट सुदत्त महा शुभ जानो । श्री जिनधर्म नाथ को थानो ।
मुनि जु कोड़ा कोडि उनतीस । और कहे ऋषि कोड उन्नीस ॥
लाख जु नव्वै नौ सहस सुजानो । सात शतक पचानव मानो
मोक्ष गये वसु कर्मन चूर । दिवस रैन तुमही भरपूर ॥

ॐ ह्रीं श्री सुदत्ता कूटतै श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्रादि मुनि उनतीस कोड़ा कोडि उन्नीस कोड नव्वे लाख नौ हजार सातसै पचानवे मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥ १४ ॥

है प्रभासी कूट सुन्दर अति पवित्र सो जानिये ।
शान्तिनाथ जिनेन्द्र जहां ते परम धाम प्रमानिये ॥

ॐ ह्रीं प्रभास कूट तैं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्रादि नौ कोडाकोडी नौ हजार नौ सै निन्यानवै मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यो सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५ ॥

गीता छन्द—ज्ञानधर शुभ कूट सुन्दर परम मन को मोहनो ।
जहं ते श्री प्रभु कुन्थ स्वामी गये शिवपुर को गनो ॥
कोडाकोडी छियानवे मुनि कोडि छियानवे जानिये ।
लाख बत्तीस सहस छानवे अरु सौ सात प्रमानिये ॥

दोहा—और कहे ब्यालीस जो, सुमरो हिये मझार ।
जिनवर पूजो भाव सो, कर भव दधि ते पार ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानधर कूटते श्रीकुन्थुनाथ स्वामी और छियानवे कोड़ा कोडि. छियानवे कोडि बत्तीस लाख छियानवे हजार अरु सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्षपदप्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् ॥ नि०

दोहा—कूट जू नाटक परम शुभ, शोभा अपरम्पार ।
जहंते अरह जिनेन्द्रजी, पहुँचे मुक्ति मझार ॥
कोडि निन्यानवे जानि मुनि, लाख निन्यानवे और ।

कहे सहस निन्यानवै, बन्दौं कर जुग जोर ॥
अष्ट कर्म का नाश कर, अविनाशी पद पाय।
ते गुरु मम हृदय बसो, भव दधि पार लगाय ॥

ॐ ह्रीं नाटक कूटते श्री अरनाथ जिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे कोड़ि निन्यानवै लाख निन्यानवे हजार मुनि मुक्तिपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् ॥ १७ ॥

अडिल्ल छन्द—कूट संबल परम पवित्र जू।
गये शिवपुर मल्लि जिनेश जू ॥
मुनि जु छियानवे कोड़ि प्रमानिये।
पद जिनेश्वर हृदय मानिये ॥

ॐ ह्रीं सबल कूटतैं श्री मल्लिनाथ जिनेंद्रादि छियानवे कोड़ा कोड़ि मुनि मुक्तिपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् ॥ १८ ॥

॥ ढार परमादी की चाल में ॥

मुनिसुव्रत जिनराज सदा आनन्द सुख दाई।
सुन्दर निर्जर कूट जहा तैं शिवपुरि पाई ॥
निन्यानवे कोड़ा कोड़ि कहैं मुनि कोड़ि सत्तावन।
नौ लाख जोर मुनेन्द्र कहे नौसै निन्यावन ॥

सोरठा—कर्मनाश ऋषिराज, पंचम गति के सुख लहे।
तारन तरन जिहाज, मो दुख दूर करौ सकल ॥

भुजंग प्रयात—बली मोह की फौज प्रभु जी भगाई,
जग्यो ज्ञान पंचम महा सौख्यदाई।
समोशरण धरनेन्द्र ने तब बनायो,
तबै देव सुरपति सबै शीस नायो।
जय जय जिनेन्द्र सुशब्द उचारी,
भये आज दर्शन सबै सौख्यकारी।
गये सर्व पातिक प्रभु ध्यानही तैं,

जबै दर्श कीने प्रभू दूर ही ते ॥
सुनी नाथ श्रवणन जु तेरी बड़ाई,
गही शरण हमने तुम्हारी सु आई।
बली कर्म, नाशे जबै मुक्ति पाई,
तुम्हे हाथ जोरें सदा शीश नाई ॥१९॥

ॐ ह्रीं श्री निर्जर कूटतैं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे कोड़ा कोड़ी सत्तावन कोड़ि नौलाख नौ शतक निन्यानवे मुनि मुक्तिपद प्राप्ताय सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥१०॥

जोगीरासा—एक मित्रधर कूट मनोहर सुन्दर अति छवि छाई।
श्री नमि जिनेश्वर मुक्ति जहाँ तें शिवपुर पहुँचे जाई ॥
नोसै कोडा कोड़ि मुनीश्वर एक अरब ऋपि जानो।
लाख सैंतालीस सात अरब नौसै बियालिस मानो ॥

दोहा—वसु कर्मन को नाशकर, अविनाशी पद पाय ॥
पूजों चरन सरोज ज्यों मन वाञ्छित फल दाय ॥

ॐ ह्रीं श्री मित्रधर कूटतें श्रीनमिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि नौसै कोडा कोडि एक अरब सैतालिस लाख सात हजार नौसै बियालिस मुनि मुक्तिपदप्राप्तये सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥२०॥

दोहा—सुवर्णभद्र जु कूटतै श्री प्रभु पारसनाथ।
जहं तैं शिवपुर को गये, नमों जोड़ि जुग हाथ ॥

त्रिभंगी छन्द

मुनिकोड़िबियासी लाखचोरासी शिवपुरवासी सुखदाई।
सहस पैंतालिस सातसौ व्यालिस जजिके आलस गुणगाई ॥
भवदधितें तारण पतितउधारण सबदुखहारण सुख कीजे।
यह अरज हमारी सुनि त्रिपुरारी शिवपद भारी मोहि दीजे ॥

पद्धरी छन्द

यह दर्शनकूट अनन्त लह्यो। फल पोडशकोटि उपवास कह्यो।
जग में यह तीर्थ कह्यो भारी। दर्शनतें पाप कटें सारी ॥

मोतीदाम छन्द

टरे गति बन्दत नर्क तिर्यञ्च, कबहुँ दुखको नहिं पावें रञ्च ।
यही शिवको जगमें है द्वार, अरे नर वन्दों कहत 'जवाहर' ॥
दोहा—पारशप्रभु के नाम तें, विघन दूर टरि जाय ।
ऋद्धिसिद्धिनिधि आनके मिलि हैं निशिदिन आय ॥२१॥

ॐ ह्रीं सुवर्णभद्रकूटतें श्री पार्श्वनाथ स्वामी व्यालीस कोड़ि चोरासी लाख पैंतालीस हजार सातसै बियालीस मुनि मुक्तिपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥२१॥

अडिल्ल छन्द—जे नर परम स्वभाव थकी पूजा करे,
हरि हलि चक्री होय राज्यपद खंड करें ।
फेरि होय धरणेंद्र इंद्रपदवी धरें,
नाना विधसुख भोगि बहुरि शिवतियवरें ॥

आशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेन)

अथ समुच्चय पूजा

या विधि बीस जिनेन्द्र कूं, बीसों शिखर महान ।
और असंख्य मुनि सहज हो पहुंचे शिवपुर थान ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र अत्रअवतर २ संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र अत्रममसन्निहितो भव २ वषट् सं०

(अष्टक)

गीतिका छन्द—पद्मद्रह को नीर निरमल, हेमझारी में भरों ।
तृषारोग निवारने को, चरणतर धारा करों ॥
सम्मेद गढ़ते मुनि असंख्ये, करमहर शिवपुर गये ।
सों थान परम पवित्र पूजौं, तासु फल पुनि संचये ॥

ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन कपूर मिलाय केशर, नीरसौं घसि लाइये ॥
जिनराज पाप विनाश हमरे, भवाताप मिटाइये ॥ सम्मे०
ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेद शिखर चदनं०
चन्द्र के सम ल्याय तन्दुल, कनक थारन मे भरों ।
अक्षय सु पदके कारणे, जिनराज पद पूजा करौ ॥ सम्मे० ॥
ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदशिखर अक्षतं०
कुंद कमलादिक चमेली, गन्ध कर मधुकर फिरें ।
मदन बाण विनाशवे को प्रभु चरण आगे धरें ॥ मम्मे०॥
ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदशिखर पुष्पं०
नेवज मनोहर थाल मे भर, हरष कर ले आपने ।
करहु पूजा भावसों नर थमा रोग मिटावनें ॥ सम्मे०
ॐ ह्रीं असख्यात मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदशिखर० ॥नैवे०
दीप ज्योति प्रकाश करके, प्रभू के गुण गावनें ।
मोह तिमिर विनाश करके, ज्ञान भानु प्रकाशनें ॥ सम्मे० ॥
ॐ ह्रीं असंख्यात मुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदशिखर० दीपं०
वर धूप सुन्दर ले दशांगी, ज्वलनमांहि सु खेइये ।
वसु कर्मनाशन के सुकारण, पूज प्रभु की कीजिये॥सम्मे०॥
ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदशिखर० ॥धूपं०॥
उत्कृष्ट फल जगमाहिं जेते, ढूंढ करके लाइये ।
जो नेत्र रसना लगें सुन्दर, फल अनूप चढ़ाइये ॥ सम्मे० ॥
ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदशिखर० ॥फलं॥
वसुद्रव्ययुत शुभ अर्घ लेकर, मन प्रफुल्लित कीजिए ।
तुमदास यह वरदान मांगे, मोक्ष लक्ष्मी दीजिये । सम्मे० ॥
ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदशिखर० ॥अर्घं॥
नित करें नर नारि पूजा, भक्ति भाव सु लायके ।
तिनको सुजस क्या कहें, 'जवाहर' हर्ष मनमें धारके ॥सम्मे.॥

ते होय सुरेश नरेश खगपति, समझ पूजाफल यही।
सम्मेदगिरि की करहु पूजा, पाय हो शिवपुर मही ॥१०॥
ॐ ह्रीं असंख्यात मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यो श्रीसम्मेदशिखर.महाअर्घं॥

॥ अथ जयमाला ॥

कवित्त—परम शिखरसम्मेद सवहि को है सुख करता।
वन्दे जे नरनारि तिन्हों के अघ सब हरता॥
नरक पशू गति टरें सुक्ख जग के वहु पायें।
नरपति सुरपति होय फेरि शिवपुर को पावें॥ १॥

दोहा—जे तीरथ वन्दे नहीं, सूने धर्म्म नहिं सार।
ते भव वन में भ्रमहिंगे, कबहुं न पावें पार॥ २॥
नरभव उत्तम पायकें, श्रावककुल अवतार।
पूजा जिनवर की करें, ते उतरें भवपार॥ ३॥
सबविधि जोग जु पाय कें, शिखर न वंदे सार।
रतन पदारथ पाय ते, देत समुद्र में डार॥ ४॥महार्घम्॥

❀ ढार कार्तिक की ❀

प्राणी आदीश्वर नाथजी, अष्टापद शिव थान हो।
पूजत सुर नर हरि सकल, सो पावे शिवपद जान हो॥
प्राणी पूजों अर्घ चढ़ाय के इह नाशे भव भयभीत हो।
प्राणी पूजो मन वचकाय के॥

ॐ ह्रीं ऋषभनाथ जिनेन्द्रादि दश हजार मुनि सिद्धपद प्राप्ताय श्री कैलाश गिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

वासपूज्यजी का अर्घ

सोरठा—वासूपूज्य जिनराज, चम्पापुर ते शिवगये।
मन वच योग लगाय, पूजों पदजुग अर्घ ले॥ २॥

ॐ ह्रीं वासपूज्य जिनेन्द्रादि एक हजार मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

नेमिनाथ उर्जयंतकूट

दोहा—नेमीश्वर तजि राजमति, लीनी दीक्षा जाय।
सिद्ध भये गिरनार तें पूजो अर्घ बनाय ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि शंबुप्रद्युम्न अनिरुद्ध इत्यादि बहत्तर कोड़ि सात सौ मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो श्री गिरनार सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

महावीर स्वामी का अर्घसुन्दरी छन्द

वर्द्धमान जिनेश्वर पूजिये, सकल पातक दूर सु कीजिये।
गये पांवापुर ते मुक्ति को, तिनहि पूजत अर्घसंयुक्त सों ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं महावीर जिनेन्द्रादि षड्विंशतिमुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो पांवापुरस्थपद्मसरोवरे सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चौवीसगणधर प्रथम टोंक।

दोहा—तीर्थंकर चौवीस के, गणनायक हैं जेह।
तिनको पूजों अर्घ ले, मन वच धारि सनेह ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति जिन गणधर चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपा०।

दोहा—सिद्धक्षेत्र जे और हैं, भरत क्षेत्र के मांहि ॥
और जु अतिशय क्षेत्र हैं, कहे जिनागम मांहि ॥
तिनको नाम जु लेत ही, पाप दूर हो जाय।
ते सब पूजों अर्घ ले भव भव कूं सुखदाय ॥

ॐ ह्रीं भरत क्षेत्र सम्बन्धी सिद्धक्षेत्रेभ्योऽतिशयक्षेत्रेभ्योऽर्घं।

सोरठा—द्वीप अढाई मांहि, सिद्ध क्षेत्र जे और हैं।
पूजों अर्घ चढ़ाय, भव भव के अघ नाश हैं ॥

ॐ ह्रीं अढाईद्वीप सम्बन्धी सिद्ध क्षेत्रभ्यो अर्घं।

अडिल्ल—पूजों तीस चौवीस परम सुखदाय जू।
भूत भविष्यत वर्तमान गुणगाय जू ॥
अरु विदेह के बीस नमों शिरनाय जू।

अर्चों अर्घ बनाय सु विघन पलाय जू ॥ ८

ओं ह्रीं श्रीभूतभविष्यद्वर्त्तमान सम्बन्धी त्रिशतिचतुर्विंशति जिनेभ्यो विदेहक्षेत्रे शाश्वत विद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्योऽर्घ अर्घं०॥

दोहा—कृत्याकृत्रिम जे कहे, तीनलोक के माय।
ते सब पूजौं अर्घ ले, हाथ जोर शिरनाय॥

ओं ह्रीं श्री तीनलोक सम्बन्धी कृत्रिमाकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। लोलतरङ्ग छन्द—

मनमोहन तीरथ शुभ जानो, पावन परम सुक्षेत्र प्रमानो।
उन्नत शिखर अनूपम सोहै, देखत ताहि सुरासुर मोहै॥

दोहा—तीरथ परम सुहावनो शिखर समेद विशाल।
कहत अल्पबुधि उक्तिसों, सुखदायक जयमाल॥

चौपाई १५ मात्रा—

सिद्धक्षेत्र तीरथ सुखदाई। वन्दत पाप दूर हुइ जाई।
शिखरशीश पर कूट मनोग्य। कहे बीस अति शोभा योग्य॥१॥
प्रथम सिद्धवरकूट सुथान। अजितनाथ को मुक्ति सु थान।
कूटतनो दरशन फल एह। कोटि बतीस उपास गिनेह॥२
दूजा धवलकूट है नाम। सम्भवप्रभु जहंतैं शिवधाम।
दरसकोटि प्रोषधफल जान। लाख बियालिस कह्यो बखान॥३
आनन्दकूट महासुखदाय। जहंतें अभिनन्दन शिव जाय।
कूटतनो दरशन इमि जानो। लाख उपास तणो फलमानो॥४
अविचल कूट महासुख वेश। मुक्ति गये जहं सुमति जिनेश
कूट भाव धरि पूजे कोय। एक कोटि प्रोषधफल होय॥५
मोहनकूट मनोहर जान। पद्मप्रभ जहंतैं निर्वान।
कूट पूज फल लेहु सुजान। कोटि उपास कह्यो भगवान॥६
मनमोहन है कूट प्रभास। मुक्ति गए जहं नाथ सुपास।

पूजै कूट महाफल होय । कोटि बतीस उपास जु सोय ।।७
चन्द्रप्रभ का मुक्ति सुधाम । परम विशाल ललितघटनाम ।
कूटतनो दरशन फल जान । प्रोषध सोलह लाख बखान ।।८
सुप्रभ कूट महासुखदाय । जहँतै पुष्पदन्त शिवपाय ।
पूजो कूट महाफल लेव । कोडि उपास कह्यो जिनदेव ।।६
श्रीविद्युतवर कूट महान । मोक्ष गये शीतल धरि ध्यान ।
पूजै विविध जोग कर कोय । कोडि उपास तनो फल होय ।।१०
सकुलकूट महाशुभ जान । श्रीश्रेयांस गये शिवथान ।
कूटतनो दर्शनफल सुन्यो । कोडि उपास जिनेश्वर भन्यो ।।११
कूट सुवीर परम सुखदाय । विमल जिनेश जहाँ शिवपाय ।
मन वच दरश करै जो कोय । कोटि उपासतनो फलहोय ।।१२
कूट स्वयंभू सुभग सु नाम । गये अनन्त अमरपुरधाम ।
यही कूट को दरशन करै । कोटि उपासतनो फल धरै ।।१३
है सुदत्तवर कूट महान । जहँ तैं धर्मनाथ निरवान ।
परम विशाल कूट है सोय । कोटि उपास दरशफल होय ।।१४
कूट प्रभास परम शुभ कह्यो । शांतिनाथ जहँ तै शिव लह्यो ।
कूटतनो दरशन है सोय । एक कोडि प्रोपध फल होय ।।१५
परमज्ञानधर है शुभकूट । शिवपुर कुंथु गये अघछूट ।
जाकों पूजैं जे करजोड़ि । फल उपवास कह्यो इक कोडि ।।१६
नाटककूट महाशुभ जान । जहँ तैं शिवपुर अर भगवान ।
दरशन करै कूट को जोय । छयानवकोटि वास फल होय ।।१७
संवलकूट मल्लिजिनराज । जहँ तैं मोक्ष भये शुभ काज ।
कूटदरशफल कह्यो जिनेश । एक कोडि प्रोषध शुभ वेश ।।१८
निर्जर कूट कह्यो सुखदाय । मुनिसुव्रत जहँ तैं शिव जाय ।
कूटतनो अत्र दरशनसोय । एक कोडि प्रोषध फल होय ।।१६
कूट मित्रधरतैं नमि मुक्ति । पूजन पाप सरासरयुक्त ।

कूटतनो फल है सुखकंद। कोटि उपास कह्यो जिनचंद ॥२०
श्रीप्रभु पार्श्वनाथ जिनराज। चहुँगतितैं छूटे महाराज।
सुवरण भद्र कूटको नाम। तासों मोक्ष गये सुखधाम ॥२१
तीनलोक हितकरण अनूप। वंदित ताहि सुरासुर भूप।
चिंतामणि सुरवृक्ष समान। ऋद्धि-सिद्धि मंगल सुखदान ॥२२
नवनिधि चित्राबेल समान। जातैं सुक्ख अनूपम जान।
पारस और काम सुर धेनु। नानाविध आनंद को देन ॥२३
व्याधिविकार जाहिं सब भाज। मन चीते पूरै हैं काज।
भवदधि रोग विनाशक सोय। औपधि जगमें और न कोय ॥२४
निरमल परम थान उत्कृष्ट। वंदत पाप भजै अरु दुष्ट।
जो नर ध्यावत पुण्य कमाय। जशगावत सबकर्म नशाय ॥२५
कटैं अनादिकाल के पाप। भजै सकल छिनमें सन्ताप।
नरपति इन्द्र फणेन्द्र जु सवै। और खगेंद्र मृगेंद्र जु नवै ॥२६
नित सुरसुरि करै उच्चार। नाचत गावत विविध प्रकार।
वहुविधि भक्ति करै मनलाय। विविधभांति वादित्र वजाय ॥२७
दमदमदमता बजै मृदंग। घनघन घंट वजै मुहचंग।
झुनझुन झुनझुन झुनिया झुनै। सरसरसर सारंगी धुनै ॥२८॥
मुरली वीन वजै धुनि मिष्ट। पटहा तूर सुरान्वित पुष्ट।
सब सुरगण थुति गावत सार। सुरगण नाचत वहुत प्रकार ॥२६॥
झन नन नन ना नूपूर वान। तन नन नन ना तोरत तान।
ताथेइ थेइ थेइ थेइ कर चाल। सुर नाचत नावत निज भाल ॥३०॥
नाचत गावत नाना रंग। लेत जहां सुर आनंद संग।
नितप्रति सुर जहं वदन जाय। नानाविधिके मंगल गाय ॥३१॥
अनहद धुनिकी मोद जु होय। प्रापति वृषकी अति ही होय।
तातैं हमको सुख दे सोय। गिरवर वंदों करधरि दोय ॥३२॥
मारुत मंद सुगंध चलेय। गंधोदक जहं नित वर्षेय।

जियको जाति विरोध न होय। गिरवर वंदों करधरि दोय ॥३३॥
ज्ञान चरन तप साधन सोय। निज अनुभवको ध्यान जु होय।
शिवमंदिर को द्वारो सोय। गिरवर वंदों करधरि दोय ॥३४॥
जो भवि वंदै एकहि वार। नरक निगोद पशू गति टार।
सुर शिवपदको पावैं सोय। गिरिवर वंदों कर धरि दोय ॥३५॥
जाकी महिमा अगम अपार। गणधर कहत न पावै पार।
तुच्छबुद्धि मैं मतिकर हीन। कही भक्तिवश केवल लीन ॥३६॥
घत्ता—श्रीसिधखेतं अति सुखदेतं शीघ्रहि भवदधि पारकरं।
अरिकर्म विनाशन शिवसुखभासन जय! गिरिवर जगतारवरं ॥३७॥
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।
दोहा—शिखर सु पूजैं जो सदा, मनवचतन हरखाय।
"दास जवाहर" यों कहे, सो शिवपुर को जाय ॥
॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

वाहुवली स्वामी पूजा

दोहा—कर्म अरिगण जीति के, दर्शायो शिव पंथ।
प्रथम सिद्ध पद जिन लयो, भोगभूमिके अंत ॥
समर दृष्टि जल जीत लहि, मल युद्ध जय पाय।
वीर अग्रणी वाहुवलि, वन्दों मन वच काय ॥

ॐ ह्रीं श्री गोमटेश्वर वाहुवली स्वामिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

अथाष्टक (चाल जोगीरासा)

जन्म जरा मरनादि तृषा कर, जगत जीव दुःख पावे।
तिहि दुख दूर करन जिन पद को, पूजन जल ले आवे ॥
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, वाहुवली वल धारी।
जिनके चरण कमल को नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी ॥

ॐ ह्रीं कर्मारि विजयो वीराधिवीर श्री गोमटेश्वर वाहुवली परम योगीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ॥
यह संसार मरुस्थल अटवी, तृष्णा दाह भरी है।
तिहि सुख टारन चंदन लेके, जिनपद पूज करी है॥ परम०। चन्दनं
स्वच्छ सालि शुचि नीरज रज सम, गंध अखंड प्रचारी।
अक्षयपद के पावन कारन, पूजे भव जगतारी। परम. अक्षतं॥
हरिहर चक्रपति सर दानव मानव पशु वस पाके।
तिहि मकरध्वज नाशकजिनको, पूजों पुष्प चढ़ाके। परम. पुष्पं॥
दुखद त्रिजग जीवन को अतिही, दोप क्षुधा अनिवारी।
तिहि दुख दूर करन को चरु वर, ले जिन पूज प्रचारी। परम. नैवेद्यं
मोह महातम मे जग जीवन, शिव मग मांहि लगावे।
तिहि निरवारन दीपक करले जिनपद पूजन आवे। परम. दीपं॥
उत्तम धूप सुगन्ध वनाकर, दश दिशि में महकावे।
दश विधि वन्ध निवारन कारन, जिनवर पूज रचावै। परम. धूपं॥
सरस सुवरण सुगन्ध अनूपम स्वच्छ महाशुचि लावे।
शिव पद कारण जिनवर पदकी फलसों पूज रचावे। परम. फलं॥
वसु विधि के वस वसुधा वही, पर वस अति दुख पावे।
तिहि दुःख दूर करनको भविजन अर्घ जिनाग्र चढ़ावे। परम. अर्घं

जयमाला—दोहा

आठ कर्म हनि आठ गुण, प्रगट करे जिनरूप।
सो जयवन्तो भुजवली, प्रथम भये शिव भूप॥

कुसुमलता छन्द

जग जय जय जग तारनशिरोमणि क्षत्रिय वंश असंश महान।
जय जय जय जग जन हितकारी, दीनों जिन उपदेश प्रमाण॥
जय जय जय चक्रपति सुत जिनके, शत सुत ज्येष्ठ भरत पहिचान।
जय जय श्री ऋषभ देव जिनसों जयवन्त सदा जग जान।

जिनके द्वितीय महादेवी शुचि नाम सुनन्दा गुण की खान ॥
रूप शील सम्पन्न मनोहर तिनके सुत भुजवली महान ।
सवा पंच शत धनु उन्नत तनु हरित वरण सोभा असमान ।
वैडूर्यमणि पर्वत मानो नील कुलाचल सम थिर जान ॥
वैजयन्त परमाणु जगत में तिनकरि रचौ शरीर प्रमाण ।
सत वीरत्व गुणाकर जाको निरखत हरि हरषे उर आन ॥
धीरज अतुल वज्र सम नीरज सम वीराग्रणि अति वलवान ।
जिन छवि लखि मनु शशि छवि लाजै, कुसुमायुध लीनों सुखमान॥
वालसमै जिन वाल चन्द्रमा, शशि से अधिक धरे दुति सार ।
जो गुरुदेव पढ़ाई विद्या शस्त्र शास्त्र सव पढी अपार ॥
ऋषभदेव ने पोदनपुर के नृप कीने भुजवली कुमार ।
दई अयोध्या भरतेश्वर को आप वने प्रभुजी अनगार ॥
राजकाज पटखण्ड महीपति सव दललै चढ़ि आये आप ।
वाहुवली भी सम्मुख आये मंत्रिन तीन युद्ध दिये थाप ॥
दृष्टि नीर अरु मल्ल युद्ध में दोनों नृप कीजौ वल धाप ।
वृथा हानि रुक जाय सैन्य की यातैं लड़िये आपो आप ॥
भरत भुजवली भूपति भाई उतरे समर भूमि में जाय ।
दृष्टि नीर रण थके चक्रपति मल्ल युद्ध तव करो अघाय ॥
पगतल चलत चलत अचला तव, कम्पत अचल शिखर ठहराय ।
निवध नील अचला धर मानौं भये चलाचल क्रोध वसाय ॥
भुज विक्रम वल वाहुवली ने लये चक्रपति अधर उठाय ।
चक्र चलायो चक्रपति तव सो भी विफल भयो तिहिं ठाय ॥
अति प्रचंड भुज दण्ड सुण्ड सम नृप सार्दूल वाहुवलि राय ॥
सिंहासन मंगवाय जा समै अग्रज को दीनों पधराय ॥
राजरमा रामासुर धनु में जोवन दमक दामिनी जान ।
भोग भुजंग जंग सम जग को जान त्याग कीनो तिहिं थान ॥

अष्टापद पर वीर नृपति वर, वीर व्रत धर कीनों ध्यान।
अचल अङ्ग निरभङ्ग अङ्ग तज सम्वत सरलों एक स्थान ॥
विषधर बम्बी करी चरणतल ऊपर वेलि चढ़ी अनिवार।
युग जङ्घा कटि वाहु वेढिकर पहुंची वक्षस्थल पर सार ॥
सिर के केश बढे जिस मांही नभचर पक्षी वसे अपार।
धन्य धन्य इस अचल ध्यान को, महिमा सुर गावैं उरधार ॥
कर्मनाशि शिव जाय वसे प्रभु, ऋषभेश्वर से पहिले जान।
अष्ट गुणांकित सिद्ध शिरोमणि जगदीश्वर पद लयो प्रमान ॥
वीर व्रती वीराग्र गन्य प्रभु वाहुवली जग धन्य महान।
वीरव्रती के काज जिनेश्वर नमें सदा जिन विम्ब प्रमाण ॥

दोहा—श्रवण वेलगुल विंध्यगिरि, जिनवर विंव प्रधान।
छप्पन फुट उत्त ंग तन, खड्गासन अमलान ॥१॥
अतिशय वन्त अनन्त वल, धारक विंव अनूप।
अर्घ चढाय नमों सदा जय जय जिनवर भूप ॥२॥

ॐ ह्रीं कर्मारि विजयी वीराधिवीर श्री गोमटेश्वर वाहुवलि परमयोगीन्द्राय नमः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः।

जम्बू स्वामी पूजा

(चौरासी मथुरा)

चौबीसों जिन पांय, पंच परम गुरु वन्दि के।
पूज रचों सुखदाय, विघ्न हरो मङ्गल करो ॥

अडिल्ल छन्द—विद्युत मालिदेव चये जम्बू भये,
कामदेव अवतार अन्त केवलि गये।
कलयुग कारे पाख वरांगनि शिववरी।
आवो आवो स्वामि भक्ति मम उर भरी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूस्वामी अष्टकर्म विनाशनाय, अत्रावतरावतरसंवौषट्

सिंह पीठ मम देह कमल उर सोहनो।
'तिष्ठौ तिष्ठौ तीर्थ भविक मन मोहनो॥
अब मोहि चिन्ता कौन सिद्ध कारज भये।
आतम उपभव पाप सकल सुर थिर भये॥ २॥

ॐह्रींश्रीजम्बूस्वामी अष्टकर्मविनाशनाय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्थापनं।

स्वामि आपनो स्वरूप मोहि इक कीजिये।
मैं हूँ पूजक भक्त आन चित दीजिये॥
या संसार असार असाता के विषे।
तो सूं तन मन होय सकल आनन्द जगै॥३॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी अष्ट कर्म नाशाय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

गंगादिक जल लेय रत्न झारी भरूं।
जै जै कर उच्चारि धारिदे प्रति करूं॥
सिद्ध चक्र कूं वंद्य जम्बू पूजा करूं।
ज्ञानावरणी कर्म तनी थिति को हनूं॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जन्म जरा मृत्युविनाशनाय जलं।

बावन चन्दन ल्याय और मलयागिरी।
केशर द्रव्य मिलाय घिसाय इकमिक करी॥
सिद्ध चक्र कू वंद्य जम्बू पूजा करूं।
दर्शनावरणी कर्म तनी थिति को हनूं॥ चंदनं॥
तन्दुल मुक्ता जिम इन्दु करणा जिसे।
दीर्घ अखण्डन कोर पूज करिये तिसे॥
ज्योति सरूपी धाय जम्बू पूजा रचूं।
अन्तराय क्षय कीन अक्षय पद मैं चहूँ॥ अक्षतं॥
पारिजात चन्दन अरु मेरु सुहावनै।

संतानक सुन्दर के पुहप मंगावनै ॥
अलख रूप अवधार जम्बू पद को जजूं ।
मोहन कर्म निवार कामते ना लजूं ॥ पुष्पं ॥
सुन्दर घृत मिष्टान्न विविध मेवा जितै ।
मैदा सहित मिलाय पिंड करिये तितै ॥
समयसार मम वन्दि भरे आगे धरूं ।
जम्बू स्वामि मनाय वेदनी को हरूं ॥ नैवेद्यं ॥
चन्द्रकांति और सूर्यकांति शुभ मणि भली ।
और सनेही वात जोय आनंद रली ॥
अष्टम गुण जुत ध्याय जम्बू पूजूं सदा ।
चार आयु तिथि मेटि मरूं नहीं मैं कदा ॥ दीपं० ॥
धूप दशांग मंगाय अग्नि संग खेय ही ।
धूपायन जु कनक मय सार जु लेव ही ॥
नीच गोत्र अर ऊँच गोत्र नहि पाय हो ।
आतम रूपी ध्यान निरंजन ध्याय हो ॥ धूपं ॥
श्रीफल लौंग वदाम छुहारे लाय के ।
एला पूंगी आदि मनोज्ञ मनाय के ॥
अष्ट गुणायुत ध्याय सकल भव को हरूँ ॥
नाम करम झड़ जाय प्रभु पायन परूँ । फलं ॥
ज्ञायक सम्यक शुद्ध ज्ञान केवल मय सोहे ।
केवल दर्शन प्राप्ति अगरुलघु सुख में जो है ।
इक में नेक समाहि हर्ष भारी गुन तेरो ।
अव्याबाध निवारि अर्घ दे चरनन चेरो ॥ अर्घं ॥

जयमाला—दोहा

वर्द्धमान जिन बन्द के, गुरु गौतम के पांय ।
और सुधर्म गणी प्रणमि, जम्बूस्वामि मनाय ॥

(पद्धरी छन्द)

जय विद्युत मालीदेव सार, पंचम दिव में महिमा अपार ।
जय राजगृहीपुर सेठ थान, उपजे मनमथ अन्तिम सुजान ॥
लघु वय में उर वैराग्य धार, जग सब अस्थिर जान्यो कुमार ।
तब सब परिवार उछाह ठान, व्याही वनिता जिन वय समान ॥
रतनन के दीपक दिपै महल, वनिता बैठी जुत काम शैल ।
तिन सो ज्ञानादिक वच उचार, रागादिक रहित कीनी सुनार ॥
तब विद्यु त प्रभ तहाँ चोर आय, रसभीनी अष्ट कथा सुनाय ।
ताको वैराग्य कथा प्रकाश, निज तत्व दिखावो चिद विलास ॥
जग अथिर रूप थिर नाहिं कोय, नहिं शरण जीवकूं आन होय ।
संसार भ्रमण विधिपाँच ठान, इक जीव भ्रमत नहिं साथ आन ॥
षट द्रव्य भिन्न सत्ता लखाय, जिय अशुचि देह मांहीं रमाय ।
आश्रव परसों त्रय प्रीति होय, संवर चिद् निज अनुभूति जोय ॥
तपकर वसुविधि सत्ता नसाय, निज स्वयं सिद्ध त्रयलोक गाय ।
निज धर्म लखैं कोई पुमान, दुर्लभ नहिं आतमज्ञान भान ।
द्वादश भावन इहि भांति भाय. वहुजन युत भेंटे वीर पाय ।
दीक्षा धर केवल ज्ञानधार. रिधि सप्त लई महिमा अपार ॥
सन्मति गौतम धर्मा मुनीश, शिवपाय तबै केवल जगीश ।
वानी जु खिरी अक्षरन रूप, तत्वन को भाख्यो इम सरूप ॥
आपापर परसों प्रीति होय, चेतन बधै चवभाँति सोय ।
तब निज अनुभूति प्रकाश पाय, सत्ता सुकर्म झड़ैं अघाय ॥
चव बंध रहित तब होत जीव सिद्धालय थिरता ह्वै तदीव ।
षट् द्रव्य बखानों भेद रूप, चैतन्य और पुद्गल सरूप ॥
चालन सहचारी थिति सुहाय, वरतावन द्रव्यन कूं सुभाय ।
पुनि सर्व द्रव्यजामें समाय, अवकाश दुतिय अवलोक गाय ॥
मुनि श्रावक को आचार भाप, आचारज ग्रन्थन में प्रकाश ।

पुनि आरज खण्ड विहार कीन, जम्बू वन में तिथि जोग लीन ॥
सब करमन को क्षय करि मुनीश, शिव वधू लही विसवा सु वीस।
मथुरा तैं पश्चिम कौस आध, छत्री पद में महिमा अगाध ॥
वृज मण्डल में जे भव्य जीव, कार्तिकवदि रथ काढत सदीव।
केउ पूजत केऊ नृत्य ठान, कैऊ गावत विधि सहित तान ॥
निशि द्योस होत उत्सव महान, पूरत भव्यन के पुन्य थान।
पद कमल भाग तुम दास होय। निज भक्त विभव दे अरज मोय ॥
घत्ता—जल चन्दन लाये, अक्षत मिलाये, पुहुप सुहाये मन भाये।
नैवेद्यं सु दीपं दस विधि धूपं फलरु अनूपं अत गाये।
सुवरन के थालं भरिजु रसालं फेरि त्रिकालं सिर नाये ॥
गुण माल तिहारी मम उरधारी जगत उजारी सुख दाये।
ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी सिद्ध परमेष्ठिने पूर्णार्घं।
दोहा—महिमा जम्बू स्वामि की, मोपे कही न जाय।
कै जाने केवलि मुनि, कै उन माहि समाय ॥

इत्याशीर्वादः।

सोनागिर पूजा।

अडिल्ल—जम्बू द्वीप मंझार भरत क्षेत्र सु कहो।
आर्य खन्ड शुभ जान, भद्रदेशे लहो ॥
सुवर्णगिरि अभिराम सुपर्वत है तहां।
पंचकोड़ि अरु अर्द्ध गये मुनि शिव-जहां ॥ १ ॥
दोहा—सोनागिरी के शीशपर बहुत जिनालय जान।
चन्द्रप्रभू जिन आदि दे पूजों सब भगवान ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं सोनागिर क्षेत्रान्मुक्तजिनसमूह अत्रावतावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

पद्मद्रह को नीर ल्याय गंगासे भरके ।
कनक कटोरी मांहि हेम थारन में धरके ॥
सानागिरि के शीस भूमि निर्वाण सुहाई ।
पंचकोड़ि अरु अर्द्ध मुक्ति पहुँचे मुनिराई ॥
चन्द्र प्रभु जिन आदि सकल जिनवर पद पूजों ।
स्वर्ग मुक्ति फल पाय जाय अविचल पद हूजो ॥
दोहा—सोनागिरि के शीसपर, जेते सब जिनराज ।
तिनपद धारा तीन दे, तृषा हरणके काज ॥
ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरि निर्वाण क्षेत्रेभ्यो जलं ॥१॥
केसर आदि कपूर मिले मलयागिरि चन्दन ।
परिमल अधिकी तास और सब दाह निकन्दन ॥ सोनागिरि० ॥
सोनागिरि के शीसपर जेते सब जिनराज ।
ते सुगन्धकर पूजिये, दाह निकन्दन काज ॥ सुगन्धं ॥ २ ॥
तंदुल धवल सुगन्ध ल्याय जल धोय पखारो ।
अक्षय पदके हेतु पुंज द्वादश तहां धारो ॥ सोनागिरि० ॥
सोनागिरि के शीस पर, जेते सब जिनराज ।
तिन पद पूजा कीजिये, अक्षय पदके काज ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥
बेला और गुलाव मालती कमल मंगाये ।
पारिजात के पुष्प ल्याय जिन चरण चढ़ाये ॥ सोनागिरि० ॥
सोनागिरि के शीसपर, जेते सब्र जिनराज ।
ते सब पूजों पुष्प ले मदन विनाशन काज ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥
व्यंजन जो जगमांहि खांड घृत माहिं पकाये ।
मीठे तुरत बनाय हेम थारी भर ल्याये ॥ सोनागिरि० ॥
सोनागिरि के शीसपर, जेते सब जिनराज ।
ते पूजों नैवेद्य ले, क्षुधा हरण के काज ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥
मणिमय दीप प्रजाल धरौं पंकति भर थारी ।

जिन मन्दिर तम हार करहु दर्शन नरनारी ॥ सोनागिरि० ॥
सोनागिरि के शीसपर, जेते सब जिनराज।
करों दीपले आरती ज्ञान प्रकाशन काज ॥ दीपं० ॥ ६ ॥
दशविधि धूप अनूप लेय भाजन में डालों।
जाकी धूप सुगन्ध रहे भर सर्व दिशालों ॥ सोनागिरि० ॥
सोनागिरि के शीसपर, जेते सब जिनराज।
धूप कुम्भ आगे धरों, कर्म दहनके काज ॥ धूपं ॥ ७ ॥
उत्तम फल जग माहिं बहुत मीठे अरु पाके।
अमित अनार अचार आदि अमृत रस छाके ॥ सोनागिरि० ॥
सोनागिरि के शीसपर, जेते सब जिनराज।
उत्तम फल तिन ले मिलो, कर्म विनाशन काज ॥ फलं ॥ ८ ॥
जल आदिक वसु द्रव्य अर्घ करके धर नाचो।
बाजे बहुत बजाय पाठ पढ के मुख सांचो ॥ सोनागिरि० ॥
सोनागिरि के शीसपर जेते सब जिनराज।
ते हम पूजैं अर्घ ले, मुक्ति रमण के काज ॥ अर्घं ॥ ६ ॥
अडिल्ल—श्री जिनवर की भक्ति सो जे नर करत हैं।
फल वाछां कुछ नाहिं प्रेम उर धरत हैं ॥
ज्यों जगमांहि किसान सु खेती को करे।
नाज काज जिय जान सुभ आपही झरें ॥
ऐसे पूजादान भक्ति वश कीजिये।
सुख सम्पति गति मुक्ति सहज कर लीजिये ॥

जयमाला।

दोहा—सोनागिरिके शीशपर, जिन मन्दिर अभिराम।
तिन गुणकी जयमालिका, वर्णत 'आशाराम' ॥ १ ॥
गिरि नीचे जिनमंदिर सुचार। ते यतिन रचे शोभा अपार।
तिनके अति दीरघ चोक जान। तिनमें यात्रा मेले सु आन ॥२॥

गुम्मज छज्जे शोभित अनूप । ध्वज पंकति सौहैं विविध रूप ।
वसुप्रातिहार्य तहां धरे आन । सब मंगलद्रव्यनि की सुखान ॥३॥
दरवाजों पर कलशा निहार । करजोर सुजय जय ध्वनि उचार ।
इक मंदिर में यति राजमान । आचार्य विजय कीर्ति सुजान ॥४॥
तिन शिष्य भगीरथ विबुध नाम । जिनराज भक्ति नहिं और काम ।
अब पर्वतको चढ़ चलो जान । दरवाजो तहां इक शोभमान ॥५॥
तिस ऊपर जिन प्रतिमा निहार । तिन वंदि पूज आगे सिधार ।
तहां दुखित भुखित को देत दान । याचकजन तहां है अप्रमाण ॥६॥
आगे जिन मंदिर दुहू ओर । जिन गान होत वादित्र शोर ।
माली बहु ठाढे चौक पोर । ले हार कलंगी देत दौर ॥७॥
जिन-यात्री तिनके हाथ मांहि । बखशीस रीझ तहां देत जांहि ।
दरवाजो तहां दूजो विशाल । तहा क्षेत्रपाल दोऊ ओर लाल ॥८॥
दरवाजे भीतर चौक मांहि । जिन भवन रचें प्राचीन आहिं ।
तिनकी महिमा वरणी न जाय । दो कुन्ड सुजलकर अति सुहाय ॥९॥
जिन मन्दिर की वेदी विशाल । दरवाजो तीजो बहु सुढाल ।
तां दरवाजे पर द्वारपाल । ले लकुट खडे अरु हाथ माल ॥१०॥
जे दुर्जन को नहीं जान देय । ते निंदकको ना दरश देय ।
चल चन्द्रप्रभुके चौक मांय । दालान तहां चौतर्फ आय ॥११॥
तहां मध्य सभामंडप निहार । तिसकी रचना नाना प्रकार ।
तहां चन्द्र प्रभुके दरश पाय । फल जात लहो नर जन्म आय ॥१२॥
प्रतिमा विशाल तहां हाथ सात । कायोत्सर्ग मुद्रा सुहात ।
वंदे पूजें तहां देय दान । जन नृत्य भजनकर मधुर गान ॥१३॥
ताथेई थेई थेई बाजत सितार । मिरदंग बीन मुहचंग सार ।
तिनकी ध्वनि सुन भवि होत प्रेम । जय-कार करत नाचत सु एम १४
ते स्तुति कर फिर नाय शीश । भवि चले मनो कर कर्म खीस ।
यह सोनागिरि रचना अपार । वरणन कर को कवि लहै पार ॥१५॥

अति तनक बुद्धि "आशा" सुपाय। वश भक्ति कही इतनी सुगाय।
मैं मन्दबुद्धि किमि लही पार। बुधिवान चूक लीजो सुधार ॥१६॥

सोनागिरि जय मालिका, लघुमति कही बनाय।
पढे सुने जो प्रीतिसे, सो नर शिवपुर जाय ॥१७॥

इत्याशीर्वादः।

इति श्री सोनागिरि पूजा सम्पूर्ण

सोनागिर पर्वत के प्रत्येक मन्दिर के अर्घ *

दोहा—गिरवर ऊपर सोहने, पिचहत्तर जिन धाम।
अर्घ देय शुभ भाव से, करूं तिन्हें परणाम॥

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र सोनागिरि पर पिचहत्तर जिनालय विराजमान तिनको अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

श्याम वरण तन सोहने नेमिनाथ भगवान!
प्रथम कूट पर मैं जजूं मन.वच तन धर ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ ॥१॥

बाल ब्रह्मचारी प्रभू रजमत प्राणाधीश।
अर्घ देय पूजा करूं धरूं चरण में शीश॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ ॥२॥

अश्वसेन कुल चन्द्रमा वामा देवी लाल।
पार्श्वनाथ पद अर्घ दे मन वच तन भर थाल॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ ॥ २ ॥

नाभि राय मरु देवि सुत तीन भवन आधार।

---

* अगर पूजा करने वाले भव्यात्माओं को निराकुलता हो तो प्रत्येक जिन मन्दिर का अर्घ चढाकर पूजन करें और अवकाश न हो तो निम्न लिखित समुच्चय अर्घ नम्बर १ को पढ दुबारा अर्घ देकर जयमाल पढ पूजन समाप्त कर देवे।

सोनागिर पर मैं जजूं मन वच योग सम्हार ॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥
पंचम टोंक विषै जजूं आदि जिनेश्वर देव ।
सुर नर मुनि वन्दत चरण मेटौ कर्म कुटेव ॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥
चन्दा प्रभु मन मोहने महासेन के लाल ।
सोनागिर पर मैं जजूं दीनानाथ कृपाल ॥
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं ॥६॥
तोरन से रथ फेर कर जीवन बन्ध छुड़ाय ।
कर्म काट शिवपुर गये तिन प्रति अर्घ चढाय ॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ७ ॥
पद्मप्रभू दुति पद्म सम भव्य पद्म विकसाय ।
तिनको पूजों भाव से गिर सोनागिर आय ॥
ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥
कमठ मान भंजन हितु जग जीवन के नाथ ।
कनक थाल भर अर्घ दे नाऊं चरणन माथ ॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥
नाग युगल को मन्त्र दे पहुँचाए सुरधाम ।
तिनको इह गिर पर जजूं निश दिन आठों याम ॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥
कर्म भूमि की आदि में दीना धर्म बताय ।
मोक्ष मार्ग पट खोल कर पहुँचे शिवपुर जाय ॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥११॥
यादव कुल के चन्द्रमा समुद विजय के लाल ।
हलधर हरि हर आदि सब सेवत पद, त्रैकाल ॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१२॥

तीन लोक के नाथ तुम कृपा सिन्धु भगवान।
कनक थाल भर मैं जजूँ कीजे आप समान॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१३॥
आदि सृष्टि कर्त्ता तुही तूही ब्रह्म मुनीश।
शिव शंकर तूही प्रभू तुम्हें नमाऊं शीश॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१४॥
मुनिसुव्रत सुव्रत करन हरन सकल जग फंद।
जजूँ अर्घ तुम चरण मैं जय जय जयति जिनन्द।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घं॥ १५ ॥
पद्मावत धरणेन्द्र नित सेवत तुम पद आय।
सोनागिरि पर मैं जजूँ मन वच ध्यान लगाय॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं॥ १६ ॥
केवल ज्योति जगाय के भ्रम तम क्षय तुम कीन।
जजूँ अर्घ तुम चरण में मेटो मम गद तीन॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं॥ १७ ॥
त्रिशला नन्द जितेन्द्र तुम तीन भवन आधार।
करूँ अर्चना भाव से होवे भव दधि पार॥
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१८॥
शिवा देवी उर जन्म ले किया वंश उद्धार।
सोना गिर पर मैं जजूँ करो नाथ भव पार॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१६॥
भव्य कुमुद विकसित किये हरी जगत जन ताप।
चन्द्र चन्द्र बन्दत चरण हरहु शीघ्र मम पाप॥
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२०॥
पारस नाथ अनाथ तुम रक्षक हो अवनीश।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र मिल नावत चरणन शीश॥

ॐ ह्रीं श्री पारसनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ।। २१ ।।
नाभि राय कुल चन्द्रमा आदि आदि अवतार ।
जजूँ चरण में अर्घ ले त्यार त्यार मोहि त्यार ।।
ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ।। २२ ।।
तीनों पद तुम प्राप्त कर तीन लोक के नाथ ।
तीन लोक सेवित चरण कीजे नाथ सनाथ ।।
ॐ ह्रीं अरनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ।। ।। २३ ।।
भव्य जीव वन्दित चरण त्रिभुवन के आधार ।
जजूँ सुपारस नाथ को शिव सुन्दर भरतार ।।
ॐ ह्रीं सुपारस नाथ जिनेन्द्राय अर्घं ।। २४ ।।
पशुवन की किलकार सुन कर विवाह का त्याग ।
बाल ब्रह्मचारी जजूँ दीनबन्धु बड़ भाग ।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं० ।। २५ ।।
किया मोह मर्दन तुम्हीं मल्लि नाथ जिन राय ।
सोनागिर पर मैं जजूँ मन वच अर्घ चढाय ।।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ।। २६ ।।
जूनागढ गिरनारि चढ पंच महाव्रत धार ।
केश लोचकर हाथ निज किया आत्म उद्धार ।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ।। २७ ।।
रजमत को सम्बोध कर पशुवन बन्ध छुडाय ।
सोनागिर के शीश पर हमहूँ अर्घ चढाय ।।
ॐ ह्रीं श्रीं नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ।। २८ ।।
अष्टम जिनकर अष्ट क्षय छित अष्टम भुवि पाय ।
कनक थाल भर अर्घ दे चरणों शीश नवाय ।।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं ।।२९ ।।
करम काष्ट चकचूर कर ध्यानाग्नि प्रकटाय ।

केवल लहि शिव पुर गये, मैं पूजों तिन पाय ॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ३० ॥
चन्द्र वदन मन मोहने चन्दा प्रभु जिन देव ।
कर्म काट शिव पुर गये करें इन्द्र पद सेव ॥
ॐ ह्रीं चन्द्र प्रभु जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ३१ ॥
अष्ट कर्म को नाश कर शिवपुर पहुंचे जाय ।
नेमि प्रभु पूजों चरण सोनागिर पर आय ॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ३२ ॥
नाथ अजित जित कर्म को भये त्रिलोकी नाथ ।
हरो कर्म मल हे प्रभु धरूँ चरण में माथ ॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ३३ ॥
शिव पथ द्वारा खोल कर कीना सत उपदेश ।
आदि नाथ पूजों चरण मेटो जगत कलेश ।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ३४ ॥
अजित अजित पद पाय के किये कर्म चकचूर ।
जजूं चर्ण में अर्घ यह करो अमङ्गल दूर ।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ३५ ॥
नृत्य तिलोत्तम देखकर जग से भये उदास ।
अर्घ जजूं तुम चरण में हमें तुहारी आश ।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेश्वराय अर्घं ॥ ३६ ॥
सामायिक उपदेशकर सन्मारग दर्शाय ।
भव्य जीव सम्बोधिया अजित जिनेश्वर राय ।
ॐ ह्रीं अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ३७ ॥
नेमि धर्म परि पूर्ण कर वने धर्म के ईश ।
वसु विधि कर्म नशाइये धरूँ चरण में शीश ।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ३८ ॥

अर्घ क्षेत्र पाल

असम सुख सार त्रीक्षा द्रशाकरालं।
रचकर करज डीलं धीर्घ जिह्वा करालं॥
सुघट विकृत चक्रं शान्ति दास प्रशम्यं।
भजतु नमतु जैनं भैरवं क्षेत्रपालं॥
सोना गिर वर भूमि के तुम रक्षक सिर मोर।
क्षेत्र पाल इस हेतु मैं जजूं अर्घ इह ठौर॥
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धक्षेत्र से नागिरिभूमि अधिष्ठाता क्षेत्रपालाय अर्घं
इन्द्रादिक सेवित चरण महासेन के नन्द।
कनक थाल भर अर्घ ले पूजों त्रिभुवन चन्द।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं॥ ३६॥
यादव कुल के चन्द्रमा शिव देवी के लाल।
समुद विजय के लाड़ले तुम्हें नमाऊं भाल।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं॥ ४०॥
अखिल विश्व अवनीश के ईश्वर आदि जिनन्द।
जग जन मन हर्षित करत मेटत भव जन फन्द।
ॐ ह्रीं आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं॥४१॥
कलमल भंजन नाथ तुम त्रिभुवन के आधार।
सोनागिर पर मैं जजूं भर कर कंचन थार।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं॥ ४२॥
अवधि ज्ञान बल इन्द्र ने भेजे धनद कुमार।
आदि जन्म लख भूमि पर करके रतन अपार।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं॥ ४३॥
शंख चिह्न अङ्कित चरण हे निभंक जिनराय।
जजूं अर्घ बहु द्रव्य ते हलधर सेवित पाय।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥४४॥
गौर वरण गुण विमल तुम गणधर पाय न पाहि।
हे जिनेश हम किस तरह तुम गुण माला गाहि।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ४५ ॥
नाग चिह्न राजत चरण नाग नागनी नाथ।
मुझ अनाथ को शीघ्र ही कीजे नाथ सनाथ।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ४६ ॥
नारायण बलदेव मिल कर विवाह का साज।
सब वैभव परिहार्य कर धरा धर्म सिरताज।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेश्वराय अर्घं ॥ ४७ ॥
आदि प्रवर्त्तक धर्म के आदिनाथ भगवान।
सोनागिर पर मैं धरूं हृदय आपका ध्यान।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ४८ ॥
कर्म कालिमा धोय कर भये सिद्ध जगदीश।
तिन चरणन पूजा करूं पूजनपद अवनीश।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्र प्रभु जिनेन्द्रय अर्घं ॥ ४९ ॥
मिलि सुरेन्द्र उत्सव किया गिर सुमेर पर जाय।
हम इत गिरवर पर जजैं, सुवरणथाल सजाय।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेद्राय अर्घं ॥ ५० ॥
विमल बुद्ध दातार तू विमल नाथ विमलेश।
गिर सुमेरु ले जाय कर किया इन्द्र अभिषेक।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ५१ ॥
धर्मामृत वर्षाय के हरी जगत जन ताप।
जजूं अर्घ तुम चरण में मेटो भव संताप।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ५२ ॥
हिंसामय घन घोर तम करने लगा अधीर।

कुण्डलपुर मे जन्म ले प्रकट भये महावीर ।
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय अर्घम् ॥ ५३ ॥
श्याम वरण मन मोहना किया मार संहार ।
तिन चरणन पूजा करूं मन वच अर्घ उतार ।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ५४ ॥
जीवन बन्ध छुडाय कर जाय चढे गिरनार ।
हम इस गिरि पूजें चरण शिव रमणी भरतार ।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ५५ ॥
हेम वरण छवि मोहिनी नाभिराय के लाल ।
हलधर हरिहर आदि मिल नावत तुम पद भाल ।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ५६ ॥
आशा पास विदार कर श्रेय मार्ग गह ईश ।
प्रभु श्रेयांश पदकमल मे नावत सुर नर शीश ।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ५७ ॥
चरण चंद्र शशि चिह्न धर चन्द्र वरण उनहार ।
सोनागिरि पर मैं जजूं करो भवोदधि पार ।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ५८ ॥
हरो ताप संताप अब शीतल नाथ जिनेश ।
जजूं अर्घ ले भाव से मेटो कर्म कलेश ।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ॥ ५९ ॥
विघ्न हरन मंगल करन पारस नाथ जिनेन्द्र ।
ले सुरेन्द्र गिरि गोद में धाये जाय गिरीन्द्र ।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घम ॥ ६० ॥
हरित वरन छवि मोहनी अश्वसेन कुल चन्द ।
तीन लोक तारण तरण जय २ जयति जिनन्द ।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ॥ ६१ ॥

आदि कर्म क्षय तुम किये कर्म भूमि की आदि।
जजूं आदि परमात्मा हरो रोग उन्माद।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम्॥ ६२॥
स्वस्तिक चिन्ह सुहावना श्री सुपार्श्व जिनराय।
सुर नर मुनि पूजत चरण हम पूजत इत पाय।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घम्॥ ६३॥
हलधर ने षडयंत्र रचि पशू दिये रुकवाय।
तिनकी बन्ध छुडाय तुम दीक्षा ली वन जाय।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम्॥ ६४॥
सिद्धारथ के लाडले भारत प्राणाधार।
सोना गिर पर मैं जजूं करो नाथ भव पार।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घम्॥ ६५॥
कमठ मान परिहार कर फिर सम्बोधा ताय।
मुझे नाथ सम्वोधिये मैं पूजों तुम पाय।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घम्॥ ६६॥
कल्मष मल सब दूर कर केवल ज्योति जगाय।
फिर शिव सुन्दर को वरी मैं पूजों गुण गाय।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घम्॥ ६७॥
भव्य कमल विकसित किये चन्द्र चांदनी मांहि।
हर्ष हर्ष गुण गाय के हम पूजत हैं तांहि।
ॐ ह्रीं श्री चन्दप्रभु जिनेन्द्राय अर्घम्॥ ६८॥
संभव भय का नाश कर पहुंचे अविचल ठाम।
अर्घ धरूं शुध भाव से मन वच करूं प्रणाम।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घम्॥ ६८॥
कुण्डल पुर में जन्म ले मारा मन्मथ वीर।
सकल कर्म को नाश कर पहुंचे भव दधि तीर।

ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्राय अर्घम् ॥ ६६ ॥

इसके आगे दो जगह चरण पादुका हैं, उनकी भी वन्दना कर अर्घ चढाना चाहिए ॥ *

गोतम के अभिमान को किया नाथ तुम चूर।
इसो हेतु यह अर्घ मैं चरणो जजूं हजूर।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ ॥ ७० ॥

महासेन के वंश मे उपजे प्रभु तुम सूरि।
जजूं थाल भर अर्घ मैं कीजे अरि चक चूर।
ॐ ह्री श्री चन्द्र प्रभु जिनेन्द्राय अर्घ ॥ ७१ ॥

समवशरण धनपति रच्यो कर्म भूमि की आदि।
कर्म काट शिवपुर गये मैं पूजों तुम पाद।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ७२ ॥

इसके आगे वजनी शिला है वहा भी अर्घ देवे तथा इसके आगे नारियल कुण्ड है वहां भी अर्घ देवे।

श्री सम्मेदाचल थकी पायो अविचल धाम।
हम पूजत इस गिरि वसं मेरे प्रभु उरकाम।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ७३ ॥

माथे तुम छह खण्ड को हे नीर्थंकर देव।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र मिल करें चरण की सेव।
ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनेन्द्राय अर्घम ॥ ७४ ॥

शशि सम कान्ति सुहावनी कल्मप हरण जिनेन्द्र।
सुर गिर पर ले जाय कर किया नृत्य नागेन्द्र।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घम् ॥ ७५ ॥

---

*नोट—यह चरण पादुका किसकी है सो पता नहीं परन्तु यह अनुमान अवश्य लगाया जा सकता है कि किसी योग्य और महत्वपूर्ण पुरुषों की होनी चाहिए तभी पर्वत पर स्थान मिला है, इस दृष्टि से पूज्य है।

तपसी को उपदेश दे दीना धर्म बताय।
हमें धर्म बतलाइये तीन भवन के राय।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ७६ ॥
नगर द्वारका सोहना भारत का सिरताज।
दिया त्याग तुमने उसे मैं पूजों पद आज।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ७७ ॥
पावापुर से शिव गये आठों कर्म नशाय।
हम पूजत इत भाव से कंचन थाल सजाय।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ७८ ॥
तीन भुवन के मुटक मणि तीन भुवन आधार।
मैं पूजों तुम पद कमल चन्द्र वरण उनहार।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ७९ ॥
वृषभ नाथ वृष चिन्ह युत भये त्रिजग आधार।
करूं अर्चना भाव से करो नाथ भवपार।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ८० ॥
किया धर्म उपदेश तुम द्वादश सभा मंझार।
सन्मति सन्मति दीजिये मो अर्जी चित धार।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ८१ ॥
किस विधि मैं स्तुति करूं हे त्रिभुवन के राय।
भक्ति भाव से हे प्रभो तुम पद अर्घ चढ़ाय।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ८२ ॥

समुच्चय अर्घ

अडिल्ल छन्द—नङ्गानङ्ग मुनीन्द्र आदि शिवपुर गये।
सिद्ध क्षेत्र सोनागिर से पूजित भये॥
सुर पति तिन पद जजैं हरष उर में धरे।

मोती सुत गुण गाय शीघ्र शिव तिय वरैं ॥

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशति तीर्थङ्करेभ्यः तथा साढे पांच करोड़ मुनिभ्यो मुक्तिपद प्राप्तेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ।

पावापुर सिद्धक्षेत्र पूजा ।

दोहा—जिहिं पावापुर छिति अघाति, हन सन्मति जगदीश ।
भये सिद्ध शुभ थान सो, जजों नाय निज शीश ॥

ॐ ह्रीं श्री पावापुरसिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर, संवौषट् । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापन । अत्रममसन्निहितो भवभववषट् सन्निधिकरणं ।

अथ अष्टक ॥ गीतिका छन्द ॥

शुचि सलिल शीतो कलिल रीतो श्रमन चीतो ले जिमो ।
भर कनक झारी त्रिगद हारी दै त्रिधारी जित तृषो ॥
वर पद्मवन भर पद्मसरवर वहिर पावा ग्राम ही ।
शिव धाम सन्मति स्वामि पायो जजों सो सुखदा मही ॥

ॐ ह्रीं श्री पावापुर क्षेत्राय वीरनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

भव भ्रमत भ्रमत अशर्म्म तपकी तपन कर तपताईयो ।
तसु वलय-कंदन मलय-चंदन उदय संग घसि ल्याइयो ॥वर०॥सुगंध

तंदुल नवीन अखंड लीने लै महीने ऊजरे ।
मणिकुन्द इन्दु तुपारद्युति-जित कण रकावी मे धरे॥वरपद्म ॥अक्षतं

मकरद लोभन सुमन शोभन सुरभ चोभन लेयजी ।
मद समर हर वर अमर तरुके प्रान दृग हरखेयजी ॥वरपद्म ॥पुष्पं॥

नैवेद्य नूतन छुध मिटावन सेव्य भावन युत किया ।
रस मिष्ट पूरति इष्ट सूरति लेय कर प्रभु हित हिया ॥वरप०॥नैवेद्यं॥

तम अज्ञ-नाशक स्वपर भासक ज्ञेय परकाशक सही ।
हिमपात्र में धर मौल्यविन वर द्योत धर मणि दीपही॥वरपद्म.दीपं।

आमोदकारी वस्तु सारी विध दुचारी जारनी ।
तसु तूपकर कर धूप लै दश दिश सुरभ विस्तारनी ॥वरपद्म०धूपं॥
फल भक्क पक्क सुचक्क सोहन सुक्क जनमन मोहने ।
वर सुरस पूरित लख त्वरित मधु रत लेय कर अति सोहने॥वरपद्म०फलं
जल गंध आदि मिलाय वसु विध थार स्वर्ण भरायकें ।
मन प्रमुद भाव उपाय करलै आय अर्घ बनायकें ॥ वर पद्म० अर्घं ॥

॥ अथ जयमाला ॥

दोहा—चरम तीर्थ करतार श्री, वर्द्धमान जगपाल ।
कल मल दल विध विकल ह्वै, गाऊं तिन जयमाल ॥१॥
जय जय सुवीर जिन मुक्ति थान । पावापुर वन सर शोभवान ॥
जे शित अषाढ़ छट स्वर्ग धाम । तज पुष्पोत्तर सु विमान ठान ॥१
कुंडलपुर सिद्धारथ नृपेश । आये त्रिशला जननी उरेश ॥
शित चैत्र त्रयोदश युत त्रिज्ञान । जन्में तम अज्ञ निवार भान॥२
पूर्वान्ह धवल चउदिशि दिनेश । किये न्हवन कनकगिरि-शिर सुरेश ।
वय वर्ष तीस पद कुमरकाल । सुख दिव्य भोग भुगते विशाल ॥३॥
मारगशिर अलि दशमी पवित्र । चढ़ चंद्रप्रभा शिविका विचित्र ॥
चलि पुरसे सिद्धन शीश नाय । धारो संयम वर शर्म्मदाय ॥ ४ ॥
गत वर्ष दुदश कर तप विधान । दिन शित वैशाख दशैं महान ।
रिजुकूला सरिता तट स्व सोध । उपजायो जिनवर चरम बोध॥५॥
तबही हरि आज्ञा शिर चढाय । रचि समवशरण वर धनदराय ।
चउ संघ प्रभृति गौतम गनेश । युत तीस वरष विहरे जिनेश ॥६॥
भवि जीव देशना विविध देत । आये वर पावानगर खेत ॥
कार्तिक अलि अंतिम दिवस ईश । कर योग निरोध अघाति पीस ॥७
ह्वै अकल अमल इक समय मांहि । पंचम गति निवसे श्री जिनाह॥
तब सुरपति जिन रवि अस्त जान । आये जु तुरत स्व स्व विमान॥८
कर वपु अरचा थुति विविध भांत । लै विविध द्रव्य परमल विख्यात॥

तब ही अग्नींद्र नवाय शीश । संस्कार देह की त्रिजगदीश ॥६॥
कर भस्म वंदना निज महीय। निवसे प्रभु गुन चितवन स्वहीय |
पुनि नर मुनि गनपति आय आय । वंदी सो रज सिर नाय २॥१०
तबहीसे सौ दिन पूज्यमान । पूजत जिनगृह जन हर्ष मान।
मैं पुन २ तिम भुवि शीश धार । वंदौ तिन गुणधर उर मझार॥११
जिनही का अब भी तीर्थ एह । वर्तत दायक अति शर्म्म गेह ॥
अरु दुखमकाल अवसान ताहि । वर्तेगो भव थित हर सदाहि ॥१२॥

❀ कुसमलता छन्द ❀

श्री सन्मति जिन अंघ्रि-पद्म युग जजैं भव्य जो मन वच काय ।
ताके जन्म जन्म संचित अघ जावहिं इक छिन माहिं पलाय ॥
धनधान्यादि शर्म इन्द्रीपद लहै सो शर्म्म अतीन्द्री थाय ।
अजर अमर अविनाशि शिवथल वर्णी दौल, रहे शिर नाय ॥

❀ इत्याशीर्वादः ❀

चंपापुर सिद्धक्षेत्र पूजा ।

दोहा—उत्सव किये पनवार जहँ, सुरगण युत हरि आय ।
जजों सुथल वसपूज्य सुत, चम्पापुर हर्षाय ॥ १ ॥

ॐ ह्रींश्री चंपापुरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अत्रावतर २ संवौषट् इत्याह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं । परिपुष्पांजलिं क्षिपेन ॥

अष्टक ॥ चाल नन्दीश्वर पूजन की ॥

मम अमिय विगत त्रस वारि, लै हिम कुंभ भरा ।
तव सुखद त्रिगद हर तार, दै त्रय धार धरा ॥
श्री वासुपूज्य जिनराय, निर्वृति थान प्रिया ।
चम्पापुर थल सुखदाय, पूजों हर्ष हिया ॥

ॐ ह्रीं श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं०

कश्मीरी केशर सार, अति हि पवित्र खरी।
शीतलचन्दन संगसार, लै भव तापहरी ॥ श्री वासुपूज्य०॥ सुगंध॥
मणिद्युति सम खंड-विहीन, तंदुल लै नीके।
सौरभ-युत नव वर बीन, शालि महानीके । श्री वासुपूज्य० । अक्षतं॥
अलि लुभन सुभन दृग घ्राण, सुमन जु सुर द्रुमके।
लै वाहिम अर्जुन वान, सुमन दमन झुमके । श्री वासु० ॥पुष्पं ॥४॥
रस पूरित तुरित पकवान, पक्क यथोक्त घृती।
क्षुध गदमद प्रदमन जान, लैविध युक्तकृती ॥ श्री वासु० नैवेद्यं ॥५॥
तमअज्ञ प्रनाशक सूर, शिव मग परकाशी।
लै रत्नदीप द्युतिपूर, अनुपम सुखराशी ॥ श्रीवासु० ॥ दीपं० ॥६॥
वर परिमल द्रव्य अनूप, शोध पवित्र करी।
तसु चूरण कर कर धूप, लै वसु कर्म हरी ॥ श्रीवासु० ॥ धूपं ॥७॥
फल पक्क मधुररस वान, प्रासुक बहुविधके।
लखि सुखद रसन दृग घ्रान लैप्रद पद-सिधके ॥ श्रीवसु० ॥फलं॥ ॥
जल फल वसु द्रव्य मिलाय, लै भर हिमथारी।
वसु अङ्ग धरा पर ल्याय, प्रमुदित रव चितधारी ॥ श्रीवासु० ॥अर्घं॥

❀ अथ जयमाल ❀

दोहा—भये द्वादशम तीर्थपति, चंपापुर शुभ थान।
तिन गुणकी जयमाला कछु, कहों श्रवण सुख दान ॥

जय जय श्री चंपापुर सुधाम। जहां राजत नृप वसुपूज नाम ॥
जग पौन पल्य से धर्महीन। भवभ्रमन दुःखमय लखि प्रवीन ॥१॥
उर करुणा धर सो तम विडार। उपजे किरणावलि धर अपार ॥
श्रीवासुपूज्य तिन तने वाल। द्वादसम तीर्थ कर्ता विशाल ॥ २॥
भवभोग देहसें विरत होय। वय बाल माहिं ही नाथ सोय ॥
सिद्धन नमि महाव्रत धार लीन। तप द्वादश विध उग्रोग्र कीन ॥३॥

तहँ मोह मातत्रय आयु येह। दशप्रकृति पूर्व ही क्षय करेह ॥
श्रेणीजु क्षपक आरूढ होय। गुण नवम लाग नव माहिं सोय ॥४॥
सोलह वसु इक इक षट इकेय। इक इक इक इम इन क्रम सहेय ॥
पुनि दशम थान इक लोभ टार। द्वादशम थान सोलह विडार ॥५॥
ह्वै अनन्त चतुष्टय युक्त स्वाम। पायो सब सुखद संयोग ठाम ॥
तहँ काल त्रिगोचर सर्व ज्ञेय। युगपतहि समय मांही लखेय ॥६॥
कछु काल दुविध वृष अमिय वृष्टि। कर पोषें भवि भुवि धान्य सृष्टि
इक मास आयु अवशेष जान। जिन योगन की सुप्रवर्त्ति हान ॥७॥
ताही थल शुक्ल ध्यान ध्याय। चतुदशम थान निवसे जिनाय।
तह दुचरम समय मँझार ईश। प्रकृति जु बहत्तर तिनहि पीस ॥८॥
तेरहको चरम समय मझार। करके श्री जगतेश्वर प्रहार ॥
अष्टमि अवनी इक समयमध्य। निवसे पाकर निज अचल रिद्ध ॥
युत गुण वसु प्रमुख अमित गुणेश। ह्वै रहे सदा ही इमहिं वेश।
तवही से सो थानक पवित्र। त्रैलोक्य पूज्य गायो विचित्र ॥१०॥
मैं तसु रज निज मस्तक लगाय। वन्दौं पुनि पुनि भुवि शीशनाय ॥
ताही पद वांछा उर मझार। धर अन्य चाह बुद्धी विडार ॥ ११ ॥

दोहा—श्री चंपापुर जो पुरुष, पूजै मनवच काय।
वर्णि "दौल" सो पायही, सुख सम्पति अधिकाय।

❀ इत्याशीर्वादः ❀

इति श्री चंपापुर सिद्ध क्षेत्र पूजा समाप्त।

श्रीनयनागिरि पूजा।

दोहा—पावन परम सुहावनो, गिरि रेशिन्दि अनूप।
जजहूँ मोद उर धार अति, कर त्रिकरण शुचिरूप ॥

ॐ ह्रीं श्रीनयनागिरिसिद्धक्षेत्र से वरदत्तादि पंच ऋषिराज सिद्ध पदप्राप्तये अत्र अवतर २ संवौषट आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ

ठ-ठ स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्, सन्निधिकरणं।

अति निर्मल क्षीरधि वारि, भर हाटक झारी।
जिन अग्र देय त्रय धार, करन त्रिरुग छारी॥
पन वरदत्तादि मुनीन्द्र, शिवथल सुखदाई।
पूजों श्रीगिरिरेशिन्दि, प्रमुदित चित थाई॥

ॐ ह्रीं श्री गिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशाय जलं।
मलयागिरि चन्दन सार, केशर संग घसी।
शीतल वासित सुखकार, जन्मातापं कसी॥ पन वर० ॥चन्दनं०॥
शुचि विमल नवल अति श्वेत, द्युति जित सोमतनी।
सो ले पद अक्षय हेत, अक्षत युक्त अनी॥ पन वर० ॥अक्षतं०॥
शुभ सुमन त्रिदश-तरुकेय, स्वच्छ करण्ड भरी।
मदब्रह्म तनुज हरनेय, भेंट जिनाग्र धरी॥ पन वर० ॥ पुष्पं० ॥
क्षुध फणहि विहंगमनाथ, नेवज सद्यानी।
कर विविध मधुर रस साथ, विधि युत अमलानी॥पन०॥नैवेद्यं॥
मिथ्यातम भानन भानु, स्वपर उजास कृती।
ले मणिमय दीप सुभानि, विमल प्रकाश धृती॥पन वर०॥दीपं०॥
कर्मेन्धन जारन काज, पावक भाव मही।
वर दश विधि धूपहि साज, खेय उछाह गही॥ पनवर० ॥धूपं०॥
दृग घ्रान रसन मन प्रीय, प्रासुक रस भीने।
लखदायक मोक्ष प्रदीप, लै फल अमलीने॥ पन वर०॥ फलं० ॥
शुचि अमृत आदि समग्र, सजि वसु द्रव्य प्रिया।
धारों त्रिजगपति अग्र, धर वर भक्त हिया॥ पन वर० ॥ अर्घं० ॥

जयमाला।

दोहा—जग बाधक विधि बाधकर, है अबाध शिव धाम।
निवसे तिन गुण धर सुहृद, गाऊँ वर जयदाम॥ १ ॥

जय जय जिन पार्श्व जगत्रि-स्वाम । भवदधि तारण तारी ललाम ।
हति घाति चतुक है युक्त सन्त । दृगज्ञान शर्म वीरज अनन्त ।।१।।
सो समवसरण कमला समेत । विहरत विहरत पुर ग्राम खेत ।
सुर नर मुनिगण सेवत कृपाल । आये भवहितु तिहिं अचल भाल ।।२
अरु वरदत्तादि मुनीन्द्र पच । चतुविधि हनि केवल ज्ञान संच ।
लख सर्व चराचर त्रिजग ज्ञेय । त्रैकालिक युगपत पद अमेय ।।३।।
निज आनन द्वै विध वृपस्वरूप । उपदेश भरण भवि मर्म कूप ।
दृगज्ञान चरण सम्यक प्रकार । शिवपथ साधक कह त्रिजग तार ।।४।।
अरु सप्त तत्त्व षट् द्रव्य केव । पंचास्तिकाय नव पदन भेव ।
दृग कारण सो दरसाय ईश । तिहि भूधर शिर पुनि अघति पीश ।।५
पंचमगति निवसे तव सुरेश । आके ले सुरगण संग अशेष ।
रेशिन्दि शिखर रज शीष ल्याय । किय पंचम कल्यानक उछाय ।।६।।
मैं तिन पद पावन चाह ठान । वंदों पुनि पुनि सो सुखद थान ।
मन वच तन तिन गुण स्त्र उर धार । 'वर्णी दौलत' अनचाह हार ७।।

ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा—आनंद कन्द मुनीन्द्र गुण, धर उर कोप मंझार ।
पूजें ध्यावें सो सुधी, है लघु महि भव पार ।।५।।(इत्याशीर्वाद·)

श्रीद्रोणागिरि पूजा ।

[पं० दरयावजी चौधरी कृत]

सिद्धक्षेत्र परवत कहो, द्रोनागिरि तसु नाम ।
गुरुदत्तादि मुनीश नमि, मुक्ति गये इहि ठाम ।। २ ।।
इहि थल जिन प्रतिमा भवन, वने अपूरव धाम ।
तिन प्रति पुष्प चढ़ाइये, और सकल तज काम ।। २ ।।

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरि सिद्धक्षेत्रसे सिद्धपद प्राप्त गुरुदत्तादि मुनि अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक–सुन्दरी

सरस छीर सु नीर गहीर ले, जिन सुचरनन धारा दीजिए।
नशत जन्म जरा मृति रोग हैं, मिटत भवदुख शिवसुख होत हैं॥
ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्राय जन्ममृत्यु विनाशनाय जलं नि०।१।
अगर कुमकुम चन्दन गारिये, जिन चढ़ाय सो ताप निवारिये।
जगत जन जे भवआताप ते, चर्च जिनपद अघ इमि नाशते॥चं०
देवजीरो उर सुख दासके, पावनी घन केशर आदि के।
रुरस अनियारे अनवीध ले, पुंज निजपद आनन तीनदे॥अक्षतं॥
सरस वेला और गुलाब ले, केवरो इत आदि सुवास ले।
जिनचढ़ाय सुहर्ष सुपावते, मदनकाम व्यथा सब नाशते॥ पुष्पं॥
पूरियां पेढ़ादि सु आनिये, खोपरा खुरमादिक जानिये।
सरस सुंदर थार सु धारिये, जिन चढ़ाय छुधादिनिवारिये॥नैवेद्यं॥
रतन मणिमय जोति उद्योत है, मोह तम नशि ज्ञानहु होत है।
करत जिन तट भविजन आरती, सकलजन्मन ज्ञानसु भासती।दीपं
कूट वसु विधि धूप अनूप है, महक रही अति सुन्दर अग्नि है।
खेइये जिन अग्र सु आयकें, ज्वलन मध्य सु कर्म नशायकें॥धूपं॥
नारियल सु छुहारे ल्याइये, जायफल बादाम मिलाइये।
लायची पुंगी फल ले सही, जजत शिवपुरकी पावैं मही॥ फलं॥
जल सु चंदन अक्षत लीजिये, पुष्प धर नैवेद्य गनीजिये।
दीपधूपसुफल बहुसाजहीं, जिनचढाय सु पातक भाजहीं॥ अर्घं॥
करत पूजा जे मन लायकें, हेत निज कल्यान सु पायकें।
सरस मंगल नित नये होत हैं, जजत जिनपद ज्ञान उदोत हैं॥अर्घं०

जयमाला—दोहा।

ये ही भावना भायकें, करों आरती गाय।
सिद्धक्षेत्र वर्णन करों, छंद पद्धड़ी गाय॥ १॥

श्रीसिद्धक्षेत्र पर्वत सु जान । श्रीद्रोणागिरि ताको सु नाम ॥
तहं नदी चन्द्रभागा प्रमान । मगरादि मीन तामें सु जान ॥१॥
ताको अति सुन्दर बहे नीर । सरिता जुजान भारी गंभीर ॥
यात्री जन सब देशन के आय । अस्नान करत आनन्द पाय ॥२॥
फलहोड़ी ग्राम कहो बखान । जिन मन्दिर तामें एक जान ।
पूजा सु पाठ तहां होत नित्त । स्वाध्याय वाचना में सुचित्त ॥३॥
अब गिरि उतंग जानो महान । ता ऊपर को लागे शिवान ॥
तरुवर उन्नत अति सघन पांत । फल फूल लगे नाना सु भांत ॥४॥
तहँ गुफा रही सुन्दर गहीर । मुनिराज ध्यान धारें तपीस ॥
गिरि शीस बीस जिन बने धाम । अब और होय तिनको प्रणाम ॥५
तहं झालर घंटा बजे सोय । वादित्र बजे आनन्द होय ॥
तहं प्रातिहार्य मंगल सुदर्व । भामंडल चन्द्रोपम सु सर्व ॥६॥
जिनराज विराजत ठाम ठाम । वंदत भविजन तज सकल काम ॥
पूजा सु पाठ तहं करे आय । ताथेई थेई थेई आनन्द पाय ॥७॥
अब जन्म सुफल अपनो सु जान । श्री जिनवर पद पूजे सु आन ॥
मैं भ्रम्यो सदा या जग मझार । नहिं मिली शरन तुमरी अपार ॥८॥
सोरठा—सिद्धक्षेत्र सु महान, विघन हरन मंगल करन ।
वन्दत शिवसुख थान, पावत जे निश्चय भजे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरि सिद्धक्षेत्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

गीतिका छन्द ।

जाके सुपुत्र पौत्रादि सम्पति, होय मंगल नित नये ।
जो जजत भजत जिनेन्द्रपद, अब तासु विघन सु नशिगए ॥
मैं करों थुति निज हेत मंगल, देत फल वांछित सही ।
'दरयाव' है जिन दास तुमरो, आश हम पूरन भई ॥

इत्याशीर्वादः ।

श्रीगिरनार पूजा

(स्व० कवि जवाहरलालजी कृत)

छप्पय—श्रीगिरनार शिखर परवत, दक्षिण दिश सोहे।
नेमिनाथ जिन मुक्तिधाम, सब जन मन मोहे॥
कोड़ बहत्तर सात शतक, मुनि शिवपद पायो।
ता थल पूजन काज, भविक चित अति हर्षायो॥
तिस तीरथराज सु क्षेत्र को, आह्वानन विधि ठानकर।
पूजूं त्रियोग मनवचनतन, श्रावकजन गुन गानकर॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरनार सिद्धक्षेत्र से श्रीनेमिनाथ संबुकुमार प्रद्युम्न कुमार अनिरुद्धकुमार और बहत्तर करोड़ सातसे मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव वषट् सन्निधिकरणं।

प्रभु तुम राजा जगत के, कर्म देहि दुख मोय।
करूं यथारथ वीनती, हमपै करुणा होय॥

चाल लावनी की।

तीरथ गढ़ गिरनारको, नित पूजो हो भाई।
हेम भृंग भर तीरथादिक, शुभ प्रासुक पावन लाई॥
जन्म मरण जरा नाशन कारन, धार देहु ढरकाई॥ नित०॥
जंबूद्वीप भरत आरजमे, सोरठ देश सोहाई।
सेसावन के निकट अचल तहँ, नेमिनाथ शिवपाई॥ नित०॥

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

सुन्दर चन्दन कदली नन्दन, केशर संघ घसाई।
भवदुखताप मिटावन लखके, अर्चों जिनपद आई। नित०।ज। च०
शशि सम श्वेतवर्ण मुक्ताशित, अक्षत अखंड सुहाई।

चरन शरन प्रभु अत्तै निधि लख, पुंज दिये सो पाई ।नित।जंबू।अ.
कुसुम वर्णपन त्रिविध गंध जुत, चुन चुन भेंट धराई ।
पूजन किय हैशीलवर्द्धना, मनोवाण जय लाई ।।नित.।जं ।पुष्पं
खाजा ताजा मोदक गूंजा, फेनी सरस बनाई ।
षट्रस व्यंजन मिष्ट सुधामय, हेमथार भर लाई ।। नित.।जंबू।नैवे.
दीप ललित कर घृत पूरित भर उज्ज्वल जोति जगाई ।
करों आरती जिनपद केरी, मिथ्या तिमिर पलाई ।।नित।जंबू।दीप.
अगर तगर कपूर चूर बहु, द्रव्य सुगंध मिलाई ।
खेय धनजंय धूप-धूम मिस, वसु विधि देय छराई ।।नित.।जंबू।धूपं
एला दाडिम श्रीफल पिस्ता, पूंगीफल सुखदाई ।
कनक पात्र धर भविजन पूजें, मनवांछित फल पाई ।नित.।जंबू।फलं
अष्ट द्रव्य का अर्घ संजोवो, घंटा नाद बजाई ।
गीत नृत्य कर जजौं 'जवाहर' सानन्द हर्ष वधाई ।नित.।जंबू।अर्घं

जयमाला (जोगीरासा)

उर्जयंत गरराज मनोहर देखत ही मन मोहे ।
राजुलपति शिवथान विराजै, उत्तम तीरथ जो है ।।
पुत्र पौत्र हरि कृष्ण प्रचुर मुनि, पंचमगति तहँ पाई ।
तास तनी महिमा को वरने, श्रवण सुनत हरषाई ।। १ ।।
पद्धडी-जै जै जै नेमि जिनन्दचन्द्र । सुरनर विद्याधर नमत इन्द्र ।।
जै सोरठ देश अनेक थान । जूनागढ पै शोभित महान ।। २ ।।
तहां उग्रसेन नृप राजद्वार । तोरण मंडप शुभ बने सार ।।
जै समुद विजय सुत व्याहकाज ।आये हर वलि जुत आन साज ।।
तहँ जीव बंधे लख दया धार । रथ फेर जंतु बंधन निवार ।।
द्वादस भावन चिंतवन कीन भूषण वस्त्रादिक त्याग दीन ।।४।।
तज परिग्रह परिणय सर्व संग । ह्वै अनागार विजई अनंग ।।
धर पंच महाव्रत तप मुनीश । निज ध्यान धरो हो केवलीश ।।५।।

इस ही सुथान निर्वाण थाय। सो तीरथ पावन जगत माय॥
अरु शंबु आदि प्रद्युम्न कुमार। अनिरुद्ध लही पद मुक्ति धार॥६॥
पुनि राजुलहू परिवार छांड, मन वचन कायकर जोग मांड॥
तप तप्यौ जाय तिय धीर वीर संन्यास धार तजकें शरीर॥७॥
तिय लिंग छेद सुर भयो जाय। आगामी भव में मुक्ति पाय॥
तहँ अमरगण उर धर अनन्द। नित प्र त पूजत हैं श्रीजिनन्द॥८॥
अरु निरतत मघवा युक्तनार, देवनकी देवी भक्ति धार॥
ता थेई २ थेई २ करन जाय। फिरि फिरि फिरि फिरकी सहाय॥६॥
मुहचंग बजावत तारवीन। तनन तननन तन अति प्रवीन॥
करताल ताल मिरदंग और। झालर घंटादिक अमित शोर॥१०॥
आवत श्रावकजन सर्व ठाम। बहु देश देश पुर नगर ग्राम॥
हिलमिल सब संघ समाज जोर। हय गय वाहन चढ़ रथ बहोर॥
जात्रा उत्सव निशिदिन कराय। नर नारिउ पावत पुण्य आय॥
को बरनत तिस महिमा अनूप। निश्चय सुर शिवके होय भूप॥१२
घत्ता श्रीनेमि जिनन्दा आनन्द कंदा, पूजत सुरनर हित धारी।
तिस नमत 'जवाहर' जुगकर शिर धर, हर्ष धार गढ़ गिरनारी॥१३

ॐ ह्रीं श्रीगिरनार सिद्धक्षेत्रसे नेमिनाथ शंबु प्रद्युम्न अनिरुद्ध और बहत्तर कोटि सातसौ मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपा०।

जे नर बंदत भाव धर, सिद्धक्षेत्र गिरनार।
पुत्र पौत्र सम्पति लहे, पूरन पुण्य भंडार॥ १४॥

सम्बत् विक्रमराय प्रमान। वसु जुग निधि इक अङ्क सुजान॥
पौष मास पख सोम बखान। पंचमि तिथि रविवार सु सुजान।१५
रच्यौ पाठ पूजन सुखदाय। पढ़त सुनत चित अति हुलसाय॥
यात्रा कर धन्य ते जीव। पावे फल ह्वै शिवतिय पीव॥१६॥

इत्याशीर्वाद।

श्री शत्रुंजय पूजा।

(श्रीयुत भगोतीलालजी कृत)

श्री शत्रुंजयशिखर अनूप। पांडव तीन बड़े शुभ भूप ॥
आठ कोड़िमुनि मुक्ति प्रधान। तिनके चरण नमूं धर ध्यान ॥
तहां जिनेश्वर बहुत सरूप। शान्तिनाथ शुभ मूल अनूप ॥
तिनके चरण नमूं त्रिकाल। तिष्ठ तिष्ठ तुम दीनदयाल ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुञ्जय सिद्धक्षेत्र से आठ कोडि मुनि और तीन पांडव मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

क्षीरोदधि नीरं उज्ज्वल सीरं, गंध गहीरं ले आया।
मैं सन्मुख आया धार दिवाया, शीस नवाया खोल हिया ॥
पांडव शुभतीनं सिद्ध लहीनं आठकोडि मुनि मुक्तगये।
श्रीशत्रुंजय पूजौं सन्मुखहूजो, शान्तिनाथ शुभ मूलनये ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुञ्जय सिद्धक्षेत्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मलयागिरि लाऊं गंध मिलाऊं केशरडारी रंग भरी। जिनचरन चढाऊं संमुख जाऊं, व्याधि नशाऊं तपत हरी ॥ पा. ॥ चंदनं
तन्दुल शुभ चोखे बहुत अनोखे, लखि निर्दोखे पुंज धरूं ।अक्षयपद दीजो सब सुख कीजो, निजरस पीजो चरणपरूं ॥पांडव॥अक्षतं॥
शुभ फूल सुवासी मधुर प्रकासी, आनंद रासी ले आयो। मो काम नशायो शील बढायो, अमृत छायो सुखपायो ॥ पांडव ॥ पुष्पं ॥
नेवज शुभ लाया थार भराया, मगल गाया भक्तिकरी। मो क्षुधा नशाया सुख उपजाया, ताल बजाया सेव करी ॥ पांडव. ॥ नैवेद्यं।
दीपक ले आया जोति जगाया, तुम गुण गाया चरण परूं। मैं शरणे आया शीश नवाया, तिमिर नशाया नृत्य करू ॥पांडव॥दीपं

दश गंध कुटाई धूप बनाई. अग्नि डार जिन अग्र धरों। तुमकर्म जराई शिव पहुंचाई, होय सहाई कष्ट हरो ॥ पांडव ॥ धूपं ॥
फल प्रासुक चोखे बहुत अनोखे, लख निर्दोखे भेट धरूं। सेवक की अरजी चितमें धरजी, कर अब मरजी मोक्ष करूं।पांडव।फल।
वसु द्रव्य मिलाई थार भराई, सन्मुख आई नजर करो। तुम शिवसुखदाई धर्म बढाई, हर दुखदाई अर्घ करो ॥ पा० ॥ अर्घ
दोहा—पूरण अर्घ बनाय कर, चरणन में चित लाय।
भक्ति भाव जिनराज की, शिव रमणी दरशाय ॥ पूर्णार्घं०

जयमाला

जय नमन करूं शिर नाय, मोकूं वर दीजे हे जिनाय।
तुम भक्ति हिये में रही छाय, सो उमग २ अरु प्रीति लाय ॥१॥
जय तुम गुण महिमा है अपार, नहिं कवि पंडित जन लहें पार।
जय तुच्छ बुद्धि मैं करत गान, तुम भक्ति हिये में रही आन ॥२॥
जय श्रीशत्रुञ्जय शिखर जोय, निर्वाण भूमि जानो जु सोय।
जहां पांडव तीन जु मुक्ति होय, जय राय युधिष्ठिर भीम जोय ॥३॥
जय अरजुन जानो धनुष धीर, तासम नहिं जानो कोइ वीर।
जय आठकोडि मुनि और सोय, तिनवरी नारि रंभा जु लोय ॥३॥
जय सही परीषह बीस दोय, जय यथाख्यात चारित्र होय।
जय कायर कंपे सुनो जोय, वे ध्यानारूढ भये जु सोय ॥ ५ ॥
जय बारह भावन भाव सोय, तेरह विधि चारित धरो सोय।
जय कर्म करे चकचूर जोय, अरु सिद्ध भये संसार खोय ॥ ६ ॥
जय सेवक जनकी करहु सोय, जय दर्शन ज्ञान चरित्र होय।
जय रुलो नहीं संसार माय, अरु थोड़े दिन में मुक्ति पाय ॥ ७ ॥
जब 'धर्मचन्द्र,' मुनीम सौय, मो अल्प बुद्धिसौं मेल होय।
वे धर्मीजन हैं बहुत जोय, सो कही उन्होंने मोहि सोय ॥ ८ ॥
तुम शत्रुञ्जय पूजा बनाय, तो बांचे भविजन प्रीति लाय।

जय 'लाल भगोतीलाल' मोय, तिन रची पाठ पूजन जु सोय ।।६।।
जय घाट बाढ़ कछु अर्थ होय, शोधो संभार जैसे जु सोय।
जय भूल चूक जामैं जु होय, सो पंडितजन शोधो जु लोय ।। ६ ।।
जय सम्वतशत गुनईश जोय, अरु ता ऊपर गुनचास होय।
जय पौष सुदी द्वादश जु होय, अरु वार शुक्र जानो जु सोय ।।११।।
जय सेवक बिनवे जोर हाथ, मो मिले अखयपद बेग नाथ।
जय चाह रही नहीं और कोय, भवसिंधु उतारो पार मोय ।।१२।।

भक्ति भाव उर लाय, करके जिनगुण पाठको।
मंगल आरती गाय, चरणन शीस नवाय के ।।१२।।

ॐ ह्रीं शत्रुञ्जय सिद्धक्षेत्र से तीन पांडव और आठ कोटि मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता—हरषाय गाय जिनेन्द्र पूजूं, कृत कारित अनुमोदना।
शुभ पुण्य प्रापति अर्थ तिनकी करी बहु विधि थापना ।।१३।।
जिनराज धर्म समान जगमें और नाहीं हित घना।
ताते सुजानो भव्य तुम, नित पाठ पूजन भावना ।। १४ ।।

इत्याशीर्वादः।

श्री तारंगागिरि पूजा

(श्रीयुत पं० दीपचंदजी वर्णी कृत)

वरदत्तादिक हूँठ कोटि मुनि जानिये,
मुक्ति गये तारंगागिरिसे मानिये,
तिन सबको शिर नाय सु पूजा ठानिये,
भवदधि तारन जान सु विरद बखानिये ।।

ॐ ह्रीं तारंगागिरिसे वरदत्तादि साढे तीन कोटि मुनी समूह मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

शीतल प्रासुक जल लाय, भाजन में भरके,
जिन चरनन देत चढ़ाय, रोग त्रिविध हरके।
तारंगागिरिसे जान, वरदत्तादि मुनी,
सब हूॅंठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी॥

ॐ ह्रीं तारंगागिरि सिद्धक्षेत्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

मलयागिरि चन्दन लाय, केशर मांहि घसे।
जिन चरण जजूं चितलाय, भव अताप नसे। तारगा० ॥ चंदनं ॥
तंदुल अखंड भर थार, उज्ज्वल अति लीजे।
अक्षयपद कारणसार पुञ्ज सुढिग कीजे। तारंगा० ॥ अक्षतं ॥
चंपा गुलाब जुहि आदि, फूल बहुत लीजे।
पूजों श्रीजिनवर पाद, कामविथा छीजे। तारगा० ॥ पुष्पं ॥
नाना पकवान बनाय, सुवरण थाल भरे।
प्रभुको अरचो चित लाय, रोग क्षुधादि टरे। तारंगा० ॥ नैवे० ॥
दीप कपूर जगाय जगमग जोति लसे।
करूॅं आरति जिन चित लाय, मिथ्यातिमिर नसे। तारंगा० ॥दीपं॥
कृष्णागरु धूप सुवास खेऊॅं प्रभु आगे।
जलजाय कर्मकी राशि ज्ञानकला जागे॥ तारगा० ॥ धूपं ॥
श्रीफल कदली बादाम पूंगीफल लीजै।
पूजों श्रीजिनवर धाम शिवफल पालीजे॥ तारंगा० ॥ फलं ॥
शुचि आठों द्रव्य मिलाय, तिनको अर्घ करों।
मन वच तन देहु चढाय, भवतर मोक्ष बरों। तारंगा० ॥ अर्घं ॥

जयमाला

सोरठा—वरदत्तादि मुनीन्द्र, हूॅंठ कोटि मुक्तहि गये।
वंदत सुर नर इन्द्र, मुक्ति रमनके कारणे॥ १ ॥

चौपाई—गुजरात देशके मध्य जान, इक सोहे ईडर संस्थान।
ताकी दिशि पच्छिम में वखान, गिरि तारंगा सोहे महान।
तहंते मुनि ऊंठ करौड़ सोय, हनि कर्म सबे गये मोक्ष सोय।
ता गिरिपर मंदर है विशाल, दर्शनते चित होवे खुशाल ॥२॥
नायक सुमूल संभव अनूप, देखत भवि ध्यावत निज स्वरूप।
पुनि तीन टोंकपर दर्श जान, भविजन वंदत उर हर्ष ठान ॥३॥
तहां कोटि शिला पहली प्रसिद्ध, दूजी तीजी है मोक्ष सिद्धि। तिन पर जिनचरण विराजमान, दर्शन फल इम सुनिये. सुजान ॥४॥
जा वन्दे भविजन एक वार, मनवांछित फल पावे अपार। वसुविधि पूजे जो प्रीति जाय, दारिद तिनको क्षण में पलाय ॥५॥ सब रोग शोक नाशे तुरंत, जो ध्यावे प्रभुको पुण्यवंत। अरु पुत्र पौत्र सम्पत्ति होय, भव भवके दुःख डारे सु खोय ।६। इत्यादिक महिमा है अपार, वर्णन कर कवि को लहे पार। अब बहुत कहा कहिये बखान, कहें 'दीप' लहें ते मोक्षथान ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसे वरदत्त सागरदत्तादि साढे तीन कोटि मुनि मोक्षपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तारंगा वन्दों, मन आनन्दो, ध्याऊं मन वच शुद्ध करा।
सब कर्म नशाऊँ शिवफल पाऊँ, ऊंठ कोटि मुनिराजवरा ॥

इत्याशीर्वादः।

श्री पावागढ पूजा

(श्रीयुत धर्मचन्दजी कृत)

श्रीपावागिर मुकति शुभ, पांच कोड़ि मुनिराय।
लाड नरेंद्र को आदि दे, शिवपुर पहुँचे जाय ॥१॥
तिनको आह्वानन करों, मन वच काय लगाय।
शुद्ध भावकर पूजजो, शिव सन्मुख चितलाय ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्र से लाड़ नरेन्द्र आदि पांच करोड़ मुनि सिद्धपदप्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् स०।

जल उज्ज्वल लीनो प्रासुककीनो, धारसु दीनो हितकारी।
जिन चरनचढाऊं कर्मनशाऊं शिवसुखपाऊं वलिहारी॥
पावागिरि वन्दों मनआनन्दों भवदुखखंदो चितधारी।
मुनिपाँचजुकोडं भवदुखछोडं, शिवमुखजोड़ं सुखभारी॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

चन्दन घसि लाऊँ गंध मिलाऊँ, सब सुख पाऊँ हर्ष बडो।
भवबाधा टारो तपत निवारो, शिवसुखकारो मोद वड़ो।पा०।चंदनं
गजमुक्ताचोखे बहुत अनोखे, लख निरदोखे पुंज करूं।
अक्षयपद पाऊँ और न चाऊँ, कर्मनशाऊं चरणपरूं। पा.। अ०
शुभ फूल मंगाऊँ गन्ध लखाऊँ, बहु उमगाऊं भेट धरूँ।
ममकर्म नशाओ दाह मिटाओ, तुमगुण गाऊं ध्यान धरूं।पा.।पुष्पं
नेवज बहुताजे उज्ज्वल साजे, सब सुख काजे चरन धरूं।
मो भूख नशावे ज्ञान जगावे, धर्म बढ़ावे चैन करूं। पा. ।नैवेद्यं
दीपक की जोत तम छय होतं, बहुत उद्योतं लाय धरूं।
तुम आरति गाऊं भक्तिबढाऊं, खूब नचाऊं प्रेम भरूं। पा. । दीपं
बहु धूप मंगाऊं गंध लगाऊं. बहु महकाऊं दश दिशिको।
धर अग्नि जलाई कर्मखिपाई, भविजन भाई सब हितको। पा. ।धूपं
फल प्रासुक लाई भविजन भाई, मिष्ट सुहाई भेट करूं।
शिवपदकी आशा मनहुल्लासा, करखुहलासा मोक्ष करूं ॥पा०।फलं॥
वसुद्रव्य मिलाई भविजन भाई, धर्म सहाई अर्घ करूं।
पूजा को गाऊं हर्ष बढाऊं. खूब नचाऊं प्रेम भरूं ॥पा०॥अर्घं॥

जयमाला ।

सोरठा—करके चोखे भाव, भक्ति भाव उर लायके ।
पूजों श्रीजिनराय, पावागिरि वंदों सदा ॥

(चाल जोगीरासा)

श्रीपावागिरि तीर्थ बड़ो है, बंदत शिवसुख होई ।
रामचन्द्रके सुत दोय जानो, लाड नरेन्द्र जु सोई ॥
इनहिं आदि दे पांच कोटि मुनि, शिवपुर पहुंचे जाई ।
सेवक दुइ कर जोर बीनवे, मन वच कर चितलाई ॥१॥
कर्म काट जे मुक्ति पधारे, सब सिद्धनमें जोई ।
सुख सत्ता अरु बोध ज्ञानमय, राजत सब सुख होई ॥
दर्श अनंतो ज्ञान अंनतो, देखे जाने सोई ।
समय एकमें सब ही झलके, लोकालोक जु दोई ॥२॥
ज्ञान अतेंद्री पूरन तिनके, सुक्ख अनंतो होई ।
लोक शिखरपर जाय विराजे, जामन मरन न होई ॥
जा पदको तुम प्राप्त भये हो, सो पद मोहि मिलाई ।
भक्ति भावकर निशिदिन वन्दों, निशिदिन शीस नवाई ॥३॥
'धर्मचन्द्र' श्रावककी विनती, धर्म बडो हित दाई ।
जो कोई भविजन पूजन गावे, तन मन प्रीति लगाई ॥
सो तैसो फल जल्दी पावे, पुण्य वढे दुःख जाई ।
सेवक को सुख जल्दी दीजो, सम्यक् ज्ञान जगाई ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागढ से लाड नरेन्द्र और पांच करोड मुनि मोक्ष पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीजिनवरराई करमन भाई, धर्म सहाई, दुख छीजे ।
पूजा नित चाहूँ भक्ति वढाऊं, ध्यान लगाऊं सुख कीजे ॥

सुन भविजन भाई द्रव्य मिलाई, बहु गुन गाई नृत्य करो।
सब ही दुख जाई बहु उमगाई, शिवसुख पाई चरन परो ॥५॥

इत्याशीर्वादः ।

श्रीगजपंथ पूजा ।

(श्रीयुत किशोरीलालजी कृत)

श्रीगजपंथ शिखर जगमें सुखदायजी,
आठ कोड़ि मुनिराय परमपद पायजी ।
और गये बलभद्र सात शिवधामजी ।
आह्वानन विधि करूं त्रिविध धर ध्यानजी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथाचलसे सप्त बलभद्र आदि आठ कोडि मुनि सिद्ध पद प्राप्त अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधिकरणं।

(अष्टक)

कंचन मणिमय झारी लेके, गंगाजल भर ल्याई ।
जन्म जरा मृत नाशन कारन, पूजों गिरि सुखदाई ॥
बलभद्र सात वसु कोडि मुनीश्वर, यहां पर करम खपाई ।
केवल लहि शिवधाम पधारे, जजूं तिन्हें शिरनाई ॥
ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।
मलयागिरि चन्दन घसि केसर सुवरण भृंग भराई ।
भव आतापनिवारन कारन, श्रीजिनचरण चढाई ।बल०।चदनं
अक्षत उज्ज्वल चन्द्रकिरण सम, कनक थाल भर लाई ।
अक्षय सुख भोगनके कारन, पूजूं देह हुलसाई ॥बल०॥अक्षतं॥
पुष्प मनोहर रंग सुरंगी, आवे बहु महकाई ।
कामवाण के नाशन कारन, पूजुं देह हुलसाई ॥बल०॥ पुष्पं ॥
घेवर बावर लाड्डू फेनी, नेवज शुद्ध कराई ।

क्षुधावेदनी रोग हरन को, पूजो श्रीजिनराई ॥ वल०॥ नैवेद्यं॥
बाति कपूर दीप कंचनमय, उज्ज्वल जोति जगाई।
मोहतिमिर के दूर करन को, करों आरती भाई ॥वल०॥दीपं॥
अगर तगर कृष्णागरु लेके, दस गंध धूप बनाई।
खेय अगनि में श्रीजिन आगे, करम जरे दुखदाई ॥वल०॥धूपं॥
फल अति उत्तम पूंगी खारक, श्रीफल आदि सुहाई।
मोक्षमहाफल चाखन कारन, भेंट धरो गुणगाई ॥वल०॥फलं॥
जलफल आदि दरव वसु उत्तम, मणिमय थाल भराई।
नाच नाच गुण गाय गायके, श्रीजिन चरन चढाई ॥ वल० । अर्घं

जयमाला । (गीता छंद)

गजपंथ गिरिवर शिखर उन्नत, दरश लख सब अघ हरे।
नर नारि जे तिन करत वंदन, तिन सुजश जग विस्तरे ॥
इस थानतें मुनि आठ कोडी, परमपदकूं पायके।
तिनकी अबै जयमाल गाऊं, सुनो चित हुलसाय के ॥ १ ॥

(पद्धरि छंद)

जय गजपंथ गिरिशिखर सार। अति उन्नत है शोभा अपार ॥
ताकी दक्षिण दिश नगर जान। मसरूल नाम ताको प्रधान ॥२॥
तहां बनी धर्मशाला महान। ता मध्य लसे जिनवर सुथान ॥
तहा बने शिखर शोभित उतंग। यह चित्र विचित्र नाना सुरंग ॥३॥
चारों दिशि गुमठी लसत चार। चित्राम रचित नाना प्रकार ॥
तिनके ऊपर है ध्वज फहरात। मानुषही बुलावत करत हाथ ॥ ४ ॥
तहँ गुम्मज में श्रीपार्श्वनाथ। राजत पुनि प्रतिमा है विख्यात ॥
तिन दरशन वंदन करन जात। पूजत हैं नित प्रति भव्य भ्रात ॥५॥
जिन मन्दिर में रचना विशेष। आरास रचित अद्भुत अनेक ॥
वेदी उज्ज्वल राजत रंगीन। अति ऊंचे सोहे शिखर तीन ॥६॥

तिनके ऊपर कलशा लसंत । चन्द्रोपम ध्वज दर्शन दिपंत ॥
त्रय कटनी खंभा चार माय । इन्द्रनकी छवि वरनी न जाय ॥७॥
ऊपरली कटनी मध्य जान । अन्तिम तीर्थेश विराजमान ॥
भामंडल चँवर सु छत्र तीन । पुनि चरण पादुका द्वय नवीन ॥८॥
पुनि पद्मावति अरु क्षेत्रपाल । तिष्ठत ता आगे रक्षपाल ॥
सन्मुख हस्ती घूमे सदीव । जहां पूजा करते भव्य जीव ॥९॥
आगे मंडप रचना विशाल । तहां सभा भरे है सदा काल ॥
जहां बांचत पंडित शास्त्र आय । कोई जिनवर गुण मधुर गाय ॥१०॥
कोइ जाप जपे चरचा करंत । कोई नृत्य करत बाजे बजंत ॥
नौबत झालर घंटा सु झांझ । पुनि होत आरती नित्य सांझ ॥११॥
मन्दिर आगे सुन्दर अरण्य । तरु फल फूलत दीसे रमण्य ॥
अति सघन वृक्ष शीतल सु छॉय । जहॉ पथिक लेत विश्राम आय ॥१२
इस उपवन में बहु विध रसाल । चाखत ज त्री होवे खुशाल ॥
नींबू नारंगी अनार जाम । सीताफल श्रीफल केल आम ॥ १३॥
अमली जामन ककड़ी अरंड, कैथोड़ी ऊंचे लगे झुंड ॥
शहतूत लेसवो अरु खजूर । खारक अंजीर अरीठ पूर ॥ १४ ॥
फफनेस बोर बड़ नीम जान । पुनि पुष्पवाटिका शोभमान ॥
चंपा जु चमेलि गुलाब कुंज । जाई जु मोगरो भ्रमर गुञ्ज ॥१५॥
गुलमंहदी और अनेक बेल । तिन ऊपर पक्षी करत केल ॥
या बाग मांहि गंभीर कूप । शीतल जल मिष्ट सु दुग्धरूप ॥१६॥
ता पीवत ही गद सकल नाश । वह अतिशय क्षेत्रतनो प्रकाश ॥
बंगला विशाल रमणीक जान । भट्टारक तिष्ठनको सु थान ॥१७॥
परकोट बनो चउ तरफ सार । मध दरवाजो अति शोभकार ॥
ताके ऊपर नोबत बजंत । सुनके जात्री आनन्द लहंत ॥१८॥
यहां दंडकवनकी भूमि संत । तसु निकट शहर नासिक बसंत ॥
तहॉ गंगा नाम नदी पुनीत । वैष्णवजन ठाने धर्म तीर्थ ॥१९॥

पुनि त्रिम्बक सीता गुफा कीन। गजपंथ धाम सबमें प्राचीन ॥
भट्टारकजी हिमकोर्ति आय। वंदे गजपंथा शिखर जाय ॥ २० ॥
मन्दिरकी नींव दई लगाय। पुनि पैडी ऊपर को चढाय ॥
दो शतक पिचौत्तर है सिवान। तसु आगे मोटी भीत जान ॥२१॥
इक होद भरयो निर्मल सु नीर। शीतल सु मिष्ट राजत गँहीर ॥
भवि प्रक्षालित वसु दरव आन। कोई तीर्थ जान करहै सनान ॥२२॥
त्रय गुफामध्य दरशन करन्त। वलभद्र सात तिष्ठत महंत ॥
इक बिम्ब लसत उन्नत विशाल। श्रीपार्श्वनाथ वंदत त्रिकाल ॥२३॥
द्वय मानभद्र इम चरण पाद। मुनि आठ कोडि थल है अनाद ॥
वदन पूजन कर धरत ध्यान। निज जन्म सुफल मानत सुजान॥२४॥
यहां से उतरत गिरितट सु थान। इक कुण्ड नीर निर्मल बखान ॥
इक छत्री उज्ज्वल है पुनीत। भट्टारकजी क्षेमेन्द्रकीर्ति ॥ २५ ॥
तिनके सु चरणपादुक रचाय। अवलोकनकर निजथल सु आय ॥
कोड फेरी पर्वतकी करन्त। इमि वंदनकर अति सुख लहंत ॥२६॥
श्रीमुनीकीर्ति महाराज आय। श्रावकजनको उपदेश थाय ॥
पुनि नानचंद अरु फतहचंद। शोलापुरवासी धरमकंद ॥२७॥
हूमड जैनी उपदेश धार। करवाई प्रतिष्ठा बिम्बसार ॥
संवत उगणीस अरु तियाल। सुधि तेरस माघतनी विशाल ॥२८॥
कल्यान पांच कीनो उछाव। करवाये अति उत्तम सुनाव।
श्रीमहावीर अन्तिम तीर्थेश। पधराये बेदी मे जिनेश ॥२६॥
भट्टारकजी दियो सूर मंत्र। कीने पुनि जंत्र अनेक तंत्र ॥
मानस सु थभ रचिये उतंग। कञ्चन कलशा शोभे उचंग ॥३०॥
बहु संघ जुरै तिनकूं बुलाय। भकती कीनी उर हरप ल्याय ॥
बहु विधि पकवान बनाय सार। जौनार दई आनन्द धार ॥३१॥
सुदि पूनम माघतनी सुजान। पूरण हुवो उत्सव महान ॥
याही तिथिकूं उत्तम सुजोय। यात्रा उत्सव हरसाल होय ॥३२॥

पुनि सदावरत नित प्रति बटंत। कोइ विमुख जाय नहिं साधुसंत।
यहां देश देशके संघ आय। उत्सव करते पूजन कराय ॥३३॥
दे दरब करत भंडार सोय। कोइ करत रसोई मुदित होय ॥
बहु मर्यादा अद्भुत सु ठाठ। आवे जात्री मुख करत पाठ ॥३४॥
संवत उगणास उधचास। बुदि अष्टम रवि दिन पौष मास ॥
ये पूजन विधि कीना बनाय। सज्जन प्रति विनती यही भाय ॥३५
जो भूलचूक तुम भंग होय। तुम शुद्ध करो बुधिवान लोय ॥
राजपंथ शिखर मुनि आठ कोड़। बलभद्र सात नमि हाथ जोड़ ॥३६

यह गजपंथा शिखरको, पूज रची सुखदाय ॥
'लालकिशोरी' तुच्छ बुध, हाथ जोड़ सिरनाय ॥३७॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथ सिद्धक्षेत्रसे सात बलभद्र और आठ करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जय जय भगवंता श्रीगजपंथा, वंदत संता भाव धरं।
सुर नर खग ध्यावे भगत बढ़ावे, पूज रचावे प्रीति करं ॥
फल सुरपद पावें अमर कहावें, नरपद पावें शिव पावें
यह जान सभाई जात्र कराई, जग जस थाई सुख पावें ॥३८॥

इत्याशीर्वादः।

श्री तुंगीगिरि पूजा

(श्रीयुत स्व० पं० सवाई सिंघई गोपालसाहजी कृत)

सिद्ध क्षेत्र उत्कृष्ट अति, तुंगीगिरि शुभ थान।
मुकति गये मुनिराज जे, ते तिष्ठहु इत आन ॥

ॐ ह्रीं श्रीमांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रसे राम, हनु सुग्रीव, सुडील, गव, गवाख्य, नील, महानील और निन्यानवे करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्त अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापन अत्र मम सन्निहितो भव वषट् सन्निधिकरणम्।

गङ्गाजल प्रासुक भर झारी, तुव चरनन ढिग धारों।
परिग्रह तिसना लगी आदिकी, ताको है निरवारो ॥
राम हनू सुग्रीव आदि जे, तुंगीगिरि थित थाई।
कोडि निन्यानवे मुकत गये मुनि, पूजों मन वच काई ॥

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरि सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चन्दन केशर गार भली विधि धार देत पग आगे।
भव भरमन आताप जासतें, पूजत तुरतहिं भागे ॥ राम० । चंदनं
मुक्ताफल सम उज्ज्वल अक्षत, थार धारकर पूजों।
अक्षयपदकों प्रापतिकारन, या सम और न दूजो ॥ राम० । अक्षतं॥
कमल केतकी वेल चमेली, तापर अलि गुंजावे।
पुष्पनसों अरचों तुम चरनन, कामविथा मिट जावे ॥ रा० । पुष्पं॥
गूंजा खाजे व्यंजन ताजे, तुरतहिं घृत उपराजे।
दृग सुख कारन सन्मुख धारे, क्षुधावेदनी भाजे ॥ राम० । नैवेद्यं
दीप रतनकर सुरपति पूजत, हम कपूर धर खासे।
नाशे मिथ्यातम अनादिका, ज्ञान भानु परकाशे ॥ राम० । दीपं।
अगर तगर कृष्णागरु चन्दन, जे सुवास मन भावें।
खेवत धूप धूमके मिसकर, दुष्टकरम उड़ जावें ॥ राम० । धूपं ॥
श्रीफल पुंगी शुचि नारंगी, केला आम्र सुवासी।
पूजत अष्ट करम दल धूजत, पाऊँ पद अविनाशी । राम० । फलं ॥
जल फलादि वसु दरव साजके,हेमपात्र भर लाऊँ।
मनवचकाय नमूं तुव चरना, वार वार वार शिरनाऊँ । राम० ।अर्घं

जयमाला—दोहा।

राम हनू सुग्रीव आदि जे, तुंगीगिरि थित थाय।
कोड़ि निन्यानवे मुकति गये मुनि पूजों मनवचकाय ॥

तुम पद प्रापत कारने, सुमरों तुम गुणमाल ।
मति माफक वरनन करों सार सुभग जयमाल ॥ १ ॥
धन्य धन्य मुनिराज, कठिन व्रतधारी ।
भव भवमें सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥
दो पर्वत हैं अति तुंग चूलिका भारी ।
मानो मेरु शिखर उनहार दृगन सुखकारी ॥ २ ॥
पहलो है मांगी नाम तुंगी है दूजो ।
जहां चढत जीव थक जात करम चिर धूजो ।
अति सुन्दर मन्दिर लखत भई सुध म्हारी ।
भव भवमें सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥ ३ ॥
जहां राम हनू सुग्रीव सु खग बलधारी ।
अरु गव गवाक्ष महानील नील अघहारी ॥
इन आदि निन्यानवे कोड़ि मुनी तप कीना ।
लयो पंचमगतिको वास वहुरि गत रही ना ॥
मैं पूजों त्रिकरन शुद्ध नसे अघ भारी ।
भव भव में सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥ ४ ॥
तुम विरत अहिंसा लिया दया के कारन ।
ता पोखन को वच भूठ किया निरवारन
पुनि भये अदत्ता वस्तु सरव के त्यागी ।
नव बाढ़ सहित व्रत ब्रह्मचर्य अनुरागी ॥
चउवीस परिग्रह त्याग भये अनगारी ।
भव भव में सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥ ५ ॥
षट्काय दयाके हेतु निरख भू चाले ।
वच शास्त्र उकत अनुसार असत को टाले ॥
भोजन के षट् चालीस दोष निरवारे ।
लख जन्तु वस्तुको लेय देख भू धारे ॥

पन करन विषै चकचूर भये अविकारी ।
भव भवमें सेवा चरन मिले मुह थारी ॥ ६ ॥
षट् आवश्यक नित करें नेम निरवाहे ।
तज न्हवन क्रिया जलकाय घात ना चाहे
निज करसों लुंचे केश राग तन भागी ।
वालकवत निर्भय रहे वस्त्र के त्यागी ॥
कभी दंतधवन नहीं करे दया व्रत धारी ।
भव भव में सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥ ७ ॥
विन जांचे भोजन लेय उदंड अहारी ।
लघु भुक्ति करें इक वार तपी अधिकारी ॥
जामें आलस नहिं वढे रोग ह्वै हीना ।
निशि दिन रस आतम चखे करेविधि छीना
कर घात करम चउ नाश ज्ञान उजयारी ।
भव भव में सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥ ८ ॥
दे भव्यन को उपदेश अघाती जारे ।
भये मुकतिरमाके कंत अष्ट गुन धारे ॥
तिन सिद्धनि को मैं नमों सिद्धिके काजा ।
सिधथल में दे मोहि वास त्रिजगके राजा ॥
नावत नित माथ 'गुपाल' तुम्हें बहु भारी ।
भव भवमें सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रसे राम हनू सुग्रीव सुडील गव गवाख्य नील महानील और निन्यानवे करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम गुनमाला परम विशाला, जो पहरे नित भव्य गले ।
नाशैं अघजाला ह्वै सुखहाला, नित प्रति मङ्गल होत भले ॥

इत्याशीर्वाद: :

श्रीकुंथलगिरि पूजा।

(श्री कन्हैयालालजी कृत)

तीरथ परम पवित्र अति, कुंथ शैल शुभ थान।
जहँ ते मुनि शिवथल गये पूजों थिर मन आन॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरि सिद्धक्षेत्रसे कुलभूषण देशभूषण मुनि मोक्ष पद प्राप्तये अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं

उत्तम उज्ज्वल नीर क्षीर सब छानके।
कनक पात्रमें धार देत त्रय आनके॥
पूजों सिद्ध सु क्षेत्र हिये हरषायके।
कर मन वच तन शुद्ध करमवश टारके॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

चंदन दाह निकंदन केशर गारकें।
अरचों तुम ढिग आय शुद्ध मन धारकें॥ पूजों० ॥चन्दनं
तंदुल सोम समान अखंडित आनके।
हाटक थार भराय जजों शिर नायकें॥ पूजों० ॥ अक्षतं॥
सुरद्रुम सम जे पुष्प सुगंधित लायकें।
दहन काम पन वाण धरों सुख पायकै॥ पूजों ॥ पुष्पं॥
व्यंजन विविध प्रकार पगे घृत खांडके।
अरपत श्रीजिनराज क्षुधा ढिग छांडके ॥ पूजों० ॥ नैवेद्यं॥
कनक थारमें धार कपूर जलाय के।
बोध लह्यो तम नाश मिथ्या भ्रम जालके॥ पूजों० ॥ दीपं॥
अगर आदि दस वस्तु गन्ध जुत मेलके।
करम दहनके काज दहों ढिग शैलके॥ पूजों० ॥ धूपं॥
फल उत्कृष्ट सु मिष्ट जे प्रासुक लायके।
शिवफल प्रापति काज जजों उमगायके ॥ पूजों० ॥ फलं॥

जल फलादि वसु दरव लेल श्रुत ठानके।
अर्घ जजों तुम पाय हरष मन आनके ॥ पूजों० ॥ अर्घम् ॥

जयमाला।

तुन गुन अगम अपार गुरु, मैं बुद्धि कर हों बाल।
पै सहाय तव भक्तिवश, वरनत तुव गुणमाल ॥ १ ॥

कुल ऊंच राय सुत अति गंभीर, कुलभूषण दिशभूषण है वीर। लख राज-ऋद्धि को अति असार॥ वय बाल माहिं तप कठिन धार॥ २॥ द्वादश विधि व्रत की सहत पीर, तेरह विधि चारित धरत वीर। गुन मूल बीस अरु आठ धार। सहे परिषह दस अरु आठ चार॥ ३॥ भू निरखि जंतु कर तित विहार। धर्मोपदेश देते विचार। मुनि भरमत पहुंचे कुंथ शैल। पाहन तरु कंटक कठिन गैल॥ ४॥ निर्जन वन लख भये ध्यान लीन। सुर पूरव अरि उपसर्ग कीन॥ बहु सिंह सरप अरु दैत्य आय। गरजल फुंकारत मुख चलाय॥ ५॥ तहां राम लखन सीता समेत। ता दिन थिति कीनी थी अचेत। मुनिपर वेदन यह लखत घोर। दोउ वीर उचारे वच कठोर॥ ६॥ रे देव! दुष्ट तूं जाति नीच। मुनि दुखित किये तुझ आई मीच॥ हम आगे तू कित भाग जाय। तुह देहैं दुष्कृत की सजाय॥ ७॥ यह कह दोऊ कर धनुष धार। हरि बल लख सुर डरपौ अपार। तब मान सीख मुनि चरण धार। ता छिन घाते विधि घाति चार॥ ८॥ उपजत केवल सुरकलप आय। रचि गंधकुटी पद शीस नाय॥ सुन निज भवसुर आनंद पाय। जुग विद्या दे निज थल सिधाय॥ ९॥ प्रभु भाखे दो विधि धर्म सार। सुन धारे जिनते भये पार। मुनिराज अघाती घात कीन। गति पंचम थित अचल लीन॥ १०॥ पूजा सुर नर निरवान कीन। गत ऊंचतनो फल सुफल लीन। भव भरमत हम बहु दुःख पाय। पूजे तुम चरणा चित्त लाय॥ ११॥ अरजी सुन कीजे महर आप।

तासों मेरा भव भ्रमन ताप। विनवे अधिकी क्या 'कनईलाल'।
दुख मेट सकल सुख देव हाल ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्रसे कुलभूषणदेशभूषणमुनि मोक्ष पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम दुख हरता सब सुख करता, भरता शिवतिय मोखपति।
मैं शरनै आयो तुम गुन गायो, उमगायो ज्यों हतीमती ॥ १३ ॥

इत्याशीर्वादः।

श्री मुक्तागिरि पूजा।

(स्व॰ कवि जवाहरलालजी कृत)

मुक्तागिरि तीरथ परम, सकल सिद्ध दातार।
तातें पावन होत निज, नमों शीश कर धार ॥ १ ॥
ये ही जम्बूद्वीप माहिं भरत क्षेत्र सो जानिये।
आरज सो खंड मझार जाके परम सुन्दर मानिये ॥
ईशान दिशि अचला जु पुरकी, नाम मुक्तागिरि तहां।
कोड़ि साढ़े तीन मुनिवर, शिवपुरी पहुंचे जहां ॥ २ ॥
पारस प्रभुको आदि दे-चौबीसों जिनराय।
पूजों पद जुग पद्म सम, सुर शिवपद सुखदाय।

ॐ ह्रीं मुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रसे साढ़े तीन करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव वषट् सन्निधिकरणं।

परम प्रासुक नीर निर्मल, क्षीर दधि सम लीजिये।
हेम झारी मांहि भरके धार सुन्दर दीजिये।
तीर्थ मुक्तागिरि मनोहर, परम पावन शुभ कहो।
कोटि साढ़े तीन मुनिवर, जहां ते शिवपुर लहो ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्राय जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं नि०।

चंदन सु पावन दुख मिटावन, अति सुगंध मिलाइये ॥
डार कर कपूर केसर, नीरसो घिस ल्याइये ॥तीर्थ०॥ चंदनं
विमल तंदुल ले अखडित, ज्योति निशपति सम धरे॥
कनक थारी मांहि धरके, पूज कर पावन करे॥ तीर्थ।अक्षतं
सुरवृक्षके सम फूल लेकर, गन्धकर मधुकर फिरें॥
मदनवाण विनाशवेको, प्रभु चरण पूजा करें ॥तीर्थ० ॥पुष्प
छहों रसकर युक्त नेवज, कनक थारी में भरों॥
भावसे प्रभु चरण पूजों, क्षुधादिक मनकी हरों ॥तीर्थ०।नै०
रतनदीप कपूर वाती, जोत जगमग होत है॥
मोहतिमिर विनाशवेको, भानु सम उद्योत है॥ तीर्थ० दीपं
कूट मलयागिरि सो चन्दन, अगर आदि मिलाइये॥
ले दशांगी धूप सुन्दर, अगन मांहि जराइये। तीर्थ। धूपं
ल्याय एला लोंग दाड़िम, और फल बहुते घने॥
नेत्र रसना लगे सुन्दर, फल अनूप चढावने॥ तीर्थ॥ फलं
जल गन्ध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आपने।
लाय चरन चढाय भविजन, मोक्षफल को पावने॥ती० अर्घ

मुक्तागिरिके सीसपर, बहुत जिनालय जान।
तिनकी अब जय मालिका, सुनो भव्य दे कान॥१॥

जयमाला।

श्री मुक्तागिरि तीरथ विशाल, महिमा जाकी अद्भुत रसाल॥
जुग पर्वत बीच परे दो कोन। मुक्तागिर जहां सुखको सु भौन॥२॥
चढि सिवान जहां ऊपर सो भान। दहलाने पर सो सार जान।
यात्री जहां डेरा करें आय। अति मुदित ह्वै चित्त उमगाय॥३॥
ऊपर शुचि जलसों भरे कुंड। जहं सगरे यात्रिनके सु झुंड॥
बहुविधिकी द्रव्यधरी सो धोय। पूजन को भविजन चले सोय॥४॥
जहां मन्दिर बीच बने रसाल। पारसप्रभुकी मूरत विशाल॥ पूजत

जहां भविजन हरष धार। भव भव को पुण्य भरे भंडार॥ ५॥ बावन जगह दर्शन जिनेश। पूजत जिनवरको सुर महेश॥ इक मन्दिर में भुंयरो जु सोय। प्रतिमा श्री शांतिजिनेश होय॥ दर्शन कर नरभव सुफल होय। जहां जन्म जन्मके पाप खोय॥७॥ मैढागिरिका है गुफा भाय। मन्दिर सुन्दर इक सामकाय॥ प्रतिमा श्रीजिनवर देवराज। दर्शन कर पूरन होय काज॥ ८॥ मेढागिरि के ऊपर सुजान। द्वय टोंक वनी अति सौम्यमान॥ इक पांडे बालक मुनि कराय। इक भागवलीकी जान रमाय॥९॥ जहां श्रीजिनवर के चरण सार। वंदत मनवांछित सुखदातार॥ बावन मन्दिर जहं शोभकार। महिमा तिनकी अद्भुत अपार॥ १०॥ जहं सुर आवत नित प्रति महेश। स्तुति करते हैं प्रभु तुम दिनेश॥ जहां सुर नाचत नाना प्रकार। जै जै जै जै धुनि उच्चार॥ ११॥ थै थै थै अब नाचत सुचाल। अति हर्ष सहित नित नमत भाल॥मुहचंग उपंग सु तूर सजे। मुरली स्वर वीन प्रवीन बजे॥१२॥ द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम बाजर मृदंग। झननननन नूपुर सुरंग॥ तननननन परे तसु तान। घननन घंटा करत ध्वान॥ १३॥ इहि विधि वादित्र बाजे अपार। सुर गावत अब नाना प्रकार। अतिशय जाके हैं अतिविशाल। जहां केसर अब वरसे त्रिकाल॥ १४॥ अनहद नित वजें बाजे अपार। गंधोदकादिक वर्षा की वहार। तहां मरुत मंद सुगंध सोय। जिय जात जहां न विरोध होय॥१५॥ अतिशय जहां नाना प्रकार। भविजन हियमें अति हरष धार॥ जहां कोड़ जु साढे तीन मान। मुनि मोक्ष गये सुनिये सुजान॥१६॥ वंदत जवाहर अब बार बार। भवसागरसे प्रभु तार तार॥ प्रभु अशरन शरन अधार धार। सब विघ्न तूल गिरि जार जार॥ १७॥ तू धन्य देव कृपानिधान। अज्ञान मिथ्यातम हरन भान। प्रभु दयासिंधु जै जै महेश। भव बाधा अब मेटो जिनेश॥ १८॥ मैं बहुत

भ्रम्यो चिरकाल काल । अब हो दयाल मुझ पाल पाल । ताते मैं तुमरे शरण आय । यह अरज करूं पग शीस नाय ॥१६॥ ममकर्म देउ तुम चूर चूर । आनन्द अनूपम पूर पूर ॥

ॐ ह्रीं श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र से साढे तीन करोड़ मुनि सिद्ध पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामिति स्वाहा ।

मुक्तागिरि पूजे अति सुख हूजे ऋद्धि होय है भरपूरी ।
अति कर्म विनाशे ज्ञान प्रकाशे, शिव पदवी को सुखकारी ॥ २० ॥
अठरा सो इक्यानवे, वैशाख मास तम लीन ।
तिथि दशमी शनिवार की, पूजा पूरण कीन ॥ २१ ॥

इत्याशीर्वादः ।

श्री सिद्धवरकूट पूजा ।

(स्व० भट्टारक महेन्द्रकीर्त्तिजी कृत)

सिद्धकूट तीरथ महा है उत्कृष्ट सुथान ।
मन वच काया कर नमौ, होय पाप की हान ॥ १ ॥
दोय चक्रि मन्मथ जु दस, गये तहँते निर्वान ।
पद पंकज तिनके नमों, हरे कर्म बलवान ॥ २ ॥
रेवाजीके तटनतें, हूंठ कोडि मुनि जान ।
कर्म काट तहँते गये, मोक्षपुरी शुभथान ॥ ३ ॥
जगमे तीर्थ प्रधान है, सिद्धवरकूट महान ।
अल्पमती मैं किमि कहों अद्भुत महिमा जान ॥४॥
इन्द्रादिक सुर जाय, तहां वन्दन करें ।
नागपति तहँ आय, बहुत थुति उच्चरें ॥
नरपति नित प्रति जाय, तहां बहु भावसों ।
पूजन करहिं त्रिकाल, भगत बहु चावसों ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसे दो चक्री दश काम कुमारादि साढे

तीन करोड़ मुनि सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

उत्तम रेवा जल ल्याय, मणिमय भर भारी।
प्रभु चरनन देऊं चढाय, जन्म जरा हारी॥
द्वय चक्री दस कामकुमार, भवतर मोक्ष गये।
तातैं पूजों पद सार, मनमें हरष ठये॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलंनि.

मलयागिरि चन्दन ल्याय, केशर शुभ डारी।
प्रभु चरनन देत चढाय, भव भय दुखहारी॥ द्वयचक्री। चन्दनं

तंदुल उज्ज्वल अविकार, मुकतासम सोहे।
भरकर कंचनमय थाल सुर नर मन मोहे॥ द्वयचक्री० ॥ अक्षतं

ले पहुपसुगंधित सार, तापर अलि गाजे।
जिन चरनन देत चढाय, कामव्यथा भाजे॥ द्वयचक्री० ॥ पुष्पं

नेवज नाना परकार, षट्रस स्वाद मई।
पद पंकज देऊं चढाय, सुवरन थार लई॥ द्वयचक्री० ॥ नैवेद्यं

मणिमय दीपक को ल्याय, कदली सुत बाती।
जोती जगमग लहकाय, मोह तिमिर घाती॥ द्वयचक्री०। दीपं

कृष्णागरु आदिक ल्याय, धूप दहन खेई।
वसु दुष्ट करम जर जाय, भव भव सुख लेई॥ द्वयचक्री० ॥ फलं

श्रीफल दाख वदाम, केला अमृत मई।
लेकर बहु फल सुख धाम, जिनवर पूज ठई॥ द्वयचक्री० ॥ फलं

जल चन्दन अक्षत लेय, सुमन महा प्यारी।
चरु दीप धूप फल सोय, अरघ करों भारी॥ द्वयचक्री० ॥ अर्घं

जयमाला ।

दोहा—सिद्धवर कूट सुथानकी, रचना कहूँ बनाय ।
अति विचित्र रमनीक अति, कहत अल्प कर भाय ॥ १ ॥

जय पर्वत अति उन्नत विशाल, तापर त्रय मन्दिर शोभकार ।
तामें जिनबिम्ब विराजमान, जय रतनमई प्रतिमा बखान ॥ २ ॥
ताकी शोभा किम कहे सोय, सुरपति मन देखत थकित होय ।
तिन मन्दिरकी दिशि चार जान, तिनकूं बरनूं अब प्रीति ठान ।३।
ताकी पूरब दिशि ताल जान, तामें सु कमम फूले महान ।
कमलनपर मधुकर भ्रमे जोय, ता धुनिकर पूरित निशा होय ॥ ४ ॥
ता सरवर पर नाना प्रकार, द्रुम फूल रहे अति शोभकार ।
छह ऋतुके वृक्ष फूले फलाय, ऋतुराज सदा क्रीडा कराय ॥ ५ ॥
मन्दिरकी दक्षिन दिशा सार, सुरनदी बहे रेवा जु सार ।
ताके तट दोनों अति पवित्र, विद्याधर बहु विधि करे नृत्य ॥ ६ ॥
फिर तहंते उत्तर दिशा जान, इक कुंड बना है शोभमान ।
ता कुंड बीच जात्री नहाय, तिन बहुत जनम के पाप जाय ॥ ७ ॥
ता कुंड जु ऊपर अति विचित्र, इक पाडु शिला है अति पवित्र ।
तिस थान बीच देवेन्द्र सोय, जिनबिम्ब धरे हैं सीस जोय ॥ ८ ॥
ताकी पश्चिम दिशि अति विशाल, कावेरी सोहे अति रसाल ।
इन आदि मध्य जे भूमि जान, जय स्वयं सिद्ध परवत महान ॥९॥
ता पर तप धार्‌यो दो चक्रीश, दशकामकुमार भये जगीश ।
इन आदि मुनि आहूठ कोड़, तिनको वंदों मैं हाथ जोड़ ॥ १० ॥
इनको केवल उपज्यो सुज्ञान, देवेन्द्र जु आसन कंप्यो जान ।
तब अमरपुरीतें इन्द्र आय, तहँ अष्ट द्रव्य साजे बनाय ॥ ११ ॥
तब पूजा ठाने देव इन्द्र, सब मिलके गावें शतक इन्द्र ।
तहँ यात्री आवें झुंड झुंड, सब पूज धरें तंदुल अखण्ड ॥ १२ ॥
केइ श्रीफल ल्यावें अरु बदाम, केइ लावें पूंगीफल सुनाम ।

कोइ अमृतफल केला सुल्याय, कोइ अष्टद्रव्य ले पूज ठाय ॥ १३ ॥
कोइ सूत्र पढैं अति हर्ष ठान, कोइ शास्त्र सुनें वहु प्रीति मान ।
कोइ जिन गुन गावें सुर संगीत, कोइ नाचें गावें धरे प्रीत ॥१४॥
इत्यादि ठाठ नितप्रति लहाय, वरनन किम मुखतें कहो जाय ।
सुरपति खगपति आदिक जु सोय रचना देखत मन थकित होय ॥१५॥
सुरनर विद्याधर हर्ष मान, जिन गुन गावें हिय प्रीति ठान ।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति० ।
जो सिधवर पूजे, अति सुख हूजे, तागृह संपति नाहिं टरे ।
ताको जस सुर नर मिल गावे, 'महेन्द्रकीर्ति' जिन भक्त करे ॥१६॥
सिद्धवरकूट सुथान की, महिमा अगम अपार ।
अल्पमती मैं किमि कहों, सुरगुरु लहें न पार ॥ १७ ॥
इत्याशीर्वादः ।

चूलगिरि (बावनगजा) की पूजा ।

(श्रीयुत छगनजी कृत)

आर्या क्षेत्र विहार बोध भवि ये दशग्रीव सुत भ्रातना ।
सम्यक्त्वादि गुणाष्ट प्राप्ति शिव कर्मारि घाती हना ॥
ता भगवान प्रति प्रार्थना सुध हृदै त्वद्भक्ति मम वासना ।
आह्वानन विमुक्तनाथ तु पुनः अत्राय तिष्ठो जिना ॥
ॐ ह्रीं श्रीवड़वानी चूलिगिरिसे इन्द्रजीतकुम्भकर्णादि मुनि सिद्धपदप्राप्तये अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।
पंचम उदधि सम नीर ले, त्रय धार तिन चरणन करों ।
चिर रुजग जन्म जरारु अंतक, ताहि अब तो परिहरों ॥
दशग्रीव अंगज अनुज आदि, ऋषीश जहंतें शिव लही ।
सो शैल वडवानी निकट, गिरिचूलकी पूजा ठही ॥

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० ॥
घसि मलय कुमकुम शुद्ध जो, अलिगण न छोड़े तासको ।
सो गंध शीतल कंद सज, भव विरह हर भवतापको ॥द० ।चंदनं०॥
शशि वर्ण खंडन-मुक्त शोभा, मुक्त नहिं ताकी धरें ।
सो शालि तंदुल करन मंगल, वेग भवभयकों हरें ।दश०।अक्ष०
सुरद्रुम निपज सुरलोकके, बहु वर्ण फूल मंगाइये ।
अथवा कनक कुन वेल मोगर, चंपकादि चुनाइये ॥द० ।पुष्प
कृत सूपकार अनूप छह रस, युक्त अमृत मान जो ।
सो चारुचरु जिन अग्न धर, निज भूख वेदन टारि जो ॥दश.।नैवेद्य
बहु मूल्य रत्न उद्योतयुत, भय वायु वरजित जो जगे ।
सो दीप कञ्चन थाल धर, अरि दुष्ट मोहादिक भजे ॥द.।दीपं.
दश गंध कृष्णागरु कपूरादिक सुगंधित ल्यावने ।
दहि ज्वलन मध्य मनो भवान्तर, सर्वके विधि जालने ।द.।धूपं
सौमनस नंदन वृक्षके युत, मिष्ट ता फल लेयके ।
ता देखते दृग घ्राण मोहे, मोक्षपुर कूं वेयके ॥ द० ॥ फलं
मजि साज आठों होय ठाडों हरप बाढ़ो कथन विन ।
हे नाथ भक्तिवश मिले जो, पुर न छूटे एक दिन ॥द०॥ अर्घं

जयमाला ।

करमन कर चकचूर, वसिय शिवालय जाय तुम ।
मेरी आशा पूर, बहुत दुखी संसार मे ॥ १ ॥

वंदों श्री युगल ऋपीश स्वाम । कर कर्म युद्ध लहि मोक्ष धाम ॥
हे इन्द्रजीत तुम सत्य नाम । कामेदु मोहको कियो काम ॥ २ ॥
हो कुंभकर्ण सार्थक हि आप । भवकर्ण ज्ञान तुम कुंभ थाप ॥
कर्मन कृत दंडों गृह मझार । बलि वासुदेवने दये डार ॥ ३ ॥ सत
सत ज्ञान वानि सम्यक्त युक्त । जानों सत चारित आप युक्त । विधु
रिपु दुखदाई मूल जान । तापै तुमने खैंची कमान ॥ ४ ॥ श्री सर्व

जीवसों क्षमा धार। भायी अनुप्रेक्षा परम सार। तन आदि अथिर दीखे समस्त। है नेह करन सम कौन वस्त ॥ ५ ॥ अशरण न शरण कहुं जगत माहिं। अहमिन्द्रादिक मृत्यु लहाहिं। भववन में है नहिं सार कुच्छ। तीर्थंकर त्यागें जान तुच्छ ॥ ६ ॥ ये जीव भ्रमत एकाकि आप। नहीं संग मित्र सुत मात बाप। ये देह अन्य फिर कौन मुज्झ। वश मोह परत न हिये सुज्झ ।७। पल रुधिर पीव मल मूत्र आदि। इनकर निपजी तन होय खाय। जोगनहि चपलता कर्म द्वार। तिन रोक हिये संवर विचार ॥ ८ ॥ तपबल छूटन विधि करम सुक्ख। तिहूँलोक भ्रमत लहि जीव दुक्ख। विन बोध भ्रम्यो चहु गति मझार। शिवकर्ता धर्म कदेन धार ॥ ९ ॥ यो चिंतत बहु जन लार लेय। जिनदीक्षा धारी हित करेय। अट्ठाइस गुण मुनि मूल धार। चारों अराधना कूं अराध ॥ १० ॥ नाना विधि आसन धार धार। तप करत युद्ध विधि मार मार। चउ घाति नाश केवल उपाय। भवि जीव बोध जिनवृषलगाय ॥ ११ ॥ करके विहार भवि सुक्खमाय। बड़वानी आये अल्प आय। गिरि चूल तिष्ठ करि कर्म नाश। छिनमें संसार कियो विनाश ॥ १२ ॥ अति आनंददाय सिद्धक्षेत्र। पूजों भवि जीव निजात्म हेत। धन धन्य तिनहि को भाग्य जान। तिन पुण्यबंध होवे महान ॥ १३ ॥ इन्द्रादि आय उत्सव अनूप। कीनो लहि हर्षित भये भूप ॥ ता गिरिको उत्तरि दिशि मझार। रेवा सरिता है पूर्ण वार ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवडवानी-चूलगिरिसे इन्द्रजीत कुंभकर्णादि मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरिराज अनूपम पूजे भूपम, तिन भवि कूपम जल दीना।
यामें शक नाहीं कर्म नशाहीं, 'छगन' मगन होय थुति कीना ॥१५॥

इत्याशीर्वादः।

श्री गुणावा सिद्धक्षेत्रकी पूजा ।

(श्री बाबू पन्नालालजी कृत)

धन्य गुणावा थान, गौतमस्वामी शिव गए।
पूजहु भव्य सुजान, अहि निशि करि उर थापना ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री गुणावासिद्धक्षेत्रसे श्री गौतमस्वामी सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ. स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अति शुद्धसुधा सम तोय, हेमाचल सोहे।
जर जनम मरन नहिं होय, सब ही मनमोहे ॥
जगकी भव ताप निवार, पूजों सुखदाई ।
धन नगर गुणावा सार, गौतम शिवपाई ॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि० ।

केशर करपूर मिलाय, चन्दन घिसवाई ।
अरचों श्रीजिन ढिगजाय, सुन्दर महकाई ॥ जग०॥ चन्दनं ॥
अति शुद्ध अखंड विशाल, तंदुल पुंज धरे।
भरि भरि कंचनमय थाल, पूजों रोग टरे ॥जग०॥ अक्षतं ॥
गेंदा गुलाब कचनेर, पुष्पादिक प्यारे ।
सो करिकरि ढ़ेर सुढेर, कामानल जारे ॥जग०॥ पुष्पं ॥
अति घेवर फेनी ताप, नेवज स्वाद भरी ।
सब भूख निवारनकाज, प्रभु ढिग जाय धरी ॥ जग०॥ नैवेद्यं ॥
घृत से भरि सुवरण दीप, जगमग जोति लसे ।
करि आरति जाय समीप, मिथ्या तिमिर नसे ॥ जग० ॥दीपं ॥
कर्पूर सुगंधित पूर, अगर तगर डारों ।
श्रीचरनन खेवों धूप, करम कलंक जारों ॥जग०॥ धूपं ॥
पिस्ता बादाम सुपारि, श्रीफल सुखदाई ।
मन वांछित फल दातार, ऐसे जिनराई ॥जग०॥ फलं ॥

सब अष्ट द्रव्य करि त्यार, प्रभु ढिग जोरि धरों ।
'पन्ना' प्रति मंगलकार, शिवपद जाय वरों ॥ अर्घं ॥

जयमाला ।

गोतम स्वामीजी भये, गणधर-वीरप्रधान ।
तिनकी कछु जैमाल अब, सुनो भव्य धरि ध्यान ॥१॥

बंदों श्रीमहावीर जिनंदा । पाप निकंदन आनन्द कंदा ॥
जिन परताप भये बहुनामी । जै जै जै श्री गोतम स्वामी ॥२॥
भयो जहां पर केवलज्ञाना । समोशरण इन्द्रादिक ठाना ॥
खिरी दिव्यध्वनि नहिं भगवान । गणधर नहिं कोई गुणवान॥३
तब विद्यारथि भेष बनाई । बासव गौतम के ढिग जाई ॥
पूछत अर्थ सूत्र यों भाषित । षटद्रव्य पंचास्तिकाय भाषित॥४
यह सुनि गौतम बचन उचारे । तोसों करूं वाद क्या प्यारे ॥
चलि अपने गुरु वीर नजीका । करिहैं शास्त्रार्थ तहँ नीका॥५॥
ऐसी कह ततकाल सिधारे । समोशरणमें आप पधारे ॥
देखत मानथंभ को जोंही । खंडित भयो मान सब योंही ॥६॥
भूल गये सब वाद विवादा । कीनी थुति सब छांडि विषादा ॥
सोई गणधर भये प्रधाना । धन्य धन्य जैवंत सुजाना ॥ ७ ॥
धन्य गुणावा नगर सुहाई । जहंते उन शिवलछमी पाई ॥
सुन्दर ताल नगर अति सोहे । ताबिच मंदिर जन मन मोहे ॥८॥
चरण पादुका बने अनूपा । पूर्व धर्मशाला अरु कूपा ॥
सम्मुख वेदी अति सुखदाई । वीर चरण प्रतिमादि सुहाई ॥९॥
चारों ओर चरण चोबीसी । तिन लखि हर्ष होत अतिहीसी ॥
पूजनीक अति ठाम अपारा । दुखदारिद्र नशावन हारा ॥१०॥
जा पढ़े पढ़ावे, पूज रचावे सो मनवांछित फल पावे ।
सुत लाभ बिहारी, आज्ञाकारी, 'पन्ना' जगत न भरमावे॥११॥
ॐ ह्रीं श्रीगुणावा सिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

शहर हाथरस पास, मनोहर ग्राम विसाना ।
तामधि श्रावक लोग, वसे सब ही बुधिवाना ॥
संवत् शत उनईस, तासुपै धारि वहत्तर ।
विक्रम साल प्रमान. जेठ मासा वीतन पर ॥१२॥

इत्याशीर्वादः ।

श्रीपटना सिद्धक्षेत्र (सुदर्शन पूजा)

(श्री वावू पन्नालालजी कृत)

उत्तम देश विहारमें, पटना नगर सुहाय ।
सेठ सुदर्शन शिव गये, पूजों मन वच काय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री पटना सिद्धक्षेत्र से सुदर्शन सेठ सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

नित पूजोरे भाई या श्रावक कुलमें आयकें ।
नित पूजोरे भाई श्रीपटना नगर सुहावनों ॥
गँगाजल अति शुद्ध मनोहर, झारी कनक भराई ।
जन्म जरा मृत नाशन कारन, दारों नेह लगाई ॥ नि० ॥
जँवूद्वीप भरत आरजमें, देश विहार सुहाई ।
पटना नगरी उपवनमे, शिव सेठ सुदर्शन पाई ॥ नि० ॥
ॐ ह्रीं श्री पटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि०
चंदन चंद्र मिलायसु उज्ज्वल, केशर संग घिसाई ।
महक उड़े सब दिशनु मनोहर, पूजों जिनपद राई ॥ नि० ॥ चंदनं
शुद्ध अमल शशि सम मुक्ताफल, अक्षत पुंज सुहाई ।
अक्षय पदके कारण भविजन, पूजों मन हरषाई ॥ नि० ॥ अक्षतं
पांचों विधि के पुष्प सुगंधित, नभलों महक उड़ाई ।
पूजों काम विकार मिटावन, श्रीजिनके ढिग जाई ॥ नित० ॥ पुष्पं

उत्तम नेवज मिष्ट सुधासम, रस संयुक्त बनाई।
भूख निवारन कंचन थारन, भर भर देहु चढ़ाई ॥ नि०॥ नैवेद्य०
मनिमय भाजन घृतसे पूरित, जगमग जोति जगाई।
सब मिल भविजन करो आरती, मिथ्या तिमिर पलाई ॥नि.। दीपं
अगर तगर कपूर सुहावन द्रव्य सुगंध मंगाई।
खेवों धूप धूमसे वसुविधि, करम कलंक जराई ॥ नि०। धूपं
एला केला लोंग सुपारी, नरियल फल सुखदाई।
भर भर पूजों थाल भविकजन, वांछित शुभ फल पाई ॥ नि० फलं०
अष्ट दरब ले पूज रचाओ, सब मिल हर्ष बढाई।
झालर घंटा नाद बजावो, पन्ना मंगल गाई ॥ नि०। अर्घं

जयमाला।

सेठ सुदर्शन जे भये, शीलवान गुणखान।
तिनकी अब जैमालिका, सुनहु भव्य दे कान ॥ १ ॥

जै सेठ सुदर्शन शीलवन्त। जग छाय रही महिमा अनंत ॥
तिनकी कछु मैं जैमाल गाय। उर पूज रचाऊँ हर्ष ठाय ॥ २ ॥
जै भरतक्षेत्र मधि अंग देश। चंपापुर सोहे तहँ विशेष। नृप धात्री वाहन राज गेह। प्रिय अभयमती सों अति सनेह ॥३॥ तहँ मुख्य सेठ इक वृषभदास। तिन सेठानी जिनमतिय खास ॥ तिन चाकर ग्वाला सुभग नाम। मुनि देखे बनमें एक जाम ॥४॥ सो महामंत्र णवकार पाय। अति भयो प्रफुल्लित कही न जाय ॥ पुनि एक दिवस गंगा मँझार। वह डूबत जापत मंत्र सार ॥५॥ तुरतहिं मर सेठ धरे विशाल। सुत भयो सुदर्शन भाग्यशाल ॥ सबको सुखदाई मिष्ट बैन। निज कपिल यार संग दिवस रैन ॥ ६ ॥ पढ़ि खेल कूद भयो अति सयान। तब सेठ मनोरमा संग सुजान ॥ शुभ साइत ब्याह दियो कराय। सो भोगत सुख अति हर्ष ठाय ॥ ७ ॥ पुनि कछुक काल भीतर सुकंत। सुत एक भयो अति रूपवंत। तब सेठ

सुदर्शन धीरवान। निज काम करे अति हर्ष ठान ॥ ८ ॥ तब कपिल नारि आसक्त होय। घर सेठ बुलाये तुरत सोय॥ तहँ सेठ नपुंसक मिस बनाय। निज शील लियो ऐसे बचाय ॥ ९ ॥ जब खबर सुनी रानी तुरन्त। मन करी प्रतिज्ञा दीढवन्त ॥ मैं भोग करूं वासूं सिहाय। तब ही मम जीवन सुफल थाय ॥ १० ॥ इन सेठ अष्टमी कर उपास। मरघट में ध्यानारूढ खास ॥ तहँ चेली उनके पास जाय। रानी को हाल दियो सनाय ॥ ११ ॥ तहँ सेठ निरूत्तर देखि हाय। निज कन्धे पै धरिके उठाय ॥ फिर पहुँची रानी पास जाय। उन अचल देखि तुरतैं रिसाय॥ १२ ॥ यों खबर करी नृप पास जाय। यो शील विगारयो सेठ आय ॥ यो सुनत वैन नृप क्रोध छाय। मारनको हुकम दियो सुनाय ॥ १३ ॥ तहां करी प्रतिज्ञा शीलवंत। मुनि पदवी धारूँ यदि बचंत। सो देव करी रक्षा सु आय। पुनि दीक्षित ह्वै वनको सिधाय ॥ १४ ॥ सो करत करत कछु दिन विहार। तब आए पटना नगर सार ॥ तहँ देवदत्ता वेश्या रहाय। मिस भोजन मुनि लीने बुलाय ॥ १५ ॥ उन कामचेष्टा कर सिहाय। झट सेठ लिये शैय्या गिराय ॥ लख ऐसो मन में कर विचार। उपसर्ग मेरो यदि हो निवार ॥१६ ॥ सन्यास धरूं नगरी न जाऊँ। वन ही वन करत तप फिराऊँ। यह लख वेश्या भई निरउपाय। निशि प्रेत भूमि दीने पठाय ॥१७॥ तहँ रानी व्यन्तर जोनि पाय। नाना उपसर्ग कियो बनाय ॥ मुनि पुण्य भाव से यक्ष आए। तब लिए सेठ तुरतैं हि बचाय ॥ सो कठिन तपस्या कर निदान। भयो सेठ जहां केवल जु ज्ञान। सो कछुक काल करके विहार। उन मुक्ति वरी अति श्रेष्ठ नार ॥१९॥

घत्ता—इक ग्वाल गमारा जप नवकारा, सेठ सुदर्शन तन पाई।
सुत लालविहारी आज्ञाकारी, 'पन्ना' यह पूजा गाई ॥२० ॥

ॐ ह्रीं पटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा। इत्याशीर्वादः।

श्री राजगृहीजी क्षेत्र पूजा।

(मुनीम मुन्नालालजी परवार कृत)

जम्बू द्वीप मझार, दक्षिण भरत सु क्षेत्र है।
ता मधि अति विख्याति, मगध सुदेश शिरोमणी ॥ १ ॥

अडिल्ल—मगध देश की राजधानि सोहे सही।
राजगृही विख्यात पुरातन है मही ॥
तिस नगरी के पास महा गिरि पांच हैं।
अति उतंग तिन शिखर सु शोभ लहात है ॥ २ ॥
विपुलाचल, रतना, उदयागिरि जानिये।
सोनागिरि व्यवहार सुगिरि, शुभ नाम ये ॥
तिनके ऊपर मंदिर परम विशालजी।
एकोनविंशति बने सु पूजहु लालजी ॥ ३ ॥
तीर्थंकर तेईस के, समोसरण सुखदाय।
कर विहार तहँ आय हैं, वासुपूज्य नहिं आय ॥ ४ ॥
चोबीसों जिन राजके, बिम्ब चरण सुखदाय।
तिन सबकी पूजा करों, तिष्ठ तिष्ठ इत आय ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं राजगृही सिद्धक्षेत्र के पंच पर्वतों पर उनईस मंदिरस्थ जिन बिंब व चरण समूहेभ्यो अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणां।

क्षीरोदधि पानी, दूध समानी, तसु उनमानी जल लायो।
तसु धार करीजे, तृषा हरीजे, शांति सुदीजे, गुण गायो ॥१॥
श्री पंच महागिरि, तिन पर मन्दिर, शोभित सुन्दर सुखकारी।
जिन बिंब सुदर्शत, आनंद बरसत, जन्म मृत्यु भय दुखहारी ॥

ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्राय जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं नि०

मलयागिर पावन, केसर वावन, गंध घिसा कर ले आयो।
मन दाह निकंदों भव दुख वंदों तुम पद दंदौं सिरनायो ।श्री०।चं०
अक्षत अनियारे, जल सु पखारे पुंज तिहारे, ढिग लाये।
अक्षय पद दीजे, निज समकीजे, दोष हरीजे, गुण गाये ।श्री०।अ.
वेला सुचमेली, कुन्दचकोली, चंप जुही ले गुलाब धरों। अति
प्रासुक फूला हैं गुण मूला, काम समूला नाश करौ ।।श्री० पुष्पं० ।।
फैनी अरु बाबर, लाडू घेवर, तुम पद ढिग धर सुखपाये।
ममक्षुधा हरीजे समता दीजे, विनती लीजे गुण गाये। श्री० ।नै०
दीपक उजियारा, कपूर प्रजारा, निजकर धारा अर्ज करूं।
मम तिमिर हरीजे ज्ञान सुदीजे कृपा करीजे पांव परूं ।।श्री०।।दी०।।
दश गंध कुटाया, धूप वनाया, अग्नि जलाया, कर्म नशैं। मम
दुख करो दूरा करमहिं चूरा आनंद पूरा सुख विलसे ।।श्री० ।।धूपं।।
बादाम छुहारे, पिस्ता प्यारे, श्रीफल धारे, भेंट करू। मन
वांछित दीजे शिव सुख दीजे ढील न कोजे मोद धरूं ।। श्री०। फलं।।
वसु द्रव्य मिलाये, भवि मन भाये, प्रभु गुण गाये नृत्यकरो।
भवभव दुखनाशा शिवमग भासा चित्त हुलाशा सुक्खकरौ। श्री।।अर्घं

अथ प्रत्येक अर्घ।

अंतिम तीर्थंकर वीर स्वामी, समोशरण युत आय हैं।
तहं राय श्रेणिक पूज्यकर, उन धर्म सुनि सुख पाय हैं।।
गौतम सु गणधर, ज्ञान चहुं धर, भव्य संबोधे तहां।
सो वाणि रचना ग्रंथ मांही, आज प्रचलित है यहां।।
दोहा—सो विपुलाचल सीस पर, छह मंदिर विख्यात।
द्वय प्रतिमा शोभा धरें, चरण पादुका सात।।
ॐ ह्रीं ह्री विपुलाचलपर्वत पर सात मंदिरस्थ द्वय प्रतिमा व
सात युगल चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

अडिल्ल–रतनागिरि पर दो मंदिर सोहें सही।
प्रतिमा दो रमणीय परम शोभा लही॥
चरण पादुका चार भीतरै सोहनी।
एक पादुका दूजे मंदिर में वनी॥
दोहा–वसु विधि द्रव्य मिलायकर,दोउ कर जोडे सार।
प्रभु से हमरी वीनती, आवागमन निवारि॥
ॐ ह्री श्रीं रतनागिर पर्वतपर दो मंदिरस्थ दो प्रतिमा व पांच युगल चरणकमलेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥
उदयागिर पर मंदिर दो हैं विशालजी।
श्री पारस प्रभु आदि बिंब छह हाल जी॥
चरण पादुका तीन विराजत हैं सही।
दर्शन हैं छह जगह परम शोभा लही॥
दोहा—अष्ट द्रव्य ले थार, मन वच तन से पूज हों।
जन्म मरण दुख टार, पाऊँ शिवसुख परमगति॥३॥
ॐ ह्रीं श्री उदयागिरि पर्वत पर दो मंदिरस्थ छह प्रतिमा व तीन युगल चरणकमलेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥
श्रमणागिरि के सीस पर, दो मंदिर सुविशाल।
आदिनाथजी मूल हैं, दर्शन भव्य निहाल॥
द्वय प्रतिमा इक चरण तहँ, राजत हैं सुखकार।
अष्ट द्रव्य युत पूज हैं, ते उतरे भव पार॥ ४॥
ॐ ह्रीं श्री श्रमणागिरि पर्वत पर दो मंदिरस्थ दो प्रतिमा व युगलचरण कमलेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥
पद्धरी–श्री गिरि व्यवहार अनूप जान। तहँ मंदिर सात बने महान।
तिनके अति उन्नत शिखिर सोय। देखत भवि मन आनंद होय॥
अरु टूटे मंदिर पड़े सार, पुनि गुफा एक अद्भुत प्रकार।
सबमें प्रतिमा स विराजमान, पुनि चरण तहाँ सु अनेक जान

ले अष्ट द्रव्य युत पूज कीन, मन वच तन कर त्रय धोक दीन।
सब दुष्ट करम भये चूर चूर, जासे सुख पाया पूर पूर ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्री व्यवहारगिरि पर्वत पर सात मंदिर व टूटे मन्दिर व एक गुफा में अनेक प्रतिमा व चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति०

॥ जयमाला ॥

उन्नत पर्वत पांच पर, उनईस जिनालय जान।
मुनिसुव्रत जिनराजके, कल्याणक चहुं जान ॥

बनो राजगृह नग्र अनूप। बनी तहँ खाई कोट सु कूप।
बने तहँ बाग महा रमनीक। फले फल फूल सुवृत्त जु ठीक॥
तहां नरनार सु पंडित जान। करें नित पात्रन को बहुदान।
करै नित श्रावक शुभ षट् कर्म। सु पूजन वदन आदिक धर्म॥
रहै बन मुनिवर अर्जिका जान। करैं नित भक्ति सु श्रावक आन।
हूं राय सुमित्र महा गुणवान। सबै गुण ईश सु पंडित जान॥
सु नारि पद्मावति नाम सु जान। सबै गुण पूरित रूप महान।
जु श्रावण दोज वदी दिन सार। स्वप्ने सोलह दीखे निश सार॥
सु होत प्रभात पतिय ढिग जाय। सुपन फल सुनि मनहर्ष लहाय।
प्रभु तीर्थंकर गर्भ मझार। अपराजित से आये गुणधार।
सु सेव करें नित देविय आय। नगर नरनार जु हर्ष लहाय। यों सुख मे भये नव माह व्यतीत। वदी वैशाख दशमि शुभमीत॥ सुजन्म प्रभु को भयो सुखदाय। सु आसन कंपो तवै हरिराय। अवधिकर इन्द्र जनम प्रभु जान। किया परिवार सहित सुपयान॥ प्रदक्षिण तीन नगर दी आय। शचीधर हर्ष प्रसू गृह जाय। सु सुखनिद्रा माता को धार। प्रभु कर लेय किया नमस्कार। सु लेय हरी निज गोदहिं धार। सुनेत्र सहस धर रूप निहार॥ ऐरावत गज चढि मेरुपै जाय। सु पांडुक पर प्रभु को पधराय॥ सहस अरु आठ कलश शुभ लेय। क्षीरोदधि

नीरसे धार ढरेय। सुभूषण बहु प्रभु को पहराय। सु नृत्य किया वादित्र वजाय। सुपूजरु भक्ति तहाँ बहु कीन। सु जन्म सफल अपने करलीन। सु लाय पिता कर सौंप विराट। सु नृत्य किया अति आनंद ठाठ। मुनिसुव्रत नाम तवै हरि धार॥ जु श्यामवरण छवि है सुखकार। प्रभु क्रमसो योवन पद धार। सु राजरु भोग अनेक प्रकार॥ जु एक दिना सु महल मझार। बैठे शत खण्ड पे थे सुखकार। आकाश मझार बदल इक देख। तत् क्षण चित्र लिखत शुभपेख॥ जु लिखितहि ताहि विलाय सुजान। लहौ वैराग्य परम सुख खानि॥ सु भावत भावन बारह सार। वदी बैशाख दशमि सुखकार॥ सु आय लोकांत नियोग सुकीन। सु इंद्रहि कांध चले सु प्रवीन। तहां बन जायके लुंच विशाल। धरो तप दुद्धर बारा प्रकार॥ सुघाति करम हनि ज्ञान सु पाय। वदी वैशाख की नौमि सुहाय। समवसृति इन्द्र तहां रचि सार। प्रभु उपदेश दे भव्यहिं तार॥ यही कल्याण चहूँ सुखकार। सु राजगृही नगरी वो पहार॥ प्रभु मुनिसुव्रत मेरे हो स्वामी। देवहु निज वास हमें अभिराम॥ सु नाश अघाति सम्मेद से जाय। सु निरजर कूट ते मोक्ष सिधाय। सु अंतिम प्रभु महावीर जिनाय। आये विपुलाचलपै सुखदाय॥ जू रायसु श्रेणिक भक्ति समेत। सु प्रश्न हजारों किये धर्म हेत। सु गौतम गणधरजी सुखकार। सु उत्तर देय रु भव्यहि तार। जु श्रेणिक श्रावक सम्यक्धार। प्रकृति तीर्थंकर बंध जु सार। वही जिनवानिका अवलों प्रकाश। सु ग्रन्थनमांहिं जु देखो हुलास॥ जिनेश्वर और तहां इकवीस। विहार करंत रहे गिरि सीस। सु वानि खिरी भवि जीवनकाज। सुनी तब भव्य तजा गृहराज॥ सु पर्वत पास हैं कुंड अनेक। भरे जल पूरित गर्भ सु टेक। करै तहं यात्रि सु आय स्नान। सु द्रव्य मनोरम धोवत जान॥ सु चालत वंदन हरषहि धार। सु वंदनते कर्म

होवत छार। करें पुनि लौटसु आय स्नान। थकावट जाय सु सुक्ख महान ॥ बनी धर्मशाल महा रमणीय। सु यात्रि तहां विश्राम सुलीय। प्रभु पद वंदित मैं हरषाय। मुझे नित दर्शन दो सुखदाय। जु अल्पहि बुद्धि थकी मैं बनाय। सुधारहु भूल जु पंडित भाय। दुहूँ कर जोड नमैं 'मुन्नालाल'। प्रभु मुझे वेग करो जु निहाल ॥ मुनिसुव्रत वंदित, मन आनन्दित, भव दंदहि जाय पलाय। श्री पंच पहाडी, अति सुखकारी, पूजन भविजन शिवसुखदाय ॥

ॐ ह्रीं राजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच महा गिरि राजको, पूजे मन वच काय
पुत्र पौत्र संपति लहे, अनुक्रम शिवपुर जाय ॥

इत्याशीर्वाद ।

श्री मंदारगिरिजी पूजन ।

(मुनीम मुन्नालालजी परवार कृत)

दोहा—अङ्ग देश के मध्य है चंपापुर सुख खानि।
राय तहां वसुपूज्य है, विजया देवी रानि ॥ १ ॥

अडिल्ल—वासुपूज्य तसु पुत्र तीर्थपद धारजी।
गर्भ जन्म तिन चंपानगर मझारजी ॥
तप करते यह वन चंपापुर के सही।
ज्ञान ऊप ज्यो ताही वनके मध्य ही ॥ २ ॥
मोक्ष गये मंदारशैलके शिखर तें।
पर्वत चंपा पास सु दीसत दूर ते ॥
सो पच कल्याणक भूमि पूजता चावसो।
वासुपूज्य जिनराज तिष्ठ इत आवसो ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनपंच कल्याणक भूमिभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधिकरण।

पद्म द्रहको नीर उज्ज्वल, कनक भाजन में भरों।
मम जन्म मृत्यु जरा निवारन, पूज प्रभुपद की करों॥
श्री वासुपूज्य जिनेंद्रने गर्भ, जन्म लिया चंपापुरी।
श्री तपसु ज्ञान अरन्य शैल-मंदारतैं शिव तिय वरी॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंचकल्याणक भूमिभ्यो जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर वो मलय बावन, घिस सुगन्ध बनाइया।
संसारताप विनाश कारण भर कटोरि चढाइया॥ श्री०। चन्दनं।
देव जीर सुवास तंदुल, अमल भवि मन मोहिये।
सो हेम थारहि धरत पदढिग, अखय शिवपद चाहिये॥श्री०।अक्षतं
बेला चमेली चंपा जूही, गुलाब कुन्द मंगायके।
चुन चुन धरूं अति शुद्ध पहुपहि, काम मूल नशाय के॥श्री० पुष्प
फैनी सु बाबर लाडू घेवर, पूवा शुद्ध बनाइया।
वर हेम भाजन धरत पद डिग, जजत भूख भगाइया॥श्री०।नैवेद्यं
बाती कपूर की धार घृत में, दीप ले आरति करों।
अज्ञान मोहनि अंध भाजत, ज्ञान भानु उदय करों॥श्री०।दीपं
ले गंध दशविधि चूर भूर, सु अग्नि मध्य जरावही।
मम कर्म दुष्ट अनादि जलते, धूम तिन सु उडावही॥ श्री० ।धूपं
श्री फल सु आम्र नारंगी केला जायफल धो लाइये।
ते धरत प्रभु ढिग चरण भेंट, सु मोय शिवफल चाहिये॥ श्री०।फलं
जल फल मिलाय सु अर्घ लेकर, कनक भाजन में धरों।
मम दुःख भव भव दूर भाजत, पूज्य प्रभु पदकी करो॥ श्री०॥अर्घं

अथ जयमाला।

सत्तर धनु तन तुंग है, वर्ण सु छवि है लाल।
दशवें दिव ते चय भये, लक्ष बहत्तर साल॥ १॥

जन्में शतभिषा नक्षत्र में, बाल ब्रह्म व्रत लेय।
महिष चिन्ह पद पद लसे, गाऊं गुण सुख देय ॥२॥

जय वासुपूज्य करुणा निधान, भवदधि से तारन हार जान। वसुपूज्य नृपति चंपापुरीश। विजया देवी रानी सुधीश। ताके शुभ गरभ रहो महान, वदि छट असाढ की तिथिय जान। तव छप्पन देवी रहत लार, माताको सेवत अधिक प्यार। सुख में नव माह भये व्यतीत, फागुन वदि चौदश दिन सु चीत। प्रभु जन्म भयो आनन्दकार, तव इन्द्रनि मुकुट नये सु वार। स्वर्गनवासी घर घंट नाद, ज्योतिष इन्द्रनि घर सिंहनाद। पुनि भवनवासि घर वजे शंख, व्यंतर घर पट पट वजे झंख। अनहद सुनि प्रभुका जन्म जान, चल सात पैंड कीनो प्रणाम। पुनि परिजनयुत सजि चले सोय, चतुरनिकायनि हरि हर्ष होय। ऐरावत गज चढि स्वर्गराय। पुरि परदक्षिण दी तीन जाय। तव शची प्रसूतहि थान जाय, माता को सुख निद्रा कराय। दूजो सुत धरि प्रभु गोद लेय। सौधर्म ईश कर प्रभुहिं देय। हरि नेत्र सहसकर रूप देख, नहिं तृप्त होत फिर २ सु देख। ईशान इन्द्र सिर छत्र धार, तीजे चौथे हरि चवर ढार। जय जय नभमे करि शब्द जोय, गये पांडुक वन हरि प्रमुद होय॥ तित शिला पांडुपर प्रभु बिठाय, क्षीरोदधि जल निजकर सु लाय। सिर सहस कलश अरु आठ ढार, आभूषण शचि पहिराये प्यार॥ पुनि अष्ट द्रव्य युत पूज कीन, निज जन्म सफल सब हरि गिनीन। वहु उत्सव करत जु नगर आय, पितु गोद धार हरि थान जाय॥ प्रभु लाल वरण छवि शोभ लीन, नहिं राज किया नहिं भोगकीन। सो कुंवरकाल वैराग्य धार, फागुन वदि चौदस सुक्खकार। भावन भार्या बारह प्रकार, दिव ब्रह्म रिषी चलि हर्ष धार। तिन आय विराग प्रशंस कीन, देवनि हरि युत चलि हर्ष लीन। प्रभु सुख पालहिं चढ गमन कीन, चंपा वनमें कचलोंच

कीन। तबही मनपर्यय ज्ञान धार, तप करत प्रभू बारह प्रकार। बाईस परीषह वह सहंत, पुनि क्षपकश्रेणि चढ़ घाति हंत। सुदि माघ द्वितीया कर्म जार, उपजो पद केवल सुक्खकार ॥ तव इन्द्र हुकम धरनेन्द्र चाल, देवनि जानी मन हर्ष धार। समोसृत वहु विधि युत सो बनाय, वेदी सुकोट बारह सभाय ॥ प्रभु दिव्यध्वनि उपदेश देय, मुनि भविजन मन आनंद लेय। केइ मुनिवर केई गृही व्रत्त, केई अर्जिक श्रावकनी पवित्त ॥ सो कर विहार प्रभु देश देश, मेटे भवि जीवनिके कलेश। रहिआयु शेष जब मास एक, तब आये गिरि मंदार टेक ॥ तहं धार योग अघाति नाश, भये सिद्धअनंते गुणनिरास। भादौ सुदि चौदस रान्ह काल, मुनि चौरानव युत शिवविशाल ॥ रह गये केश अरु नख जु शेष, उड़ि गये सर्व पुद्‌गल प्रदेश। तब इन्द्र अवधि प्रभु मोक्ष जान, मंदार शिखर आये सु जान ॥ चतुरनिकायनि मन हर्ष धार, प्रभु को शरीर रचियो जु सार। वसुविधि से तिनकी पूज कीन, पुनि अग्नि कुमर पद धोक दीन ॥ तिन मुकटसे अग्नि भई तयार, ताकर कीना प्रभु संस्कार। जय जय करते निज थान जाय, सो पूज्य क्षेत्र भवि सुक्खदाय ॥ ता पर्वतपर मंदिर विशाल, तामें युग चरण चतुर्थ काल। पुनि छोटा मंदिर एक और, त्रय युगल चरण हैं भक्ति ठौर ॥ प्रभु पंच कल्याणक युत जिनेश, मेटो हमरे भव भव कलेश। सो चरण सीस धारत त्रिकाल, नमि अरज करत है "मुन्नालाल" ॥ वंदित मन वांछित फल लहाय, पूजे ते वसु विधि अरि नशाय। हम अल्प बुद्धि जयमाल गाय, भवि करो शुद्ध पंडित सुभाय ॥

मन वच तन वंदित कर्म निकंदित, जन्म २ दुख जाय पलाय।
श्रीगिरि मंदारा दुख हरतारा, सुख दातारा, मोक्ष दिवाय ॥

ॐ ह्रीं श्री वासपूज्यजिनपंचकल्याणक भूमिभ्यो महार्घं नि०

वासुपूज्य जिनराज, तुम पद युगपर शीस धरूं ।
सरें हमारे काज, यातें शिव पद सुख लहूं ॥
इत्याशीर्वादः ।

कैलाश गिरि पूजा

श्री कैलाश पहाड़ जगत परधान कहा है,
आदिनाथ भगवान जहां शिववास लहा है ।
नाग कुमार महाबाल व्याल आदि मुनिराई,
गये तिहि गिरिसों मोक्ष थापि पूजों सिरनाई ॥
श्री कैलाश पहाड़सों, आदिनाथ जिन देव ।
मुनी आदि जे शिव गये थापि करों पद सेव ॥

ॐ ह्रीं कैलाश पर्वत से श्री आदिनाथ स्वामी और नाग कुमारादि मुनि मोक्ष पद प्राप्ताय अत्र अवतरत २ सवौषट् । तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः । अत्र मम सन्निहिता भवत २ वषट् ।

नदगंग सु निरमल नीरलाय, करि प्रासुक मरुकुंभन भराय ।
जिन आदि मोक्ष कैलाशथान, मुन्यादि पाद जजुं जोरि पानि ।

ॐ ह्रीं श्री कैलाश पर्वत से आदिनाथ भगवान् और नागकुमारादि मोक्षफल प्राप्तये जलं नि० ।

मलयागिरि चंदन को घसाय, कुंकुमयुत मरुकुंभन भराय ।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादिपाद० ॥ चन्दनं ॥
जिनवर कमोद वर शालिलाय, खंड हीन धोय थारा भराय ।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ अक्षतं ॥
सुवेल चमेली जुही लेय, पाटिल वारिज थारी भरेय ।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ पुष्पं ॥
मोदक घेवर खाजे बनाय, गोंझा सुहाल भरि थाल लाय ।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ नैवेद्यं ॥

घृत कपूर मणि के दीप जोय, जिनसे प्रकाश तम छीणहोय।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ दीपं ॥
वर धूप दशांगो अग्नि धार, जस धूम घटा छाये अपार।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ धूपं ॥
फल चोच मोच नरियार जेय, दाडिम नारंग भरि थारलेय।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ फलम् ॥
जल आदिक अठों द्रव्य लेय, भरि स्वर्णथार अर्घहि करेय।
जिन आदिमोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ अर्घं ॥

जयमाला (छन्द त्रिभंगी)

कैलाश पहारा, जग उजियारा, जन शिव गाया ध्यान धरो।
वसु द्रव्यन लाई, तिहि थल जाई जिन गुण गाई पूज करो॥

(चौपई)

अयोध्यापुरी बहु शोभमान, है आदिनाथ जिन जन्म थान।
भये भोग भूमि को अन्तज्ञान, प्रभु कर्म भूमि रचना करान।
असि मसि कृषि वाणिजयुत्तजान, पशुपालन बतला योजनान॥
करि राज जगत् सों ह्वै उदास, दे सतहि कियो जा वन निवास।
तप धारत मनपर्यय लहाय, रिपु घाति नाश केवल लहाय।
हरि आज्ञासों धन देव आय, तिन समवशरण रचना कराय।
ता मधि गन्ध कुटी बनाय, मणि सिंहासन तापर दिपाय। ता ऊपर वारिज हेम मान, अन्तरीक्ष विराजै देव जान। प्रभु वाणि खिरैं वृष वृष्टि होय। सुनि २ समझै सब जीव सोय। निज वैभवयुत भर तेश आय, है पूजो जिन पद शीश नाय। हरि आन जजत जिन चरण कीन, कर वे विहार हित विनय कीन। प्रभु विहरे आरज देश जान, कैलाश शैल दिय ध्यान आन। प्रभु कर्म अघाती घात कीन, पंचम गति स्वामी प्राप्त कीन। हरि आन चिता रचि दाह कीन, धरि छार शीश सुर गमनकीन। ह्यां सों औरहु मुनि सुजान,

हनिकर्म लयो है मोक्ष थान । गिर को वैंढे खातिक सुजान, अरु मानसरोवर झील मान । तासों यात्रा है कठिन जान, नहिं सुलभ किसी दिशसो बखान । है आठ सहस्र पैंड़ी प्रमान, तासों अष्टापद नामजान । सुत कन्हईलाल भगवानदास, कर जोरि नमै थल शिव निवास । मांगत जिनवर मुनिवर दयाल, भव भ्रमण काट द्यो शिव विठाल ।

आदीश्वर ध्यावे, भाव लगावे, पूज रचावे, चावन सों ।
सो होय निरोगी, बहु सुख भोगी, पुण्य उपावे भावन सों ॥

ॐ ह्रीं कैलाश पर्वत से श्री आदिनाथ भगवान और नाग कुमारादि मुनि मोक्ष प्राप्तेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जे पूजैं कैलाश आदि जिनरायको, पढै पाठ बहु भांति सुभाव लगाय को । ते धन धान्यहि पुत्र पौत्र सम्पति लहै, नर सुर सुख को भोगि अन्त शिवपुर रहैं ।

इत्याशीर्वादः ।

॥ श्री खंडगिरि क्षेत्र पूजा ॥

[मुनीम मुन्नालालजी कृत]

अङ्गवङ्ग के पास है देश कलिंग विख्यात ।
तामें खंडगिरि वसत दर्शन है भये सुखात ॥ १ ॥
जसरथ राजा के सुत अतिगुणवान जी ।
और मुनीश्वर पंच सैंकड़ा जान जी ॥
अष्टकरम कर नष्ट मोक्षगामी भये ।
तिनके पूजहुँ चरण सकल मम मल चये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकलिंगदेशमध्य खंडगरिजी सिद्धक्षेत्र से सिद्धपद प्राप्त दशरथ राजाके सुत पंचशतक मुनि अत्र अवतरत २ । अत्र तिष्ठत २ ठ ठः । अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

अष्टक—अति उत्तम शुचि जल ल्याय, कंचन कलशभरा।
करुं धार सु मनवचकाय, नाशत जन्म जरा॥
श्री खंडगिरि के शीश जसरथ तनय कहे।
मुनि पञ्चशतक शिवलीन देश कलिंग दहे॥

ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि क्षेत्रसे दशरथराजा के सुत तथा पांचशतक मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व०।

केशर मलयागिरि सार घिसके सुगंध किया।
संसार ताप निरवार, तुम पद वसत हिया॥ २॥ श्री० चन्दनं०
मुक्ताफल की उनमान, अक्षत शुद्ध लिया।
मम सर्व दोष निरवार, जिनगुण मोय दिया॥३ श्री०॥ अक्षतं०
ले सुमन कल्पतरु थार, चुन चुन ल्याय धरूँ।
तुम पदढिग धरतहिं वाण काम समूल हरूँ॥ ४॥ श्री०॥ पुष्पं०
लाडू घेवर शुचि ल्याय, प्रभुपद पूजन को।
धारूँ चरनन ढिगआय, मम क्षुध नाशन को॥ ५॥ श्री नैवेद्य०
ले मणिमय दीपक धार, दोउ कर जोड़ धरो।
मम मोह अंधेर निवार, ज्ञान प्रकाश करो॥ ६॥ श्री०॥ दीपं०
ले दशविधि गंध कुटाय, अग्नि मझार धरूं।
मम अष्ट करम जल जाय, यातें पाय परूं॥ ७॥ श्री० धूपं०
श्रीफल पिस्ता सु बादाम, आम नरंगि धरूं।
ले प्रासुक हेम के थार, भवतर मोक्ष वरूं॥ ८॥ श्री०॥ फलं०
जल फल वसु द्रव्य पुनीत, लेकर, अर्घ करूं।
नाचूं गाऊं इहभांत, भवतर मोक्ष वरूं॥ ६॥ श्री०॥ अर्घं०

जयमाला।

देश कलिंग के मध्य है, खंडगिरी सुखधाम।
उदयागिरि तसु पास है, गाऊँ जय जय धाम॥

श्री सिद्ध खंडगिरि क्षेत्र पात, अति सरल चढाइ ताकी सुजात ।
अति सघन वृक्ष फल रहे आय, ताकी सुगंध दशदिश जु छ्य ॥
ताके सुमध्य में गुफा आय, तव मुनि सुनाम ताको कहाय ।
तामें प्रतिमा दशयोग धार, पद्मासन हैं हरि चंवरढार ॥
ता दक्षिण हैं सु गुफा महान, तामें चौवीसो भगवान जान ।
प्रतिप्रतिमा इन्द्र खड़े दुओर, कर चंवर धरें प्रभुभक्ति जोर ॥
आजू वाजू खड़ि देवि द्वार, पद्मावति चक्रेसरी सार ।
करि द्वादश भुजि हथियार धार, मानहुं निंदक नहिं आवें द्वार ॥
ताके दक्षिण चलि गुफा आय, सतवखरा है ताको कहाय ।
तामें चौवीसी वनी सार, अरु त्रय प्रतिमा सव योग धार ॥
सवमे हरि चमर सु धरहिं हाथ, नित आय भव्य नावहिं सुमाथ ।
ताके ऊपर मंदिर विशाल, देखत भविजन होते निहाल ॥
ता दक्षिण टूटी गुफा आय, तिनमें ग्यारह प्रतिमा सुहाय ।
पुनि पर्वतके ऊपर सु जाय, मंदिर दीरघ वन रहा भाय ॥
तामे प्रतिमा मुनिराज मान, खड्गासन योग धरें महान ।
ले अष्ट द्रव्य तसु पूजकीन, मन वच तन करि भव धोक दीन ॥
मानो जन्म सफल अपना सुभाय, दर्शन अनूप देखो है आय ।
अव अष्टकरम होंगे चूर-चूर, जातें सुख पावें पूर पूर ॥
पूरव उत्तर द्वय जिन सुधाम, प्रतिमा खड्गासन अति तमाम ।
पुनि चवतरामे प्रतिमा वनाय, चार भुजी है दर्शनीय ॥
पुनि एक गुफा में विम्वसार, ताको पूजनकर फिर उतार ।
पुनि और गुफा खाली अनेक, ते हैं मुनिजनके ध्यान हेत ॥
पुनि चलकर उदयागिरि सुजाय, भारी भारी गुफा हैं लखाय ।
एक गुफा में विम्व विराजमान, पद्मासन धर प्रभु करत ध्यान ॥
ताको पूजन मनवचन काय, सो भवभवके दुख जावें पलाय ।
जिनमें एक हाथी गुफा महान, तामें इक लेख विशाल धाम ॥

पुनि और गुफा मे लेख जान, पढते जिनमत मानत प्रधान।
तहं जसरथ नृपके पुत्र आय, संगमुनि पंचशतक ध्याय ॥
तप बारह विधि का यह करंत, बाईस परीषह वह सहंत।
पुनि समिति पंचयुत चले सार, दोषा छयालिस टल कर अहार ॥
इस विध तप दुद्धर करत जोय, सो उपजे केवलज्ञान सोय।
सब इन्द्र आय अति भक्तिधार, पूजा कीनी आनन्द धार ॥
पुनि धर्मोपदेश दे भव्य सार, नाना देशन में कर विहार।
पुनि आय याही शिखर थान, सो ध्यान योग्य आबाति हान।
भये सिद्ध अनंते गुणनि ईश, तिनके युगपद्पर धरत शीष।
तिन सिद्धनको पुनि २ प्रणाम, सो सुक्ख लेय अविचल सुधाम ॥
बंदत भवदुख जावे पलाय, सेवक अनुक्रम शिवपद लहाय।
ता क्षेत्र को पूजत मैं त्रिकाल, कर जोड़ नमत हैं मुन्नालाल ॥

घत्ता

श्री खंडगिरि क्षेत्रं, अतिसुख देतं तुरतहि भवदधि पार करे।
जो पूजे ध्यावे करम नशावे, वांछित पावे मुक्ति वरे॥
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि सिद्धक्षेत्राय जयमाला अर्घं नि०।
श्री खंडगिरि उदयागिरी, जो पूजै त्रैकाल।
पुत्र पौत्र संपति लहे, पावे शिवसुख हाल ॥

इत्याशीर्वादः।

श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्र पूजा (ऊन)

पावागिरि वर सिहरे, सुवण्णभद्दाइ मुणिवरा चउरो।
चेलणाणई तडग्गे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १३ ॥
[निर्वाण-कांड]

स्थापना।

वरनगरी के निकट सुसुन्दर पावागिरिवर जानो।
ताके समीपसु नदी चेलना, तट ताका परमानो ॥

सुवरणभद्र आदि मुनि चारों तहँ ते मोक्ष विराजे।
हम थापन कर पूजे तिनको पाप ताप सब भाजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुवर्णभद्रादिचतुर्णाम् मुनीनां निर्वाणास्पदे चेलना-नदीतटे श्रीपावगिरिसिद्धक्षेत्र—अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्' सन्निधिकरण।

शुद्ध प्राशुक नीर निरमल लायकर झारी भरौ,
तव चरणतल त्रय धार देकर जन्ममृत्यु जरा हरौं।
श्रीपावागिरिवर चेलना तट सिद्धक्षेत्र महान है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्रादि मुनी को प्रणाम है ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं सुवर्णभद्रादिचतुर्णाम् मुनीनां निर्वाणास्पदे चेलना-नदीतटे श्री पावागिरिसिद्धक्षेत्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं।

केशर कपूर मिलाय चन्दन घिस कटोरी लाय हूँ।
इस भवाताप नशायवे को नाथ चरण चढ़ाय हूँ।
श्रीपावागिरिवर चेलना तट सिद्धक्षेत्र महान है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्रादि मुनी को प्रणाम है ॥२॥ चन्दनं

उज्ज्वल अखण्डित लेय अक्षत धोय थाली में भरों,
देवो अक्षयपद हमें प्रभु जी चरण में अक्षत धरों।
श्री पावागिरिवर चेलना तट सिद्धक्षेत्र महान है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्रादि मुनीको प्रमाण है ॥३॥ अक्षतान्

मकरन्द लोभन विविध पुष्प सुलाय थारी मैं धरौं,
चरण में करके समर्पित कामबाण सबै हरौं।
श्रीपावागिरिवर चेलना तट सिद्धक्षेत्र महान है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्रादि मुनी को प्रणाम है ॥४॥ पुष्प।

पकवान नाना भांतिके लेकर कनक थाली भरौं,
क्षुधरोग नाशन कारणे नैवेद्य ले आगे धरौं।

श्रीपावागिरिवर चेलना तट सिद्धक्षेत्र महान है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्रादिमुनी को प्रणाम है ।।५।। नैवेद्यं
अज्ञानध्वान्त महान अधकार करि राख्यो सबै,
निज-पद सुभेद पिछान कारण दीप ले आयो अबै ।
श्रीपावागिरिवर चेलना तट सिद्धक्षेत्र महान् है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्रादि मुनी को प्रणाम हैं ।।६।। दीपं।
वसुकर्म दुष्ट महावली ने सब जगत वश में कियो,
हों धूमके मिस नाश कारण धूप प्रभु ढिग क्षेपियो ।
श्रीपावागिरिवर चेलना तट सिद्धक्षेत्र महान है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्रादि मुनि को प्रणाम है ।। ७ ।।धूपं
लेय करके फल मनोहर पक्वयुक्त सुपावना,
इस फल का फल हो मोक्षफल ये ही हमारी भावना ।
श्रीपावागिरिवर चेतनातट सिद्धक्षेत्र महान है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्रादि मुनी को प्रणाम है ।।८।। फलं।
जल से लेकर फल तलक सब अष्टद्रव्य मिलायकर,
हम मांगते हैं अनर्घपद प्रभु अर्घ चरण चढाय कर ।
श्रीपावागिरिवर चेलना तट सिद्धक्षेत्र महान है,
गये मोक्ष चारों सुवर्णभद्रादि मुनी को प्रणाम है ।।९ ।।अर्घं

जयमाला ।

पावागिरि सिद्धक्षेत्र है, पावन परम विशाल ।
अल्प बुद्धि से कहत हों, तिनकी यह जयमाल ।।
श्री सिद्धक्षेत्र पर्वत सुजान, श्रीपावागिरि ताको सुनाम ।
तहां नदी चेलना वहे नीर, सरिता छोटी पर है गंभीर ।।
तहां सुवरणभद्र मुनीश चार, कर कर्मछार गये शिवमंझार ।
तातैं श्रीसिद्धक्षेत्र जान, वन्दों पुनि-पुनि सो सुखदथान ।।३।।
ताके समीप है ऊन ग्राम, है छोटा पर सुन्दर सुजान ।
दक्षिण दिशिका भूपति बलाल, था रोग भयङ्कर कठिन हाल ।।

कुछ कारणवश इस थान आय, तव रोगमुक्त नैरोग्य थाय।
तव हर्षधार हिय भक्ति लाय, निन्यानवे चैत्यालय वनाय॥
शत चैत्यालय में एक न्यून, होने से नाम हुआ है ऊन।
गिरि पर है मन्दिर एक हाल, कारीगरि में अद्भुत विशाल॥
तहँ प्रतिमा तीन विराजमान, कायोत्सर्ग स्थित हैं महान्।
उनमें दो प्रतिमा पांच हाथ, हैं मध्य की प्रतिमा आठ हाथ॥
तीनों प्रतिमा सुन्दर ललाम, कर जोड़ि करौं तिनको प्रमाण।
सम्वत् उन्नीस जु शतक और, ता ऊपर इक्यानवे जोड़॥
है कृष्णपक्ष आषाढ़ मास, बुधवार तिथी अष्टमी खास।
ताही दिन आया स्वप्न सांच, अरु प्रतिमा प्रगटी तहां पांच।
तामें एक प्रतिमा है मनोज्ञ, श्री वीर प्रभु की दरश योग्य।
अङ्कित सम्वत् वारासौ जान, अरु ता ऊपर वावन प्रमाण।
तिन प्रतिमा की छवि कहि न जाय, देखत ही सम्यक प्रगट थाय।
दरशन ही से कलुष हरन्त, मिथ्यात्व पाप सवही दुरन्त॥
जुत विभव परम वर्जित सुसङ्ग, लखि नग्न अङ्ग लागे अनङ्ग।
ऐसे पावागिर सिद्धथान, अरु अतिशय क्षेत्र जु है महान॥
इसलिए पुनीत सु है अपार. दरशन करि हो जग-जलधि-पार।
इमि जानि वंदना कर उदार, लूटो शुभ पुण्यतणो भंडार॥
तुम धारत हो करुणा अपार, हे देव सुनो मेरी पुकार।
मेरी करनी पर मत निहार, निज प्रणतपाल प्रणको विचार॥
विधिवंधयोग्य दुरभाव हानि, करि क्षायिक भाव कृपानिधान।
यह मांगत हूँ कर जोड़ि देव, भव भव पाऊँ तव चरण सेव॥
घत्ता—पावगिरिक्षेत्रं अतिसुख देतं, तुरतहिं भवदधि पार करें।
'विष्णु' नित ध्यावे, कर्म नशावे, वांछित पावे मुक्ति वरै॥
ॐ ह्रीं सु वर्णभद्रादि चतुर्णां मुनीनां निर्वाणास्पदे चेलना-नदी तटे श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्राय अनर्घ्य पदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा

श्री पावगिरिक्षेत्र की नित पूजा करौ,
गुण को गावो भक्तिभाव हिरदे धरौं।
इस जगमें हो धर्म कृपासे सुख घना,
'विष्णु' मनमें धरो नित्य शुभ भावना ॥

इत्याशीर्वादः।

श्री गौतम गणपति पूजा।

श्री गौतम गणईश शीश यह तुम्हें नमकार
आह्वानन अब करू' आय तिष्ठो मानस पर।
पाके केवल ज्योति ज्ञाननिधि हुए गुणाकर,
निज लक्ष्मी का दान करो, मेरे घट आकर ॥
श्री गौतम गणईशजी, तिष्ठो मम उर आय।
ज्ञान-लक्ष्मी पति बने, मेरी मानव काय ॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां कैवल्यलीक्ष्मिप्राप्त श्री गौतम-गणपतिजिनेन्द्र ! अत्र अवतर २ संवौषट्। अत्र तिष्ठ, तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

अष्टक

गाङ्गेय वारि शुचि प्रासुक दिव्य ज्योति, जन्मादि कष्ट निज वारण को लिया मैं। संसार के अखिल त्रास निवारने को, योगीन्द्र गौतम-पदाम्बुज-में चढाता।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां कैवल्यलक्ष्मीप्राप्ताय श्रीगौतम-गणेशाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूरयुक्त मलयागिरि को घिसाया, संसार ताप शमनार्थ इसे बनाया। संसार के अखिल त्रास निवारने को, योगीन्द्र गौतम-पदाम्बुज-में चढ़ाता ॥ चन्दनं ॥

मुक्ताभ अक्षत सुगन्धि चुना चुना के, व्याधिघ्न अक्षत पदार्थ सजा सजा के। संसार के अखिल त्रास निवारने को, योगीन्द्र गौतम–पदाम्बुज–में चढाता॥ ॥ अक्षतं ॥

कन्दर्प दर्प दलनार्थ नवीन ताजे, वेला गुलाब मुचकुन्द सुपार-जाती। संसार के अखिल त्रास निवारने को, योगीन्द्र गौतम–पदाम्बुज–में चढाता॥ ॥पुष्पं ॥

क्षीरादि मिश्रित अमोघ वंल प्रदाता, पक्वान्न थाल यह भूख निवारने को। संसार के अखिल त्रास निवारने को, योगीन्द्र गौतम-पदाम्बुज-में चढाता॥ ॥ नैवेद्यं ॥

रत्नादि दीप नवज्योति कपूर वर्ती, उद्दाम-मोह-तम तोम सभी हटाने। संसार के अखिल त्रास निवारने को, योगीन्द्र गौतम-पदाम्बुज-में चढाता। ॥ दीपं ॥

अज्ञान मोह मद से भव में भ्रमाता, ये दुष्ट कर्म, तिस नाशन को दशांगी। संसार के अखिल त्रास निवारने को, योगीन्द्र गौतम-पदाम्बुज-में चढाता॥ ॥ धूपं ॥

केला अनार सहकार, सुपक्व जामू, ये सिद्धमिष्ट फल मोक्ष-फलाप्ति को मैं। संसार के अखिल त्रास निवारने को, योगीन्द्र गौतम-पदाम्बुज में चढाता॥ ॥ फलं ॥

पानीय आदि वसु द्रव्य सुगन्धयुक्त, लाय प्रशान्त मन से निज रूप पाने। संसार के अखिल त्रास निवारने को, योगीन्द्र गौतम-पदाम्बुज में चढाता॥ अर्घ्यं ॥

जयमाला।

वीर जिनेश्वर के प्रथम गणधर गौतम पाय।
नमन करूं कर जोड़ कर स्वर्ग मोक्ष फलदाय॥
जय देव ! श्रीगौतम गणेश्वर प्रार्थना तुमसे करूं,
सब हटा दो कष्ट मेरे अर्घ्य ले आरति करूं।

दुष्ट काल कराल पंचम में, सहारा उठ गया,
नेतृत्वहीन हुए सभी जन आर्ष पथ सब मिट गया ॥ १ ॥
तत्त्वार्थ चिन्तक सत्यपथ और सत्य सत्याचार का,
है ठिकाना अब न भारत में गृहस्थाचार का,
मार्ग नाना पकड़ जगजन मुक्ति अपनी चाहते,
आत्म वैभव शून्य हो भौतिक विभूति विगाहते ॥ २ ॥
आत्म तंत्र-स्वतन्त्रता का सत्य शिव था पंथ जो,
खोदिया वह ज्ञान सारा मोह ममता तंत्र हो।
हे गणेश ! कृपा करो, अब आत्म ज्योति पसार दो;
हम में तुम्हारे सदय हो दुर्वासनायें मार दो ॥ ३ ॥
क्या दशा तुमको सुनाऊं जो हमारी हो गई,
आत्मनिधि सब खो गई विज्ञान धारा सो गई।
ज्ञानभौतिक, शानभौतिक मानभौतिक शेष है,
विज्ञान भौतिक रक्तसारा बना भारतदेश है ॥ ४ ॥
न्याय नीति तिलाञ्जली देकर निकाले देश से,
देश के बाजार काले कर दिये निज वेश से।
कालिमा के व्याप्त सब व्यापार धन्धे कर दिये,
नैतिक पतन की चरम सीमायुक्त नयपथ कर दिये ॥५॥
वीर प्रभुनिर्वाण-क्षण में था सम्हाला आपने।
अब छोड तुमको जाऊं कहां घेरा चहूँ दिशि पापने।
है दिवस वहही नाथ ! स्वामी वीर के निर्वाण का,
जग के हितैषी विज्ञ गौतम ईश केवल ज्ञान का ॥६॥
नाथ अब करके कृपा हमको सहारा दीजिये,
दीपमाला आरती पूजा ग्रहण मम कीजिये।
ऐसी दशा जब देश की, तब धर्म का क्या रूप हो,
तुम ही बताओ नाथ ! जब यह जगत तम का तूप हो ॥७॥

कैसे बचावें सत्य अपना, और सत्याचार को,
जब हाय पैसा ! हाय पैसा ! कर रहा संसार हो ॥
इस विषम भवकी भँवरसे कैसे नौका पार हो,
मांझी लुटेरे, पथिक डाकू, दस्यु-कर-पतवार हो ॥८॥
महावीर स्वामी की प्रव्रज्या के समय जो हाल था,
दीन दुखिया प्राणियों का जीवनत्व मुहाल था ।
वह ही दशा भारत धरा की नीति भ्रष्टाचार से,
आओ ! सम्हालो ! सदय होकर आत्मकरुणा धार से ॥९॥
हैं सभी जन आपके, अब ज्ञानसे भरदो हिया,
गौतम दिया गणपति दिया, बोले सभी अनुपम दिया
तेरे दिए बिन जग अंधेरा, क्योंकि वह केवल दिया ॥१०॥
है अनूठा शक्तिशाली, उदय जहँ पाता दिया,
अज्ञान तम के ताप को, चैतन्य 'मणि' करता दिया ।

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णा अमावस्यायां कैवल्य लक्ष्मीप्राप्ताय गौतम गणेशाय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा—ज्योति पुञ्ज गणपति प्रभो ! दूर करो अज्ञान ।
समता इस से सिक्त हो, नया उगे उरभानु ॥

इत्याशीर्वादः ।

श्री वीर निर्वाण-दीपावली पूजा

दोहा—नमों चरमजिन चरण युग, नाथ वंश वर पाय ।
सिद्धारथ त्रिसला तनुज, हम पर होय सहाय ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्री जिन निर्वाण यंत्रस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अडिल्ल—पुष्पोत्तर तजि यान धवल छट साह की ।
उत्तर फाल्गुन नखत बसे उर माय की ॥

अवधि विवुध पति जान रतन वरसाइयो।
कुण्डलपुर हरि आय सुमङ्गल गाइयो॥ २॥
ॐ ह्रीं गर्भ कल्याणक प्राप्ताय अन्तिम जिनेन्द्राय अर्घम्।

दोहा—दिवस पञ्चदस मास वसु, वरस पिछत्तर सार।
रहै चतुर्थ काल के, वीर लियो अवतार॥ ३॥

सुन्दरीछन्द—शुक्ल चैत त्रयोदशि के दिना।
नखत उत्तर फाल्गुण सरगणा॥
साज गजेन्द्र गिरेन्द्र न्हवाइयो
लाख जिनेन्द्र सुमंगल गाइयो॥ ४॥

दोहा—पञ्चानन पग चिह्न तिन, तन उतंग कर सात।
वरन हेम प्रतिविंव जिन, पूजऊ भव्य प्रभात॥ ५॥
ॐ ह्रीं जन्म कल्याणक प्राप्ताय अन्तिम जिनेन्द्राय अर्घम्।

अडिल्ल—आयु वहत्तर वर्ष कुंवर पद तीस जू॥
सो लख अथिर उदास भये जगदीश जू॥
तव लौकांतिक देव स्तुति कर थल गए।
पुनि सर तुरिय नवन करि प्रभु शिविका लए॥६॥
पुर ते निकट न दूर मनोहर वन गए।
चंद्रकांत मणिमयी शिला लखि सुर ठए॥
तहां पधराय पालकी तें सुरगण खड़े।
दुविध परिग्रह त्याग प्रभु समरस वडे॥ ७॥
प्राची दिश सम्मुख पद्मासन धारि कै।
'नमः सिद्ध' कहि पंच मुष्टि कच फारि कै॥
निज आतम अरु सिद्ध सभी की साखि दे।
त्रयदश विध चारित्र धर्‍यो अभिलापदे॥ ८॥
मंगसिर मास दसैं सुदि जन्म नखत पर्‍यो।
ता दिन परम दिगंवर पद प्रभुजी धर्‍यो॥

साल तरू नृप एक वेर अपराहिनी।
दिक्षा सखी मिलाय वधू शिव दाहिनी ॥ ६ ॥
दोहा—जिन सिर केश पवित्र अति, रत्न पिटारे धारि।
क्षीर समुद्र पधराय हरि, निज थल गये नुति कारि ॥१०॥
ॐ ह्रीं तप कल्याणक प्राप्ताय अन्तिम जिनेन्द्राय अर्घं।
दोहा—तनममत्व तजि विश्वपति, शिलापट्ट वर पाय।
आरूढ़े तप धरत ही, तुरिय ज्ञान उपाय ॥ ११ ॥
अक्षर अखंड अव्यक्त जो, अजपा ताकूँ ध्याय।
ध्यान सिद्धि के अर्थ प्रभु, अचल मेरु सम थाय ॥१२॥
अडिल्ल—गुप्ति तीन गढ तुल्य भई तिनके महा।
संयम बखतर तुल्य भयो कहना कहा ॥
कर्म शत्रु जीतन इच्छा लागी तबै।
गुण अनेक सेना-भट होत भये जबै ॥१३॥
अनशन आदि तप धारि द्वादश माहिजी।
ध्यान विषै सुविशेष शुद्धता पाय जी ॥
अट्ठाइस गुणमूल अग्रेश्वर कढ़े।
कर्म प्रवल अरि तिनहि जीतने प्रभु चढे ॥१४॥

गीता छन्द

चढ़े शुकल गजेन्द्र लेश्या, भूमि अनुप्रेक्षा ढुके।
धर्म ध्यान कृपाण गहि, अरि मोह सेना पर झुके ॥
उत्कृष्ट निज परिणाम कटक, तनी सुरक्षा कारणे।
वर ज्ञान रूप प्रधान अग्रेश्वर कियो जगतार ने ॥१५॥
अडिल्ल—अति विशुद्ध परिणाम गु सेनापति थापियो।
रागादिक अरि प्रवल हनन उद्यम कियो ॥
ध्यान शक्ति कर मूल प्रकृति भट तत्र के।
करे चलाचल वीर जिनेश्वर अत्र के ॥ १६ ॥

अधः करण के भाग प्रथम सो भाय कै।
द्वै अपूर्व परिणाम क्षिपक दिशि गाय कै॥
शुक्ल ध्यान असि प्रथम ध्यान ता कर में ले।
मोह प्रबल करि घात जाय बारम थले॥१७॥
गीता छंद—ता थले दूजे शुकल बल, त्रय घातिया हनिजय लयो।
चढ़ि तेरमें गुणथान श्रीजिन, समवसरण विभव ठयो॥
जोजन प्रमाण गु शोभ गीर्वाणादि हति पूजत जहां।
रचि कोटि वेदी भूमिपर मद थंभ तूपादिक तहां॥१८॥
ॐ ह्रीं केवल ज्ञान प्राप्ताय अन्तिम जिनेन्द्राय अर्घं।
चाल मंगल—करत विहार जिनेश भवनि उपदेश दे।
सकल संघ करि युक्त चरम तीर्थेश ते॥
नाना विध अतिशय करि युक्त प्रभु तहां।
आन विराजे अति विपुलाचल पर्वत जहां॥
जहाँ दिव्य ध्वनि प्रति शब्द जय जय सभा मंडप अवनि में।
धर्मोपदेश सुनाइयो तिनि निकट निर्वाणक समै॥
तब सुर असुर नरनि करि अर्चित शिवगमनहिं जान कै।
पावाँपुरी उद्यान सर तहां पधारे आन कै॥१६॥
पुष्पांजलिं क्षिपेत्।
इति पाठिका विधानम्।
अथ पूजा
दोहा—जास समय महावीर ने, कियो गमन शिव हेत।
सोयउ समय विचार कै, पूज उ सुधी सहेत॥२०॥
ॐ ह्रीं श्री वीर, महावीर, अतिवीर, सन्मति, वर्द्धमानादिक अनेक नाम संयुक्ताय अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः प्रतिष्ठापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

चाल—मङ्गल—आरती

मङ्गल निर्वाणक महावीर, प्रात समय जजिये भवि धीर ॥ टेक ॥
दश अतिशय जनमत जिन पाय, केवल ज्ञान माहि दश गाय।
तिनजिनवर प्रति चरणन ओर, दे जलधार युगलकर जोर॥ मङ्गल
ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय अन्तिम जिनेन्द्राय जलं ॥१
जिनके सुकृत चौदह सार, सब अतिशय चौंतीस चितार।
तिन जिनवर प्रति पूजनधार, भँवर लुब्धवर चंदन सार ॥ मङ्गलं
ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय अन्तिम जिनेन्द्राय चंदन॥२॥
प्रातिहार्य अठ युत जिनदेव, जिनकी इन्द्र करे सत सेव।
तिन जिनवरको नित अवलोक, ले वर साल अखंडित ढोक॥मंगल॥
ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय अन्तिम जिनेन्द्राय अक्षतं॥३॥
जिनके ऽनंत चतुष्टय सार, ये गुण छियालीस जगतार।
तिन जिनवर प्रति पूजन सार, ले वर सुमन विविध प्रकार ॥ मंगल॥
ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याण प्राप्ताय अन्तिम जिनेन्द्राय पुष्पं ॥४॥
क्षुधा तृषादि आठदश दोष, रहित शिवगवर भव दधि शोष।
तिन जिनवर प्रति विंब निहार, पूजन को भर नेवज थार ॥ मंगल॥
ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय अन्तिम जिनेन्द्राय चरु ॥५॥
लोक अलोक भेद जिन गाय, जीव अजीव तत्त्व दरसाय।
तिन प्रति बिंब निरखिनिज हेत, दीपक लेय जजों भविचेत ॥मंगल॥
ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय अन्तिम जिनेन्द्राय दीप॥६॥
मिथ्या भ्रम कर भ्रमे अनादि, जगत जीव जग में बहु वाद।
तिनको शिवमग सारी, बताय, तिनप्रति धूप दशांग चढाय ॥मंगल॥
ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय अन्तिम जिनेन्द्राय धूपं ॥७॥
जिन वृष उपदेश्यो हितकार, चल्यो जात अब ताईं सार।
परमत खंडन मडनलोक, तिन प्रति फलले चरणन धोक ॥ मंगल॥
ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय अन्तिम जिनेन्द्राय फलं॥८॥

जिनके समोशरण में साथ, चौदह सहस एक दस वाध।
ऐसे जगतराय पति पाय, ले जल आदि जजों तिनं पाय ॥ मंगल॥
ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय अन्तिम जिनेन्द्राय अर्घम्॥६
राग विलावल—प्रकृति सात अन्तिम प्रभु जिन प्रथम विदारी।
तीन आठ पै भानि कै नव छतइस धारी॥
दसमें लोभ द्वादशै सोलह तहँ टारी।
त्रे सठ प्रकृति खिपायो तिन जिन बलिहारी ॥१०॥
ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याण प्राप्ताय अन्तिम जिनेन्द्राय पूर्णार्घं॥१०॥
दोहा—सैंतालीस प्रकृति हनि, कर्म घातियनि कीर।
नाम तीन दस आयुत्रय, नाश, भये महावीर॥ ११ ॥

जयमाला

दोहा—पंच नाम धरतेश गुरु, पावापुर वन आय।
शेष कर्म रिपु जीतने, शिव को चलन उपाय ॥१॥
त्रोटकः—आय तहँ त्रिजगपति ध्यान दीन्हो महा।
तृतिय पद शुक्ल मांड्यो सुहावन तहां।
तब प्रभु दिव्य ध्वनि शब्द रहिते भये।
अन्त के दिवस बाकी चतुर्दश रहे ॥ २ ॥
प्रभु गये उलंघ तेरम गुणथान तैं,
चढि अजोगे शुक्ल तुरिय पद ध्यान तैं॥
जोग सुनिरोध करि चरम युग समय जे।
हनि बहत्तर चरम समय त्रयोदश यजे ॥३॥
चौदमें अन्त जु अघातिया जब लए।
चेतना शक्ति दैदीप्य परगट भए॥
भांति इहि अष्ट अरि कर्म दल हनि ठये।
ऊर्ध्व जिन गमन करि शिवपुरी फिर गये॥ ४॥

पच्चवर भ्रमर कार्तिक चतुर्दशि दिना।
स्वाति वर नखत परभात समया गिना।
लोक के शिखर जिन देव आरूढियो।
सुख अनंतो निरंतर जहां पूरियो ॥५॥
माह अरि बीस वसु प्रकृति युत क्षय कियो।
प्रथम क्षायक्य सम्यक्त्व गुण प्रगटियो॥
तव अनंतो दुतिय ज्ञान गुण पूरियो॥ ६ ॥
दरशनावरण नव प्रकृति युत दल मल्यो।
तव अनंतो सुदर्शन तृतिय गुण मिल्यो॥
अंतराय कर्म पंचभट युत हन्यो।
तव तुरीय वीर्य गुणवान अनंतो वन्यो ॥ ७ ॥

❀ पद्धडी छन्द ❀

इकतोत्रिक भट युत नाम मारि, पंचम सूक्ष्म गुण प्रगटि सारि। चउ कटक सहित करि आयु नाश, छट्ठम, अवगाहन गुण प्रकाश ॥८॥ हनि गोत कर्म की जोट ताय, सातम जु अगुरु लखि गुण उपाय। जिन जुगल वेदनी घात पाय, गुण अष्टम अव्यावाध आय ॥९॥ इम आदि अनंत गुण समाज, पायो प्रभु मुक्ति पुरी सुराज। तब ही सुरेश वल अवधि पाय, जिनसैन आदि सब देव आय ॥१०॥ ता दिन वह पुरी प्रकाश रूप, दीपनि समूह करि कै अनूप। धरती अकाश सब दिशनि मांहि, दीपनि माला प्रज्वलित लखाहिं। तब परमौदारिक प्रभु शरीर, मङ्गल पंचम लखि सुर गहीर। शुभ गंध पुहुप आदिक मनोग, द्रव्यनि करि प्रभु पूजा नियोग॥ ११ ॥ फिर चंदन अंवरादिक सुलाय, तब वर उतंग सर सुर रचाय। जिन तन मगलमय तहं संचाय। तब अग्नि कुमारनि शीश नाय॥ १२ ॥ तिनि मुकुटनि करि ज्वाला उठाय, भस्मीकृत सर सब पूत थाय। तबसुर जय जय जय करत घोर, उर आनंद

परम जु भक्ति भोर ॥ १३ ॥ तब प्रथम इन्द्र आदिक सुराय, करि भस्म वंदना शीश नाय। कहते यह पुरुषोत्तम महान्, वर धर्म तीर्थ नायक जहान ॥ १४ ॥ सो देख्यो अस्त भये दिनेश, अब मिथ्या तम भ्रम करि प्रवेश। ये प्राणी वृष तें विमुख होय, करि कै निज इच्छा मार्ग सोय ॥ १५ ॥ जग में सु प्रवर्तेंगे विशाल, इम पश्चित सुर गण भक्ति माल। अपनी पवित्र लखि अमर राय, फिर पूजा करि निज थान जाय ॥ १६ ॥ ता दिन तैं या भरत खेत, दीपमालि परसिद्ध उपेत। प्रति वर्ष भव्य पूजा कराय, निर्वाण समय उत्सव सु पाय ॥ १७ ॥ पाछे सुन नर नारिन समाज, कर मोदक ले परिवार साज। अति आनंद मंगल निरत सोय, कीन्यो तिन आय कहै सुकोय ॥१८॥ ते सन्मति मति दे अरज येह, तुम करुणा सागर विमल मेह ॥ भटक्यौ बहुकाल अनंत वादि, तुम विन कृपाल जग में न वाद ॥२०॥

अडिल्ल—या भव वन में नाथ बहुत दुख पाइयो,
जानत ज्ञान थकी तुम ही तट आइयो।
तातें कहने मांहि कछु आवै नहीं,
वांछितार्थ पद तुम करि प्रभु पाऊं सही ॥२१॥

ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय अंतिम जिनेन्द्राय महार्घं।

गीता छन्द

याभांति निर्वाणक सु उत्सव करत भक्ति जु बस सही।
सो नय प्रमाणक न्याय कर, सुप्रमाण है वह विध सही ॥
यह समय लख जिन पूज उत्सव करत भक्ति जु बस सही।
दुर्गति हरन सुख हेत भविकर, ये परम रुचिकर ठही ॥ २२ ॥

दोहा—तीन बरस वसु मास दिन, पंद्रह रहे जु सार :
श्री सन्मति शिवपुर बसे, चौथे काल मंझार ॥२३॥

ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याणक प्राप्ताय अंतिम जिनेन्द्राय पूर्णार्घं।

जापः—"ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणक युक्ताय अंतिमजिनेन्द्राय नमोनमः"

इति श्री वीर निर्वाण (दीपावली) पूजा ।

सहस्रकूटजिन चैत्यालय पूजा ।

हरीगीतिका छन्द

सहस्रकूट जिनचैत्य परमसुन्दर सुखकारी ।
पावनपुन्यनिधान दरस है जग अघहारी ॥
रोगशोकदुख हरै विपति दारिद्र नसावैं ।
जो जन प्रीति लगाय नियम से नित गुन गावैं ॥

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनचैत्यालयानि ! अत्र अवतरत २ संवौषट् आह्वाननं । ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनचैत्यालयानि ! अत्र तिष्ठत २ ठः ठः । ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनचैत्यालयानि ! अत्र मम सन्निहितानि भवत २ वषट् ।

नीरगंगको शुचि ल्यायके, कनक कुम्भन में सु भराय के ।
धार दे जिन सम्मुख हूजिये, सहसकूट जिनालय पूजिये ॥

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जगत में जे गंध सुहावनी, ल्यायकर ले अति मन भावनी ।
तापहर जिन सम्मुख हूजिये, सहसकूटजिनालय पूजिये ॥

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्ति तंदुल कर सुवीन के, मुक्ता समदुति ले अखंड के ।
थाल भर जिन सम्मुख हूजिए, सहसकूट जिनालय पूजिए ॥

ॐ ह्रीं सहस्रकूट जिनचैत्यालयेभ्यः अक्षतान् निर्व. स्वाहा ।

कल्पवृक्षन के अतिसोहने, फूल कर में ले मनमोहने ।
मदनहर जिन सम्मुख हूजिये, सहसकूट जिनालय पूजिये ॥

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

निज सु आतमके हितकारने, भूखकी बाधा सु विडारने ।
चरु सु ले जिन सम्मुख हूजिये, सहसकूट जिनालय पूजिये ।

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जगत जीवन मोह भरा हिये, तासुके तम नाशनके लिये।
दीप ले जिन सम्मुख हूजिये, सहसकूट जिनालय पूजिये॥
ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
धूप ले धूपायन डारने, अष्ट कर्मनके अघ जारने।
कर्म हर जिन सम्मुख हूजिये, सहसकूट जिनालय पूजिये॥
ॐ ह्रीं सहस्रकूट जिनचैत्यालयेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
मधुरफल उत्तम संसारमें, शिवप्रियाहित भरकर थारमें।
शिवपतिके सम्मुख हूजिये, सहसकूट जिनालय पूजिये॥
ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिन चैत्यालयेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।
जल सु आदि द्रव्य सुधामई, सुखदपद करमें धर ले सही।
शुद्ध मन जिन सम्मुख हूजिये, सहसकूट जिनालय पूजिये॥

हरिगीतिका छन्द।

वसुविधि द्रव्य मिलाय, परमसुन्दर सुखदाई।
पूजै श्रीजिनसहसकूट मंगलय भाई॥
ऋद्धि सिद्धि दातार, और भव रोग मिटावे।
श्रद्धा भक्तिसहित, पूर्ण जो अर्घ चढ़ावे॥ ६॥
ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा—सहसकूट जिन भवनकी, भक्ति हिये में धार।
सुनो सरस जयमाल यह, तज मन सकल विचार॥ १॥

पद्धरि छन्द।

सहसकूट जिनभवन सार, हैं मध्यलोक के जे मझार।
कृत्रिम सु अकृत्रिम दो प्रकार, भाये जिनवर जगमें निहार॥
तिनमें जिन प्रतिमाको प्रमाण, है सहस एक वसु अधिक जान।
पाषान-धातुमइ अति पवित्र, रचना है सुखदायक विचित्र॥

जिन नाम लेत सब हरे ताप, भव भव के नाशें सकल पाप।
है तीन लोक आनन्ददाय, सुर नर खग पूजन आय आय॥
कोटि भट राजा श्रीपाल, और अनेकन नृप निहाल।
सहसकूट जिनभवन वंद, कर्मनके काटे अमित फंद॥ ५॥
सोही रचना अद्भुत अटूट, जिनवर आलय सहसकूट।
है बनो अनूपम अति विशाल, ताको कछु वर्णन करहिं लाल॥
है भरत क्षेत्रके मध्य धाम, इक आप बुन्देल खण्ड धाम।
ताको जु केन्द्र अति विशदगात, है झांसीनगर सुजग विख्यात॥
तहां श्रीजिन मन्दिर है महान, तामें वेदी शोभै प्रधान।
वर सहसकूट जिन भवनसार, है धातु मई रचना अपार॥
तहं स्तुतिवन्दन कर हि भव्य, अरचें नित लेकर अटूट द्रव्य।
हमहू तिनकी पूजन रचाय, कर रहे सकल मन वचन काय॥

घत्ता।

सहसकूट जिनभवन अनूपम, जाकी सेव करे मन ल्याय।
ताके मन अति सुमति प्रकाशै, दुर्गति जगकी जाय पलाय॥
वृद्धि होय नित सम्पति गृह में, तातैं धर्म बुद्धि हुलशाय।
पात्र धर्मका बन "वसन्त" जग, अनुक्रम करके शिवसुख पाय॥
ॐ ह्रीं सहस्रकूट जिनचैत्यालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अकृत्रिम चैत्यालयपूजा

चौपाई

आठ किरोड़ रु छप्पन लाख। सहस सत्याणव चतुशत भाख।
जोड इक्यासी जिनवर थान। तीनलोक आह्वान करान॥ १॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिपट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयानि अत्र अवतरत अव-

तरत, संवौषट्। ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंवंध्यष्टकोटिपट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्र चतुःशतैकाशीति-अकृत्रिमजिनचैत्यालयानि अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः। ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंवंध्यष्टकोटिषट् पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयानि अत्र मम सन्निहिता भवत भवत। वषट्।

क्षीरोदधिनीरं उज्ज्वल सीरं, छान सुचीरं, भरि झारी।
अति मधुर लखावन, परम सु पावन, तृषा बुझावन गुण भारी।
वसुकोटि सु छप्पन लाख सत्ताणव, सहस चार शत इक्यासी।
जिनगेह अकृत्रिम तिहुं जगभीतर, पूजत पद ले अविनाशी ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्संवंयध्यष्ट्पंचाशल्लक्षसप्त-नवतिसहस्र- चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर पावन, चंदन बावन, ताप बुझावन घसि लीनो।
धरि कनक कटोरी दे करजोरी, तुम पद ओरी चित दीनो ॥वसु०

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंवंध्यष्ट्कोटिपट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति०

बहुभांति अनोखे, तंदुल चोखे, लखि निरदोखे हम लीने।
भरि कंचनथाली तुमगुणमाली, पुंजविशाली करदीने ॥वसु ३॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंवंध्यष्टकोटिषटपंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीतिअकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति०

शुभ पुष्प सुजाती है बहुभांती, अलि लिपटाती लेय वरं।
धरि कनकरकेबी, करगह लेवी, तुम पद जुगकी भेट धरं ॥वसु०

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंवंध्यष्टकोटिपट् पंचाशल्लक्षसप्त नवति सहस्र चतुःशतैकाशीति अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति।

खुरमा जु गिंदौड़ा, बरफी पेड़ा, घेवर मोदक भरि थारी।
विधि पूर्वक कीने, घृतपयभीने, खंड मैं लीने, सुखकारी ॥वसु०६॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंवंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात महातम, छाय रह्यौ इम, निजभव परणति नहिं सूझै
इह कारण पाकै दीप सजाकैं, ला धराकैं, हम पूजैं ॥वसु० ६॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्र-चतुः शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो दीपं निर्वपामीति० ।

दशगंध कुटाकैं, धूप बनाकैं, निजकर लेकैं धरि ज्वाला ।
तसु धूम उड़ाई, दशदिश छाई, बहु महकाई, अतिआला॥वसु०

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्र-चतुः शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्याललेभ्यो धूपं निर्वपामीति०

बादाम छुहारे, श्रीफल धारे, पिस्ता प्यारे, द्राख वर ।
इन आदि अनोखे लखि निरदोखे, थालपजोखे, भेट धरं।वसु०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंबन्ध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्र-चतु. शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालभ्यो फलं निर्वपामीति० ।

जल चंदन तन्दुल कुसुम रु नेवज दीप धूप फल थाल रचौं ॥
जयघोष कराऊँ बीन बजाऊँ, अर्घ चढ़ाऊं खूब नचौं ॥ वसु ॥६

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषटपंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्र-चतुः शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालभ्यो अर्घ निर्वपामीति०

अथप्रत्येक अर्घ ॥ चौपाई ॥

अधोलोक जिन आगमसाख । सात कोडि अरु बहत्तर लाख ।
श्रीजिनभवन महाछवि देइ । ते सब पूजौं वसुविध लेइ ॥ १ ॥

ॐ ह्री अधोलोकसंबंधिसप्तकोटिद्विसप्ततिलक्षाकृत्रिम श्री जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मध्यलोक जिन मंदिर ठाठ । साढे चारशतक अरु आठ ॥
ते सब पूजौं अर्घ चढाय । मन वच तन त्रयजोग मिलाय ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिचतु.शताष्टपंचाशत् श्री जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं ॥

अडिल्ल—ऊर्ध्वलोक के मांहि भवन जिन जानिये ।
लाखचुरासी सहस सत्याणव मानिये ॥

तापै धरि तेईस जजौं शिर नायकैं ।
कंचन थाल मझार जलादिक लायकैं ॥

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोकसंबंधिचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति श्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं ॥ ३ ॥

वसुकोटि छप्पनलाख ऊपर. सहस सत्याणव मानिये ।
सतच्यारपै गिनले इक्यासी, भवन जिनवर जानिये ॥
तिहुंलोक भीतर सासते, सुर असुर नर पूजा करैं ।
तिन भवन को हम अर्घ लेकैं, पूजि हैं जगदुख हरैं ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंबंधष्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्र-चतु. शतैकाशीतिअकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति

दोहा—अब वरणों जयमालिका, सुनो भव्य चित लाय ।
जिन मंदिर तिहुँलोकके देहु सकल दरसाय ॥ १ ॥

पद्धरि छन्द

जय अमल अनादि अनंत जान । अनिमित जु अकृत्रिम अचल थान ।
जय अजय अखंड अरूपधार । षटद्रव्य नहीं दीसै लगार ॥ २ ॥
जय निराकार अविकार होय । राजत अनंत परदेश सोय ।
जे शुद्ध सुगुण अवगाह पाय । दश दिशामांहि इहविध लखाय ॥३॥
यह भेद अलोकाकाश जान । तामध्य लोक नभ तीन मान ।
स्वयमेव बन्यो अविचल अनंत । अविनाशि अनादि जु कहत संत४
पुरुष-आकार ठाढो निहार । कटि हाथ धारि द्वै पग पसार ।
दच्छिन उत्तरदिशि सर्व ठौर, राजू जु सात भाख्यो निचोर ॥५॥
जय पूर्व अपर दिश घाटवाधि । सुन कथन कहूँ ताको जु साधि ।
लखि श्वभ्रतलें राजू जु सात । मधिलोक एक राजू रहात ॥ ६ ॥
फिर ब्रह्मसुरग राजू जु पांच । भूसिद्ध एक राजू जु पांच ।
दश चार ऊंच राजू गिनाय । षट्द्रव्य लये चतुकोण पाय ॥ ७ ॥
तसु वातवलय लपटाय तीन । इह निराधार लखियो प्रवीन ।

त्रसनाड़ी तामधि जान खास । चतुकोन एक राजू जु व्यास ।।८।।
राजू उतंग चौदह प्रमान। लख स्वयंसिद्ध रचना महान।
तामध्य जीव त्रस आदि देव। निज थान पाव तिष्ठैं भलेय ।।६।।
लखि अधो भाग में श्वभ्रथान। गिन सात कहे आगम प्रमान।
षट थानमांहि नारकि वसेय। इक श्वभ्रभाग फिर तीन भेय ।।१०।।
तसु अधोभाग नारकि रहाय। पुनि ऊर्ध्वभाग द्वय-थान पाय।
वस रहे भवन व्यंतर जु देव। पुर हर्म्य छजै रचना स्वमेव ।।११।।
तिह थान गेह जिनराज भाख। गिन सातकोटि बहतरि जु लाख।
ते भवन नमों मन वचन काय। गति श्वभ्रहरनहारे लखाय ।।१२।।
पुनि मध्यलोक गोला अकार। लखि दीप उदधि रचना विचार।
गिन असंख्यात भाखे जु संत। लखि संभुरमन सबके जु अंत ।।१३।।
इक राजु-व्यास मे सर्वजान। मधिलोक तनो इह कथन मान।
सब मध्य दीप जंबू गिनेय। त्रयदशम रुचिकवर नाम लेय ।।१४।।
इन तेरह में जिनधाम जान। शतचार अठावन है प्रमान।
खग देव असुर नर आय आय। पद पूज जांय शिर नाय नाय ।१५
जय ऊर्ध्वलोकसुर कल्प-वास। तिहँ थान छजें जिन भवन खास।
जय लाख चुरासीपै लखेय। जय सहससत्याणव और ठेय ।।१६।।
जय वीसतीन पुनि जोड देय। जिनभवन अकृत्रिम जान लेय।
प्रतिभवन एक रचना कहाय। जिन बिंब एकशत आठ पाय ।।१७।।
शतपंच धनुप उन्नत लसाय। पदमासनजुत वर ध्यान लाय।
शिर तीन छत्र शोभित विशाल। त्रय पादपीठ मणिजडित लाल ।।१८
भामंडलकी छवि कौन गाय। पुनि चंवर ढुरत चौसठि लखाय।
जय दुंदुभिरव अद्भुत सुनाय। जय पुष्पवृष्टि गंधोदकाय ।। १६ ।।
जय तरु अशोक शोभा भलेय। मंगल विभूति राजत अमेय।
घट तूप छजै मणिमाल पाय। घटधूम्र धूम दिग सर्व छाय ।।२०।।
जय केतुपंक्ति सोहै महान। गंधर्वदेवगन करत गान।

सुर जनम लेत लखि अवधि पाय। तिहं थान प्रथम पूजन कराय।
जिनगेह तणो वरनन अपार। हम तुच्छबुद्धि किम लहत पार।
जय देव जिनेसुर जगत भूप। नमि 'नेम' मँगे जिन देहरूप ॥२३॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिपट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्र-चतुः शतैकाशीति अकृत्रिम श्री जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घम्०

दोहा—तीन लोक में सासते श्रीजिनभवनविचार।
मन वच तनकरि शुद्धता पूजों अरघ उतार॥

तिहुँ जगभीतर श्री जिनमन्दिर, बने अकृत्रिम अति सुखदाय।
नरसुर खगकरि वंदनीक जे, तिनको भविजन पाठ कराय।
धनधान्या दिक संपति तिनके, पुत्र पौत्र सुख होत भलाय॥
चक्री सुर खग इन्द्र होसकें, करम नाश शिवपुर सुख थाय॥ २४॥

(इत्याशीर्वादः—पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

रक्षा बंधन पूजा।

(श्री विष्णुकुमार पूजा)

अडिल्ल छन्द

विष्णुकुमार महामुनि की ऋद्धि भई। नाम विक्रिया तास सकल आनन्द ठई॥ सो मुनि आये हथनापुर के बीच में। मुनि बचाये रक्षाकर बन बीचमे ॥१॥ तहां भयो आनन्द सर्व जीवन घनो। जिन चिन्तामणि रत्न एक पायो मनो॥ सब पुर जै जै कार शब्द उचरत भये। मुनिको देय आहार आप करते भये ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। अत्र तिष्ठतिष्ठ ठः ठः प्रतिस्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टकं-चाल—सोलह कारण पूजा की ।

गंगाजल सम उज्ज्वल नीर, पूजों विष्णुकुमार सुधीर ।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय ॥
सप्त सैंकडा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णुभगवान ।
दयानिध होय जय जगवन्धु दयानिध होय ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं ।
मलयागिर चदन शुभसार, पूजों श्रीगुरुवर निर्धार ।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय ॥
सप्त सैंकडा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णुभगवान । दया० ॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमारमुनिभ्यो नमः भव आतापविनाशनाय च० ।
श्वेत अखंडित अक्षत लाय, पूजों श्रीमुनिवर के पाय ।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय ॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णुभगवान । दया० ॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं ।
कमल केतकी पुष्प चढाय, मेटो कामवाण दुखदाय ।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय ॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णुभगवान । दया० ॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं ।
लाडू फेनी घेवर लाय, सब मोदक मुनि चरण चढाय ।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय ॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णुभगवान । दया० ॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य ।
घृत कपूर का दीपक जोय, मोहतिमिर सब जावै खोय ।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय ॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णुभगवान । दया० ॥
ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं ।

अगर कपूर सुधूप बनाय, जारे अष्ट कर्म दुखदाय।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय ॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णु भगवान। दया० ॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं।
लौंग लायची श्रीफल सार, पूजों श्रीमुनि सुख दातार।
दयानिधि होय, जय जगवन्धु दयानिध होय ॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णु भगवान। दया० ॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं।
जलफल आठों द्रव्य संजोय, श्रीमुनिवर पद पूजों दोय।
दयानिध होय, जय जगबन्धु दयानिध होय ॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णु भगवान। दया० ॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो नमः अनर्घपद प्राप्तये अर्घं।

अथ जयमाला

दोहा—श्रावण सुदी सु पूर्णिमा, मुनि रक्षा दिन जान।
रक्षक विष्णुकुमार मुनि, तिन जयमाल बखान ॥

चाल—छन्द भुजङ्गप्रयात

श्री विष्णु देवा करूं चर्ण सेवा।
हरो जनकी बाधा सुनो टेर देवा ॥
गजपुर पधारे महा सुक्खकारी।
धरो रूप वामन सु मनमें विचारी ॥ २ ॥
गये पास बलि के हुआ वो प्रसन्ना।
जो मांगो सो पावो दिया ये वचन्ना ॥
मुनि तीन डग मांगी धरनी सु तापै।
दई ताने ततछिन सु नहिं ढील थापै ३ ॥
कर विक्रिया मुनि सु काया बढ़ाई।
जगह सारी लेली सु डग दो के मांही ॥

धरी तीसरी डग बली पीठ मांही।
सु मांगी क्षमा तब बली ने बनाई ॥ ४ ॥
जलकी सुवृष्टि करी सुक्खकारी।
सरब अग्नि क्षण में भई भस्म सारी ॥
टरे सर्व उपसर्ग श्री विष्णुजी से।
भई जै जैकारा सरव नभ ही से ॥ ५ ॥

चौपाई।

फिर राजा के हुक्म प्रमान, रक्षा बन्धन बंधी सुजान।
मुनिवर घर घर कियो विहार, श्रावक जन तिन दियो अहार ॥
जाघर मुनि नहिं आये कोय, निज दरवाजे चित्र सुलोय।
स्थापन कर तिन दियो अहार, फिर सब भोजन कियो सम्हार ॥
तबसे नाम सलूना सार, जैन धर्म का है त्यौहार ॥
शुद्ध क्रिया कर मानो जीव, जासों धर्म्म बढ़ै सु अतीव ॥
धर्म्म पदारथ जगमें सार धर्म्म बिना झूठो संसार।
सावन सुदि पूनम जब होय, यह दो पूजन कीजै लोय ॥
सब भाइनको दो समझाय, रक्षाबन्धन कथा सुनाय।
मुनिका निज घर करो अकार, मुनि समान तिन देइ अहार ॥
सबके रक्षा बन्धन वांध, जैन मुनिन की [illegible]।
इस विधि से मानो त्योहार, नाम सलूना है सार ॥ ११ ॥
घत्ता—मुनि दीनदयाला सब दुख टाला [illegible] सुखकारी
'रघु सुत' नित बंदे आनन्द [illegible] हितकारी ॥
इति श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो [illegible] निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—विष्णुकुमार मुनिके [illegible]।
'रघु सुत' पावै [illegible] ॥

[illegible]

सलूना पर्व पूजा।

श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशत मुनि पूजा।

(चाल जोगीरासा)

पूज्य अकम्पन साधु शिरोमणि सात-शतक मुनि ज्ञानी।
आ हस्तिनापुर के कानन में हुए अचल दृढ़ ध्यानी।
दुखद सहा उपसर्ग भयानक सुन मानव घबराये।
आत्म-साधना के साधक वे, तनिक नहीं अकुलाये॥
योगिराज श्री विष्णु त्याग तप, वत्सलता-वश आये।
किया दूर उपसर्ग, जगत-जन मुग्ध हुए हर्षाये॥
सावन शुक्ला पन्द्रस पावन शुभ दिन था सुखदाता।
पर्व सलूना हुआ पुण्य-प्रद यह गौरवमय गाथा॥
शान्ति दया समता का जिनसे नव आदर्श मिला है।
जिनका नाम लिये से होती जागृति पुण्य-कला है।
करूं वन्दना उन गुरुपद की वे गुण मैं भी पाऊं।
आह्वानन संस्थापन सन्निधि-करण करूँ हर्षाऊं॥

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि सप्तशतमुनिसमूह अत्र अवतर २ संवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ २ ठः ठः प्रतिष्ठापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकम्—गीता—छन्द।

मैं उर-सरोवर से विमल जल भाव का लेकर अहो।
नत पाद-पद्मों में चढाऊं मृत्यु जनम जरा न हो॥
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूं पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें॥

ॐ श्रीअकम्पनाचार्यादि सप्तशतमुनिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्तोष मलयागिरिय चन्दन निराकुलता सरस ले।
नत पादपद्मों मे चढाऊं, विश्वताप नहीं जले॥
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर, मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूं पातक मिटे, वे सुखद समता भक्ति दे॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादिसप्तशतमुनिभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
तंदुल अखंडित पूत आशाके नवीन सुहावने।
नत पाद-पद्मों में चढाऊ दीनता क्षयता हने॥
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूं पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादिसप्तशतमुनिभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं०
ले विविध विमल विचार सुन्दर सरस सुमन मनोहरे।
नत पाद–पद्मोंमें चढ़ाऊँ काम की बाधा हरे॥
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूं पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें॥
ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादिसप्तशतमुनिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
शुभ भक्ति घृतमे विनयके पकवान पावन मैं बना।
नत पाद–पद्मोंमे चढ़ा मेटूं क्षुधा की यातना॥
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूं पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें॥
ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादिसप्तशतमुनिभ्यःक्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
उत्तम कपूर विवेकका ले आत्म-दीपक मैं जला।
कर आरती गुरुकी हटाऊँ मोह तमकी यह बला॥

श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूँ पातक मिटे, वे सुखद समता भक्ति दें॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादिसप्तशतमुनिभ्यो मोहांधकारविनाशयाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले त्याग-तपकी यह सुगन्धित धूप मैं खेऊँ अहो।
गुरुचरण-करुणासे करमका कष्ट यह मुझको न हो॥
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दे।
पूजा करूं पातक मिटे, वे सुखद समता भक्ति दें॥

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादिसप्तशतमुनिभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि-साधनाके मधुरतम प्रिय सरस फल लेकर यहां।
नत पाद-पद्मोंमें चढ़ाऊँ मुक्ति मैं पाऊँ यहाँ॥
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूं पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दे॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादिसप्तशतमुनिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फल निर्वपामीति स्वाहा।

यह आठ द्रव्य अनूप श्रद्धा स्नेह से पुलकित हृदय।
नत पाद-पद्मोंमें चढ़ाऊँ भव-पार मैं होऊँ अभय॥
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्तिदे।
पूजा करूं पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें॥

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादिसप्तशतमुनिभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला।

सोरठा—पूज्य अकम्पन आदि, सात शतक साधक सुधी।
यह उनकी जयमाल, वे मुझको निज भक्ति दें॥

(पद्धड़ी छन्द)

वे जीव दया पालें महान, वें पूर्णअहिंसक ज्ञानवान।
उनके न रोष उनके न राग, वे करें साधना मोह त्याग॥

अप्रिय असत्य बोले न वैन, मन वचन कायमें भेद है न।
वे महासत्य धारक ललाम, है उनके चरणों मे प्रणाम ॥
वे लें न कभी तृणजल अदत्त, उनके न धनादिक में ममत्त।
वे व्रत अचौर्य दृढ धरैं सार, है उनको सादर नमस्कार ॥
वे करें विषय की नहीं चाह, उनके न हृदय मे काम-दाह।
वे शील सदा पालें महान, कर मग्न रहैं निज आत्मध्यान ॥
सब छोड वसन भूषण निवास, माया ममता अरु स्नेह आस।
वे धरें दिगम्बर वेष शान्त, होते न कभी विचलित न भ्रांत ॥
नित रहैं साधनामे सुलीन वे सहैं परीसह नित नवीन।
वे करें तत्त्वपर नित विचार, है उनको सादर नमस्कार ॥
पंचेन्द्रिय दमन करें महान, वे सतत बढावे आत्मज्ञान।
संसार देह सब भोग त्याग, वे शिव-पथ साधें सतत जाग ॥
"कुमरेश" साधु वे हैं महान, उनसे पाये जग नित्य त्राण।
मैं करूं वन्दना बार बार, वे करें भवार्णव मुझे पार ॥
घत्ता-मुनिवर गुण धारक पर-उपकारक भव-दुख-हारक सुखकारी।
वे करम नशायें सुगुण दिलायें, मुक्ति मिलायें भव-हारी ॥
ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादिसप्तशतमुनिभ्यो महार्घं निर्व०।
सोरठा—श्रद्धा भक्ति समेत, जो जन यह पूजा करे।
वह पाये निज ज्ञान, उसे न व्यापे जगत दुख ॥

इत्याशीर्वादः।

क्षमावणी पूजा

छप्पय।

अंग क्षमा जिन धर्मतनो दृढ़ मूल वखानो।
सम्यक् रत्न संभाल हृदय मे निश्चय जानो ॥
तज मिथ्या विष-मूल और चित निर्मल ठानो।
जिनधर्मी सो प्रीति करो सब पातक भानो ॥

रत्नत्रय गह भविक जन जिन आज्ञा सम चालिये ।
निश्चय कर आराधना करमराशि को जालिये ।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय अत्रावतर अवतर संवौषट्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितं भव भव वषट् । पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथाष्टकम् ।

नीर सुगंध सुहावनों पद्म द्रह को लाय ।
जन्म रोग निर्वारिये, सम्यक्‌रतन लहाय ॥
क्षमा गहो उर जीवडा जिनवर वचन गहाय । क्षमा० ।

ॐ ह्रीं निः शंकितांगाय ॥१॥ निःकांक्षितांगाय ॥२॥ निर्विचिकित्सतांगाय ॥ ३ ॥ निमूढतांगाय ॥ ४ ॥ उपगूहनांगाय ॥ ५ ॥ सुस्थितिकरणांगाय ॥६॥ वात्सल्यतांगाय ॥७॥ प्रभावनांगाय ॥८॥ अष्टांगसहिताय सम्यग्दर्शनाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० । ॐ ह्रीं व्यंजनव्यंजिताय ॥ १ ॥ अर्थसमग्राय ॥ २ ॥ तदुभयसमग्राय ॥ ३ ॥ कालाध्ययनाय ॥ ४ ॥ उपध्यानोपहिताय ॥ ५ ॥ विनयलब्धिप्रभावनाय ॥ ६ ॥ गुर्वपन्तवाय ॥ ७ ॥ वहु मानोन्मानसमेताय ॥ ८ ॥ अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय जलं नि० । ॐ ह्रीं अहिंसाव्रताय ॥ १ ॥ सत्यव्रताय ॥ २ ॥ अचौर्यव्रताय ॥ ३ ॥ ब्रह्मचर्यव्रताय ॥ ४ ॥ अपरिग्रहमहाव्रताय ॥ ५ ॥ मनोगुप्तये ॥६॥ वचन गुप्तये ॥ ७ ॥ कायगुप्तये ॥ ८ ॥ ईर्यासमितये ॥ ६ ॥ भाषासमितये ॥ १० ॥ एषणा समितये ॥ ११ ॥ आदाननिक्षेपण समितये ॥ १२ ॥ प्रतिष्ठापना समितये ॥ १३ ॥ त्रयोदशविध सम्यक् चरित्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि० ।

केशर चन्दन लीजिये, संग कपूर घिसाय ।
अलि पंकति आवत घनी वाल सुगन्ध सुहाय ॥
क्षमा गहो उर जीवडा जिनवर वचन गहाय ।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक्‌दर्शनाय अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय त्रयोदश-

विध सम्यक्चारित्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वहा।

शालि अखडित लीजिये, कंचन थाल भराय।
जिनपद पूजौं भावसौं अक्षय पदको पाय॥
क्षमा गहो उर जीवडा जिनवर वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय, अष्टाङ्ग सम्यग्ज्ञानाय, त्रयोदश-विध सम्यक्चारित्राय अक्षत निर्वपा०।

पारिजात अरु केतकी, पहुप सुगन्ध गुलाव।
श्री जिन चरण सरोज कूं, पूज हरप चित लाव॥
क्षमा गहो उर जीवडा जिनवर वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टांङ्ग सम्यग्दर्शनाय, अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय, त्रयोदश-विधसम्यक्चारित्राय पुष्पं निर्व०।

शक्कर घृत सुरभी तनो, व्यजन षट्रस स्वाद।
जिनके निकट चढाय कर हिरदे धरि अहलाद॥
क्षमा गहो उर जीवडा जिनवर वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग सम्यग्दर्शनाय अष्टाङ्ग सम्यग्ज्ञानाय, त्रयोदश विध सम्यक चारित्राय नैवेद्यं निर्व०।

हाटकमय दीपक रचौं, वाति कपूर सुधार।
शोधक घृत कर पूजिये, मोह तिमिर निर्वार॥
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग सम्यग्दर्शनाय, अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय, त्रयोदश-विध सम्यक् चारित्राय दीपं निर्वपा०।

कृष्णागर करपूर ही, अथवा दसविध जान।
जिन चरणा ढिग खेइये अष्ट करम की हान॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय अष्टाङ्गसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदश विध सम्यक् चारित्राय धूपं नि०।

केला अम्ब अनार ही नारिकेल ले दाख।
अग्र धरो जिनपद तने, मोक्ष होय जिन भाख ॥
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय अष्टांगसम्यग्ज्ञानाय, त्रयोदश-विध सम्यक्चारित्राय फलं नि० ।

जलफल आदि मिलायके, अरघ करो हरषाय।
दुःख जलांजलि दीजिये, श्रीजिन होय सहाय ॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग सम्यग्दर्शनाय, अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय, त्रयोदश-विध सम्यक्चारित्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला।

दोहा—उनतीस अङ्ग की आरती, सुनो भविक मन लाय।
मन वच तन सरधा करो, उत्तम नर भव पाय ॥

जैन धर्म में शंक न आनै। सो निःशंकित गुण चित ठानै।
जप तप कर फलवांछै नाहीं, निःकांक्षित गुण हो चित माहीं ॥
परको देख गिलानी न आनै। सो तीजा सम्यक् गुण ठानै ॥
अन्यदेव को रंचन मानो। सो निर्मूढता गुण पहिचानो।
परको औगुण देख जो ढांके। सो उपगूहन श्री जिन भाखै।
जैनधर्म तैं डिगता देखै। थापै बहुरि थिति करलेखै ॥
जिन धर्मी सों प्रीति निवहिये। गउ वच्छवत वच्छल कहिये।
ज्यों त्यों जैन उद्योत बढावे। सो प्रभावना अग कहावे ॥
अष्ट अग ये पाले जो ही। सम्यग्दृष्टी कहिये सो ही।
अवगुण आठ ज्ञान के कहिये। भाषे श्रीजिन मनमें गहिये।
व्यंजन अक्षर सहित पढीजै। व्यंजन व्यंजित अंग कहीजै ॥
अर्थ सहित सुध शब्द उचारै। दूजा अर्थ समग्रह धारै।
तदुभय तीजा अंग लखीजै। अक्षर अर्थ सहित जु पढीजै ॥

चौथा कालाध्ययन विचारै । काल समय लखि सुमरण धारै ।
पंचम अङ्ग उपधान बतावे । पाठ सहित तव बहु फल पावे ॥
षष्ठम विनय सुलब्धि सुनीजै । वाणी बहुत विनय सु पढीजै ।
जांपै पढे न लोपे जाई । अंग सप्तम गुरुवाद कहाई ॥
गुरु की बहुत विनय जु करीजै । सो अष्टम अङ्गधर सुख लीजै ।
ये आठों अंग ज्ञान बढावे । ज्ञाता मन वच तन कर ध्यावे ॥
अब आगे चारित्र सुनीजै । तेरह विधिकर शिव सुख लीजै ।
छहों काय की रक्षा कर है । सोई अहिंसा व्रत चित धर है ॥
हित मित सत्य वचन मुख कहिये । सो सतवादी केवल लहिये ।
मन वच काय न चोरी करिये । सोई अचौर्यव्रत चित धरिये ॥
मन्मथ भय मन रंचन आने । सो मुनि ब्रह्मचर्यव्रत ठाने ।
परिग्रह देख न मूर्च्छित होई । पंच महाव्रत धारक सोई ॥
महाव्रत ये पांचों जु खरे । सब तीर्थङ्कर इनको करे ।
मनमे विकलप रंचन होई । मनो-गुप्ति मुनि कहिये सोई ॥
वचन अलीक रच नहिं भाखै । वचन-गुप्ति सो मुनिवर राखै ।
कायोत्सर्ग परीषह सहि हैं । ता मुनिकायगुप्ति जिन कहि है ॥
पंच समिति अब सुनिये भाई । अर्थ सहित भाषै जिन राई ।
हाथ चार जब भूमि निहारे । तब मुनि ईर्या समिति धारे ॥
मिष्ट वचन मुख बोले सोई । भाषा समिति तासु मुनि होई ।
भोजन छ्यालिस दूषण टारैं । सो मुनि एषण शुद्ध विचारैं ॥
देखके पोथी ले अरु धर हैं । सो आदान निक्षेपन वर है ।
मल मूत्र एकान्त जु डारैं । परतिष्ठापन समिति संभारैं ॥
यह सब अङ्ग उनतीस कहे हैं । श्रीजिनभाषे गनधरने गहे हैं ।
आठ आठ तेरह विधि जानों । दर्शन ज्ञान चरित्र सु ठानौ ।
ताते शिवपुर पहुंचो जाई । रत्नत्रय की यह विधि भाई ॥
रत्नत्रय पूरण जब होई । क्षमा क्षमा करिये सब कोई ।
चैत माघ भादों त्रयवारा । क्षमा क्षमा हम उरमें धारा ॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रयाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह क्षमावणी आरती, पढे सुने जो कोय ।
कहै मल्ल सरधा करो, मुक्ति श्रीफल होय ॥

इत्याशीर्वादः ।

सोरठा—दोष न गहिये कोय, गुण गहि पढिये भावसौं ।
भूल चूक जो होय, अर्थ विचारि जु सोधियो ॥ इति ॥

हस्तिनागपुर क्षेत्र पूजा

छप्पय छन्द । स्थापना ।

प्रथम द्वीप शुभ क्षेत्र भरत दक्षिण दिश छाजै ।
आर्य खंड मझार देश गुरुजाङ्गल राजै ॥
उत्तम तीर्थ हस्तनागपुर नगर महाजी ।
शांति कुंथु अरनाथ गर्भ तप जन्म लहाजी ॥
भुक्तिथान यह प्रथम जिन थित मल्लिनाथ सम्वादथल ।
पावन वृष तिष भूमि नित, जजन करै भव्य जन सकल ॥

ॐ ह्रीं हस्तनागपुरक्षेत्रस्थितजिनालयजिनाः अत्रावतरतावतरत संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठत २ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहिता भवत २ वषट् सन्निधिकरणम् ।

अष्टक—चाल नन्दीश्वराष्टक ।

जल सुभग सुरसरील्याय हाटक कुम्भ भरा,
त्रयधार ढार सुखदाय जरमर जन्म जरा ।
श्री गजपुर नगर सुथान श्री जिन चैत्य महा,
सुर नर नित वंदत आन भव तज मोक्ष लहा ॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपुरजिनालयजिनेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनायजलं ।

चदन कपूर घिसाय कुंकुम संग रला ।
प्रभु पद पूजूं हर्षाय भव आताप दला ॥ श्रीगजपुर० ॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपुरजिनालयजिनेभ्यो चन्दनं नि०
वर उत्तम अक्षत श्वेत शशि सम अनियारे।
जिनवर ढिग पुंज करेय अक्षय निधि धारे॥ श्रीगजपुर०॥
ॐ ह्रीं श्री गजपुरजिनालयजिनेभ्यो अक्षतं।
पण वर्ण सुगन्ध अनूप कुसुम विविध लाये।
मनमथ मद हर जगभूप लख पूजन आये। श्री गजपुर०॥
ॐ ह्रीं श्री गजपुरजिनालयजिनेभ्यो पुष्प नि०।
मोदक वहु सरस सु हाल गुंजा मिष्ट सुधा।
नेवज़ कीजे तत्काल नासैं रोग क्षुधा॥ श्री गजपुर०॥
ॐ ह्रीं श्रीगजपुरजिनालयजिनेभ्यो नैवेद्यं नि०।
मणि दीपक ज्योति जगाय अद्भुत उजियारे।
मिथ्यातम मोह पलाय निज गुण विस्तारे॥ श्री गजपुर०॥
ॐ ह्रीं श्रीगजपुर जिनालयजिनेभ्यो धूपं नि०।
अष्टांग दशांग सुचूर गंध हुताशन में।
खेऊँ जिनराज हजूर, विध अरि नाशन में॥ श्रीगजपुर०॥
ॐ ह्रीं श्रीगजपुरजिनालयजिनेभ्यो धूपं नि०।
श्रीफल बादाम छुहार पुंगी दाख खरे।
एलादिक फल अविकार, सुवरण थाल भरे॥ श्रीगजपुर०॥
ॐ ह्रीं श्रीगजपुरजिनालयजिनेभ्य फलं नि०।
गीता—शुभ गंधवारि अखंड अक्षत पुष्प नेवज धूपजी,
वर दीप उत्तम फल मिलाय वनाय अर्घ अनूपजी।
जिननाथ चरणाम्बुज सदा भवि जजों चित हर्षायजी,
भर थार जटित 'जवाहर' निश दिन शुद्ध मन वच कायजी॥
ॐ ह्रीं हस्तिनागपुरक्षेत्रस्थजिनालयजिनेभ्यो अर्घं नि०॥

जयमाला

दोहा—वारण पुरवर क्षेत्र की, अर्चन कर हितकार।
अब जयमाला तास की, सुनो सुबुध चितधार॥ १॥

पद्धरी छन्द ।

यह प्रथम जिनेन्द्र आहार नम, दानीपति भूप श्रेयांस अग्र ।
षोडश सतरा अठदश जिनेश, त्रय कल्याणक पूजें सुरेश ॥
अरु समवसरण थित मल्लिदेव, अरु पांडुभूत हू नम्र एव ।
तहां मघवा आये बार बार, सज सेन अमरजुत सपरिवार ।
अद्भुत रचना हरि करी सार, बहु रत्नवृष्टि नाटक अपार ।
कर कर सहस्रभुज देव ईश, नाटे नटवावत नाय शीश ॥
तिस क्षेत्रतनी महिमा महान, को वर्ण सके कवि स्वल्पज्ञान ।
श्री जिन मन्दिर राजत उतङ्ग, अरु शिखर कलश बहु धुज सुरङ्ग ॥
वन महा विकट निर्भय विकार, तरु पुष्प वेल फल फलत सार ।
है कूप नीर जुत मिष्ट मिष्ट, बहु धर्मशाल तहां इष्ट इष्ट ॥
नितप्रति निशदिन भवि जजन हेत, धर उर प्रमोद संघन समेत ।
कर अर्चन श्रीजिनचन्द्र ईश, ते लहत पुण्य अति शुभगरीश ॥
वंदत वन में तप टोंक जाय, मन वचन काय आनन्द पाय ।
यह अतिशय बरनन सदाकाल, सब टरत विघन अघके जंजाल ॥
कातिक शुक्ला पूनम सु जोय, उत्सव यात्रा प्रति वर्ष होय ।
आवत श्रावक बहु देश देश, चढ़िवाहन सजि सर्व भेष ॥
रथ गजारूढ जिनबिम्ब सार, मङ्गल जय जय जय जय उचार ।
बहु भक्ति करत गुण गाय गाय, निरतित संगीतादिक रचाय ॥
ढप ताल मुरज धुन करत घोर, संसागृदि सारङ्गी तान शोर ।
करताल बजत टनटन ननाय, बीना तन ननतन तन ननाय ॥
सैनाय बांसुरी शब्द तूर, सैतार सुरावर श्रवन पूर ।
थेई थेई गत नाचत मनुज नार गावत मङ्गल गुण गण अपार ॥
मनु आनन्दघन झर लग्यो आय, मिथ्यात कलुष ततक्षिण पलाय ।
प्राकृत सम्यक्त्व गुण निजाधीन, सरधाजुत शंकादिक विहीन ॥
तांके प्रसाद नर स्वर्ग जाय, अनुक्रम शिवपुर को राजथाय ।

यह जानत सुबुध नित नमन ठान, अरचा कीजे बहु पुन्यवान ॥
हम अह निशि वंदत हैं त्रिकाल, त्रय जोग जुगतकर धर सुभाल ।
मन वांछित तरुफल वे प्रत्यक्ष, है क्षेत्र 'जवाहर' दानदक्ष ।

दोहा—गजपुर तीरथ राज की महिमा अगम अपार ।
सुनत लखत परसत बढ़त, संचय पुण्य भण्डार । महार्घं।१६।
जो पूजैं जिन पद कमल, गजपुर क्षेत्र सुजाय ॥
धर्म अर्थ लहि काम जुत, मोह रमन सुख पाय ॥१७॥

इत्याशीर्वादः ।

श्री केशरियाजी [ऋषभदेव] पूजा

स्तुति । ❀

श्री आदि जिनेश्वर साहवारे, विनतडी अब धार रे सुगण नर ॥१
सुन्दर रूप सो सोहामणुरे, मुरत मोहनगाररे सुगण नर ॥२
तु त्रिभोवन देषतोरे दूर थकी आव्यो, वहिरे दीठे पातक जायरे
सुगण नर ॥३
भवनां दुःख सवि गयांरे, मो मन आनन्द थायरे सुगण नर ॥४
भव अनन्ता हुं भम्योरे आव्यो तुम चरणेरे सुगण नर ॥५
वालक जाणी आपजोरे, तुमपद निरवाणरे सुगण वन ॥६
आदि शिखर निहालियेरे, पूर्वाभिमुख सोहेरे सुगण नर ॥७
वावन देहरी सोहामणीरे, भवियणना मन मोहरे सुगण नर ॥८
नाभिराया कुल उपजोरे, मारुदेवी मह लाररे सुगण नर ॥९
वृषभ लांछन दीपतोरे, आयु लाख चौरासी उदाररे सुगण नर ॥१०
धनुष पाँचसै उचित पणेरे, काया श्यामवर्ण मनोहाररे सुगण नर॥११

❀ विक्रम सं० १७६० मे लिखे हुए एक ग्रन्थ अङ्कलेश्वर (गुजरात) से संग्रहीत

नाटक भावना भावतांरे, पाम्यो शिवपद निरवाणरे सुगण नर ॥१२
धुलेव नग्र मांहे प्रकट्योरे, श्री केशरिया जिनदेवरे सुगण नर ॥१३
रूपसेन शिष्य उचरेरे, विजयकीर्ति गुण गायरे सुगण नर॥१४

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र धुलेव नगरस्थ श्री केशरियाजी (ऋषभदेव) अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव सन्निधिकरणं।

अष्टक—परम शीतल गगन सम्भव, रत्निरेणु विराजिनां।
रत्नमिश्रित शुद्ध हाटक, कलश योजित वारिणां॥
वृषभ लांछन, कनक वर्णित विघन कोटि विहण्डनं।
पूजोरे भविजन नाभिनन्दन, धुलेव नयर सुमण्डणं॥

ॐ ह्रीं श्रीधुलेवनयरे श्रीकेशरियानाथजिनेन्द्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलय सम्भवतुहिनदर्घित, रुचिर केसरघर्षिणां।
परिमलाहुत भ्रमर गुञ्जित, तापवारन चन्दनैः॥
वृषभ लांछन, कनक वर्णित विघन कोटि विहण्डनं।
पूजोरे भविजन नाभिनन्दन, धुलेव नयर सुमण्डणं॥ चन्दनं
सलिल जन्म सुवासवासित, कमल जाति समुद्भवैः।
सकल वर्जित, मौलिकामल सरसतान्दुलपुञ्जकैः॥
वृषभ लाञ्छन, कनक वर्णित विघन काटि विहण्डनं।
पूजोरे भविजन नाभिनन्दन, धुलेव नयर सुमण्डणं॥अक्षत
कमल केतकि जाइ चम्पक, मालतीमचन्दकुन्दकैः।
मदनवाण निवारणाय, सुगन्ध शोभित पुष्पकैः॥
वृषभ लाञ्छन, कनक वर्णित विघन कोटि विहण्डणं।
पूजोरे भविजन नाभिनन्दन, धुलेव नयर सुमण्डणं। पुष्प
घृतचि पूरित स घन मोदक, शर्करादिक पूरितः।
रसनतर्पणाकार घेवर, मिष्टान्न विविध चरुत्करैः॥

वृषभ लाञ्छन, कनक वर्णित, विघन कोटि विहण्डनं ।
पूजोरे भविजन नाभिन्दन, धुलेव नयर सुमण्डणं ॥ नैवेद्यं
सुघनसार समुद्भवैरति दीपताखिल दिङमुखैः ।
भ्रमविमोह तमोविभेदन दक्ष सुन्दर दीपकै ॥
वृषभ लांछन, कनक वर्णित विघन कोटि विहण्डनं ।
पूजो भविजन नाभिनन्दन, धुलेव नयर सुमण्डणं ॥ दीपं ॥
असित पाण्डुर मलय दारु, जजोच्छितै रजदाहकैः ।
निज विभ्रार्मर रक्ताखिल, बादलैः बहु धूपकै ॥
वृषभ लांछन, कनक वर्णित विघन कोटि विहण्डणं ।
पूजोरे भविजन नाभिनन्दन, धुलेव नयर सुमण्डणं ॥धूपं
फणस दाडिम चोच मोच, सदाफलै · सहकारकैः ।
कमुक कर्कटि वीजपूरक, नागरं गरु जम्बीरकैः ॥
वृषभ लांछन, कनक वर्णित विघन कोटि विहण्डन
पूजोरे भविजन नाभिन्दन, धुलेव नयर सुमण्डणं ॥ फलं
सलिल चन्दन पुष्प तन्दुल, चरु सुदीप सु धूपकैः ।
फणस कुशाग्र स्वस्तिक, धवल मङ्गल गानकैः ॥
जनन सागर भविक तारक, दुःखदावघनोपमं ।
विजय कीर्ति सदा नि सेवति, धुलेवनयर निवासितं ॥ अर्घं

जयमाला

सुरेन्द्र नागेन्द्र नरेन्द्र सिष्ठो, धुलेववासो जगदीश्वरीष्टो ।
इक्ष्वाकुवं शोवरद वरिष्ठो, भक्तासु तो सो जयमाल ऐष्टो ॥
नाभिनरेश्वर सुन्दरतनुजं, सन्तति-सुखकर सरजं मनुजं ।
धुलेव नयर निवास विराजं, आदि जिनेश्वर नमित सुराजं॥
पुण्य पयोनिधि वर्धन चन्द्रं, शोभित मोह महामयतेन्द्रं ।
धुलेव नयर निवास विराजं, आदि जिनेश्वर नमित सुराजं ॥२
काश्यप गोत्रं गणधरनाथं, मानव दानव देव सनाथं ।

धुलेव नयर निवास विराजं आदि जिनेश्वर नमित सुराजं ॥३॥
जन्मपुरी विनता सुख वासं, माता मरुदेवी जगवासं ।
धुलेव नयर निवास विराजं, आदि जिनेश्वर नमित सुराजं ॥ ४
कांति कलापरिपूरित गात्रं, वांछित दान सु पोषित पात्रं ।
धुलेव नयर निवास विराजं, आदि जिनेश्वर नमित सुराजं ॥ ५
सङ्कट कोटि विनाशन दक्षं, नासित रोग भयादिक यक्ष ।
धुलेव नयर निवास विराजं, आदि जिनेश्वर नमित सुराजं ॥
देश विदेश से आवत लोकं, संघ चतुर्विध चर्णज नौकं ।
धुलेव नयर निवास विराजं, आदि जिनेश्वर नमित सुराज॥ ७
धुलेवपुर किमभर कैलाश, त्रिभुवन विश्रुत नाम निवासं ।
धुलेव नयर निवास विराजं, आदि जिनेश्वर नमित सुराजं ॥ ८
आदि जिनेन्द्रं नादिमनन्तं, सन्तत भिन्न सुरूप धरन्तं ।
धुलेव नयर निवास विराजं, आदि जिनेश्वर नमित सुराजं ॥९

घत्ता—श्रीधूलेवपूराश्रितं त्रिभुवनं श्रेष्टैर्निसेव्यं मुदा ।
भक्ताभ्रे कणगतं खपितरं काष्ठादि संघोदरं ॥
नीरादि प्रमुखाष्टद्रव्यनिचयैर्दूर्वादधिस्वस्तिकैः ।
चर्चे श्रीविजयादिकीर्ति सततं लक्ष्मी स सेनातकं ॥

ॐ ह्रीं श्रीधुलेवनयरे श्रीकेशरियानाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

लक्ष्मीकला कान्तिरनन्तसौख्यं । सेनिचतुर्धाधिपचक्रि मुख्यं ।
राजा-सुराद्यर्थमनन्तरूपं । धुलेव नयरे श्री वृषभो जिनेन्द्रं ॥

इत्याशीर्वादः ।

अतिशयक्षेत्र थूबौनजी पूजा

कविवर घासीरामजी जैन 'चन्द्र' कृत

स्थापना

शोभित चाह सुचन्द्रपुरी, जिन नेमि समैं से महा सुखदाई।
पावन "चन्द्र" सुहावन मंजुल, मङ्गल पूरित मोद लताई॥
तासन पश्चिम में सरिता तट, थुबनजीकि छटा शुभ छाई।
मोहत है मन मानवोंके, पंचबीस जिनालय में जिनराई॥
दोहा—जिनवर चरण कमलन महुँ, विविध भांति मन लाय।
आवाहन इत करत हों, शीघ्र विराजो आय॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र थूबौनजी मध्ये पंचविंशतिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो नमः, अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं, स्थापनम्।

छन्द सवैया

लै जल शुद्ध कटोरिन में, शुभ धार दऊं जिनराज सु पांई।
जन्म जरामृत से तपकें, प्रभु आय गयौं तुम्हरे शरणांई॥
थूबनजी प्रभु क्षेत्र लसें, प्रिय भारत भूमि विषें सुखदाई।
पूजत इन्द्र सदा पद कंज, भविगदभजन श्री जिनराई॥
सोरठा—पञ्चविंशति जिन गेह, पूजत जग जल दुख नसें।
जे पूजें कर नेह, ते शिव सुषमा पावहीं॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र थुबौनजी मध्ये पंचविंशतिजिनालयस्थजिन बिंबेभ्यो जलं।

केशर और सुगन्ध अनूपम, देह अपावन माहिं लगाई।
चन्दन और कपूरहु से, न भई हियकों कछु शीतलताई॥
मो भव ताप मिट्या नहिं स्वामिन, चर्णनमें अब देत चढ़ाई।
पूजत इन्द्र सदा पद कंज, भविगदभंजन श्रीजिनराई॥

घिस मलयागिर देव, धार दऊँ आगे सही।
करहुं सदा तुम सेव, भव आताप मिटाइये ॥ चन्दनं ॥
मोतिनके सम अक्षत वीन, सुगन्धित लै जिन पॉयन मॉहीं।
याचत हों जिनजीसु अखैपद, देहु प्रभो जग जाल छुडाई॥
थूवनजी शुभ क्षेत्र लसैं, प्रिय भारत भूमि विषैं सुखदाई।
पूजत इन्द्र सदा पद कंज, भविगदभञ्जन श्रीजिनराई॥
अमित अखय पद पाय, तुमने शिव दुलही वरी।
यह जग-जाल छुड़ाय, हे जिन पास बुलाइये ॥अक्षतं॥
चम्पक औ अरविन्द कनेरन पै मकरन्दनकी दुति छाई।
लेत सुगन्ध अनेकन वारन, काम व्यथा कछु ही बुझ पाई॥
याहि विचार प्रभो तुम चरनन, फूल सुगन्धित देत चढाई।
पूजत इन्द्र सदा पदकंज, भविगदभंजन श्रीजिनराई॥
काम व्यथा हर नाथ, जीत मदनगढ़ को लयो।
पाकर भयौ सनाथ, तुमसे पावन देवको ॥ पुष्पं ॥
नेवज नव्य बनाय प्रभो, तिनमें रसना रस माहिं सनाई।
पै न क्षुधा दुख दूर भयौ, इस नेवजने नहिं भूख मिटाई॥
लै करमें सद नेवज थाल, सु अर्पत हों युग पांयन मांहीं।
पूजत इन्द्रा सदा पदकंज, भविगदभंजन श्रीजिनराई॥
कीने बहुत उपाय, तै न क्षुधा मेरी गई।
अब तुम शरणौ आय, अर्पत हों नैवेद्य मैं ॥नैवेद्यं॥
हीरक पन्नग और जवाहर, रत्ननकी नित ज्योति जगाई।
पै न मिट्यौ जिन मोह महातम, चारिउ ओर भई अन्धिकाई॥
थूवनजी शुभ क्षेत्र लसे, प्रिय भारतभूमि विषै सुखदाई।
पूजत इन्द्र सदा पदकंज, भविगदभंजन श्रीजिनराई॥
दीप बनाय जिनेश, चरनन तले चढ़ावहूँ।
करहु मोह तम शेष, कीजे ज्ञान प्रकाश जी ॥ दीपं ॥

चन्दन और करपूर दशाङ्ग, मिलाय अनूपम धूप बनाई।
खेवत कर्म गये न प्रभो अब, अर्पत हों तुमरे युग पांई ॥
पावक मे जिमि धूप जरे तिमि, कर्म जरें तुम्हरें गुण गाई।
पूजत इन्द्र सदा पद कंज, भविगदभंजन श्रीजिनराई ॥

धूप विविध विध नाथ, खेवत तुम चरणन विषैं।
अब तो करहु सनाथ, पास बुलाकर दास को ॥ धूपं ॥

नारिंग और कदलीफल पुंगी, अनार सु श्रीफल सुचिताई।
चाखत काल अनंत गयौ, जिन ये फल खूब भये दुखदाई ॥
थूबनजी शुभ क्षेत्र लसैं, प्रिय भारतभूमि विषैं सुखदाई।
पूजत इन्द्र सदा पद कंज, भविगदभंजन श्रीजिनराई ॥

विविध भांति फल पाय, तृप्त करो इन्द्रिय प्रभो।
पाये फल दुखदाय, हमें मोक्ष फल दीजिये ॥ फलं ॥

वारि सुगन्ध सु तन्दुल और मनोहर मालति की मधुराई।
नेवज दीप प्रदीपन का प्रिय, पङ्कति चौदशि भांति लगाई ॥
धूप दशांग बनाय नवीन, धनंजय मांहि जु नित्य जराई।
भांतिन भांतिन के फलभी न करी, जिन "चन्द्र" कछू तृपताई।

वसुनिधि अर्घ बनाय, हर्ष हिये में धार के।
पूजहूँ श्री जिनराय, अतिशय क्षिति थूबौनजी ॥ अर्घं ॥

लै अष्ट द्रव्य जिनेश तुम पद, कमल तरवर धरत हूँ।
जिन आप सम शुभ स्वपद पाऊं, यह विनय नित करत हूँ ॥
थूबौनजी में मन हरण पंचवीस, श्री जिन धाम हैं।
तिनको सु नित्य सुभाव सों, कवि'चन्द्र' करतप्रणाम है। पूर्णार्घम्

जयमाला।

ज्ञान छपाकर गुण गण आगर, भवसागर से तारणहार।
लोक उजागर सुगुण सुयश वसु, कर्म काठ को जारणहार ॥
मूर्ति मनोग्य सुहावन पावन, मन्मथ मान विदारणहार।
तिन युग जिनचरणन की महिमा, कौन कह सकत अगम अपार ॥

दोहा—मन रंजन भंजन करम, मंजुल मंगलकार।
वरनत हों जयमालिका, मन्द बुद्धि अनुसार ॥
जय तपोभूमि थूबौन सार, मनहरन करन सब करम छार।
पावन मनोग्य छिति छटा द्वार, वन उपवन शोभा के भंडार ॥
सरिता तट शुभ शोभित महान, जिहिं देख लहत कर आत्मज्ञान।
प्रथमहिं मंदिर पारस जिनेन्द्र, तिन दरश करत भाजत सुफंद।
संवत अष्टादश साठ चार, वैशाख सुदी पूनम अपार।
निरमाप्यौ तब जिन गृह विशाल, अति भयो धर्म उद्योत काल ॥
मंदिर द्वितीय जिन पार्श्वनाथ, इस अठ पट नव संवत सुहात।
शुभ माघ सुदी तेरस सु जान, वनवाई अति आनन्द मान ॥
मंदिर तृतीय जिन नेमिसार, जिन योग लयौ तजके सुनार।
संवत् सोलह सौं द्वै सु सात, वैशाख शुक्ल तेरस लहात ॥ ५ ॥
तहां अन्य बिंब सोहत जिनेश, तिन चरण नमत सुर नर महेश।
तुम मानभद्र मंदिर विशेष, तिन मस्तक पर शोभित जिनेश ॥६॥
धनु तिय उतुंग शोभित विशाल. सुर इन्द्र आयकर देत ताल।
सोलम जिन शांति करन अपार, पंचम चक्रेश्वर सुपद धार ॥७॥
मंदिर पंचम शोभित महान, तहं शान्ति जिनेश्वर विराजमान।
पाड़ा साहब इक जैन वीर, मंदिर थाप्यौ जिन हरण पीर ॥ ८ ॥
षष्ठम मंदिर शोभित उतुंग, जिहिं दरश भरत जियमें उमग।
षोडस अस्सी विक्रम महंत, थापे जिन सन्मति शशि शान्ति ॥९॥
आगरा निवासी पांच भ्रात, सप्तम मंदिर थाप्यो विख्यात।
सोलह सौ इकहत्तर मझार, वैशाख सुदी पांचे सुसार ॥ १० ॥
पारस सन्मति प्रतिमा अनूप, चंद्रप्रभु नेमि सु शान्तिरूप।
मंदिर अष्टम अद्वितीय महान, चतुः भुजायुक्त हनुमान जान ॥११॥
तिन कंधों पर शोभित जिनेन्द्र, तिनको वंदित नित इन्द्र 'चंद्र'।
नवमें जिनगृह है अति मनोग, देखत जिय जागत सुखद योग ॥१२॥

पद्मावति वहन सुखद विशाल, शोभित पारस जिन तासु भाल ।
दस्सम मंदिर जिनधर्म मल्ल, जिहि दरशन भाजत कर्म दल्ल ।।.१३।।
इकदश द्वादश निर्माण काल, जानत जिन तिनको नमत भाल ।
त्रयोदश जिनमंदिर के सुठाठ, संवत् अष्टादश शत रु आठ ।।१४।।
शोभित विशाल पारस जिनेश, नित नमत महासुर नर खगेश ।
श्री शांतिनाथ चौदम अवास, तिहिं दरश मिटत सब भविक त्रास ।।
अष्टादश पचवन के मझार. थापे जिनबिंब विविध प्रकार ।
जिन आदि लसें पंचम अवास, षोडस वहत्तर वैशाख मास ।।१५।।
शुभ श्वेत पक्ष पचम प्रवीन, जिनबिंब थाप परभाव कीन ।
तिन जिनबिंबनि को नमस्कार, कब पाऊँ प्रभु भवसिंधु पार ।।१६।।
षोडस मंदिर उपरोक्त साल, जिन अजित और संभव विशाल ।
शोभित सुर नर मनहरण हार, कर दरश लहत भवसिंधु पार ।।१७
सप्तम दश मंदिर अति अनूप, तिहिं नमत मनुज अरु इन्द्र भूप ।
अभिनन्दनादि जिन तहं विराट, थापे सत्रहसौ और आठ ।।१८।।
अष्टादश नव दश दश द्विराशि, इकवीन द्विविंशति जान तास ।
सुन्दर त्रय वीस जिनालथान यह पट् मंदिर एक हि प्रमान ।।१९।।
उगनीसरु त्रय विंशति अनूप, गत हुए साल विक्रम सुभूप ।
जिन गेह वने मनहर मनोग, तिन मध्य लसें जिन धर सुयोग ।।२०।।
शोभित चतुर्विंशति जिन अवास, तह राजत चन्द्र जिनेश खास ।
अरु राजत श्री नेमी जिनेश, सम्वत उनइस सत्तर महेश ।।.२१ ।।
पचविंशति मन्दिर नमत भाल, जित आदि 'तहां सोहत विशाल ।
अट्ठारहसौ तिहितर सुसाल, सिन्धे कुल के शुभ राज्य काल ।।२२।।
वनवायौ यह जिनगृह अनूप, तह शोभित हैं तिहुं जगत भूप ।
इह विधि थूवौन छटा अपार, अतिशय सुर नर मनहरण हार ।।२३।।
नित प्रति भविजन वन्दति जिनेश, तिनके सु कटहिं भव भव कलेश
वर शिव नारी पावें स्वदेश, पूजहिं तिनको सुर नर खगेश ।। २४ ।।

दोहा—भविजन कविजन नित नमहिं, थूवनजी को शीश।
प्रणमहुँ बारम्बार नित, जिन मन्दिर पच्चीस ॥ महार्घं ॥

इति

अनन्तव्रत पूजा।

श्री जिनराज चतुर्दश, जग जयकारजी।
कर्म नाश भवतार सु, शिवसुखधारजी ॥
संवौपट् ठः ठः सु. वषट् यह उच्चरूँ।
आह्वानन स्थापन, निज सन्निधि करूं ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रा अत्र अवतरत २ संवौषट्। अत्र तिष्ठत २ ठः ठ। मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधापनम्।

गीता छन्द

गंगादि तीरथका सुजल भर कनकमय भृङ्गार में,
चउदशजिनेश्वर चरणयुगपरि, धार डारौं सार मैं।
श्री वृषभआदि अनन्त जिन, पर्यन्त पूजों ध्याय के,
करि व्रत अनंत सुकर्म हनिके, लहों शिवसुख जाय के।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथ पर्यन्त चतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो जलम्।

चन्दन अमर घनसार आदि, सुगन्ध द्रव्य घसाय के।
सरजहिं सुगंध जिनेन्द्रके पद, चर्चहों सुखदाय के ॥श्री०

ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथपर्यंतचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यः चन्दनम्।

तंदुल अखंडित अतिसुगन्ध, सुमिष्ट लेके कर धरौं।
जिनराज तुम चरनन निकट, भविपाय पूजों शुभ धरों ॥श्री०

ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतम्।

चम्पा चमेली केतकी, पुनि मोगरा शुभ लायके।
केवडा कमल गुलाब गेंदा, जुही सुमाल वनायके ॥ श्री०

ॐ ह्रीं वृषभद्यानन्तनाथपर्यन्त चतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो पुष्पम्।

लाडू कलाकन्द सेव घेवर, और मोतीचूर ले।
गूँजा सुपेडा क्षीर व्यंजन, थाल मे भरपूर ले॥ श्री०
ॐ ह्रीं वृषभाद्यमन्तनाथपर्यन्त चतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यम्।
ले रत्न जड़ित सुआरती, तामांहि दीप संजोय के।
जिनराज तुम पद आरतीकर, तिमिर मिथ्या खोयके॥श्री०
ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यः दीपम्।
चन्दन अगर तगर मिलारम, कपूरको करि धूप को।
तागन्ध तें अलि हों चकित सो, खेऊं निकट जिनभूपको।श्री०
ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो धूपम्।
नारिंग केला दाख दाडिम, वीजपूर मंगाय के।
पुनि आम्र और वादाम खारक, कनक थार भराय के॥श्री०
ॐ ह्रीं श्रीवृभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो फलम्।
जल सुचन्दन अक्षत पुष्प सुगन्ध वहुविधि लायके।
नैवेद्य दीप सु धूप फल इन, को जु अर्घ वनाय के॥श्री० अर्घं

जयमाला पद्धरि छन्द

जय वृपभनाथ वृषको प्रकाश, भविजनको तारे पाप नाश।
जय अजितनाथ जीते सुकर्म, ले क्षमा खड्ग भेदे जु मर्म॥
जय संभव जग सुखके निधान, जग सुखकरता तुम दियो ज्ञान।
जय अभिनंदन पद धरो ध्यान, तासों प्रगटे शुभज्ञान भान॥
जय सुमति सुमति के देनहार, जासों उतरे भवउदधि पार।
जय पद्म पद्म पदकमल तोहि, भविजन अति सेव मगन होहिं॥
जय २ सुपार्श्व तुम नमत पांय, क्षय होत पाप वहु पुन्य थांय।
जय चंद्रप्रभ शशकोटि भान, जगका मिथ्यातम हरो जान॥
जय पुष्पदंत जग मांहि सार, पुष्पकको मार्यो अति सुमार।
करि धर्मभाव जगमे प्रकाश, हर पापतिमिर दियो मुक्तिवास॥
जय शीतलजिन हर भव प्रवीन, हर पापताप जग सुखी कीन॥

श्रेयांस कियो जग को कल्यान, दे धर्म दुखित तारे सुजान।
जय वासुपूज्य जिन नमों तोहि, सुरनर मुनि पूजत गर्व खोहिं।
जय विमल २ गुण लीन भेय, भवि करे आप सम सगुण देव॥
जय अनंतनाथ करि अनंतवीर्य, हनि घातकर्म धरि अनंतवीर्य।
उपजायो केवल ज्ञानभान, प्रभु लखे चराचर सब सुजान॥

दोहा—ये चौदह जिन जगत में, मंगलकरण प्रवीन।
पापहरन बहुसुख करन सेवक सुखमय कीन॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभाद्यनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो अर्घम्।

श्री तीसचौबीसीजी की पूजा

पांच भरत शुभक्षेत्र पांच ऐरावते,
आगत-नागत वर्तमान जिन सास्वते।
सो चौबीसी तीस जजूं मन लायके,
आह्वानन विधि करूं वार त्रय गायके॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धी—पंचभरत-पंचऐरावत—क्षेत्रस्था भूतानागतवर्तमानसम्बन्धितचतुर्विंशतितीर्थंकरा अत्र अवतरत २ संवौषट् इति आह्वाननं। अत्र २ तिष्ठत २ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहिता भवत २ वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक।

नीर दधि क्षीर सम ल्यायो, कनकको भृङ्ग भरवायो,
अबै तुम चरण ढिंग आयो, जनम जरा रोग नशवायो।
द्वीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषै छाजे,
सात शत बीस जिनराजे, जे पूजतां पाप सब भाजें॥१॥

ॐ ह्रीं पंचभरतपंचैरावतक्षेत्रस्थभूतानागतवर्तमानकालसंबन्धिचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभिजुत चन्दनं ल्याया, संग करपूर घसवायो,
धार तुम चरण ढ़रवायो, भव आताप नशवायो ॥द्वीप०॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संवन्धी तीस चौबीसी सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यः चन्दन नि० ।

चन्द्रसम तन्दुलं सारं, किरण मुक्ता जु उनहारं,
पुञ्ज तुम चरण ढिग कारं अक्षयपद प्राप्ति के कारं ।
द्वीप अढाई सरस राजे क्षेत्र दस ता विषें छाजे,
सात शत वीस जिनराजे, पूजतां पाप सब भाजे ॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संवन्धी तीस चौवीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः अक्षतं नि० ।

पुष्प शुभ गंधजुत सोहे, सुगन्धित नास मन मोहे ।
जजत तुम मदन क्षय होवे, मुकति पद पलकमें जोवे ॥द्वीप०॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संवन्धी तीस चौवीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः पुष्पं नि० ।

सरस व्यञ्जन लिया ताजा, तुरत वनवायके खाजा ।
चरन तुम जजों हो महाराजा, क्षुधादिक पलकमें भाजा ॥द्वीप०

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संवन्धी तीस चौवीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः नैवेद्यं नि० ।

दीप तम नाशकारी है, सरस शुभ जोतिधारी है ।
होय दशों दिश उजारी है, धूम्र मिस पाप हारी है ॥द्वीप०॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र सम्वन्धी तीस चौवीसी के सात सौ वीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः दीपं नि० ।

सरस शुभ धूप दस अंगी, जलाऊं अग्निके संगी ।
करमकी सेन चतुरगी चरन तुम पूजते भृंङ्गी ॥ द्वीप० ॥

ओं ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र सम्वन्धी तीस चोबीसी के सात सौ वीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः धूपं नि० ।

मिष्ट उत्कृष्ट फल ल्यायो, अष्ट अरि दुष्ट नशवायो।
श्रीजिन भेंट धरवायो, कार्य मनवांछता पायो॥

ओं ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः फलं नि०।

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ करमें नवीना है।
पूजते पाप छीना है, 'भानमल' जोर कीना है॥ द्वीप०॥

ओं ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं नि०।

प्रत्येक अर्घ।

जम्बूद्वीपकी प्रथममेरुकी, दक्षिणदिशा भरत शुभ जान।
तहाँ चौबीसी तीन बिराजें, आगत नागत औ वर्तमान।
तिनके चरण कमलकी निशदिन, अर्घ चढ़ाय करूं उर ध्यान।
इस संसार भ्रमणतें तारो, अहो जिनेश्वर! करुणावान॥

ओं ह्रीं सुदर्शन मेरुकी दक्षिण दिशा भरत क्षेत्र सम्बन्धी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं।

सुदर्शन मेरुकी उत्तरदिशमें, ऐरावत क्षेत्र शुभ जान।
आगत नागत वर्तमान जिन, बहतर सदा सास्वते जान। तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुकी उत्तर दिशा क्षेत्र सम्बन्धी तीन चौबीसी के बहत्तार जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं।

खण्ड धातकी विजय मेरुके, दक्षिण दिशा भरत शुभ जान।
तहाँ चौबीसी तीन विराजे, आगत नागत अरु वर्तमान॥
तिनके चरण कमलको निशिदिन अर्घ चढाय करूँ उरध्यान।
इस संसार भ्रमणतैं तारो अहो जिनेश्वर! करुणावान॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड द्वीपकी पूर्व दिशि विजय मेरुकी दक्षिण दिशि भरतक्षेत्र सम्बन्धी तीनचौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रभ्यो अर्घं।

इसी द्वीपकी प्रथम शिखरिको, उत्तर ऐरावत जु महान।
आगत नागत वर्तमान जिन, बहत्तरि सदा सासते जान॥
तिनके चरण कमलको निशिदिन, अर्घ चढ़ाय करूं उरध्यान।
इस संसारभ्रमणतैं तारो, अहो जिनेश्वर! करुणावान॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड द्वीपको पूर्व दिशि विजय मेरुकी उत्तर दिशि ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धी तीनचौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं०

खंड धातकी अचल सुमेर, दक्षिण तास भरत बहु मान।
तामें चौबीसी त्रय जान, आगत नागत और वर्तमान॥तिन०॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड द्वीपकी पश्चिम दिशा अचलमेरुकी दक्षिणदिशा भरतक्षेत्रसम्बन्धी तीनचौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं।

अचल मेरुकी उत्तर दिश जान, ऐरावत शुभ क्षेत्र बखान।
तामें चौबीसीत्रय जान, आगत नागत और वर्तमान॥तिनके०॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्डकी पश्चिम दिशा अचलमेरु की उत्तरदिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी तीनचोवीसीके बहत्तर जिनेशेभ्योनम अर्घं।

द्वीप पुष्करकी पूरव दिशा मन्दिरमेरुकी दक्षिण भरत-सा।
ताविषे चौबीसी तीन जू, अर्घ लेय जजूं परवीन जू॥तिनके०

ॐ ह्रीं पुष्कर द्वीपके पूर्व दिशा मन्दिरमेरुकी दक्षिण दिशा भरतक्षेत्रसम्बधी तीनचौबीसी के बहत्तर जिनालयेभ्यो नमः अर्घं।

गिरि सूं मंदर उत्तर जानिये, ताके पूर्व दिशा बखानिये।
ताविषे चौवीसी तीन जू, अर्घलेय जजू परवीन जू॥तिनके०॥

ॐ ह्रीं पुष्कर द्वीप को पूर्व दिशा मंदर मेरु कीउत्तरदिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेद्रेभ्यो नमः अर्घं।

पश्चिम पुष्करगिरि विद्यु तमाल, ताके दक्षिण भरत विशाल।
तामें चौबीसी हैं जु तीन, वसु द्रव्य लेय जजुं परवीन॥तिनके०

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीपकी पश्चिम दक्षिण दिशा भरत क्षेत्र संवधी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्योनम अर्घं।

याही गिरिके उत्तर जु ओर, ऐरावत क्षेत्र बनो निहोर।
तामें चौबीसी है जु तीन, वसु द्रव्य लेय जजूं परवीन॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्कर द्वीपकी पश्चिम दिशा विद्युत माली मेरुकी उत्तर-दिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी तीनचौबीसीके वहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं।

द्वीप अढ़ाइ के विषै, पंचमेरु हित दाय।
दक्षिण उत्तर तासकै, भरत ऐरावत भाय॥
भरत ऐरावत भाय, एक क्षेत्र के मांही।
चौबीसी हैं तीन, दशों दिशि ही के मांही॥
दसों क्षेत्रके सातसों बीस जिनेश्वर।
अर्घ ल्याय करजोड़ि जै जै रविमल सुमनकर॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी भरतैरावत क्षेत्र के विषै तीन चौबीसी के सातसैं बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं नि०।

जयमाला।

दोहा—चौबीसी तीसों नमों, पूजा परम रसाल
मन वच तन को शुद्धकर, अब वरणों जयमाल॥
जय द्वीप अढ़ाई में जु सार, गिरि पांच मेरु उन्नत अपार।
तागिरि पूर्व–पश्चिम जु ओर, शुभ क्षेत्र विदेह वसै जु ठौर॥
ता दक्षिण क्षेत्र भरत जु जानि, है उत्तर ऐरावत महान।
गिरि पांचतनें दश क्षेत्र जोय, छवि ताको कहिय न सकै कोय॥
ताको वरणूं वरणन विशाल, तैसा ही ऐरावत है रसाल।
इस क्षेत्र बीच विजयार्द्ध एक, ता ऊपर विद्याधर अनेक॥
इस क्षेत्र विषैं षट खड जानि, तहां छहों काल वरतै महान।
जो तीन काल में भोग भूमि, दस जाति कल्पतरु रहे भूमि॥
जब चोथौ काल लगै जे आय, तब कर्म भूमि वर्तै सुहाय।
तब तीर्थंकर को जन्म होय, सुरलेय जजै गिरि पर सुजोय॥

वहु भक्ति करें सव देव आय, ताथेई थेई की तान ल्याय।
हरि तांडव नृत्य करे अपार, सव जीवन मन आनन्दकार ॥
इत्यादि भक्ति करके सुरेन्द्र, निजथान जाय जुत देव वृन्द।
इहविधि पांचों कल्याण होय, हरिभक्ति करै अति हर्ष जोय ॥
या कालविषै पुण्यवंत जीव, नरजन्मधार शिव लहैं अतीव।
तव श्रेष्ठ पुरुष परवीन होय, सव याही काल विषै जु होय ॥
जव पंचम काल करे प्रवेश, मुनिधर्म तणों नहीं रहे लेश।
विरले कोई दक्षिन देश मांहि, जिनधर्मी नर, वहुते जु नाहिं ॥
जव षष्ठम काल करे प्रवेश, तव धर्मरंच नहिं रहे लेश ॥
दश क्षेत्रन मे रचना समान, जिनवाणी भाष्यो सो प्रमाण ॥
चौवीसी होइके क्षेत्र तीन, दश क्षेत्रनिमे जानो प्रवीन।
आगत व अनागत वर्तमान, सतसातशतक अरु वीसजान ॥
सवही महाराज नमूं त्रिकाल, मम भवसागरतें लेहु निकाल।
यह वचनहिये में धार लेव, मम रक्षा करहु जिनेन्द्र देव ॥
'विमल' की विनती सुनहु नाथ, मैं पांय परूं जुग जोरि हाथ।
मम वांछित कारज करो पूर, यह अरज हृदय में धरि जरूर ॥
घत्ता—शत सात जु वीस श्रीजगदीशं, आगतनागत अरु वर्ततु है।
मन वच तन पूजै सुध मन हूजै, सुरग मुक्ति पद पावत हैं ॥
ओं ह्रीं पंचमेरु सम्वन्धी दश क्षेत्रनिके विषै तीस चौवीसी के सात सौ वीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं नि०।

दोहा—सम्वत् सत उन्नीस के, ता ऊपर पुनि आठ।
पोष कृष्ण तृतीया गुरू, पूरन भयो जु पाठ ॥
अक्षर मात्रा की कसर, वुधजन शुद्ध करेय।
अल्प वुद्धि मो सोचके दोष कवहुं नहिं देय ॥
पढ़ौ नहीं व्याकरण मैं, पिंगल देख्यो नाहिं।
जिनवाणी परसादतें, उमंग भई घट मांहि ॥

मान बड़ाई ना चहूँ, चहूं धर्म को अंग।
नित प्रति पूजा कीजियो, मनमें धारि उमंग॥
इत्याशीर्वादः।

चांदनगांव महावीर स्वामी पूजा

(स्व० श्री पूरणमलजी शमशाबाद कृत)

छन्द

श्री वीर सन्मति गांव चांदन में प्रकट भये आय कर।
जिनको वचन मन कायसे मैं पूजहूँ सिरनाय कर॥
हुये दयामम नार नर लखि, शान्ति रूपी वेष को।
तुम ज्ञान रूपी भानु से कीना सुशोभित देश को॥
सुर इन्द्र विद्याधर मुनि, नरपति नवावें शीश को।
हम नमत हैं नित चावसों, महावीर प्रभु जगदीश को॥

ॐ ह्रीं श्री चांदनगांव महावीर स्वामिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री चांदनगांव महावीर स्वामिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री चांदनगांव महावीर स्वामिन् मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्॥

अथाष्टक

क्षीरोदधि से भरि नीर, कंचन के कलशा।
तुम चरणनि देत चढ़ाय, आवागमन नशा॥
चांदनपुर के महावीर, तेरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री चांदनगांव महावीर, स्वामिने नमः जलं॥

मलयागिर और कपूर, केशर ले हरषों।
प्रभु भव आताप मिटाय, तुम चरणनि परसों॥ चांदन०॥ चन्दनं
तंदुल उज्ज्वल अति धोय, थारी में लाऊँ।
तुम सन्मुख पुञ्ज चढाय, अक्षय पद पाऊं॥ चांदन०॥ अक्षतं

बेला केतकी गुलाब, चंपा कमल लऊं।
दे काम बाण करि नाश, तुमरे चरण दऊं ॥ चांदन० ॥ नैवेद्यम् ॥
फेनी गुंजा पकवान मोदक ले लीजे।
करि क्षुधा रोग निरवार, तुम सम्मुख कीजे ॥ चांदन० ॥ धूपं ॥
घृत में कर्पूर मिलाय, दीपक मे जारों।
करि मोह तिमिर को दूर, तुम सन्मुख वारों ॥ चांदन० ॥ दीपं० ॥
दश विधि ले धूप बनाय, तामें गन्ध मिला।
तुम सन्मुख खेऊं आय, आठों कर्म जला ॥ चांदन० ॥ धूपं० ॥
पिस्ता किसमिस बादाम, श्रीफल लोंग सजा।
श्री वर्द्धमान पद राख, पाऊँ मोक्ष पदा ॥ चांदन० ॥ फलं० ॥
जल गन्ध सु अक्षत पुष्प, चरुवर जोर करों।
ले दीप धूप फल मेलि आगे अर्घ करों ॥ चांदन० ॥ अर्घं० ॥

चरणों का अर्घ

जहां काम धेनु नित आय, दुग्ध जु वरसावै।
तुम चरननि दरशन होत, आकुलता जावै ॥
जहां छतरी बनी विशाल, अतिशय बहु भारी।
हम पूजत मन वच काय, तजि संशय सारी ॥ चांदन० ॥

ओं ह्रीं टोंक में स्थापित श्री महावीर चरणेभ्यो नमः अर्घं० ॥

टीले में विराजमान का अर्घ

टीले के अन्दर आप सोहैं पद्मासन,
जहां चतुर निकाई देव, आवें जिन शासन।
निज पूजन करत तुम्हार कर में ले झारी,
हम हूं वसुद्रव्य बनाय, पूजें भरि थारी ॥ चांदन० ॥

ॐ ह्रीं चांदनपुर महावीर जिनेन्द्राय टीले में विराजमान समय का अर्घं०।

पंचकल्याणक

कुण्डलपुर नगर मंझार त्रिशला उर आये।
सुदि छठि असाढ सुर आई, रतनजु बरसाये। चांदन०
ओं ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अषाढ सुदि छठ गर्भमंगलप्राप्ताय०
जनमत अनहद भई घोर, सब जग सुख छाई।
तेरस शुक्ला की चैत्र सुरगिर ले जाई॥ चांदन०
ओं ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय चैत्र सुदि तेरस जन्म मंगल प्राप्ताय०
कृष्णा मंगसिर दश जानि, लौकान्तिक आये।
करि केश लोंच तत्काल, झट बन को धाये॥ चांदन०॥
ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मंगसिर बुदि दशमी तपमंगलताप्ताय०
वैशाख सुदी दशमांहि घाती क्षय करना।
पायो तुम केवल ज्ञान, इन्द्रन को रचना॥
ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनाय वैसाखसुदी दशमी केवलज्ञानप्राप्ताय अर्घं
कार्तिक जु अमावश कृष्ण, पावापुर ठाहीं।
भयो तीन लोक में हर्ष, पहुँचे शिव माहीं॥चांदन०॥
ओं ह्रीं श्री महावीरजिनाय कार्तिक वदी अमावस निर्वाण प्राप्ताय अर्घं

जयमाला

मंगलमय तुम हो सदा, श्री सन्मति सुखदाय।
चांदनपुर महावीर की, कहूँ आरती गाय॥
जय जय चांदनपुर महावीर, तुम भक्त जनों की हरत पीर।
जड चेतन जग के लखत आप, दई द्वादशांग वानी अलाप॥१॥
अब पंचम काल मंझार आय, चांदनपुर अतिशय दई दिखाय।
टीले के अन्दर बैठ वीर, नित हरा गाय का आप क्षीर॥२॥
ग्वाला को फिर आगाह कीन, जब दर्शन अपना आप दीन।
मूरत देखी अति ही अनूप, है नग्न दिगम्बर शान्ति रूप॥३॥
तहां श्रावक जन बहु गये आय, कीन्हे दर्शन मन वचन काय।

है चिन्ह शेर का ठीक जान, निश्चय हैं ये श्री वर्द्धमान ॥४॥
सब देशन के श्रावक जु आए, जिन भवन अनूपम दियो बनाय
फिर शुद्ध दई वेदी कराय, तुरतहि गजरथ सु लियो सजाय ॥५॥
ये देख ग्वाल मन में अधीर, मम गृह को त्यागो नहीं वीर।
तेरे दर्शन विन तजूं प्राण, सुन मेरी हे कृपा निधान ॥ ६ ॥
कीने रथ मे प्रभु विराजमान, रथ हुआ अचलगिरि के समान।
तब तरह तरह के किये जोर, बहुतक रथ गाडी दिये तोड ॥७॥
निशि मांहि स्वप्न सचिवहिं दिखात, रथचले ग्वालका लगत हाथ।
भोरहि झट चरण दियो बनाय, संतोष दियो ग्वालहिं कराय ॥८॥
करि जय जय प्रभु की करी टेर, रथ चल्यो फेर लागि न देर।
बहु नृत्य करन बाजे बजाइ, स्थापन कीने तहँ भवन जाइ ॥९॥
इक दिन मंत्री को लगा दोष धरि तोप कही नृप खाई रोष।
तुमको जब ध्याया वहां वीर, गोला से झट बच गया वजीर।१०।
मंत्री नृप चांदन गांव आय, दर्शन करि पूजा की बनाय।
करि तीन शिखर मंदिर रचाय, कंचन कलशा दीने धराय ॥११॥
यह हुक्म कियो जयपुर नरेश, सालाना मेला हो हमेश।
अब जुडन लगे बहु नर औ नार, तिथि चैत सुदी पूनों मंझार।
मीना गूजर आवें विचित्र, सब वर्ण जुडे करि मन पवित्र ॥
बहु निरत करत गावें सिहाय, कोइ कोई दीपक रह्या चढाय।
केई जय २ शब्द करे गम्भीर, जय जय जय हे श्री महावीर ॥
जैनी जन पूजा रचत आन, केई छत्र चमर के करत दान।
जिसकी जो मन इच्छा करंत, मन वांछित फल पावै तुरंत ॥
जो करे वंदना एक वार, सुख पुत्र संपदा हो अपार।
जो तुम चरणों मे रक्खें प्रीत, जाको जग में को सके जीत ॥
है शुद्ध यहां का पवन नीर, जहां अति विचित्र सरिता गंभीर।
पूरनमल पूजा रची सार, हो भूल लेउ सज्जन सुधार ॥

मेरा है शमशाबाद ग्राम, त्रिकाल करूं प्रभु को प्रणाम।
श्री वर्धमान तुम गुणनिधान उपमा न बनी तुम चरनन की।
है चाह यही नित बनी रहे अभिलाष तुम्हारे दरशन की॥

दोहा—अष्ट कर्म के दहन को पूजा रची विशाल।
पढ़े सुने जो भाव से छूटें जग जंजाल ॥अर्घं॥
संवत् जिन चौवीस सौ, है बासठ की साल।
एकादश कार्तिक वदी, पूजा रची सम्हाल॥

॥ इति आशीर्वादः ॥

श्रीपद्मपुरा में विराजित

श्री पद्म प्रभु पूजा

दोहा

श्रीधर नन्दन पद्म प्रभु, वीतराग जिननाथ।
विघन हरण मंगल करन, नमों जोरि जुग हाथ॥
जन्म महोत्सव के लिए, मिलकर सब सुर राज।
आये कौशाम्वी नगर, पद पूजा के काज॥
पद्मपुरी में पद्म प्रभु, प्रगटे प्रतिमा रूप।
परम दिगम्वर शांतिमय, छवि साकार अनूप॥
हम सब मिल करके यहां, प्रभु पूजा के काज।
आह्वानन करते सुखद, कृपा करो महाराज॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ ठः ठः। स्थापनं
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

[अष्टक]

क्षीरोदधि उज्ज्वल नीर, प्रासुक गन्ध भरा।
कंचन झारी में लेय, दीनो धार धरा॥

वाडा के पद्म जिनेश, मंगल रूप सही।
काटो सब क्लेश महेश, मेरी अर्ज यही ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० ।
चन्दन केशर करपूर, मिश्रित गन्ध धरों।
शीतलता के हित देव, भव आताप हरो ॥ वाड़ा के० ॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय भवताप विनाशनाय चंदनं नि० ।
ले तंदुल अमल अखड, थाली पूर्ण भरो।
अक्षय पद पावन हेतु, हे प्रभु पाप हरो ॥ वाड़ाके०
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ।
ले कमल केतकी वेल, पुष्प धरूँ आगे।
प्रभु सुनिये हमरी टेर, काम कला भागे ॥ वाडाके०
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं नि० ।
नैवेद्य तुरत बनवाय, सुन्दर थाल सजा।
मम क्षुधा रोग नश जाय, गाऊं वाद्य वजा। वाड़ाके०
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० ।
हो जगमग ज्योति, सुन्दर अनियारी।
ले दीपक श्री जिनचन्द, मोह नशे भारी ॥ वाड़ाके०
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि० ।
ले अगर कपूर सुगंध, चंदन गन्ध महा।
खेवत हों प्रभु ढिग आज, आठों कर्म दहा ॥ वाड़ाके०
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०
श्रीफल बादम सुलेय, केला आदि हरे।
फल पाऊं शिव पद नाथ, अरपूं मोद भरे ॥वाड़ाके०
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।
जल चन्दन अक्षत पुष्प, नेवज आदि मिला।
मैं अष्ट द्रव्य से पूज, पाऊं सिद्ध सिला ॥ वाड़ा के०

ॐ ह्रीं श्रीं पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि० ।

अर्घ चरणों का

चरण कमल श्री पद्म के, वन्दों मन वच काय ।
अर्घ चढाऊँ भाव से, कर्म नष्ट हो जाय ॥ वाड़ाके०

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र के चरणों में अर्घ नि० ।

भूमि में विराजमान का अर्घः—

धरती में श्री पद्म की पद्मासन आकार ।
परम दिगम्बर शान्तिमय, प्रतिमा भव्य अपार ॥
सौम्य शक्ति अति कान्तिमय, निर्विकार साकार ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ ले, पूजों विविध प्रकार ॥ वाड़ा०

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय भूमिमें स्थित समय अर्घ नि० ।

[पंच कल्याणक]

[हर एक दोहा के वाद नीचे लिखी अचरी पढना चाहिये]

श्री पद्म प्रभु जिनराज जो, मोहे राखो हो शरना ॥

दोहा—माघ कृष्ण छट मे प्रभो, आये गर्भ मझार ।
मात सुसीमा का जनम, किया सफल करतार ॥श्री पद्म०

ॐ ह्रीं माघ कृष्णा षष्ठी दिने गर्भ मंगल प्राप्ताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कार्तिक सुद तेरस तिथि, प्रभो लिया अवतार ।
देवों ने पूजा करी, हुआ मंगलाचार ॥ श्री पद्म०

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ला त्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी, तृणवत बंधन तोड़ ।
तप धारो भगवान ने, मोह कर्म को मोड़ ॥ श्री पद्म० ॥

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ल त्रयोदश्यां तप कल्याणकप्राप्ताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत्र शुक्ल की पूर्णिमा, उपज्यो केवलज्ञान।
भवसागर से पार हो, दिया भव्य जन ज्ञान ॥ श्री पदम० ।
ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानाप्राप्ताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

फाल्गुन वदी सुचोथ को मोक्ष गये भगवान।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजौं धर ध्यान ॥ श्री पदम०
ॐ ह्रीं फाल्गुण कृष्णा चतुर्थी दिने मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा—चौबीसों अतिशय सहित, बाड़ा के भगवान।
जयमाला श्री पद्म की, गाऊँ सुखद महान ॥

पद्धरि छन्द

जय पद्मनाथ परमात्म देव। जिनकी करते सुर चरण सेव।
जय पदम २ प्रभु तन रसाल। जय २ करते मुनिमन विशाल ॥
कोशाम्बी से तुम जन्म लीन। बाड़ा में बहु अतिशय करीन।
एक जाट पुत्र ने जमीं खोद। पाया तुमको होकर समोद ॥
सुनकर हर्षित हो भविक वृन्द। आकर पूजा की दुख निकन्द।
करते दुखियों का दुःख दूर। हो नष्ट प्रेत बाधा जरूर ॥
डाकिनि शाकिनि सब होय चूर्ण। अन्धे हो जाते नेत्र पूर्ण ॥
श्रीपाल सेठ अंजन सुचोर। तारे तुमने उनको विभोर ॥
अरु नकुल सर्प सीता समेत। तारे तुमने निज भक्ति हेत ॥
हे सकट मोचन भक्त पाल। हमको भी तारो गुण विशाल ॥
विनती करता हूँ बार बार। होवे मेरा दुख क्षार क्षार ॥
मीना गूजर सब जाट जैन, आकर पूजै कर तृप्त नैन ॥ ६ ॥
मन वच तन से पूजे जो कोय, पावे वे नर शिवसुख जु सोय।

ऐसी महिमा तेरी दयाल, अब हम पर भी होवो कृपाल ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा विधि जानूं नहीं, नहिं जानूं आह्वान।
भूल चूक सब माफ कर, दया करो भगवान॥

इत्याशीर्वादः।

देव, शास्त्र गुरू-पूजा

[श्री युगल बी० ए०, साहित्यरत्न कृत].

स्थापना

केवल-रविकिरणों से जिसका सम्पूर्ण प्रकाशित है अन्तर।
उस श्री जिनवाणी में होता तत्त्वों का सुन्दरतम दर्शन॥
सुदर्शन बोध चरण पथ पर, अविरल जो बढते हैं मुनिगण।
उन देव परम आगम गुरु को शत शत वंदन शत शत वंदन॥

जल

इन्द्रिय के भोग मधुर विष सम, लावण्यमयी कंचन काया।
यह सब कुछ जड की क्रीडा है, मैं अब तक जान नहीं पाया॥
मैं भूल स्वयं के वैभव को, पर ममता में अटकाया हूं।
अब निर्मल सम्यक् नीर लिये, मिथ्या मल धोने आया हूँ॥

चन्दन

जड़ चेतन की सब परिणति प्रभु, अपने अपने में होती है।
अनुकूल कहे प्रतिकूल कहे, यह झूंठी मन की वृत्ति है॥
प्रतिकूल संयोगों में क्रोधित होकर संसार बढाया है।
सन्तप्त हृयय प्रभु! चंदन सम, शीतलता पाने आया है॥

अक्षत

उज्ज्वल हूं कुंद धवल हूं प्रभु, पर से न लगा हूँ किंचित् भी।
फिर भी अनुकूल लगे उन पर करता अभिमान निरन्तर ही॥

जड पर झुक झुक जाता चेतन, की मार्दव की खंडित काया।
निज शाश्वत अक्षत-निधि पाने, अब दास चरण-रज मे आया॥

पुष्प

यह पुष्प सुकोमल कितना है, तन में माया कुछ शेष नहीं।
निज अन्तर का प्रभु! भेद कहूँ, उनमें ऋजुता का लेश नहीं॥
चिंतन कुछ, फिर सम्भाषण कुछ, किरिया कुछ की कुछ होती है।
स्थिरता निज में प्रभु पाऊ जो, अन्तर का कालुष धोती है॥

नैवेद्य

अब तक अगणित द्रव्यों से प्रभु! भूख न मेरी शान्त हुई।
तृष्णा की खाई खूब भरी, पर रिक्त रही वह रिक्त रही॥
युग युग से इच्छा सागर मे, प्रभु! गोते खाता आया हूँ।
पंचेन्द्रिय मन के पट् रस तज, अनुपम रस पीने आया हूं॥

दीप

जग के जड़ दीपकको अब तक, समझा था मैंने उजियारा,
झंझा के एक झकोरे में जो बनता घोर तिमिर कारा।
अतएव प्रभो! यह नश्वर दीप, समर्पण करने आया हूं,
तेरी अन्तर लौ से निज अन्तर दीप जलाने आया हूं॥

धूप

जड़ कर्म घुमाता है मुझको यह मिथ्या भ्रान्ति रही मेरी,
मैं राग-द्वेष किया करता जब परिणति होती जड़ केरी।
यों भाव करम या भाव मरण, सदियों से करता आया हूं,
निज अनुपम-गंध अनल से प्रभु पर गंध जलाने आया हूं॥

फल

जग में जिसको निज कहता मैं, वह छोड़ मुझे चल देता है,
मैं आकुल व्याकुल हो लेता, व्याकुल का फल व्याकुलता है।

मैं शान्त निराकुल चेतन हूँ, है मुक्तिरमा सहचर मेरी,
यह मोह तड़क कर टूट पड़े प्रभु ! सार्थक फल पूजा तेरी ॥

अर्घ

क्षण भर निज रस को पी चेतन मिथ्या मल को धो देता है।
काषायिक भाव विनष्ट किये निज आनन्द अमृत पीता है ॥
अनुपम सुख तव विलसित होता केवल रवि जग मग करता है।
दर्शन बल पूर्ण प्रगट होता यह ही अर्हन्त अवस्था है ॥
यह अर्घ समर्पण करके प्रभु ! निज गुण का अर्घ बनाऊँगा।
और निश्चित तेरे सदृश प्रभु ! अर्हन्त अवस्था पाऊँगा ॥

स्तवन

भव वन में जीभर घूम चुका, कण कण को जी भर भर देखा,
मृग-सम मृग-तृष्णा के पीछे, मुझको न मिली सुख की रेखा ॥१॥
झूठे जग के सपने सारे, झूठी मन की सब आशायें।
तन-जीवन-यौवन-अस्थिर हैं, क्षण भंगुर पल में मुरझाए ॥२॥
सम्राट महा बल सेनानी उस क्षण को टाल सकेगा क्या।
अशरण मृत काया में हर्षित, निज जीवन डाल सकेगा क्या ॥३॥
संसार महा दुख-सागर के, प्रभु दुख मय सुख-आभासों में।
मुझको न मिला सुख क्षण भर भी, कंचन-कामिनि-प्रासादों में ॥४
मैं एकाकी एकत्व लिए, एकत्व लिए सबही आते।
तन धन को साथी समझा था, पर ये भी छोड़ चले जाते ॥५॥
मेरे न हुए ये मैं इनसे, अति भिन्न अखंड निराला हूँ।
निज में पर से अन्यत्व लिये, निज सम रस पीने वाला हूँ ॥६॥
जिनके शृंगारों में मेरा, यह महंगा जीवन घुल जाता।
अत्यन्त अशुचि जड़ काया से, इस चेतन का कैसा नाता ॥७॥
दिन रात शुभाशुभ भावों से, मेरा व्यापार चला करता !

मानस वाणी और काया से, आश्रव का द्वार खुला रहता ॥८॥
शुभ और अशुभ की ज्वाला से, झुलसा है मेरा अन्तरतल।
शीतल समकित किरणें फूटें, संवर से जागे अन्तर्बल ॥६॥
फिर तप की शोधक वह्नि जगे, कर्मों की कड़ियाँ टूट पडे।
सर्वाङ्ग निजात्म प्रदेशों से, अमृत के निर्झर फूट पड़ें ॥१०॥
हम छोड़ चलें यह लोक तभी, लोकांत विराजें क्षण मे जा।
निज लोक हमारा वासा हो, शोकांत बनें फिर हमको क्या ॥११॥
जागे मम दुर्लभ वोधि प्रभो ! दुर्नयतम सत्वर टल जावे।
बस ज्ञाता दृष्टा रह जाऊं, मद-मत्सर-मोह-विनश जावे ॥१२॥
चिर रक्षक धर्म हमारा हो, हो धर्म हमारा चिर साथी।
जग में न हमारा कोई था, हम भी न रहें जग के साथी ॥१३॥
चरणों मे आया हूँ प्रभुवर, शीतलता मुझको मिल जावे।
मुर्झाई ज्ञान लता मेरी, निज अंतर्वल से खिल जावे ॥१४॥
सोचा करता हूँ भोगों से, बुझ जावेगी इच्छा ज्वाला।
परिणाम निकलता है लेकिन, मानों पावक मे घी डाला ॥१५॥
तेरे चरणों की पूजा से, इन्द्रिय सुख की ही अभिलाषा।
अब तक न समझ ही पाया प्रभु ! सच्चे सुख की भी परिभाषा॥१६
तुम तो अविकारी हो प्रभुवर ! जग मे रहते जग से न्यारे।
अतएव झुके तव चरणों में, जग के माणिक मोती सारे ॥१७॥
स्याद्वादमयी तेरी वाणी, शुभनय के झरने झरते हैं।
उस पावन नौका पर लाखों प्राणी भव-वारिधि तिरते हैं ॥१८॥
हे गुरुवर ! शाश्वत सुख दर्शक, यह नग्न स्वरूप तुम्हारा है।
जग की नश्वरता का सच्चा, दिग्दर्शन करने वाला है ॥१६॥
जब जग विषयों में रच पच कर, गाफिल निद्रा में सोता हो।
अथवा वह शिव के निष्कंटक, पथ में विष कंटक बोता हो ॥२०॥
हो अर्ध निशा का सन्नाटा, वन में वनचारी चरते हों।

तब शान्त निराकुल मानस तुम, तत्त्वों का चिंतन करते हो ॥२१॥
करते तप शैल नदी तट पर, तरु तल वर्षा की झड़ियों में।
समता रस पान किया करते, सुख दुख दोनों की घड़ियों में ॥२२॥
अन्तर ज्वाला हरती वाणी, मानों झड़ती हों फुलझड़ियां।
भव बन्धन तड तड़ टूट पड़ें, खिल जावें अन्तर की कलियां ॥२३॥
तुम सा दानी क्या कोई हो, जग को देदी जग की निधियां।
दिन रात लुटाया करते हो, सम शम की अविनश्वर मणियां ॥२४॥
हे निर्मल देव ! तुम्हें प्रणाम, हे ज्ञान दीप आगम ! प्रणाम।
हे शान्ति त्याग के मूर्तिमान, शिव पथ पंथी गुरुवर ! प्रणाम। इति

॥ पंच परमेष्ठी की पूजा ॥

दोहा—मंगल मय मंगल करन, पंच परम पदसार।
अशरण को येही शरण, उत्तम लोक मंझार ॥ १ ॥
चव अरिष्ट को नष्ट कर अनंत चतुष्टय पाय।
परमइष्ट, अरिहन्त पद, वन्दौं शीष नवाय ॥ २ ॥

वसुविधिहरि, वसु भू वसे, वसुगुणयुत शिव ईस।
नमूं नाम वसु अंग तिन, दायक पद जगदीश ॥ ३ ॥

आप धरैं आचार शुभ, पर अचरावन हार !
सो आचारज गुणनधर, नमूं शीस कर धार ॥ ४ ॥

आप अंग पूरव पढैं, शिषनि पढ़ावत सोय,
ते उवझाय सु नाय सिर, नमूं देव धी मोय ॥ ५ ॥

मोक्ष मार्ग साधन उदित, धरैं मूल गुण साध,
मैं शिव साधन साधु पद, नमूं हरन भव बाध ॥ ६ ॥

इह विधि पंचनि प्रणमिकर, रचूं पूज सुखकार।
तातैं प्रथमहिं पढ़नि को, समुच्चय जजिहूँ सार ॥७॥ पु०

अथ पंच परमेष्ठी सामान्य पूजा

अडिल्ल—प्रथम नमूं अरिहंत सिद्ध अरु सूरही,
उपाध्याय सब-साधु नमूं गुण पूरही।
परम इष्ट यह पंच जजों जुग पादही,
आह्वानन विधि करूं सगुन गण गायही ॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंतादि सर्वसाधुपर्यंत पंचपरमेष्टिन् अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। श्री अरिहंतादि सर्व साधु पर्यन्त पंच परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। श्री अरिहंतादि सर्वसाधुपर्यन्त पंचपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट सन्नि०

॥ अष्टाकम्-गीता छन्द ॥

वर मिष्ट स्वच्छ सुगंध शीतल, सुर सरित जल लाइये।
भरि कनक झारी धार देतैं, जन्म मृत्यु नशाइये॥
अरिहंत सिद्ध आचार्य, अध्यापक सुपद सब साधही।
पूजूं सदा मन वचन तन तैं, हरो मो भव बाधही॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधुभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलय मांहि मिलाय केशर, घसों चन्दन बावना।
भृंगार भर करि चरण पूजन, भव आताप नसावना॥ अरि०। चंदन
अक्षत अखंडित सुरभि श्वेत हि, लेत भर करि थाल ही।
जे जजैं भविजन भाव सेती, अक्षयपद पावैं सही॥ अरि०। अक्षतं
स्वर्ण रूप्य मई मनोहर, विविध पुष्प मिलाइये।
भरि कनक थाल सु पूजि हैं, भविसमर बान नशाइये॥ अरि०। पुष्पं
बहु मिष्ट मोदक सुष्ट फैनी, आदि बहु पकवान ही।
भरि थाल प्रभु पद जजैं विधितैं, नसैं क्षुत् दुख नाश ही॥ अरि०। नैवे

मणि स्वर्ण आदि उद्योत कारण, दीप बहुविधि लीजिये,
तम मोह पटल विध्वंसने जुग पाद पूजन कीजिये ॥ अरि० । दीपं०
कर्पूर अगर सुगन्ध चंदन, कनक धूपायन भरैं,
भवि करहि पूजा भाव सेती, अष्ट कर्म सबै जरैं ॥ अरि० । धूपं०
बादाम श्रीफल लौंग खारिक दाख पुंगी आदि ही,
भरि थाल भविजन पूजि करते, मोक्ष फल पावैं मही ॥ अरि० । फलं
जल गंध अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फलो गही,
करिं अर्घ पूजैं पंचपद को, लहैं शिव सुख वृन्द ही ॥ अरि० । अर्घं

जयमाला

दोहा—नमूं प्रथम अरिहंत सिद्ध, आचारज उवझाय ।
साधु सकल विनती करूं, मन वच तन सिरनाय ॥ १ ॥

॥ पद्धड़ी छन्द ॥

चव घाति चूर अरिहंत नाम, पायो च्युत दोष न सु गुण धाम ।
तिनमें षट चाल जु मुख्य थाय, तिनमें दस गुण जनमत उपाय ॥२
जय केवल ज्ञान उद्योत ठान, उपजे दश गुण को कहि बखान ।
चौदह गुण देवनि करत होय, तिनकी महिमा वरणे सु कोय ॥३॥
वर अष्ट प्रातिहारज संयुक्त, चामर छत्रादिक नाम युक्त ।
केवल दर्शन वरज्ञान पाय, सुख वीर्य अनन्त चतुष्ट पाय ॥४॥
ये कहिवे के गुण हैं छियार, गुण अनंत लसैं तिनको न पार ।
तातैं करि हों करि अर्घ लेय, मोहि तारि २ अरिहंत देव ॥ ५ ॥
वसुविधिहरि वसु भू बसे सिद्ध, वसुगुण आदिक लहि अत्यंतरिद्ध ।
पूजूं मन वच तन अर्घ ल्याय, मोकूं तुम थानक में बसाय ॥६॥
वर द्वादश तप दस धर्म भेव, षट् आवस पंचाचार येव ।
त्रय गुप्ति सुगुन छत्तीसपाय, सब संघ ज्येष्ठ गुरु सूरिथाय ॥७॥
बहु जीवन वृष को मग बताय, शिव संपति दीनी सु मुनिराय ।
पूजूं मन वच तन अर्घ लेय, मोकूं अजरामर पद करेय ॥८॥

चर ग्यारह अंगरु चवद पूर्व, पढ़ि उपाध्याय पद लयौ पूर्व।
तिनके पद पूजत अर्घ लाय, सब भ्रम नाशन निज ज्ञान पाय ॥६॥
गुण मूल अष्ट विंशति अनूप, धरि हैं सब साधु सु शिव सरूप।
व्रत पंचसमिति पणइन्द्र रोध, षट् आवस भूमि सु सयन सोध ॥१०
तजि स्नान वसन कच लौंच ठानि, लघु भोजन ठाढ़े करत आन।
दंतौन त्याग ये अष्ट वीस, धरि साधैं शिव-तिन नमत शीस ॥११
करि अष्ट द्रव्य को अर्घ लेय, सब साधुन की करि हों जु सेव!
मैं मन वच तन तैं शीश नाय, नमि हों मो शिव मग को बताय ॥१२
जल थल रन बन मग विकट मांहि, ये पंच परम गुरु शरण थांहि।
डायन प्रेतादि उपद्र मांहि, इन पंच परम बिन को सहाय ॥१४॥
बहु जीव जपत नवकार येव, रिद्ध सिद्ध लही संकट हरेव।
सो कथन पुरान पुरान मांहि, हम ताकी महिमा का कहाहिं ॥१४॥
घत्ता—ये पंच अराधै भव दुख वाधे, शिव संपति सहजै वरई॥
मैं मन वच गाऊं शीश नवाऊं, मो अविचल थानहि धरई॥

ॐ ह्रीं पचपरमेष्ठी जयमाला पूर्णार्घं।

सोरठा विघन विनाशनहार, मंगलकारी लोकमें।
सो तुमको भी सार, पंच सकल मंगल करे॥

इत्याशीर्वादः

सिद्ध पूजा भाषा

स्वयं सिद्ध जिन भवन रतनमई बिम्ब विराजै।
नमत सुरासुर इन्द्र, दरस लखि रवि शशि लाजै॥
चार शतक पचास आठ, भुवि लोक बताये।
तिन पद पूजन हेत, भाव धरि मंगल गाये॥
मंगलमय मंगल करण, शिवपद दायक जानिकै।
आह्वानन करके जजौं, सिद्ध सकल उर आनिके॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

उज्ज्वल जल शीतल लाय, जिन गुण गावत हैं ।
सब सिद्धन कौं सु चढ़ाय, पुण्य बढ़ावत हैं ॥
सम्यक सुज्ञायक जान, यह गुण गावतु हैं ।
पूजौं श्रीसिद्ध महान, बलि बलि जावतु हैं ॥१॥ जलं

करपूर सु केसर सार, चन्दन सुखकारी ।
पूजों श्रीसिद्ध निहार, आनन्द मनधारी ॥
सब लोकालोक प्रकाश, केवल ज्ञान जग्यो ।
यह ज्ञान सुगुण मनभास, निजरस मांहि पग्यो ॥२॥ चंदनं

मुक्ताफल की उनहार अक्षत धोय धरे ।
अक्षय पद प्रापति जान, पुण्य भंडार भरे ॥
जग में सुपदारथ सार, ते सब दरसावैं ।
सो सम्यग्दर्शन सार, इह गुण मनभावैं ॥३॥ अक्षतं

सुन्दर सुगुलाब अनूप, फूल अनेक कहे ।
श्री सिद्धन पूजत भूप, बहुविधि पुण्य लहे ॥
तहां वीर्य अनन्तो सार, यह गुण मनमानो ।
संसार समुद्रतैं पार, कारक प्रभु जानो ॥४॥ पुष्पं॥

फेनी गोंजा पकवान, मोदक सरस बने ।
पूजों श्री सिद्ध महान, भूख विथा जु हने ॥
झलकै सब एकहि बार, ज्ञेय कहे जितने ।
यह सूक्षमतागुण सार, सिद्धनके सु तने ॥५॥ नैवेद्य

दीपक की ज्योति जगाय, सिद्धन पूजों ।
करि आरति सनमुख जाय, निरमल पद हूजो ॥
कुछ घाटि न बाढ़ि प्रमाण, अगुरुलघु गुण राख्यो ।
हम सीस नमावत आन, तुमगुण मुख भाख्यो ॥६॥ दीपं

वरधूप सु दश विधि ल्याय, दस त्रिधि गंध धरैं ॥
वसु कर्म जलावत जाय, मानो नृत्य करैं।
इक सिद्धमे सिद्ध अनंत, सत्ता सब पावै।
यह अवगाहन गुण संत, सिद्धनके गावै ॥७॥ धूपं॥
ले फल उत्कृष्ट महान, सिद्धन को पूजौं।
लहि मोक्ष परमगुणधाम, प्रभुसम नहिं दूजौ ॥
यह गुण बाधाकरि हीन, बाधा नाश भई।
सुख अव्याबाध सुचीन, शिवसुन्दरि सु लई ॥ ८ फलं॥
जल फल भरि कंचन थाल, अर्चतु करजोरी।
प्रभु सुनियो दीनदयाल, विनती है मोरी ॥
कर्मादिक दुष्ट महान, इनको दूर करो।
तुम सिद्ध सदा सुखदान, भवभव दु ख हरो ॥ ६ । अर्घं ॥

जयमाला–दोहा

नमो सिद्ध परमात्मा, अद्भुत परम विशाल।
तिन गुण महिमा अगम है, सरस रची जयमाल ॥

पद्धडीः–जयजय श्रीसिद्धनकू प्रणाम, जय शिवसुखसागर के सुथान।
जय वलि वलिजात सुरेश जान, जय पूजत तनमन हर्ष ठान ॥१॥
जय क्षायिक गुण सम्यक्त्व लीन, जय केवल ज्ञान सुगुन नवीन।
जय लोकालोक प्रकाशवान, यह केवल अतिशय हिये आन ॥२॥
जय सरव तत्त्व दरसे महान, सोइ दरसन गुन तीजो महान।
जय वीर्य अनन्तो है अपार, जाकी पटतर दूजा न सार ॥३॥
जय सूक्ष्मता गुण हिये धार, सब ज्ञेय लख्यो एकहि सुवार।
इक सिद्ध मे सिद्ध अनन्त जान, अपनी अपनी सत्ता प्रमाण ॥४॥
अवगाहन गुण अतिशय विशाल, तिनके पद वन्दों नमित भाल।
कछु घाटि न वाधि कहे प्रमाण, गुण अगुरुलघू धारैं महान ॥५॥
जय बाधा रहित विराजमान, सोइ अव्याबाध कह्यो बखान।

ये वसुगुण हैं व्यवहार संत, निश्चय जिनवर भाषे अनन्त ॥६॥
तिनको भविजन मन वचन काय, पूजत वसुविधि, अति हर्ष लाय ॥७॥
सब सिद्धनि के गुण कहे गाय इन गुण करि शोभित हैं जिनाय।
सुरपति फणिपति चक्री महान, बलि हरि प्रतिहरि मनमथ सुजान।
गणपति मुनिपति मिल धरत ध्यान, जय सिद्ध शिरोमणि जगप्रधान ॥८

सोरठा—ऐसे सिद्ध महान, तुम गुण महिमा अगम है।
वरणन कर्यो बखान, तुच्छ बुद्धि कवि "लाल" जू ॥
ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमोऽर्घं।

दोहा—करता की यह वीनती, सुनो सिद्ध भगवान।
मोहि बुलाओ आप ढिग, यही अरज उर आन ॥इत्याशीर्वाद:।

चौसठ-ऋद्धि (समुच्चय) पूजा

गीता छन्द:—संसार सकल असार जामें सारता कछु है नहीं,
धन धाम धरणी और गृहिणी त्यागि लीनी वन मही।
ऐसे दिगम्बर होगये, अरु होयंगे वरतत सदा,
इत थापि पूजों मन वचन करि देहु मगल विधि तदा॥१॥

ॐ ह्रीं भूतभविष्यद्वर्तमानकालसम्बन्धि पंचप्रकारसर्वऋषीश्वरा अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत, ठः ठः। अत्र मम सन्निहिता भवत भवत, वषट्।

चाल रेखता—लाय शुभ गंगाजल भरिकै, कनक भृंगार धरि करिकै।
जन्म जरमृत्यु के हरनन, यजों मुनिराज के चरणन ॥ ॥

ॐ ह्रीं भूतभविष्यद्वर्तमानकालसम्बन्धिपुलाकबकुशकुशीलनिर्ग्रंथ-स्नातकपंचप्रकारसर्वमुनीश्वरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०।

घसों काश्मीर संग चंदन, मिलावो केलिको नंदन।
करत भवतापको हरनन, यजों मुनिराज के चरणन ॥ २ ॥ चंदन ॥

अक्षत शुभचन्द्रके करसे, भरों कण थालमे सरसे।
अक्षय पद प्राप्तिके करणन, यजों मुनिराजके चरणन ॥ ३ ॥ अक्षतं॥
पहुप ल्यो घ्राणके रजन, उडत ता माहिं मकरंदन।
मनोभव वाणके हरनन, यजों मुनिराज के चरणन ॥ ४ ॥ पुष्पं ॥
लेय पक्वान्न बहुविधिके, भरो शुभ थाल सुवरणके।
असातावेदनी क्षरणन यजों मुनिराज के चरणन ॥ ५ ॥ नैवेद्यं ॥
जगमगे दीप लेकरिके, रकावी स्वर्ण मे धरिके।
मोहविध्वंस के करणन, यजों मुनिराज के चरणन ॥ ६ ॥ दीपं ॥
अगर मलयागिरी चंदन, खेयकरि धूपके गधन।
होय कर्माष्टको जरनन, यजों मुनिराज के चरणन ॥ ७ ॥ धूपं ॥
सिरीफल आदि फल ल्यायो, स्वर्ण को थाल भरवायो।
होय शुभ मुक्तिको मिलनन, यजों मुनिराजके चरणन ॥८॥ फलं ॥
जलादिक द्रव्य मिलवाए, विविध वादित्र बजवाये।
अधिक उत्साह करि तनमें, चढावों अर्घ चरणनमे ॥ ९ ॥ अर्घं ॥
सोरठा—तारण तरण जिहाज, भवसमुद्र के मांहि जे।
ऐसे श्री ऋषिराज, सुमरि सुमरि विनती करों ॥ १ ॥
पद्धडि:-जयजयजय श्रीमुनियुगल पाय, मैं प्रणमों मनवच शीशनाय।
ये सब असार संसार जानि, सब त्यागि कियो आतम कल्याण ॥२॥
क्षेत्र वास्तु अरु रत्न स्वर्ण धन धान्य द्विपद अरु चतुकचर्ण।
अरु कौप्य भांड दश बाह्य भेद, परिग्रह त्यागे नहिं रंच खेद ॥३॥
मिथ्यात्व तज्या संसार मूल, मुनि हास्य अरति रति शोक शूल।
भय सप्त जुगुप्सा स्त्रीय वेद पुनि पुरुष वेद अरु क्लीव वेद ॥४॥
क्रोध मान माया रु लोभ, ये अंतरग मे करत क्षोभ।
इम ग्रन्थ सबै चौबीस येह, तजि भए दिगम्बर नग्न जेह ॥५॥
गुण मूल धारि तजि रागदोष, तप द्वादश धरि तन करत शोष।
तृण कंचन महल मसान मित्त अरु शत्रुनिमें समभाव चित्त ॥६॥

अरु मणि पाषाण समान जास, पर परणतिमें नहिं रंच वास।
यह जीव देह लखि भिन्न भिन्न, जे निज-स्वरूप में भाव किन्न ॥७॥
ग्रीषमऋतु पर्वत शिखर वास, वर्षा में तरुतल है निवास।
जे शीतकाल मे करत ध्यान, तटिनी तट चोहट शुद्ध थान ॥८॥
हो करुणासागर गुण अगार, मुझ देहि अखय सुखको भंडार।
मैं शरण गही मुझ तार तार, मो निज स्वरूप द्यो वार वार ॥९॥
घत्ता—यह मुनिगुणमाला, परम रसाला, जो भविजन कंठै धरहिं।
सवविघ्न विनाशहिं, मंगल भासहिं, मुक्तिरमा वह नर वरही॥१०पूर्णार्घं
दोहा—सर्व मुनिन की पूज यह, करैं भव्य चित लाय।
ऋद्धि सर्व घरमे वसै, विघ्न सवैं नशि जाय॥११॥इत्याशीर्वादः

॥ तीनलोक के चैत्यालयों की (समुच्चय) पूजा ॥

तीनसैं तेताल राजू घनाकार जु लोक है। मूंड छीदे पाव कटि कर पूर्वमुख अवलोक है। त्रय वातके आधार ध्रुव निति च्यारि गति सुख दुख भरी। इन गती छेदक देव-पद हम जजनकूं मनसा करी।

ॐ ह्रीं त्रिलोक-उत्पत्तिछेदक! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः, स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधिकरणम्।

नीर निरमल क्षीर दधिको कनकझारी में भरौं, अति विनयकरि मन वैन काई आप कर ले अनुसरो। सव लोक जामन मरण छेदक देवके पदकौं जजौं, तिस लाभतैं जगमरणको दुख खेद विन सहजैं तजौं॥ ॐ ह्रीं लोक-उत्पत्ति-छेदक-जिनेभ्यो जलं॥

घसि सुगन्धित मलय चन्दन रतन पातर धारियो, तजि क्रोध मानरु लोभ माया भक्ति वसि ले टारियो। सव लोक जामन मरण

छेदक देवके पदकौं जजौं, तिस लाभतैं आताप जगकी खेद बिन सुखतैं तजौ ॥ २ ॥ चन्दनम् ॥

अक्षत उज्ज्वल खंड बिन शुभ जान मुक्ता फलधरे, इक चित्त शुद्ध संवारि आछे सुभग पातरमे करे। सो लोक जामन मरण छेदक देवके पदकौ जजौं, सो लोक के दुख छांडि सबही अखय पदकौं मैं भजौ ॥ ३ ॥ अक्षतम ॥

देवद्रुम के फूल उज्ज्वल गंध करि सब पूरि हैं, सो लेयकैं कर आपने मे खडो देव हजूरि हैं। सबलोक जामन-मरण छेदक देवके पदकौ जजौ, तब काम-भट के मान मारन सांगकौ मैं भी सजौं। ॥ ४ ॥ पुष्पं ॥

नैवेद्य षटरस पूरि सुन्दर तुरत कर में लाइयो. धरि भले पातर मांहि उर मे हरष बहुत बढाइयो। सबलोक जामन-मरण छेदक देवके पदकौं जजौं, तबरोग दुर्धर महा तीवर भूखकौं सहजैं तजौं। ॥ ५ ॥ नैवेद्य ॥

रतन दीपक कनक पातर धार कर जुग मे लिये, अति हुलसिकैं चित मन वचन शुभ जोग जिन थुति मैं किये। सब लोक जामन मरण छेदक देवके पदकौं जजौं, फल और उरमे नांहि वांछा तम अज्ञान सवै तजौ ॥ ६ ॥ दीपम् ॥

धूप गन्ध दशांग डारी भले भावनतैं करी, धरि पात्र सुन्दर लेय निजकर खेलने की विधि धरी। सब लोक जामन-मरण छेदक देवके पदकौं जजौं, तब कर्म ईंधन लेय इकठा जारने को मन सजौं ॥७॥ ॥ धूपं ॥

बिदाम श्रीफल लौंग खारक सुभग अन फल लाइयो, धरि आप कर मैं भक्ति चितकरि पूजतैं उमगाइयो। सब लोक जामन मरण छेदक देवके पदकौं जजौं, तिस लाभतैं फल मोक्ष चाहूँ और वांछा ना भजौं ॥ ८ ॥ फलम् ॥

जल मलय अक्षत पुष्प चरु ले दीप धूप फला सही, वसु द्रव्य का शुभ अर्घ ले कर चालिये पुनि की मही। सब लोक जामन-मरण छेदक देवके पदकौं जजौ, फल और उरमें चाह नाहीं काय-धरनी विधि तजौं ॥ १६ ॥ अर्घं ॥

लोक में उत्पत्ति मरणो फिरण अरहट ज्यों कहीं, थिर नाहिं जेते करम वसिहैं जगतविधि चञ्चल सही। यह छांडि जगकी रीति सब ही लोक उत्पति को हरी, तिस देवके पद सेवने को अरघ हम जिन ढिग धरी ॥१७॥ अर्घम् ॥

जयमाला

दोहा—लोक सकल सागर बन्यो, वात तीन तिस पाल।
दुख जल जग-जिय जलचरा, नकलि गमनि नहिं चाल ॥१॥

लोक सब पूर षट् द्रव्यको मानिये, और कहु लोकको भूल नहिं जानिये। जीव पुद्गल धर्माधर्मकालो सही, और आकाश की जानिये सब मही ॥ २ ॥ नाम षट् द्रव्यके बोल सारे दिये, सर्व ही आप . गुण परजय दृढ किये। नाहिं काहून तैं मिलनकी विधि करै, आपने आपने रूप सब अनुसरैं ॥ ३ ॥ जीव जो राग वसि पारकूं निज कहै, आत्मा सोहि इस लोक में दुख लहै। होय नर देव परणति अपनी किये, नरक तिरजंच होय पाप परणति लिये ॥ ४ ॥ पृथ्वी अप तेज अरु वायु तनकूं धरे, हरित में जनममृति वार केउर धरैं। थूल सूक्षम विषैं उपजि मरि मरि गयो, काय प्रत्येक साधारण तनं भयो ॥ ५ ॥ कथा तिन दुखतनी कौन भाषै सबै, और त्रसकाय की बात सुनिये अबै। होय वे-इन्द्रियां बहुत दुख पाइया. त्रय चउ अक्ष में दुःख अति गाइया ॥ ६ ॥ पंच अक्ष आदि तन सकल पाये सही, दुःख ही दुःख में काय बहुती दही। या विधि जीवचर च्यारि गति में फिर्‌यो, लोकथानक सकल मांहि जनम्यो मर्‌यो ॥ ७ ॥ भये इन दुखनितैं भीत धनि ते नरा, ठानि तप हानि कर्म थान शिव

अवतरा। जगत में फिरन की राह त्यागी सकल, होय घन ज्ञान सुख पिंड पदुई निकल ॥ ८ ॥ लोक करि पूज्य पद पाय थिरता मही, हाथ जुग जोर हम सीस पद तिन ठही। ज्ञानपद पाय तिन आप पद सुध कियो, सौर जीवनि सबैं कूं अभय पद दियो ॥ ९ ॥ ते सदा सरण मोकौं करो आपनौ, ता भजै नांहि जग पापतैं तापनों। छोड़ जगरीत कर प्रीत शिव की करी, कर्महर देवकी पूज हम इम करी॥१०

सोरठा—तीन लोक गति छेद, अजर अमर पद जिन लयो।
तिनके पद हम भेंट, अष्ट विधि पूजा करी ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं लोकोत्पत्ति छेदक जिनेभ्यो अर्घम ॥

❀ इति तीनलोक चैत्यालय समुच्चय पूजा सम्पूर्ण ❀

सोलह कारण के सोलह अर्घ

दर्शन शुद्ध न होवत जो लग, तो लग जीव मिथ्याती कहावे !
काल अनन्त फिरे भवमें, महा दुःखन को कहुं पार न पावे !
दोष पचीस रहित गुण अम्बुधि, सम्यक्दर्श शुद्ध ठहरावै ॥
ज्ञान कहे नर सोइ बडो, मिथ्या तज जिन मारग ध्यावै ॥

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धिभावनायै नमो अर्घ्यं।

देव तथा गुरुराय तथा, तप संयम शील व्रतादिक धारी।
पापके हारक कामके छारक, शल्य निवारक कर्म निवारी ॥
धर्म के धीर कषाय के भेदक, पंच प्रकार संसार के तारी।
ज्ञान कहे जु विनय सुखकारक भाव धरो मन राखो विचारी ॥

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्नताभावनायै नमो अर्घ्यं।

शील सदा सुख कारक है, अतिचार विवर्जित निर्मल कीजे।
दानव देव करें तसु सेव विषानल भूत पिशाच पसीजे ॥
शील बडो जगमें हथियार जु, शील को उपमा काहे की दीजे।
ज्ञान कहे नहीं शील बराबर, ताते सदा दृढ शील धरीजे ॥

ॐ ह्रीं शील भावनाय नमो अर्घ्यं ।

ज्ञान सदा जिनराज को भाषित आलस छोड पढै जो पढावे ।
द्वादश दोइ अनेक हुं भेद, सुनाम मती श्रुति पंचम पावे ॥
चार हूँ भेद निरन्तर भाषित, ज्ञान अभीक्षण शुद्ध कहावे ।
ज्ञान कहे श्रुत भेद अनेकजु लोकालोक हि प्रकट दिखावे ॥

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै नमो अर्घ्यं ।

भ्रातन तातन पुत्र कलत्रन, दुर्जन सज्जन ये सब खोटो ।
मन्दिर सुन्दर काय सखा सबको इह को हम अन्तर मोटो ॥
भाउ के भाव धरी मन भेदन, नाहिं संवेग पदारथ छोटो ।
ज्ञान कहै शिवसाधन को जिमि, साह को काम करे जु वणोटो ।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै नमो अर्घ्यं ।

पात्र चतुर्विध देख अनूपम, दान चतुर्विध भाव से दीजै ।
शक्ति समान अभ्यागत को अति आदर से प्रणिपत्य करीजै ॥
देवत जे नर दान सुपात्रहिं, तास अनेकहि कारण सीजे ।
बोलत ज्ञान देहि शुभ दान जु, भोग सुभूमि महा सुख लीजै ॥

ॐ ह्रीं शक्तिस्त्यागभावनायै नमो अर्घ्यं ।

कर्म कठोर गिरावन को निज, शक्ति, समान महातप कीजे ।
बारह भेद तपे तप सुन्दर, पाप जलांजलि काहे न दीजे ।
भाव धरी तप घोर करी, नर जन्म सदा फल काहे न लीजे ।
ज्ञान कहे तप जे नर भावत, ताके अनेकहि पातक छीजे ।

ॐ ह्रीं शक्तिस्तपोभावनायै नमो अर्घ्यं ।

साधु समाधि करो नर भावक, पुण्य वडो उपजे अघ छीजे ।
साधु की संगति धर्म को कारण, भक्ति करे परमारथ भीजे ।
साधु समाधि करे भव छूटत, कीर्तिछटा त्रैलोक में गाजे ।
ज्ञान कहै यह साधु वडो गिरि शृंग गुफा विच जाई विराजे ।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै नमो अर्घ्यं ।

कर्म के योग व्यथा उदई, मुनि पुंगव को तसु भेषज कीजे।
पित्त कफानल सांस भगन्दर ताप को शूल महागद छीजे॥
भोजन साथ बनाय के औषध, पथ्य कुपथ्य विचार के दीजे।
ज्ञान कहे नित ऐसी वैया,—वृत्त्य करे तसु देव पसीजे॥

ॐ ह्रीं वैयावृत्त्यकरणभावनायै नमो अर्घं।

देव सदा अरिहंत भजो जेई दोप अठारह किये अति दूरा।
पाप पखाल भये अति निर्मल, कर्म कठोर किये चकचूरा॥
दिव्य अनन्त चतुष्टय शोभित, घोर मिथ्यान्ध निवारण शूर।
ज्ञान कहे जिनराज अराधो, निरन्तर जे गुण मन्दिर पूरा॥

ॐ ह्रीं अर्हद्‌भक्तिभावनायै नमो अर्घं।

देवत ही उपदेश अनेकसु, आप सदा परमारथ धारी।
देश विदेश विहार करे दश धर्म धरे भवपार उतारी॥
ऐसे अचारज भाव धरी भज, सो शिव चाहत कर्म निवारी।
ज्ञान कहे गुण भक्ति करो नर, देखत हो मन मांहि विचारी॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै नमो अर्घं।

आगम छन्द पुराण पढावत, साहित्य तर्क वितर्क वखाने।
काव्य कथा नव नाटक पूजन, ज्योतिष वैद्यक शास्त्र प्रमाने॥
ऐसे वहुश्रुत साधु मुनीश्वर, जो मन में दोउ भावक आने।
वोलत ज्ञान धरा, मनसानजु, भाग्य विशेपतें जानहीं जाने॥

ओं ह्रीं वहुश्रुतभक्तिभावनायै नमो अर्घम्।

द्वादश अंग उपांग सदागम, ताकी निरंतर भक्ति करावे।
वेद अनूपम चार कहे तसु, अर्थ भले मन मांहि ठरावे॥
पढ वहु भाव लिखो निज अक्षर, भक्ति करी वहु पूज रचावे।
ज्ञान कहे जिन आगम भक्ति, करो सद्‌बुद्धि वहुश्रुत पावे॥

ओं ह्रीं प्रवचन भक्ति भावनायै नमो अर्घम्।

भाव धरे समता सब जीव सों स्तोत्र पढे मुख से मनहारी।
कायोत्सर्ग करे मन प्रीति सु, बन्दन देव तनो भव सारी॥
ध्यान धरी मद दूर करी दोउ, बैर करे षडकम्मन भारी।
ज्ञान कहे मुनि सों धनवन्तजु, दर्शन ज्ञान चरित्र उधारी॥

ओं ह्रीं आवश्यकपरिहाणि भावनायै नमो अर्घम्।

जिन पूज रचो परमारथ सूं जिन आलय नृत्य महोत्सव ठाणो।
गावत गीत बजावत ढोल, मृदंग के नाम सुधांग बखानो॥
संघ प्रतिष्ठा रचो जल जातरा, सद् गुरु को सामों करि आणो॥
ज्ञान कहे जिन मार्ग प्रभावना, भाग्य विशेष सुजानहि जानो॥

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना भावनायै नमो अर्घम्।

गौरव भाव धरी मनसे मुनि पुङ्गव की निवत्सल कीजे।
शील के धारक भव्य के तारक, तासु निरन्तर स्नेह धरीजे॥
धेनु यथा निज बालक को अपने जिय छोडि न और पतीजे।
ज्ञान कहे भविलोक सुनो जिन वत्सल भावधरे अघ छीजे॥

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै नमो अर्घम्।

महार्घ

गीता छन्द

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं सिद्ध पूजूं चावसों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ साधु पूजूँ भावसों॥
अर्हंत-भाषित बैन पूजूँ द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरन शिव हेत सब आशा हनी॥
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि दया-मय पूजूँ सदा।
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं।
पन मेरु नन्दीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं॥
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।

चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा ॥
चौवीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के ।
नामावली इक सहस वसु जय होय पति शिवगेह के ॥
दोहा—जल गंधाक्षत पुष्प चरु दीप धूप फल लाय ।
सर्व पूज्य पद पूज हूँ, बहु विधि भक्ति बढाय ॥
ॐ ह्रीं निर्वाण क्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

महाव्रतों का अर्घ

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैः चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे जिनव्रतमहं यजे ॥
ॐ ह्रीं महाव्रतेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

महामुनियों का अर्घ

ग्यानकौ उजागर सहज-सुखसागर, सुगुन-रतनागर विराग-रस भर्‌यौ है । सरनकी रीति हरै मरनको न भै करै, करनसौं पीठि दे चरन अनुसर्‌यौ है ॥ धरमकौ मडन भरमको विहंडन है, परम नरम ह्वैकै करमसौं लर्‌यौ है । ऐसौ मुनिराज भुवलोकमैं विराजमान, निरखि बनारसी नमसकार कर्‌यौ है ॥५॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधचारित्रधारक मुनिवरेभ्योऽर्घं नि०

शांति पाठ

शास्त्रोक्त विधि पूजा महोत्सव सुरपति चक्री करैं ।
हम सारिखे लघु पुरुष कैसे यथा विधि पूजा करैं ॥
धन क्रिया ज्ञान रहित न जाने रीत पूजन नाथजी ।
हम भक्तिवश तुम चरण आगे जोड़ लीने हाथ जी ॥१॥
दुख हरण मंगल करण आशा भरण जिन पूजा सही ।
यह चित्त में सरधान मेरे शक्ति द्यो स्वयमेव ही ॥

तुम सारिखे दातार पाये काज लघु जाचूँ कहा।
मुझ आप सम करलेहु स्वामी एक यह वांछा महा ॥२॥
संसार भीषण विपिन में वसु कर्म मिलि आतापियो।
तिस दाहतै आकुलित चितत्तैं शांतिथल कहूँ ना लियो ॥
तुम मिले शांतिस्वरूप शान्तिकरण समरथ जगपती।
वसु कर्म मेरे शान्ति करदो शान्ति में पंचम गती ॥३॥
जबलों नहीं शिव लहूँ तबलों देव ये धन पावना।
सतसंग शुद्धाचरण श्रुत अभ्यास आतम भावना ॥
तुम बिन अनन्तान्त काल गयो रुलत जगजाल में।
अब शरण आयो नाश दुख करजोड़ नांवत भाल में ॥४॥
दोहा—कर प्रमाण के मानतें गगन नपें किहिं भन्त।
त्यों तुम गुण वर्णन करूं कवि नहिं पावें अन्त ॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

विसर्जन पाठ

सम्पूर्ण विधि कर बीनऊँ इस परम पूजन ठाठ में।
अज्ञान वश शास्त्रोक्त विधितैं चूक कीन्हीं पाठ में ॥
सो होहु पूरण समस्त विधिवत् तुम चरण की शरणतैं।
बन्दों तुम्हें कर जोड़ कर उद्धार जम्मन मरणतैं।
आह्वानन स्थापन तथा सन्निधिकरण विधान जी।
पूजन विसर्जन यथाविधि जानूं नहीं गुण खान जी ॥
जो दोष लागो सो नसो सब तुम चरण की शरणतैं।
बन्दों तुम्हें कर जोड़ कर उद्धार जम्मन मरणतै ॥ २॥
तुम रहित आवागमन आह्वानन कियो निज भाव में ॥
विधि यथाक्रम निजशक्ति सम पूजन कियो अतिचाव में ॥
करहूँ विसर्जन भाव ही में तुम चरण की शरण तैं।

बन्दों तुम्हें कर जोड़ कर उद्धार जन्मन मरण तैं ॥३॥

दोहा—तीन भवन तिहुं काल में, तुमसा देव न और।

सुखकारन संकट हरन, नमों युगल करजोर ॥४॥

॥ इति विमर्जन ॥

मङ्गलाष्टकम्

श्रीमन्नम्रसुरा–सुरेन्द्र-मुकुट-प्रद्योतरत्न-प्रभा–
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठका. साधवः।
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरव. कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥१॥

नाभेयादिजिनाः प्रशस्तवदनाः, ख्याताश्चतुर्विंशति·।
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश ॥
ये विष्णुप्रतिविष्णु लाङ्गलधरा, सप्तोत्तरा विंशति.।
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥ २ ॥

ये पञ्चौषधिऋद्धयः श्रुततपो–वृद्धिं गता पञ्च ये।
ये चाष्टाङ्गमहानिमित्तकुशलाश्चाष्टौ विधाश्चारिणः ॥
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो, ये बुद्धि–ऋद्धीश्वरा·।
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः. कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥३॥

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामर-गृहे, मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः।
जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा, वक्षार-रूप्याद्रिषु ॥
इक्ष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे, द्वीपे च नन्दीश्वरे।
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥४॥

कैलाशो वृषभस्य निर्वृति-मही, वीरस्य पावापुरी।
चम्पा वा वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलोऽर्हताम ॥
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरी नेमीश्वरस्यार्हतः।
निर्वाण वनय प्रसिद्धविभवाः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥५॥

सर्पो हारलता भवत्यसिलता, सत्पुष्पदामायते ।
सम्पद्येत रसायन विषमपि, प्रीतिं विधत्ते रिपुः ।।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः, किंवा बहुब्रूमहे ।
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति तरां, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।६।।
यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां, जन्माभिषेकोत्सवो ।
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो, यः केवलज्ञानभाक् ।।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा, सम्पादितः स्वर्गिभिः ।
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।७।।
आकाशं मूर्त्यभावा-दघकुलदहना-दग्निरुर्वी क्षमाप्ता ।
नैः सङ्गाद्वायुराप-प्रगुणशमतया, स्वात्मनिष्ठैः सुयज्वा ।
सोमः सौम्यत्वयोगा-द्रविरिति च विदु-स्तेजसः सन्निधानाद् ।
विश्वात्मा विश्वचक्षु-र्वितरतु भवतां, मङ्गलं श्रीजिनेशः ।।८।।
इत्थं श्री जिनमङ्गलाष्टकमिदं, सौभाग्य-सम्पत्करं ।
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थङ्कराणां मुखाः ।।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैः, धर्मार्थकामान्विताः ।
लक्ष्मीर्लभ्यत एव मानवहिता, निर्वाणलक्ष्मीरपि ।।६।।

।। इति मङ्गलाष्टकम् ।।

अष्टम अध्याय

अहिच्छत्र पार्श्वनाथ चालीसा

शीश नवा अरिहंत को, सिद्धन करूं प्रणाम ।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम ।।
सर्वसाधु और सरस्वती, जिन मंदिर सुखकार ।
अहिच्छत्र और पार्श्वको, मन मंदिर में धार ।।

पारश नाथ जगत हितकारी । हो स्वामी तुम व्रत के धारी ।।

सुर नर असुर करें तुम सेवा। तुम ही सब देवन के देवा ॥
तुम से करम शत्रु भी हारा। तुम कीना जगका निस्तारा ॥
अश्वसैन के राज दुलारे। वामा की आंखों के तारे ॥
काशी जी के राव कहाए। सारी परजा मौज उड़ाए ॥
इक दिन सब मित्रों को लेके। सैर करन को वन में पहुंचे ॥
हाथी पर कस कर अम्बारी। इक जंगल में गई सवारी ॥
एक तपस्वी देखा वहां पर। उससे बोले वचन सुना कर ॥
तपसी! तू क्यों पाप कमाए। इस लक्कड में जीव जलाए ॥
प्रभु ने जभी कुदाल उठाया। उस लक्कड़ को चीर गिराया ॥
निकले नाग नागनी कारे। मरने के थे निकट विचारे ॥
रहम प्रभू के दिल मे आया। जभी मन्त्र णवकार सुनाया ॥
मर कर वो पाताल सिधाए। पद्मावति धरणेन्द्र कहाए ॥
तपसी मर कर देव कहाया। नाम कमठ ग्रन्थों में गाया ॥
एक समय श्री पारस स्वामी। राज छोड़ कर वन की ठानी ॥
तप करके सब करम खपाए। इक दिन कमठ वहां पर आए ॥
फौरन ही प्रभु को पहिचाना। वदला लेने को दिल ठाना ॥
बहुत अधिक बारिस बरसाई। बादल गरजे बीजि गिराई ॥
बहुत अधिक पत्थर बरसाए। स्वामी तन को नहीं हिलाए ॥
पद्मावति धरणेन्द्र भी आये। प्रभु की सेवा में चित लाये ॥
पद्मावति ने फन फैलाया। उस पर स्वामी को बैठाया ॥
धरणेन्द्र ने फन फैलाया। प्रभु के सर पर फौरन छाया ॥
यह जगह अहिच्छत्र कहाए। पात्र केशरी जहां पर आए ॥
वह पंडित ब्राह्मण विद्वाना। जिनको जाने सकल जहाना ॥
शिष्य पांच सौ संग में आए। सब कट्टर ब्राह्मण कहलाए ॥
पार्श्व नाथ का दर्शन पाया। सब ने जैन धरम अपनाया ॥
अहिच्छत्र थी सुन्दर नगरी। जहां सुखी थी परजा सगरी ॥

राजा श्री वसुपाल कहाये। वो इक जिन मन्दिर बनवाये॥
प्रतिमा पर पालिश करवाया। फौरन इक मिस्त्री बुलवाया॥
वह मिस्त्री मांस खाता था। इससे पालिश गिर जाता था॥
मुनि ने उसे उपाय बताया। पारश दर्शन व्रत दिलवाया॥
मिस्त्री ने व्रत पालन कीना। फौरन ही रंग चढ़ा नवीना॥
गदर सतावन का किस्सा है। इक माली को यों लिखा है॥
माली एक प्रतिमा को लेकर। झट छुप गया कुए के अन्दर॥
उस पानी का अतिशय भारी। दूर होय सारी बीमारी॥
जो अहिच्छत्र हृदय से ध्यावे। सो नर उत्तम पदवी पावे॥
पुत्र सम्पदा की बढती हो। पापों की एकदम घटती हो॥
है तहसील आंवला भारी। स्टेशन पर मिले सवारी॥
राम नगर इक ग्राम बरावर। जिसको जाने सब नर नागर॥
चालीसे को 'चन्द्र' बनाये। हाथ जोड़ कर शीश नवाये॥

सोरठा—नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, अहिच्छत्र में आयके॥
होय कुवेर समान, जन्म दरिद्री होय जो॥
जिसके नहिं संतान, नाम वंश जग में चले॥

❀ इति ❀

श्री महावीर चालीसा

शीश नवा अरिहंत को, सिद्धन करूं प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम॥१॥
सर्वसाधु और सरस्वती, जिन मन्दिर सुखकार।
महावीर भगवान को, मन मन्दिर में धार॥२॥

* चौपई *

जय महावीर दयालु स्वामी, वीर प्रभु तुम जग मे नामी ।
वर्धमान है नाम तुम्हारा, लगे हृदय को प्यारा प्यारा ॥
शांति छवि और मोहनी मूरत, शान हंसीली मोहनी सूरत ।
तुम ने वेष दिगम्बर धारा, कर्म शत्रु भी तुम से हारा ॥
क्रोध मान और लोभ भगाया, माया ने तुम से डर खाया ।
तू सर्वज्ञ सर्व का ज्ञाता, तुझको दुनियां से क्या नाता ॥
तुझमें नहीं राग और द्वेष, वीतराग तू हितोपदेश ।
तेरा नाम जगत मे सच्चा, जिसको जाने बच्चा बच्चा ॥
भूत प्रेत तुम से भय खावे, व्यंतर राक्षस सब भग जावें ।
महा व्याध मारी न सतावे, महा विकराल काल डर खावें ॥
काला नाग होय फन धारी, या हो शेर भयंकर भारी ।
न हो कोई बचाने वाला, स्वामी तुम्ही करो प्रतिपाला ॥
अग्नि दावानल सुलग रही हो, तेज हवा से भड़क रही हो ।
नाम तुम्हारा सब दुख खोवे, आग एक दम ठंडी होवे ॥
हिंसामय था भारत सारा, तब तुमने कीना निस्तारा ।
जन्म लिया कुण्डलपुर नगरी, हुई सुखी तब प्रजा सगरी ॥
सिद्धारथजी पिता तुम्हारे, त्रिसला के आंखों के तारे ।
छोड़े सब झंझट संसारी, स्वामी हुए बाल ब्रह्मचारी ॥
पंचम काल महा दुखदाई, चांदनपुर महिमा दिखलाई ।
टीले मे अतिशय दिखलाया, एक गाय का दूध गिराया ॥
सोच हुआ मन मे ग्वाले के, पहुँचा एक फावड़ा ले के ।
सारा टीला खोद बगाया, तब तुमने दर्शन दिखलाया ॥
जोधराज को दुख ने घेरा, उसने नाम जपा जब तेरा ।
ठंडा हुआ तोप का गोला, तब सबने जयकारा बोला ॥
मन्त्री ने मन्दिर बनवाया, राजा ने भी दरब लगाया ।

बड़ी धर्मशाला बनवाई, तुमको लाने की ठहराई ॥
तुमने तोड़ी बीसों गाड़ी, पहिया मसका नहीं अगाड़ी ।
ग्वाले ने जो हाथ लगाया, फिरतो रथ चलता ही पाया ॥
पहले दिन वैसाख वदी के, रथ जाता है तीर नदी के ।
मैना गूजर सब आते हैं, नाच कूद चित उमगाते हैं ॥
स्वामी तुमने प्रेम निभाया, ग्वाले का तुम मान बढ़ाया ।
हाथ लगे ग्वाले का जब ही, स्वामी रथ चलता है तब ही ॥
मेरी है टूटी सी नैय्या, तुम बिन कोई नहीं खिवैया ।
मुझ पर स्वामी जरा कृपा कर, मैं हूँ प्रभु तुम्हारा चाकर ॥
तुमसे मैं अरु कुछ नहीं चाहूँ, जन्म २ तव दर्शन पाऊं ।
चालीसे को 'चन्द्र' बनावे, वीर प्रभु को शीश नमावे ।
सोरठा—नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन ।
खेय सुगन्ध अपार, वर्धमान के सामने ॥
होय कुवेर समान, जन्म दरिद्री होय जो ।
जिसके नहिं संतान, नाम वंश जग में चले ॥

॥ इति ॥

श्री पद्मप्रभु चालीसा

दोहा—शीश नवा अरिहंत को, सिद्धन करू प्रणाम ।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम ॥
सर्व साधु और सरस्वती, जिन मन्दिर सुखकार ।
पद्मपुरी के 'पद्म' को, मन मन्दिर में धार ॥

* चौपई *

जय श्रीपद्मप्रभु गुणधारी, भविजन के तुम हो हितकारी ।
देवों के तुम देव कहाओ, पाप भक्त के दूर हटाओ ॥
तुम जग में सर्वज्ञ कहाओ, छट्ठे तीर्थंकर कहलाओ ।

तीनकाल तिहुँ जग की जानो, सब बातें क्षण में पहिचानो ॥
वेष दिगम्बर धारन हारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे।
मूर्ति तुम्हारी कितनी सुन्दर, दृष्टि सुखद जमती नासापर ॥
क्रोध मान मद लोभ भगाया, राग द्वेष का लेश न पाया।
वीतराग तुम कहलाते हो, सब जग के मन को भाते हो ॥
कौशांबी नगरी कहलाये, राजा धारण जी बतलाए।
सुन्दर नार सुसीमा उनके, जिसके उर से स्वामी जन्मे ॥
कितनी लम्बी उमर कहाई, तीस लाख पूरब बतलाई।
इकदिन हाथी बंधा निरखकर, झट आया वैराग्य उमड़कर ॥
कातिक सुदी त्रयोदश भारी, तुमने मुनिपद दीक्षा धारी।
सारे राजपाट को तज के, जभी मनोहर वन मे पहुँचे ॥
तपकर केवल ज्ञान उपाया, चैत सुदी पदरम कहलाया।
एक सौ दस गणधर बतलाये, मुख्य व चामर कहलाये ॥
लाखों मुनि अर्जिका लाखों, श्रावक और श्राविका लाखों।
असंख्यात तिर्यंच बताये, देव देव गिनत नहीं पाये ॥
फिर सम्मेद शिखर पर जाके, शिवरमणी को ली परनाके।
पञ्चम काल महा दुखदाई, जब तुमने महिमा दिखलाई ॥
जयपुर राज्य ग्राम बाड़ा है, स्टेशन शिवदासपुरा है।
मूला नाम जाट का लडका, घर की नींव खोदने लागा ॥
खोदत खोदत मूर्ति दिखाई, उसने जनता को बतलाई।
चिह्न कमल लख लोग लुगाई, पद्मप्रभु की मूर्ति बताई ॥
मनमें अति हर्षित होते हैं, अपने दिल का मल धोते हैं।
भूत प्रेत दुख देते जिनको, चरणों में लाते हैं उनको ॥
जब गंधोदक छींटा मारे, भूत प्रेत सब आप बकारें।
जपने से जब नाम तुम्हारा, भूत प्रेत वह करे किनारा ॥
ऐसी महिमा बतलाते हैं, अन्धे भी आंखे पाते हैं।

प्रतिमा श्वेत वर्ण कहलाये, देखत ही हृदय को भाये ॥
ध्यान तुम्हारा जो धरता है, इस भव से वह नर तरता है ।
अन्धा देखे गूंगा गाये, लङ्गड पर्वत पर चढ़ जाये ॥
बहरा सुन २ के खुश होवे, जिस पर कृपा तुम्हारी होवे ।
मैं हूँ स्वामी दास तुम्हारा, मेरी नैया करदो पारा ॥
चालीसे को 'चन्द्र' बनावे, पद्म प्रभु को शीश नवावे ॥

सोरठा—नित चालीसहिं वार, पाठ करे चालीस दिन ।
खेय सुगन्ध अपार, पद्मपुरी में आय के ॥
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो ।
जिसके नहिं सन्तान, नाम वंश जग में चले ॥
॥ इति पद्मप्रभु चालीसा ॥

नवां अध्याय

बारहमासा राजुलजी का

राग मरहठी (झड़ी)

मैं लूंगी श्री अरहंत सिद्ध भगवंत साधु सिद्धान्त चार का शरना,
निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना ॥ टेक ॥

आषाढ़ मास (झड़ी)

सखि आया अषाढ़ घनघोर, मोर चहुं ओर, मचा रहे शोर, इन्हें समझाओ । मेरे प्रीतम की तुम पवन परीक्षा लाओ । हैं कहा बसे भरतार, कहां गिरनार, महाव्रत धार, बसे किस बन में । क्यों बांध मोह दिया तोड़ क्या सोची मन में ॥

(झर्वटें) जा जा रे पपैया जा रे, प्रीतम को दे समझारे।
रही नौभव सङ्ग तुम्हारे, क्यों छोड़ दई मझधारे॥

(झड़ी)

क्यों बिना दोष भये रोष नहीं सन्तोष, यही अफसोस, बात नहिं बूझी। दिये जादों छप्पन कोड़ छोड, क्या सूझी। मोहि राखो शरण मंझार, मेरे भर्तार, करो उद्धार क्यों दे गये झुरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना॥

श्रावण मास (झड़ी)

सखि श्रावण संवर करे, समन्दर भरे, दिगम्बर धरे, सखी क्या करिये। मेरे जी में ऐसी आवे महाव्रत धरिये। सब तजूं साज शृंगार, तजूं संसार, क्यों भव मझार मे जी भरमाऊं। क्यों पराधीन तिरिया का जन्म फिर पाऊं॥

(झर्वटे) सब सुनलो राजदुलारी, दुख पड़ गया हम पर भारी।
तुम तज दो प्रीति हमारी, करलो संयम की तैयारी॥

८

(झड़ी)

अब आगया पावस काल, करो मत टाल, भरे सब ताल, महा जल बरसै। बिन परसै श्री भगवन्त मेरा जी तरसै। मैंने तज दई तीज सलौन, पलट गई पोन, मेरा है कौन, मुझे जग तरना। निर्मेम नेम बिन हमे जगत में क्या करना।

भादों मास (झड़ी)

सखी भादों भरं तलाब, मेरे चित चाव, करूंगी उछाव से सोलह कारण। करूं दस लक्षण के व्रत से पाप निवारण। करूं रोट तीज उपवास, पञ्चमी अकास, अष्टमी खास, निशल्य मनाऊं। तप कर सुगन्ध दशमी का कर्म जलाऊं॥

(झर्वटें) सखी दुद्धर रस की धारा, तजि चार प्रकार अहारा।
करूं उग्र उग्र तप सारा, ज्यों होय मेरा निस्तारा॥

(झड़ी)

मैं रत्नत्रय व्रत धरूं, चतुर्दशी करूं जगत से तिरूं, करूं पखवाड़ा। मैं सब से छिमाऊं दोष तजूं सब राड़ा। मैं सातों तत्त्व विचार, कि गाऊं मल्हार, तजा संसार, तो फिर क्या करना। निर्मम नेम बिन हमें जगत में क्या करना॥

आसोज मास (झड़ी)

सखि आगया मास कुवार, लो भूषण तार, मुझे गिरनार की दे दो आज्ञा। मेरे पाणिपात्र आहार की है प्रतिज्ञा। लो तार ये चूडा·मणी, रतन की कणी, सुनो सब जणी, खोल दो बैनी। मुझको अवश्य परभात ही दीक्षा लेनी॥

झर्वटें-मेरे हेतु कमण्डलु लावो, इक पीछी नई मंगावो।
मेरा मत ना जी भरमावो, मत सूते कर्म जगावो॥

(झड़ी) है जग में असाता कर्म, बड़ा बेशर्म, मोह के मर्म से धर्म न सूझै। इनके वश अपना हित कल्याण न बूझै। जहां मृग तृष्णा को धूर, वहां पानी दूर, भटकना भूर, वहां जल भरना। निर्मम नेम बिन हमें जगत में क्या करना॥

कार्तिक मास (झडी)

सखि कार्तिक काल अनन्त, श्री अरहन्त की सन्त महन्त ने आज्ञा पाली। धर योग यत्न भव भोग की तृष्णा टाली। सजे चौदह गुण अस्थान, स्वपर पहचान तजे मक्कान महल दीवाली। लगा उन्हें मिष्ट जिन धर्म अमावस काली॥

झर्वटें-उन केवल ज्ञान उपाया, जग का अन्धेर मिटाया।
जिसमें सब विश्व समाया, तन धन सब अथिर बताया॥

(झड़ी) है अथिर जगत सम्बन्ध, अरी मति मन्द जगत का अन्ध है धुन्ध पसारा। मेरे प्रीतम ने मत जान के जगत बिसारा। मैं उनके चरण की चेरी, तू आज्ञा दे मां मेरी, है मुझे एक दिन मरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना ॥

अगहन मास (झड़ी)

सखि अगहन ऐसी घडी, उदय मे पडी, मैं रह गई खड़ी, दरस नहिं पावे। मैं सुकृत के दिन बिरथा योंही गंवाये। नहिं मिले हमारे पिया, न जप तप किया, न सयम लिया, अटक रही जग मे। पडी काल अनादि से पाप की बेडी पग में ॥

झर्वटें—मत भरियो माग हमारी, मेरे शील को लागे गारी।
मत डारो अंजन प्यारी मैं योगन तुम ससारी ॥

(झड़ी) हुये कन्त हमारे जती, मैं उनकी मती, पलट गई रति, तो धर्म नहिं खण्डू। मैं अपने पिता के वंश को कैसे भण्डू। मैं मंड़ा शील सिंगार, अरी नथ तार, गये भर्तार, के संग आभरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत मे क्या करना ॥

पौष मास (झड़ी)

सखि लगा महीना पोह ये माया मोह जगत से द्रोह रु प्रीत करावै, हरे ज्ञानावरणी ज्ञान अदर्शन छावै। पर द्रव्य से ममता हरे तो पूरी परै जु सम्वर करै तो अन्तर टूटै। अरु ऊँच नीच कुल नाम की सज्ञा छूटै ॥

झर्वटें—क्यों ओछी उमर धरावै, क्यों सम्पति को बिलगावै।
क्यों पराधीन दुख पावै, जो संयम में चित लावै ॥

(झडी) सखि क्यों कहलावें दीन क्यों हो छवि छीन क्यों विद्या हीन मलिन कहावै। क्यों नारि नपुन्सक जन्म में कर्म नचावै।

वेतजैं शील शृंगार रुलै संसार जिन्हें दरकार नरक में पड़ना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना ॥

माघ मास (झड़ी)

सखि आगया मास वसन्त, हमारे कन्त, भये अरहन्त, वो केवल ज्ञानी। उन महिमा शील कुशील की ऐसे बखानी। दिये सेठ सुदर्शन शूल, भई मखतूल, वहां बरसे फूल, हुई जयवाणी। वे मुक्ति गये अरु भई कलंकित राणी ॥

झर्वटें—कीचक ने मन ललचाया· द्रौपदी पर भाव धराया।
उसे भीम ने मार गिराया उसे किया तैसा फल पाया ॥

(झडी) फिर गह्या दुर्योधन चीर, हुई दिलगीर जुड गई भीर, लाज अति आवै। गये पाण्डु जुये में हार न पार बसावै। भये परगट शासन वीर, हरी सब पीर, बंधाई धीर, पकर लिये चरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना ॥

फागुन मास ·(झड़ी)

सखि आया फाग बड भाग तो होरी त्याग अठाई लाग के मैना सुन्दर। हरा श्रीपाल का कुष्ट कठोर उदम्बर। दिया धवल सेठ ने डार, उदधि की धार तो हो गये पार, वे उस ही पल में। अरु जा परणी गुणमाल न डूबे जल में ॥

झर्वटें—मिली रैन मंजूषा प्यारी· निज ध्वजा शील की धारी।
परी सेठ पै मार करारी, गया नर्क में पापाचारी ॥

(झडी. तुम लखो द्रोपदी सती, दोष नहिं रती, कहें दुर्मती पद्म के बन्धन। हुआ धात कि खण्ड जरूर शील इस खण्डन। उन फूटे घडे मंझार .दिया जल डाल तो वे आधार थमा जल झरना। निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना ॥

चैत्र मास (झड़ी)

सखी चैत्र में चिन्ता करे न कारज सरे शील से टरे कर्म की रेखा। मैंने शील से भील को होता जगत गुरु देखा। सखि शील मे सुलसां तिरी सुतारा फिरी खलासी करी श्री रघुनन्दन। अरु मिली शील परताप पवन से अंजन॥

झर्वटें–रावण ने कुमत उपाई, फिर गया विभीषण भाई।
छिन मे जा लक गमाई, कुछ भी नहिं पार वसाई॥

(झडी) सीता सती अग्नि में पडी तो उस ही घडी वह शीतल पड़ी चढी जल धारा। खिल गये कमल भये गगन मे जय जयकारा। पद पूजे इन्द्र धर्नेन्द्र, भई शीतेन्द्र, श्री जैनेन्द्र ने ऐसा वरना। निर्नेम नेम विन हमे जगत मे क्या करना॥

वैशाख मास (झड़ी)

सखी आई वैशाखी मेख, लई मैं देख, ये ऊरध रेख पडी मेरे कर में। मेरा हुआ जन्म यूं ही उग्रसेन के घर मे। नहिं लिखा करम मे भोग, पडा है जोग, करो मत शोक, जाऊँ गिरनारी। है मात पिता अरु भ्रात से क्षमा हमारी॥

झर्वटे–मैं पुण्य प्रताप तुम्हारे, घर भोगे भोग अपारे।
जो विधि के अंक हमारे, नहिं टरे किसी के टारे॥

(झडी) मेरी सखी सहेली वीर, न हो दिलगीर, धरो चित धीर, मैं क्षमा कराऊं। मैं कुल को तुम्हारे कबहुँ न दाग लगाऊं। वह ले आज्ञा उठ खड़ी थी मंगल घड़ी, जा वन मे पड़ी, सुगुरु के चरना। निर्नेम नेम विन हमें जगत मे क्या करना॥

जेठ मास (झड़ी)

अजी पड़े जेठ की धूप, खड़े सब भूप, वह कन्या रूप, सती बड भागन। कर सिद्धन को प्रणाम किया जग त्यागन। अजि त्यागे सब

संसार, चूडियां तार, कमण्डलु धार, कै लई पिछौटी। अरु पहरकै साडी श्वेत उपाटी चोटी।

झर्वटें—उन महा उग्र तप कीना, फिर अच्युत्येन्द्र पद लीना।
है धन्य उन्हीं का जीना, नहीं विषयन में चित दीना॥

(झड़ी) अजी त्रियावेंद मिट गया, पाप कट गया, बढ़ा पुरुषारथ। करे धर्म अरथ फल भोग रुचे परमारथ। वो स्वर्ग सम्पदा भुक्ति, जायगो मुक्ति, जैन की उक्ति में निश्चय धरना। निर्नेम नेम विन हमें जगत में क्या करना॥
जो पढे इसे नर नारि, बढे परिवार, सबै संसार में महिमा पावे। सुन सतियनशील कथान विघ्न मिट जावे। नहि रहें सुहागिन दुखी, होय सब सुखी, मिटे बेरुखी पावें वे आदर। वे होय जगत में महा सतियों की चादर।

झर्वटें—मैं मानुष कुल में आया, अरु जाति यती कहलाया।
है कर्म उदय की माया, बिन सयम जन्म गँवाया॥

झड़ी—ग्राम, संवत्त, कवि वंश, नाम—

है दिल्ली नगर सुवास, वतन है खास, फाल्गुन मास, अठाई आठैं। हो उनके नित कल्याण छपा कर बाटें। अजी विक्रम अब्द उनीस पै धर पेंतीस, श्री जगदीश का ले लो शरणा। कहै दास नैनसुख दोष पै दृष्टि न धरना। मैं लूंगी श्री अरहन्त सिद्ध भगवन्त साधु सिद्धान्त चार का सरना, निर्नेम नेम बिन हमें जगत में क्या करना॥

बारह मासा मुनिराज

(राग मरहठी)

मैं बन्दूं साधु महन्त बडे गुनवन्त सभी चित लाके।
जिन अथिर लखा संसार बसे वन जाके॥ टेर॥

चित चैत में व्याकुल रहे, काम तन दहे, न कुछ वन आवे। फूली वनराई देख मोह भ्रम छावै। जब शीतल चले समीर, स्वच्छ हो नीर, भवन सुख भावे। किस तरह योग योगीश्वर से वन आवे।

झड़—जिस अवसर श्री मुनि ज्ञानी, रहें अचल ध्यान मे ध्यानी। जिन काया लखी पयानी, जग ऋद्धि खाक सम जानी। उस समय धीर धर रहे, अमरपद लहें, ध्यान शुभ ध्याके। जिन.॥१

जब आवत है वैशाख होय तृण खाक तप्त से जल के। सब करं धाम विश्राम पवन झल झलके। ऋतु गर्मो मे संसार, पहिने नरनार, वस्त्र मलमलके। वे जलसे करते नेह जो है जोवस्थल के॥

झड़—जिस समय मुनि महाराजे, तन नग्न शिखिर गिर राजे। प्रभु अचल सिंहासन राजे। कहो क्यों न कर्म दल लाजे। जो घोर महा तप करें, मोक्ष पद धरैं बसैं शिव जाके॥ जिन०॥ २॥

जब पडे ज्येष्ठ में ज्वाला होय तन काला धूप के मारी। घर बाहर पग नहिं धरैं कोई घरवारी। पानी से छिड़के धाम, करें विश्राम सकल नरनारी। धर खस की टटियां छिपैं लूहकी मारी॥

झड़—मुनिराज शिखिर गिर ठाड़े दिन रैन ऋद्धि अति बाढ़े। अति तृषा रोग भय बाढ़े, तब रहे ध्यान मे गाढ़े। सब सूखे सरवर नीर जले है शरीर रहैं समझाके। जिन अथिर लखा०॥ ३॥

अषाढ़ मेघ का जोर बोलते मोर गरजते बादल। चमके बिजली कड़कड़े पड़ै धाराजल॥ अति उमड़े नदियां नीर, गहर गम्भीर भरे जल के थल। भोगी को ऐसे समय पडे कैसे कल॥

झड़—उस समय मुनि गुणवन्ते, तरवर तट ध्यान धरन्ते। अति कार्टे जीव अरु जन्ते, नहीं उनका सोच करन्ते। वे काटें कर्म जञ्जीर नहीं दिलगीर रहें शिव पाके। जिन अथिर लखा०॥४॥

झड़—श्रावण में है त्योहार, झूलती नार चढ़ी हिंडोले। वे गावें राग मल्हार पहन नये चोले॥ जगमोह तिमिर मन बसे, सर्व तन कसे देत झकझोले। उस अवसर श्रीमुनि राज बनत हैं भोले॥

झड़—वे जीतें रिपु से लरके, कर ज्ञान खड्ग ले करके। शुभ शुक्ल ध्यान को धरके, परफुल्लित केवल वरके॥ नहीं सहै तो यमकी त्रास, लहैं शिव बास, अघात नशाके। जिन अथिर० ॥५॥

भादव अंधियारी रात सूझे ना हाथ घुमड़ रहे बादर। बन मोर पपीहा कोयल बोले दादुर॥ अति मच्छर भिनभिन करें, सांप फुंकारें पुकारें थलचर। बहु सिंह बघेरा गज घूमें बन अन्दर।

झड़—मुनिराज ध्यान गुण पूरे, तब काटें कर्म अंकूरे। तनु लिपटतु कान खजूरे, मधु मक्ष ततइयें भूरे॥ चिटियों ने बिल तन करे, आप मुनि खड़े हाथ लटकाके। जिन० ॥ ६ ॥

आश्विन में वर्षा गई समय नहीं रही दशहरा आया। नहीं रही वृष्टि अरु कामदेव लहराया। कामी नर करैं किलोल बनावैं डोल करे मन भाया। हैं धन्य साधु जिन आतम ध्यान लगाया॥

झड़—वसु याम योग में भीने, मुनि अष्ट कर्म क्षय कीने। उपदेश सबनको दीने, भवि जन को नित्य नवीने॥ हैं धन्य धन्य मुनिराज ज्ञान के ताज नमूं शिर नाके। जिन अथिर लखा० ॥७॥

कार्तिक में आया शीत भई विपरीत अधिक सरदाई। संसारी खेलें जुआ कर्म दुखदाई॥ जग नर नारी का मेल मिथुन सुख केल करे मन भाई। शीतल ऋतु कामीजन को है सुखदाई॥

झड़—जब कामी काम कमावें, मुनिराज ध्यान शुभ ध्यावें। सरवर तट ध्यान लगावे, सो मोक्ष भवन सुख पावें॥ मुनि महिमा अपरम्पार न पावे पार कोई नर गाके। जिन अथिर लखा० ॥८॥

अगहन में टपके शीत यही जगरीति सेज मन भावे। अति शीतल चले समीर देह थर्रावे॥ शृङ्गार करे कामिनी रूप रस ठनी साम्हने आवे। उस समय कुमिति वन सबका मन ललचावे।

झड़—योगीश्वर ध्यान धरे हैं, सरिता के निकट खड़े हैं। तहां ओले अधिक पड़े हैं, मुनि कर्म का नाश करे हैं॥ जब बर्फ पड़े घनघोर करें नहीं शोर जयी दृढताके। जिन अथिर लखा० ॥६॥

यह पौष महीना भला, शीत मे घुला कांपती काया। वे धन्य गुरु जिन इस ऋतु ध्यान लगाया॥ घरवारी घर में छिपैं वस्त्र तन लिपैं रहैं जैड़ाया। तज वस्त्र दिगम्बर हो मुनि ध्यान लगाया॥

झड़—जल के तट जग सुखदाई, महिमा सागर सुनिराई। धर धीर खड़े हैं भाई, निज आतम से लवलाई॥ है यह संसार असार वे तारणहार सकल वसुधा के। जिन अथिर लखा संसार० ॥१०॥

है माघ वसन्त वसन्त, नार अरु कंथ, युगल सुख पाते। वे पहिने वस्त्र वसन्त फिरै मदमाते॥ जब चढ़ै मयन की शयन पढ़ै नहीं चैन कुमति उपजाते। हैं बड़े धीर जन बहुधा वे डिग जाते॥

झड़—तिस समयजु हैं मुनि ज्ञानी। जिन काया लखी पयानी, भवि डूबत बोधे प्रानी, जिन ये वसन्त जिय जानी॥ चेतन सों खेलें होरी, ज्ञान पिचकारी योग जल लाके। जिन अथिर लखा०॥

जब लगै महीना फाग करें अनुराग सभी नरनारी। लै फिरैं फैंट में गुलाल कर पिचकारी॥ जब श्री मुनिवर गुणखान अचल धर ध्यान करें तप भारी। कर शील सुधारस कर्मन ऊपर डारी॥

झड़—कीर्ति कुमकुमें वनावें, कर्मों से फाक रचावे। जो बारह-मासा गावें, सो अजर अमर पद पावें॥ यह भाखैं जीयालाल धर्म गुणमाल, योग दर्शाके। जिन अथिर लखा संसार वसे बन जाके॥

इति श्री मुनीजी का बारहमासा समाप्त॥

बारहमासा वज्रदन्त

[यति नयनसुखदास कृत]

सवैया—बन्दूं मैं जिनन्द परमान्द के कन्द जगवन्द विमलेंदु जड़ ताप हरनकूं । इन्द्र धरणिन्द्र गौतमादिक गणेन्द्र जाहि सेव राव रंक भव सागर तरनकूं ॥ निर्वन्ध निर्द्वन्द दीनवन्धु दया-सिन्धु, करैं उपदेश परमारथ करनकूं । गावैं नैनसुखदास, वज्रदन्त बारहमास, मेटो भगवन्त मेरे जन्म मरनकूं ॥ १ ॥

दोहा—वज्रदन्त चक्रेश की, कथा सुनो मनलाय ।
कर्म काट शिवपुर गये, बारह भावन भाय ॥ २ ॥

वैठ वज्रदन्त आय अपनी सभा लगाय ताके पास वैठे राय बत्तीस हजार हैं । इन्द्र कैसे भोगसार, राणी छाणवे हजार, पुत्र एक सहस्र महान् गुणगार हैं ॥ जाके पुण्य प्रचण्ड से नये हैं बलवड शत्रु हाथ जोड मान छोड सबैं दरबार हैं । ऐसो काल पाय माली लायो एक डाली तामें देखो अलि अम्बुज मरण भयकार हैं ॥३॥

अहो यह भोग महा पाप को संयोग देखो डाली में कमल तामैं भौंरा प्राण हरे हैं । नाशिका के हेतु भयो भोग मे अचेत सारी रैन के कलाप में विलाप इन करे हैं ॥ हम तो पांचों ही के भोगी भये जोगी नाहीं विषय कषायन के जाल माहिं परे हैं । जो न अब हित करूं जाने कौन गति परूं सुतन बुलाके यों वच अनुसरे हैं ॥ ४ ॥

अहो सुत जग रीति देख के हमारी नीति भई है उदास वनो-वास अनुसरेंगे । राजभार शीस धरो परजा का हित करो हम कर्म शत्रुन की फौजन सूं लरेंगे । सुनत वचन तब कहत कुमार सब हम तो उगाल कूं न अङ्गीकार करेंगे । आप बुरो जान छोडो हमें जग जाल बोड़ो तुमरे ही संग महाव्रत हम धरेंगे ॥ ५ ॥

❀ चौपाई ❀

सुत आषाढ आयो पावस काल । सिर पर गर्जत यम विकराल ॥
लेहुराज सुख करहूँ वीनती । हम बन जाय बडेन की रीति ॥६ ॥

गीता छन्द—जांय तप के हेत बनको भोग तज संयम धरैं । तज ग्रन्थ सब निर्ग्रन्थ हो संसार सागर से तरैं ॥ यहि हमारे मन बसी तुम रहो धीरज धारके । कुल आपनेकी रीति चालो राजनीति विचार के ॥ ७ ॥

❀ चौपाई ❀

पिता राज तुम कीनो बौन । ताहि ग्रहण हम समरथ हौन ॥
यह भौंरा भोगन को व्यथा । प्रकट करत करकङ्कन यथा ॥ ८ ॥

गीता छन्द—यथा करका कांगना सन्मुख प्रगट न जरा परे । त्यौंही पिता भौंरा निरखि भव भोग से मन थर हरे ॥ तुमने तो बन के वास ही को सुक्ख अङ्गीकृत किया । तुमरी समझ सोई समझ हमरी हमें नृप पद क्यों दिया ॥ ६ ॥

❀ चौपई ❀

श्रावण पुत्र कठिन बनवास । जल थल शीत पवन के त्रास ॥
जो नहिं पले साधु आचार । तो मुनि भेष लजावे सार ॥ १० ॥

छन्द—लाजे श्री मुनि भेष तातैं देह को साधन करो । सम्यक्त्व युतव्रतपंच में तुम देशव्रत मन में धरो ॥ हिंसा असत चोरी परिग्रह ब्रह्मचर्य सुधारके । कुल आपनेकी रीति चालो० ॥ ११ ॥

❀ चौपई ❀

पिता अङ्ग यह हमरो नाहीं । भूख प्यास पुद्गल परछांही ॥
पाय परीषह कबहुं न भाजैं । धर संन्यास मरण तन त्याजैं ॥ १२ ॥

छन्द—संन्यास धर तनकूं तजैं नहिं डंश मंसक से डरैं । रहैं नग्न तन बन खंड में जहां मेघ मूसल जल परैं ॥ तुम धन्य हो बढ़भाग तज के राज तप उद्यम किया । तुमरी समझ सोई समझ हमरी हमें नृप पद क्यों दिया ॥१३॥

❀ चौपई ❀

भादों में सुत उपजे रोग। आवें याद महल के भोग ॥
जो प्रमाद वस आसन टले। तो न दयाव्रत तुमसे पले ॥ १४ ॥

छन्द—जब दयाव्रत नहिं पले तब उपहास जग में विस्तरे। अर्हंत और निर्ग्रंथ की कहा कौन फिर सरधा करे ॥ तातैं करो मुनि दान पूजा राज काज संभाल के ॥ कुल आपने का ॥ १५ ॥

❀ चौपई ❀

हम तजि भोग चलेंगे साथ। मिटे रोग भव भव के तात ॥
समता मन्दिर में पग धरैं। अनुभव अमृत सेवन करैं ॥१६॥

छन्द—करैं अनुभव पान आतम ध्यान वीणा कर धरैं। आलाप मेघ मल्हार सो हैं सप्तभंगी स्वर भरे। धृग् धृग् पखावज भोग कू सन्तोष मन में कर लिया। तुमरी समझ सोई ॥१७॥

❀ चौपई ❀

आसुज भोग तजे नहिं जांय। भोगी जीवन को डसि खांय ॥
मोह लहर जिया की सुध हरे। ग्यारह गुण थानक चढ़ गिरे ॥१८॥

छन्द—गिरे थानक ग्यारवे से आय मिथ्याभू परे। बिन भाव की थिरता जगत में चतुर्गति के दुःख भरे ॥ रहे द्रव्य लिङ्गी जगत में बिन ज्ञान पौरुष हार के। कुल आपने की रीति चालो॥१६

❀ चौपई ❀

त्रिषे बिहार पिता तन कसें। गिर कन्दर निर्जन वन बसे ॥
महामंत्र को लखि परभाव। भोग भुजङ्ग न चाले घाव ॥२०॥

छन्द—घाले न भोग भुजङ्ग तब क्यों मोह की लहरा चढ़े। परमाद तज परमात्मा प्रकाश जिन आगम पढ़े। फिर काल लब्धि उद्योत होय सुहोय यों मन थिर किया ॥ तुमरी समझ ॥२१॥

❀ चोपई ❀

कातिक में सुत करे विहार। कांटे कांकर चुभे अपार ॥
मारै दुष्ट खैंच के तीर। फाटे उर थरहरे शरीर ॥२२॥

छन्द—थरहरे सगरी देह अपने हाथ काढ़त नहिं बने। नहिं और काहू से कहें तब देह की थिरता हनें। कोई खेंच बांधे थम्भ से कोई खाय आंत निकाल के। कुल आपने की रीति० ॥२३॥

❀ चौपई ❀

पद पद पुण्य धरा मे चले। कांटे पाप सकल दल मलें ॥
क्षमा ढाल तल धरें शरीर। विफल करें दुष्टन के तीर ॥२४॥

छन्द—कर दुष्ट जन के तीर निष्फल दया कुंजर पर चढ़ें। तुम संग समता खड्ग लेकर अष्ट कर्मन से लड़ें॥ धनधान्य यह दिनवार प्रभु तुम योग का उद्यम किया। तुमरी समझ सोई० ॥२५॥

❀ चौपई ❀

अगहन मुनि तटनी तट रहें। ग्रीषम शैल शिखर दुख महें ॥
पुनि जब आवत पावस काल। रहें साधु जन वन विकराल ॥२६॥

छन्द—रहें वन विकराल में जहां सिंह श्याल सतावहीं। कानों मे बीछू बिल करें और व्याल तन लिपटावहीं ॥ दे कष्ट प्रेत पिशाच आन अङ्गार पाथर डार के। कुल आपने की रीति ॥२७॥

❀ चौपई ❀

हे प्रभु बहुत बार दुःख महे। विना केवली जाय न कहे ॥
शीत उष्ण नर्कन के तात। करत याद कम्पे सब गात ॥२८॥

छन्द—गात कम्पे नर्क से लहे शीत उष्ण अथाय ही। जहां लाख योजन लोह पिण्ड सुहोय जल गल जाय ही ॥ असिपत्र वन के दुख सहे परवस स्ववस तपना किया। तुमरी समझ० ॥२९॥

❀ चौपई ❀

पौष अर्घ अरु लेहु गयंद। चौरासी लख लख सुखकन्द ॥
कोड़ि अठारह घोडा लेहु। लाख कोडि हल चलत गिनेहु ॥३०॥

छन्द—लेहु हल लख कोडि षटखण्ड भूमि अरु नवनिधि वडी। लो देश की विभूति हमरी राशि रत्नन की पडी। धर देहुँ सिर पर छत्र तुमरे नगर धोख उचारिके। कुल आपने की० ॥३१॥

❀ चौपई ❀

अहो कृपानिधि तुम परशाद । भोगे भोग सर्वे मरयाद ॥
अब न भोग की हमकूं चाह । भोगन में भूले शिव राह ॥३२॥

छन्द—राह भूले मुक्ति की वहु वार सुरगति संचरे । जहां कल्प वृत्त सुगन्ध सुन्दर अपछरा मन को हरे ॥ उदधि पी नहिं भया तिरपत ओस पी कै दिन जिया । तुमरी समझ सोई० ॥३३॥

❀ चौपई ❀

माघ सघैन सुरन तैं सोय ! भोग भूमियन तैं नहिं होय ॥
हर हरि अरु प्रति हरि से वीर । संयम हेत धरें नहिं धीर ॥३४॥

छन्द—संयम कूं धीरज नहिं धरें नहिं टरे रण में युद्ध सूं । जो शत्रु गण गजराज कूं दलमले पकर विरुद्ध सूं । पुनि कोटि सिल मुद्गर समानी देय फैंक उपार के । कुल आपने की० ॥३५॥

❀ चौपई ॥

वंधयोग उद्यम नहिं करें । एतो तात कर्म फल भरें ।
बांधे पूर्व भव गति जिसी । भुगतें जीव जगत् में तिसी ॥३६॥

छन्द—जीव भुगतें कर्म फल कहो कौन विधि संयम धरें । जिन वंध जैसा वांधियों तैसाही सुख दुख सो भरें । यों जान सवको वंध में निर्वंध का उद्यम किया । तुमरी समझ सोई० ॥३७॥

❀ चौपई ❀

फाल्गुन चाले शीतल वायु । थर थर कम्पे सवकी काय ॥
तव भव वंध विदारण हार । त्यागें मूढ़ महाव्रत सार ॥३८॥

छन्द—सार परिग्रह व्रत विसारें अग्नि चहुँदिशि जा रही । करें मूढ़ शीत वितीत दुर्गति गहें हाथ पसारही । सो होय प्रेत पिशाच भूतरु ऊत शुभ गति टार के । कुल आपने की० ॥३९॥

❀ चौपई ❀

हे मतिवन्त कहा तुम कही । प्रलय पवन की वेदन सही ॥
धारी मच्छ कच्छ की काय । सहे दुःख जलचर परजाय ॥४०॥

छन्द—पाय पशु परजाय परचम रहे मिग वंधाय के। जहां रोम रोम शरीर कम्पे मरे तन तरफाय के। फिर गेर चाम उवेर स्वान मिचना मिल श्रोणित पिया। तुमरी समझ मोही०॥

❀ चौपई ❀

चैत लता मदनोदय होय। ऋतु वसन्त में फूले सोय॥
तिन की दुष्ट गन्ध की जोर। जागे काम महावल फोर॥ ४२॥

छन्द—फोर वल को काम जागे लेय मन पुरञ्जी नहीं। फिर ज्ञान परम निधान हरि के करे तेरा तीन ही। इतके न उतके तब रह गए कुगति दोऊ कर झारके। कुल आपने की रीति चालो० ॥४३॥

❀ चौपई ❀

ऋतु वसन्त वन मे नहिं रहें। भूमि पषाण परीषह सहें॥
जहां नहिं हरित काय अंकूर। उड़त निरन्तर अहनिशि धूर॥४४॥

छन्द—उड़े वन की धूरि निशि दिन लगें कांकर आयके। सुन शब्द प्रेत प्रचण्ड के काम जांय पलायके। मत कहो अव कछु और प्रभु भव भोग मे मन कांपिया। तुम्हरी समझ सोइ० ॥४५॥

❀ चौपई ❀

मास वैसाख सुनत अरदास। चक्री मन उपज्यो विश्वास।
अव वोलन को नाहीं ठौर। मैं कहूँ और पुत्र कहे और ॥४६॥

छन्द—और अव कछु मैं कहूँ नहिं रीति जग की कीजिये। एक वार हससे राज लेके चाहे जिसको दीजिये। पोता था एक पटमास का अभिषेक कर राजा कियो। पितु संग सव जगजाल सेती निकस वन मारग लियो ॥४७॥

❀ चौपई ❀

उठे वज्रदन्त चक्रेश। तीस सहस भूप तजि अलवेश।
एक हजार पुत्र वड़ भाग। साठ सहस्र सती जग त्याग॥ ४८॥

छन्द—त्याग जगकूं ये चले सव भोग तज ममता हरी।

शमभाव कर तिहुँलोक के जीवों से यों विनती करी।
अहो जेते हैं सब जीव जग में क्षमा हम पर कीजियो।
हम जैन दीक्षा लेत हैं तुम वैर सब तज दीजियो ॥४६॥
छन्द—वैर सबसे हम तजा अर्हंत का शरण लिया।
श्री सिद्ध साधु की शरण सर्वज्ञ के मत चित दिया।
यों भाष पिहिताश्रव गुरुन ढिग जैन दीक्षा आदरी।
कर लौंच तज के मोच मवने ध्यान में दृढता धरी ॥५०॥

❀ चौपई ❀

जेठ मास लू ताती चले। सूखे सर कपिगण मदगलें।
ग्रीषम काल शिशर के सीस। धरो अतापन योग मुनीश॥५०॥
छन्द—धरयोग आतापन सुगुरु ने तब शुक्ल ध्यान लगाइयो।
तिहुँलोक भानु समान केवल ज्ञान तिन प्रगटाइयो।
वज्रदन्त मुनीश जग तज कर्म के सन्मुख भये।
निज काज अरु परकाज करके समय में शिवपुर गये।

❀ चौपई ❀

सम्यक्त्वादि सुगुण आधार। भये निरञ्जन निरआकार।
आवागमन तिलाञ्जलि दई। सब जीवन की शुभ गति भई॥५३॥
छन्द—भई शुभगति सबन की जिन शरण जिनपति की लई।
पुरुषार्थ सिद्ध उपाय से परमार्थ की सिद्धि भई।
जो पढ़े बारहमास भावन भाये चित्त हुलसाय के।
तिनके हों मङ्गल नित नये अरु विघ्न जाय पलायके ॥५४॥
दोहा—नित नित नव मङ्गल बढे, पढैं जो यह गुणमाल।
सुरनर के सुख भोगकर, पावैं मोक्ष रसाल रसाल ॥५५॥
सवैया—दो हजार मांहि ते तिहत्तर घटाय अब विक्रम को संवत् विचार कै धरत हूँ। अगहन असि त्रयोदशी मृगाङ्क वार अर्द्ध निशा मांहि यह पूर्ण करत हूँ॥ इति श्री वज्रदन्त चक्रवर्ति को वृत्तान्त

रचके पवित्र नैन आनन्द भरत हूँ। ज्ञानवन्त करो शुद्ध जान मेरी बालबुद्धि दोष पै न रोष करो पायन परत हूँ ॥ ६ ॥

इति वज्रदन्त चक्रवर्तिका बारहमासा सम्पूर्ण ॥

बारह मासा सीता सती का

अथ सीता सती के वनोवास सबधी दुःख संयुक्त अद्भुत शील प्रभावना का बारहमासा यति नयानानन्दकृत लिख्यते—

❀ रागनी हिंडोला चाल श्रावण की मल्हार ❀

(जैसे नदिया किनारे वेला किन बोया) इसकी चाल मे

सीतावचन—बिन कारन स्वामी क्यो तजी, विनवै जनक दुलारि ॥

बिनकारन स्वामी क्यों तजी ॥टेक

आषाढ मास

आषाढ घुमड़ि आए बादरा, घन गरजैं चहुं ओर।
निर्जन वन में स्वामी तुम तजी, बैठन कूँ नहीं ठौर ॥
बिनकारन स्वामी क्यां तजी ॥ विनवै जनक दुलारि ॥१
क्या हम सतगुरु निंदियौ, क्या दियौ सतियन दोष।
क्या हम सत संजम तज्यौ, किस कारन भये रोष ॥
बिन कारण स्वामी क्यों तजी, विनवै जनक० ॥२
क्या पर पुरुष निहारके, पर भव कियो है निदान।
क्या इस भव इच्छा करी, क्या मैं कियो अभिमान ॥
बिन कारन० ॥ विनवै जनक० ॥३
कटुक वचन स्वामी नहिं कहे, हिंसाकरम न कीन।
परधन पर चित नहिं दियौ. क्यों मन भयो है मलीन ॥
बिन कारन० । विनवै जनक० ॥४

२ श्रावण मास

श्रावण तुम संग वनविषै, विपति सही भगवान।

पाय पयादी वन वन में फिरी, तनक न राखी मोरी कान ॥
बिन कारन स्वामी क्यों तजी ॥विनवै जनक०॥१
श्वसुर दिसौटा जिसदिन तुम दियौ, कियौ भरत सरदार।
ता दिन विकल्प नहिं कियौ, तजि संपति भई लार।
विन कारण० । विनवैं जनक० ॥
जनक पिता की मैं लाडली, मात विदेहा की बाल।
भ्रात प्रभा मंडल सा वलि, विपत भरूँ वे हाल ॥
विन कारण० । विनवैं जनक० ॥३
माता मन्दोदरी गर्भ से, जन्मी रावण गेह।
परभव करम संयोग सैं, रावण कियौ संदेह ॥
विन कारण० । विनवै जनक० ॥४

३ भादव मास

भादौं पण्डित पूछियौ, पण्डित कही है विचार।
कन्या के कारण राजा तुम मरो, दीनी तुरत विसार ॥
विनवै कारण० । विनवै जनक० ॥१
गाड़ी धारि मन्जूष में, जनक नगर वन वीच ।
हल जोतत किरसान के लई करम ने खींच ॥
विन कारण० । विनवैं० ॥२
मरण भयौ नहीं तादिना, करम लिखे दुख एह।
करी नजर राजा जनक के, पाली पुत्र सन्देह ॥
विन कारण० । विनवैं० ॥३
जनक स्वयंबर जब कियौ, लिए सब भूप बुलाय।
दरशन करि थारे वश भई, पड़ी चरण विच आय ॥
विन कारण० । विनवैं० ॥ ४

४ कुंवर मास

क्वार मास फिर गए भूप सब, मो कारण कियौ क्रुद्ध।

बहुत बली मारे रण विषै, ठायौ धनुष प्रबुद्ध ॥
विनकारण० विनवै० ॥ १

खरदूषण के युद्ध मे, आयौ रावण दौड़ ।
छलकर धोखा प्रभु तुमकूं दियौ, नाद बजायौ घनघोर ॥
विनकारण० विनवै० ॥ २

जल्दी पधारो प्रभु मैं गिर गयौ, तुम जानी भगवान् ।
कष्ट पड्यौ जी मेरे भ्रात पै, उपज्यौ मोह महान् ॥
विनकारण । विनवै० ॥ ३

मोहि मेली पातवटोरिकै, करम लिखी कछु और ।
आप पधारे अपने वीर पै, आगयो रावण चोर ॥
विनकारण० । विनवै० ॥ ४

चीर दुपट्टा करिकै लेगयो, मोकूं अचक उठाय ।
देखी नाथ जटायु नैं, क्या तुम जानत नाहिं ॥
विनकारण० । विनवै० ॥ ५

झपट झपट वाके सिर हुयो, मुकट खसोट्यौ मूँछ उपारि ।
मारि नमाचा डारयो भूमि में, पंछी खाई जो पछार ॥
विनकारण० । विनवै० ॥ ६

लछमन तुमहिं निहारिकै, बात कही करि गौर ।
विनहि बुलाए आए भ्रात क्यों, है कछु कारन और ॥
विनकारण० । विनवै० ॥ ७

काहू छलिया नै ये कछु छल कियो, कै कछु कर्म चरित्र ।
नाहिं पिछन्यौ जावै जुद्धमें, कौन है वैरी कौन है मित्र ॥
विनकारण० । विनवै० ॥ ८

५ कातिक मास

कातिक तुरत पठाइयौ, उलटि तुम्हें थारे भ्रात ।

बिनाही बुलाये आए आप क्यूं, शत्रु करेंगे उत्पात ॥
बिनकारण० । बिनवै० ॥ १
आयेजी तुरत रक्षा करनकूं, हमसे धरि प्रभु प्यार ।
बिखरे ही पाए पत्तो बेल सब, खाई आप पछार ॥
बिनकारण० बिनवै० ॥ २
भ्रात हटाई आके मूर्छा, सकल शत्रु गण जीत ।
पर्‍यो जटायु देख्यो सिसकतौ, श्रावक धर्म पुनीत ॥
बिनकारण० । बिनवै० ॥ ३
जन्म सुधार्‍यो वाकौ आपनैं, मो बिन पायौ न चैन ।
डारी २ ढूंढी दोऊ मिल वन विषै, रोय सुजाए तुम नैन ॥
बिनकारण० । बिनवै० ॥ ४
धीरि बंधाई लछमन भुजबली, बहुत करी थारी सेव ।
विपत कटैगी प्रभु समता धरे, तदपि न माने थे तुमदेव॥
बिनकारण० । बिनवै जनक ॥ ५
ल्याऊँ काढि पताल सें, ल्याऊँ पर्वत फोर ।
खबर मिलै तो सब कुछ मैं करूं, चीर बगाऊँ थारा चोर ॥
बिनकारण० । बिनवै जनक० ॥ ६
फेर मिलेजी प्रभु सुग्रीव सैं, साहस गति दियो मारि ।
पाय सुतारा ल्याया हनुमान कूँ, ढूंढत भेज्यो मोहि सकार ॥
बिनकारण० । बिनवै जनक० ॥ ७

६ अगहन मास

अगहन खबर मंगवाय कैं, मोढिग भेज्यो तुम हनुमान ।
कूदि समन्दर गयो गढलंक में, भेजी गूंठी तुम भगवान ॥
बिनकारण० । बिनवै जनक० ॥ १ ॥
तुम बिन बैठी रो रही बाग में, राम ही राम पुकार ।
अन्न लियो ना पानी मैं पियो, परवश हुई थी लाचार ॥
बिनकारण० बिनवै । जनक० ॥ २ ॥

मुख धुलवायो श्री हनुमान ने, तुमरी आज्ञा के परवाण।
प्राण वचाये मेरे विपत में, करवायो जल पान॥
विनकारण० । विनवै० ॥ ३ ॥
तुरत ही भेज्यो तुमरे चरण मे, चूड़ामणि दियौ तारि।
गाय फंसी है गाढी गार मे, खैंचि निकारोजी भरतार॥
विनकारण० । विनवै० ॥ ४ ॥

७ पौप मास

पौप चढ़े जी गढ़ लङ्क पैं, भारत कियौ भगवान।
गारत किये लाखों सूरमा, मारि कियौ घमसान॥
विनकारण० । विनवै० ॥ १ ॥
काट्यो शिर लंकेश को, लक्ष्मी घर वर वीर।
कूद पड़े जी जोधा लङ्क में, लवण समुन्दर चीर॥
विनकारण० । विनवै० ॥ २ ॥
ल्याए तुरत छुड़ायके, अशरण शरण अधार।
इतनी करि ऐसी क्यौं करी, घर सैं दई क्यूं निकार॥
विनकारण० । विनवै० ॥ ३ ॥
पग भारी जी गिर गिर मैं पडूं, शरण सहाय न कोय।
अपनी कही ना मेरी तुम सुनी, वहुत अचम्भा है मोहि॥
विनकारण० । विनवै० ॥ ४ ॥

८ माघ मास

माघ प्रभुजी पाला पड़ रहा, पोढ़न कूं नहिं सेज।
ओढ़नकूं नहिं कांवली, दई क्यूं विपति में भेज॥
विनकारण० । विनवै० ॥ १ ॥
सिंह धड़ूकैं कूकै भेडिये, मारे गज चिंघाड़।
थर थर कांपै थारी कामनी, स्यालन रही दहाड़॥
विनकारण० । विनवै० ॥ २ ॥

नाचैं भूत पिशाच गण, रुण्ड मुण्ड विकराल।
सनन सनन सारा वन करै, कटि चुभे जी कराल॥
विनकारण० । विनवैं० ॥ ३ ॥

कित बैठूँ, लेटूँ कित प्रभु, पास खवास न कोय।
अन्न करूं ना पानी मैं पिऊँ, बालक को दुख होय॥
विनकारण० । विनवैं० ॥ ४ ॥

तुम सब जानो प्रभु मेरे हालकूं, अष्टमवलि अवतार।
तुम सूरज मैं पटवीजनी, क्या समझाऊं भरतार॥
विनकारण० । विनवैं० ॥ ५ ॥

समरथ हो प्रभु क्यों कसी, प्रगट कियो क्यों न दोष।
धोका दे क्यों धक्का दियौ, आवै नहीं सन्तोष॥
विनकारण० । विनवैं० ॥ ६ ॥

९ फागुन मास

फागन आई जी अठाइयां, अपने करम कूं दे दोष।
ध्यान धरयो भगवान को, बैठी रही मन मोस॥
विनकारण० । विनवैं० ॥ १ ॥

अरज करे प्रभु का हजूर में, समता भाव निधार।
तुम ही पिता हो प्रभु तुमही माता हो तुम हो भाई हमार॥
विनकारण० । विनवैं० ॥ २॥

निर्धन के प्रभु तुम धनी, निर्जन के परिवार।
इकवर राम मिलाइयो दीजियो दोप उतार।
विनकारण० । विनवैं० ॥ ३

तुम हो राजा प्रभुजी धरम के, हमकूं लगायो परजा दोष।
शील में मेरे सब शन्सै करे, राम रुसाये हो गये रोष॥
विनकारण० विनवैं० ॥ ४

त्याग दियो है प्रभु हम रामजी, त्याग दियो है सब संसार।

गर्भवती हूं कर्म संयोग से, इससे हुई हूं लाचार ॥
विनकारण० । विनवै० ॥ ५
जिस दिन प्रभु पल्ला पाक हो मिले मोही भरतार ।
भरम मिटा के धरूँ धरम को त्यागूं सब संसार ॥
विनकारण० । विनवै० ॥६
राम मनावे तो भी ना मानूं कर जाऊं वन को विहार ।
कर पै श्री रघुवीर के, चोटी धरूँगी उपाड ॥
विनकारण० । विनवै० ॥७
भावे यो सती जी बैठी भावना, ध्यावे पद नवकार ।
पाप घट्यो प्रगट्यो पुन्य फल, सुन लई तुरत पुकार ॥
विनकारण० । विनवै० ॥८
पुंडरीक पुर नगर को, वज्र-जंघ भूपाल ।
आगये पुन्य संजोग ते, गज पकडत वाही काल ॥
विनकारण० । विनवै० ॥९
ढूंढत गजपति वन विषै, भनक पड़ी वाके कान ।
कोई सतवन्ती रोवे वन विषै, कि ये सताईजी अज्ञान ॥
विनकारण० । विनवै० ॥१०
दोष लगायो कैसे पूछिये, गज तजि उतर्‌या धीर ।
विनय सहित दुखपूछन चल्या, आवै जैसे भैना के घर वीर।
विनकारण० । विनवै० ॥११
तुम हो वहन मेरी धर्म की, विपत कहो समझाय ।
माता पिता पति परिवार से, दूंगो वहन मिलाय ॥
विनकारण० । विनवै० ॥ १२
जनक पिता की मैं हूं लाडली, भ्रात भामण्डल धीर ।
स्वसुर हमारे दशरथ नृपवली, भर्त्तार सिरी रघुवीर ॥
विनकारण० । विनवै० ॥१३

रावण हरि करि लेगयो दोष धरे संसार ।
शील मे मेरे सब शंसै करे, दीनी राम निकार ॥
बिनकारण० । विनवै० ॥१४

सुनत कथा जी छाती थरहरी टपकें असुवन धार ।
हा हा रे कर्म तै ए कियो कसी, क्यों तुरत उपगार ॥
विनकारण० । विनवै० ॥१५

देव धरम दिये बीच में, वहन बनाई तत्कार ।
पुन्डरीक पुर लेगयो, करिके गज असवार ॥
विनकारण० । विनवै० ॥१६

पुत्र भये दो लवकुश वली, शिवगामी अवतार ।
वज्रजंघ रक्षा करी, पाल कियो हुशियार ॥
बिनकारण० । विनवै० ॥ १७

१० चैत मास

चैत मास नारद मुनि मिले, चरन पड़े दोऊ वीर ।
राम लखन कीसी सम्पदा, हूज्यो थारे घर वर वीर ॥
बिनकारण० । विनवै० ॥ १८

पूछियो अपनी मात से, रामलखन मात कौन ।
टपटप लागे आंसू टपकने मार‍्यो मन धार‍्यो मौन ॥
बिन कारण० । विनवै० ॥२

नारद मुनि समझाइयो, पिछले सकल वृत्तन्त ।
सुनत उठ जोधा खड्ग ले, वैठ विमान तुरन्त ॥
बिन कारण० । बिनवै० ॥३

घेरि अजुध्या रण भेरी दई, कांपै सुरग पताल ।
सोच भयो श्री रघुवीर के, आये कौन अकाल ॥
बिन कारण० । विनवै० ॥४

निकसे दोऊ भ्राता जुद्धकूं, खूब मचाये घमसान ।

रामलखन घबरा दिए, पटक्यो रथ काटे वाण ॥
विन कारण० । विनवैं० ॥५
हल मूशल ठाए रामने, लछमन चक्र सम्भार ।
सातवार कियो तान के, वृथा गए सातों वार ॥
विन कारण० । विनवैं० ॥६
हल हरिवल अकाए कियों, उपजो सोच अपार ।
आग बबूला हो के, फिर लियो चक्र प्रलय करतार ॥
विन कारण० । विनवैं० ॥७
तब नारद आए भूमि में रामलखन ढिग जाय ।
बात कही समझाय के, किसपे कोपे रघुराय ॥
विन कारण० । विनवैं० ॥८
पुत्र तुम्हारे दोऊ भुजवली, लव व कुश बलवन्त ।
माता विपत सुनि कोपियो, भाख्यो सकल वृत्तन्त ॥
विन कारण० । विनवै० ॥६
भरि आई छाती श्री रघुवीर की रनकूं दियो है निवार ।
आय परे सुत चरण मे, लीने दोऊ पुचकारि ॥
विन कारण० । विनवैं० ॥१०
११ वैशाख मास
मास वैसाख बसन्त ऋतु, सुनि सीताजी की सार ॥
भाग पड़े हनुमत से वली, ल्याए करि मनुहार ॥
विन कारण० । विनवैं० ॥१
बज्र जंघ आये धूम से, ल्याये सब परिवार ।
राम कहैं मैं आने दूं नहीं, सीता दई मैं निकार ॥
विन कारण० । विनवैं० ॥२
जो आवे तो आवो इस तरह, कूदे अगनि मझार ।
देय परीक्षा अपने शील की, होवे कुंड तयार ।

अगन जलावो देरी मत करो, सौ यौजन विस्तार ॥
बिन कारण० । विनवै० ॥४

साड़ी कसि त्यारी करि अङ्गद क्यों वद भाग ।
कुंड खुदायौ मनभावतो, चेतन कर दई आग ॥
बिन कारण० । विनवै० ॥५

जाय चढ़ौ ऊंचे दमदमे, देखे देव अपार ।
सत मूरत सूरत मोहनी, मन में हरष अपार ॥
बिन कारण० । विनवै० ॥६

देखें सुरगों के देवता, देखें भवन वतीस ।
चन्द्र सूरज देखे ज्योतिषी, देखें भूत पतीस ॥
विन कारण० । बिनवै० ॥७

देखे सब विद्याधरा, देखें गण गन्धर्व ।
कमर कसो फौजे आपडी, देखे राजा सर्व ॥
विन कारण० बिनवै ॥८

डीग अगन उठी गगन लों तड तड़ाट भयो घोर ।
कहत प्रजा श्रीराम से, क्यों प्रभू भये हो कठोर ॥
विन कारण० । बिनवै० ॥९

बक्र बचे ना ऐसी अगन में, फाटे धरणी पताल ।
पर्वत फटि मठ गिर पड़े; हे प्रभु कीजिये टाल ॥
बिन कारण० । विनवै० ॥१०

राम खड्ग सूंत्यौ हाथ में, मत कोई कहो जी बनाय ।
आज्ञा माने मेरी जानकी, देवे भरम मिटाय ॥
बिन कारण० । बिनवै ॥११

हुकम दिये रघुवीर ने, शील परीक्षा देव ।
नातर क्यों आई तू यहां, परजा करे है सन्देह ॥
बिन कारण० । बिनवै० ॥१२

पंच परम गुरु वंदिके, करि पति कूं परिणाम ।
छिमाजी कराई सब जीवसैं, देखे लछमन राम ॥
बिन कारण० विनवै० ॥ १३ ॥

पुत्र जुगल छोड़े रोवते सोहे शची समान ।
हरष भरी सतवती महा, बोली वचन महान ॥
विनकारण० विनवै० ॥ १४ ॥

जो पर पुरुष निहारि के, मैं कछु किये हैं कुभाव ।
भस्म अग्नि मोहि कीजिये, नातर जल होय जाव ॥
विनकारण० विनवै० ॥ १५ ॥

१२ जेठ मास

जेठ तपै सूरज आकरै, नीचैं अगनि प्रचण्ड ।
आसपास जल थल क्यार सब, सूखि गए वनखण्ड ॥
विनकारण० विनवै० ॥ १

कूद पड़ी जलती डीग में, शांति भई ततकार ।
उभरे कमल अकाशलों; लीनी अधर सहार ॥
विनकारण० विनवै० ॥ २

जल लहरावे बोले हंसनी, कर रही मीन कलोल ।
छत्र फिरै जी उसके शीस पै, इन्द्र चंवर रहे डोल ॥
विनकारण० विनवै० ॥ ३

शीतल मन्द सुगन्ध जुत, मीठी चलेजी बयार ।
मणि बरषै मणि अमृत गड़ी, देव करैं जै जैकार ॥
विनकारण० विनवै० ॥ ४

धन्य सती धन सतवती; धन धन धीरज एह ।
एह धृग् २ धृग् हम उनके करे, जिनके मन सन्देह ॥
विनकारण० विनवै० ॥ ५

अथ द्वादशानुप्रेक्षा भावना सीताजी भावे हैं जोग धारण ।

कमल में बैठी विचार करै है ।

सीता भावे मन में भावना, यह संसार अनित्य।
धर्म बिना तीनों लोक में, शरण सहाई ना मित्र ॥
विनकारण० विनवै० ॥ १

उलट पुलट चाले रहट सा, ये संसारी चक्र ।
एक अकेला भटके आत्मा, क्या पशु पंछी अरु क्या मनुष ।
विनकारण० विनवै० ॥ २

अन कोई जग में अपना. अन हम काहू के मीत।
अशुचि अपावन तम विषै, करम करे विपरीत ॥
विनकारण० विनवै० ॥ ३

संवर जल विन ना बुझै, तृष्ना अगन प्रचण्ड ।
कर्म खपाये विन ना खपे, भटके सब ब्रह्माण्ड ॥
विनकारण० विनवै० ॥ ४

दुर्लभ बोधनु जगत में, दुर्लभ श्री जिन धर्म ।
दुर्लभ स्वपर विचार है; कर्म न डारयो मर्म ॥
विनकारण० विनवै० ॥ ५

परवश भोगी भारी वेदना, स्ववश सही नहीं रच।
सास्वत सुख जासै पावती, लई करम ने वंच ॥
विनकारण० विनवै० ॥ ६

अब मैं सब वेदन सहूँ, कोनी धरम सहाय ।
परतिज्ञा मैं पूरी करूं मोह महा दुख दाय ॥
विनकारण० विनवै० ॥ ७

राम कहैं प्यारी चल घरूं; ल्या भुज मे भुज डार।
पाडि शिखा कर पे धरिदई, त्यागो हम संसार ॥
विनकारण० विनवै० ॥ ८

तुम- त्यागी निरदोषकूं, हम त्यागे लखि दोष ।

करके छिमा मैं संजम लियौ, करियौ मत अफसोस ॥
विनकारण० विनवै० ॥ ६
गई सति जी वन खण्डकूं, भई अरजिका शीर ।
उग्ररूप तप वो करे, सव दुख सहे शरीर ॥
विनकारण० विनवै ॥ १०
पूरी करि परजायकूं अच्युत सुरग मंझार ।
इन्द्र भयेजी पुन्य संजोग से, भोगे सुक्ख अपार ॥
विनकारण० विनवै० ॥ ११

॥ इति सीताजी का बारहमासा समाप्त ॥

॥ आगे कवि नाम ग्राम संवत् लिख्यते ॥

पढ़िये भाई नैना भावेसैं, गावो वाल गुपाल ।
भावो जो धर्मकी यही भावना, सिरपर गरजत काल ॥
विनकारण० विनवै० ॥ १
शील महातम मे कहे, या सम धरम न कोय ।
शील रतन मोटा रतन, जाते जगयश होय ॥
विनकारण० विनवै० ॥ २
पर भव में सुख सम्पदा, इन्द्रादिक पद पाय ।
काटि करम शिव-सुन्दरिवरे, जन्म मरण छुटि जाय ।
विनकारण० विनवै० ॥ ३
वंश वढ़े सव सङ्कट कटे, सोग वियोग न कोय ।
रोग मिटे जो सेवो संतजन, पाप सकल गेरे धोय ॥
विनकारण० विनवै० ॥ ४
नैनानन्द प्रवन्ध यह, दया सिन्धु सुतहेत ।
गायो ध्यान जिनेन्द्र कूं, पद्म पुराण उपेत ॥
विनकारण० विनवै० ॥ ५
संवत् विक्रम भूप को, नवशत एक हजार ।

तापरषटचालीसधर, (१६४६) लीज्यो सुघड़ संभाल ॥
विनकारण० विनवै० ॥ ६
मत पड़ियो बेटा कुपंथ में, तजियो मत जिन धर्म ।
करलो ज्यों बेटा नरभवकोसफल, रख लीज्यो मेरी शर्म ॥
विन कारण स्वामी क्यों तजी, विनवै जनक दुलारि ।
विन कारण स्वामी क्यों तजी ॥ ७

॥ इति सम्पूर्ण ॥

नेमिनाथ व्याह

विनोदीलाल कृत

॥ सवैया ॥

मौर धरो शिर दूलह के कर कंकण बांध दई कस डोरी । कुण्डल कानन में झलकें अति भाल में लाल विराजत रोरी ॥ मोतिन की लड़ शोभित है छवि देखि लजें वनिता सब गौरी । लाल विनोदी के साहिब का मुख देखन को दुनियां उठ दौरी ॥१॥ छत्र फिरे शिर दूलह के तब बारत रत्न शिवादे मैया । कृष्ण इतै बलभद्र उतैं कर ढोरत चमर चले दोऊ भैया । भूप समुद्र विजय सब संग चले वसुदेव उछाह करैया । लाल विनोदी के साहिब की वनिता सबही मिली लेत बलैया ॥ २ ॥ गौंडे गये जब नेमि प्रभु पशु पक्षिन खैंच पुकार करी है । नाथ सनाथन के प्रतिपाल दयाल सुनो विनती हमरी है । बंदि पड़े बिललाय सबे विन कारण विपदा आनपरी है । पूछत लाल विनोदी के साहिब सारथी क्यों इन बन्दि भरी है ॥ ३ ॥ सारथी ने कर जोड कही सुन नाथ इन्हें जु विदारेंगे अब । यादव संग जुरे सबरे तिन कारण ये सब मारेंगे अब । इनके बच्चा बनमें बिलपें इनको वे आज संहारेंगे अब । तातें तुम से फर्याद करें हमरी गति नाथ सुधारेंगे अब ॥ ४ ॥ बात

सुनी उतरे रथ से पशु पक्षिन की सब बन्दि छुड़ाई । जावो सबै अपने थल को हमरो अपराध क्षमा करो भाई ।। धृक् है ऐसो जीनो जग में तबही प्रभु द्वादश भावना भाई । देव लौकांतिक आय गये जिन धन्य कहै सब यादवराई ।। ५ ।। प्रभु तो बिन ऐसी कौन करे औ को जग मे यह बात विचारे । कौन तजे सुत बन्धु बधू अरु को जग मे ममता निर्वारे ।। को वसु कर्मनि जीत सके जनु आप तरे अरु औरन तारे । लाल विनोदी के साहब ने यश जीतलयो जग जीतन हारे ।। ६ ।। नेम उदास भये जब से कर जोड़ के सिद्ध का नाम लयो है । अम्बर भूषण डार दिये शिर मौर उतारके डार दयो है । रूप धरो मुनि का जबही तबही चढि के गिरनार गयो है । लाल विनोदी के साहिबने तहां पंच महाव्रत योग ठयो है ।। ७ ।। नेम कुमार ने योग लियों जब होने को सिद्ध करी मन इच्छा । या भव के सुख जान अनित्य सो आदर एक उदंड की भिक्षा । स्नेह तजो घर बार तजो नही भोग विलासन की मन शिक्षा । लाल विनोदी के साहब के संग भूप सहस लई नव दिक्षा ।।८।। काहू ने जाय कही सुन राजुल तेरो पिया गिरनारी चढ़ो है । इतनी सुन भूमि पछार लई मानो तन सेती जीव कढो है । सो उग्रसेन से जाय कही सुन तात विधाता अनर्थ गढो है । लाज सबै सुध भूलगई पिय देखने को जो छाह बढो है ।। ९ ।। लाडली क्यों गिरनार चढ़े उसही पति तुल्य सुधी वर लाऊं । प्रोहित को पठऊं अबही बहु भूपर के सब देश ढुंढाऊं ।। ब्याह रचौं फिरके तुम्हरों महि मण्डल के सब भूप बुलाऊं । लाल विनोदी के नाथ विना द्युतिवन्त सो लंक तुम्हे परणाऊं ।।१०।। काहे न बात सम्हाल कह्यो तुम जानत हौ यह बात भली है । गालिया काढत हो हमको सुनो तात भली तुम जीभ चली है । मैं सबको तुम तुल्य गिनों तुम जानत ना यह बात रली है । या भव में पति

नेमि प्रभू वह लाल विनोदी को नाथ वली है ॥ ११ ॥ मेरो पिय गिरनार चढो सुन तात मैं भो गिरनार चढोंगी। संग रहौं पिय के बन में तिनही हियको मुख नाम पढोंगी। और न बात सुहाय कछू पियकी गुण माल हिये में मढोंगी। कंत हमारे रचें शिव से शिव थान को मैं भी सिवान गढूंगी ॥१२॥ ॥ इति ॥

बारहमासा राजुल

पिय प्यारे ने सुधि बिसराई। अब कैसे जियों मेरी माई ।टेक। सखी आयो अगम अषाढा। तब क्यों न गये गिरनारा। मेरी रच संयोग बिसारी। मन में क्या नाथ विचारी ॥ अब क्यों छोही अकुलाई। अब० ॥ १ ॥ सावन में ब्याहन आये। सब यादव नृपति सुहाये। पशुवनकी करुणा कीनी। मेरी ओर दृष्टि ना दीनी। गिर गमन कियो यदुराई। अब० ॥ २ ॥ भादों बरसत गंभीरा मेरे प्राण धरे ना धीरा ॥ मोहिं मात पिता समझावे, मेरे मन एक न आवे। मो प्रभु बिन कछु न सुहाई। अब० ॥ ३ ॥ सखी आयो अस्विन मासा। पहुंची अपने पिय पासा। क्यों छोड़े भोग बिलासा। कर पूर्व जन्म की आशा। तज वर्तमान सुखदाई। अब० ॥ ४ ॥ अब लागो कार्तिक मासा। सब जन गृह करत हुलासा। सब गृह गृह मङ्गल गावें। हमरे पिय ध्यान लगावें ॥ मेरा मान कही यदुराई। अब० ॥ ५ ॥ लगी अगहन मास सुहाई। जामें शीत पडे अधिकाई। सब जन कम्पैं जग केरे। कैसे ध्यान धरों प्रभु मेरे ॥ थिरता मन नाहिं रहाई। अब० ॥ ६ ॥ सखी पूष में परम तुषारा। वर शीत भई अधिकारा ॥ कैसे के संयम मण्डो। कैसे वसु कर्मन दंडो ॥ घर चल के राज कराई। अब० ॥ ७ ॥ सखी माघ मास अब लागो। सब ही जन आनन्द पागो ॥ तुम लीनी जगत बड़ाई। मोहिं त्याग दया नहीं आई ॥ धृक मेरी पूर्व

कमाई । अब० ॥ ८ ॥ फागुन मे सब जन खेलत होरी । खेलत केसर रंग बोरी ॥ तुम गिरिपर ध्यान लगायो । मेरा कुछ ध्यान न आयो ॥ तुम शरणागत मैं आई । अब० ॥ ६ ॥ सखी पहिले चैत जनायो । सब साल को आगम आयो । सबफूले बन अकुलाई । मोंहि तुम बिन कछु न सुहाई । मोहि अधिक उदासी छाई । अब० ॥ १० ॥ वैसाख पवन झकझोरे । लूह लपट लगे चहूँ ओरे । जे जड ते तपत पहारा । सो तन कोमल सुकुमारा ॥ घर छोड चले यदुराई । अब० ॥११॥ सखी जेठ मास अब आयो। तब घाम ने जोर जनायो ॥ कैसे भूख पियास सहोगे । कैसे संयम धारोगे ॥ थिरता मनमे न रहाई । अब कैसे जियों मेरी माई ॥१२॥

अथ अठाई रासा

वरत अठाई जे करें ते पावें भव पार प्राणी ॥ टेक ॥
जम्बूद्वीप सुहावणों, लख योजन विस्तार प्राणी । ॥ १ ॥
भरत क्षेत्र दक्षिण दिशा, पोदणपुर तिहु सार प्राणी ।
विद्यापति विद्याधरो, सोमाराणी राय प्राणी । वरत० ॥ २ ॥
चारण मुनि तहपारणें, आये राजा गेह प्राणी ।
सोमाराणी अहार दे पुन्य, बढो अति नेह प्राणी ।वरत० ॥३॥
तिसी समय नभ देवता, चले जात विमान प्राणी ।
जै जै शब्द भयो घनो मुनिवर पूछ्यो ज्ञान प्राणी । वरत०॥४॥
मुनिवर बोले सुन राणी, नन्दीश्वर को जात प्राणी ।
जे नर करहीं स्वभाव सो, ते पावे शिव कांत प्राणी ।वरत०॥५॥
यह वचन राणी सुनो, मन में भयो आनन्द प्राणी ।
नन्दीश्वर पूजा करें, ध्यावें आदि जिनेन्द्र प्राणी । वरत०॥६॥
कार्तिक फागुन साढ में, पालें मन वच देह प्राणी ।
वसु दिवस पूजा करै, तीन भवान्तर लेय प्राणी । वरत०॥७॥

विद्यापति सुनि चालियो, रच्यो विमान अनूप प्राणी ।
राणी बरजै राय को तू तो मानुष भूप प्राणी । वरत० ॥ ८ ॥
मानुषोत्र लंघत नहीं मानुष जेती जात प्राणी ।
जिन वाणी निश्चय सही तीन भवन विख्यात प्राणी ।वरत०॥९॥
सो विद्यापति ना रह्यो, चलो नन्दीश्वर दीप प्राणी ।
मानुषोत्र गिरिसो मिलो, जाय न मान महीप प्राणी ।वरत०॥१०॥
मानुषोत्र की भेंटतैं परयो धरणी सिर भार प्राणी ।
विद्यापति भव चूरियो, देव भयो सुरसार प्राणी । वरत० ॥ ११ ॥
दीप नन्दीश्वर छिनक में, पूजा वसु विधि ठान प्राणी ।
करी सु मन वचकाय से, मालादई करमान प्राणी । वरत०॥१२॥
आनन्द सों फिर घर आयो, नन्दीश्वर कर जात प्राणी ।
विद्यापति का रूप कर, पूछो राणी बात प्राणी । वरत० ॥ १३ ॥
राणी बोली सुन राजा यह तो कबहुं न होय प्राणी ।
जिन वाणी मिथ्या नहीं, निश्चय मन में सोय प्राणी ।वरत०॥१४॥
नन्दीश्वर की जयमाला, राय दिखाई आन प्राणी ।
अबतू सांचों मोहि जाणों, पूजन करी बहुमान प्राणी । वरत०॥१५॥
राणी फिर तासों कहै, यह भव परसै नाहिं प्राणी ।
पश्चिम सूर्य उदय हुए, जिन वाणी शुचि ताहि प्राणी ।वरत०॥१६॥
राणी सों नृप फिर बोल्यो, बावन भवन जिनालय प्राणी ।
तेरह तेरह मैं बन्दे पूजन करी तत्काल प्राणी । वरत० ॥ १७ ॥
जयमाला तहां सों मिलि आयो हूं तुझ पास प्राणी ।
अब तू मिथ्या मत माने, पूजा भई अवश्य प्राणी । वरत०॥१८॥
पूरव दक्षिण में वन्दे, पश्चिम उत्तर जात प्राणी ।
मैं मिथ्या नही भाष हूँ, मोहि जिनवर की आण प्राणी ।वरत०॥१९॥
सुनि राजा से तब केही, जिन वाणी शुभ सार प्राणी ।
ढाई दीपस लंघई, मानुष जन विस्तार प्राणी । वरत० ॥ २० ॥

विद्यापति से सुर भयो, रूप धरो शुभ सोई प्राणी।
राणी की स्तुति करी, निश्चय समकित तोय प्राणी।वरत० ॥२१॥
देव कहे अब सुन राणी मानुपोत्र मिलो जाय प्राणी।
तिहतें चय में सुर भयो, पूज नन्दीश्वर आय प्राणी।वरत०॥२२॥
एक भवांतर मो रहो, जिन शासन प्रमाण प्राणी।
मिथ्याती माने नहीं श्रावक, निश्चय आन प्राणी।वरत० ॥२३॥
सुरचय तहां हथिनापुरी राज कियो भरपूर प्राणी।
परिग्रह तज संयम लियो, करम मह्ना गिर चूर प्राणी॥ वरत०॥२४॥
केवल ज्ञान उपार्ज कर, मोक्ष गयो मुनिराय प्राणी।
शाश्वत सुख विलसैं सदा, जन्म-मरण मिटाय प्राणी॥वरत०॥२५॥
अब राणी की सुनो कथा, संयम लीनो सार प्राणी।
तप कर चय के सुर भयो, विलसे सुख अपार प्राणी॥वरत०॥२६॥
गज पुर नगरी अवतरो, राज करो बहु भाय प्राणी।
सोलह कारण भाइयो धर्म सुनो अधिकाय प्राणी॥वरत० ॥२७॥
मुनि संघाटक आइयो, माली सार जणाय प्राणी।
राजा वन्दो भाव सो, पुन्य वड़ो अधिकाय प्राणी॥वरत०॥२८॥
राजा मन वैरागियो, संयम लीनो सार प्राणी।
आठ सहस्र नृप साथले, यह ससार असार प्राणी॥ वरत० ॥२९॥
केवल ज्ञान उपार्ज के, दोय सहस्र निर्वाणी प्राण।
दोय सहस्र सुख स्वर्ग के भोग भोग सुथान प्राणी ॥वरत० ॥३०॥
चार सहस्र भू-लोक में, हन्डे बहु संसार प्राणी।
काल पाय शिवपुर गये, उत्तम धर्म विचार प्राणी ॥ वरत० ३१॥
वरत अठाई जे करें, तीन जन्म परमाण प्राणी।
लोकालोक सु जाण ही, सिद्धारथ कुल ठाण प्राणी॥ वरत० ॥३२॥
भव समुद्र के तरण को, वावन नौका जान प्राणी।
जो जिय करें स्वभाव सों, जिनवर सांच वखान प्राणी॥वरत०॥३३॥

मन वच काया जे पढ़े, ते पाव भवपार प्राणी।
विनय कीर्ति सुखसौं भणौं जनम सफल संसार प्राणी।
बरत अठाई जे पढ़ैं, ते पावैं भव भार प्राणी ॥ वरत० ॥३४॥

इति श्री अठाई रासा समाप्त

अञ्जना सती का जीवन (लावनी)

पतिव्रता एक नार अञ्जना, रामा महेन्दर की लड़की ॥ टेक ॥
अशुभ करम पूरव से आयो, दासी संग बन वन फिरती।
मान सरोवर तट के ऊपर, सिह जडी के हुए पती ॥ १ ॥
चकवा चकवी वियोगन देखे, तब त्रिया की सुरत धरी।
जभी पवन जी ने आधी रैन को, राह लई अपने घर की ॥ २ ॥
गुप्त त्रिया से जाय महल में, बात कही है तन मन की।
हाथ जोड़ कर कहे अन्जना, सुनो नाथ मेरे प्राणपति ॥ ३ ॥
कछू निशानी मुझको दीजे, सासू पूछे केतुमती।
कड़ा मुद्रिका दिया निशानी राह लई अपने घर की ॥ ४ ॥
गर्भवती जब देखी अञ्जना, सासु पूछे केतुमती।
आधी रात को विमान बैठ कर, आये मेरे प्राणपति ॥ ५ ॥
मेरी न मानों दासी से पूछो, वो तुम से कह दे सच्ची।
जा दिन से वर माला डाली, वा दिन छूटा तेरा पती ॥ ६ ॥
अब कैसे तुझे गर्भ रहा है, पुत्र बुलायो लङ्का पति।
हाथ जोडकर कहे अञ्जना, सुनो सासु मेरी केतुमती ॥ ७ ॥
कडा मुद्रिका दिया निशानी, निक्ल गये मेरे प्राणपती।
तू झूठी तेरी दासी झूठी, वो दूती तेरी पक्की ॥ ८ ॥
कुल को कलङ्क लगाया पापिन, जा में फर्क न एक रती।
दोनों को दिया देश निकाला, दासी संग बन वन फिरती ॥ ९ ॥
माता पिता पर गई अञ्जना, वहाँ पर देखी गर्भवती।
बिन आदर से वो घर निकाली, दासी संग वन बन फिरती ॥ १० ॥

निराश होकर गई वनों में, यहाँ पर देखे मुनि जती।
वन्दन कर पूरव ले पूछे, कैसे छूटे प्राणपती ॥ ११ ॥
कहें मुनीश्वर सुनो अञ्जना, धर्म ध्यान राखो मन मे।
चर्म शरीरी पुत्र होगया, पति मिले थोड़े दिन में ॥ १२ ॥
दे उपदेश मुनीश्वर चाले, पुत्र होय तेरे वन मे।
सुन्दर मूरत जब देखी पुत्र की, तेजी जैसे सूरज मे ॥ १३ ॥
अञ्जना का एक मामा था, आ निकला इस ही वन में।
सती अञ्जना पुत्र सहित, चली जभी मामा सग में ॥ १४ ॥
खेलत बालक विमान मे से, आन गिरा है परवत मे।
टूक टूक हो गये शिला के, अचरज माना है मन मे ॥ १५ ॥
खेलत बालक मामा देखा, खुशी हुआ अपने मन में।
मामा ने तब प्यार करके, उठा लिया है गोदिन मे ॥ १६ ॥
तन्नूलाल यह देख तमाशा खुशी हुआ अपने मन में।
चिरंजीव हो यह बालक तेरा, आनन्द बरस रहा मन में ॥ १७ ॥

॥ इति ॥

दशम अध्याय

बृहद् अर्घावली

१ देव—शास्त्र-गुरु का अर्घ

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ।
वर धूप निरमल फल विविध, बहु जनम के पातक हरूँ॥
इह भांति अर्घ चढाय भवि, करत शिव पंकति मचूं।
अरिहंत श्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं॥

दोहा—वसुविधि अर्घ संयोजके, अति उछाह मन कीन।

जासों पूजों परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥
ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घं ॥

२ बीस तीर्थंकर अर्घ

जल फल आठों द्रव्य, अर्घ करि प्रीति धरी है ।
गणधर इन्द्रहूतैं थुति पूरी न करी है ॥
'द्यानत, सेवक जानके, जगतैं लेहु निकार ।
सीमंधर जिन आदि दे बीस विदेह मंझार ॥
श्री जिनराज हो भव तारण तारण जिहाज ।

ॐ ह्रीं श्री बीस विरहमान जिनेन्द्रेभ्यो सीमंधरजी, युगमंदरजी बाहुजी, सुबाहुजी, संजातकजी, स्वयंप्रभुजी, ऋषभाननजी, अनन्तवीर्यजी, सूरप्रभजी, विशालकीर्तिजी, वज्रधरजी, चन्द्राननजी चन्द्रबाहुजी, भुजङ्गमजी, ईश्वरजी, नेमीश्वरजी, वीरसेनजी, महाभद्रजी, देवयशोधरजी, अजितवीर्येभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं॥

३ अकृत्रिम चैत्यालय अर्घ

वसु कोटि सुछप्पन लाख ऊपर, सहस सत्याणवे मानिये ।
सत चार पै गिनले इक्यासी. भवन जिनवर जानिये ॥
तिहुँ लोक भीतर सासते सुर असुर नर पूजा करें ।
तिन भवन को हम अर्घ लेकै पूजि हैं जग दुख हरें ॥

ॐ ह्रीं तीनलोक सम्बन्धी आठ करोड़ छप्पन लाख सत्तानवे हजार चारसौ इक्यासी अकृत्रिम चैत्यालयेभ्या अर्घं ॥

४ तीन लोक सम्बन्धी कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय अर्घ

सात क़रोड़ बहत्तर लाख पाताल विषै जिन मन्दिर जानो ।
मध्यहि लोक में चारसौ अट्ठावन व्यंतर ज्योतिष के अधिकानो ॥
लाख चौरासी हजार सत्तानवे तेईश ऊरध लोक बखानो ।
इक इक में प्रतिमा शत-आठ नमों कर जोड़ त्रिकाल सयानो ॥

ॐ ह्रीं तीनलोकसम्बन्धी कृत्रिमअकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं ॥

५ सिद्ध परमेष्ठी का अर्घ

जल फल वसु वृन्दा अरघ अमंदा जगत अनंदा के कन्दा ।
मेटो भवफन्दा सब दुख दंदा, हीराचन्दा तुम बन्दा ॥
त्रिभुवन के स्वामी त्रिभुवन नामी अन्तरयामी अभिरामी ।
शिवपुर विश्रामी निज निधि पामी सिद्ध जजामि सिरनामी ॥
ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं सिद्ध चक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने अर्घं ॥

६ श्री ऋषभनाथ तीर्थंकर का अर्घ

जल फलादि समस्त मिलायके, जजत हूँ पद मङ्गल गाय के ।
भगत वत्सल दीन दयाल जी, करहु मोहि सुखी लखि हाल जी ॥
ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेव जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं ॥

७ श्री अजितनाथ तीर्थंकर का अर्घ

जल फल सब सज्जे बाजत बज्जे गुन गन रज्जे मनमज्जे ।
तव पद जुग मज्जे सज्जन जज्जे ते भव भज्जे निज कज्जे ॥
श्री अजित जिनेशं नुतनाकेशं चक्र धरेशं खगेशं ।
मन वांछित दाता त्रिभुवन त्राता पूजों ख्याता जगेशं ॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं ॥

८ श्री शंभवनाथ तीर्थङ्कर का अर्घ

जल चन्दन तन्दुल प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ किया ।
तुमको अरपों भाव भगति धर, जै जै जैशिव रमनि पिया ॥
शम्भव जिनके चरन चरचते, सब आकुलता मिट जावे ।
निज निधि ज्ञान दरश सुख वीरज, निराबाध भवि जन पावे ॥
ॐ ह्रीं श्री शम्भवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं ॥

९ श्री अभिनन्दननाथ तीर्थङ्कर का अर्घ

अष्ट द्रव्य संवारि सुन्दर, सुजस गाय रसाल ही।
नाचत रचत जजों चरन जुग, नाय नाय सुभाल ही ॥
जय कलुषताप निकन्द श्री अभिनन्द अनुपम चन्द है।
पद इन्द्र बृन्द जजे प्रभु, भवदंद फन्द निकन्द है ॥
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं ॥

१० श्री सुमतिनाथ तीर्थङ्कर का अर्घ

जल चन्दन तन्दुल प्रसून चरु, दीप धूप फल सकल मिलाय।
नाचि राचि शिरनाय समरचैं, जय जय जय जय जय जिन राय ॥
हरिहर वन्दित पाप निकन्दित, सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय।
तुम पद पद्म सद्म शिवदायक, जजत मुदित मन उदित सुभाय ॥
ॐ ह्रीं श्री सुमति नाथजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं ॥

११ श्री पद्मप्रभु तीर्थङ्कर का अर्घ

जल फल आदि मिलाय गाय गुन, भगतभाव उमगाय।
जजों तुमहि शिवतियवर जिनवर, आवागमन मिटाय ॥
मन वच तन त्रय धार देत ही, जनम जरा मृत जाय।
पूजों भाव सों, श्री पदम नाथ पद सार पूजों भावसों ॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं ॥

१२ श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थङ्कर का अर्घ

आठों दरव साजि गुण गाय, नाचत राचत भगति बढाय।
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ॥
तुम पद पूजों मन वच काय. देव सुपारस शिवपुर राय।
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ॥
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं ॥

१३ श्री चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर का अर्घ

सजि आठों दरव पुनीत, आठों अङ्ग नमों।

पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों ॥
श्री चन्द्नाथ द्युतिचन्द, चरणन चन्द लगै।
मन वच तन जजत अमंद, आतम जोति जगे ॥
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं ॥

१४ ॥ श्री पुष्पदन्तनाथ तीर्थंकर का अर्घ

जल फल सकल मिलाय मनोहर, मन वच तन हुलसाय।
तुम पद पूजों प्रीति ल्याय के जय जय त्रिभुवन राय॥
मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदन्त जिनराय, मेरी अरज सुनीजे॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त नाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं ॥

१५ ॥ श्री शीतलनाथ तीर्थंकर का अर्घ ॥

श्री फलादि वसु प्रासुक द्रव्य साजे, नाचे रचे मचत वज्जत सज्ज बाजे। रागादि दोष मल मर्द्दन हेतु येया, चर्चो पदाब्ज तव शीतल नाथ देवा ॥
ॐ ह्रीं श्री शीतल नाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं ॥

१६ ॥ श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर का अर्घ ॥

जल मलय तन्दुल सुमन चरु दीप धूप फलावली।
करि अरघ चर्चों चरन जुग प्रभु मोहि तार उतावली॥
श्रेयांस नाथ जिनन्द त्रिभुवन चन्द आनन्द कन्द हैं।
दुख दन्द फन्द निकन्द पूरन चन्द ज्योति अमन्द हैं॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं ॥

१७ ॥ श्री वासुपूज्य तीर्थंकर का अर्घ ॥

जल फल द्रव्य मिलाय गाय गुन, आठों अङ्ग नमाई।
शिव पद राज हेत हे श्रीपति, निकट धरों यह लाई।
वासुपूज्य वसु पूजततुज पद, वासव सेवत आई।
बाल ब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सन्मुख धाई॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं ॥

१८ ॥ श्री विमलनाथ तीर्थङ्कर का अर्घ ॥

आठों दरब संवार, मनसुख दायक पावने।
जजौं अरघ भर थार, विमल विमल शिवतिय रमन ॥
ॐ ह्रीं श्री विमल नाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं ॥

१९ ॥ श्री अनन्त नाथ तीर्थंकर का अर्घ ॥

शुचि नीर चन्दन शालि शंदन सुमन चरु दीवा धरों।
अरु धूप जुत अरघ करि कर जोर जुग विनती करों ॥
जगपूज परम पुनीत मीत, अनंत संत सुहावनो।
शिव कन्त वंत महंत ध्यावो, भ्रन्त तंत नशावनो ॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं ॥

२० ॥ श्री धर्मनाथ तीर्थंकर का अर्घ ॥

आठों दरब साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुन गाई।
बाजत दम दम दम मृदङ्ग गत, नाचत ता थेई थाई ॥
परम धरम-शम रमन धरम जिन अशरन शरन तिहारी।
पूजों पाय गाय गुन सुन्दर, नाचौं दै दै तारी ॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं ॥

२१ ॥ श्री शान्तिनाथ तीर्थंकर का अर्घ ॥

वसु द्रव्य संहारी तुम ढिग धारी, आनन्द कारी दृग-प्यारी।
तुम हो भवतारी करुनाधारी, यातैं थारी शरनारी ॥
श्री शान्ति जिनेशं नुतनाकेशं, वृष चक्रेशं शक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं हे गुनधेशं, दया मृतेशं मक्रेशं ॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं ॥

२२ ॥ श्री कुंथनाथ तीर्थंकर का अर्घ ॥

जल चन्दन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप लेरी।
फल जुत जजन करो मन सुख धरि, हरो जगत फेरी॥
कुंथ सुन अरज दास केरी, नाथ सुन अरज दास केरी।
भव सिंधु पर्यो हों नाथ निकारो बाँह पकर मेरी॥
प्रभु सुन अरज दास केरी नाथ सुन अरज दास केरी।
जगजाल पर्यो हों वेग निकारो बांह पकर मेरी॥
ॐ ह्रीं श्री कुन्थनाथजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं॥

२३ ॥ श्री अरनाथ तीर्थंकर का अर्घ ॥

शुचि स्वच्छ पीटरं, गंध गहीरं तदुल शीरं पुष्प चरुं।
वर दीपं धूपं, आनन्द रूपं लै फल भूपं अर्घ करूं॥
प्रभु दीनदयालं अरिकुलकालं विरदविशालं सुकुमालम्॥
हनि मम जंजालं हे जगपालं, अरगुनमालं वर भालम्॥
ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं॥

२४ ॥ श्री मल्लिनाथ तीर्थंकर का अर्घ ॥

जल फल अरघ मिलाय गाय गुन पूजों भगति बढ़ाई।
शिव पद राज हेत हे श्रीधर शरन गही मैं आई॥
राग-दोष मद-मोह हरन को, तुम ही हो वर वीरा।
यातें शरन गही जगपतिजी, वेग हरो भव पीरा॥
ॐ ह्रीं मल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं॥

२५ ॥ श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर का अर्घ ॥

जल गंध आदि मिलाय आठों, दरब अरघ सजों वरों।
पूजों चरनरज भक्ति जुत, जातें जगत सागर तरों॥
शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ मुनि गुन माल है।
तसु चरन आनन्द भरन तारन, तरन विरद विशाल है॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं।

२६ ॥ श्री नमिनाथ तीर्थङ्कर का अर्घ ॥

जल फलादि मिलाय मनोहर, अरघ धारत ही भव भौ हरं।
जजतु हौं नमि के गुन गायके, जुग पदाम्बुज प्रीति लगायके ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं ॥

२७ ॥ श्री नेमिनाथ तीर्थङ्कर का अर्घ ॥

जल फल आदि साज शुचि लीने, आठों दरव मिलाय।
अष्टम छिति के राज करन को, जजों अङ्ग वसु नाय ॥
दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय, दाता० ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं ॥

२८ ॥ श्री पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ ॥

जल आदि साजि सब द्रव्य लिया।
कन थार धार नुत नृत्य किया ॥
सुख दाय पाय यह सेवत हौं ॥
प्रभु पार्श्व सार्श्वगुन वेवत हौं ॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं ॥

२६ ॥ श्री महावीर भगवान का अर्घ ॥

जल फल वसु सजि हिमथार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊं भवदधितार, पूजत पाप हरों ॥
श्री वीर महा अति वीर सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुन धीर सन्मति दायक हो ॥

ॐ ह्रीं वर्द्धमान जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं ॥

३० ॥ चौवीस तीर्थङ्कर का अर्घ ॥

जल फल आठों शुचि सार, ताको अर्घ करों।
तुम को अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों ॥

चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सही।
पद जजत हरत भव फन्द पावत मोक्ष मही॥
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घं।

३१ ॥ पंच परमेष्ठी का अर्घ ॥

मन माहिं भक्ति अनादि नमिहों देव अरहन्त को सही।
श्री सिद्ध पूजूँ अष्ट गुण मय सूरिगण छत्तीस ही॥
अङ्ग पूर्व धारी जजों उपाध्याय साधु गुण अठवीस जी।
ये पंचगुरु निरग्रन्थ सुमंगल दायी जगदीश जी॥
ॐ ह्रीं श्री अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अर्घं॥

३२ ॥ निर्वाण क्षेत्र का अर्घ ॥

जल गंध अच्छत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं।
"द्यानत" करो निरभय जगत तैं, जोर कर विनती करौं॥
सम्मेद गढ गिरनार चम्पा, पावापुर कैलास कौं।
पूजौं सदा चौबीस जिन निर्वाण भूमि निवास कौं॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्कर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं

३३ ॥ पंच बालयति का अर्घ ॥

सजि वसु विधि दरव मनोग, अर्घ बनावत हों।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हों॥
श्री वासुपूज्य मल्लि नेमि, पारस वीर यती।
नमूं मन वच तन धरि नेम, पांचों बाल जती॥
ॐ ह्रीं श्री वासपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर पंच बालयती तीर्थंकरेभ्यो अर्घं॥

३४ ॥ सप्तऋषि का अर्घ ॥

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर. दीप धूपसू लावना।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ कीजे पावना॥

मन्वादि चारण ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातिक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमनु, सुरमनु, श्रीनिचय, सर्व सुन्दर जयवान, विनय लालस, जयमित्र सप्त ऋषिभ्यो अर्घं ॥

३५ ॥ पंच मेरु का अर्घ ॥

आठ दरबमय अरघ बनाय, "द्यानत" पूजों श्री जिनराय।
महा सुख होय, देखें नाथ परम सुख होय ॥
पाँचों मेरु असी जिन धाम, सब प्रतिमाजी को करों प्रणाम।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

ॐ ह्रीं पंच मेरु सम्बन्धी जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घं

३६ ॥ नन्दीश्वर द्वीप का अर्घ ॥

यह अर्घ कियो निज हेतु, तुमको अरपत हों।
"द्यानन" कीनो शिव खेत, भूप समरपत हों ॥
नन्दीश्वर श्री जिनधाम, बावन पूज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनन्द भाव धरों ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्व दक्षिण पश्चिमोत्तरे द्विपंचाश-ज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अर्घं ॥

३७ ॥ सोलह कारण का अर्घ ॥

जल फल आठों दरव चढ़ाय "द्यानत" वरत करो मनलाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद दाय ॥
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्व-नतीचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप, साधुसमाधि, वैयावृत्त्यकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति,

बहुश्रुतभक्ति प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्गप्रभावना, प्रवचनवात्सल्येति षोडषकारणभावनाभ्यो नम. अर्घं ॥

३८ ॥ दश लक्षण अर्घं ॥

आठों दरब सवार. "द्यानत" अधिक उछाह सों ।
भव आताप निवार. दशलक्षण पूजूं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य, दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः अर्घं ॥

३९ ॥ रत्नत्रय का अर्घ ॥

आठों दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये ।
जन्म रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजों ॥

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक् दर्शन अष्ट विध सम्यक् ज्ञान त्रयोदश प्रकार सम्यक् चारित्रेभ्यो अर्घं ॥

४० ॥ जिनवाणी (श्री शास्त्रजी) का अर्घ ॥

पृष्ठ ६ पर छपी शास्त्र स्तुति को पढकर अर्घ चढाना चाहिये ।

ॐ ह्रीं श्री प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग अनेक नय जिनवाणि मंडितेभ्यो अर्घं ॥

श्री सिद्ध क्षेत्र सम्बन्धी अर्घ

४१ ॥ जम्बू स्वामी ॥

मथुरा नगरी अति सुखदाता, जम्बू स्वामी मुक्ति विधाता ।
तीजे केवल ज्ञानी ध्यावो, सिद्ध स्थान पूजों निज पावो ॥
चौरासी का मन्दिर भारी. उपवन मांहि महा सुख कारी ।
बड़े उछाह थकी हम पूजें, जातें आनन्द मारग सूझें ॥

ॐ ह्रीं तृतीय श्रुत केवली जम्बूस्वामिनः मथुरानगरीसिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

४२ ॥ सोनागिर क्षेत्र ॥

नंगानंग कुंवर द्वै राजकुमारजू,
मुक्ति गये सोनागिर सों हितकारजू।
साढ़े पाँच करोड़ भये शिवराज जी,
पूजों मन वच काय लहो सुख सार जी॥
तिनके चरण रजों में मन वच काय के।
भवदधि उतरो पार शरण में आय के॥

ॐ ह्रीं नंगानंगकुमारादि साढ़े पांच किरोड़ मुनि मोक्ष पद प्राप्तेभ्यो सोनागिरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निपामीति स्वाहा।

४३ पटनापुर क्षेत्र (सेठ सुदर्शन मुक्तिस्थान)

शूली तें सिंहासन कीना, सेठ सुदर्शन निज सुख भीना।
मुक्तिगये पटना पुर वासी, पूजों द्रव्य लाय बड़भागी॥
पटना में सरवर विच मानूं, जिन मंदिर सुन्दर पहिचानूं।
हम पूजें बड़ भाग हमारा, पूजें सिद्ध क्षेत्र सुख कारा॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन श्रेष्ठिनः निर्वाणास्पदपाटलिपुत्रस्यारामसिद्ध-क्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

४४ ॥ पावांपुर क्षेत्र ॥

पावांपुर सरवर के वीच महावीरजी।
सिद्ध भये हनि कर्म करें सुर सेव जी॥
तिनके चरण जजों मैं मन वच काय के।
भवदधि उतरों पार शरण मे आय के॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर सिद्धपदप्राप्तेभ्यो श्रीपावांपुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं।

४५ ॥ गुणावा क्षेत्र ॥

नगर नवादा नाम बताया, स्वामी गौतम गणधर राया।
ताल तीर शिव स्थान सिधाया, पूजों अरघ लाय शुभ भाया॥

गुण अनन्त के धारक नाथा, सिद्ध भये शिव स्वातमसाथा।
लोकालोक निहार जिनन्दा, सो थल हम पूजें सुख कन्दा॥

ॐ ह्रीं गौतमगणधरस्य नवादाग्रामस्य सरोवरक्षेत्रेभ्यो सिद्धपद प्राप्तेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

४६ ॥ चम्पापुर क्षेत्र ॥

चम्पापुर ते मोक्ष गये जिनराज जी,
वासपूज्य महाराज करम क्षय कार जी।
तिन चरण जजों मैं मन वच काय के,
भवदधि उतरों पार शरण में आय के॥

ॐ ह्रीं वासपूज्यसिद्धपदप्राप्तेभ्यो श्रीचम्पापुरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं।

---

४७ श्री सम्मेद शिखर संबंधी पर्वत पर टोंक टोंक प्रति जलादि द्रव्य चढाने की विधि

(१) दोहा—कुंथुनाथ जिनराज का, कूट ज्ञान धर जेह।
मन वच तन कर पूजहू, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्रादि ९६ कोडा कोडी ९६ करोड ३२ लाख ९६ हजार ७४२ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय करि बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देव गुणावा ग्राम के उद्यान आदि भिन्न भिन्न स्थानों से निर्वाण पधारे हैं तिनके चरणारविन्द को जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(२) दोहा—नमिनाथ जिनराज का कूट मित्रधर जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि नौसे कोड़ा कोड़ी एक अरब ४५ लाख ७ हजार ६४२ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को मेरा नमस्कार हो, जलादि अर्घ ॥ २ ॥

(३) दोहा—अरनाथ जिनराज का नाटक कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनेन्द्रादि ६६ करोड़ ६६ लाख ६६ हजार मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

(४) दोहा—मल्लिनाथ जिनराज का संवल कूट है जेह ।
मन वच तन कर पूजिहूँ शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि ६६ करोड़ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को जलादि अर्घ ।

(६) दोहा—श्रेयांस नाथ जिनराज का संकुट कूट है जेह ।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांस नाथ जिनेन्द्रादि मुनि ६६ कोड़ा कोड़ी ६६ करोड़ ६६ लाख ६ हजार ५४२ मुनि इस कूट के सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को अर्घ ।

(७) दोहा—पुष्पदन्त जिनराज का सुप्रभ कूट है जेह ।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्रादि मुनि एक कोड़ा कोड़ी ६६ लाख ७ हजार ४८० मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

(८) दोहा—पद्म प्रभु जिनराज का मोहन कूट है जेह ।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्रादि ६६ करोड़ ८७ लाख ४३ हजार ७६० मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारबिन्द को अर्घ।

(६) दोहा—मुनिसुव्रत जिनराज का निर्जर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजिहूँ शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्रादि ९९ कोड़ाकोड़ी ९७ करोड़ ९ लाख ९९९ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनको अर्घं।

(१०) दोहा—चन्द्र प्रभु जिनराज का ललित कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्रादि ९८४ अरब ७२ करोड़ ८० लाख ८४ हजार मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनको अर्घं।

(११) दोहा—ऋषभदेव जिन सिद्धभये, गिरिकैलाश से जोय।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर नमूं पद दोय॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्रादि कैलाश पर्वत से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(१२) दोहा—शीतलनाथ जिनराज का कूट विद्युत वर जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि १८ कोड़ा कोड़ी ४२ करोड़ ३२ लाख ४२ हजार ९०५ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को अर्घं।

(१३) दोहा—अनन्त नाथ जिनराज का कूट स्वयम्भू जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रादि ९६ कोड़ा कोडी ७० करोड़ ७० लाख ७० हजार ७०० मुनि इस कूट से सिद्धभये तिन० अर्घं।

(१४) दोहा—सम्भवनाथ जिनराज का धवल कूट धर जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्रादि ९ कोड़ा कोड़ी ७२ लाख ४२ हजार ५०० मुनि इस कूट से सिद्धभये तिनके चरणारविंद को अर्घं

(१५) दोहा—वासुपूज्य जिन सिद्ध भये चम्पापुर से जेह।
मन वच तन कर पूजहूॅं शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री वासपूज्य जिनेन्द्रादि चम्पापुर से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को अर्घं।

(१६) दोहा—अभिनन्दन जिनराज का आनन्द कूट है जेह'
मन वच तन कर पूजहूॅं शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन नाथ जिनेन्द्रादि ७२ कोड़ा कोड़ी ७० करोड़ ७० लाख ४२ हजार ७०० मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को अर्घ।

(१७) दोहा—धर्मनाथ जिनराज का कूट सुदत्त वर जेह।
मन वच तन कर पूजहूॅं शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि ७६ कोड़ा कोड़ी १६ करोड़ ६ लाख ६ हजार ७६५ मुनि सिद्धभये तिनके चरणारविंद को अर्घं।

(१८) दोहा—सुमतिनाथ जिनराज का अविचल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजिहूॅं शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि १ कोड़ा कोड़ी ८४ करोड़ ७२ लाख ८१ हजार ७०० मुनि इस कूट से सिद्धभये तिनके चरणारविंद को अर्घं।

(१६) दोहा—शांतिनाथ जिनराज का कूट कुन्दप्रभ जेह।
मन वच तन कर पूजहूॅं शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रादि ६ कोड़ाकोड़ी ६ लाख ६ हजार ६६६ मुनि इसकूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को अर्घं।

(२०) दोहा—महावीर जिन सिद्ध भये पांवापुर से जोय।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पावांपुर से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को अर्घं।

(२१) दोहा—सुपार्श्वनाथ जिनराज का प्रभास कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजिहूँ शिखर सम्मेद यजेह।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि ४९ कोड़ा कोड़ी ८४ करोड़ ७२ लाख ७ हजार ७४२ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को अर्घं।

(२२) दोहा—विमल नाथ जिनराज का कूट सुवीर है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह।

ॐ ह्रीं श्री विमल नाथ जिनेन्द्रादि ७० कोड़ा कोड़ी ६० लाख ६ हजार ७४२ मुनि इस कूट सिद्ध से भये तिनके चरणारविंद को अर्घं नि०।

(२३) दोहा—अजितनाथ जिनराज का सिद्धवर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजिहूँ शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्री श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि १ अरब ८० करोड़ ४४लाख मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को अर्घं।

(२४) दोहा—नेमिनाथ जिन सिद्ध भये सिद्ध क्षेत्र गिरनार॥
मन वच तन कर पूजहूँ भवदधि पार उतार।

ॐ ह्रीं श्रीं नेमिनाथ भगवान गिरनारपर्वत से मोक्ष गये तिनके चरणारविंद को अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

(२५) दोहा—पार्श्वनाथ निजराज का स्वर्ण भद्र है कूट।
मन वच तनकर पूजहूँ जाऊँ कर्म से छूट॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि ८२ करोड़ ८४ लाख ४५ हजार ७४२ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इस कूट का शुद्ध भाव से ध्यान धरने से व दर्शन करने से पशु गति से छुटकारा हो जाता है।

४८ ॥ खण्डगिरी क्षेत्र ॥

जल फल वसु दरव पुनीत, लेकर अर्घ करूँ।
नाचूं गाऊँ इस भांति, भवतर मोक्ष वरूँ॥
श्री खण्डगिरी के शीस, दशरथ तनय कहे।
मुनि पञ्च शतक शिवलीन, देश कलिंग दहे॥

ॐ ह्रीं श्री कालङ्ग देश मध्ये खण्डगिरी सिद्धक्षेत्रेभ्यो दशरथ राजा के सुत तथा पञ्च शतक मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

४९ ॥ उदयगिरी क्षेत्र ॥

जल फल वसु द्रव्य पुनीत, लेकर अर्घ करू ।
नाचूं गाऊँ इह भांति, भवतर मोक्ष वरूं॥
श्री उदय गिरी के शीश, गुफा अनेक कही।
तिनमें जिन बिम्ब अनूप, पूजत सौख्य लही॥

ॐ ह्रीं उदयगिरी क्षेत्राय अर्घं ।

५० ॥ वाहुवली स्वामी का अर्घ ॥

आठ दरव करसे फैलाय, अर्घ बनाय तुम्हें हि चढ़ाय।
मेरो आवागमन मिटाय, दाता मोक्ष के श्री वाहुवलि जिनराय दाता मोक्ष के॥ ॐ ह्रीं श्री वाहुवली स्वामिने अर्घं०।

५१ (गुणावा) श्री गौतम स्वामी का अर्घ

सब अष्ट द्रव्य करि त्यार, प्रभुढिग जोड़ि धरों।
पन्ना प्रति मङ्गलकार, शिव पद जाय वरों॥
जग की भवताप निवार, पूजा सुखदाई।
धन नगर गुणवासार, गौतम शिव पाई॥

ॐ ह्रीं श्री गणवासिद्धक्षेत्राय मोक्षप्राप्ताय गौतमस्वामिने अर्घं।

५२ ॥ सम्मेद शिखर का अर्घ ॥

जल गन्धाक्षत पुष्प सु नेवज लीजिये।
दीप धूप फल लेकर अर्घ सु दीजिये॥
पूजो शिखर सम्मेद सुमनवचकायजी।
नरकादिक दुख टरे अचल पद पायजी॥
ॐ ह्रीं सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्राय अर्घं० ।

५३ ॥ पावांगढ़ का अर्घ ॥

वसु द्रव्य मिलाई भविजन भाई धर्म सहाई अर्घ करूं।
पूजा को गाऊं हर्ष चढ़ाऊं, खूब नचाऊं प्रेम भरूं॥
पावागिर वन्दों मन आनन्दो, भव दुख खंदो चितधारी।
मुनि पांचजु कोडं भव दुख छोड़ं, शिवसुख जोड़ं सुखभारी॥
ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप भरत क्षेत्रवर्तमान काल सम्बन्धी श्री पावा गिरी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ पदप्राप्तये अर्घं० ।

५४ ॥ गिरनार क्षेत्र का अर्घ ॥

अष्ट द्रव्य का अर्घ संजोवो, घंटा नाद वजाई।
गीत नृत्यकर जजों 'जवाहर' आनन्द हर्ष वधाई॥
जम्बू द्वीप भरत आरज में, सोरठ देश सुहाई।
सेसावन के निकट अचल तहं नेमिनाथ शिवपाई॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप भरत क्षेत्रे वर्तमान काल सम्बन्धी श्री गिरिनार गिरि सिद्धक्षेत्र से नेमिनाथ शंबु कुमार प्रद्युम्न कुमार अनिरुद्ध कुमार एवं बहत्तर करोड सप्त सै मुनि मोक्षपद प्राप्तये अर्घं ॥

इति ।

श्री जिन सहस्रनाम का अर्घ

जल गंधाक्षत पुष्प जु चरु शुभ दीप धूप फल पावै।
स्वर्णपात्र भरि अर्घ चढावै तुरत मुक्ति वर पावै॥
विघनविनासक मंगलभासक भविजन शिवसुखदाई।
सहस अठोत्तर नामांकित जिन पूजौं मनवचकाई॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्टोत्तर नामांकित सर्वजिनेभ्यो अर्घं०।

श्री कुण्डलपुर क्षेत्र अर्घ

श्री कुण्डलपुर क्षेत्र, सुभग अति सोहनो।
कुण्डल सम सुख मदन हृदय मन मोहनो॥
गिरि ऊपर जिन भवन पुरातन हैं सही।
निरखि मुदित मन भविक लहत आनंद मही॥

ॐ ह्रीं श्री कुण्डलगिर महावीर जिनेन्द्राय अर्घं।

श्री पपौरा क्षेत्र अर्घ

दोहा—अतिशय क्षेत्र प्रधान अति, नाम "पपौरा" जान।
टीकमगढ़ से पूर्व दिश, तीन मील परमान॥ १॥
साठ अधिक पंद्रह जहां (७५) जिन मंदिर सुखकार।
जिन प्रतिमा तिहिं मधि लसे, चौबीसों दुखहार॥ २॥
चरण कमल उरधार तिहिं, पुन पुन शीश नवाय।
पूजन तिन की रचत हों, कीजे भवि हर्षाय॥ ३॥
क्षेत्र पपौरा मधि लसत, चोवीसों जिनराय।
चरण कमल तिनके सुभग, पूजत हों हर्षाय॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्री पपौरा क्षेत्र स्थित चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घं०।

एकादशम अध्याय

भजन नं० (१)

(चाल—जादूगर सैयाँ छोड मेरी........'नागिन')

डूबरही नैया, कोई ना खिवैया।
हे हे जी दीनानाथ, तनक सहारा दो ॥
तूही प्रभु मेरा, दास हूँ मैं तेरा।
रक्षा है तेरे हाथ, तनक सहारा दो ॥
छाया अन्धियारा सूझे न किनारा, मंजिल मेरी बड़ी दूर है।
दीन दयाल करुणा सागर, नाम तेरा मशहूर है ॥
तू ही तो निभावे साथ ॥ १ ॥
दास ये पुकारे, अर्ज गुजारे, माला रटे तेरे नाम की।
देर करो मत, आओ जी स्वामी, विपत हरो 'शिवराम' की ॥
हे नाथ, नमाऊँ माथ ॥ २ ॥

भजन नं० (२)

(चाल—मेरा दिल ये पुकारे आजा........'नागिन')

त्रिशला के दुलारे आजा, दीनों के सहारे आजा।
मेरा कोई न यहां प्रभु जाऊँ मैं कहाँ ॥टेक॥
कर्म दे रहे हैं दुःख, हे प्रभो क्या करूँ क्या करूँ।
जन्म और मरण के कष्ट हा मैं भरूं मैं भरूं ॥
अब तेरी है शरण, तू है शंकट हरण, हे वीर दर्श दिखलाजा॥१॥
ज्ञान दर्शन खजाना मेरा लुट रहा लुटा रहा,
शान्ति सुख का घराना, मेरा मिट रहा मिट रहा।
पीछे पड़े हैं करम, ठग आठ बेशरम, अब पिंड जरा छुड़वाजा ॥२॥
लौट कर मुक्ति से वीर आते नहीं हाँ नहीं,

वीर खुद तुम बनो, है मुनासिब यही है यही।
दास मत बनो 'शिवराम' तुम हो जो निज शक्ति जरा प्रकटाजा॥३॥

भजन नं० (३)

(चाल—मेरा मन डोले मेरा तन डोले…… 'नागिन')

गुन गारे मन गुन गारे तू, धरले प्रभु का ध्यान रे।
तेरी छूट जावे भव भॉवरिया ॥ टेर॥

कदम कदम इस वसुन्धरा पर मोह माया का डेरा,
समझ समझ सद् कार्य करे तब हो सद्गति में डेरा।
अरे तब हो सद्गति में डेरा॥ गुण गारे॥

झूठे नाते झूठे वन्धन, झूठी जग की आशा,
गर फँस जायेगा इन्हीं में, नहीं कटे भव फांसा।
अरे तो नहीं कटे भव फांसा॥ गुण गारे॥

पलक पलक कर निशि दिन प्राणी घटती आयु तेरी,
हृदय लगन से सुमरण कर, मत कर किंचित् देरी।
अरे तू मत कर किंचित् देरी॥ गुण गारे॥

भजन नं० (४)

(चाल—मेरा मन डोले मेरा तन डोले ……'नागिन')

मन बोलो, जिन जय बोलो, करे भवसागर से पार रे।
यह गहरी है भव की भांवरिया ॥ टेर॥

धन दौलत सब स्वजन संगाती, और यह हाट हवेली।
छोड़ चलेगा सब जग मनुवा, संग चले ना घेली॥
अरे यह संग चले ना घेली॥

सच बोलो, अंखिया खोलो, कह दो क्या जग में सार रे।
यह गहरी है भव की भांवरिया॥

जनम मरण बहु करते करते मानव का तन पाया।

'रतन' प्रभु के भजन बिना, क्यों इसको वृथा गंवाया ॥
अब बोलो प्रभु जय बोलो, जिससे हो आत्म सुधार रे,
यह गहरी है भव की भांवरियां ॥

भजन नं० (५)

(चाल—भीगा भीगा है समा........'नागिन')

तुम से लागी है लगन, ले लो अपनी शरण,
प्रभु द्वार तुम्हारे आया, तेरे करके दर्श हरषाया ॥
तू नहीं गर सुने तो किसे जा कहूँ, जा कहूँ।
दूर रह के मैं तुझ से सदा दु:ख सहूँ, दु:ख सहूँ ॥
अब ना छूटे ये चरण, मेटो जामन मरण,
यही आश हृदय में लाया ॥प्रभु०॥

दीन दुखिया जो तेरी शरण आ गया, आ गया।
नर्क की राह तज वह सुपथ पा गया, पा गया ॥
इक डाकू था अंजन, हुआ भक्ति में मगन,
सुरधाम परम पद पाया ॥प्रभु०॥

कर्म की मार से मैं विकल हो रहा हो रहा।
मोह के गर्त में फँस, जनम खो रहा, खो रहा ॥
कीजे कीजेजी यतन, आया दरपे है 'रतन',
चरणों में शीश झुकाया ॥प्रभु०॥

भजन नं० (६)

(राजुल का विलाप मेरा मन डोले मेरा ... 'नागिन')

मैं डोलूं बन बन बोलूं, पिया जाय चढै गिरनारी री,
मुझे छोड़ गये हां सावरिया ॥ टेक ॥
डगर डगर मैं ढूंढ फिरी हूँ, सहसा बन में सहेली।

पता चला नहीं नेमि पिया का, रह गई हाय अकेली । सखी
क्या बोलूं मैं मुख खोलूं बहे अंसुवन की ये धार री ॥ मुझे.
नगर नगर में धूम मचाते, संग मुरारी आये ।
छप्पन कोट जुड़े यदुवंशी, बाजे खूब बजाये ॥ सखी० ॥
खुश होलूं, मैं रस घोलूं, यह दिल में किया विचार री । मुझे.
पशुवन की किलकार सुनत ही कंगन तोड़ बगाया ।
मोड़ तोड़ कर दीक्षा धारी, भेष दिगम्बर भाया ॥ सखी० ॥
मैं तोलूँ हृदय टटोलूँ, नहीं मेरा दोष लगार री । मुझे
मेरे पिया ने दीक्षा धारी, मैं भी संयम धारूं ।
स्वारथ का परिवार है सारा, ममता मोह निवारूं । सखी
दृग खोलूँ शिव मग होलूँ, यह झूठा है संसार री ॥ मुझे.

भजन नं० (७)

(चाल—मन डोले मेरा तन डोले ·······'नागिन')

मन भोले, तू क्यों डोले, टुक दिल में सोच विचार रे
क्यों भटक रहा है बावरिया ॥ टेक ॥
लाख चौरासी योनि के अन्दर, घोर महा दुख पाया ।
जगह न कोई रही है ऐसी, जहां न तू फिर आया ॥
झक झोले करम हिण्डोले, क्यों झूले बारम्बार ॥१॥
बचपन खोया खेल कूद में तूने हाय अज्ञानी,
विषयभोग में जाय चली, अब मूढ तेरी यह जवानी ।
नहि बोले, अँखिया न खोले, तुझे सदगुरु रहे पुकार ॥२॥
जुआ मांस और मदिरा, वेश्या, हिंसा, चोरी, जारी ।
सात व्यसन में लीन रहे तू, पाप करे अति भारी ॥
दिल छोले क्यों विष घोले, तू अमृत पाकर सार ॥३॥
चेत चेत अब चेतन प्यारे, काल तो सिर पर आया ।

भजन किया 'शिवराम' न जिसने अन्त मे वह पछताया ॥
मल धोले, तू शुद्ध होले, अपना रूप निहार ॥४॥

भजन नं० (८)

(चाल—ओ नाग कहीं जा बसियो " ''')

हो नाव मेरी भव पार द्वार प्रभु तेरे आया हूँ। टेक
बीच भँवर में नैया अटकी, ओझल हुये किनारे।
तारनहार विना अब इसको, कौन करे भव पारे ॥
है अतुल पापका भार द्वार प्रभु तेरे आया हूं ॥हो नाव०॥
ममता रूप घटा घिर आई मोह महातम छाया,
डगर डगर पर मगर पड़े हैं, यह कर्मन की माया।
जीर्ण शीर्ण पतवार द्वार प्रभु तेरे आया हूँ ॥हो नाव०॥
भवसागर भयरूप भयानक, साथ विवेक न देगा,
विन मल्लाह 'रतन' का बेड़ा कैसे पार लगेगा।
यूँ समझ तेरा आधार, द्वार प्रभु तेरे आया हूँ ॥हो नाव०॥

भजन नं० (९)

(प्रिय शिष्या जयमाला द्वारा विरचित)

(चाल—नगरी २ द्वारे २" फिल्म मदर इण्डिया)

जंगल-जंगल पर्वत पर्वत ढूँढ़ूँ रे साँवरिया।
नेमी नेमी रटते रटते हो गई रे बावरिया ॥ टेक
शौरीपुर से व्याहन आये, स्वामी नेमि कुमार री।
तोरण से रथ को है मोड़ा, जीव दया चित धार री ॥
मोड़ तोड़ गिरनार चढे तज जूनागढ नगरिया ॥ १
चूड़ी उतारो साड़ी उतारो उतारो सब सुन्दर शृंगार री।
मतना माँग भरो तुम सखियो, जाऊँगी गिरनार री ॥
कोई चलके आज बतादो, गिरवर की डगरिया ॥ २

नौ भव बालम संग रही है, छोड़ा क्यों इस जन्म में।
मुझ पर स्वामी दया न आई, वियोग लिखा क्या कर्म में।
पल पल मनवा रोवे, छलके नैनों की गगरिया ॥ ३
तुमने बिसारा स्वामी मुझको, मैं भी त्यागूं आपको।
हाथ कमंडल पीछी लेकर, मैं धारूं वैराग को।
चरणों में रह कर के संभालूँ, जीवन की गठरिया ॥ ४ ॥
धन्य सती तू राजुल देवी, धारा आत्म ज्ञान है।
छेदन कर स्त्री लिंग तूने, पाया स्वर्ग महान है।
अब तो चेत अरी 'जयमाला' बीती ये उमरिया ॥ ५ ॥

भजन नं० (१०)

(चाल—रेशमी सलवार'' ''''फिल्म नया दौर)

वीरनाथ भगवान जग हितकारी तू,
महिमा कही न जाय दुख परिहारी तू ॥टेक॥
देश पड़ा था सोता अज्ञान नींद में सारा,
बढ़ी थी हिंसा भारी मचा था हाहाकारा,
हुआ अवतारी तू ॥ १ ॥
तूने है आन बताया सद्धर्म अहिंसा प्यारा,
खुद जीवो और जीने दो ये था सन्देश तुम्हारा,
दयालु भारी तू ॥ २ ॥
स्याद्वाद समझाया मतभेद मिटावन हारा,
साम्यवाद सिखलाया सिद्धांत कर्म का न्यारा,
पर हितकारी तू ॥ ३ ॥
भूले हुए थे प्राणी मुक्ति मार्ग को सारे,
राह इन्हें दिखलाकर शिवधाम को आप सिधारे,
'शिव' सुखकारी तू ॥ ४ ॥

भजन नं० (११)

(चाल—जरा सामने तो आओ छलिये.......फिल्म जन्म २ के फेरे)

जरा आन के तो दर्शन करिये ये विराजे श्री जिनराज हैं,
है जीवन मुकत परमात्मा सब देवों के ये सरताज हैं ॥ टेक ॥
ना प्रभू कर्त्ता ना प्रभु हर्ता हैं वीतरागी शुद्ध आत्मा,
लोक अलोक के हैं ये ज्ञाता सब के हितू परमात्मा ।
आदर्श जगत विख्यात है एक तारण तरण ये जहाज हैं ॥ १ ॥
नासा पे दृष्टि है शान्त मुद्रा नक्शा है आत्म ध्यान का ।
इन्हें जो ध्यावे इन सा बने वो पावे सुपद 'शिव' थान का ।
नहीं अन्तर की कुछ भी बात है हूँ मैं वही जो महाराज हैं ॥ २ ॥

भजन नं० (१२)

(चाल—रेशमी सलवार.... फिल्म-नया दौर)

भेष दिगम्बर धार—तू खुशहाली का ।
मजा कहा नहीं जाये इस कंगाली का ॥ टेक ॥
बच्चा हो या बच्ची उसे निंदिया आये अच्छी,
पास न होवे लंगोटी उसे चिन्ता हो फिर किसकी ।
न भय रखवाली का ॥ १ ॥
छोड़े जो परिवारा नहीं हो ममता उसे धन की,
तजे परिग्रह सारा फिर चाह मिटे मन्न मनकी ।
न फिक्र घरवाली का ॥ २ ॥
धन्य दिगम्बर साधु, नग्न हैं वन में रहते,
खड़े खड़े इकबारा हाथ मे भोजन करते ।
काम क्या थाली का ॥ ३ ॥
तज के सारी दुविधा जो निज आतम ध्यावें,
धन्य जन्म है उनका वो 'शिव' आनन्द को पावे ।
मुकतपुर वाली का ॥ ४ ॥

भजन नं० (१३)

(चाल—जरा सामने तो आओ छलिये.......फिल्म—जन्म २ के फेरे)

जरा भावना तो दिल में करिये इस तन से मेरे उपकार हो।
सारी दुनिया का मुझसे हो भला, और जीवनका मेरे सुधार हो॥
हो कोई दुखी तो तड़प उठूँ मैं, दिल को न मेरे करार हो,
उनके दुख में दुखी मैं होऊँ, सुख में खुशी भी अपार हो।
इससे बढ़कर मुझे क्या लाभ है जो मुझसे किसी का उद्धार हो॥१
मरना भला है उसका सजन, जो अपने ही स्वारथ को जिये,
जिन्दा जगत में है सदा वो, जो दूसरों के हेतु मरे।
नाम उसका अमर शिवराम है देश जाति पर जो कि निसार हो॥२

भजन नं० (१४)

(चाल—सारी सारी रात तेरी याद सताए.......फिल्म-अजी बस शुक्रिया)

कदम कदम पर करम सताए,
करम सताए हमें चैन न आये रे ॥टेक॥
इक तो प्रभु जी मोहे कर्म सताए,
लाख चौरासी भ्रमण कराये।
भ्रमण करायें स्वामी बड तड़पायेरे॥ १॥
बालकपन तो खेल में खोया।
मोह की नींद जवानी में सोया।
नींद में सोया, विषय भोग सुहाये रे॥ २॥
बीते जवानी बुढापा जो आवे।
अध मरा सा तुझको बनाये।
तुझको बनाये अंग शिथिल हो जाये रे॥ ३॥
तेरे भजन बिन मेरे सांवरिया,
बीत गई मेरी सारी उमरिया।
सारी उमरिया 'महीपाल' दुख पावे रे॥ ४॥

भजन नं० (१५)

(चाल—ऐ मालिक तेरे बन्दे हम·······फिल्म—दो आँखें बारह हाथ)

ऐ स्वामी तेरे भक्त हम, तेरी भक्ति से काटें करम।
सब पाप तजें, तेरा नाम भजें, हम अपना सुधारें जनम ॥टेक॥
हमें हरएक से प्यार हो, नहीं दुष्ट का अपकार हो।
गुणीजन को सदा, देख हर्षे हिया, प्रेम भावों का संचार हो।
हरें दुखिया का दुख दर्द हम, दूर दुनियां के कर दें जुलम ॥१॥
है मन की यही कामना, हर मुश्किल का हो सामना।
कोई हो ना दुखी, रहें सब ही सुखी, हो दिन रात ये भावना॥
बम्ब ऐटम को करदे खतम, माने दुनियां अहिंसा धरम ॥२॥
नित शास्त्रों का होवे पठन, शिवरामा हो गुण का ग्रहण।
पर निंदा हरें, सतसंग करें, आतम तत्त्वका हो चिंतवन॥
सारे नष्ट करें दुष्करम, जिससे मिल जाये पदवी परम ॥३॥

भजन नं० (१६)

(चाल—भला करने वाले भलाई किये जा ·· फिल्म—घर संसार)

तू दुनियां मे आके भलाई किये जा
बुराई न सर पे तू अपने लिये जा ॥टेक॥
तू देश और जाति का उद्धार कर दे,
गरीबों का दुखियों का उपकार करदे,
तू रोगी को प्यारे दवाई दिये जा ॥१॥
महावीर सन्देश घर घर सुनादे,
अहिंसा का दुनियां में डंका बजा दे।
सदा प्रेम रस का तू प्याला पिये जा ॥२॥
अमन और शान्ति का होजा पुजारी,
नही बम्ब ऐटम की करना तैयारी।
तू जीने दे और को खुद भी जिये जा ॥३॥

अगर कोई तड़पे तो दिल तेरा धडके,
किसी की नजर में न 'शिवराम' रडके।
तू पापों की दिल से सफाई किये जा ॥४॥

भजन नं० (१७)

(चाल—नगरी २ द्वारे २....... फिल्म-मदर इण्डिया)

पार्श्व प्रभूजी पार लगादो, मेरी ये नावरिया।
बीच भँवर में आन फंसी है, काढोजी साँवरिया ॥ टेक ॥
धर्मी तारे बहुत ही तुमने, एक अधर्मी तार दो,
वीतराग है नाम तिहारा, तीन जगत हितकार हो।
अपना विरद निहारो स्वामी, काहे को बिसरिया ॥ १ ॥
चोर भील चंडाल हैं तारे, ढील क्यों मेरी बार है।
नाग नागनी जरत उभारे, मंत्र दिया नवकार है।
दास तिहारा संकट में है लीजो जी खबरिया ॥ २ ॥
लोहे को जो कंचन करदे; पारस नाम परवान वो,
मैं हूँ लोहा तुम प्रभू पारस, क्यों ना फिर कल्याण हो।
नाथ मिटादो अब तो मेरी भव भव की घुमरिया ॥ ३ ॥
भटक रहा हूँ मैं भवसागर, आपका मुक्ति निवास है,
अपने पास बुलालो मुझको, एक ये ही अरदास है।
भूल रहा हूँ नाथ बतादो, शिवपुर की डगरिया ॥ ४ ॥

भजन नं० (१८)

(चाल—नगरी २ द्वारे २ ' फिल्म-मदर इण्डिया)

डगर डगर में निर्जर वन में ढूं ढूं री सांवरिया,
पीया पीया रटके मैं तो होगई रे बावरिया ॥ टेक ॥
नेमि वियोग से आज मैं सजनी, जलती गम की आग में।
विरहा की चिनगारी मेरे लग गई आज सुहाग में।
बीच पडी मझधार में मेरी, आज तो यह नावरिया ॥१॥

आश लगी थी दर्शन होंगे, नेमीश्वर भरतार के।
तोरण से रथ मोड़ लिया है जाय चढे गिरनार वे।
कोई सखी री संग में चलकर दिखलाओ डगरिया ॥२॥
नौ भव की थी प्रीति पुरानी, क्षण भर में क्यों छोड दी,
उन्हें लगी शिवनारी प्यारी, मुझे बिलखती छोड दी ॥
नेमि पिया बिन कैसे मेरी बीतेगी उमरिया ॥३॥
जान लिया यह निश्चय मैंने स्वारथ का संसार है।
मैं भी जाकर दीक्षा धारूं, त्याग दिया घरबार है॥
राजुल ने शिवराम है पटकी पापों की गठरिया ॥४॥

भजन नं० (१६)

(चाल—जरा सामने तो आओ · फिलम—जन्म २ के फेरे)

दया धर्म को धारो प्यारे, सब धर्मों का ये सरताज है।
पाप अहिंसा जगत में है बुरा सब ग्रन्थों की यह आवाज है॥
हा पाप तो करें और फल नहिं भरें, ऐसा कभी न हो सकता।
पापी अपने आतम के मैल को, यों तो कभी न धो सकता॥
करता काहे को जीवों का घात है, इसमें तेरा बिगड़ता काज है।
कर्म है ये रीति सजन, जो जैसा करे वो वैसा भरे॥
चाहे अगर सुख मीत रे तो पाप कर्म से क्यो न डरे।
पाना सुख दुख का अपने हाथ है इसमें शिवराम कुछ भी न राज है॥

भजन नं० (२०)

(चाल—सारी २ रात तेरी याद सताये····फिल्म—अजी बस शुक्रिया)

सुन सुन भ्रात तुझे समझ न आए,
समझ न आए तुझे कौन समझाये रे ॥टेक॥
इक तो कठिन कर नर भव पाया, रतन अमोलक हाथ यह आया
हाथ यह आया तेरे इसे न गंवाए रे ॥१॥

उत्तम कुल और देह निरोगी, पाकर पागल भोगों में खोदी।
भोगों में खोदी तूने पाप हैं कमाए रे ॥ ३ ॥
जैन धर्म सुखकारी पाकर, किया न निज हित मूढ सरासर।
मूढ सरासर काहे जग भरमाये रे ॥ ४ ॥
चेत २ "शिवराम" तू अब तो, गई सो गई अब राख रही को।
राख रही को नहीं फिर पछताये रे ॥ ५ ॥

भजन नं० (२१)

(चाल–होट गुलाबी गाल कटोरे……फिल्म–घर संसार)

अश्वसेन के लाल तुम्हारी अजब निराली शान—
ओय बलिहारी जावां।
हम हैं सारे, भक्त तुम्हारे, पार्श्व प्रभु भगवान—
ओय बलिहारी जावां ॥टेक॥

देखे देव जगत के हम सब, तुमसा देव नहीं है और।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी-ढूंढ चुके हैं हम सब ठौर।
कहीं नहीं पाया, जग भरमाया, होय रही हैरान ॥१॥

कामदेव को नष्ट किया है, नहीं है किंचित् माया मान,
क्रोध लोभ का नाम नहीं है, राग द्वेश का नहीं निशान।
तपकर सारे. कर्म निवारे, पद पाया निर्वाण ॥२॥

परम शान्तमय इनकी मुद्रा, नग्न दिगम्बर है अविकार।
इनकी मूरत जग से न्यारी, पद्मासन है ध्यानाकार।
ना कोई भूषण, ना को दूषण, है आदर्श महान ॥३॥

परम अहिंसा तत्त्व है इनका, स्याद्वाद तुम सुन जाना।
साम्यवाद सिद्धान्त प्रभू का, 'शिवराम' कभी न विसराना।
इनको ध्यावे, शिवपद पावे, हो जावे भगवान ॥४॥

भजन नं० (२२)

(नगरी २ द्वारे २ ढूँ ढूँ रे सावरिया " " 'मदरइण्डिया')

मेरी मेरी करते करते बीती रे उमरिया,
कैसे पावे शिवपुर नगरी भूले हैं डगरिया ॥ टेक ॥
झुलस रहे हैं प्राणी सारे, विषय भोग की आग मे,
फँसे हुए है रात दिन सब तन धन के अनुराग में,
पर को अपना मान रहे हैं, निज पद को विसरिया ॥ १ ॥
एक घडी भगवान भजे ना, काम नहीं शुभ ध्यान का,
हरदम दौर बना रहता है, क्रोध लोभ छल मान का,
बाँध रहे हैं शीश पे अपने, पापों की गठरिया ॥ २ ॥
जो तू चाहे आतम हित को, सीख गुरू की मान तू,
क्यों 'शिवराम' है नाम लजाया, अपना रूप पिछान तू,
त्याग जगत जंजाल चलोजी, शिवपुर की नगरिया ॥ ३ ॥

भजन नं० (२३)

(चाल—टाई लगाके.......फिल्म 'भाभी)

दुनियों मे आके, वन्दे क्या करी कमाई तूने
भोगों में व्यर्थ सारी जिन्दगी गँवाई तूने ॥ टेक ॥
बचपन में खेला कूदा, पाई ना ज्ञान शिक्षा,
कभी न ख्याल आया तुझे जिज आतम हित का,
कुसगत पाके, धरी सिर पे बुराई तूने ॥ १ ॥
मस्त जवानी आई, नार पराई भाई,
चलन बिगाडा अपना कुल को लगाई स्याही,
फैशन बढाके, यूँही दौलत लुटाई तूने ॥ २ ॥
कभी न दया दान दिया, प्रभु का न नाम लिया,
गुरुओं की भक्ति छोडी, जप तप न ध्यान किया,
पाप कमाके, लेली नरक की साई तूने ॥ ३ ॥

भजन नं० (२४)

(चाल—ये मर्द बड़े दिल सर्द बड़े······फिल्म 'मिस मेरी')

हमदर्द बनो, दिल सर्द बनो, बेदर्द न तुम कहलाना।
'दुनियाँ में आये हो तो, लेके भलाई जाना ॥ टेक ॥
बचपन में खेला कूदा, ज्ञान न हुआ तुझको।
भोगों में जवानी खोई, होश न आया तुझको ॥
अर्ध मृतक है वृद्धावस्था, जिसका नहीं ठिकाना ॥ १ ॥
भोग बुरे हैं भाई, इनमें न फँस जाना।
शील की ढाल लेके, अपने को है बचाना।
बात भले की कहता हूँ, तू मान अगर है दाना ॥ २ ॥
दान न दिया तूने, लोभ में फँसा पागले।
उम्र तो बीती जाये, नाम प्रभू का जपले ॥
करना हो सो करले "बाबू" हाथ न अवसर आना ॥३॥

भजन (२५)

(चाल—सब कुछ सीखा हमने······ 'फिल्म अनाड़ी)

आए हैं अब स्वामीजी शरण तिहारी।
सुधि लेना अन्तरयामी, हैं दर के पुजारी ॥ टेक ॥
कर्मों ने हमको है सताया, लाख चौरासी में भटकाया।
नरक गति में कभी ले जाकर, कष्ट है नाना जो दिखलाया।
कथा हा उसकी हमसे तो जाए न उचारी ॥ १ ॥
पशुगति में अति दुख पाए भूखे प्यासे हैं तड़फाए।
छेदन भेदन बंधन भारी, किसी ने खंजर कंठ चलाए।
है सर्दी गर्मी झेली, हा मार है करारी ॥ २ ॥
मनुष्य गति में इष्ट वियोगी, कभी भये हैं अशुभ संयोगी।
कोई पुत्र विना नित झूरे, कोई दारिद्री तन के रोगी।

सन्तान है पाई खोटी, और नारी कलिहारी ॥ ३ ॥
सुरगति मे भी नहीं सुखपाए, पर संपत्ति लखकर खु ंसाए ।
गल की माला जव मुरझाई, मरण समय में हैं विल्लाए ।
शिवपुर पहु ंचादो अव तो, यह अरज हमारी ॥ ४ ॥

भजन नं० (२६)

(चाल—रुक जा ओ जाने वाली ··· ,कन्हैया')

सुन जा ओ जाने वाले सुनजा, गुरु की तू सीख प्यारे सुनजा ।
ज्ञान की वगीची है खिल रही, पुन्य के सुमन प्यारे चुनजा ॥टेक॥
मत खेलो जुआ प्यारे, मद्य मांस का हो त्यागी ।
तकना नहीं पर नारी, हो न वेश्या अनुरागी ॥ १ ॥
चोरी के न पास फटक, है शिकार यह दुखदाई ।
व्यसनों के सेवन से, दुर्गति पावे भाई ॥ २ ॥
तुम सव ही से प्रेम करो, दीन दुखियों पै करुणा करना ।
गुणी जन का करो आदर दुष्ट पै समता धरना ॥ ४ ॥
गुरुदेव की भक्ति करो, नित शास्त्र पढो प्यारे ।
शिवराम धरो संयम, तप दान करो सारे ॥ ४ ॥

भजन नं० (२७)

(चाल—दिल का खिलौना हाय टूट गया··· ····गूंज उठी शहनाई)

नौ भव का नाता हाय टूट गया, कर्म हमारा हाय फूट गया॥टेक॥
हुआ क्या है दोष ऐसा स्वामी हमारे,
तोरण पै आये पशु दुखित निहारे ।
कंगन व मोड़ तोडा मुझको विलखती छोड़ा
चढ़ गिरनारी हाय महाव्रत धारे ।
सैंया हमारा हम से रूठ गया ॥ १ ॥
स्वार्थ का देखा मैंने यह संसार,
झूठी है दुनियां सारी दिल में विचारा ।

जाके धरूंगी दीक्षा मैं भी करूं तपस्या,
मोहा शिव रामा ने हा कंत हमारा।
रिश्ता हमारा सबसे छूट गया ॥ २ ॥

भजन नं० (२८)

(चाल—ओ काली टोपी वाले.......'काली टोपी लाल रुमाल)

ओ जैन कहाने वाले जरा नाम न लजा।
ओ जैन पने का कोई जरा काम तो दिखा ॥ टेक ॥
मन्दिर में जाके कभी करे न दर्शन, करता हमेशा तू अभक्षका भक्षण
गुरुओं का विनय और प्रणाम न किया ॥ १ ॥
पीता नहीं है कभी छान के पानी, रात को भोजन करे हाय अज्ञानी
जैन पने का कोई काम न किया ॥ २ ॥
जीवदया की तूने रीति विसारी, होटल सनीमों ने आदत बिगारी
प्रेम सुधा का तूने जाम न पिया ॥ ३ ॥
देश की सेवा तूने कभी करी न, दीन दुखी की कोई आश भरी न,
दान अनाथों को छदाम न दिया ॥ ५ ॥
विगडी है तेरी सारा आज यह नेशन, तूने वढ़ाया हाय बहुत हैफैशन
कारज सुधार का शिवराम न किया ॥ ५)

भजन नं० (२६)

(चाल—सुहाना सफर....... फिल्म मधुमति)

अहिंसा धर्म सा धर्म है नहीं, सत्य जैसा महातप कहीं ॥टेक॥
वीर स्वामी का उपदेश लेकर, गए हैं गांधी यह संदेश देकर,
अरे सुन सुन प्रिय चुन चुन अहिंसा पुष्प यहीं ॥१
जीने दो औरों को जीओ तुम भी, न जान लेना कभी तुम किसीकी
प्यारे प्यारे तुम्हारे से प्राण सब के सही ॥ २
सत्य अहिंसा का डंका बजा दो, 'शिव' यह संदेश घर २ सुनादो
सारे सारे सहारे इसके गगन और जमीं ॥३

भजन नं० (३०)

(चाल—तेरे दिल का मकान—दो उस्ताद)

श्री वीर प्रभू भगवान, तेरी अजब निराली शान।
कैसे करें जी बखान, है अपार महिमा ॥
तेरे हैं उपकार महान, क्या इन्सान क्या हैवान।
करते तेरा सब गुण गान, है अपार महिमा ॥ टेक
परम शान्ति मय तेरी मूरत, हाथ नहीं हथियार।
नग्न दिगम्बर नासा दृष्टि, पद्मासन अविकार ॥
देख दर्श तेरा भगवान होय आत्मा की पहिचान ॥ १
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, मीठे तेरे बैन।
तूने ही बतलाया हमको, धर्म अहिंसा जैन ॥
सब ही धर्मों में प्रधान, करता जीवों का कल्यान ॥ २
अंजन तस्कर तूने तारे, तारे पापी भील।
आज कहो तो क्यों है स्वामी मेरी बिरियां ढील ॥
तेरी नजरों में समान, चाहे निर्धन हो धनवान ॥ ३
जो कोई ध्यान धरे प्रभु तेरा, तुझ सा ही हो जावे।
इसमें तो सन्देह नहीं, 'शिवराम' परमपद पावे ॥
धर कर मुनिवर तेरा ध्यान, पदवी पाते हैं निर्वाण ॥ ४

भजन नं० (३१)

(चाल—हक मागते हैं... फिल्म 'बाप-बेटे')

फल एक है नर तन पाने का दुखदर्द मिटादे जमाने का ॥ टेक
वैसे तो हजारों लाखों यहां, लेते हैं जनम नित मरते हैं।
जिन्दा हैं मगर दुनियां मे वही, उपकार जो पर का करते हैं ॥
जो स्वार्थ के हेतु जिए जग में, अधिकार न मनुज कहाने का ॥१
इनसे तो पशु भी अच्छे हैं जो काम पराए आते हैं।

फल औरों को देते वृक्ष सदा फल आप न अपना खाते हैं ॥
नदियां न नीर पियें अपना जल उनका है पर को पिलाने का ॥२
हैं दूध हमें देती गऊवें तृण घास फकत वो चरती हैं ।
तन चाम हमें है दे जाती, जूतों के लिए, जब मरती हैं ॥
धिक्कार तुम्हारा चमडा है, 'शिवराम' है खर्च जलाने का ॥ ३

भजन नं० (३२)

(तर्ज—हमें तो लूट लिया मिलके हुस्नवालो ने.....फिल्म अलेहिलाल)

हमें तो लूट लिया जर के ही गुलामों ने ।
बड़े बड़े लालों ने लड़कों ही वालों ने ॥ टेक ॥
शेर—जो मुसीबत हैं पडी उसका करें क्या बयान ।
हाय मुश्किल यह मेरी होय कैसे ये आसान ।
इक घर वाली दो लडके और चार लडकियाँ ।
दो की शादी है करना हो गई हैं क्योंकि जवां ।
खाना पीना और सोना हो गया मेरा हराम ।
क्या करूं किससे कहूँ और हाय जाऊं मैं कहा ॥ हमें १
काम धन्धा न जरा महंगाई में क्या करूं ।
आठ हैं प्राणी उनका पेट कहो कैसे भरूं ।
मकान एक है बेचूं या उसे गिरवी धरूं ।
एक को ब्याह दूं अगर बाकी का हाय फिर क्या करूं ।
ऐसी हालत में कहो धीर भला कैसे धरूं ।
दिल में आ जाता है कि आत्मघात करके मरूं ॥ २
तलाश वर के लिए हाय भटकता फिरता ।
इक फकत जवाब यही लड़का नहीं मानता ।
बाजार गरम हो रहा लडकों के तो नीलाम का ।
पूछेगा भला कौन हूँ मैं आदमी बे दाम का ।
सौदा पन्द्रह का कहीं वा है बीस हजार का ।

खर्च- तालीम नहीं प्रश्न मोटर कार का ॥ ३
कन्या देखन को तो लश्कर है लाया जा रहा ।
लूट मिलनी का भी तोफां मचाया जा रहा ।
सौदा टीके का भी गजब चुकाया जा रहा ।
वरात का किराया खर्च हा ! ठहराया जा रहा ॥
हुकम महमानवाजी का चढाया जा रहा ।
है जुल्म बेटी वालों पै इस तौर ढाया जा रहा ॥ ४
लडके वालो तुम अगर बेटी के जो बाप हो ।
उनकी शादी तो इक दिन करनी होगी आपको
सोचो दिल मे उस समय कितना तुम्हे सन्ताप हो ।
ऐसी करनी पै तुम्हें क्यों न पश्चाताप हो ।
अर्ज 'शिवराम' की है छोड दो इस पाप को ।
नष्ट हो जाओगे तुम, कन्या का जो शाप हो ॥ ५

भजन नं० (३३)

(चाल—रे तेरे दिल का मकान" फिल्म दो उस्ताद)

निज आतम को पहचान, है क्यों बना हुआ अनजान ।
अरे तू सोच समझ नादान, क्यों इतराय इतना ।
मैला मन का मकान, न किया है प्रभु ध्यान ।
रहना दो दिन बीच जहान, क्यों इतराय इतना ॥ टेक
मात पिता यह सुत और नारी, कोई न तेरा मीत ।
सोच समझ मन मे तू पगले, झूठी जग की प्रीति ।
दुनिया एक सराय जान, इस पर करता व्यर्थ गुमान ।
अरे तू सोच समझ नादान क्यों इतराय इतना ॥ १
धन दौलत और महल अटारी, पडे रहें जग बीच ।
साथ नहीं कुछ जाये तेरा, जब लेगा आंखें मीच ॥
सच्चा मित्र धर्म तू जान, है यह सब से आलीशान ।
अरे तू सोच समझ नादान, क्यों इतराय इतना ॥ २

देश भक्ति की तेरे दिल में, भडक उठे इक आग।
तेरे पर उपकार से जाये, दुखियों के दुख भाग।
'त्यागी' चमके तेरी शान, करे सब जन तेरा मान।
अरे तू सोच समझ नादान, क्यों इतराय इतना ॥ ३

भजन नं० (३४)

(चाल—कैद मे है बुलबुल फिल्म—बेदर्द जमाना क्या जाने)

शेर—बेचैन होके प्रभू की शरण में आ गये हैं।
इस स्वार्थी जहां से हम तग आ गये हैं॥
सोच मन में बन्दे, रे क्यों तू इतराय।
मात पितु नारी तेरे, साथ न ये जायें॥ टेक॥

धोखे फरेब से दौलत कमाता, पर उपकार में धन न लगाता।
शुद्ध रूप को तू नहीं ध्याता, कभी नहीं प्रभू के गुण गाता।
महल अटारी धरे रह जायें॥ १॥

पांवसे न कभी तीरथ गया न, मन्दिर में जाके कभी दर्शन किया ना
हाथ से कुछ भी दान दिया न, मुख से प्रभु का नाम लिया न।
दुखियों के तूने न कष्ट हैं मिटाये॥ २॥

भजन नं० (३५)

कीजे मेरी नैया पार—प्रभु ये आन पड़ी मझधार—
तेरे चरणों में आया हूँ जगदीश्वर॥ टेक॥

तारे हजारों तुमने, नीच और पापी।
अंजन से चोर महा दुष्ट अघतापी।
पशु पक्षी दिये तार-प्रभु क्यों ढील है मेरी बार, तेरे चरणों० ॥ १

रागी न द्वेषी स्वामी, तुम हितकारी।
नाथ ये तेरी महिमा, जग से है न्यारी।
भक्ति तेरी सुखकार-करे जग से बेड़ा पार—तेरे चरणों में० ॥२

तुमको जो ध्यावे कोई, तुमसा हो जावे।
कर्मों को काट करके, मुक्ति को पावे।
होवे भवसागर से पार, फेर न आवे वो संसार--तेरे चरणोंमें ॥३
विरद तिहारा ऐसा, सुनकर आया।
शिवराम तुझसा, तारक न पाया।
कीजे मेरी नैया पार—करना दास है पुकार—तेरे चरणों में ॥४

भजन नं० (३६)

(चाल-कही पे निगाहें कही पे निशाना " ' फिल्म—सी० आई डी०)

तुम्हें जो सुनाये ज़रा सुनके जाना।
हित की हैं बातें ये दिल से न भुलाना ॥ टेक
चारों ही गतियों मे तू तो है भटकता।
जन्म मरण के कष्टों को तू हाय है भुगतता।
नरकों के दुखों का कोई ना ठिकाना, हित की है० ॥१
पशु गर बना तो मरा भूखा प्यासा।
किसी ने डाला आके हाय गले में है फांसा।
छेदन व भेदन के कष्ट सहे नाना, हित की हैं० ॥२
बना देव तो भी न है चैन पाया।
विषयों की इच्छा ने इसको है सताया।
माला मुरझाई तो पड़ा है बिल्लाना, हित की हैं० ॥३
नर जन्म पाके धरम न कमाया।
सारा ही समय है तूने भोगों में बिताया।
अपना पराया न तूने है पिछाना, हितकी हैं० ॥४
'शिवराम' अवसर मिला है तू संभलजा।
लाख चौरासी के चक्कर से प्यारे तू निकलजा।
खो के जनम ये होयेगा पछताना, हित की हैं० ॥५

भजन नं० (३७)

(चाल—तेरे द्वार खड़ा भगवान भक्त··· ···बावन अवतार)

तेरे द्वार पड़ा हूँ आन प्रभू भरदे रे झोली।
नहीं और की तुझसी है शान मानूं जबतक बदन में है प्राण ॥टेक
अथाह सागर कुछ भी घटे ना जल उसमें से निकारे।
भरे पड़े तेरे पास समंदर ज्ञान ज्योति भंडारे रे, ज्ञान ज्योति०
नहि चाह बनें धनवान करादो धर्म ध्यान का ज्ञान प्रभू भरदे० ॥१
आप तो स्वामी पार उतर गये बने मोक्ष के गामी।
न कोई पूंजी पास तुम्हारे फिर भी जगत के स्वामी रे, फिर भी०
सब जगत गया ये जान प्रभू निर्लोभी हो तुम निष्काम, प्रभू० ॥२
लाख चौरासी धक्के खाये इन कर्मों से मैं हारा।
है "कैलाश" को पूरी आशा दोगे जी तुम्हीं सहारा दोगेजी तुम्हीं०
तेरा होगा बड़ा अहसान करो अब मेरा भी कल्याण प्रभू भरदे० ॥

भजन नं० (३८)

(चाल—जिसका साथी है भगवान·· ··फिल्म—आस्तिक)

करले बन्दे तू शुभ काम, वरना पछताएगा,
जीवन कर निष्काम ॥ टेक
जनम हुआ इस जग में तेरा, बन्दे धरम कमाले,
पाप की पोट पटकदे सिर की, जीवन सफल बनाले,
मुख से प्रभु गुण गाले ॥ १ ॥ ओ०
ये जग पापी, मनवा पापी, पापी तेरी काया,
चारों चोर ठगें नित तुझको, क्रोध लोभ मद माया,
कबहूँ सुख नहीं पाया ॥ २ ॥ ओ०
नाम लेत सब दुख टर जायें, आतम शुद्ध हो जाती,
नाम के कारण तर गए गिरधर, नीच अधर्मी पापी,
कीर्ति अमर हो जाती ॥ ३ ॥ ओ०

भजन नं० (३६)

(चाल—आओ बच्चो तुम्हें दिखायें ... जागृति)

आओ बच्चो तुम्हें सिखायें बातें हम कुछ ज्ञान की,
इन बातों पर अमल करो ये बातें हैं कल्याण की ।
बच्चो का धरम ४ बार ॥ टेक ॥
मत मारो तुम जीवों को ये दीन गरीब विचारे हैं ।
प्राण इन्हें भी ऐसे प्यारे जैसे तुम्हें तुम्हारे हैं ॥
निर अपराध का घात करे जो पापी और हत्यारे हैं ।
दया धरम परधान जगत मे ग्रन्थ सभी उच्चारे हैं ।
भाव दया का दिल मे रखलो आज्ञा है भगवान की ॥ इन० ॥१॥
झूठ कभी मत बोलो बच्चो भूल के चोरी नहीं करना ।
छात्रों का कर्त्तव्य परम है ब्रह्मचर्य व्रत का धरना ।
लालच क्रोध तजो तुम भाई मान कपट को नित हरना ।
मात पिता की आज्ञा पालो गुरुओं की तुमलो शरना ।
विनय सभ्यता विद्या सीखो शिल्पकला विज्ञान की ॥ इन० ॥२॥
मास और अडे कभी न खाना दूर नशोंसे तुम भागो ।
सत्सगति मे रहो निरन्तर शौक सनीमों का त्यागो ।
फैशन के मत दास बनो तुम नींद अविद्यासे जागो ।
सुख शिवराम अगर तुम चाहो धरम के रस्ते पर लागो ।
देश जाति की सेवा मे तुम बाजी लगादो जान की ॥ इन० ॥३॥

भजन नं० (४०)

(तर्ज—जापानी ... श्री ४२०)

करता क्यों तू है नादानी, तेरी छोटीसी जिन्दगानी ।
जीना चार दिन का जग में बनजा आतम हित कल्याणी ॥
कल कल करता रहा सदा तू, अपना समय गंवाये ।

पल पल का है नहीं भरोसा, पल आये पल जाये,
तेरा जीवन बहता पानी, किसकी चलती है मन मानी ॥१॥
कदम कदम पर माया छलना, बैठी जाल बिछाये,
ममता जग की झूंठी है सब, कोई काम न आये।
तेरी है जानी पहचानी, जग की झूठी है कहानी ॥२॥
सब निसार कर अब तो भाई, वीर प्रभू दर आना,
'शान्ति' ध्यान लगाले प्रभु से, जो है शिवपुर पाना।
बनजा अब तो सम्यक्ज्ञानी, मारग मोक्ष महासुख दानी ॥

भजन नं० (४१)

(चाल—बोलो ऐ जमी बोलो आसमान''' फिल्म चक्रधारी)

बोलो रे सभी जय भगवान, कोई मौन मत रहो खोलो जबान
मिल कर जय २ बोलो सारे गूंजे आसमान ॥ टेक ॥
बोलो २ वर्धमान वीर नाम प्यारो,
अति वीर महावीर सन्मति उचारो।
इनके गुण गाओ सब देश के दुलारे,
वीर ने है आके, किया जगत कल्याण ॥१
वीर ने अहिंसामय धर्म बताया,
जिसने है आजाद आज भारत कराया
स्याद्वाद और साम्यवाद का पाठ हमें सिखलाया।
आतम से परमातम होना वीर ने है बतलाया
"शिवराम" वीर का उपकार है महान ॥ २ ॥

भजन नं० (४२)

(चाल—ऐचक दाना, बेचक दाना दाने ऊपर दाना फिल्म श्री ४२०)

होके सयाना कुछ नही जाना, पर को आपा माना।
जिसको तूने अपना माना वो तो है बेगाना ॥ टेक ॥

जिस तन को तू लाड लडावे, काम तेरे नहीं आवे ।
जिस दिन होवे कूच तेरा तन यहीं पडा रह जावे ।
नर भव पाके करो तपस्या भोगों में न गंवाना, होके सयाना ।।१
तू न किसी का न कोई तेरा झूंठा जग का नाता ।
कोई न तेरा साथ निभावे हंस अकेला जाता ।
ऐसा जान के इस दुनिया से दिल को नहीं लगाना,
होके सयाना ।।२।।
खड़े रहेंगे हाथी घोडे तेरे महल अटारी ।
दम भर का है नहीं भरोसा सदियों की तैयारी ।
गडा रहेगा यहीं जमींमे तेरा माल खजाना, होके सयाना ।।३।।
जिसने आतम राम न जाना उसने कुछ नहीं जाना ।
जिसने आतम राम है जाना, उसने सब कुछ जाना ।
अब "शिवराम" भजो निज आतम जो चाहो सुख पाना
होके सयाना ।।४।।

भजन नं० (४३)

(देख तेरे मसार ")

देख तेरे आचार की हालत क्या हो गई नादान,
कितना छाय गया अज्ञान ।
क्रोध न छोडा, लोभ न छोडा, ना छोडा अभिमान
कितना छाय गया अज्ञान ।।
हिंसा कर्म करे नित गन्दा, झूंठ अरु चोरी का धन्दा,
काम भोग मे हुआ है अन्धा, पडा परिग्रह का है फन्दा,
चांदी के टुकडों के खातिर. वेच रहा ईंसान ।। कितना०
नहीं उपकार में धनको लगाये, दुखियों के नहि कष्ट मिटाये
रोगी का नहीं रोग भगाये, भूखों को नहि अन्न खिलाये ।
ज्ञान दान की रुचि नहीं पर, खर्चे द्रव्य महान ।।कितना०

धर्म कर्म का नाम नहीं है, स्वपर ज्ञान 'शिवराम' नहीं है
भक्तिभाव का काम नहीं है; ध्यान सवेरे शाम नहीं है;
छोड दिया है शास्त्र-पठन और जप तप संयम दान ॥
कितना छाय गया अज्ञान ॥

भजन नं० (४४)

(बस्ती बस्ती पर्वत पर्वत गाता जाये बंजारा " प्लेट फार्म)

ढलती फिरती छाया माया, काया का नहीं पतियारा।
बिजली का सा चमकारा ॥टेक॥
धन और यौवन का तू बन्दे, काहे को अभिमान करे।
तेरा जीवन कितने दिन का सोच समझ नादान अरे। ढलती ॥१
कोठी बंगले माल खजाने, सारे यहीं रह जाये धरे।
कोई कुटुम्बी सुत अरु नारी काम नहीं कुछ आये तेरे। ढलती ॥२
सफर है लम्बा तेरा प्यारे, रस्ते का सामान नहीं।
दान दिया 'शिवराम' नहीं कुछ, ध्यान किया नहीं ज्ञान नहीं। ढलती ॥३

भजन नं० (४५)

(मेरा " 'जापानी' फिल्म श्री ४२०)

क्यों तू फूला है अभिमानी, बीती जाये है जवानी।
जीवन है दिन चार तेरा मत न ऐंठ अरे अज्ञानी ॥टेक
दिल में सोच समझ तू बन्दे, जीवन स्वप्न ये मानो।
माता पिता सुत नारि च बांधव कोई न अपना मानो।
दुनिया है ये सफायेफानी, इसकी दौलत आनी जानी
जीवन है दिन चार ॥१॥
गई कहां सोने की लंका, आज बता रावण की।
कहां सिकन्दर दबा पडा है, खबर न हिटलर तन की।
मिटी उनकी है निशानी, बाकी रह गई एक कहानी
जीवन है दिन चार ॥२॥

मान बुरा "शिवराम" है जग मे मान तजो मतवाले।
जो तू चाहे मन को प्यारे कोमल-भाव-बनाले।
तूने की बडी नादानी जो न सीख गुरु-की, मानी।
जीवन है दिन चार ॥३॥

भजन नं० (४६)

(राग-मांढा)

अज्ञानी पाप धतूरा-न बोय॥ टेर॥
फल चाखन की बार-भरे दृग मर है मूरख होय॥ १॥
किंचित विषयनिके सुख कारण, दुर्लभ देह न खोय।
ऐसा अवसर फिर न मिलेगा, इस नींदड़िय न सोय॥ २॥
इस विरियां में धरम-कल्प तरु, सींचत स्याने लोय।
तू विष बोवन लागत तो सम, और अभागा कोय॥ ३॥
जे जगमे दुख दायक वेरस, इसही के फल सोय।
यों मन 'भूधर' जानि कै भाई, फिर क्यों भोंदू होय॥ ४॥

भजन नं० (४७)

वीर तुम्हारा ध्यान लगाकर जो कोई आन पुकारा है।
पार हुआ भवदुख से वोही, जिसने लिया सहारा है॥
चांदनपुर प्रभु निकस आपने, जग का काज संवारा है।
सच्ची भक्ति पूरा करती, मन का भाव विचारा है॥
भवन विशाल यहा विराजे, पीछे नदी किनारा है।
अन्दर बाहर वेदी ऊपर, काम सुनहरी न्यारा है॥
लगा सामने पखा खेंचे, गंदी पवन विकारा है।
तीन रंग की प्रतिमा प्रभुजी की दे रही दर्श बहारा है॥
धूप की बत्ती घृत का दीपक, सन्मुख जलें अपारा है।
चमक रेल से रहा शिखर पर, बिजली बल्ब उजारा है॥
चार मील कटले तक पक्की, सड़क बनी सुखकारा है।
छहों धर्मशाला में जारी, जल निर्मल नल द्वारा है॥

चारों तरफ धर्मशाला है बीच में मंदिर तुम्हारा है।
अंजन से बत्ती खम्भों पर, जले कतार कतारा है॥
वीर चरण पर छतरी अन्दर, चढे दूध की धारा है।
फाटक ऊपर निश दिन बजता, शहनाई नक्कारा है॥
घन २ घण्टा घडी घूँघरू, घडनावल झंकारा है।
देश २ के यात्री आते, रहता जय २ कारा है॥
त्रिशला नन्दन पापनिकन्दन इतना बोल हमारा है।
ऐसे पुण्य क्षेत्र के दर्शन हमको हो हरबारा है॥

भजन वीर पालना नं० (४८)

वीर स्वामी का सुन्दर अधर पालना।
सज रहा है सिद्धारथ के घर पालना १॥ टेक
जिसमें रेशम की सुन्दर पडी डोरियाँ।
सच्चे मोती लगाये—चहुँ ओरियाँ॥
है सुशोभित यह सुन्दर अधर पालना॥वीर० १
झुन झुना माता त्रिसलावती ले रही।
वीर के हाथ में हँस के जब दे रही॥
देव देवी ने मिलकर झटोका दिया।
त्रिषला माता ने देवों को हुक्म दिया।
हिलने दो वेखतर वेखतर पालना।
वीर का दिल रहा वेखतर पालना॥वीर०॥ २
देव इन्द्रादि मिल पुष्प बरसा रहे।
सारे नर नारी हृदय में हरषा रहे॥
देखने जा रहा हर बसर पालना॥वीर०॥ ३
जन्म उत्सव का दिन मिल मनाओ सभी
यह 'किसन' ने लिखा है अमर पालना॥वीर०॥ ४

भजन नं० (४६)

अगर महावीर के चरनों मे मेरा ध्यान हो जाता ।
तो इस संसार सागर से मेरा उद्धार हो जाता ॥
न होती जगत में ख्वारी न होती कर्म बीमारी ।
जो प्याला धर्म का पीता तो बेड़ा पार हो जाता ॥
रोशनी ज्ञान की खिलती दिवाली दिल में होजाती
हृदय मन्दिर में भगवन का तुझे दीदार हो जाता
चढ़ाते देवता तेरे चरन की धूल मस्तक पर ॥
जमाना पूजता सारा गले का हार हो जाता ॥
जमीं पर विस्तरा होगा व चादर आसमां होगी ।
मोक्ष गद्दी पर फिर प्यारे तेरा घरबार हो जाता ॥

भजन नं० (५०)

दर्शन करके महावीरा चले जायंगे ।
जब बुलाओगे तब तब ही आजायंगे ॥ टेर
तेरे दर्शन की जब मैं इन्तजारी करी,
हुआ दीदार तेरा मेरी शुभ घडी ।
याद सारी उमरिया किये जायंगे ॥ १ ॥
यह न पूछो कि यहाँ से किधर जायंगे ।
वह जिधर भेज देगा उधर जायंगे ॥
हम भी माला तुम्हारी रटे जायंगे ।
जिसके हृदय में वीरा तेरा ध्यान है ॥ २ ॥
वो ही ज्ञानी गुणी वीर इन्सान है ।
ध्यान महावीर जी का धरे जायंगे ॥ ३ ॥
टूट जाये न माला कहीं प्रेम की ।
वह रतन है कि मोती विखर जायंगे ॥ ४ ॥

आप मानो न मानो खुशी आपकी।
हम मुसाफिर हैं कल अपने घर जायंगे ॥ ५ ॥

भजन नं० (५१)

चांदनपुर महावीर को सीस झुकाऊं मैं।
तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊं मैं।
सुनता मेरी कौन है किसे सुनाऊं मैं ॥
जब से नाम भुलाया तेरा लाखों कष्ट उठाये हैं।
ना जाने इस जीवन अन्दर कितने पाप कमाये हैं ॥
शर्मिन्दा हूँ आपसे क्या बतलाऊं मैं ॥
मेरे दुष्ट कर्म ही मुझको तुमसे ना मिलने देते हैं।
जब मैं चाहूँ दर्शन पाना रोक तभी वह लेते हैं ॥
कैसे भगवान आपके दर्शन पाऊं मैं ॥
मोह मिथ्या में पड़कर स्वामी नाम तुम्हारा भूला था।
जिसको समझा था सुख मैंने वह दुख का गोरखधन्धा था।
मोह माया को छोड़कर शरण खड़ा हूँ मैं ॥
बीत चुकी सो बीत चुकी अब शरण तुम्हारी आया हूँ।
दर्शन भिक्षा पाने को दो नैन कटोरी लाया हूँ ॥
मन में प्रभु अपने ज्ञान की दीप जलाऊं मैं ॥

भजन नं० (५२)

मुझ दुखिया की सुनले पुकार भगवन वीर प्रभो ॥ टेक ॥
दीनों के हो तुम प्रतिपालक धर्म के हो तुम संचालक।
किये अनेकों सुधार भगवन वीर प्रभो ॥ मुझ० ॥ १ ॥
चारों गति में दुःख बहु पाया, काल अनादि दुख में गंवाया।
आया तेरे दरबार, भगवन वीर प्रभो ॥ मुझ० ॥ २ ॥
नर्क गती की करुण वेदना, जन्म मरण कर्मन संग कीना।
मैं भोगे दुःख अपार, भगवन वीर प्रभो ॥ मुझ० ॥ ३ ॥

सद् उपदेश दे लाखों तारे, अंजन जैसे अधम उवारे।
अब मेरी ओर निहार, भगवन्न वीर प्रभो ॥ मुझ० ॥ ४ ॥
सेवक शांति शरने आया, दर्शन करके पाप नसाया।
जीवन के आधार, भगवन्न वीर प्रभो ॥ मुझ० ॥ ५ ॥

भजन नं० (५३)

(तर्ज—कव्वाली)

क्यों न अब तक हमारी सुनाई हुई।
जब कि चरणों मे है लौ लगाई हुई ॥ टेक ॥
तेरे चरणो से जिसने लगाई लगन।
पार भव से किया उसको आनन्दघन ॥
क्यों न हम पर प्रभू रहनुमाई हुई ॥ क्यों० ॥ १ ॥
सेठ के पुत्र को सर्प ने था डसा।
उसके मन मे तेरा ही विश्वास था ॥
तेरे मन्दिर मे विप की सफाई हुई ॥ क्यों० ॥ २ ॥
विप उतरत ही जय जय मनाने लगे।
तेरा गुणगान सब मिलके गाने लगे ॥
सबके दिल मे तेरी छवि समाई हुई ॥ क्यों० ॥३॥
हुक्म राजा ने सूली का जब था दिया।
तब सुदर्शन ने वह हुक्म सर धर लिया ॥
सब के दिल पर घटा गम थी छाई हुई ॥क्यों०॥४॥
सूली देने का सामान तैयार था।
उसके मन में तो केवल तेरा ख्याल था ॥
फिर तो सूली से उसकी रिहाई हुई ॥ क्यों०॥ ५ ॥
प्रेम चरणों से तेरे लगाया हुआ।
तेरा "पदम" मेरे दिल मे समाया हुआ ॥
तेरे दर्शन से सबकी भलाई हुई ॥ क्यों० ॥ ६ ॥

कीर्त्तन नं० (५४)

महावीर स्वामी, हो अन्तरयामी हो त्रिशला नन्दन, काटो भव फन्दन।
बाले ही पन में, तप कीना बन में, दर्श दिखाना, भूल न जाना॥
पार लगाना, कृपा निधाना, महिमा तुम्हारी, है जग में न्यारी।
सुध लो हमारी, हो व्रत धारी।
वनखण्ड में तप करने वाले। केवल ज्ञान के पाने वाले॥
हो उपदेश सुनाने वाले। हिंसा पाप मिटाने वाले॥
हो तुम कष्ट मिटाने वाले। पशुवन बन्ध छुटाने वाले॥
स्वामी प्रेम बढाने वाले। हो तुम नियम सिखाने वाले॥
पूरण तप के करने वाले। भक्तों के दुख हरने वाले॥
पावापुर में आने वाले। स्वामी मोक्ष के जाने वाले॥

भजन नं० (५५)

मेरे प्रभू तु मुझको वता तेरे सिवा मैं क्या करूँ।
तेरी शरण को छोड़कर जग की शरण को क्या करूँ॥
कलियों में बस रहे हो तुम फूलों में खिल रहे हो तुम।
मेरे ही मन में आ बसो, मन्दिर में जाके क्या करूं॥
चन्द्रमा बन के आपही, तारों में जगमगा रहे।
तेरी चमक के सामने दीपक जला के क्या करूँ॥
सारी उमर खतम हुई तेरी निगाहे ना फिरी।
कर्मों के फल को भोगता कैसे वसर किया करूँ॥
वेकल हू नाथ रात दिन, चैन नहीं है आप बिन।
हरदम चलायमान मन, इसका उपाय क्या करूँ॥
शिक्षा यह मुझको दीजिये, अपनी शरण में लीजिये।
ऐसा प्रबन्ध कीजिये सेवा में ही रहा करूँ॥

भजन नं० (५६]

नमो देव देवम् महावीर प्यारे, महावीर प्यारे महावीर प्यारे।

सदा संकटों में तुम्हीं हो सहायक,
अभय सम्पदा के तुम्हीं हो प्रदायक।
तुम्हीं हो पिता मात रक्षक हमारे ॥ नमो देव० ॥
तुम्हीं दीन दुखियों के दुख के हो हरता,
तुम्हीं सर्व जीवों के हो सुक्ख कर्ता।
तुम्हीं दीन दुखियों के केवल सहारे ॥ नमो देव० ॥
तुम्हीं ने श्रीपाल सागर से तारा,
तुम्हीं ने तो अञ्जन सा पापी उबारा।
मुझे भी करो नाथ जल्दी किनारे ॥ नमो देव० ॥
तुम्हीं ने सती सोम का सत बचाया,
तुम्हीं ने तो विषधर को माला बनाया।
कहां तक बतायें प्रभु गुण तुम्हारे ॥ नमो देव० ॥

भजन नं०(५८)

हमें वीर स्वामी तुम्हारा सहारा।
कुंडलपुर के राजा सिद्धारथ का प्यारा ॥
जो दर्शन दिये फिर दुबारा भी देना।
वह त्रिशलावतीजी के आंखों का तारा ॥ १ ॥
सुना करता था जो मैं तारीफ स्वामी।
तो वैसा ही पाया नजारा तुम्हारा ॥ २ ॥
अजब मुस्कराहट अजब शान तेरी।
अजब नूर प्यारा है स्वामी तुम्हारा ॥ ३ ॥
जो छीना है दिलको न दिलको हटाना।
हटा लोगे दिलको न होगा गुजारा ॥ ४ ॥
करो सेवकों की महावीर रक्षा।
है सब प्राणियों को सहारा तुम्हारा ॥ ५ ॥

दया हमपै करना दया के हो सागर।
करोगे तुम्हीं भवसागर से पारा ॥ ६ ॥
सिवा प्रेम के हम पै देने को है क्या।
झुका वस यह चरणों में शीश हमारा ॥ ७ ॥
'किशनलाल' जैनी जन्म जारचे का।
वड़े प्रेम से महावीर पुकारा ॥ ८ ॥

भजन नं. (५६)

महावीर दया के सागर तुमको लाखों प्रणाम।
श्री चांदनपुर वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥
पार करो दुखियों की नैया। तुम बिन जग मे कौन खिवैया ॥
मातपिता न कोई भैया। भक्तों के रखवाले तुमको लाखों०॥महा०॥१।
जव ही तुम भारत में आये। सवको आ उपदेश सुनाये ॥
जीवों के आप्राण वचाये। वन्ध छुडाने वाले तुमको० ॥ महा० ॥२
सव जीवों से प्रेम वढाया। राग द्वेष सवका छुडवाया ॥
हृदय से अज्ञान हटाया। धर्मवीर मतवाले तुमको० ॥महा०॥ ३ ॥
समोशरण में जो कोई आया। उसका स्वामी परण निभाया ॥
भव सागर से पार लगाया। भारत के उजियाले तुमको० ॥महा०
किशनलाल को भारी आशा। सदा रहे दर्शन का प्यासा ॥
धर्मपुरा देहली में वासा। कहते वूरा वाले तुमको० ॥ महा० ॥५॥

भजन (चांदनपुर महावीर) [५६]

(तर्ज रसिया)

भाइयो चलो सभी मिल, महावीरजी के दर्शन करने को।
दर्शन करने को, कर्म जञ्जीर कतरने को ॥ भाइयो० ॥ टेक ॥
अतिशय क्षेत्र जगत विख्याता, चमत्कार तत्काल दिखाता।
ऋद्धि सिद्धि सब होय, पुण्य भण्डारा भरने को ॥ भाइयो ॥१॥

जयपुर राज्य जिला हिंडौना, चांदनगांव वार जिन मौना।
तीर नदी गम्भीर पटौदा, रेल उतरने को ॥ भाइयो० ॥२॥
बनी धर्मशाला चहुं ओरा, बीच बनो मन्दिर चौकोरा।
उन्नत शिखर विशाल बने हैं, स्वर्ग पकड़ने को ॥ भाइयो० ॥३॥
चरण पादुका बनी पिछाड़ी, नशियां कहते सब नरनारी।
इसी जगह निकली थी प्रतिमा, जग अघ रहने को ॥ भाइयो०॥४॥
छत्र चढावें चँवर ढुरावें, घृत के भर भर दीप जलावें।
पूजन पाठ भजन बिनती, जयकार उचरने को ॥ भाइयो० ॥५॥
चैत सुदी में होता मेला, लाखों गूजर मीना मेला।
जुड़े हजारों जैनी भाई, भव सागर तरने को ॥ भाइयो० ॥६॥
एकम वदी वैशाख हमेशा, रथ निकले श्री वीर जिनेशा।
"मक्खन" वहां जाय, प्रभु का नाम सुमरने को।
भाइयो चलो सभी मिल महावीरजी के दर्शन करने को ॥७॥

महावीर कीर्तन (६०)

कुण्डलपुर के श्री महावीर, भज प्यारे तू जय महावीर।
जय महावीर जय महावीर, भज प्यारे तू जय महावीर ॥
चर्ण पुजें चाँदनपुर तीर, जहाँ नदी बहती गम्भीर।
उस टीले की हो तस्वीर, जहाँ दिया गैया ने छीर ॥
जहाँ पड़ी भक्त पर भीर, तहाँ हरी हृदय की पीर।
वर्द्धमान स्वामी अति वीर, सन्मति वीर श्री महावीर।
भक्तजनों की बाँधो धीर, हो न जाय "किशन" दिलगीर ॥

आरती श्री महावीर स्वामी की (६१)

ॐ जय महावीर प्रभो, स्वामी जय महावीर।
कुण्डलपुर अवतारी, त्रिशलानन्द विभो ॥ ॐ जय महा. प्रभो
सिद्धारथ घर जन्मे, वैभव था भारी, स्वामी वैभव था भारी।
बाल ब्रह्मचारी व्रत, पाल्यो तपधारी ॥ १ ॥ ॐ जय महा० प्रभो

आतम ज्ञान विरागी, सम दृष्टि धारी।
माया मोह विनाशक, ज्ञान ज्योति जारी ॥२ ॐ जय महा० प्रभो
जग में पाठ अहिंसा, आपहि विस्तारयो।
हिंसा पाप मिटाकर, सुधर्म परिचारयो ॥३ ॐ जय महा० प्रभो
यही विधि चांदनपुर में, अतिशय दरशायो।
ग्वाल मनोरथ पूरयो, दूध गाय पायो॥ ४ॐ जय महा० प्रभो
प्राणदान मन्त्री को, तुमने प्रभु दीना।
मन्दिर तीन शिखर का, निर्मित है कीना ॥५ ॐ जय महा० प्रभो
जयपुर नृप भी तेरे, अतिशय के सेवी।
एक ग्राम तिन दीनों, सेवा हित यह भी॥ ६ॐ जय महा० प्रभो
जो कोई तेरे दर पर, इच्छा कर आवै।
धन सुत सब कुछ पावै, संकट मिट जावै ॥७ॐ जय महा० प्रभो
निश दिन प्रभु मंदिर में, जगमग ज्योति जरै।
हरिप्रसाद चरणों में, आनन्द मोद भरै ॥८ॐ जय महा० प्रभो

भजन (६२)

(आरती श्री महावीर स्वामी)

ॐ जय सनमति देवा, प्रभु जय सनमति देवा।
वर्धमान महावीर वीर अति, जय सङ्कट छेवा॥ ॐ जय०॥
सिद्धारथ के राजदुलारे, त्रिशला के जाये।
कुण्डलपुर अवतार लिया; प्रभु सुरनर हर्षाये ॥ॐ जय०॥
देव इन्द्र जन्माभिषेक कर, उर प्रमोद भरिया।
रूप आपका लखि नहिं पाये, सहस आंख धरिया ॥ॐ जय०॥
जल में भिन्न कमल जो रहिये, घर में बाल यति।
राजपाट ऐश्वर्य छोड़ सब, ममता मोह हती॥ ॐ जय०॥
बारह वर्ष छद्मावस्था, आत्म-ध्यान किया।
घाति कर्म कर चूर चूर, प्रभु केवल ज्ञान लिया॥ ॐ जय०॥

पावापुर के बीच सरोवर, आकर योग कसे।
हन अघातिया कर्म दुष्ट सब, शिवपुर जाय वसे ॥ॐ जय० ॥
भूमण्डल के चांदनपुर में, मन्दिर मध्य वसे।
शान्त जिनेश्वर मूर्ति आपकी, दर्शन पाप नसे ॥ ॐ जय० ॥
नत्थो देवीदास कपूरी आकर शरण गही।
दीनदयाला जगप्रतिपाला, आनन्द भरण तू ही ॐ जय० ॥

भजन (६३)

[चलते समय]

प्रभु दर्श कर आज घर जारहे हैं, झुका तेरे चरणों मे सर जारहे हैं।
यहांसे कभी दिल न जानेको करता, करें कैसे जाये विना भी न सरता
अगरचे हृदय नयन भर आरहे हैं ॥ १॥
हुई पूजा भक्ति न कुछ सेवकाई, न मंदिर में बहुमूल्य वस्तु चढ़ाई।
यह खाली फक्त जोर कर जारहे हैं ॥ २ ॥
सुना तुमने तारे अधम चोर पापी, न धर्मी सही फिरभी तेरे हैं हामी
हमे भी तो करना अमर जारहे हैं ॥ ३ ॥
बुलाना यहां फिरभी दर्शनको अपने, सुमत तुम भरोसे लगे कर्महरने
जरा लेते रहना खबर जारहे हैं ॥ ४ ॥

आरती (६४)

यह विधि मङ्गल आरति कीजे, पञ्च परमपद भज सुख लीजे ॥टेक॥
प्रथम आरति श्री जिनराजा, भवदधि पार उतार जिहाजा ॥यह०॥
दूजी आरति सिद्धन केरी, सुमरन करत मिटे भव फेरी ॥यह०॥
तीजी आरति सूर मुनिन्दा, जनम मरण दुख दूर करिन्दा ॥यह०॥
चौथी आरति श्री उवज्झाया, दर्शन करत पाप पलाया ॥यह०
पाचवीं आरति साधु तुम्हारी, कुमति विनाशन शिव अधिकारी ॥
छट्ठी ग्यारह प्रतिमा धारी, श्रावक वन्दूं आनन्दकारी ॥यह०॥
सातवीं आरति श्रीजिनवाणी, "द्यानत" स्वर्ग मुक्ति सुखदानी ॥

आरती नं० (६५)

आरति श्री जिनराज तुम्हारी, करम दलन सन्तन हितकारी।
सुर, नर, असुर करत सब सेवा, तुमही सब देवन के देवा ॥आ०॥
पञ्च महाव्रत दुद्धर धारे, राग द्वेष परिणाम विडारे ॥आ०॥
भव भयभीत शरण जे आये, ते परमारथ पंथ लगाये ॥आ०॥
तुम गुण हम कैसे करि गावें, गणधर कहत पार नहिं पावें ॥आ०॥
करुणासागर करुणा कीजे, 'द्यानत' सेवक को सुख दीजे ॥आ०॥

आरती (६६)

जय सन्मति देवा प्रभु जय सन्मति देवा।
वीर महा अति वीर प्रभुजी वर्द्धमान देवा ॥टेक॥
त्रिशला उर अवतार लिया प्रभु सुर नर हरषाये।
पन्द्रह मास रतन कुंडलपुर धनपति वरसाये ॥जय० १॥
शुक्ल त्रयोदशी चैत्र मास की, आनन्द करतारी।
राय सिद्धारथ घर जन्मोत्सव, ठाठ रचे भारी ॥जय० २॥
तीस वर्ष तक रहे घर में, वाल ब्रह्मचारी।
राज त्याग कर भर यौवन में मुनि दीक्षा धारी ॥जय० ३॥
द्वादश वर्ष तप किया दुर्द्धर विधि चकचूर किया।
झलके लोकालोक ज्ञान में, सुख भरपूर लिया ॥जय० ४॥
कार्तिक श्याम अमावस के दिन आकर मोक्ष वसे।
पर्व दिवाली चला तभी से, घर घर दीप जले ॥जय० ५॥
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी शिव मग परकासी।
हरिहर ब्रह्मा नाथ तुम्हीं हो जय जय अविनाशी ॥जय० ६॥
दीनदयाला जग प्रतिपाला, सुर नर नाथ भजे।
सुमरत विघ्न टरें इक छिन में पातक दूर भजे ॥जय० ७॥
चोर भील चांडाल उभारे, भव दुख हरण तूही।
पतित जान 'शिवराम' उभारो हे जिन शरण गही। जय० ८॥

चौवीस महाराज की आरती (६७)

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्व की,
जयमहाराजकी श्रीजिनराज की दीनदयालकी आरती कीजै ॥टेक॥
चंद्र पुष्प शीतल श्रेयांसा, वासुपूज्य महाराज की ॥ १ ॥
जयमहाराजकी श्रीजिनराज की दीनदयालकी आरती कीजै ॥ २ ॥
विमल अनन्त धर्म हितकारी, शांतिनाथ महाराज की ॥ ३ ॥
कुंथनाथ अर मलि मुनिसुव्रत नमीनाथ महाराज की जै० ॥ ४ ॥
नेमिनाथ प्रभु पार्श्व जिनेश्वर, वर्द्धमान महाराज की जै० ॥ ५ ॥
इन चौवीसोंकी आरती करके, आवागमननिवारकी, जय० ६ ॥

जिनेन्द्र पंच कल्याणक की आरती (६८)

पहली आरती गर्भ सुभन की, पंद्रह मास रतन वर्षन की,
आरती कीजै जिनराज चरन की, जै २ गुण छयालीस।
अट्ठारह दोष हरन की ॥ १ ॥
दूसरी आरति जनमकल्याणक मतिश्रुतिअवधित्रयज्ञान फुरन की।
आरती कीजै जिनराज चरणकी, जै २ गुण छयालीस।
अट्ठारह दोष हरन की ॥ ३ ॥
चौथी केवल ज्ञान फुरन की, समवशरन धनपति रचन की।
आरती कीजै जिन० ॥ ४ ॥
पांचमी आरती मोक्षरमण की, पंचकल्याणक तीन रतन की।
आरती कीजै जिनराज चरन० ॥ ५ ॥

भजन नं० ६९

(चाल—जय जगदीश हरे)

जय पारस देवा प्रभु जय पारस देवा।
सुर नर मुनि जन तव चरनन की करते नित सेवा ॥टेक
पौष वदी ग्यारसि काशी में आनन्द अति भारी।
अश्वसेन घर वामा के उर लीनो अवतारी ॥ १ ॥ जय०

श्याम वरण नव हाथ काय पग उरग लखन सोहे।
सुरकृत अति अनुपम पट भूषण सबका मन मोहे ॥ २ ॥ जय०
जलते देखे नाग नागनी पढ़ नवकार दिया।
हरा कमठ का मान ज्ञान का भान प्रकाश किया ॥ ३ ॥ जय०
मात पिता तुम स्वामी मेरे आश करूं किसकी।
तुम विन दूजा और न कोई शरण गहूँ जिसकी ॥ ४ ॥ जय०
तुम परमातम तुम अध्यातम तुम अन्तर्यामी।
स्वर्ग मोक्ष पदवी के दाता त्रिभुवन के स्वामी ॥ ५ ॥ जय०
दीनवन्धु दुख हरण जिनेश्वर तुम ही हो मेरे।
दो शिवपुर का वास दास यह द्वार खड़ा तेरे ॥ ६ ॥ जय०
विषय विकार मिटाओ मन का अर्ज सुनो दाता।
"जियालाल' कर जोड़ प्रभु के चरणों चित लाता ॥ ७ ॥ जय०

भजन नं (७०)

(चाल—तुम रूठ के मत जाना)

राजुल—प्रभु नेमि वता जाना, काहे तुम रूठ चले,
कोई दोष वता जाना।
नेमि—नहिं दोष तुम्हारा है, सुनो प्रिय राजमती,
हम यह जगत अथिर जाना।
राजुल—मेरा कौन सहारा है, तुम विन नेमि पिया,
इतना तो वता जाना।
नेमि—नहिं कोई शरण जग में. दलवल और देवी,
यह अव निश्चय जाना।
राजुल—मेरा नव भव का नाता, क्या तुम नहिं जानो,
मत भूल इसे जाना।
नेमि—सव झूठा है जग का नाता, मात पिता भ्राता,
परिवार है बेगाना।

राजुल–मैं अकेली रहूँ कैसे, नाथ कहो घर में,
टुक धीर बंधा जाना।
नेमि–है जीव सदा अकेला जनमत मरण समय,
साथ न कुछ जाना।
राजुल–यह उम्र नहीं तप की, महलों में मौज करो,
फिर तप बन को जाना।
नेमि–जीवन का भरोसा क्या, मौत तो सिर डोले,
हो जाये कब जाना।
राजुल–जब आपका निश्चय है, मैं भी धरूं दीक्षा,
धरूं अर्जिका का बाना।
नेमि–है धन्य सती राजुल, भर यौवन तप धारा,
'शिवराम' सुगुन गाना।

भजन नं० (७१)

भक्तों के प्राण पुकार रहे जय हो जय त्रिशला नन्दन की।
श्वासों के स्वर मे लहर उठी जय हो जय त्रिशला नन्दन की॥
मर रही पाप से दुनिया थी जब तुम दुनिया में आये थे।
जब हूक हृदय से टकराई पशुओं के करुणा क्रन्दन की॥ १॥
ओ त्रिशला नन्दन चरणों मे लेलो मेरा वन्दन लेलो।
ये भाव की प्याली भरी हुई लाया हूँ केशर चन्दन की॥२॥
अहिन्सा की धारा छलक पड़ी विपुलाचल गिरवर से छल।
दुनिया इक स्वर से बोल उठी जय महावीर दुख भंजन की॥३॥
वो राह बतादो हमको भी बन जाऊं शिवपुर का राही।
वह डगर कौन चलकर अञ्जन को पदवी मिली निरञ्जन की॥४॥
तेरी करुणा की किरणों से जिस जिसने थी करुणा पाई।
सब पथिक मोक्ष के हुए काट डोरी कर्मों के बन्धन की॥ ५॥

भजन नं० (७२)

(चाल—राजा की आयेगी वरात रंगीली होगी रात'' ''''फिल्म आह')

सखी री मेरे भरतार, गये जी गिरनार, जगत मैं त्यागूंगी ॥टेक॥

शौरीपुर से व्याहन आये, प्रभुजी नेम कंवार
तोरन से रथ फेर सिधारा, जीव दया चित्त धार
मोड़ मुकुट उतार, कंगना दिया डार ॥ १ ॥ जगत मैं.......

कैसे धीरज धरूं मैं सखियों नौ भव की मोरी प्रीत
झूठा जग का नाता देखा, झूठी जग की रीत
झूठा है परिवार, ये सारा संसार ॥ २ ॥ जगत मैं.......

मत ना मांग भरो मेरी सखियों, लावो न माथे सिन्दूर
मेरे पिया ने दीक्षा धारी है मैं भी धरूंगी जरूर
मेरे माथे का सिंगार, तारो गले का ये हार ॥ ३ ॥ जगत मैं.... ..

दूसरे व्याह की मेरी री सखियो, छेड़ो न चर्चा भूल
करो जी तैयार, कमंडल पीछी सार ॥ ४ ॥ जगत मैं ' ....

धन्य २ तू राजुल देवी, त्याग दिया संसार
जग हितकारी संयम धारा, ममता मोह निवार
किया है तप सार, सुर गति 'शिव' कार ॥ ५ ॥ जगत मैं....

भजन नं० (७३)

(वीर जयन्ती)

(चाल—मुहब्बत मे ऐसे कदम डगमगाए—'फिल्म अनार कली')

प्रभु वीरकी हम जयन्ती मनाएं, सुसन्देश उनका जगत को सुनाएं ॥टेक

प्रभु वीर का हम पै उपकार भारी, है उपकार भारी
कृतघ्न बनेंगे जो उस को भुलाएं ॥ १ ॥

जमाने से हिंसा हटाई प्रभू ने, हटाई प्रभू ने
मजलूम सारे हैं देते दुआएं ॥ २ ॥

सभी आत्माओं को समझो बराबर, समझो बराबर
यही पाठ समता सभी को पढाएं ॥ ३ ॥
नहीं पाप हिंसा से बढ़ कर के कोई, न बढ़ कर के कोई
अहिंसा का दुनिया मे डंका बजाएं ॥४॥
अनेकान्त तत्त्व है जग से निराला, है जग से निराला
इसी से ये झगड़े मतों के मिटाएं ॥ ५ ॥
तेरी आत्मा ये परमात्मा है, ये परमात्मा है
करम काट करके 'शिव' आनन्द पाएं॥६॥

भजन नं० (७४)

(चाल—जुल्म की नगरी मे किसी का कौन सहारा है…'फिल्म आस')

इस करम की दुनियां में धरम ही एक सहारा है।
धर्म के सिवा प्यारे, न कोई और तुम्हारा है ॥ टेक
सांप हो फूल का हार, धरम से सांप ही फूल का हार।
अग्नि बने जलधार धरम से अग्नि बने जलधार ॥
सोमा सीता नार का यश, जग बीच प्रसारा है ॥ १ ॥
देख धरम का तेज, अरे मन देख धरम का तेज।
सूली की हो सेज, अरे मन सूली की हो सेज ॥
सेठ सुदर्शन शील महातम जग विस्तारा है ॥ २ ॥
सागर से श्रीपाल धरम से सागर से श्रीपाल।
पार हुए तत्काल धरम से पार हुए तत्काल ॥
अंजन पापी चोर, धरम ने पार उतारा है ॥ ३ ॥
संकट में 'शिवराम' अरे मन संकट मे शिवराम।
धरम ही आवे काम अरे मन धरम ही आवे काम ॥
भवोदधि तारण हार, खिवैया धर्म तुम्हारा है ॥ ४ ॥

भजन नं० (७५)

(चाल–ऐरी मैं तो प्रेम दिवानी, मेरा दर्द न जाने कोय …'फिल्म नौबहार')

ऐरे तू तो मूढ अज्ञानी, तूने जन्म दिया है खोय ॥ टेक

खोया तूने खेल में वचपन, यौवन विपयन वीच
कैसे होगा तेरा सुधार, कर्म करे अति नीच
लिये रे तूने पथ में अपने, पाप के कण्टक वोय ॥ १ ॥
झूठा तन मन झूठा यौवन, झूठी जग की प्रीत
झूठे सुख,की आस करे क्यों, सोच समझ मन मीत
लुटेगी तेरी ज्ञान की पूंजी, मोह की नींद न सोय ॥२॥
करना हो सो करले चेतन, गुरु समझाये येह
आये बुढ़ापा क्या वन आये, थर थर कांपे देह
ले ले रे 'शिवराम' सुशिक्षा, पल में परलय होय ॥ ३ ॥

भजन नं० ७६

(चाल—ऐ मा तेरे चरणों पे, आकाश झुका देंगे)

प्राणों से हमें प्यारा जिन धर्म हमारा है,
संसार से तरने को, इक धर्म हमारा है ॥ टेक ॥
है पतित उद्धारक ये, मशहूर जमाने में
अंजन सा अधम पापी, इस ही ने उभारा है ॥ १ ॥
यह धर्म अहिंसा मय, जिनराज ने गाया है
यश वेद पुराणों में हर ठौर उचारा है ॥ २ ॥
निज सीस कटा करके, निकलंक देवजी ने
जिन धर्म का वजवाया, दुनिया में नक्कारा है ॥ ३ ॥
'शिवराम' धरम पे तुम, सर्वस्व लुटा देना
जिन धर्म हमारा ये, आंखों का सितारा है ॥ ४ ॥

भजन नं० (७७)

(चाल—मान तेरा एहसान अरे नादान' · · · 'फिल्म आन')

मान अरे नादान जरा कर ध्यान जगत में जीना है दिन चार॥टेक॥
दौलत न चले ये साथ तेरे सव ठाठ पड़ा रह जायेगा,

दिन रात है करता प्यार जिसे तन भी न साथ निभायेगा,
मात पिता परिवार तेरे सुत नार न आवें काम ये देख विचार ।।१।।
क्या मान करे नादांन अरे बुलबुला है जीवन ये जल का
क्यों पाप की पोट धरे सिर पै सामान सफर करले हलका,
तू करले अब वह काम तेरा जो नाम हमेशा याद करे संसार ।।२।।
कर मदद गरीब यतीमों की उपकार में धन ये लगा देना,
निज देश जाति की रक्षा पै यह जान भी अपनी लडा देना,
अपना धर्म संभाल है सर पर काल, अरे शिवराम तू हो हुशियार।।३

महावीर आरती (७८)

ॐ जय जय वीर प्रभो ।

शरणागत के संकट भगवन क्षण में दूर करो ।।
त्रिशला उर अवतार लिया प्रभु सुर नर हर्षाये ।
पन्द्रह मास रतन कुंडलपुर धनपति वर्षाये ।।
शुक्ल त्रयोदशी, चैत्र मास की आनन्द करतारी ।
राय सिद्धारथ घर जन्मोत्सव ठाट रचे भारी ।।
तीस वर्ष लौं रहे महल में बाल ब्रह्मचारी ।
राज त्यागकर यौवन में ही मुनि दीक्षा धारी ।।
द्वादस वर्ष किया तप दुद्धर विधि चकचूर किया ।
झलके लोकालोक ज्ञान में सुख भरपूर लिया ।।
कार्तिक श्याम अमावस के दिन प्रातः मोक्ष चले ।
पर्व दिवाली चला जभी से घर-घर दीप जले ।।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी शिव मग परकाशी ।
हरि हर ब्रह्मा नाथ तुम्हीं हो जय जय अविनाशी ।।
दीन दयाला जग प्रतिपाला सुर नर नाथ जपैं ।
सुमरत विघन टरें इक छिन में पातक दूर भजें ।।
चोर भील चंडाल उबारे भव दुख हरण तुही ।
पतित जान "शिवराम" उबारो हे जिन शरण तुही ।।

भजन नं० (७९)

वाड़ा के पद्म जिनेश हमारी पीर हरो, हमारी पीर हरो।
जयपुर राज्य ग्राम बाड़ा है, शहर चाकसू का थाना है॥
सुन्दर सरस स्वदेश हमारी पीर हरो, हमारी०॥ १॥
भैरव यक्ष ग्राम का स्वामी, बतलाई बातें अभिगामी॥
प्रगट होय परमेश हमारी, पीर हरो, हमारी०॥ २॥
वैशाखशुक्लपंचम तिथि आई, तब तहं प्रगटे त्रिभुवन राई
धरे दिगम्बर भेष हमारी पीर हरो हमारी०॥॥ ३॥
फैली प्रभु की महिमा भारी। लाखों आते नित नरनारी।
मजमा रहे हमेश हमारी पीर हरो, हमारी०॥ ४॥
लाखों जाट पालतो आते, मन वांछित फल वे सब पाते।
मिट जाय सबका क्लेश हमारी पीर हरो, हमारी०॥ ५॥
प्रत्येक मास की पचम तिथि को, मेला भरता शुक्लपक्ष को
घटे बढे ना लेश हमारी पीर हरो, हमारी०। ६॥
'राज' प्रभु दर्शन को आओ, पूजा रचाओ पुण्य बढाओ।
मिटे अशेष क्लेप हमारी पीर हरो, हमारी०॥ ७॥

भजन नं० (८०)

मनहर तेरी मूरतिया मस्त हुआ मन मेरा।
तेरा दर्श पाया पाया तेरा दर्श पाया॥ टेक॥
प्यारा-प्यारा सिंहासन अति भा रहा भा रहा।
उस पर रूप अनूप तिहारा छा रहा छा रहा॥
पद्मासन अति सोहे रे नैनां निरख अति चित
ललचाया, पाया तेरा०॥
प्रभु भक्ति से भव के दुख मिट जाते हैं जाते हैं।
पापी तक भी भवसागर तिर जाते हैं जाते हैं॥

शिवपद वोही पाया रे शरणागती में तेरी जो जीव
आया, पाया तेरा० ॥
सांची कहूँ खोई निधि मुझको मिलगई मिलगई।
उसको पाकर मन की अखियां खुलगई खुलगई॥
आशा पूरी होगी रे आश लगाये 'वृद्धि' तेरे—
द्वार आया, पाया तेरा० ॥

भजन नं० (८१)

अब तो बन्धाओ मोहे धीर हो वीर स्वामी।
कब से खड़ा हूं तोरे तीर हो वीर स्वामी ॥टेक॥
सागर से श्रीपाल निकाला, रेन मंजूषा का दुख टाला।
आके हरी सब पीर हो वीर स्वामी ॥ १ ॥
सीताजी की अग्नि परीक्षा करी आन देवों ने रक्षा।
पावक से हुआ नीर हो वीर स्वामी ॥ २ ॥
रानी ने जब सेठ सताया, शूली पर था उसे चढाया।
तुमने हरी दुःख पीर हो वीर स्वामी ॥ ३ ॥
मानतुङ्गजी श्री मुनिराया, तालों में था बन्द कराया।
झड़ पड़ी तुरन्त जंजीर हो स्वामी ॥ ४ ॥
पिंडी फटने के अवसर पर तुमको ही ध्याया था मुनिवर।
प्रकट हुए चन्द्र वीर हो वीर स्वामी ॥ ५ ॥
जिस जिस ने प्रभु तुमको चितारा उसही का दुख तुमने टारा।
'प्रेमी' हुआ है अधीर हो वीर स्वामी ॥ ६ ॥

वीर पालना भजन नं० (८२)

मणियों के पालने मे स्वामी महावीर झूलें।
रेशम की डोरी पडी मोतियों में गुथवां लडी।
त्रिशला माताजी खडी देखकर हृदय में फूलें ॥ मणि० ॥

चुटकी बजाय रही हंस के खिलाय रही।
राजा सिद्धारथ मगन होके राज पाट में भूलें ॥ मणि० ॥
कुंडलपुरवासी सारे बोले हैं जय जयकारे।
दर्शन कर प्रेम से महाराज के चरणों में भूलें ॥ मणि० ॥
इन्द्रादि देव आये शीश चरणों में झुकाये।
'किशना' के हृदय की सटकने लगी सारी चूलें ॥ मणि० ॥

वीर कीर्त भजन नं० (८३)

जय वीर कहो जय वीर कहो, त्रिशला नन्दन अति वीर कहो ॥
हर स्वांस यही झनकार उठे। धरती नभ सब गुंजार उठे।
प्रेमी का प्राण पुकार उठे – जय वीर कहो० ॥ १ ॥
यह दुनियां एक कहानी है, दरिया का वहता पानी है ॥
वस दो दिन की मिजमानी है – जय वीर कहो ॥ २ ॥
नर जीवन का है सार यही, सुख के पद का आधार यही ॥
वस लगातार तू तार यही – जय वीर कहो० ॥ ३ ॥
यह संकट भंजन हारा है, भक्तों को तन से प्यारा है।
'भगवत' यह नाम सहारा है – जय वीर कहो० ॥ ४ ॥

भजन नं० ८४ (पद्मपुरी)

मुझ दुखिया की सुनले पुकार भगवन पद्मप्रभो ॥ टेक ॥
दीनों के हो तुम प्रतिपालक, धर्म के हो संचालक।
किये अनेकों सुधार भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ १ ॥
चारों गति में दुख बहु पाया, काल अनादि दुख में गमाया।
आया तोरे दरबार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ २ ॥
नर्क गति की करुण वेदना, जन्म मरण कर्मन संग कीना।
मैं भोगे दुःख अपार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ ३ ॥
सदुपदेश दे लाखों तारे, अंजन जैसे अधम उबारे।
अब मेरी ओर निहार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥४॥

सेवक शान्ति-शरणे आया, दर्शन करके पाप नशाया।
जीवन के आधार, भगवन पद्म प्रभो, मुक्त० ॥५॥

भजन (८५)

(तर्ज—रसिया)

चांदनपुर के महावीर हमारी पीर हरो ॥ टेक ॥
जयपुर राज्य गांव चांदनपुर तहां बनो उन्नत जिन मंदिर ॥
तट नदी गम्भीर हमारी पीर हरो ॥ चंदन० ॥ १ ॥
पूरव बात चली यों आवे, एक गाय चरने को जावे।
झरजाय उसका छीर, हमारी पीर हरो ॥ चंदन० ॥२॥
एक दिवस मालिक संग आया देख गया टीला खुदवाया।
खोदत भयो अधीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥ ३ ॥
रैन मांहि तब सुपना दीना, धीरे धीरे खोद जमीना।
है इसमे तस्वीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥ ४ ॥
प्रात होत फिर भूमि खुदाई, वीर जिनेश्वर प्रतिमा पाई।
भई इकट्ठी भीड़, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥ ५ ॥
तब ही से हुआ मेला जारी, होय भीड़ हर साल करारी।
चैत मास आखीर, हमारी पीर हरो। चांदन० ॥ ६ ॥
लाखों मीना भूजर आवें, नाचें कूदें गीत सुनावे।
जय बोले महावीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥ ७ ॥
जुड़े हजारों जैनी भाई, पूजन पाठ करें सुख दाई।
मन वच तन धर धीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥८॥
छत्र चंवर सिंहासन लावें भर भर घृत के दीप जलावें।
बोले जय गम्भीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥ ९ ॥
जो कोई सुमरे नाम तुम्हारा, धन संतान बढे व्योपारा।
होय निरोग शरीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥ १० ॥

'मक्खन' शरण तुम्हारी आया, पुण्य योग से दर्शन पाया।
खुली आज तकदीर, हमारी पीर हरो ॥ चाँदन० ॥ ११ ॥

भजन—८६ [रथ के समय का]

प्रभु रथ में हुये सवार नकारा बाज रहा ॥टेक॥
क्या ठुमक चाल रथ चलता है, वह छतर शीश पै हिलता है।
इत चवर नाथ पर ढुलता है, क्या छाई आज बहार ॥नकारा॥१॥
किस छवि से नाथ विराज रहे, नासा दृष्टि से भाज रहे।
अद्‌भुत बाजे बाज रहे, सब बोले जय जय कार ॥ नकारा० ॥२॥
ढोलक और बजे नकारा है, बाजे का स्वर अति प्यारा है।
तबले का ठुमका न्यारा है, झांझन की हो झनकार ॥नकारा०॥३॥
कहे "किशन" जारचे वाला है, तेरे नाम पै वो मतवाला है।
सब पियो धर्म का प्याला है, हो भवसागर से पार ॥नकारा०॥४॥

भजन—(८७)

हे वीर तुम्हारे द्वारे पर एक दर्श भिखारी आया है।
प्रभु दर्शन भिक्षा पाने को दो नयन कटोरे लाया है॥
नहीं दुनियां में कोई मेरा है आफत ने मुझको घेरा है।
प्रभु एक सहारा तेरा है जगने मुझको ठुकराया है॥
धन दौलत की कछु चाह नहीं घरबार छुटे परवाह नहीं।
मेरी इच्छा तेरे दर्शन की दुनिया से चित्त घबराया है॥
मेरी बीच भंवर में नैया है बस तू ही एक खिवैया है।
लाखों को ज्ञान सिखा तुमने भवसिंधु से पार उतारा है॥
आपस में प्रीत व प्रेम नहीं तुम बिन अब हमको चैन नहीं।
अब तो तुम आकर दर्शन दो त्रिलोकी नाथ अकुलाया है॥
जिन धर्म फैलाने को भगवन कर दिया है मन धन अर्पन।
जैन युवक मण्डल अपनाओ सेवा का भार उठाया है॥

भजन नं. (८८)

सब मिलके आज जय कहो श्री वीर प्रभु की।
मस्तक झुका के जय कहो श्रीवीर प्रभु की ॥टेक॥
विघनों का नाश होता है लेने से नाम के ॥
माला सदा जपते रहो श्रीवीर प्रभु की ॥ १ ॥
ज्ञानी बनो दानी बनो बलवान भी बनो ।
अकलंक सम बन के कहो जय वीर प्रभु की ॥२॥
होकर स्वतंत्र धर्म की रक्षा सदा करो ।
निर्भय बनो अरु जय कहो श्रीवीर प्रभु की ॥ ३ ॥
तुझको भी अगर मोक्ष की इच्छा हुई है "दास" ।
उस वाणी पै श्रद्धा करो श्री वीर प्रभु की ॥ ४ ॥

भजन नं. (८९)

(तर्ज --'फिल्म रामराज्य')

त्रिशला के राज दुलारे की हम कथा सुनाते हैं ।
भारत के उजियारे की हम कथा सुनाते हैं ॥टेक॥
बढ गये पाप जब भारी हुए दुखी सब नर नारी ।
सिद्धारथ के घर में जन्में वीर प्रभु अवतारी ॥
महिमा जिनकी सदा सकल जन गाते हैं ॥ हम०॥
यज्ञ पशु वध हटे सभी दुख कटे, दया में डटे गुणी सुख पाये ।
धर्म बाग फिर खिला, समय शुभ मिला,
गिरा अघ किला भले दिन आये ।
ज्ञानी ध्यानी बने कर्म सब हने,
दुखों मे छने नहीं घबराते हैं ॥ हम० ॥
महावीर कहलाये परमपद पाये,
जगत में नामी सभीको पाये ।

ज्ञान दान बहु दिया जगत हित किया,

त्याग के भेद सभी समझाते हैं ॥ हम०॥

पावापुर में आन लिया निर्वाण महा सुखकारी।

जिस लिये लिया था योग लिया वही शिव पद भारी

देव मिल "अमृत" दीपावली रचाते हैं ॥ हम० ॥

भजन नं० (९०)

(तर्ज:—म्हारा छैल भंवर को कागसियो पनिहारी ले गई जी)

म्हारा पद्मप्रभुजी की सुन्दर मूरत म्हारे मन भाई जी ।।टेर।।

वैशाख शुक्ल पंचम तिथि आई, प्रगटे त्रिभुवन राईजी ।।म्हारे०।।१

रत्न जडित सिंहासन सोहै, जहां पर आप विराजाजी ।।म्हारे०।।१

तीन छत्र थांका सिर पर सोहैं, चौसठ चंवर दुरायाजी ।।म्हारे०।।३

अष्ट द्रव्य ले थाल सजाकर, पूजा भाव रचायाजी ।।म्हारे०।।४

सोमा सती ने तुमको ध्याया, नाग का हार बनायाजी ।।म्हारे०।।५

सीता सती ने तुमको ध्याया, अग्नि का नीर बनायाजी ।।म्हारे०।।६

सती द्रोपदी ने तुमको ध्याया, उसका चीर बढ़ायाजी ।।म्हारे०।।७

मैनासती ने तुमको ध्याया, पतिका कुष्ट मिटायाजी ।।म्हारे।।।८

फैली प्रभु की महिमा भारी, आते नित नर नारी जी ।।म्हारे०।।९

निकलेगी प्रतिमा श्री प्रभु की, भैरव ने बतलाईजो ।।म्हारे०।।१०

पुण्य 'उदय' मेरा जो आया, दर्शन करके पाप नाशायाजी।म्हारे०।११

भजन नं० (९१)

हमें वीर स्वामी तुम्हारा सहारा।

कुंडलपुर के राजा सिद्धारथ का प्यारा ॥

जो दर्शन दिये फिर दुबारा भी देना।

वह त्रिशलावनीजी के आंखों का तारा ॥ १ ॥

सुना करता था जो तारीफ स्वामी।

तो वैसा ही पाया नजारा तुम्हारा ॥ २ ॥
अजब मुस्कराहट अजब शान तेरी ।
अजब नूर प्यारा है स्वामी तुम्हारा ॥ ३ ॥
जो छीना है दिल को न दिल को हटाना ।
हटा लोगे दिल को न होगा गुजारा ॥ ४ ॥
करो सेवकों की महावीर रक्षा ।
है सब प्राणियों को सहारा तुम्हारा ॥ ५ ॥
दया हम पै करना दया के हो सागर ।
करोगे तुम्हीं भव सागर से पारा ॥ ६ ॥
सिवा प्रेम के हम पै देने को है क्या ।
झुका बस यह चरणों में शीश हमारा ॥ ७ ॥
'किशनलाल' जैनी जन्म जाएचे का ।
बड़े प्रेम से महावीर पुकारा ॥ ८ ॥

भजन नं० (६२)

पाये पाये जी वीर + के दर्शन पाये जिया हर्षाये ।
सब टरे हमारे पातक पुण्य कमाये ॥ टेक ॥
भूले भूले अब तक भटके अब ना भटका जाये ।
शिव सुख दानी तुमको पाकर कैसे भूला जाये ॥पाये०॥१॥
भवोदधि तारन तरन जिनेश्वर तुम ग्रन्थों मे गाये ।
फिर भक्तों की नाव भंवर में कैसे गोता खाये ॥पाये०॥२॥
विघ्न निवारो सकट टारो राखो चरण निभाये ।
फिर 'सौभाग्य' बढे भारत का घर २ मगल गाये ॥पाये०॥३॥

भजन नं० (६३)

व्याकुल मोरे नयननवा, चरण शरण में आया ।
दर्श दिखादो स्वामी दर्श दिखादो ॥ टेक ॥

+ 'वीर' की जगह पद्मा' भी बोला जाता है ।

कर्म शत्रु तो घिर घिर सिर पर आ रहे आ रहे।
भव सागर के दु:ख अनन्ता पा रहे पा रहे॥
इन से वेग बचाओ रे अर्ज हमारी मानो।
दु:ख मिटादो स्वामी दु:ख मिटादो॥व्याकुल०॥१॥
तीन भुवन में तुमसा स्वामी और न कोई पाते हैं पाते हैं।
स्वामी तुम बिन गैर और नहीं पाते हैं पाते हैं।
पथ दिखलाओ रे अर्ज हमारी मानो।
दु:ख मिटादो स्वामी दु:ख मिटादो॥ व्या०॥ २॥
सब जीवों का दु:ख से बेडा पार करो पार करो।
'सेवक' का भी स्वामी अब उद्धार करो उद्धार करो।
सब ही शीश नमावें रे अर्ज हमारी मानो।
दु:ख मिटा दो स्वामी दु:ख मिटा दो॥व्या०॥३॥

भजन नं० (६४)

वीर क्या तेरी निराली शान है।
देख के दुनियां जिसे हैरान है॥टेक॥
जाने क्या जादू भरा है आप में।
हर बशर को आपका ही ध्यान है॥वीर०॥१॥
सैंकड़ों मीलों से आते हैं यहां।
दर्श बिना दुनियां तेरे हैरान है॥वीर०॥२॥
जिसने जो हसरत तुम्हें जाहिर करी।
आपने पूरा किया अरमान है॥वीर०॥३॥
जो भी आया आपके दरबार में।
उसको मुंह मांगा दिया वरदान है॥वीर०॥४॥
जीव हिंसा को हटाया आपने।
सारे जीवों पै तेरा अहसान है॥वीर०॥५॥
रास्ता मुक्ति का बतलाया हमें।

तेरा ममनु सारा हिन्दुस्तान है ॥वीर०॥६॥
काम धेनु सी, है ज्योती आप में ।
वो ही शक्ति आप में परधान है ॥वीर०॥७॥
है दया करना धर्म इन्सान का ।
वीर स्वामी का यही फरमान है ॥वीर०॥८॥
'राज' पै भी हो इनायत की नजर ।
आपके सन्मुख खड़ा नादान है ॥वीर०॥९॥

भजन नं० (९५)

(तर्ज.—छुप २ खड़े हो जरूर कोई बात है)

गहरी गहरी नदिया नाव बिच धारा है- तेरा ही सहारा है २॥१॥
डगमग करती है कर्मों के भार से,
मारग भूल रहे घोर अंधकार से,
डूबती इस नाव का तू ही खेवनहार है-तेरा ही सहारा है २॥२॥
अग्नि का नीर हुआ तेरे प्रताप से,
कुष्ट रोग दूर हुआ तेरे नाम जाप से,
भव-भव दुख का तू ही मेटन हार है-तेरा ही सहारा है २॥३॥
वीतराग छवि तेरी लगे अति प्यारी है,
चरणों पै जाऊं नाथ बलिहारी है,
रूप तेरा देखकर 'शान्ति' चित धारा है-तेरा ही सहारा है २॥४॥

भजन नं० (९६)

(तर्ज:—लाल दुपट्टा मलमल का)

लहर लहर लहराये केसरिया झंडा जिनमत का ।
यह सबका मन हरषाये केसरिया झंडा जिनमत का ॥
फर फर फर फर करता झंडा गगन शिखा पर डोले ।
स्वस्तिकका यह चिह्न अनूठा भेद हृदय के खोले ॥

यह ज्ञान की ज्योति जगाये ॥ १ ॥
इसकी शीतल छाया में सब पढे 'रतन' जिनवानी।
सत्यःअहिंसा प्रेमयुक्त फिर बने देश लासानी॥
यह सत पथ पर पहुंचाये ॥ २ ॥

भजन नं० (६७)

(तर्ज.-जिया बेकरार है)

भव सागर अपार है, टूटी ये पतवार है।
जीवन नैया डगमग डोले तेरा ही आधार है ॥ टेर ॥
पाप पवन ज्यों चले जोरसे नैया डगमग डोले हो।
कर्म लुटेरे आकरके फिर सम्यक गठरी खोले ॥ १ ॥
क्या अचरज गर बने तुम्हीं से पाकर के तव भक्तीहो।
भवसागर को पार करू मैं दे दो ऐसी शक्ति ॥ २ ॥
हूँ अल्पज्ञ नहीं है शक्ति क्या गुण तेरे गाऊं मैं।
धर्म 'दीप' अर्जी है तुमसे शिवपुर वस्ती पाऊं ॥ ३ ॥

भजन नं० (६८)

(तर्ज:-तेरे कूचे मे अरमानो की दुनियां)

समझ उठ चेतरे चेतन, भरोसा है नहीं पलका।
खडी मुख फाड़ कर मृत्यु, भरोसा है नहीं पलका ॥टेर॥
बालपन खेल में खोया जवानी नींद भर सोया।
बुढ़ापे में बढ़ी तृष्णा हुआ नहीं बोझ भी हलका ॥१॥
प्रभू का नाम नहीं लीना उमर सारी बिता दी यूं।
बुलावा मौत का आया चखो तब स्वाद निज फल का ॥२॥
सिफारिश भी नहीं चलती किसी की मौत के आगे।
राम रावण बली हारे पता जिसका था न बल का ॥३॥
विजय गर मृत्यु पर चाहो करो निज आत्म का चिंतन।
ज्ञान का 'दीप' जागेगा दिखेगा मार्ग शिवपुर का ॥४॥

भजन नं० (६६)

छोड़ गये स्वामी क्यों मुझ से नाता तोड़ गये ।
जाय चढे गिरनार मुझे काहे भटकती छोड़गये ॥
भव भवं को यह प्रीत लगी थी अब काहे विसराई ।
दिल में थी जब ध्यान धरम की मुझसे क्यों प्रीत लगाई ।
पशुवन की किलकारी सुनकर कंगना गांठ तुडाई ।
छप्पन कोटि सजे यदुवंशी काहे बरात सजाई ।
तोड़ मोड़ सब साज मुझे काहे तड़फती छोड़ चले ॥
अब संग चलूंगी नाथ मुझे काहे अकेली छोड़ चले ।

भजन नं० (१००)

शिवपुर पथ परिचायक जय हे, सन्मति युग निर्माता
गङ्गा कल कल स्वर में गाती, तव गुण गौरव गाथा
सुनकर किन्नर तव पद युग मे नित नत करते माथा
जब तक रवि शशि तारे सादर शीश झुकाते
हे सद्बुद्धि प्रदाता ।
दुख हारक सुखदायक जय हे, सन्मति युग निर्माता
जय हे, जयहे, जयहे, जय जन जय जय हे, सन्मति युग निर्माता ।
मङ्गल कारक दया प्रचारक खग पशु नर उपकारी
भवि जनतारक कर्म विदारक सब जग तव आभारी
जब तक रवि शशि तारे तब तक गीत तुम्हारे
विश्व रहेगा गाता
चिर सुख शांति विधायक जयहे, सन्मति युग निर्माता ।
जयहे, जयहे, जयहे, जय जय जय जय हे सन्मति युग निर्माता ॥
भ्रातृ भावना भुला परस्पर लडते हैं जो प्राणी
उनके उर मे विश्व प्रेम फिर भरे तुम्हारी वाणी

सब में करुणा जागे जग से हिंसा भागे
पाए सब सुख साता
हे दुर्जय दुःख त्रायक जयहे, सन्मति युग निर्माता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय सन्मति युग निर्माता।

भजन नं० (१०१)

(तर्ज—बापू की अमर कहानी)

सुनो सुनो ए दुनियां वालों जैन धर्म की अमर कहानी।
आज फूल उठती है छाती, आती है जब याद पुरानी।
सबसे पहले ऋषभदेव प्रभु, इसको नींव जमाने आये।
अखिल विश्व को सद्गृहस्थ का सच्चा पाठ पढाने आये।
राज-पाट को त्याग नगर के बाहिर वन में ध्यान लगाया।
केवल ज्ञान प्राप्त कर जिनने सोता हिन्दुस्तान जगाया॥
दया धर्म का मूल बताया, अधम वही है जो अभिमानी॥१॥
नेमिनाथ-भगवान जिन्होंने इसका मर्म बताया सच्चा।
निज स्वारथ वश किसी जीव को तड़फाना है कभी न अच्छा
पार्श्व नाथ प्रभु के तप आगे क्रूर कमठ राक्षस भी हारा।
खड खंड गिरि हुए कमठ ने बरसाई जब मूसल धारा।
क्षमा, धैर्य, तप के आगे दुश्मन होते पानी पानी॥ २॥
यह कहने की कहीं जरूरत महावीर ने क्या बतलाया।
अश्वमेध नरमेध यज्ञ का जग से हिंसा-काण्ड हटाया।
गांधीजी ने उसी वीर की सत्य अहिंसा को अपनाया।
अंग्रेजों को दूर हटा कर भारत को आजाद बनाया।
है 'अनूप' नित नित्य नया है, नहीं जहां इसकी सानी॥३॥

भजन नं० (१०२)

मैंने छोड़ा सभी घरबार, भगवन तेरे लिये॥

तुम को टीला खोद निकाला, मेहनत से यह छप्पर डाला।
रहे सब ही परिवार ॥ ॥ भगवन० ॥
ओधराज को तुमने बचाया, फिर मन्दिर उसने बनवाया।
जैनी आ रहे अपार ॥ भगवन० ॥
दबे पड़े जब कोई न आया, तुम्हें न जाने दूँ मन भाया।
चाहे हो जाये तकरार ॥ भगवन० ३ ॥
चढ़े वहां घी मेवा नारियल, सोना चांदी केशर तन्दुल।
थी यहां गऊ की धार ॥भगवन० ४ ॥
जो तुम मन्दिर मे जाओगे, प्रीत मेरी सब बिसराओगे।
हो जाऊ गा मैं ख्वार ॥ भगवन० ५ ॥
बीबी बच्चे सब चिल्लाये, उधर खड़ी गैया डकरावे।
मर जाये धरणि सर मार ॥ भगवन० ६ ॥
असर किया वो ग्वाल रुदन ने, तभी वहां हितकार गगन से।
सुर द्वारा कराई पुकार ॥ भगवन० ॥
प्रतिमा यहां से जब यह जावे, गाड़ी को तू हाथ लगावे।
पहले छत्री करै तय्यार ॥ भगवन० ८ ॥
उसका सदा चढावा खाना, जब चाहे तब दर्शन पाना।
सदा रक्खे खुला दरबार ॥भगवन० ९॥

भजन नं० (१०३) (अभिलाष)

मोरे मन मन्दिर मे आन बसो भगवान ॥
घण्टे और घड़ियाल नहीं है, सामग्री का थाल नहीं है ॥
लेकिन एक प्रेम का दीपक, जलता है भगवान ॥१॥मोरे०॥
क्रोध नहीं है क्लेश नहीं है बगुले का सा भेष नहीं है।
छोटी सी एक प्रेम कुटी है, प्रेम का है यह स्थान ॥२॥मोरे०॥
टूटा फूटा मन्दिर मेरा, पड़ा हुआ है घोर अन्धेरा ॥
तुम आओ तो हो उजियारा, तुम बिन है सुनसान ॥३॥मोरे०॥

भजन नं० (१०४)

वीरा वीरा मैं पुकारूँ तेरे दर के सामने।
मन तो मेरा हर लिया महावीरजी भगवान ने ॥
मोहिनी छवि को दिखा दो अब मेरे भगवन मुझे।
तेरी चर्चा हम करेंगे, हर बशर के सामने ॥वीर०॥
डूबते श्रीपाल को तुमने बचाया है प्रभो।
द्रौपदी की लाज राखी कौरवदल के सामने ॥वीर०॥
हार का बनकर सरप जब खालिया उस सेठ को।
सोमाने सुमरण किया महावीरजी के नाम को ॥वीरा०॥
चित्त हम सबका भटकता, वीर के दीदार को।
कर जोड़ के देखा करूँ मैं तेरे दर के सामने ॥वीरा०॥

भजन—[श्रद्धा के फूल] (१०५)

एक प्रेम पुजारी आया है, चरणों में ध्यान लगाने को।
भगवान तुम्हारी मूरत पर श्रद्धा के फूल चढ़ाने को ॥
तुम त्रिशला के दृग तारे हो, पतितों के नाथ सहारे हो।
तुम चमत्कार दिखलाते हो, भक्तों का मान बढ़ाने को ॥१॥
तुमरे वियोग में हे स्वामी, हृदय व्यथा बढ़ती जाती।
भारत में फिर से आजाओ, जिन धर्म का रंग जमाने को ॥२॥
उपदेश धर्म का देकर के, फिर धर्म सिखादो भारत को।
आओ एक बार प्रभु आओ, हिंसा का नाम मिटाने को ॥३॥
प्रभु तुमरे भक्त भटकते हैं, तेरे नाम को हरदम रटते हैं।
"त्रिलोकी" नित्य तरसता है, प्रभु आपके दर्शन पाने को ॥४॥

भजन नं० (१०६)

क्यों, ना ध्यान लगाये, वीर से बावरिया।
जाना देश पराये झमेला दो दिनका ॥

जीवन तेरा है एक सपना, इस दुनियां में कोई न अपना।
हंस अकेला जाय वीर से० ॥ १
माता बहना चाची ताई, पिता पुत्र और भाई जवांई।
मतलब से प्रीत लगाये वीर० ॥ २
जो हैं तुमको सबसे प्यारे, मृतक देख तुमसे हों न्यारे।
कोई संग मे न जाय, वीर से बावरिया० ॥३
जिस तन को तू खूब सजाये, आखिर मिट्टी मे मिल जाये।
फिर पीछे पछताय, वीर से० ॥४॥
जिस माया पर तू इतराये, आखिर मे कुछ काम न आये।
यहीं पडी रह जाये, वीर से० ॥५॥
धर्म ही आखिर काम में आये, हर दम तेरा साथ निभाये।
'त्रिलोकी नाथ' समझाय, वीर० ॥६॥

भजन नं० (१०७)

पुजारी! हृदय के पट खोल!
कोई गावे कोई रोवे,,उनसे तू मत बोल ॥ पुजारी ॥
तू न किसी का कोई न तेरा, नाहक करता मेरा तेरा ॥
तुझे पड़ी है क्या दुनियां की, मत रस में विष घोल ॥ पुजारी ॥
तेरी सूरत सुन्दर प्यारी, उसकी विमल छटा है न्यारी ॥
इधर उधर मत फिरे भटकता, व्यर्थ बजावत ढोल ॥ पुजारी ॥
तेरे घट में है परमातम, बना मूढ मत भूले आतम ॥
तेरे घट मे छिपा हुआ है, तेरा रतन अमोल ॥ पुजारी ॥
ज्ञान दीप से तिमिर भगादे, आतम शक्ति पुनः सरसादे ॥
भक्ति तुला से मन के मनसे, मन के मन को तोल ॥ पुजारी ॥

भजन नं० (१०८)

जब तेरी डोली निकाली जायेगी, बिन मुहूरत के उठाली जायेगी।
उन हकीमों से ये कहदो बोल कर, दावा करते जो किताबें खोलकर ॥

यह दवा हरगिज न खाली जायेगी ॥ १ ॥
क्यों गुलों पर हो रही बुलबुल निसार।
है खड़ा पीछे शिकारी खबरदार॥
मार कर गोली गिराली जायगी ॥ २ ॥
अय मुसाफिर क्यों पसरता है यहां।
ये मिला तुझको किराये का मकां।
कोठरी खाली कराली जायगी ॥ ३ ॥
जर सिकन्दर का यहीं पर रह गया।
मरते दम लुकमान भी यह कह गया॥
यह घड़ी हरगिज न टाली जावेगी ॥ ४ ॥
चेत "भैया" अब श्री जिन वर भजो।
मोह रूपी नींद को जल्दी तजो॥
वरना यह पूंजी उठाली जायगी ॥ ५ ॥

भजन नं० (१०६)

अरे मूरख मुसाफिर क्यों पड़ा बेहोश सोता है।
संभल उठ बांधले गठरी समय क्यों व्यर्थ खोता है ॥ टेक ॥
किसी का पल घड़ी छिन में किसी का एक दो दिन में।
बजे जब कूच का डंका तो जाना सबका होता है ॥ १ ॥
खड़ा है काल लेकर मौत का झंडा तेरे सिर पर।
अरे अब चेत चेतन देख क्या दुनियां में होता है ॥ २ ॥
तेरे मां बाप दादे सब गये हैं जिस जमालय में।
उसी में सबको जाना है कहो किस किस को रोता है ॥ ३ ॥
बनी है हाड चमड़े से रुधिर और मांसमय काया।
झरे दिन रात मल इससे तू क्या मलमल के धोता है ॥ ४ ॥
लड़कपन खेल में खोया जवानी में विषय सेया।
बुढ़ापे में बढ़ी तृष्णा गया नर जन्म थोथा है ॥ ५ ॥

गई सो तो गई अब भी रही को राखले "मक्खन"।
करो निज काज आतम का न खा भवदधि में गोता है ॥ ६ ॥

भजन नं० (११०)

(तर्ज—एक दिल के टुकडे हजार हुए)

वह दिन था मुबारिक शुभ थी घड़ी, जब जन्मे थे महावीर प्रभु।
तब नरक में भी थी शांति पडी, जब जन्मे थे महावीर प्रभु ॥टेक॥
तिथी चैत सुतेरस प्यारी थी, वह धन्य कुण्डलपुर नगरी।
सिद्धार्थ पिता त्रिशला उरसे, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥ १ ॥
जब धर्म कर्म था नष्ट हुआ, आचार जगत का बिगड चला।
तब शुद्धाचार सिखाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥ २ ॥
जब यज्ञ मे लाखों पशुओं का, होता था बलिदान महा।
तब हिंसा दूर हटाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥ ३ ॥
जब कर्ता वाद अज्ञान बढा, सिद्धांत कर्म को भूल गये।
तब स्याद्वाद समझाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥ ४ ॥
जब भटक रहे थे भव बन मे, शिवराह नजर नहीं आता था।
तब मुक्ति का मार्ग दिखाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥ ५ ॥

भजन नं० (१११)

(तर्ज—चुप चुप खडे हो जरूर कोई बात है)

धन धन कातिक अमावस प्रभात है।
चौदश की रात है यह चौदश की रात है ।टेक।
पावा पुरी बन दिल को लुभा रहा।
आनन्द बादल ये कैसा छा रहा।
जै जै कार झडी लगी मानो बरसात है ॥१॥
ऊषा है फूली सवेरा भी होगया।

रात्रि भी खो गई, अंधेरा भी होगया ।
गगन में वाजे वजें कोई करामात है ॥२॥
गये आज मोक्ष में वीर भगवानजी ।
रत्नों की रोशनी देवों ने आन की ।
पर्व ये दिवाली चला देशों में विख्यात है ॥३॥
तभी ज्ञान केवल है गौतम ने पा लिया ।
वहीं "शिव" रास्ता हमको दिखा दिया ।
खुशियां मनायें क्यों न खुशी की ये बात है ॥४॥

भजन नं० (११२)

वीर प्रभु आना, आनाजी पार वेडा लगाना लगाना जी ।
इन कर्मों ने मुझको घेरा, प्रभु छाया है घोर अंधेरा ॥
अब घवरा के तुमको टेरा ॥
भूले को राह बताना २ जी मन मन्दिर में आना २ जी ॥वीर॥
तुम मुक्ति के राह वतैया, मेरी डोले है भव वीच नैया ।
प्रभु किश्ती के हो तुम खिवैया ॥
अव कृपा की बल्ली लगाना२ जी, मन मन्दिर मे आना२ जी ।वीर।
स्वामी मुझको अमर फल खिलादो, इन कर्मों से शीघ्र छुडादो ।
अपने चरणों का "दास" वनालो ॥
शिवपुर की राह बताना २ जी, मन मंदिर में आना२ जी ।३।

आरती नं० (११३)

ओं जय अन्तरयामी स्वामी जय अन्तरयामी ।
दुखहारी सुखकारी तुम हो त्रिभुवन के स्वामी ॥
ॐ जय अन्तरयामी ॥ टेक ॥
नाथ निरंजन सब दुःख भंजन सन्तन आधारा ।
पाप निकंजन जन मन रंजन सम्पति दातारा ॥
ॐ जय अन्तर्यामी० ॥ १ ॥

करुणा सिन्धु दयाल दया निधि जय जय गुण धारी।
वांछित पूर्ण दुःख दल चूरण सब जन सुखकारी ॥
ॐ जय अन्तर्यामी० ॥ २ ॥
ज्ञान प्रकाशी शिवपुरवासी अविनासी अधिकार।
अलख अगोचर शिवमय शंकर शिवरमनी भरतार ॥
ॐ जय अन्तर्यामी० ॥ ३ ॥
जय जग तारक कल-मल-हारक तुम हो दीनदयाल।
जय जय धर्म दिवाकर जग में सब जीवन प्रतिपाल ॥
ॐ जय अन्तर्यामी० ॥ ४ ॥
'न्यामत' गुण गावे पाप नशावे चरणन सिर नावे।
पुनि पुनि अरज सुनावै भगवन शिव कमला पावे ॥
ॐ जय अन्तर्यामी० ॥ ५ ॥

आरती पार्श्वनाथ भगवान की (११४)

जय पारस, जय पारस, जय पारस देवा ॥ टेक ॥
मात तुम्हारी वामा देवी, पिता अश्व सेवा।
काशीजी में जन्म लिया था, हो देवों के देवा ॥१॥
आप तेईसवे हो तीर्थंकर, भक्तों को सुख देवा।
पांच पाप मिटाकर हमरे, शरण देवो जिन देवा ॥२ ॥
दूजा और कोई ना दीखे, जो पार लगावे खेवा।
'नवयुवक मंडल" बना रहे, जो करे आपकी सेवा ॥३॥

आरती नं० (११५)

करौं आरती वर्द्धमान की, पावापुर निर्वान थान की ॥टेक॥
राग बिना सब जग जन तारे,
द्वेप बिना सब कर्मनि छारे ॥ करौ ॥
शील धुरंधर शिव तिय भोगी,

मन वच कायन कहिये योगी ॥ करों ॥
रतन त्रय निधि परिग्रह हारी,
ज्ञान सुधा भोजन व्रत धारी ॥ करों ॥
लोक अलोक व्याप्त निज मांहीं,
सुखमय इन्द्रिय सुख दुख नाहीं ॥ करौं ॥
पंच कल्याणक पूज्य विरागी,
विकल दिगम्बर अम्बर त्यागी ॥ करौं ॥
गुण मणि भूषण भाषित स्वामी,
जगत उदास जगतर स्वामी ॥ करौं० ॥
कहे कहां लौं तुम सब जानों,
"द्यानत" की अभिलाष प्रमानों ॥ करौं० ॥

आरती पद्मप्रभु (११६)

आरती श्री जिन पद्म तुम्हारी ।
प्रगट हुये तुम अतिशय धारी ॥
तिथि वैशाख पंचमी आई ।
जब तुम दरश दिये जिनराई ॥ आरती श्रीजिन० ॥
धरन भूप के सुत कहलाये ।
सुसमा मात उदर प्रगटाए ॥ आरती श्रीजिन० ॥
कौशांबी भयौ जन्म कल्याना ।
सुरपति तांडव निरत रचाना ॥ आरती श्रीजिन० ॥
काम क्रोध मोहादिक मारे ।
मान कषाय तजे तुम सारे ॥ आरती श्रीजिन० ॥
कर्म घातिया मार भगाये ।
जब तुमने केवल पद पाये ॥ आरती श्रीजिन० ॥
जग का जो अज्ञान अंधियारा ।

ज्ञान भान से किया उजियारा ।। आरती श्रीजिन० ।।

जो यह आरती करे करावै ।

"पूरन" नहिं भय रोग सतावैं ।। आरती श्रीजिन० ।।

आरती महावीर चांदनपुर की (११७)

आरती श्री महावीर तुम्हारी । चांदनपुर के अतिशय धारी ।
कोटि भान के अति छबि छाजै । अन्तरीक्ष तू सदा विराजै ।।
तीन छत्र सिर पर अति सोहैं । निरखत सुर नर के मन मोहैं ।
हो तुम अविचल सदा विहारी । आरती श्री महावीर तुम्हारी ।।
अभय अनाकुल शिव पद पायौ । जड चेतन षट द्रव्य लखायौ ।
द्वादशाङ्ग को भेद बतायौ । निर्विकार सरवज्ञ कहायौ ।।
हो तुम भेष दिगम्बर धारी । आरती श्री महावीर तुम्हारी ।
कर्म महाभट दुद्धर मारे । काम क्रोध से सुभट पछाड़े ।।
तृष्णा और मोह मद मारे । तजे राग द्वेषादिक सारे ।
प्रभु तुम गये बाल ब्रह्मचारी । आरती श्री महावीर तुम्हारी ।।

आरती नं० (११८)

ॐ जय प्रभु कष्ट हरो ।

हम हैं कृपा भिखारी, हमें नहीं बिसरो ।।

विश्व भ्रमण से थक कर, चरण शरण आया ।

ज्योति पुंज के सन्मुख, आत्म-ज्योति लाया ।। १ ।।

दया धर्म उद्धारक ! तुम सुख के दाता ।

अखिल विश्व के ईश्वर, घट घट के ज्ञाता ।। २ ।।

परम शांति छविधारी, ज्ञान भरो उरमें ।

सुख मग मुझे दिखाओ, पहुँचूं शिवपुर में ।। ३ ।।

हम हैं दास तुम्हारे, तुम जीवन आशा ।

"भगवत" हमें न भूलो, पूरो अभिलाषा ।। ४ ।।

भजन नं० (११६) आरती श्री शान्तिनाथजी की

जय जिनवर देवा प्रभु जय जिनवर देवा।
शान्ति विधाता शिव सुख दाता शान्ति नाथ देवा ॥ टेक ॥
ऐरा देवी धन्य जगत में जिस उर आन बसे।
विश्वसेन कुल नभ में मानों पूनम चन्द्र लसे ॥ १ ॥
कृष्ण चतुर्दशी जेठ मास की आनन्द करतारी।
हथनापुर में जन्म महोत्सव ठाठ रचे भारी ॥ २ ॥
बाल्यकाल की लीला अद्भुत सुर नर मन भाई।
न्याय नीति से राज्य कियो चिर सबको सुखदाई ॥ ३ ॥
पंचम चक्री काम द्वादशम सोल्हम तीर्थङ्कर।
त्रय पदधारी तुमही मुरारी ब्रह्मा शिवशंकर ॥ ४ ॥
भवतन भोग समझ क्षण,भंगुर मुनि व्रत धार लिये।
षटखण्ड नवनिधि रतन चतुर्दश तृणवत् छार दिये ॥५॥
दुद्धर तप कर कर्म निवारें केवल ज्ञान लहा।
दे उपदेश भविक जन बोधे ये उपकार महा ॥ ६ ॥
शान्तिनाथ है नाम तिहारा सब जग शान्ति करो।
अरज करे 'शिवराम' चरण में भव आताप हरो ॥ ७ ॥

निश्चय आरती नं० (१२०)

इह विधि आरति करौं प्रभु तेरी,
अमल अबाधित निज गुण केरी ॥टेक ॥
अचल अखंड अतुल अविनाशी,
लोकालोक सकल परकाशी ॥ इह०
ज्ञान दर्श सुख बल गुण धारी,
परमात्म अविकल अविकारी ॥ इह०
क्रोध आदि रागादि न तेरे,

जन्म जरा मृत कर्म न मेरे ॥ इह०
अवपु अवन्ध करण सुख नासी,
अभय अनाकुल शिव पदवासी ॥ इह०
रूप न-रस न भेषन कोई,
चिन्मूरति प्रभु तुम ही होई ॥ इह०
अलख अनादि अनन्त अरोगी,
सिद्ध विशुद्ध सु आतम भोगी ॥ इह०
गुण अनन्त किमि वचन बतावें,
"दीपचन्द" भवि भावना भावे ॥ इह०

भजन महावीर की अमर कहानी नं० (१२१)

सुनो सुनो ए दुनियां वालो महावीर की अमर कहानी ॥ सुनो ॥
तीस वर्ष का त्रिशलानन्दन सन्मति घर से निकला।
सिद्धार्थ नृप का प्रिय कुमार वह कर्म काटने निकला।
राजपाट परिवार त्याग के वह जंगल में आया।
बाहर भीतर हुआ दिगम्बर ज्ञान ध्यान ध्याया ॥ सुनो ॥
घोर तपस्या करके उसने बारह वर्ष विताये।
कर्म काट के केवल पाया सब प्राणी हर्षाये।
यज्ञों मे नर पशु मरते थे आकर शीघ्र बचाये।
मोह नींद से जगा जगाकर सम्यक् ज्ञान कराये ॥ सुनो ॥
धर्म उपदेश देकर जग को सुख मय उसे बनाया।
स्याद्वाद का पाठ पढाके हठ का भूत भगाया।
मोक्ष मार्ग बतलाकर प्रभु ने प्राणी मुक्त कराया।
पावापुर के बीच सरोवर बन्धन तज शिव पाया ॥ सुनो ॥
बापू ने भी शिक्षा ले देश मुक्त करवाया।
चला गया जो वीर मार्ग से लौट न जग में आया।

सत्य अहिंसा ज्ञान रूप जो वीर ने धर्म बताया।
सिद्ध कहे सुज्ञों ने उसको भक्ति से अपनाया ॥ सुनो ॥ सुनो ॥

महावीर की प्यारी वाणी भजन नं० (१२२)

सुनो सुनो ऐ दुनियां वालो महावीर की प्यारी वाणी।
जिसने जग के लिए सुखों के हँसते हँसते की कुर्बाणी ॥ सुनो ॥
धर्म अहिंसा मुख्य बताया सब धर्मों का राजा।
नहीं मारना किसी जीव को सब-पर दया दिखाना।
चींटी से हाथी तक जितने दिखते तुम्हें जिनावार।
सभी चाहते सुख से रहना आतम एक बराबर।
पेड़ वनस्पति पांनी आदि इनमें जीव निशानी।
इसीलिये तो बतलाया है पिवो छानकर पानी ॥ सुनो ॥
झूठ बराबर पाप न कोई झूठा ठोकर खाता।
घर बाहर और राज सभा में कहीं न आदर पाता।
घर वाली माता पुत्रादि भी विश्वास न लावें।
सत्य कभी न छोड़ो चाहे प्राण भले ही जावे।
बड़े बड़े मुनि ऋषियों ने है इसकी महिमा जानी।
गांधी जी ने इसकी रक्षा हित त्यागी जिन्दगानी ॥ सुनो ॥
चोरी करने वाले डाकू लुच्चे चोर कहाते।
नाम न लेता इनका कोई सुन कर सब घबराते।
बहुत चोर तो चोरी करते ऊंचे से गिर जाते।
पकड़े जाने पर जेलों में दण्डे जूते खाते।
बड़े बड़े डाकू चोरों ने हार अन्त में मानी।
धर्म अचौर्य से निज जीवन सुफल बनाओ प्राणी ॥ सुनो ॥
पर की स्त्री माता पुत्री बहना को ना घूरो।
अपनी बहन सुता सम जानो काम वासना चूरो।

वेश्या सेवन से हो जाती बडी बडी बीमारी ।
धन दौलत और मान प्रतिष्ठा सब की होती ख्वारी ।
रावण की कथा सुनी नहीं है तुमने नीच कहानी ।
कष्ट सहे और प्राण गंवाये नर्क पडा अभिमानी ॥ सुनो ॥
लोभ पाप का बाप बताया तृष्णा डाकन भाई ।
इनके वश में लाखों ने भगिा अपनी जान गँवाई ।
जो सुख चाहो इस जीवन मे सन्तोषी बन जाओ ।
आवश्यकता से ज्यादा धन तुम अपने घर मत लाओ ।
जियो और जीने दो सब को कहते आतम ज्ञानी ।
स्याद्वाद पर चल कर रसिये ने महिमा पहचानी ॥ सुनो ॥

श्री वर्णीजी की अमर कहानी नं० (१२३)

श्रद्धा से नत मस्तक तेरे, चरणों मे गुरु देव हमारा ।
देकर जन्म बुन्देलखंड ने भारी अपना मान बढाया ।
धन्य चिरोंजा बाई जिनने गुरुवर तुम्हें सुयोग बनाया ।
सागर सागर बना ज्ञान का तुम से पावन तीर्थ कहाया ॥
अहो भाग्य है जैन जाति तूने वर्णी सा नेता पाया ।
आंक नहीं सकता कोई है अगम ज्ञान भण्डार तुम्हारा ॥
श्रद्धा से नत मस्तक तेरे चरणों में गुरुदेव हमारा ॥
गाव गाव घर घर में जाकर तुमने योगी अलख जगाया ।
लुप्त हुई अध्यात्मिकता का फिर भारत मे स्रोत बहाया ॥
वीर प्रभु के परम धर्म का मर्म मानवों तक पहुँचाया ।
और कुपथ से उन्हें हटाकर सदुपदेश सन्मार्ग दिखाया ॥
देख अलौकिक प्रतिभा से भव भगा अविद्या का अँधियारा ।
श्रद्धा से नत मस्तक तेरे चरणों में गुरुदेव हमारा ॥
सागर शिक्षा केन्द्र बनाकर विद्वानों को जन्म दिया है ।

खोल अनेकों शिक्षालय जैनागम का उद्धार किया है ॥
प्रमुख शिष्य ने इस प्रदेश में आ गुरुकुल का भार लिया है।
तरुण तपस्वी ने प्रचार कर वचनातीत सुधार किया है ॥
भवाताप से भीत जनों को मात्र तुम्हारा एक सहारा।
श्रद्धा से नत मस्तक तेरे चरणों में गुरुदेव हमारा ॥
गांव गांव में जाकर के तुमने प्रचार की मन में ठानी।
दुनियां कहती है चमत्कारमय बाबा तेरी है मृदुवाणी।
मोहित कर लेती है सब को तेरी अद्भुत आत्म-कहानी ॥
बनो जितेन्द्रिय और विवेकी यही तुम्हारा सुन्दर नारा।
श्रद्धा से नत मस्तक तेरे चरणों में गुरु देव हमारा ॥
मिल जाये सब बन्धु परस्पर यह महान् उद्देश्य रहा है।
दस्से बीसे विभेद को अनुचित तुमने सदा कहा है ॥
अखिल विश्व में मानवता ही सब धर्मों में धर्म महा है।
यही सुनाया सुना रहे हो यही तुम्हारा लक्ष रहा है ॥
खद्दर का चद्दर है योगी तुम्हें हृदय से प्यारा।
श्रद्धा से नत मस्तक तेरे चरणों में गुरु देव हमारा ॥
संयम सदाचार की तुमने निर्मल धारा पुनः बहाई।
सुखद शांतिदायक सुबोध की अमल अखण्डित ज्योति जगाई ॥
काम कषाय मोह निग्रह में तुमने पूर्ण सफलता पाई।
सत्य अहिंसा की महानता तुमने दुनिया को समझाई ॥
भावी सन्तति याद करेगी देख कलामय कार्य तुम्हारा।
आज तुम्हारे दर्शन पाकर फूला नहीं समाता ॥
श्रद्धा से नत मस्तक तेरे चरणों में गुरुदेव हमारा।
जो उपकार किया तुमने वचनों से कहा न जाता।
कैसे स्वागत करूं तुम्हारा नहीं समझ में आता ॥
बस केवल श्रद्धांजलियाँ चरणों में तुम्हें चढ़ाता।
मिलता रहे सदैव मुझे गुरुवर हितकर उपदेश तुम्हारा ॥ श्रद्धा ॥

समाधिमरण भाषा

वंदौं श्री अरहंत परमगुरु, जो सबको सुखदाई।
इस जग में दुख जो मैं भुगते, सो तुम जानो राई॥
अब मैं अरज करूं प्रभु तुमसे, कर समाधि उर माहीं।
अंत समय में वह वर मागूं सो दीजै जग राई॥१॥
भव भव में तनधार नया मैं, भव भव शुभ संग पायो।
भव भव में नृपरिद्धि लई मैं मात पिता सुत थायो॥
भव भव में तन पुरुषतनों धर, नारी हू तन लीनो।
भव भव में सुरपदवी पाई, ताके सुख अति भोगे॥
भव भव में गति नरकतनी धर, दुख पाये विधि योगे।
भव भव में तिर्यंच योनिधर, पायो दुख अति भारी।
भव भव में साधर्मीजनको, संग मिल्यो हितकारी॥३॥
भव भव में जिनपूजन कीनी, दान सुपात्रहिं दीनो।
भव भव में मैं समवसरण में देखो जिनगुण भीनो॥
एतो वस्तु मिली भव भव मे सम्यकगुण नहिं पायो।
न समाधियुत मरण कियो मैं, तातैं जग भरमायो॥४॥
काल अनादि भयो जग भ्रमतैं, सदा कुमरणहिं कीनों।
एकवार हूँ सम्यकयुत मैं, निज आतम नहिं चीनो॥
जो निज पर को ज्ञान होय तो, मरण समय दुख काई।
देह विनासी मैं निज भासी, ज्योंति स्वरूप सदाई॥५॥
विषय कषायन के वश होकर, देह आपनो जान्यो।
कर मिथ्या सरधान हिये बिच, आतम नाहि पिछान्यो॥
यों कलेश हियधार मरणकर, चारों गति भरमायो।
सम्यकदर्शन-ज्ञान-चरन ये, हिरदे में नहिं लायो॥६॥
अब या अरज करूँ प्रभु सुनिये, मरण समय यह मांगो।

रोगजनित पीड़ा मत होवे, अरु कषाय मत जागो ॥
ये मुझ मरण समय दुखदाता, इन हर साता कीजै ।
जो समाधियुत मरण होय मुझ, अरु मिथ्यामद छीजै ॥
यह तन सात कुधातमई है, देखत ही घिन आवै ।
चर्म लपेटी ऊपर सोहै भीतर विष्टा पावै ॥
अति दुर्गंध अपावनसों यह, मूरख प्रीति बढावै ।
देह विनासी, जिय अविनाशी नित्यस्वरूप कहावै ॥८॥
यह तन जीर्ण कुटीसम आतम, यातैं प्रीति न कीजै ।
तन नूमहल मिलै जब भाई, तब यामैं क्या छीजै ॥
मृत्यु होन से हानि कौन है, याको भय मत लावो ।
समता से जो देह तजोगे तो शुभतन तुम पावो ॥९॥
मृत्यु मित्र उपकारी तेरो, इस अवसर के मांहीं ।
जीरन तन से देत नयो यह, या सब काहू नाहीं ॥
या सेती इम मृत्यु समय पर, उत्सव अति ही कीजै ।
क्लेश भाव को त्याग सयाने समता भाव धरीजै ॥१०॥
जो तुम पूरब पुण्य किये हैं, तिनको फल सुखदाई ।
मृत्यु मित्र बिन कौन दिखावै स्वर्गसंपदा भाई ॥
रागरोष को छोड़ सयाने, सात व्यसन दुखदाई ।
अंतसमय में समता धारो, पर भव पंथ सहाई ॥११॥
कर्म महादुठ बैरी मेरो, तासेती दुख पावै ।
तन पिंजरमें बंद कियो मोहि यासों कौन छुड़ावै ॥
भूख तृषा दुख आदि अनेकन, इस ही तनमें गाढ़ै ।
मृत्युराज अब आय दयाकर, तनपिंजरसों काढै ॥१२॥
नाना वस्त्राभूषण मैंने, इस तनको पहराये ।
गंधसुगंधित अतर लगाये, षटरस असन कराये ॥
रात दिना मैं दास होयकर, सेवकरी तनकेरी ।

सो तन मेरे काम न आयो, भूल रह्यो निधि मेरी ॥१३॥
मृत्युरायको शरण पाय तन नूतन ऐसी पाऊँ।
जामैं सम्यक रतन तीन लहि आठों कर्म खपाऊँ॥
देखो तन सम और कृतघ्नी, नाहिं सु या जगमाहीं।
मृत्यु समय में येही परिजन, सबही हैं दुखदाई ॥१४॥
यह सब मोह बढ़ावनहारे, जियको दुर्गति दाता।
इनसे ममत निवारो जियरा जो चाहो सुख साता॥
मृत्युकल्पद्रुम पाय सयाने, मांगो इच्छा जेती।
समता धरकर मृत्यु करो तो पावो संपति तेती ॥१५॥
चौआराधन सहित प्राण तज, तो या पदवी पावो
हरि प्रतिहरि चक्री तीर्थेश्वर स्वर्गमुक्ति मे जावो॥
मृत्युकल्पद्रुम सम नहिं दाता तीनों लोक मझारैं।
ताको पाय कलेश करो मत, जन्म जवाहर हारे ॥१६॥
इस तन में क्या राचै जियरा, दिन-दिन जीरन हो है।
तेजकांति बल नित्य घटत है, या सम अथिर सु को है।
पांचों इन्द्री शिथिल भई अब स्वास शुद्ध नहिं आवै॥
तापर भी ममता नहिं छोड़ै समता उर नहिं लावै ॥१७॥
मृत्युराज उपकारी जियको तनसौं तोहि छुड़ावै।
नातर या तनबंदीगृहमे पर्यो पर्यो बिललावै॥
पुद्गलके परमाणु मिलकै पिंडरूपतन भासी।
याही मूरत मैं अमूरती ज्ञानजोति गुणखासी ॥१८॥
रोगशोक आदिक जो वेदन ते सब पुद्गल लारैं।
मैं तो चेतन व्याधि बिना नित हैं सो भाव हमारे॥
या तनसों इस क्षेत्रसंबंधी, कारन आन बन्यो है।
खान पान दे याको पोष्यो अब सम भाव ठन्यो है ॥१९॥
मिथ्या दर्शन आत्म ज्ञान बिन यह तन अपनो मान्यो।

इन्द्री भोग गिने सुख मैंने आपो नाहिं पिछान्यो ॥
तन विनशनतैं नाश जानि निज यह अयान दुखदाई।
कुटुम्ब आदि को अपनो जान्यो भूल अनादी छाई ॥२०॥
अब निज भेद जथारथ समझ्यो मैं हूं ज्योतिस्वरूपी।
उपजै विनसै सो यह पुद्गल जान्यो याको रूपी ॥
इष्ट अनिष्ट जेते सुख दुख हैं सो सब पुद्गल लागैं।
मैं जब अपनो रूप विचारो तब वे सब दुख भागैं ॥२१॥
बिन समता तनऽननंत धरे मैं तिनमें ये दुख पायो।
शस्त्रघाततैं ऽनन्त बार मर नाना योनि भ्रमायो ॥
बार अनंतहि अग्नि माहिं जर मूवो सुमति न लायो।
सिंह व्याघ्र अहिऽनन्त बार मुझ नाना दुःख दिखायो २२
बिन समाधि ये दुःखलहे मैं अब उर समता आई।
मृत्युराजको भय नहिं मानो देवै तन सुखदाई ॥
यातैं जब लग मृत्यु न आवै तवलग जपतप कीजै।
जपतप बिन इस जगके माहीं कोई भी नहिं सीजै ॥२३॥
स्वर्गसंपदा तपसों पावै तपसों कर्म नसावै।
तपही सों शिवकामिनिपति ह्वै यासों तप चित लावै ॥
अब मैं जानी समता बिन मुझ कोऊ नाहिं सहाई।
मात पिता सुत बांधव तिरिया ये सब हैं दुखदाई ॥२४॥
मृत्यु समयमें मोह करें ये तातैं आरत हो है।
आरततैं गति नीची पावै यों लख मोहतज्यो है ॥
और परिग्रह जेते जग में तिनसों प्रीति न कीजै।
परभवमें ये संग न चालैं नाहक आरत कीजै ॥२५॥
जे जे वस्तु लखत हैं ते पर तिनसों नेह निवारो।
परगति में ये साथ न चालैं, ऐसो भाव विचारो ॥
जो परभवमें संग चलैं तुझ, तिनसे प्रीत सु कीजै।

पञ्च पाप तज समता धारो, दान चार विधि कीजै ॥२६॥
दश लक्षणमय धर्म धरो उर, अनुकम्पा उर लाओ।
षोड़शकारण नित्य चिंतवो, द्वादश भावना भावो ॥
चारों परवी प्रोषध कीजे, अशन रातको त्यागो।
समता धर दुरभाव निवारो, संयमसों अनुरागो ॥२७॥
अंतसमयमें ये शुभ भावहि, होवैं आनि सहाई।
स्वर्ग मोक्षफल ताहि दिखावै, रिद्धि देहिं अधिकाई ॥
खोटे भाव सकल जिय त्यागो उरमें समता लाके।
जासेती गति चार दूरकर वसो मोक्षपुर जाके ॥२८॥
मन थिरता करके तुम चिंतो चौ आराधन भाई।
वे ही ताकों सुखकी दाता और हित कोऊ नाहीं ॥
आगे बहु मुनिराज भये हैं तिन गहि थिरता भारी।
बहु उपसर्ग सहै शुभ भावन आराधन उर धारी ॥२६॥
तिनमे कछुइक नाम कहूं मैं सुनो जिया चित लाके।
भावसहित अनुमोदे तासे दुर्गति होय न जाके ॥
अरु समता निज उरमें आवै भाव अधीरज जावे।
यो निशदिन जो उन मुनिवरको ध्यान हिये विच लावै ॥३०॥
धन्य धन्य सुकुमाल महामुनि कैसे धीरज धारी।
एक श्यालनी युगबच्चायुत पांव भख्यो दुख कारी ॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता आराधन चित धारी।
तो तुमरे जिय कौन दु:ख है मृत्यु महोत्सव बारी ॥३१॥
धन्य धन्य जु सुकौशल स्वामी व्याघ्रीने तन खायो।
तौ भी श्रीमुनि नेक डिगो नहिं आतमसों हित लायो ॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी।
तौ तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव बारी ॥३२॥
देखो गजमुनिके सिर ऊपर, विप्र अगिनि बहु बारी।

शीश जलै जिमि लकड़ी तनको तो भी नाहीं चिगारी ॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी।
तौ तुमरे ज़िय कौन दुःख है मृत्यु महोत्सव वारी ॥३३॥
सनत्कुमार मुनीके तनमें कुष्टवेदना व्यापी।
छिन्नभिन्न तन तासों हूवो, तब चिंत्यो गुण आपी ॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी।
तौ तुमरे जिय कौन दुःख है मृत्यु महोत्सव वारी ॥३४॥
श्रेणिकसुत गंगामें डूब्यो तब निज नाम चितार्यो।
धर सलेखना परिग्रह छोड्यो शुद्ध भाव उर धार्यो ॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
तौ तुमरे जिय कौन दुःख है ? मृत्युमहोत्सव वारी ॥३५॥
समंतभद्र मुनिवरके तनमें क्षुधावेदना आई।
तौ दुखमें मुनि नेक न डिगियो, चिंत्यो निजगुण भाई ॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी।
तौ तुमरे जिय कौन दुःख है ? मृत्युमहोत्सव वारी ॥३६॥
ललितघटादिक तीस दोय मुनि, कौशांबीतट जानो।
नदीमें मुनि बहकर डूबे सो दुख उन नहिं मानो ॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी।
हो तुमरे जिय कौन दुःख है ? मृत्युमहोत्सव वारी ॥३७॥
धर्मकोष मुनि चम्पानगरी, बाह्य ध्यान धर ठाढ़ो।
एक मासकी कर मर्यादा, तृषा दुःख सह गाढ़ो ॥
यह उपसर्ग सह्यो उर थिरता आराधन चित धारी।
तौ तुमरे जिय कौन दुःख है ? मृत्युमहोत्सव वारी ॥३८॥
श्रीदतमुनिको पूर्व जन्मको, वैरी देव सु आके।
विक्रिय कर दुख शीततनो सो सह्यो साधु मनलाके ॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन-चित-धारी।

तौ तुमरे जिय कौन दु:ख है ? मृत्युमहोत्सव वारी ॥३६॥
वृषभसेन मुनि उष्ण शिलापर, ध्यान धर्‌यो मन लाई ।
सूर्यघाम अरु उष्ण पवनकी, वेदन सहि अधिकाई ॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी ।
तौ तुमरे जिय कौन दु:ख है ? मृत्युमहोत्सव वारी ॥४०॥
अभयघोषमुनि काकंदीपुर, महा वेदना पाई ।
वैरी चंडने सब तन छेद्यो, दुख दीनो अधिकाई ॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी ।
तौ तुमरे जिय कौन दु:ख है ? मृत्युमहोत्सव वारी ॥४१॥
विद्युतचरने बहु दुख पायो, तो भी धीर न त्यागी ।
शुभभावन से प्राण तजे निज, धन्य और बडभागी ॥
यह उपसर्ग सह्‌यो धर थिरता आराधन चित धारी ।
तौ तुमरे जिय कौन दु:ख है ? मृत्युमहोत्सव वारी ॥४२॥
पुत्र चिलाती नामा मुनिको वैरीने तन घातो ।
मोटे मोटे कीट पड़े तन तापर निज गुण रातो ॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता आराधन चित धारी ।
तो तुमरे जिय कौन दु:ख है ? मृत्युमहोत्सव वारी ॥४३॥
दंडक नामा मुनिकी देही बाणन कर अति भेदी ।
तापर नेक डिगे नहिं वे मुनि कर्म महारिपु छेदी ।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता आराधन चित धारी ।
तौ तुमरे जिय कौन दु:ख है ? मृत्युमहोत्सव वारी ॥४४॥
अभिनंदन मुनि आदि पांचसौ घानी पेलि जु मारे ।
तौ भी श्रीमुनि समता धारी पूरब कर्म विचारे ॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता आराधन चितधारी ।
तौ तुमरे जिय कौन दु:ख है ? मृत्युमहोत्सव वारी ॥४५॥
चाणक मुनि गौघरके मांही मंद अगिनि परजाल्यो ।

श्रीगुरु उर समभाव धारके अपनो रूप सम्हाल्यो ॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता आराधन चित धारी।
तौ तुमरे जिय कौन दुःख है ? मृत्युमहोत्सव बारी ॥४६॥
सात शतक मुनिवरने पायो हथनापुर में जानो।
बलिब्राह्मणकृत घोर उपद्रव सो मुनिवर नहिं मानो ॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता आराधन चित धारी।
तौ तुमरे जिय कौन दुःख है ? मृत्युमहोत्सव बारी ॥४७॥
लोहमयी आभूषण गढके ताते कर पहराये।
पांचों पांडव मुनिके तनमें तो भी नाहिं चिगाये।
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता आराधन चित धारी।
तौ तुमरे जिय कौन दुःख है ? मृत्युमहोत्स बारी ॥४८॥
और अनेक भये इस जगमें समता रसके स्वादी।
वे ही हमको हों सुखदाता हरहैं टेव प्रमादी ॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरन तप ये आराधन चारों।
ये ही मोकों सुखके दाता इन्हैं सदा उर धारों ॥४९॥
यों समाधि उरमाहीं लावो अपनो हित जो चाहो।
तज ममता अरु आठों मदको जोतिस्वरूपी ध्यावो ॥
जो कोई नित करत पयानो ग्रामांतर के काजै।
सो भी शकुन विचारै नीके शुभके कारण साजै ॥५०॥
मातादिक अरु सर्व कुटुम्ब सौ नीको शकुन बनावे।
हलदी धनिया पुंगी अक्षत दूब दही फल लावै ॥
एक ग्रामके कारण एते करैं शुभाशुभ सारे।
जब परगतिको करत पयानो तउ नहिं सोचै प्यारे ॥५१॥
सर्व कुटुम्ब जब रोवन लागै तोहि रुलावै सारे।
ये अपशकुन करैं सुन तोकों तू यों क्यों न विचारे ॥
अब परगतिकी चालत बिरियां धर्मध्यान उर आनो।
चारों आराधन आराधो मोहतनो दुख हानो ॥५२॥

भगवान महावीर

(श्री महावीर क्षेत्र पर विराजमान मूर्ति का वास्तविक चित्र)

हूँ निःशल्य तजो सब दुविधा आतमराम सुध्यावो।
जय परगतिको करहु पयानो परम तत्त्व उर लावो॥
मोह जालको काट पियारे अपनो रूप विचारो।
मृत्यु मित्र उपकारी तेरो यों उर निश्चय धारो॥५३॥

दोहा—मृत्युमहोत्सव पाठको, पढ़ो सुनो बुधिवान।
सरधा धर नित सुख लहो, सूरचंद शिवथान॥
पंच उभय नव एक नभ, संवत् सो सुखदाय।
आश्विन श्यामा सप्तमी, कह्यो पाठ मन लाय॥

॥ समाप्त ॥

बारहवां अध्याय

श्री महावीर चेत्र नाटक

अंक—पहला

दृश्य—१

(स्थान—खुला मैदान)

(दो सैनिक आपस में बातें करते आ रहे हैं।)

चंद्रासिंह—वीरसेन! देख रहे हो सामने क्या है?

वीरसेन—हां, हां, विदेशियों के हृदयों को दहलादेने वाला यह वही विशाल भारतवर्ष है।

चंद्रा०—विदेशी आक्रमणकारी कुचल रहे हैं, लूट रहे हैं, हम नष्ट हो रहे हैं।

वीर०—चंद्रासिंह! ऐसा आश्चर्यजनक परिवर्तन होजाने का किसे अनुमान था। हमारी सारी आशायें मिट्टी में मिल गईं। कौन कह सकता था कि महाराणा संग्रामसिंह के सेनापतित्व में राजपूतों की विशाल सेना इस गतिको प्राप्त होगी।

चंद्रा०—यह दृश्य अबतक स्मृति में ताजा बना हुआ है। मुगलों से चारों तरफ से राणाजी घिर कर खडे हैं। शत्रुओं ने राजपूतों के सामने गायें करदीं, वे आगे न बढ सके और मुगल लगातार गोले बरसा रहे हैं। एक राजपूत सेना भी विश्वासघात कर अब उन्हीं की सेना पर धावा बोल रही थी। बहुत घायल होकर भी वे निराश न हुए।

वीर०—(सामने देखकर) यह सामने से कौन आता है ?

चंद्रा०—कोई घबराया हुआ मालूम होता है।

(भोलाराम अपनी कन्या सहित आता है।)

भोला—आह! भागते भागते प्राण निकले जाते हैं।

वीर०—तुम कौन हो ? और तुम पर ऐसी क्या आफत आपड़ी ?

भोला—क्या तुम्हें पता नहीं ? तुम्हारा जीवन, तुम्हारी संपत्ति, मां, तुम्हारी मां बहनों की लाज, पवित्र देव मूर्तियां, धर्म-कर्म सब कुछ तो तबाह होने को है और तुम इस तरह अनजान बने हो !

करुण क्रंदन दीन जन का श्रवण कर,
क्यों तुम्हारा हृदय फट जाता नहीं ?
धर्म पर आघात होते देखकर,
खून में क्यों जोश अब आता नहीं ?
दिन दहाड़े देवियों की लाजपर—
गाज पडती देखकर तुम मौन हो ?
तुम मनुज हो या कि तुम पाषाण हो,
क्या कहें, कैसे कहें, तुम कौन हो ?

वीर०—सत्य ही है। हम मनुष्य होकर भी मानव जाति के लिये कलंक स्वरूप हैं, हम मातृभूमि पर भार हैं।

भोला—युवक ! मेरे वचनों ने तुम्हें दुःख दिया है, तुमभी मेरी ही तरह दुःखी मालूम होते हो ।

चंद्रा०—हम आपका परिचय प्राप्त करना चाहते हैं ।

भोला—मैं तो एक साधारण व्यक्ति हूँ, देश की इस हालत से व्याकुल हूं । यह पुत्री है, इसे ससुराल से लाकर अपने घर जा रहा हूँ । रास्ते के दृश्यों ने मुझे दुखी बनाया है ।

चंद्रा०—क्या कोई विशेष बात देखी है ?

भोला—राहगीरों का जीवन सुरक्षित नहीं, देवमंदिरों पर आघात होते देखा और निरपराध नरनारियों को देव प्रतिमाओं की रक्षार्थ व धर्म की रक्षा के लिये बलिदान होते देखा । यह क्या कोई विशेष बात नहीं ?

चंद्रा०—हम तो सुनते हैं कि बाबर धर्म के संबंध में कोई रुकावट नहीं रखता ।

भोला—हो सकता है कि यह सत्य हो, किंतु उसके सभी साथी तो वैसे नहीं । वह तो प्रभुत्व स्थापित कर राज्य करने की इच्छा रखता है, उदारता उसमें होगी, लेकिन उसके साथी ही इस समय अत्याचारी बने हैं ।

वीर०—कब तक इन बातों को सहन किया जा सकता है, चाहे हमारे प्राणों का खतरा क्यों न आपड़े, किसी भी तरह स्वधर्म रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है । चंद्रासिंह ! तुम इन लोगों के साथ जाकर इनको सुरक्षित घर पहुँचावो और मैं दूसरी ओर असहाय लोगों की यथासाध्य सहायता का प्रबंध करता हूं ।

भोला—भगवान करे तुम्हारे मनोरथ सफल हों । हमारे लिये आप कष्ट उठाने की आवश्यकता अनुभव करते हैं, यह आप की महानता है और आपका यह उपकार मैं—हमेशा

मानता रहूँगा।

चंद्रा०—वीरसेन! मैं जारहा हूं। तुम यथासंभव शीघ्र मिलने का प्रयत्न करना, मैं घर पर ही मिलूंगा।

वीर—अवश्य।

(वीरसेन का एक ओर और चंद्रासिंह का भोला व उसकी कन्या सहित दूसरी ओर प्रस्थान)

दृश्य—२

स्थान–घर का एक भाग

भगवान की प्रतिमा के सामने वैठी हुई भोला की स्त्री गारहीहै)

प्रभो! सेवा में कुछ उपहार लेकर आज आई हूँ।
हृदय के भाव माला में पिरोकर आज लाई हूँ॥
मैं अबला दीन वेचारी, तुम्हीं आधार हो जिसके।
सुनाने को तुम्हें अपनी कहानी आज आई हूँ॥
भरे हैं लोचनों के सिंधु में अनमोल जो मोती।
उन्हीं को चरण कमलों में चढ़ाने आज लाई हूँ॥

(भोलाराम का पुत्री सहित प्रवेश)

स्त्री—रूपा! बेटी तू आगई।

रूपा—माँ! ....(दोनों गले मिलते हैं)

भोला—रूपा की माँ! क्या तुम अभी तक पूजा पाठ ही कर रही हो?

रूपा की माँ—करती भी क्या? आप लोगों के न होने से मन भी तो नहीं लगता। अब भगवान की कृपा से आप लोग सकुशल आ पहुँचे और देखो तो भगवान का कैसा मोहक रूप है?

है कैसा रूप अनूप दिव्य, शोभा मन हरने वाली है।
छबि कैसी सुन्दर पावन है, मन मोहक और निराली है॥

भोला—देवी! तुम्हारी भावभक्ति देखकर मुझे हर्ष होता है।

स्त्री—स्वामी ! यह तो प्राणी मात्र का कर्त्तव्य है कि अपने उपास्य देव का सदैव स्मरण करे।

जिस घर में भाव भक्ति की, शुचि पावन धार नहीं बहती।
रहती है सदा अशान्ति वहां शोभा संपदा नहीं रहती ॥

(नैपथ्य से)—रूपा ! रूपा !

भोला—कौन ? चंद्रासिंहजी ! आ जाइये न !

स्त्री—यह चंद्रासिंहजी कौन हैं ?

भोला—हमारे नये मित्र और सहायक हैं।

(चद्रासिंहजी का प्रवेश)

रूपा—भैया ! यह क्या ? तुम्हारे वस्त्र तो खून में रंग गये हैं।

भोला—ज्ञात होता है कहीं किसी से भंयकर मुठभेड हुई है।

चद्रा०—हां, मैं कई सैनिकों के बीच घिर गया था। खैर, यह बातें तो होती रहेंगी। पहिले अपनी रक्षा का उपाय शीघ्र ही कर लेना उचित है।

रूपा की मां—क्यों ? क्या मामला है ?

चन्द्रा०—विजय के मद में मदमाते सैनिक लूटमार करते फिर रहे हैं, सब तरफ अशांति और अव्यवस्था फैली है। शत्रु यहां से कुछ ही दूरी पर हैं और इधर ही आने वाले हैं। वीरसिंह उन्हें रोकेंगे अवश्य, किंतु उनकी शक्ति के विरुद्ध सफल होना दुर्लभ है।

रूपा की मां—तो अब क्या करना चाहिये ?

चन्द्रा०—इस स्थान को कुछ समय के लिये छोड़ देना ही उचित है जिससे प्राणों की रक्षा तो हो जावेगी।

भोला—चन्द्रासिंह ! तुम रूपा और रूपाकी मां को लेकर समीपवर्ती गांव में चले जाओ। वहां मेरे भाई का घर है। इन दोनों को वहां छोड़ देना। वहां इनकी रक्षा अवश्य हो

सकेगी। मैं यहां रहकर भगवान की मूर्ति की रक्षा का उपाय करता हूँ।

चन्द्रा०—नहीं, हम आपको यहां अकेला नहीं छोड़ सकते। पहले मूर्त्ति का प्रबन्ध करके ही हम लोग साथ साथ ही चलेंगे। आपने मूर्ति की रक्षा का क्या उपाय सोचा है।

भोला—मेरा विचार तो यह है कि इस प्रतिमा को यहीं पृथ्वी में दबा दिया जावे और फिर जब उपद्रव शान्त हो जावें तो इसको फिर निकाल कर स्थापित कर दिया जावे।

रूपा की मां—यह तो भगवान का महान अपमान है।

भोला—किन्तु इसके अतिरिक्त अन्य उपाय भी क्या है। मूर्ति खण्डित होने से तो यही अच्छा है कि इस प्रकार उसकी रक्षा हो जाये।

रूपा की मां—जैसी इच्छा।

चन्द्रा०—काम शुरू करिये। विलम्ब करने से अपने प्राणों की रक्षा भी न हो सकेगी।

भोला—आइये! हम दोनों ही इस कार्य को पूरा करें।

(भोला और चंद्रासिंह जमीन खोदकर मूर्ति को मिट्टी में दबाने का कार्य करते हैं।

रूपा की मां—आह! आज इस मूर्ति की यह दशा। क्या यही दृश्य देखने के लिये हमारा जीवन अब तक बना हुआ है? नहीं, नहीं; मूर्ति को मिट्टी में न दबाओ, भगवान का निरादर न करो।

(मूर्ति की ओर दौड़ती है)

भोला—नादान न बनो रूपा की मां! हम लोगों के बलिदान से भी इस प्रतिमा की रक्षा न हो सकेगी। शोर न मचाओ और शांति से इस कार्य को पूरा हो जाने दो।

रूपा की मां—आह ! भगवान !

रूपा—मां, अधीर न हो, समय देखकर कार्य करना चाहिये। हृदय पर पत्थर रखकर यह सब कुछ सहन करने की आवश्यकता है। विधर्मियों के हाथों से कलंकित होने की अपेक्षा यही उपाय अधिक श्रेष्ठ है।

सुनता है कौन जग में, दुख से भरी कहानी।
सब जान बूझ कर भी, अनजान हो रहे हैं॥
अपराध कुछ हुआ है, हम से कि जिसके कारण।
हम से विमुख हमारे, भगवान हो रहे हैं॥

(बाहर कोलाहल सुनाई देता है मारो, 'काटो' 'लूटलो' की आवाजें आती हैं)

रूपा—हैं ! यह शोर कैसा ? मालूम होता है कि लुटेरे यहां भी आ पहुँचे। काका ! अब क्या होगा ?

चन्द्रा०—जो भाग्य में लिखा होगा। हमारा कार्य तो समाप्त हो चुका। अब यहां से फौरन भाग चलना चाहिए।

रूपा किन्तु भाग कर कहां जायेंगे ? बाहर तो मार काट मच रही है। (द्वार खटखटाने का शब्द होता है)

(नैपथ्य से)—अगर दरवाजा न खुले तो तोड़ डालो।

„ और आग ही क्यों न लगा दो।

„ हां ठीक है। ठीक है।

रूपा—ओह ! भगवान !

(बाहर से लुटेरे आग लगाते हैं, आग तेजी से बढ़ने लगती है)

चन्द्रा०—ओह। आग तो बढ़ती आ रही है। लुटेरों ने चारों तरफ आग लगादी है। बचने की अब कोई सूरत नजर नहीं आती। शायद इसी तरह यहां बिना मौत मरना होगा।

रूपा—हे भगवन ! हे अनाथों के नाथ ! क्या यही तुम्हारा न्याय

है ? क्या इसी भरोसे तुम भक्त-वत्सल और दया-सिन्धु के नाम से पुकारे जाते हो ? रक्षा कीजिए, उद्धार कीजिए। इस विपदा से भगवान।

(बाहर फिर कोलाहल सुनाई देता है दौड़ो, दौडो,............की आवाजें आती हैं)

चन्द्रा०—यह अ वाजें तो लुटेरों की मालूम नहीं होती ?

वीर—(आग में घुसता हुआ अन्दर आ जाता है) ओह ! यहां तो कई प्राणी हैं ?

चन्द्रा० —कौन ? वीरसेन !

वीर०—चन्द्रासिंह ! तुम भी यहीं हो और इस प्रकार कायर की मौत मर रहे हो ? लज्जा नहीं आती तुम्हें ! चलो, जल्दी निकलो और इन लोगों को भी निकालो। बाहर मेरे साथी खडे हैं। घबराने की कोई बात नहीं, लुटेरे भाग चुके हैं।

रूपा—भगवान ने हमारी प्रार्थना सुनली।

(सब लोग आग की लपटों में होते हुये तेजी से निकल जाते हैं)

दृश्य—३

(स्थान—दयाराम के घर का एक भाग)

(दयाराम चमार गाते २ घर का काम करता जाता है)

गायन

पतितों को पार उतारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
भक्तों को नाथ उबारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
मैंने वक्त यूंही गवां दिया तेरा नाम भी न कभी लिया।

मेरे दोष सारे विसारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
यह दास नाथ अनाथ है, लज्जा तुम्हारे ही हाथ है।
यह अधम है इसको उबारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो।

(दयाराम की स्त्री सुखिया का प्रवेश)

सुखिया—हां, हां, हम पतित हैं, नीच हैं। जब हम ही अपने को ऐसा कहते हैं, तो बेचारे दुनियां वाले क्यों न कहें, वे हमसे घृणा क्यों न करें? अवश्य ही दुतकारेंगे, फटकारेंगे भी।

दयाराम—अरे, रे, क्यों? क्या हुआ? किसने क्या कह सुना दिया? कुछ बताओ तो।

सुखिया—बात क्या होती? चौराहे वाले मंदिर मे आरती देखने के लिये अपना बालू चला गया, लोगों ने बुरी तरह फटकार कर बाहर निकाल दिया, कहने लगे कि चमार का लड़का भीतर कैसे आगया।

दयाराम—बस, इतनी सी बात है। शांति रखो, सुनो, जब हमें किसी बड़े आदमी से मिलना होता है तो साफ सुथरे कपड़े पहिन कर सावधानी पूर्वक जाते हैं, तो क्या भगवान के दरबार मे जाते समय इन बातों का ध्यान नहीं रखना चाहिए? इस पर भी यदि वे लोग हमसे घृणा करें तो हम दोषी नहीं। यदि हम अपने धर्म और सत्य पर रहें तो भगवान अवश्य हमारी सहायता करेंगे।

सुखिया—लेकिन भगवान भी हमसे उदासीन हैं।

दयाराम—नहीं, वह समानदर्शी हैं, उनके लिये छोटे बड़े सब बराबर हैं। वह ऊंचनीच मे भेद नहीं करते।

सुखिया—तब वह हमे दर्शनों से वंचित क्यों रखता है?

दयाराम—हमारे भाव शुद्ध और भावनायें सच्ची होनी चाहिये। हम अपनी सच्ची श्रद्धा व भक्ति से भगवान को अपने वश में कर सकते हैं।

शुचि प्रेम सहित होता प्रभु का गान वहीं प्रभु रहते हैं।
भगवान भक्त के वश में हैं यह शास्त्र हमारे कहते हैं।

बालू—(आकर) दादा! दादा!

दयाराम—हां, बेटा! क्या बात है?

बालू—गाय ने तो आज भी दूध नहीं दिया। उसके थनों में बिलकुल दूध ही नहीं है।

सुखिया—यह क्या बात है कि हमारी गाय का ही दूध कोई चुरा लेता है। कल भी ऐसा ही हुआ था, परसों भी ऐसा ही हुआ। रोजाना ही ऐसा हुआ करेगा तो कैसे काम चलेगा।

दयाराम—हां, है तो आश्चर्य की ही बात। इसका पता लगाना आवश्यक है। कम से कम चोर का पता तो लगाना चाहिये। इस प्रकार चोरी करने से क्या लाभ? यदि दूध की इच्छा ही है तो मांग कर ले सकता है।

बालू—मैंने तीन दिन मे दूध ही नहीं पिया। आज तो मैं जरूर पिऊंगा।

सुखिया—पियेगा कहां से जब गाय ने दूध ही नहीं दिया।

दयाराम—तेरे लिये दूध का प्रबन्ध मैं करता हूँ। परेशान मत हो।

सुखिया—दूध का प्रबन्ध हो जावेगा किन्तु कल तुम स्वयम् गाय की निगरानी करके देखना कि क्या बात है और कौन ऐसा चोर है जो हमारी गाय का दूध चुरा लेता है।

दयाराम—हां कल अवश्य ऐसा ही करूंगा। चलो बेटा बालू!

(बालू के साथ जाना)

मुखिया—हमारे शत्रुओं की संख्या बढ़ती ही जाती है। लोग हमारे लिये गाय का दूध भी छोड़ना नहीं चाहते। भगवान! हम पर तुम्हारी ऐसी कोप-दृष्टि क्यों है? हमने ही तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो हम पर नित्य नये संकट ढाहे जारहे हैं? क्या तुम्हारे हृदय में भी हमारे प्रति हमें दलित समझकर घृणा के भाव उत्पन्न होने लगे हैं? (पटाक्षेप)

दृश्य—४

(स्थान—जंगल)

(दयाराम की गाय कुछ दूर चर रही है और वह स्वयं एक ओर खड़ा हुआ है।)

दयाराम—अहा! कैसा सुहावना समय है। दिन समाप्त होने को है। सूर्य देवता दिन भर अपना कर्त्तव्य पालन कर अस्ताचल की ओर बढ़े जाते हैं। पश्चिम का आकाश भी सिंदूर रंग में खिल उठा है, पक्षीगण अपने नीड़ों की ओर विदाई गीत गाते चले जारहे हैं। अंधेरा छाया चला जा रहा है।

मुखिया—(आकर) धन्य महाराज! गाय की रखवाली इसी प्रकार होती है कि गाय कहीं है और आप स्वयं आनंद में मस्त बने शोभा ही निहार रहे हैं। मैं तो जानती हूँ न, कि इनसे रखवाली हो चुकी।

दयाराम—अरे सचमुच मुझे तो गाय का ध्यान ही नहीं रहा। वैसे तो मैं काफी सावधान हूँ। हाथ में मेरे डंडा है और मैं यहीं बैठा हूँ। क्या चोर का इतना साहस हो सकता है कि ऐसी दशा में वह यहां आ जाये और हमारे सामने ही चोरी करले।

सुखिया—आप तो यहां बैठे हुये हैं और गाय का पता ही नहीं है। बताइये गाय कहां है?

दयाराम—यहीं तो है?

सुखिया—कहां?

दयाराम—अभी तो यहीं थी। जरा देखो तो यहीं कहीं होगी।

सुखिया—यहीं कहीं क्या खाक होगी। यह सब आपकी लापरवाही का नतीजा है। क्या इसी तरह रखवाली हुआ करती है? जरूर कोई चोर गाय को कहीं ले गया है और उसका दूध निकाल रहा है।

दयाराम—घबड़ाने की कोई बात नहीं है, अभी पता लग जावेगा। तुम उस तरफ जाकर देखो, मैं इस तरफ देखता हूँ? वह अवश्य ही यहीं कहीं आस पास ही होगी। वह कहीं दूर नहीं जा सकती। ठहरो··· ठहरो जरा यहां आओ! उस झाड़ी की तरफ देखो। वह वहां खड़ी है। किन्तु यह क्या···उसके थनों से तो दूध बहरहा है।

(सुखिया—जाते जाते रुक जाती है)

सुखिया—हां सचमुच गाय के थनों से दूध बह रहा है।

दयाराम—वहां तो कोई नजर भी नहीं आता। यह कोई जादू तो नहीं है? हम कोई स्वप्न तो नहीं देख रहे हैं? ऐसा तो कभी नहीं देखा और न पहले कभी सुना ही है कि गाय अपने आप दूध बहा कर थनों को खाली करदे।

सुखिया—मुझे तो कुछ दाल में काला नज़र आता है।

दयाराम—क्या मतलब?

सुखिया—यहां किसी अज्ञात शक्ति का गुप्त निवास मालूम होता

है। क्योंकि बिना किसी प्रभावशाली शक्ति के किसी का यह काम नहीं हो सकता।

दयाराम—तुम्हारा मतलब प्रेतात्माओं से है?

सुखिया—नहीं, प्रेतात्माओं में मेरा विश्वास नहीं है। अवश्य अज्ञात शक्ति से मेरा अभिप्राय किसी दैवी शक्ति से है।

दयाराम—हां, तुम्हारा अनुमान सत्य हो सकता है। यह किसी दैवी शक्ति का प्रभाव है जिसने हमे तीन दिन से परेशान कर रक्खा है।

सुखिया—यह टीला जहां गाय खड़ी है देव का टीला ही तो कहलाता है और कहा जाता है कि यहां किसी देवता का प्रभाव है।

दयाराम—क्या सच! यह स्थान देव का टीला है!

सुखिया—हां, हां, सत्य ही तो है। यह इसी नाम से प्रसिद्ध है।

दयाराम—तब तो निश्चय ही हमारे चोर का पता लग चुका है। अवश्य ही किसी दैवी शक्ति ने ही हमारी गाय के दूध की चोरी की है। किन्तु हम अनुमान से ही विश्वास कैसे करलें जब तक कि हम इस को प्रत्यक्ष न देख लें! हमें प्रयत्न करके इस टीले का रहस्य मालूम करना चाहिए ताकि हृदय को पूर्ण सन्तोष हो जाये।

सुखिया—यह किस प्रकार होगा?

दयाराम—हम इस टीले को खोदकर देखेंगे कि इसमें किस दैवी शक्ति का निवास है। लाओ, एक फावड़ा लाओ, मैं अभी खोदना शुरू करता हूँ।

सुखिया—अभी लाती हूँ।

दयाराम—आज एक महान रहस्य का उद्घाटन होने वाला है। हृदय मे कुछ विचित्र भाव उत्पन्न हो रहे हैं। ऐसा क्यों

है, क्या कोई नवीन बात प्रकट होने वाली है ?

सुखिया—(आकर) यह लीजिये फावडा तो मैं ले आई। अब टीले को खोदने काम आपका है।

दयाराम—हां, यह कार्य तो मैं स्वयम् ही करूंगा। चलो, टीले के पास ही तुम भी खडी रहना।

सुखिया—हां, हां, चलिये।

(दोनों टीले के पास जाते हैं दयाराम टीला खोदता है)

दयाराम—(खोदते खोदते कुछ समय बाद) ओह! इस टीले की तो थाह मालूम नहीं होती। देखो, टीला कितना खोद लिया गया, किंतु दूध की धारा अभी तक वैसी ही चमक रही है।

सुखिया—आप पसीने में नहा गये हैं इसलिये अब रहने दीजिये।

दयाराम—हां, पसीने में तो अवश्य नहा रहा हूँ किंतु शरीर में पहले जैसी ही स्फूर्ति बनी हुई है। थकान अवश्य मालूम होती है किन्तु मन में वैसी ही उमंग मौजूद है। यह दूध की धारा जहां तक जायेगी वहां तक खोदना आवश्यक है। अधूरा कार्य छोडने से क्या लाभ! जब कार्य हाथ में लिया है तो पूर्ण करके ही हटना उचित है।

सुखिया—यह तो सत्य है किन्तु दिन ढल चुका है और रात्रि का अन्धकार बढता जा रहा है। मेरी राय तो यही है कि इस समय इस कार्य को यहीं छोड दिया जावे और कल प्रातः काल होते ही फिर इस कार्य को आरम्भ करके कल ही समाप्त कर दिया जावे।

दयाराम—यदि तुम्हारी यही हठ है तो जैसा तुम कहती हो वही

किया जावेगा। इस कार्य को अभी यहीं छोड़कर कल भोर होते ही इसे पूर्ण करने की भरसक चेष्टा करेंगे। जहां तक होगा कल अवश्य ही इस कार्य को पूरा कर दिया जावेगा।

सुखिया—चलिये तो अब घर चलें। समय काफी होगया है।

दयाराम—चलो।

दृश्य—५

[स्थान—जंगल (देव का टीला)]

(दयाराम हाथ मे फावड़ा लिये आता है)

दयाराम—अहा! वह कौन था? किसके मधुर वचन कानों में अमृत घोल रहे थे? किसने मुझे मोह निद्रा से जगाया। वह अवश्य कोई अदृश्य शक्ति थी जो मुझे अपने अधूरे काम को पूर्ण करने के लिये प्रेरणा देती थी। मुझे अब जल्दी ही भगवान के दर्शन प्राप्त होंगे।

(टीले के पास पहुंच कर खोदने का काम शुरू करता है।)

सुखिया—[आकर] मैं खाना लेकर आगई हूँ। जब आप थक जावें और भूख लगे तो खा लेना।

दयाराम—अब तो मैं कार्य पूर्ण करने पर ही विश्राम करूंगा और खाना भी तभी खाऊंगा।

सुखिया—क्या जब तक कार्य पूरा न होगा आप जलपान भी न करेंगे?

दयाराम—हां, मैंने ऐसा ही निश्चय किया है। मेरा ध्यान केवल इस टीले पर ही केन्द्रित है और मेरा मन इसी ओर लगा हुआ है। जब तक इस दूध की धारा का थाह न मिल जावे तब तक मेरे हृदय को शान्ति प्राप्त न होगी।

सुखिया—आपने यह कठोर ही प्रण किया है। इस काम का क्या पता कब तक समाप्त हो। यह तो भूमि है, इसकी थाह मिलना साधारण बात नहीं।

दयाराम—कुछ भी हो, मैं जो कुछ निश्चय कर चुका हूँ वह अटल है।

निभाया जिसने है अब तक, वही आगे निभायेगा।
वही भगवान निश्चय, लाज भक्तों की बचायेगा॥

सुखिया—यदि आपका यही निश्चय है तो भगवान अवश्य आपकी मनोकामना पूर्ण करेंगे। सच्ची लगन से जो भी कार्य किया जावे वह अवश्य पूर्ण होता है।

(दयाराम फिर खोदने का कार्य करने लग जाता है)

दयाराम—भगवान करे ऐसा ही हो।

सुखिया—भगवान ! भक्त की हठ देख रहे हो ? उसके प्रण की लाज तुम्हारे हाथ है। तुम्हारी ही प्रेरणा से यह सब कुछ हो रहा है और तुम्हारी ही कृपा से यह कार्य पूर्ण होगा।

गाना—

भगवान भक्त की लाज न जाने पावे।
मर्यादा आपकी भी न कहीं मिट जावे॥
सुनते हैं भक्तों पर पड़ती जब विपदा।
आते हो करते हो तुम उनकी रक्षा॥
गुण शास्त्र आदि ने यही आपके गाये।
भगवान भक्त की लाज न जाने पावे॥
इस बेर सुनी नहिं विनती अगर हमारी।
संसार हंसेगा, होगी हंसी तुम्हारी॥

बल हीन तुम्हारा भक्त कहीं न कहावे।
भगवान भक्त की लाज न जाने पावे॥

(दयाराम टीला खोद रहा है उसका हाथ अचानक रुक जाता है)

दयाराम—हैं ! यह क्या हुआ ! मेरा हाथ क्यों रुक गया !

सुखिया—क्या बात है !

दयाराम—भूमि सख्त हो गई है। हाथ आगे नहीं बढता।

सुखिया—कोई पत्थर आगया।

(उसी समय आकाशवाणी होती है)

आकाशवाणी—सावधान ! इस टीले में भगवान महावीर की प्रतिमा है। इसको साधारण पत्थर न समझना। सावधानी से मिट्टी खोदो।

दयाराम—हैं ! यह क्या सुनाई दिया ! यह किसने कहा कि इस टीले मे महावीर भगवान की प्रतिमा है।

(चारों ओर देखता है)

सुखिया—(चारों ओर चकित होकर देखती है) यहां तो कोई भी नजर नहीं आता। मनुष्य क्या यहां तो कोई पशु पक्षी भी इस समय दिखाई नहीं देता।

दयाराम—यह आकाशवाणी है जिसने हमे सावधान किया है। यह रहस्य किसी मनुष्य को क्या मालूम होता है !

सुखिया—तब तो हमारा कार्य पूर्ण हो गया।

(दयाराम बड़ी सावधानी से मिट्टी खोदता है)

सुखिया—तुम फावडे से मिट्टी हटाओ और मैं हाथों से हटाकर साफ करती हूँ। फावड़ा जरा धीरे-धीरे ही चलना।

(दोनों मिलकर मिट्टी हटाते हैं)

दयाराम—तुम यहां अपना समय नष्ट न करो। तुम गांव में जाकर

लोगों को यह शुभ सम्वाद सुनादो। गांव वाले भी तो दर्शन करलें। जब तक सब लोग आवेंगे मैं मिट्टी हटा कर प्रतिमा को निकाल लूंगा। जाओ, जाओ, देर न करो।

सुखिया—अच्छा जाती हूं और गांव वालों को यह शुभ समाचार सुनाती हूँ। [जाती है]

(दयाराम फिर खोदने लगा (खोदते खोदते प्रतिमा का ऊपरी भाग स्पष्ट दिखाई देता है। दयाराम मिट्टी हटाकर उसे अधिक स्पष्ट कर देता है)

दयाराम—भगवान महावीर की जय !

सुखिया—(गांव वालों के साथ आकर) जय, जय, महावीर भगवान की जय।

ग्रामीण—(सब मिलकर) भगवान महावीर की जय।

दयाराम—आओ भाई आओ ! सब मिलकर भगवान की प्रतिमा के दर्शन करो।

(सब लोग प्रतिमा के पास जाकर दर्शन करते हैं और जयकार करते हैं)

एक ग्रामीण—बडी विशाल प्रतिमा है।

दूसरा—कैसी भव्य झांकी है।

तीसरा—कैसी सुन्दर और चित्ताकर्षक मूर्ति है।

सुखिया—मालूम होता है कि यह प्रतिमा बहुत प्राचीन है और किसी कारण से जमीन में किसी समय दब गई होगी।

एक ग्रामीण—हां, भूचाल आदि के अवसर पर भी ऐसा अवसर होता है।

एक वृद्ध—ऐसा भी सुना गया है कि बहुत वर्षों पहले यहां जिस स्थान पर यह जंगल है वहां बस्ती थी और विदेशियों

भगवान महावीर की
मूर्त्ति प्रकट होने का
एक दृश्य

के आक्रमण के समय जब देवालय आदि भ्रष्ट किये जा रहे थे उस समय किसी व्यक्ति ने प्रतिमा की रक्षार्थ उसे पृथ्वी में गाड दी और इस प्रकार वह नष्ट होने से बच गई। अब तक यह केवल किंवदन्ती ही थी और निश्चित स्थान का भी पता न था; किन्तु अब खोज हो जाने से यह बात प्रत्यक्ष सामने आ गई है और यथार्थ हो गई है।

दयाराम—यह तो मैंने अपने चोर का पता लगाया है। रोजाना मेरी गाय का दूध चुराने वाले यही हैं।

(सब हंसते हैं)

वृद्ध—तुम धन्य हो दयाराम कि तुम्हारी गाय का दूध भगवान ने स्वयम् ही इस प्रकार अपना लिया। ऐसे बड़भागी तो संसार में होते ही कहां है ? तुम वास्तव में भगवान के सच्चे भक्त हो जिसके कारण हमें भी भगवान के दर्शन हो गये और आज यह शुभ दिन देखने में आवा।

दयाराम—मैं किस योग्य हूँ ? यह तो भगवान की दया है। मैं तो भगवान के चरणों का एक तुच्छ सेवक हूँ।

वृद्ध—यह तुम्हारी महानता है। अब इस प्रतिमा को यहां से घर ले चलना चाहिये। वहीं नित्य इसके दर्शन किया करेंगे।

सब—हां यही ठीक है।

वृद्ध—सब मिलकर प्रतिमा को उठाओ।

१ ग्रामीण-चलो सब मिलकर उठायें। यह कौनसा बड़ा काम है ?

सब—चलो, उठाओ।

दयाराम—भगवान ! क्या यहाँ से चले जावेंगे ?

(सब मिलकर प्रतिमा को उठाते हैं किन्तु प्रतिमा जरा भी नहीं हिलती)

१ ग्रामीण—ओह ! पसीने आगये । थक कर चूर होगये किन्तु, प्रतिमा टस से मस न हुई । कितनी भारी प्रतिमा है ।

वृद्ध—देव चमत्कारी है और कदाचित् इस समय यहां से नहीं हटना चाहते । इसलिये मेरी राय में इन्हें यहीं रहने दिया जाये ।

दयाराम—प्रतिमा की रक्षार्थ मैं यही झोंपड़ी डालकर रहूँगा और घी का दीपक जलाऊँगा, दूध चढ़ाऊँगा और अपनी बुद्धि के अनुसार पूजन करता रहूँगा ।

सुखिया—हा मेरी भी यहीं इच्छा है । मैं दूध घी लाती हूँ और आप लोग झोंपड़ी बनाने का यत्न करिये ।

(जाती है)

वृद्ध—झोंपड़ी बनाने का काम आज ही शुरू कर देना चाहिये ।

दयाराम—हां ऐसा ही होगा और जब तक झोंपड़ी तैयार होगी मैं हर समय यही रहूँगा और रात को भी यहीं विश्राम करूंगा ।

वृद्ध—हां प्रतिमा की रक्षा होना आवश्यक है ।

सुखिया—(आकर) मैं पूजन का सब सामान ले आई हूँ ।

वृद्धा—बस अब दूध चढ़ाओ और घी का दीपक जलादो

(प्रतिमा का सब यथाविधि पूजन करते है, दूध चढ़ाते, घी का दीपक जलाते हैं । उसी समय आकाश से पुष्प वृष्टि होती है । धीरे-धीरे यवनिका पात होता है)

सब—जय जय भगवान महावीर की जय ।

ड्राप—सीन

अङ्क—दूसरा

दृश्य—१

(स्थान—दयाराम की झोंपड़ी)

(कई व्यक्ति बैठे हुये हैं। भगवान महावीर की मूर्ति के चमत्कारों की चर्चा कर रहे हैं, सब अपने अपने कष्ट निवारण की बात और प्रभु भक्ति का महात्म्य एक दूसरे को बता रहे हैं।)

दयाराम—प्रभु का चमत्कार ऐसा ही है। यदि शुद्ध हृदय से भगवान का ध्यान किया जाये तो कोई कारण नहीं कि वह दीन दुखियों की टेर पर ध्यान न दे।

२ व्यक्ति—अच्छा, भाइयो, अब चलना चाहिये।

१ व्यक्ति—हां प्रभु के दर्शन करने थे सो तो कर लिये अब चलें।

(सब चले जाते हैं)

(मार्ग में जाते हुये आपस में बातचीत करने लगते हैं)

पहला व्यक्ति—अब तो जङ्गल में मङ्गल रहने लगा है।

दूसरा—हां, जब से भगवान की प्रतिमा निकली है यात्री लोग आते ही रहते हैं और गांव के ही नहीं, बाहर से भी आने जाने वाले भगवान के दर्शन किये बिना नहीं जाते।

तीसरा—इस स्थान का महत्व बढ़ता ही जाता है और लोगों का विश्वास भी दृढ़ होता जा रहा है।

चौथा—भाई चमत्कार को नमस्कार है।

पहला—हाँ यही बात है।

दूसरा—अब तो यहां कोई अच्छा स्थान बन जाये तो ठीक है क्योंकि झोंपड़ी में भगवान की प्रतिमा का रहना ठीक नहीं मालूम होता।

तीसरा—यह कोई साधारण बात है ! इसमें काफी धन की आवश्यकता है। इस गांव में कौन ऐसा है जो इतना पैसा खर्च कर सके।

चौथा—क्या चन्दा करके यह काम नहीं हो सकता ?

दूसरा—चन्दा इतना नहीं हो सकता कि इतना बडा काम हो जावे।

तीसरा—यह काम तो धनी मानी सेठ लोगों के हैं। उन्हीं लोगों की कृपा से इस स्थान की शोभा बढ़ सकती है।

दूसरा—बेचारा दयाराम जहा तक हो सकता है काफी करता है।

तीसरा—हां, वह तो स्वयम मेहनत मजदूरी करके जो कुछ लाता है सब भगवान की सेवा मे अर्पित कर देता है।

पहला—चमार होते हुए भी उसके विचार कितने ऊँचे और उत्तम हैं। मुझे गांव मे उसके समान एक भी व्यक्ति नजर नहीं आता।

दूसरा—जैसा वह है वैसी ही उसकी स्त्री भी है। दोनों ही स्त्री पुरुष भगवान के अनन्य भक्त हैं।

तीसरा—यह सामने कौन आ रहा है ?

चौथा—कोई बैलगाड़ी आरही है। मालूम होता है गाड़ी मे स्त्रियां हैं और पुरुष पैदल चल रहे हैं।

तीसरा—होंगे कोई, हमें क्या ? यह तो चलता रहता है। लोग आते जाते ही रहते हैं। नजर तो ऐसा आता है कि कोई परदेशी है।

(सेठ अमरचन्द व उनके नौकर का आना)

सेठ—क्यों भाई ? क्या तुम बता सकते हो कि चादनपुर गांव यही है और यहीं भगवान की प्रतिमा पृथ्वी से निकली है?

दूसरा पथिक—जी हां, यही चांदनपुर गॉव कहलाता है और भगवान की प्रतिमा इसी गांव में एक टीले के नीचे निकली है। क्या आप लोग भगवान के दर्शनार्थ आये हैं ?

सेठ—हां भाई ! हमने भगवान की महिमा सुनी है इसलिये हम सपरिवार भगवान के दर्शनार्थ आये हैं। हमारे साथ जो बैलगाड़ी आ रही है उसमें मेरी स्त्री है।

तीसरा—क्या हम आपका परिचय जान सकते हैं ?

सेठ—हां क्यों नहीं ? हम बसवा के निवासी हैं और मेरा नाम अमरचन्द है।

दूसरा पथिक—आप परदेशी हैं और हमारे गांव में आये हैं इसलिये हमारे अतिथि हैं। चलिये हम आपको उस स्थान पर ले चलते हैं जहां भगवान की प्रतिमा निकली है किन्तु वहां चलने से पूर्व हमारा आतिथ्य स्वीकार करना होगा।

सेठ—कष्ट की आवश्यकता नहीं है।

दूसरा पथिक—इसमें कष्ट क्या है। अतिथि-सत्कार तो सौभाग्य का विषय है।

[जाना]

दृश्य—२

[स्थान-गांव]

(सेठ अमरचन्द ने पूजा वन्दना आदि से निवृत होकर गांव वालों से बातचीत की। गाँव वालों ने एक मन्दिर बनवा देने की आवश्यकता की ओर उनका ध्यान खींचा। सेठजी को बात-जच गई और मन्दिर का निर्माण आरम्भ करा दिया। मंदिर तैयार हो

चुका है। सेठ अमरचन्द, सेठानी व कुछ अन्य व्यक्ति बातें कर रहे हैं।)

अमरचन्द—भगवान की कृपा से मन्दिर की पक्की इमारत बनकर पूरी हो चुकी है। यह सब कार्य आपके ही सहयोग से सम्पन्न हुआ है। अब आगे भी आप ही लोगों का सहयोग आवश्यक है।

एक वृद्धा—सेठ जी आपने जो कुछ किया है वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। धर्म के निमित्त इस सुन्दर कार्य की यहाँ महान् आवश्यकता थी।

अमरचन्द—इसमें मैंने क्या किया? भगवान् की भक्ति से मिला हुआ धन उन्हीं के काम मे लगा दिया। पहिली बार प्रतिमा के दर्शन करते ही मैंने एक सुन्दर मन्दिर बनाने का निश्चय कर लिया था। समय की कमी से मन्दिर जैसा बन सका है, बनगया है। अभी मन्दिर एक मंजिला ही है भविष्य मे इसकी उन्नति होती रहेगी।

एक वृद्ध—प्रारम्भ करना ही कठिन होता है, सुधार तो समय २ पर होते रहते हैं। फिर भी मंदिर सुन्दर व कलायुक्त है।

सेठानी—सुना है कि मन्दिर के बनने से सबको हर्ष हुआ है, लेकिन दयाराम दुखी है।

अमरचंद—हाँ, प्रतिमा झोंपडी मे न रहकर मंदिर मे जायगी इसका उसे दुःख है, वह उसे अलग नहीं करना चाहता। मन्दिर मे उसकी सेवा करने की अभिलाषा संभवतया पूर्ण न होगी।

सेठानी—दयाराम ने मूर्ति प्रकट की, जो कुछ आज हो रहा है उस सबका श्रेय उसी को है। उसकी आशाओं पर पानी

नहीं फिरना चाहिए। जिस स्थान से प्रतिमा निकली है वहां भगवान के चरण स्थापित करने चाहिये।

अमरचंद—बिल्कुल ठीक है। वहां भगवान् का चरण मंदिर बनाना जरूरी है।

(प्रतिष्ठाचार्यजी का प्रवेश)

अमरचंद—प्रतिष्ठाचार्य जी! सब काम तैयार है।

प्रतिष्ठाचार्य—हवन विधान आदि क्रियायें सम्पन्न हो चुकीं। अब तो प्रतिमा को रथ में बिराजमान कर मन्दिर लाना शेष है।

अमर०—चलिए, सब वहाँ ही चलते हैं?

प्रतिष्ठाचार्य—चलिये। (सबका जाना।)

(दृश्य परिवर्तन)

(एक ओर मंदिर की सुंदर इमारत है और दूसरी ओर झोंपड़ी के पास रथ खड़ा है। दयाराम व उसकी स्त्री भी वहाँ उपस्थित है। सेठ अमरचन्द प्रतिष्ठाचार्य आदि सब आते हैं।)

दयाराम—आह! दिल को समझाता तो बहुत हूँ, किन्तु वह नहीं मानता। आज भगवान मेरी गरीब की कुटिया को छोड़ कर मन्दिर मे रहने जा रहे हैं।

(सब लोग प्रतिमा को रथ में विराजमान करते हैं।)

सब—बोलो भगवान महावीर की जय।

दयाराम—(रथ की तरफ देखता हुआ) बैठ गये भगवान! सच मुच यहां से जाने को तैयार हो? क्या श्रावकों का मंदिर तुम्हें इस कुटिया से अधिक प्यारा है? क्या मुझ से रूठ गये? यहाँ क्या दुख था जो आलीशान मंदिर में रहने का निश्चय किया?

किसलिये तोड़ नाता दिया नेह का,
क्यों नहीं प्रीत तुमसे निभाई गई ?
क्या हुआ हमसे अपराध ऐसा कि जो,
हो हमारी तुम्हारी लड़ाई गई ?

सुखिया—स्वामी! रोने बिलखने से क्या लाभ? हम शूद्र हैं, पतित हैं, दुनिया वाले नफरत करते हैं। भगवान ने भी हमे त्याज्य समझकर त्याग दिया। लोग बल पूर्वक हमारे भगवान को हमारी इच्छा के विरुद्ध हमारे घर से ले जा रहे हैं, लेकिन चुपचाप देखने के सिवा हम कुछ भी नहीं कर सकते। तुम्हें याद है, जब यह मूर्त्ति निकली थी तो लोग ले जाना चाहते थे किंतु—

दयाराम—हाँ, हाँ, उस समय प्रतिमा किसी के उठाने से न उठी और अन्त में यहीं झोंपडी बनाई। उस समय भगवन् हमसे प्रसन्न थे, लेकिन अब शायद अप्रसन्न हो गये हैं।

सुखिया—अवश्य ही कोई अपराध हुआ है, उसी का यह फल है।

गाना—

तकदीर फिरी, दुनियाँ बदली, भगवान भी हमसे रूठ गये।
मिट्टी मे मिले अरमान सभी, दुनियाँ के सहारे छूट गये॥
जिनको कि समझते थे अपना, अफसोस वही अब गैर हुये।
लुट गया सभी, बरबाद हुये, भाग्य हमारे फूट गये॥
आंसू भी बाहर आ न सके, आंखों मे ही रह कर सूख गये।
दुनियां की देखके मनमानी, दिल आज हमारे टूट गये॥

अमरचन्द—हम प्रसन्न हैं लेकिन दयाराम का परिवार आंसू बहा रहा है। (दयाराम से) दयाराम! तुम्हारे इस प्रकार दुखित होने से रंग मे भंग होने की आशंका है।

दयाराम--सेठ साहब। यह दुख बनाया हुआ नहीं। हम क्या करें हमारा दिल नहीं मानता। नैनों के आंसू नैनों में रोक लेना चाहते हैं।

अमरचन्द--तुम लोग इतने दुखी क्यों होते हो। हमने तय किया है कि भगवान की प्रतिमा निकलने के स्थान पर भगवान के चरण स्थापित किये जायेंगे और एक सुन्दर मन्दिर बनाया जायगा जिसका नाम चरण छत्री होगा।

सेठानी--लोग वहां दर्शनार्थ आयेंगे और जो चढ़ावा चढेगा वह तुम्हीं को मिलेगा और तुम्हारा मान इस तरह कम न होगा।

अमरचन्द--अब दयाराम का दुख अवश्य मिट जावेगा। (सब लोगों से) चलिये रथ को बढाइये। समय अधिक हो चुका।

सब--भगवान महावीर की जय।

(रथ को चलाते हैं किंतु बैल आगे नहीं बढते)

अमर०--हैं! यह क्या हुआ! बैल आगे क्यों नहीं बढ़ते? रथ में दूसरे बैल लगाओ। शायद ये बैल कमजोर हैं।

(दूसरे बैल लगाये जाते हैं किन्तु रथ नहीं बढता। सब कोशिश करके थक जाते हैं।

अमर०-सब लोग जोर लगावें तो शायद रथ चल जायेगा।

(सब लोग जोर लगाते हैं किन्तु रथ नहीं डिगता)

अमर०-समझ में नहीं आता कि क्या कारण है। क्या हमसे कुछ अपराध होगया है जो भगवान मंदिर में नहीं जाना चाहते? क्या हवन विधान में कुछ त्रुटि रहगई है, जिसका परिणाम यह दिखाई दे रहा है। प्रभो! प्रभो! यह क्या माया है? यह

समस्या शीघ्र ही सुलझना चाहिये वरना अनर्थ हो जायगा।
(आकाशवाणी होती है)

आकाशवाणी०—जबतक भक्त दयाराम का हाथ न लगेगा यह रथ नहीं चलेगा।

अमर०—हैं! यह आवाज कहा से आई?

प्रतिष्ठाचार्य—यह आकाश वाणी है। भगवान अपने भक्त का मान वढाना चाहते हैं।

अमर०—(दयाराम से) भक्तवर! तुम्हीं अपने हाथों से इस कार्य को पूर्ण करो सब लोग तुम्हारी ओर उत्सुकता से देख रहे हैं।

दयाराम--(हर्ष से गद्‌गद्‌ होकर) मुझे आप सब की आज्ञा शिरोधार्य है। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं इस सेवा के योग्य समझा गया हूँ और भगवान ने इस प्रकार मेरा मान वढ़ाया है।

अमर०—भक्तराज! इस समय ही नहीं भविष्य मे भी जब भगवान का रथ चलेगा तो पहले तुम्हारे वंशजों में से किसी का हाथ रथ के पहिये से लगाना आवश्यक होगा। विना तुम्हारी सहायता के यह कार्य सम्पन्न न हो सकेगा।

प्रतिष्ठाचार्य—तुम्हारा यश संसार मे सदैव अमर रहेगा और धार्मिक इतिहास में स्वर्णाक्षरों में चमकता रहेगा।
(दयाराम भगवान का नाम लेकर आगे बढता है और रथ के पहिये के हाथ लगाता है। उसी समय रथ चल देता है।)

अंक—तीसरा

दृश्य—१

स्थान——कारागार (भरतपुर राज्य)

[दीवान जोधपुर वन्दी के रूप में दिखाई देता है]

गाना—

दीवान—

घटायें घिर रही हैं, दूर किश्ती से किनारा है
न कोई यहां अपना, न कोई भी सहारा है ॥
कैसा जमाना वेदर्द आया ।
जी भर के जिसने हमको रुलाया ॥कैसा जमाना॥
रूठी है किस्मत, छूटी है दुनियां—
ठुकरा के सबने हमको मिटाया ॥कैसा जमाना०॥
कोई न साथी दुनियां में अपना—
किसको कहें हम अपना पराया ॥कैसा जमाना०॥
किसको सुनाये ग़म की कहानी—
जग में किसी को अपना न पाया ॥कैसा जमाना०॥

मैं आज राजवन्दी के रूप में भरतपुर राज्य के कारागार में अपने भाग्य पर आंसू वहा रहा हूँ । मुझ पर राज विद्रोही का झूठा दोष लगाया गया है । मैं जानता हूँ कि मैं निर्दोष हूँ किन्तु महाराज की नजरों में मैं महान अपराधी हूँ । निष्कलंक होते हुये भी मैं संसार के सामने कलंकित हो रहा हूँ । मुझे इसका दुःख नहीं कि मुझे प्राण दण्ड देकर संसार से बिदा कर दिया जायेगा । किन्तु मुझे रंज इसी वात का है कि मेरे सारे जीवन की तपस्या भंग होगई और जो राजभक्ति मैंने प्रदर्शित की थी उस पर पानी फेर दिया गया ।

भगवान ! तुम तो अन्तर्यामी हो, घट घट वासी हो । क्या तुम भी मुझे अपराधी समझते हो ? नहीं, मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम अपने भक्त के प्रति इतने कठोर हो जाओगे । चांदनपुर ग्राम मे यहां आते समय मैंने जब तुम्हारे दर्शन किये थे और तुम्हें अपनी दुःख की कहानी सुनाई थी तब उस समय तुम शांत और गम्भीर नजर आरहे थे । क्या कुछ सोच रहे थे प्रभो ! क्या अपने भक्त के वक्तव्य पर विश्वास नही हुआ ? नहीं नहीं, यह तो संभव नहीं मालूम होता ।

[कारागार का द्वार खुलता है और भरतपुर महाराज पधारते हैं]

महाराज—दीवानजी ।

दीवान—कौन ? महाराज ! यह सेवक महाराज के चरणों में प्रणाम करता है ।

महाराज—मुझे दुःख है दीवानजी कि मैं इस समय तुम्हें इस दशा में देख रहा हूँ किन्तु राजाज्ञा सबके लिये समान है और इसका पालन करना सब का कर्त्तव्य है । जो अपराध तुमने किया है यदि वही मैंने भी किया होता तो मैं भी इस दण्ड के प्राप्त करने का अधिकारी होता । जानते हो दीवानजी ! राजद्रोह का अपराध भयंकर एवं सबसे महान है ।

दीवान—हां महाराज ! जानता हूँ । राजद्रोही के लिये भयंकर से भयंकर दण्ड दिया जावे वह भी कम है । राजनीति का यही नियम है ।

महाराज—यह सब कुछ जानते हुए भी तुम जान बूझकर आग में कूदे हो । यह तुमने क्या किया । तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने इस राज्य का नमक खाया है । क्या उसका

इसी प्रकार बदला दिया जाता है? जिस हांडी में खाना उसी में छेद करना कहां की बुद्धिमानी है! क्या तुमने यह नहीं सोचा था कि ऐसा अपराध करके तुम्हारा क्या परिणाम होगा और तुम्हारे व तुम्हारे पूर्वजों के यश पर अमिट कलंक लग जायेगा।

दीवान—महाराज! चाटुकार सभासदों ने आपको मेरे विरुद्ध बुरी तरह भडका दिया है और रग भी ऐसा चढ़ाया है कि यह अब उतर नहीं सकता। यह रंग उसी समय उतरेगा जब मैं इस संसार में नहीं रहूँगा। वास्तविकता आपको उसी समय मालूम होगी जब कि चाटुकार सभासद अपना स्वार्थ सिद्ध करके राज्य का अहित करने की चेष्टा करेंगे।

महाराज—यह तुम क्या कह रहे हो दीवानजी!

दीवान—मैं सर्वथा सत्य कहता हूँ महाराज। मैंने राजभक्ति का पाठ पढ़ा है, चाटुकारिता का नहीं। स्पष्टवादिता ही मेरा सबसे बड़ा अवगुण है। मेरी अनुपस्थिति में मेरे विरोधियों ने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये आपका मन मेरी ओर से फिरा दिया है। मेरे होते हुए वे लोग निश्चय ही अपनी कुत्सित कामनाओं की पूर्ति नहीं कर सके और अब उनका मार्ग साफ हो गया है। महाराज मैं इस अवस्था में भी आपको उन लोगों से सावधान रहने की प्रार्थना करता हूँ और मेरे इस तुच्छ विनय को स्वीकार करने में आपका ही हित है।

महाराज—तुम अपनी मर्यादा त्याग कर सीमा से आगे बढ रहे हो दीवानजी! तुम नहीं जानते कि तुम इस समय बंदी के रूप में हो और तुम्हें ऐसा शब्द कहने का कोई अधिकार नहीं है।

दीवान—महाराज ! जब तक इस शरीर में प्राण है मैं इस अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता।

महाराज—तुम इस प्रकार की बातें करके अपने अपराध को नही धो सकते और न दण्ड प्राप्त करने से अपनी रक्षा ही कर सकते हो।

दीवान—मेरी यह कामना कदापि नहीं है। मैं राजाज्ञा का पालन करने में अपना सौभाग्य समझता हूँ।

महाराज—क्या तुम्हें अपने प्राणों का मोह नहीं है ?

दीवान—प्राणों का मोह पापियों को होता है। मैंने कोई ऐसा पाप नहीं किया जिसके कारण मैं लज्जित हो सकूं। मैंने सदैव गौरवपूर्ण जीवन व्यतीत किया है और अब अन्त मे अपना शरीर भी गौरव सहित ही त्याग दूंगा।

महाराज—रस्सी जल गई पर बल न गया। दीवानजी ! अब इस संसार मे तुम कुछ ही क्षण के मेहमान हो। अपने किये हुए पाप का फल भोगने के लिए तैयार हो जाओ।

दीवान—आपकी आज्ञा शिरोधार्य करने के लिये मैं सदैव तैयार हूँ। चाहता था ....

महाराज—हां, क्या चाहते थे ?

दीवान—यही कि अन्तिम समय मे आपको यह विश्वास दिला सकता कि मैं राजद्रोही नहीं हूँ। मैं यह नहीं चाहता कि मुझे प्राण भिक्षा दे दी जावे किन्तु मैं केवल अपने झूठे अपराध को धो देना चाहता हूँ ताकि मरने के बाद भी मेरा नाम राज्य के इतिहास में कलङ्कित रूप में प्रकट न हो सके।

महाराज—हः हः हः अपराध करके और अपराध का दण्ड प्राप्त करके यह आशा करना कि यश पर धब्बा न लगे ? यह

कैसी उपहासास्पद बात है। मैं खूब जानता हूँ कि तुम्हारी यह युक्तियां दण्ड से बचने के लिये हैं, किन्तु याद रक्खो राजाज्ञा कभी नहीं टल सकती और तुम्हें उसका पालन करना ही होगा। अन्तिम समय तुम भगवान से अपने पापों की क्षमा मांगलो ताकि इस जन्म में जो कलंक तुम्हें लगा है वह अगले जन्म में तुम्हारे सत्कार्यों से धुल जाये।

[आवेश में महाराज का जाना]

—परदा गिरता है—

दृश्य—२

स्थान………मैदान

(एक ओर दो लट्ठे जमीन में पास पास गड़े हुए हैं और सामने की ओर एक तोप रक्खी हुई है। पास ही तोप चलाने वाले सैनिक खड़े हैं)

१ सैनिक—आज यहीं दीवानजी का वध होने वाला है।

२ सैनिक—बडा अशुभ दिन है आज का।

३ सैनिक—हां इसमें क्या सन्देह है? ऐसे धर्मात्मा का वंध हमें अपने हाथों से करना होगा।

४ सैनिक—यह सारी कार्यवाही मंत्रीजी की मालूम होती है। उन्होंने जब यह देखा कि दीवानजी के होते हुए उनकी दाल नहीं गलती तो महाराज को उनके विरुद्ध भड़काना शुरू कर दिया और मौका पाकर राजद्रोह का अपराध लगा दिया।

३ सैनिक—अपराध सिद्ध भी तो कर दिया।

४ सैनिक—सिद्ध करने में क्या लगता है? झूठे अपराधों को सिद्ध करने में वह सदा से ही कुशल हैं।

२ सैनिक—दीवानजी से उनकी पुरानी शत्रुता चली आ रही है। जब किसी भी प्रकार वश न चला तो उन्होंने यह चाल चली।

३ सैनिक—उन्होंने कुछ अन्य लोगों को भी अपने साथ मिला लिया है।

४ सैनिक—ऐसा करना तो उनके लिये आवश्यक ही था, बिना किसी सहायता के ऐसे कार्य कैसे हो सकते हैं।

५ सैनिक—यह लो दीवानजी भी आ गये। अब तैयार हो जाओ निर्दोष के खून से अपने हाथ रंगने के लिये।

(कुछ सैनिक दीवानजी को बन्दी रूप में लेकर आते हैं। साथ में मंत्री व सेनानायक भी हैं)

मंत्री—(आकर) सारा प्रबन्ध हो चुका है?

१ सैनिक—जी हां, सब तैयार है।

मंत्री—दीवानजी को राजाज्ञा के अनुसार तोप के गोले से उड़ाया जावेगा। इस आज्ञा की घोषणा सब को सुना दी गई है। (सैनिकों से) जाओ, दीवानजी को सामने गड़े हुये लट्ठों से बांध दो।

(सैनिक दीवानजी को लट्ठों के पास ले जाते हैं और उनके हाथ लट्ठों से बांध देते हैं।

सेनानायक—दीवानजी! अब आपका अन्त समय आ पहुँचा है। आप चाहो तो नियमानुसार प्राणभिक्षा के अतिरिक्त अपनी अन्तिम इच्छा प्रकट कर दीजिये।

बन्दी जोधराजजी के हृदय में भगवान महावीर की
ज्योति झलक रही है।

दीवान—मेरी अन्तिम इच्छा अब यही है कि मैं शीघ्रातिशीघ्र इस संसार से विदा होकर भगवान के चरणों में स्थान पा सकूं।

मंत्री—इसका प्रबन्ध तो हो ही चुका है। अब आप अन्तिम समय भगवान को स्मरण कर लीजिये।

दीवान—भगवान का नाम तो मेरी जुबान पर है और हृदय में हर समय उन्हीं का ध्यान रहता है। उनकी मूर्ति हृदय में सदा विराजमान रहती है।

मंत्री—सैनिको! गोला छोड़ो।

(सैनिक गोला छोड़ते हैं। आवाज होती है, किन्तु निशाना चूक जाता है)

सेनानायक—निशाना चूक गया। गोला फिर छोड़ो, होशियारी से काम करो, वरना तुम्हें भी दण्ड दिया जायेगा। सैनिकों के लिये निशाने का चूक जाना लज्जा की बात है।

(सैनिक फिर गोला छोड़ते हैं किन्तु गोला ठंडा पड़ जाता है)

सेनानायक—है! क्या इस बार भी वार खाली गया! अवश्य इसमें कुछ रहस्य है।

मंत्री—इसमें सैनिकों की कार्यवाही मालूम होती है। इन लोगों को इसका दण्ड दिया जायेगा।

सेनानायक—अवश्य! मैं स्वयम् इस बार गोला छोड़ता हूं।

(स्वयम् सेनानायक गोला छोड़ता है। गोला छूट कर दीवान के लगता है किन्तु दीवान के शरीर पर लगते ही गोला फूटता है और फूल झड़ने लगते हैं)

भगवद् भक्ति का प्रभाव

दीवान को बांधकर तोप से
उड़ाया जा रहा है।

सेनानायक—इसमें कोई चमत्कार नजर आता है।

मंत्री—किन्तु दीवानजी तो बेहोश नजर आरहे हैं।

सेनानायक—नहीं, वह भगवान के ध्यान मे लीन हैं। महाराज को शीघ्र समाचार भेज देना चाहिये।

मंत्री—हां (एक सैनिक से, जाओ, महाराज को खबर करदो कि दीवानजी पर तोप के गोलों का काई प्रभाव नहीं हुआ। यहा का सारा हाल उनसे कह देना और पूछ लेना कि अब क्या आज्ञा है!

सैनिक—जो आज्ञा है। (जाता है)

सेनानायक—समझ मे नहीं आता कि यह क्या मामला है। सैनिकों को हम क्या दोष दें जब कि हमने अपनी आंखों से यह चत्मकार देखा है। हो न हो इसमे अवश्य कुछ रहस्य है।

मंत्री—हो सकता है दीवानजी कोई जादू भी जानते हों।

सेनानायक—यह भी सम्भव है। बिना जादू के ऐसा तो हो नहीं सकता। आज तक कभी हमने ऐसा दृश्य नहीं देखा और न कभी ऐसा सुना ही है।

(महाराज का प्रवेश)

महाराज—(आकर) यह क्या गड़बड़ है। राजाज्ञा का पालन अभी तक क्यों नहीं हुआ। क्या इसमें भी कोई षडयंत्र है।

मंत्री—अन्नदाता! स्वयम् सेनापतिजी ने इस बार गोला छोड़ा था किन्तु आश्चर्य तो यह है कि वह गोला दीवानजी के शरीर से लगकर फूलों का गुच्छा बन गया।

महाराज—(कड़ककर) दीवान!

दीवान—(आखें खोलकर) हा महाराज। क्या आज्ञा है।

महाराज—क्या अपनी रक्षा करने के लिये आपने जादू का प्रयोग शुरू कर दिया है।

दीवान—महाराज ! मैं भला जादू क्या जानूं।

महाराज—तो फिर यह सब क्या हो रहा है ?

दीवान—मैं इस विषय में क्या कह सकता हूँ ?

महाराज—अच्छा। मैं स्वयं इस बार गोला चलाता हूँ '

(महाराज स्वयम् गोला छोडते हैं। गोला पृथ्वी पर गिर जाता है)

महाराज—हूँ ! क्या गोला पृथ्वी में धंस गया। कोई चिन्ता नहीं, एक बार फिर प्रयत्न करता हूँ। मंत्रीजी व सेनापतिजी आप दोनों दीवानजी के दोनों ओर खड़े हो जावें।

(महाराज फिर गोला चलाते हैं। दीवान जी के पास जाते जाते गोले के दो टुकड़े हो जाते हैं और दोनों टुकड़े मंत्री व सेनानायक के शरीर पर लग कर उन्हें घायल व मूर्च्छित कर देते हैं)

दीवान—भगवान महावीर की जय।

महाराज—हूँ ! यह क्या हुआ ? गोले का विपरीत प्रभाव हुआ। मंत्रीजी व सेनापतिजी घायल हो गये ! गोले के दो टुकड़े होकर दोनों के जा लगे ? दीवानजी ! दीवान जी !! यह क्या लीला है ?

दीवान—भगवान महावीर का अद्भुत प्रभाव है महाराज !

महाराज—किन्तु ऐसा क्यों हुआ ? क्या भगवान न्याय नहीं चाहते ? क्या उनके दरबार में भी पक्षपात होता है ?

दीवान—कभी नहीं। वह दूध का दूध और पानी का पानी करके दिखाते हैं। उनके लिये छोटे-बड़े, गरीब-अमीर सब

समान हैं। वह कभी पक्षपात नहीं करते। वह अपराधियों को उचित दण्ड देकर निर्दोषों की रक्षा करते हैं।

महाराज—क्या मंत्रीजी व सेनापति अपराधी हैं ?

दीवान—यह तो प्रत्यक्ष ही है महाराज ! उन्हें उनके अपराध का उचित दण्ड मिला है। भगवान ने आपको सावधान करने के लिये ही यह अभिनय रचाया है। मंत्रीजी व सेनापतिजी के अपराध दिखाने के लिये ही भगवान ने उन्हें यह दण्ड दिया है।

महाराज—सब अपराधी हैं। मैं भी अपराधी हूँ, सारा संसार अपराधी है। दीवानजी ! मैं तुम्हें बन्धन से मुक्त नहीं कर सकता। मैं देखता हूं कि मेरी तलवार से तुम अपनी रक्षा किस प्रकार करते हो ?

(तलवार निकालता है)

दीवान—जिसने तोप के गोलों से मेरी रक्षा की है उसके लिये तलवार से बचाव करना कठिन नहीं है। मेरा शीश आपकी तलवार का स्वागत करने के लिये सदैव तैयार है। आपके हाथों से यदि मेरा जीवन समाप्त हो गया तो मुझे इसका किंचित् भी दुःख न होगा।

महाराज—यदि ऐसा है तो तैयार हो जाओ।

(तलवार का वार करने के लिये महाराज आगे बढ़ते हैं उसी समय आकाश मे "देव" प्रकट होते हैं। महाराज आश्चर्य से उस ओर देखते हैं)

देव-सावधान राजन् ! यदि अपना हित चाहते हो तो दीवान को मुक्त करदो। यह निर्दोष है। वास्तविक अपराधी मंत्री व सेनापति ही हैं, जिन्होंने दीवान पर झूठा दोष लगाकर

तुम्हारे कान भर दिये हैं। आंखें खोलो और सतर्क रहकर बुद्धिमानी से शासन कार्य करो।

(देव अंतर्ध्यान हो जाते हैं)

महाराज—यह स्वप्न है या जागृति ?

मुझे क्षमा करो, मैंने तुम्हें बहुत दुःख दिया है। मेरी आंखें खुल गई हैं। मुझे अपने कृत्य पर स्वयम् पश्चाताप हो रहा है। मैं अपने हाथों से तुम्हारे बंधन खोलता हूँ। तुम आज से स्वाधीन हो।

(महाराज अपने हाथों से दीवानजी को मुक्त करते हैं और गले लगा लेते हैं)

दीवान—महाराज ! मेरे मन में आपके प्रति वैसे ही श्रद्धा के भाव हैं जैसे पहले थे। भगवान महावीर ने हमारी सुन ली और मेरे प्राणों की रक्षा करने के साथ ही आपको भी विनाश के मार्ग की ओर जाने से रोक लिया। महाराज ! मेरा अनुरोध है कि आप चांदनपुर अवश्य चलें और वहां भगवान महावीर के दर्शन करें।

महाराज—हां, हां अवश्य। मैंने भी उस क्षेत्र की बहुत प्रशंसा सुनी है। मैं अवश्य तुम्हारे साथ वहां चलूंगा। वहां जाकर मैं भगवान से ही अपने अपराधों की क्षमा याचना करूंगा। भगवान की कृपा से ही मेरी आंखें खुली हैं वरना अभी न जाने क्या २ होता। दीवानजी! चलिये, चांदनपुर चलने की तैयारी करिये।

दीवानजी—जो आज्ञा। (जाते हैं)

दृश्य—४

स्थान……चांदनपुर

[एक ओर मन्दिर का सुन्दर विशाल भवन दिखाई देता है।

सब जगह सजावट हो रही है, झंडे लहरा रहे हैं ! डेरे तम्बू लगे हुए हैं, दुकाने लगी हैं, लोगों की चहल पहल जारी है]

[दूसरी ओर रथ खड़ा है और उसमें भगवान की प्रतिमा विराजमान है। प्रतिमा के पीछे भट्टारकजी के बैठने का स्थान है जहां वह स्वयम् बैठे हुये हैं और यात्रियों की भेंट जो भगवान को अर्पित की जारही है स्वीकार कर रहे हैं। वह भगवान की स्तुति करते हैं और उनके साथ ही अन्य भक्त लोग भी कीर्तन करते हैं]

गाना—

भक्तों के हो भगवान तुम्हीं, प्रणमामि प्रभो प्रणमामि प्रभो।
तन मन धन जीवन प्राण तुम्हीं, प्रणमामि प्रभो प्रणमामि प्रभो ॥
दुखियों के साथ सदा रहते, तुम हाथ अनाथों का गहते।
रक्षक हो दयानिधान तुम्ही, प्रणमामि प्रभो प्रणमामि प्रभो।
पतितों को तुमने तारा है, अधमों को नाथ उधारा है।
हो नाथ उदार महान तुम्हीं, प्रणमामि प्रभो प्रणमामि प्रभो ॥
दीनों के कष्टों को हरके, शरणागत को अपना करके।
देते सुख का वरदान तुम्हीं, प्रणमामि प्रभो प्रणमामि प्रभो ॥

सब—जय, जय, भगवान महावीर की जय।

महाराज—(आकर) अहा ! हर्ष का सागर उमड रहा है, और भक्तगण उसमें बेसुध होकर प्रवाहित हो रहे हैं। लोग कैसे उत्साह से इस समारोह में भाग ले रहे है। चारों ओर सजावट हो रही है। जंगल में मंगल हो रहा है। सुसज्जित रथ मे भगवान की मनमोहक पद्मासन वीत-राग नग्न दिगम्बर सौम्य मूर्ति विराजमान है। कैसी अपूर्व शोभा है ? कैसी दिव्य अनुपम छवि है।

१ श्रावक—महाराज ! समय हो गया है। हवन विधान भी हो

चुका है। अब रथ आगे बढना चाहिए। सारथी का कार्य भार आपको ही ग्रहण करना होगा।

महाराज—मुझे सहर्ष यह सेवा स्वीकार है।

[महाराज आगे बढकर रथ मे सारथी के स्थान पर बैठते है]

जय जय भगवान महावीर की जय।

[रथ को महाराज चलाते है किन्तु वह आगे नहीं बढता]

महाराज—(आश्चर्य से) है। रथ क्यों नहीं चलता ? क्या कारण है ?

(सब लोग पहियों को देखते हैं, पृथ्वी को देखते हैं, सब लोग मिलकर जोर लगाते हैं, किन्तु रथ नहीं चलता)

श्रावक —कोई कारण नजर नहीं आता कि रथ क्यों रुक गया है।

(महाराज फिर प्रयत्न करते है, किन्तु बैलों के जोर लगाने पर भी रथ आगे नहीं बढता।

महाराज—क्या किया जावे कुछ समझ मे नहीं आता ? क्या हम लोगों में श्रद्धा व भक्ति का अभाव है जिससे भगवान हम से असंतुष्ट हो गये हैं ! प्रभो ! हमसे क्यों रुष्ट हो गये हैं ? क्यों इस प्रकार हमारा अपमान करना चाहते हो।

दीवान —भगवन् ! तुम्हारे दर्शनार्थ देश विदेश से हजारों यात्री आये हैं। क्या वे सब निराश ही वापस लौट जायेंगे ? क्या हम लोगों का उत्साह भग करके तुम्हें प्रसन्नता हो सकेगी ? (आकाशवाणी होती है)

आकाशवाणी—तुम लोगों ने उस भक्त का मान भंग किया है, जिसके कारण तुम आज यह उत्सव मना रहे हो। अब तक भक्त दयाराम के वंशजों में से किसी का हाथ रथ के पहियों मे न लगेगा यह रथ नहीं चल सकता! वह भक्त चमार व ग्वाला होते हुये भी भगवान का अनन्य भक्त था और उसका मान भंग करके कोई भी भक्त भगवान को प्रसन्न नहीं कर सकता।

दीवान—धन्य! धन्य!! भगवान अपने भक्तों का मान भंग होते हुये नहीं देख सकते।

महाराज—यह वास्तव में हमारी भूल थी कि हमने उस भक्त के वंशजों को भुला दिया। (श्रावकों से) अब शीघ्र ही दयाराम के वंशजों में से किसी को यहां बुला लाओ। (एक श्रावक जाता है)

दीवान—भगवान न्यायी है और समदर्शी भी। उनकी दृष्टि मे छोटे बड़े सब समान हैं। जो शुद्ध हृदय से भगवान की भक्ति करे वही भगवान को सबसे अधिक प्यारा है।

(श्रावक का एक वृद्ध व्यक्ति को लेकर आना वृद्ध का सबको नमस्कार करना)

श्रावक—यह वृद्ध भक्त दयाराम के परिवार का ही व्यक्ति है और उसी के वंशजों मे से है।

महाराज—(वृद्ध से) तुम दयाराम के वंशज हो अतः तुम भी भगवान के कृपा पात्र भक्त कहलाने के अधिकारी हो। तुम्हें इसलिये बुलाया है कि तुम इस रथके पहिये के हाथ लगाओ ताकि यह आगे बढ़ सके। इस समय ही नहीं आगे भी प्रति वर्ष जब यह मेला लगेगा तो तुमको या तुम्हारे वंशजों में से किसी को यह कार्य करना होगा!

वृद्ध—यह हमारा महान सौभाग्य है, अन्नदाता ! भगवानकी जैसी कृपा हमारे पूर्वजों पर रही, वेसी ही हम पर व हमारे बच्चों पर बनी रहे। और हमारे हृदय में भगवान की भक्ति दिन दूनी, रात चौगुनी बढ़ती रहे, यही हमारी वीतराग भगवान से प्रार्थना है।

महाराज—भगवान तुम्हारी प्रार्थना अवश्य स्वीकार करेंगे। चलो कार्य आरम्भ करो।

वृद्ध—भगवान महावीर की जय।

(वृद्ध रथ के पहिये के हाथ लगाता है रथ चलता है। भक्त लोग प्रसन्न होकर भगवान की जय जयकार करते हैं। आकाश से देवगण यह दृश्य देखते हैं और पुष्प वृष्टि करते हैं)

सब—जय जय वीतराग भगवान महावीर की जय।

—ड्राप सीन—

॥ इति शुभम् ॥

श्री महावीर क्षेत्र परिचय

दिगम्बर जैन समाज का यह तीर्थ स्थान देहली से बम्बई जाने वाली वेस्टर्न रेलवे की बडी लाइन पर श्री महावीरजी स्टेशन से ४ मील दूर चांदनपुर (नोरंगाबाद) निजामत हिण्डौन, जयपुर डिवीजन (राजस्थान) में स्थित है। यहां के मन्दिर में परम दिगम्बर अतिशय युक्त महामनोज्ञ श्री महावीर स्वामी की पद्मासन मूर्त्ति विराजमान है। इसका यश जगद्-विख्यात है। यहां पर देश देशान्तर से जैन बन्धु ही नहीं

किन्तु मीने गूजर सब ही जातियों के भाई बहिन हजारों लाखों की संख्या में भगवान के दर्शनार्थ उपस्थित होते हैं तथा अपनी दुःख गाथा भगवान को सुनाते हैं। जो व्यक्ति एक बार भी भगवान के दर्शनार्थ उपस्थित हो जाता है उसकी सांसारिक वेदना रूपी ज्वालायें भगवान की परमशात मुद्रा के दर्शनरूपी गंगाजल से शांत हो जाती हैं। जो नर नारी भक्ति भाव तथा निर्मल हृदय से भगवान का दर्शन, पूजन व स्तवन करते हैं उनकी सभी प्रकारकी मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं। क्योंकि सच्चे हृदय से की हुई आलोचना या पुकार कभी निरर्थक नहीं जाया करती। यही कारण है कि भारत के दि० जैन तीर्थ क्षेत्रों में यह क्षेत्र समाज के सबसे अधिक भक्ति और आकर्षण का केन्द्र बन गया है। यह भगवान के अतिशय का ही प्रभाव है।

जयपुर रियासत के महाराजाओं की ओर से यह संपूर्ण ग्राम जिसका नाम वर्तमान में नोरंगाबाद है, भगवान की पूजा सेवा दीप धूप सदावर्त के लिये पुण्यार्थ अर्पण किया हुआ है।

❋ भगवान महावीर की जय ❋

—

तेरहवां अध्याय

श्री पद्मपुरा क्षेत्र परिचय

इस दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र का वैशाख शुक्ला ५ सं० २००१ से निर्माण हुआ है, जब कि मूला नामक जाट को अपने मकान की नींव खोदते समय श्री पद्मप्रभु भगवान की मनोज्ञ और चमत्कारी दिगम्बर जैन मूर्ति प्राप्त हुई। मूर्ति के चमत्कार की

प्रसिद्धि भारत के कोने कोने में शीघ्र ही फैल गई और हजारों यात्री दर्शनार्थ आने लग गये। क्षेत्र का प्रबन्ध एक प्रबन्धक समिति द्वारा होता है। यहां पक्की धर्मशाला, औषधालय, वाचनालय, पोस्ट आफिस, टेलीफोन आदि हैं। विशाल गौलाकार मंदिर का निर्माण हो रहा है। यह मंदिर पूर्ण बन जाने पर भारत के जैन मंदिरों में अद्वितीय होगा। क्षेत्र प्रबन्धक समिति यहां एक विशालकाय खड्गासन मूर्ति विराजमान करने की सोच रही है। श्री पद्मपुरा जाने के लिए महावीरजी से जयपुर जाते समय जयपुर माधोपुर लाईन में स्टेशन श्योदासपुरा पर उतरना चाहिये यहां ३॥ मील पूर्व की ओर यह क्षेत्र है जहां सड़क बनी हुई है। जयपुर से प्रतिदिन मोटर बसें भी यहां आती जाती हैं।

श्री पद्मप्रभु नाटक

—गायन—

जय जय पद्मप्रभु भगवान, तुम्हीं हो सर्व गुणों की खान ॥टेक॥

जन जन के तुम बैठे घट में, दीनों के आधार,
संकट काटो, प्रेम भरो प्रभु, होंवे आप समान।
तुम्हीं हो सर्व गुणों की खान ॥ १ ॥

दर्शन पाकर हम हर्षाये, प्रभु की महिमा जान न पाये,
पूजा भक्ति करने आये, करो प्रभु कल्याण।
तुम्हीं हो सर्व गुणों की खान ॥ १ ॥

शान्ति, त्याग के हे मधु आगर, दीनन के सर्वज्ञ हितंकर,
"सेठी" के हो सुख के सागर, पद्मप्रभु भगवान।
तुम्हीं हो सर्व गुणों की खान ॥ २ ॥
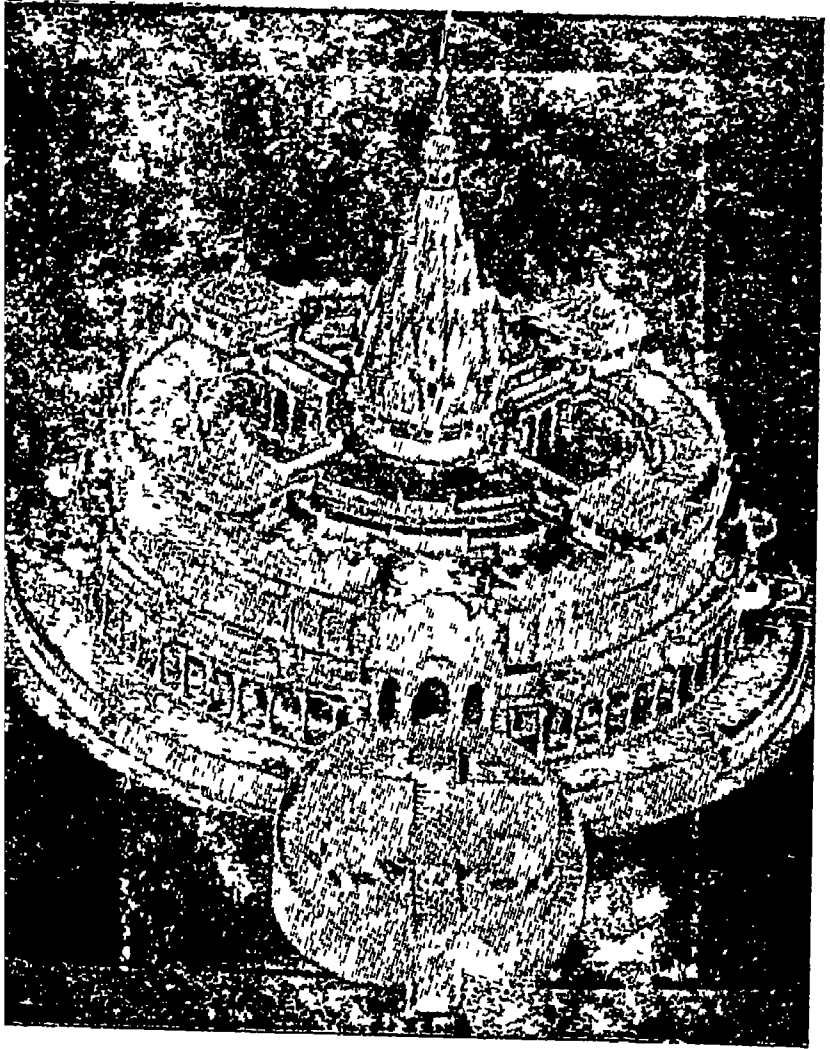
श्री पद्मपुरा क्षेत्र पर जिस भव्य मंदिर का निर्माण हो रहा है।

श्री १००८ पद्मप्रभु भगवान (बाड़ा)

प्रथमांकः—

प्रथम दृश्य

[स्थान.—जगरामपुर (कोटखावदा) मे जर्जर शरीर एवं फटे हुए चिथडे पहने एक कुटिया में शिवसिन्धु जाट की पत्नि विचारों मे मग्न है । शिवसिंधु के प्रिय पुत्र मूला और लादू अपनी मां के पास बैठे हुए हैं । मूला की बहिनें रामप्यारी, ग्यारसी, हरबाई, रोटी लेने गई है । निर्धनता के कारण, मकान के इर्द गिर्द कूडा कचरा पडा हुआ है । दो चार पीतल के बर्तन आले में रखे हुए हैं]

शिवसिन्धु की पत्नि—(आकाश की ओर देख कर) दीनानाथ, दीनबन्धु ! करुणा सागर ! अब तो इस दुखिया की पुकार सुनो । हे प्रभु, आप करुणा के अवतार हो, दीनों के नाथ हो, सत्य और त्याग की विमल मूर्ति हो, पतितों के उद्धारक हो, आपकी महिमा अपार है, अलौकिक है । आप ही इस संसार मे आकर दीनों का दुख दूर करते हो । मैंने सुना है, आप सदैव दीनों के कष्ट के समय उन्हें दर्शन देकर प्रसन्न करते हो, प्रभु, आपके होते हुए अपार कष्ट ! अब तो भगवान यह अपार वेदना सहन नहीं होती । पतिदेव का आश्रय भी समाप्त हो गया । अब मैं इन बच्चों को कैसे धीरज बँधाऊँ । हाय ! दोपहरी भी हो गई, बच्चे आते-ही होंगे । भगवान ! कृपा करो, इस दुखिया को दर्शन दो ।

भविष्यवाणी—धैर्य के साथ कर्त्तव्य पथ पर अटल रहो, दुख सहन करने से बाद ही सुख प्राप्त होता है। एक रोज अवश्य तुम्हारा भाग्योदय होगा।

शिवसिन्धु की पत्नि—हे प्रभू ! तेरी महिमा अपार है। (गद्गद होकर) इन मधुर, मनोहर और प्रिय शब्दों ने तो मुझे जीवन का अमिट सुख प्राप्त कराया है।

(बच्चों का प्रवेश)

सब बच्चे—अम्मा ! भूख के मारे प्राण निकले जा रहे हैं, अब तो एक क्षण भी नहीं रहः जाता, मां !

एक बच्चा—मां ! जरा मेरी ओर भी देख, मेरा चेहरा भूख के मारे पीला पड़ गया है।

दूसरा बच्चा—मां, दुपहर हो गई, क्या तूने अभी तक रोटी नहीं बनाई ? [रोने लगता है]

माता—प्यारे लाल ! क्यों रो रहा है। मैं अभी तेरे लिए रोटी बना देती हूँ। तब तक तू अपने भाइयों के साथ खेल।

एक बच्चा—मां, तैने तो संध्या समय भी इसी प्रकार कहा था, आज सुबह भी एक दो ग्रास ही तो दिये थे।

माता—हे भगवान ! बच्चों की इस दुस्सह वेदना को तो मुझ से देखा नहीं जाता। हाय, मेरे नेत्र क्यों नहीं फट जाते, मुझे मौत क्यों नहीं आ जाती !

हे कृपासिंधु, हे दीनबन्धु, इन बच्चों पर तो दया करो।
इनकी निर्धनता देख प्रभो इनमें जीवन की ज्योति भरो॥

[मूर्च्छित होना।

(मूला का प्रवेश)

मूला—मां, मां, ! मां, यह क्या हुआ ? (बच्चों से) तुमने मां से क्या कहा ?

लादू—कुछ नहीं, हमें क्या पता, हम तो रोटी मांग रहे थे।

मूला—अच्छा लादू, थोड़ा सा उस कटोरे में पानी लाओ।

[लादू का पानी लाना, मूला का मां पर छींटे देना, मां का होश में आना)

माता—बेटा मूला ! तुम कहां गये थे।

मूला—मां ! मैं तो यहीं था।

माता—नहीं मूला, मुझे ऐसा मालूम होता है कि तुम अपने मामा के यहा गये थे।

मूला—मा, मैं तो कल्लू के खेत में मकई छीलने गया था देखो, मा ! वहां से थोडी मकई लाया हूँ। इसे पीसकर रोटी बनाओ। क्या तूने मुझे अभी मामा के यहा देखा था ?

माता—बेटा तुझे देखा तो था, लेकिन · ··

मूला—ठीक है, मां ! तव तो भगवान ने हमें सीधा रास्ता बता दिया, अब हमे मामा के यहा चलना चाहिए।

माता—हां, बेटा ! ऐसा तो मैंने भी कई बार सोचा था।

मूला—हां मा ! भगवान ने मुझे शायद स्वप्न मे कहा है कि तुम अपने मामा के यहां जाओ, वहां ही से तुम्हारा भाग्योदय होगा।

माता—अच्छा, तो, चलो बेटा, कल हम सब तुम्हारे मामा के यहां चलेंगे।

(दूसरे दिन सब का मामा के गांव के लिए प्रस्थान)

—ड्राप सीन—

प्रथमाङ्कः—

द्वितीय दृश्य

(वे नन्हें २ बच्चे भूखे प्यासे ही मामा के घर पहुँचने की

आशा में बढ़ते जा रहे हैं। उनके कोमल पांवों में कंकर एवं कांटों द्वारा छाले पड गये हैं। सूर्य भगवान अस्ताचल की ओर जा रहे हैं। मूला और माता का मार्ग में बात चीत करना, मामा के घर के पास आना तथा उनका मिलन)

मूला—मां, भगवान भास्कर की स्वर्ण युक्त किरणें, कितनी सुहावनी प्रतीत हो रही हैं।

माता—हां, बेटा ! जीवन की ऐसी ही प्रवृत्ति है। प्राणी मात्र की इस ही प्रकार की दशा है। कभी प्राणी सुख से रहता है और कभी दुख से। पहिले हम भी सुखी थे, हमारे पास धन धान्य, गाय बैल, वस्त्रादि सभी थे, परन्तु अब हमारा सूर्य डूब गया है।

मूला—हां, मां ! तू सच कह रही है।

माता—लाल ! हम लोग उस समय बड़ी मौज से घी. दूध, गुड़, शक्कर, इत्यादि सभी चीजें खाते थे। आज तुम्हारे पिता की मृत्यु को २॥ वर्ष होगये हैं, तभी से अथाह दुख के सागर में गोते लगा रहे हैं। वेदना हमारी सहचरी हो रही है।

मूला—देखो माँ, स्वच्छ नीले आकाश में शीतल किरणों को फैलता हुआ चन्द्रदेव भी प्रकट हुआ चाहता है।

लादू—मां ! गांव भी पास ही है। अब मैं मामा के यहां जाकर मिठाई खाऊँगा।

माता—हां, बेटा।

[गांव के समीप, माता का बच्चों को समझाना]

माता—देखो लादू, रामप्यारी, ग्यारसी, बड़े प्रेम से हाथ जोड़ कर, विनय युक्त मामा से प्रणाम करना। वहां जाकर चुप चाप बैठ जाना, दङ्गा न करना।

सब—अच्छा मां, ऐसा ही करेंगे।

[मूला का मामा, जगन्नाथ का आना]

बच्चे—मामाजी, प्रणाम !

मामा—आओ, बेटा आओ लाल ! दुखी मां के जीवन का सहारा आओ, मेरी आंखों का तारा, आओ।

(मूला के मामा जगन्नाथ का अपनी बहिन के गले लगना, नेत्रों से अश्रु धारा प्रवाहित होना)

बहिन—भाई, अब तो, इन बच्चों की सेवा करने वाला, इन्हें पुत्र तुल्य समझने वाला, इनकी रक्षा करने वाला, तू ही है।

जगन्नाथ—बहिन ! भगवान मालिक है। वह ही सब की रक्षा करता है। मैं तुम्हारी हृदय से सेवा करने के लिए तैयार हूँ। तू इस निर्धनता से क्यों घबरा रही है ? यह वेदना, दुःख, आपत्ति तो कुछ समय की ही है। हे बहिन ! भगवान पर विश्वास रखो ! ये सारी मुसीबतें शीघ्र ही नष्ट हो जायेंगी।

अच्छा बहिन ! घर चलो, बच्चे भूख के मारे तड़प रहे हैं, इन्हें खाना खिलाओ।

(सबका मामा के घर प्रस्थान)

—ड्राप सीन—

प्रथमाङ्क—

तृतीय दृश्य

(मूला अपनी माता एवं भाई बहिनों के साथ अपने मामा के यहां रह रहा है। मित्रों की बातों द्वारा, मूला के विचार परिवर्तन, यथाः—मामा से अलग रह कर खेती करना, वापिस घर

जाना, मकान बनाने की तैयारी करना एवं नींव का श्री गणेश करना)

(मूला के मित्र नन्दू गंगू का हाथ में गेंद लिए हुए आना)

नन्दू—मित्र गगू ! कितना सुहावना मौसम है ! पीली मिट्टी कितनी सुन्दर प्रतीत हो रही है। आओ, यहां खेलें।

गगू—हॉ, मित्र ! मैं भी यही सोच रहा था। खेलने से शरीर में ताकत आती है एव स्वास्थ्य अच्छा रहा है। आओ खेलें।

नन्दू—मित्र ! तुम भी स्वार्थी मालूम होते हो। क्या अकेले ही खेलना जानते हो ? आओ, मूला को भी बुलालें।

गंगू—वाह यार, तूने भी अच्छे मनहूस का नाम लिया। यह तो गरीब है, वह अपने साथ कैसे खेल सकता है ? क्या तुझे पता नहीं उसका जीवन तो मामा की रोटिया पर ही निर्भर है।

नन्दू—हां, मित्र ! बात तो तू सच्ची कहता है। हम ऐसे गरीब के साथ कभी नहीं खेल सकते। आओ दोनों ही खेलें।

(नन्दू और गंगू गेंद खेलने लग जाते हैं)

(मूला का प्रवेश)

मूला—मित्र नन्दू ! क्या मैं भी खेल लूँ ?

नन्दू—(क्रोध से) मामा की रोटियाँ तोड़कर हमारे साथ खेलना चाहता है। दूर हट। वरना मार खायेगा। मूर्ख ! गरीब, होकर हमारे साथ खेलने की हविश रखता है।

मूला—(दूर हट कर) क्या कह रहे हो मित्र ! गरीब ! निर्धन ! हॉ ठीक कह रहे हो। मैं अब स्वय कमाऊंगा। खुद खेती करूंगा। अलग मकान बनाऊंगा। तभी मेरी तथा मेरे कुटुम्ब की उन्नति हो सकेगी।

[मूला का घर चला जाना]

(मूला के घर, मूला और उसकी माता का वार्त्तालाप)

मूला—मां ! हम कब तक इस निर्धनता के कारण मामा की रोटियां तोड़ते रहेंगे। मेरा जीवन धिक्कार है, अब मैं स्वय कार्य करूंगा।

माता—मेरे प्यारे बच्चे ! आज तू यह क्या कह रहा है ? तुझे किसने बहकाया है ? अभी तो तेरी बाल्यावस्था ही है। अपने पास क्या है ? कुछ भी नहीं है।

मूला—मां ससार मे वही उन्नति कर सकता है जो धैर्य, पुरुषार्थ और विवेक से काम लेता है। अगर हमारे पास धैर्य पुरुपार्थ है और विवेक है, तो सब कुछ है।

माता—बेटा तू मुझे अपने दिल की सच्ची बात बता। जल्द बता, तुझे आज किसने भड़काया है ?

मूला—(आखों में आंसू भरकर) मा ! क्या कहूँ ? क्या बताऊं कुछ कहा नहीं जाता। मेरा हृदय फटा जाता है। मेरी निर्धनता के कारण मेरे मित्र मुझे अपने साथ नहीं खेलने देते। वे कहते हैं–तू गरीब है, अपने मामा की रोटियां तोडता है।

(फूट २ कर रोना)

माता—मेरे नन्हे लाल ! तू क्यों रो रहा है ? जो आपत्ति मे घबराते हैं वे कभी उन्नति नहीं कर सकते।

हे प्रभो ! करुणासिन्धु, दीनबन्धु, दीन हितकारी आप संसार में जन्म लेकर इस अबला का कष्ट क्यों नहीं मिटाते। यह भयावना दृश्य मुझ से देखा नहीं जाता, भगवान ! दीनानाथ, दया करो। इस अबला का कल्याण करो।

(मूर्च्छित होना)

(जगन्नाथ का प्रवेश)

जगन्नाथ—बेटा मूला। आज तुम किन विचारों में मग्न हो। तुम्हारे नेत्रों से अश्रुधारा क्यों बह रही है ? चेहरा पीला क्यों है ?

मूला—मामाजी ! कोई बात नहीं। अब मैं आप से अलग रह कर स्वयं कार्य करूंगा। मेरी निर्धनता मुझे इस संसार में न रहने देगी।

जगन्नाथ—बेटा ! यह क्या कह रहे हो ? क्या तुम मेरे साथ नहीं रहोगे। बेटा ! बताओ, जल्दी बताओ।

मूला—मामाजी ! प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो। धैर्य और विवेक से काम ले। उद्योग करता रहे। उद्योग ही सफलता की कुञ्जी है। मामाजी ! मुझे आज्ञा दो. जिससे मैं अपने जीवन के लक्ष्य में सफलता प्राप्त कर सकूँ।

जगन्नाथ—अच्छा, बेटा ! अगर तुम्हारे इतने उच्च और पवित्र विचार हैं तो मैं तुम्हें मकान के लिए स्थान बताता हूँ। तुम जमीन साफ करो और नींव खोदो।

मूला—बहुत अच्छा मामाजी ! मैं आपका अहसान जन्म भर न भूलूँगा।

(मूला का मामा के चरणों में गिर पडना, मामा का आशीर्वाद देना, मामा का मकान के लिए स्थान बतलाना)

—ड्राप सीन—

प्रथमांक—

चतुर्थ दृश्य

(मूला सच्ची लगन एवं स्फूर्ति के साथ जमीन खोद रहा है। भगवान भास्कर अपनी प्रचण्ड किरणों द्वारा अग्नि की वर्षा कर

रहे हैं। लू चल रही है, परन्तु मूला अपने कार्य में फिर भी प्रयत्न-शील है। मूला जमीन खोदता जाता है, तथा गाता जाता है। खोदने के साथ उसका फावडा किसी वस्तु के टकराता है, मूला अच्छी तरह देखता है और विस्मित हो जाता है। मूला का गांव के मनुष्यों को बुलाना, मनुष्यों का एकत्रित होना, मूला से हाल पूछना, मूला का हाल बताना।

मूला—(मूला के हाथों में फावडा है, धीरे धीरे वह जमीन खोदता है, खोदते समय गाता जाता है)

गायन—

आफत में फंसा दास तेरा आन बचाले, भगवान बचाले॥
चारों तरफ से आन मुसीबत ने है घेरा,
लूटा है दीनता ने दयाशील का डेरा।
अब कुछ तो दया करके दयावान कहाले, भगवान बचाले॥१॥
मञ्जिल है बडी दूर, बड़ा दूर किनारा,
मैं क्षीण तथा क्षुद्र, नहीं कुछ भी आधारा।
अब कुछ तो सहारा दे प्रभो, आन बचाले, भगवान बचाले॥२॥
दीनों का तुझे ध्यान नहीं, दीनबन्धु क्यों ?
करुणा विना प्रसिद्ध है, करुणानिधान क्यों ?
अब जा रही है बात तेरी सोच सुचाले, भगवान बचाले॥३॥

मूला—दीनरक्षक ! करुणानिधान ! यह जमीन तो बड़ी कठोर है। भगवान भास्कर ! आज आप क्यों नहीं इस बालक पर दया करते ? इतनी अधिक अग्नि-वर्षा करने पर भी आप शान्त नहीं होते।

एक लड़का—अरे, मूला ! यह तू क्या कर रहा है ?

मूला—अरे भाई ! मकान की नींव खोद रहा हूँ। साथ ही

भगवान का स्मरण भी करता हूँ। क्योंकि उनके नाम से कार्य शीघ्र ही सिद्ध हो जाता है।

एक लड़का—क्या भाई ! भगवान को तुमने देखा है ?

मूला—भाई, भगवान् तो सब में हैं। वह वीतराग हैं, करुणा-निधान हैं। उनके नाम स्मरण करने से प्रत्येक प्राणी का दुख दूर होकर कल्याण होता है।

एक लड़का—अच्छा भाई ! अगर भगवान सब जगह है तो हमें दिखाई क्यों नहीं देता ?

मूला—भाई ! क्या भगवान दिखाई नहीं देते ? देखो, मैं यह कार्य कर रहा हूँ, वह भगवान की शक्ति द्वारा ही कर रहा हूँ। अगर भगवान की ताकत मुझ में नहीं होती तो मैं इतना कार्य कैसे कर सकता हूँ ? प्रत्येक स्थान पर भगवान हैं।

एक लड़का—भाई तुम्हारी थकावट मेरी आँखों को लज्जित कर रही है। लाओ, मुझे अपना फावड़ा दो, जिससे मैं तुम्हारी मदद कर सकूं।

जो सङ्कटों में दूसरे के काम आता है कभी।
सुख, शान्ति से रहता हमेशा, कष्ट मिटते हैं तभी॥

मूला—भाई ! तू सच कहता है। परन्तु मैं अपने लक्ष को प्राप्त करके ही रहूँगा। इसी में मेरे जीवन की उन्नति है।

यदि हों दुख हजारों तो. कभी धीरज न छोड़ूँगा।
बिना खोदे जमीं को मैं, नहीं इस मुख को मोड़ूंगा
प्राण देदूंगा मैं भाई, मगर ना लक्ष छोड़ूंगा।
श्री भगवान की भक्ति से, मैं अब नाता जोड़ूंगा।

एक लड़का—धन्य है भाई ! तुम्हारे इस उच्च आदर्श को और इतने महान एवं पवित्र विचारों को। तुम ही देश,

धर्म, जाति और समाज की उन्नति कर सकते हो।
तुम ही भारत के सच्चे सपूत कहा सकते हो।

(लडके का जाना)

(फावडा, किसी कठोर वस्तु से टकराता है, मूला का आश्चर्य मे पडना, फावड़ा का छूट जाना)

मूला—(आश्चर्य से) हैं ! यह क्या ! फावड़ा क्यों छूट गया ? यहा ऐसी कौनसी शक्ति है, जिससे मेरे शरीर मे हलचल मच गई।

(थोड़ी देर ठहरकर, मूला गौर से देखता है कुछ सफेद वस्तु दिखाई देती है, मूला कांपता है)

दौडो, भाइयो, आओ, आओ देखो, यहां यह क्या दिखाई दे रहा है ? जल्दी आओ !

(कुछ मनुष्यों का दौड़ कर आना)

एक आदमी—मूला ! तुझे क्या हुआ ? तू क्यों कांप रहा है ?

एक वृद्ध पुरुप—(आगे बढकर) बेटा लाल ! तू इतना भयभीत क्यों होरहा है ? तेरा चेहरा क्यों मुरझा गया है ?

मूला—(गड्ढे की ओर लेजाए) इसमे देखिए, यह क्या है ?

एक आदमी—अरे यह तो कोई मनुष्य सा दृष्टिगोचर होता है।

वृद्ध पुरुप—नहीं, यह तो कोई देवता जान पड़ता है।

एक पुरुप—मुझे स्मरण हुआ है कि भैरों ब्राह्मण ने कई बार स्वप्न में सुना है कि इस ग्राम मे भगवान प्रकट होंगे !

वृद्ध पुरुप—ओ भूरा पटेल ! जा ब्राह्मण को बुला ला !

भूरा पटेल—अजी ब्राह्मण महाराज ! कृपाकर शीघ्र बाहर पधारिये।

ब्राह्मण—(बाहर आकर) क्यों ? कहिए, क्या बात है ? आपका यहां कैसे आना हुआ ?

भूरा पटेल—महाराज ! भैरों के चबूतरे के पास गांव के सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति आप की याद कर रहे हैं।

[ब्राह्मण महाराज का भूरा पटेल के साथ जाना]

सब व्यक्ति—महाराज प्रणाम !

ब्राह्मण—भगवान तुम्हारा भला करे, तुम्हारी आयु बडी करे। क्यों, क्या काम है ? आप लोग यहां क्यों इकट्ठे हुए हैं ?

वृद्ध पुरुष—महाराज ! यहां कोई मूरत सी दिखाई देती है।

ब्राह्मण—(गड्ढे में देखकर) भाइयो, यह तो भगवान की मूर्ति है। मुझे सपने में मालूम हुआ था कि भगवान की मूर्ति को कोई निकाल रहा है। मेरा स्वप्न सत्य हुआ। (सोचकर) अच्छा। ठीक है, अब इसे कल खोदना। अंधेरा होता जा रहा है। अगर मूर्ति के कहीं जरा भी लग गई तो वडा अनर्थ हो जायगा।

(सबका प्रस्थान)

—ड्राप सीन—

द्वितीयाङ्क—

प्रथम दृश्य

(सभी ग्रामवासी एव मूला उसी स्थान पर प्रातःकाल के समय बड़ी खुशी और उमंग के साथ इकट्ठे होते हैं। मूला पंडितजी को प्रणाम करता है और पंडितजी के कथनानुसार आस पास से धीरे धीरे जमीन खोदता है। सबको भगवान के दर्शन होते हैं। सभी ग्रामवासी बड़े प्रसन्न होते हैं और भगवान की जय बोलते है

मूला—महाराज प्रणाम।

पंडित—सुखी हो वेटा ! मूला ! तुम बड़े भाग्यशाली प्रतीत होते हो। धीरे धीरे खोदना आरम्भ करो।

मूला—महाराज ! अभी खोदता हूँ।

(मूला का धीरे धीरे खोदना, खोदते, समय गाना)

—गाना—

प्रभो ! तेरी कृपा से कष्ट अव सब जाने वाले हैं।
हृदय से दुःख के वादल ! प्रभु अव हटने वाले हैं ॥ १ ॥
यह सुन्दर मूरती मनहार, हृदय मे वस गई मेरे।
कृपा कर ज्योति कर दीजे, हृदय मे आन कर मेरे ॥ २ ॥
तुम्हारे पुण्य दर्शन से, कर्म सव कटन वाले है।
प्रभो ! तेरी कृपा से कष्ट, अव सव जाने वाले हैं ॥ ३ ॥

(मूला धीरे धीरे मिट्टी हटा रहा है, अचानक भूमि का रंग वदल जाता है। लोगों के चेहरे हर्ष से कमल की भांति खिल जाते है, सब मिलकर धीरे धीरे मिट्टी हटाते हैं। भगवान की मनोहर एवं आकर्षक मूर्ति दृष्टिगोचर होती है।

सब बोलो—श्री भगवान की जय ! जय !! जय !!!

(अचानक आकाश से जय ध्वनि का सुनाई देना)

एक पुरुष—यह मूर्ति तो वहुत विलक्षण प्रतीत होती है। देखो यहां का कितना सुन्दर दृश्य हो गया है। सब लोग भगवान के दर्शन पाकर कितने मुग्ध हैं। प्राकृतिक दृश्य कितने मनोहर प्रतीत हो रहे हैं। आकाश में जय ध्वनि हो रही है।

वृद्ध पुरुष—हां भाइयो ! भगवान ने हमारे ग्राम मे हमें दर्शन देकर हमारी भलाई चाही है। अब हमें भगवान को किसी पवित्र स्थान पर विराजमान कर देना चाहिए।

मूला—महाराज ! नहा धोकर दूध से न्हवन करा कर भगवान को फिर विराजमान करेंगे। मैं अभी नहा कर आता हूँ।

(मूला नहा धोकर ग्राम के एक ब्राह्मण के यहां से पवित्र दूध लाकर भगवान का न्हवन करता है)

मूला—भगवान! आपने मुझ निर्धन को इतना मान दिया है तो अब उसकी रक्षा भी आप ही के हाथ है।

(मूला भगवान की मूर्ति को उठाता है, सब सहारा देते हैं। मूर्ति उठ जाती है।

सब—बोलो मूला के भगवान की जय! जय!! जय!!!

ब्राह्मण—अच्छा मूला! भगवान की मूर्ति को उस चबूतरे पर विराजमान करें।

(मूला और सब का भगवान को विराजमान करना, सबका जय बोलना! और मूला का निम्न गायन गाना)

मूला— (तर्जः-गाये जा गीत मिलन के ......)

भक्ति करेजा भगवान से, सच्ची लगन से जगत से करना है॥टेक

काहे पड़ता विषयन के फेर मे, काहे लुटाता धन,
काहे हृदय में वैर बसाता, काहे दुखाता मन,
गाये जा गुण भगवान के, हृदय का बनके, जगत से तरना है॥१॥

लुट न जाये अनमोल जीवन, इसका है हमको गम,
जो भी करना है सो तू करले, फिर क्या करेंगे हम,
लुटा मंदिर में, प्रभु चरणन में, जगत तरना है॥२॥

अंखियां डोले भगवान के द्वारे, दर्शन की है धुन,
"सेठी" प्रभूजी तुमको पुकारे, मेरे भगवन सुन,
काटे कर्मन को, यों दुख जीवन को, जगत से तरना है॥३॥

ब्राह्मण—(सब ग्रामवासियों से) भाइयो! आप लोग सब शाम को यहां फिर आ जाना, भगवान हम पर बहुत प्रसन्न है।

सब—अच्छा महाराज!

ड्राप-सीन

द्वितीयांक—

द्वितीय दृश्य

संध्या के समय सभी ग्रामवासी घी के दीपक लेकर वहां पर एकत्रित होते हैं। अपने २ दुखों को भगवान के समक्ष रखते हैं और प्रार्थना करते हैं कि हमारे दुःख शीघ्र मिटें। भगवान की कृपा से सबके दुख दूर हो जाते हैं।)

गायन—

एक भक्त— (रुमझुम बरसै बादरवा"')

पाप के छाये बादरवा, दुख की घटाए छाई,
मेरे प्रभु आजा, आजा, मेरे प्रभु आजा ॥टेक॥
जीवन का दुर्भाग्य, प्रभू अब आगया, आगया।
अपनी सारी दौलत प्रभू मैं खोगया, खोगया ॥
कैसे धीर बंधाऊ रे, कष्ट मिटाने आजा।
मेरे प्रभू आजा, आजा मेरे प्रभू आजा ॥२॥
भाई भाई आपस में प्रभु लड़ते हैं, लड़ते हैं।
धन के खातिर जान को अपनी खोते हैं, खोते हैं।
आकर इन्हें समझाओ रे, प्रेम कराने आजा।
शान्ति बंधाजा, आजा, शान्ति बंधाजा ॥३॥
सच्चे दिल से तेरा गुण जो गाते हैं, गाते हैं।
तेरी कृपा से प्रभू, मोक्ष में जाते हैं, जाते हैं ॥
क्यों ना कष्ट मिटायेरे, "सेठी" गाये गुण तेरे,
पार लगाजा, आजा, पार लगाजा ॥ ४ ॥

सब—प्रभु ! तुम्हारी माया अपरम्पार है। तुम पतितों के कष्ट को मिटाते हो। अज्ञान अंधकार को मिटाकर, ज्ञानकी ज्योति जगाते हो। आप प्रभु अपने सेवकों का मान रखतें हो।

एक दर्शक—हे प्रभो, करुणासिंधु, मेरा भाई बीस वर्ष से नेत्र हीन है। अगर वह ठीक होगया तो आपका गुण जन्म भर गाता रहूँगा।

एक स्त्री—भगवान! मेरा बच्चा कई दिनों से सख्त बीमार है, अगर अच्छा होगया तो रोजाना घी का दीपक चढ़ाऊंगी।

वृद्ध पुरुष—हे भगवन्! मेरे बच्चे के निमोनिया हो रहा है अगर ठीक होगया तो आपके रोजाना दर्शन करने आया करूंगा।

एक दर्शक—हे आनन्दकन्द, विघ्नविनाशक प्रभो! अगर मेरी बुढ़िया मां की आंखें ठीक होगईं, तो आपके दस सेर घी चढ़ाऊंगा।

(सभी आपने मनोरथों को भगवान के समक्ष रखते हैं, भगवान की अटल श्रद्धा और शुद्ध भावना से मनोरथ पूरे हो जाते हैं।)

पंडित—भाइयो! भगवान आज प्रकट हुए हैं। अतः आज का दिन याद रखना। भूलना नहीं।

सब—अच्छा महाराज! वैशाख सुदी ५ सं० २००१ सन् १९४४ के दिन को अवश्य याद रखेंगे।

ब्राह्मण—अच्छा! अब हमको चलना चाहिये।

(भगवान की जय ध्वनि करते हुए, सब का प्रस्थान)

—*—ड्राप सीन—*—

द्वितीयांक—

तृतीय दृश्य

(भगवान के प्रकट होने के समाचार धीरे धीरे सब जगह फैल जाते हैं।)

(एक निर्धन ग्रामीण स्त्री अपने पुत्र की-विकट
अवस्था को देखकर रो रही है। उसके सामने
उसका वच्चा लेटा हुआ है।)

स्त्री—प्रिय लाल ! तेरा मुरझाया हुआ चेहरा मेरे दिल को व्याकुल कर रहा है ? क्या तू भी अब मेरे हाथ से चला जायगा ? हाय, भगवान, मैं कैसे इस वच्चे की रक्षा करूं।

(रोने लगती है)

पडोसिन—अरी वहिन, तू इतनी व्याकुल होकर क्यों रो रही है ? सच सच वता, तुझे क्या दुख है ?

स्त्री—अरी वहिन, मेरे दुख का हाल, क्या कहूँ ? कुछ कहा-नहीं जाता। वच्चा कई दिन से सख्त वीमार है। दिन प्रतिदिन सूखता जा रहा है। वहुतों का इलाज कराया किन्तु कोई लाभ न हुआ।

पडोसिन—वहिन ! धैर्य रख ! विवेक से काम ले। भगवान का नाम हृदय में लेकर, उन पर पूरा विश्वास करके वाड़ा ग्राम मे जा। वहां भगवान की एक मनोहर तथा आकर्षक नग्न मूर्ति प्रकट हुई है। वहां जो भी गये हैं, सव के मनोरथ पूरे हुए हैं। तू आज वहां पर जरूर जा, तेरा भी वच्चा ठीक हो जायगा।

स्त्री—वहिन ! मैं तेरा यह अहसान जन्म भर न भूलूंगी। तूने मुझे सच्चा रास्ता वतलाया है ! मैं भगवान के दर्शन करने अभी जाती हूँ।

पडोसिन—क्या तुझे मालूम नहीं मेरी वुढ़िया मां को अव भगवान की ही असीम कृपा से दिखाई देने लगा है ?

(स्त्री का प्रस्थान, पति का प्रवेश, स्त्री का अपने
पति से हाल कहना)

स्त्री—(पति से) क्या तुम्हें ज्ञात है कि स्टेशन श्योदासपुरा के पास बाड़ा ग्राम में भगवान की मूर्ति निकली है ? और वहां जो भी जाता है सबकी अभिलाषा पूर्ण होती है ?

पति—अरे ! ऐसा तो मैंने भी सुना है। मैं भी तुम से कहना ही चाहता था, परन्तु न कह सका। अब हमको बाड़ा जाना चाहिए और भगवान के दर्शन करने चाहिए।

(पतिपत्नि अपने बच्चे को गोदी में लेकर भगवान के दर्शन करने जाते हैं। मार्ग में मनुष्यों से उनकी भेंट)

स्त्री-पुरुष—क्यों भाई ! तू इतना खुश होकर कहाँ जा रहा है। जरा हमें भी तो बता !

एक युवक—बाड़ा ग्राम में जहाँ भगवान की नग्न मूर्ति प्रकट हुई है। हम सब उन्हीं भगवान के दर्शन करने जा रहे है। वहां जो कोई जाता है, वह खुश होकर आता है।

स्त्री-पुरुष—हां भाई ! हम भी अपने बच्चे को लेकर वहाँ ही जा रहे हैं।

युवक—देखो, सभी तरफ से लोग बाग, अपने कुटुम्ब सहित भगवान के दर्शन करने जा रहे हैं। इधर देखो, ये भगवान के दर्शन करके आये हैं ! देखो तो ये कितने खुश हैं। बच्चों की तरह उछल रहे हैं।

स्त्री-पुरुष—भाइयो आप लोग कहां से पधार रहे हो? कृपा करके हमें भी बताओ।

आगन्तुक—भाई ! हम लोग भगवान के दर्शन करके आ रहे हैं। यह देखो, भगवान के न्हवन का कपड़ा है। इसके पास रखने से कोई भी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। क्या तुम भी वहीं जा रहे हो ?

स्त्री पुरुष-युवक—(खुशी से) हां भाई हम भी वहीं जा रहे हैं। अब भगवान के दर्शनों से हमारे भी सब कष्ट मिट जायेंगे।

(भगवान के दर्शन करने चला जाना)

—०—ड्राप सीन—०—

तृतीयांक—

प्रथम दृश्य

(एक जैन ने जो कि भगवान के दर्शन करके जयपुर गया था, वहा जाकर सारा हाल जयपुर के प्रतिष्ठित सज्जनों से कहा। जयपुर के कुछ प्रतिष्ठित सज्जन, एवं पंडितगण तथा श्योदासपुरा चदलाई, चाटसू आदि के जैन लोग वहां एकत्रित हुए। भगवान को ले जाने का विचार किया, परन्तु ग्रामीणों की इच्छा के कारण भगवान को नहीं ला सके, कमेटी की स्थापना की गई]

(स्थान—याड़ा ग्राम)

सेठ—पंडितजी, आपने यहां आकर क्या देखा ?

पंडित—सेठ साहब ! सब कुछ देखा। भगवान की पूजा की, प्रक्षाल की। देखिए, उनकी प्रक्षाल करने से मेरा सिर का दर्द दूर हो गया।

सेठ—पंडितजी ! यह बात तो सभी जगह सुनाई देती है। परन्तु आपने क्या विशेष बात देखी।

पंडित—अच्छा, आपका अभिप्राय विशेष बात पूछने का है। सेठ साहब ! भगवान की मूर्ति को देखने से प्रतीत हुआ है कि ये हमारे छटे तीर्थंकर भगवान पद्मप्रभू की है।

सेठ—पंडितजी, आपने बात तो अच्छी कही, परन्तु आप हमें यह बताओ कि भगवान को आपने पद्मप्रभू कैसे पहिचाना ?

पंडित—सेठ साहब ! भगवान की मूर्ति पर कमल का चिन्ह है।
दिगम्बर मूर्ति है वो, पद्म प्रभु नाथ भगवान की।
कमल का चिन्ह बतलाता, वो मूर्ति जगत वन्दन की।

सब—बोलिए, भगवान पद्मप्रभू की जय ! जय !! जय !!!

सेठ—पंडितजी, हमें भगवान को जयपुर ले चलना चाहिए।

एक व्यक्ति—सेठ साहब ! हम तो भगवान को चाटसू ले जायेंगे। चाटसू पास ही है।

एक दर्शक—हम तो ऐसा विचार कर रहे थे कि भगवान को श्योदासपुरा ले जाया जावे।

ब्राह्मण—सेठ साहब ! सारे ग्रामवासी यह चाहते हैं कि भगवान यहीं पर रहें। देखिए, भगवान को प्रकट करने वाला मूला, इन बातों को सुनकर कितनी देर से रो रहा है ?

सेठ—अच्छा महाराज ! अगर ग्रामवालों की ऐसी ही अभिलाषा है तो भगवान को यहीं रखना चाहिए।

सब—हां सेठ साहब ! यह विचार तो अति उत्तम है। लेकिन अब जनता काफी आने लग गई है, उनके लिए ठहरने आदि सब बातों का प्रबन्ध जरूरी है। यहां कोई जैनी भाई का मकान नहीं। आस पास के जैनी भाई भी अब इतने बड़े कार्य को कैसे करें ? इसके लिए सभी को मिल कर काम करना पड़ेगा। यह तो अब दिगम्बर जैनों का अतिशय क्षेत्र बन रहा है।

सेठ—हां ! अब हमें यहां के प्रबन्ध के लिए कमेटी का निर्माण करना चाहिए, जिससे यात्रियों को किसी प्रकार का कष्ट न उठाना पड़े और सारा इन्तजाम अच्छी तरह हो।

सब—हां, सेठ साहब ! कमेटी का निर्माण होना तो अत्यन्त आवश्यक है।

—ड्राप सीन—

तृतीयाङ्क—

द्वितीय दृश्य

[सावन का समय है, चारों ओर हरियाली छा रही है। प्रकृति के दृश्य अत्यन्त मनोहर दृष्टिगोचर हो रहे हैं। अनेक भक्त एवं श्रावक ऐसे समय में भगवान पद्मप्रभु के दरबार में भक्ति मे लवलीन हैं। श्री राजेन्द्रलाल, जो कि फिरोजाबाद के निवासी हैं वे भी अपनी पत्नि के गर्भस्थ बच्चे की रक्षा के लिए आये हुए हैं। जयपुर के प्रतिष्ठित सज्जन श्री सोभाग्यमलजी जैन भी अपने कुटुम्ब सहित आये हुए हैं।

राजेन्द्र०—भगवन्। आप दीनबन्धु, दीनरक्षक और गुणों के सागर हो! आपके दरबार में जो कोई भी आया है, आपने किसी को भी निराश नहीं लौटाया है। हे प्रभु तू त्याग और सत्य की विमल मूर्ति है। तेरी मनोहर मूर्ति ने दर्शकों एवं भक्तों के हृदयों में हर्ष का सागर बहा दिया है। भगवान्! मेरी पत्नि के जितने भी बच्चे हुए, सब चले गये। हे नाथ! अगर गर्भस्थ बच्चे की रक्षा हो गई तो आपके गुण जन्म भर गाता रहूँगा।

सौभाग्य०—हे करुणासार। दीनानाथ! दीनबन्धु! तुम्हारी महिमा अपार है, जिसने भी आपका यश गाया, वह धन सम्पत्ति से भरपूर हुआ। भगवन्। मेरी यह परम इच्छा है कि मैं हमेशा आपके दर्शन करता रहूँ।

एक ग्रामीण—भगवान की भक्ति से सब कार्य हो जाते हैं। आपको मालूम होना चाहिए कि हमारे बाड़ा ग्राम में हम पीने के लिए पानी के लिए भी तरसते थे। पर

आज भगवान की कृपा से सब कुओं में काफी पानी हो गया है। यहां जानवरों में रोग हो जाता था पर जबसे मूर्ति निकली है किसी जानवर के रोग नहीं हुआ। हमारी खेती दिन दूनी और रात चौगुनी बढेगी। बाजरा खूब होगा। अब तो गेहूँ भी बहुत होंगे, जो कभी होते नहीं थे। यह सब भगवान की महिमा ही का प्रताप है। भगवान की भक्ति से सब मनोरथ सफल होते हैं।

राजेन्द्र०—हां, भाई तुम्हारा कहना सच है। हमारा कार्य भी पूरा होगा।

गायन—

दुःखों में पद्म भगवान, हम पै दया दिखाना।
दर्शन दिखा के पद्मा, सुखमय हमें बनाना ॥ १ ॥
सर्वस्व देके अपना, कर्त्तव्य पथ बताया।
पद्मा! दया तू करके, आके उसे बताना ॥ २ ॥
दुर्दशा हो रही है, संसार में हमारी।
तप त्याग, ज्ञान, का तू सच्चा सबक पढाना ॥३॥
दुख में प्रभू हैं व्याकुल, सारे ही भक्त तेरे।
भक्तों पे कर दया तू, दुख उनका झट मिटाना ॥४॥
मद लोभ क्रोध माया, संसार में बुरी है।
आकर प्रभू तू जगका अज्ञान सब हटाना ॥ ५ ॥
हिंसा व झूंठ चोरी, संसार में बुरी है।
"सेठी" को इनसे प्रभू तू, आकर के झट बचाना ॥६॥

तृतीयांक—

तृतीय दृश्य

(दिनांक २५ जौलाई सन् १९४४ को श्री सौभाग्यमल

सकुटुम्ब जयपुर जाने का विचार करते हैं। दिन में एक गाडी वाले को जाने के लिए कह देते हैं। संध्या समय सौभाग्यमल का स्टेशन प्रस्थान-आकाश में विजली कडक रही है। अंधकार पूर्ण रात्रि है। जंगल वडा डरावना प्रतीत हो रहा है। गाडीवाला रास्ता भूल जाता है। और दूसरे रास्ते पर गाडी को ले लेता है। मार्ग में चोरों का मिलना, सौभाग्यमल एवं उसके कुटुम्ब का भगवान से प्रार्थना करना, सिपाही के भेप में किसी का आना, चोरों को दण्ड देना, एवं सौभाग्यमल का भगवान की जय ध्वनि करते हुए जयपुर प्रस्थान]

सौभाग्य—गाड़ी वाले ! वैल धीरे धीरे क्यों चल रहे हैं ?

गाडीवाला—सेठजी। देखिये, कितना अन्धकार है। हाथ से हाथ नहीं सूझता, इसके अलावा जंगल कितना भयंकर दिखाई दे रहा है।

सौभाग्य—तो, फिर क्या होगा ? स्टेशन कितनी दूर है ?

गाडीवाला—सेठ साहव ! चिन्ता करने की कोई वात नहीं। आधी दूर आगये हैं। भगवान रक्षा करेंगे।

एक स्त्री–अन्धकार कितना तीव्र होता जा रहा है। जंगल कितना डरावना मालूम होता है।

सौभाग्य–सावधानी से वैठो कहीं कोई सामान न गिर पडे।

गाडीवाला—सेठजी, सामान तो सारा वंधा हुआ है किन्तु यहां चोर भी पीछा करते हैं।

सौभाग्य—वोलो । भगवान, पद्मप्रभु की जय। जय। जय॥

(एक कर्कश आवाज का सुनाई देना)

चोर—यह कौन है ? जो इस समय इस जंगल से गाडी ले जा रहा है ?

गाडीवाला—सेठजी, यह तो चोरों की आवाज है।

सोभाग्य—चोर। (घबराना)

[भगवान से प्रार्थना]

गायन—

अब सुनो पद्म भगवान, हरो दुख आन।
ओ भक्त पियारा, अब तेरा हमको सहारा ॥१॥
तू सर्व शक्ति का दाता है, सारे जगका का तू त्राता है।
चोरों से शीघ्र छुडादो, पद्म पियारा ॥ अब तेरा ॥२॥
तू दया शान्ति का अग्रदूत, मानवता का है प्रिय सपूत!
श्री पद्म दया कर कष्ट मिटाओ सारा ॥ अब तेरा ॥ ३ ॥
मानवता का तू प्यारा है, भक्तों का पद्म सहारा है।
यदि कृपा दृष्टि हो जाये, पाऊं सहारा ॥ अब तेरा ॥४॥
भक्तों की आशा के तारे, श्री पद्म गुणों के भण्डारे।
"सौभाग्य" का करुणासागर, करो निस्तारा ॥अब तेरे॥५॥

मंत्री—हे प्रभू, तू ही सबका रक्षक है। पद्मप्रभु भगवान की जय! जय!! जय!!!

चोर—अबे गाडी वाले! गाडी क्यों नहीं ठहराता ?

सौभाग्य—भाइयो आप लोग कौन हो ?

चोर—क्या तुम जानते नहीं! जो कुछ तुम्हारे पास धन है, हमारे सामने रख दो, वरना मार दिये जावोगे।

सोभाग्य—भाई! हम तो भगवान के दर्शन करने के लिए आये थे, हमारे पास धन नहीं है।

चोर—भगवान कौन है ? हम नहीं जानते। जल्दी धन रखते हो या नहीं ?

सौभाग्य—भाई, चोरी करना ठीक नहीं। जो चोरी करता है

हमेशा दुख पाता है। क्या तुम लोग भगवान से नहीं डरते जो उन्हीं के दरबार में ऐसा करते हो ?

चोर— या तो राजी से सामान रखदो, वरना तुम्हारी पिटाई करके धन लिया जायगा। देखेंगे फिर तेरे भगवान को।

[भगवान से प्रार्थना करना]

सब—हे प्रभू ! भक्तों की रक्षा का समय यही है

[चोरों का स्त्रियों की तरफ बढ़ना, स्त्रियों का रोना, एक सैनिक भेषधारी का अचानक प्रकट होना एवं स्टेशन तक गाड़ी वाले के साथ जाना]

सैनिक—ये कौन हैं, जो इस समय भगवान के भक्तों को सता रहे हैं ?

चोर—तू कौन है, जो हमारे सामने आया है ? क्या तेरी मौत तुझे यहां ले आई है।

सैनिक—यदि तुम भगवान के भक्तों को सताओगे, तो बुरी तरह मेरे हाथों से दण्ड पाओगे।

चोर—हम तेरी इन बातों में नहीं आ सकते।

[चोरों तथा सैनिक में हाथा पाई होना, चोरोंका घायल होना, एवं भगवान पद्मप्रभू की जय बोलना। सौभाग्यमल एवं उसके कुटुम्ब द्वारा भगवान की जय ध्वनि करना एवं सौभाग्यमल द्वारा भगवान की स्तुति करना तथा जयपुर को प्रस्थान]

सौभाग्य—

❀ गायन ❀

(तर्जः—जो दिल मे खुशी बनकर......... ..

श्री पद्म तुम्हारी भक्ति से हिंसक पापी तक पार हुए।

जो दुःख उठाकर आये थे, वो सुख उठाकर चले गए ॥१॥
यह दुर्लभ मानव जीवन पा, जिनने गंवाया पापों में।
श्री पद्म तुम्हारी करुणा से, वे भवसागर को तैर गए ॥२॥
जो निर्धनता से व्याकुल थे, जो ग्रासों तक पर मरते थे।
श्री पद्म तुम्हारे दर्शन से, वो धन पाकर के मुग्ध हुए ॥३॥
"मानव" तू मत बन अज्ञानी, श्रीपद्म क पथ पर बढ़ता जा।
श्री पद्मकी अनुपम भक्ति से, नव ज्योति जगाकर चले गये ॥४॥

—ड्राप सीन—

॥ इति ॥

चौदहवाँ अध्याय

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

नवग्रह अरिष्ट निवारक विधान

श्लोक

प्रणाम्याद्यंततीर्थेशं धर्मतीर्थप्रवर्त्तकं ।
भव्यविघ्नोपशांत्यर्थं, ग्रहार्च्या वर्ण्यते मया ॥
मार्तण्डेन्दुकुजसौम्य-, सूरसूर्यकृतांतकाः ।
राहुश्च केतुसंयुक्तो, ग्रहशांतिकरा नव ॥

दोहा—आदि अन्त जिनवर नमों, धर्म प्रकाशनहार ।
भव्य विघ्न उपशांत को, ग्रहपूजा चित धार ॥
काल दोष परभावसौं, विकलप छूटे नाहिं ।
जिन पूजा में ग्रहन की, पूजा मिथ्या नाहिं ॥
इस ही जम्बूद्वीप में, रवि शशि मिथुन प्रमान ।
ग्रह नक्षत्र तारा सहित, ज्योतिश्चक्र प्रमान ॥
तिनही के अनुसार सौं कर्म चक्र की चाल ।
सुख दुख जानै जीव को, जिन वच नेत्र विशाल ।
ज्ञान प्रश्न व्याकर्ण में, प्रश्न अङ्ग है आठ ॥
भद्रबाहु मुख जनित जो, सुनत कियो मुख पाठ ॥

अवधिधार मुनिराजजी, कहे पूर्व कृत कर्म ।
उनके वच अनुसार सौं, हरे हृदय को मर्म ॥

। समुच्चय पूजा ।

दोहा—अर्क चन्द्र कुज सोम गुरु, शुक्र शनिश्चर राहु ।
केतु ग्रहारिष्ट नाशने, श्री जिन पूज रचाहु ॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रह अरिष्ट निवारक चतुर्विंशति जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अष्ट—कगीतिका छन्द

क्षीर सिंधु समान उज्ज्वल, नीर निर्मल लीजिये ।
चौबीस श्रीजिनराज आगे, धार त्रय शुभ दीजिये ॥
रवि सोम भूमज सौम्य गुरु कवि, शनि नमो पूतकेतवे ।
पूजिये चौबीस जिन, ग्रहारिष्ट नाशन हेतवे ॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीखण्ड कुमकुम हिम सुमिश्रित, घिसौं मनकर चावसौं ।
चौबीस श्रीजिनराज अघहर, चरण चरचौं भावसौं ॥रवि०॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर जिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत अखण्डित सालि तंदुल, पुंज मुक्ताफलसमं ।
चौबीस श्रीजिनराज पूजन, नाम ह्वै नव ग्रह भ्रमं ॥रवि॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

कुंद कमल गुलाब केतकि, मालती जाही जुही।
कामबाण विनाश कारण, पूजि जिनमाला गुही ॥रवि०॥

ॐ ह्रीं सर्व ग्रहारिष्टनिवारक श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी सुहारी पुवा पापर, लेउं मोदक घेवरं।
शत छिद्र आदिक विविध व्यंजन, क्षुधा हर बहु सुखकरं॥रवि॥

ॐ ह्रीं सर्व ग्रहारिष्टनिवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिदीप जगमग जोत तमहर, प्रभू आगे लाइये।
अज्ञान नाशक निज प्रकाशक, मोह तिमिर नसाइये ॥रवि०॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णा अगर घनसार मिश्रित, लोंग चन्दन लेइये।
ग्रहारिष्ट नाशक हेत भविजन, धूप जिन पद खेइये ॥रवि०॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम पिस्ता सेव श्रीफल, मोच नीबू सद फलं।
चौबीस श्रीजिनराज पूजत, मनोवांछित शुभ फलं ॥रवि०॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध सुमन अखण्ड तन्दुल, चरु सुदीप सुधूपकं।
फल द्रव्य दूध दही सुमिश्रित, अर्घ देय अनूपकं ॥रवि०॥

ॐ ह्रीं सर्व ग्रहारिष्टनिवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

। जयमाला ।

दोहा—श्री जिनवर पूजा किये, ग्रहारिष्ट मिट जाय।
पंच ज्योतिषी देव मिल, सब सेवे प्रभु पांय ॥

। पद्धडी छन्द ।

जय २ जिन आदि महंत देव, जय अजित जिनेश्वर करहि सेव।
जय २ संभव भव २ निवार, जय जय अभिनन्दन जगत तार ॥
जय सुमति २ दायक विशेष, जय पद्म प्रभु लख पदम लेप।
जय २ सुपार्स हर कर्म फास, जय २ चन्द्रप्रभु सुख निवास ॥
जय पुष्पदन्त कर कर्म अन्त, जय शीतल जिन शीतल करंत।
जय श्रेय करन श्रेयांस देव, जय वासुपूज्य पूजत सुमेव ॥
जय विमल २ कर जगतजीव, जय २ अनंतसुख अति सदीव।
जय धर्म धुरन्धर धर्मनाथ, जय शांति जिनेश्वर मुक्ति साथ ॥
जय कुंथुनाथ शिव सुखनिधान, जय अर जिनेश्वर मुक्तिथान।
जय मल्लिनाथ पद पद्म भास, जय मुनिसुव्रत सुव्रत प्रकाश ॥
जय जय नमिदेव दयाल संत, जय नेमनाथ तसु गुण अनंत।
जय पारस प्रभु संकट निवार, जय वर्धमान आनन्दकार ॥
नव ग्रहअरिष्ट जब होय आय, तब पूजै श्री जिनदेव पाय।
मन वच तन मन सुख सिंधु होय, ग्रहशांति रीत यह कही जोय ॥

ॐ ह्रीं सर्व ग्रहारिष्टनिवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—चौबीसों जिनदेव प्रभु, ग्रह सम्बन्ध विचार।
पुनि पूजों प्रत्येक तुम, जो पाऊं सुख सार ॥

। इत्याशीर्वादः ।

। सूर्यग्रह अरिष्ट निवारक पद्मप्रभु पूजा ।

सोरठा—पूजों पद्म जिनेन्द्र, गोचर लग्न विषै यदा ।
सूर्य करे दुख दंद, दुख होवे सब जीवको ॥

अडिल्ल छन्द—पंच कल्याणक सहित ज्ञान पंचम लसैं ।
समोसरन सुख साध मुक्ति मांही वसैं ॥
आह्वानन कर तिष्ठ सन्निधि कीजिये ।
सूरज ग्रह हो शांत जगत सुख लीजिये ॥

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभु जिन अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं । परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

। छन्द त्रिभंगी ।

सोनेकी झारी सब सुखकारी, क्षीरोदधि जल भर लीजे ।
भव ताप मिटाई तृषा नशाई, धारा जिन चरनन दीजे ॥
पद्मप्रभु स्वामी शिवमग-गामी, भविक मोर सुन कूजत हैं ।
दिनकर दुख जाई पाप नसाई, सब सुखदाई पूजत हैं ॥

ॐ ह्रीं श्रीसूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलियागिरि चंदन दाह निकंदन, जिनपद चंदन सुखदाई ।
कुमकुम जुत लीजे अरचन कीजे, ताप हरीजे दुख दाई ॥
॥ पद्मप्रभु स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन्दुल गुणमंडित सुर भविमंडित, पूजत पंडित हितकारी।
अक्षय पद पावो अक्षत चढ़ावो, गावो गुण शिव सुखकारी॥

॥ पद्मप्रभु स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्राय पंच-कल्याणकप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मचकुंद मंगावे कमल चढ़ावे, वकुल वेल दग चित हारी।
मंदर ले आवो मदन नसावो, शिवसुख पावो हितकारी॥

॥ पद्मप्रभु स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय पंच-कल्याणकप्राप्ताय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गौ घृत ले धरिये, खाजे करिये, भरिये हाटकमय थारी।
व्यंजन बहु लीजे पूजा कीजे, दोष क्षुधादिक अघ हारी॥

॥ पद्मप्रभु स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय पंच-कल्याणकप्राप्ताय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणि दीपक लीजे घीव भरीजे, कीजे घनसारक बाती।
जग जोत जगावे जगमग२, मोहतिमिरिको है घाती॥

॥ पद्मप्रभु स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कालागुरु धूपं अधिक अनूपं, निर्मल रूपं घनसारम्।
सेवो प्रभु आगे पातक भागे, जागे सुख दुख सब हरनं॥

॥ पद्मप्रभु स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल ले आम्रो सेव चढावो, अन्य अमरफल अविकारं ।
वांछित फल पावो जिनगुण गावो, दुख दरिद्र वसु कर्महरं ॥
॥ पद्मप्रभु स्वामी० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल चन्दन लाया सुमन सुहाया, तन्दुल मुक्ता सम कहिये ।
चरु दीपक लीजे धूपसु खेजे, फल ले वसु कर्मन दहिये ॥
॥ पद्मप्रभु स्वामी ॥

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सलिल गंध ले फूल सुगंधित लीजिये,
तन्दुल ले चरु दीप धूप खेवीजिये ॥
कमल मोदको दोष तुरन्त ही धूजिये ।
पद्मप्रभु जिनराज सुसन्मुख हूजिये ॥

ॐ ह्रीं श्रीसूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

। जयमाला ।

जै जै सुखकारी सब दुखहारी, मारी रोगादिक हरणम् ।
इन्द्रादिक आवे, प्रभु गुण गावे, मन्दिर गिर मज्जन करणं ॥
इत्यादिक साजैं, दुंदुभि वाजैं, तीन लोक सेवत चरणं ।
पद्मप्रभु पूजत, पातक धूजत, भव भव भव मांगत शरणं ॥

। पद्धडी छन्द ।

जय पद्मप्रभु पूजा कराय, सूरज ग्रह दूषण तुरत जाय।
नौ योजन समवसरण बखान, घण्टा झालरसहित वितान ॥
शत इन्द्र नमत तिस चरण आय, दशशत गणधर शोभा धराय
वाणी घनघोर जु घटा जोर, घन शब्द सुनत भव नचै मोर।
भामंडल आभा लसत भूर, चन्द्रादिक कोट कला जु सूर ॥
तहां वृक्ष अशोक महा उतंग, सब जीवन शोक हरैं अभंग ॥
सुमनादिक सुर वर्षा कराय, वे दास चंवर प्रभुपै ढराय।
सिंहासन तीन त्रिलोक ईश, त्रय छत्र फिरे नग जड़त शीश ॥
मनभइ आवत मकरन्द सार, त्रय धूलि सार, सुन्दर अपार।
कल्याणक पांचों सुख निधान, पंचम गति दाता है सुजान ॥
साड़े बारह कोड़ी जु सार, बाजै बिन वेद बजैं अपार।
धरणेंद्र नरेंद्र सुरेंद्र ईश, त्रिलोक नमत कर धरि ऋषीश ॥
सुर मुक्त रमा बन नमत बार, दोउ हाथ जोड़कर बार बार।
याके पद नमत आनन्द होय, दुति आगे दिनकर छिपत जोय
मन शुद्ध समुद्र हृदय विचार, सुखदाता सब जनको अपार।
मन वच तन कर पूजा निहार, कीजे सुखदायक जगत सार ॥

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक-प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सब जन हितकारी, सुख अति भारी, मारी रोगादिक हरणं।
पापादिक टारै, ग्रह निरवारै, भव्य जीव सब सुख करणं ॥

इति आशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चंद्र अरिष्टनिवारक श्रीचंद्रप्रभु पूजा।

सोरठा—निश पति पीड़ा ठान, गोचर लग्न विषै परे।
वसु विधि चतुर सुजान, चंद्रप्रभु पूजा करे॥

अडिल्ल छन्द।

चंद्रपुरी के बीच चंद्र प्रभु अवतरै।
लक्षण सोहे चंद्र सबनके मन हरै॥
भव्य जीव सुखकाज द्रव्य ले धरत हैं।
सोम दोषके हेत थापना करत हैं॥

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभु जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथाष्टक

कंचन झारी जड़त जड़ाउ, क्षीरोदक भर जिनहि चढ़ाउ।
जगत गुरु हो, जै जै नाथ जगत गुरु हो॥
चंद्रप्रभु पूजों मन लाय, सोम दोष तातैं मिट जाय।
जगत गुरु हो जै जै नाथ जगत गुरु हो॥

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक-प्राप्ताय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलियागिरि केशर घनसार, चरचत जिन भव ताप निवार।
॥ जगत० ॥ चंद्रप्रभु० ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक-प्राप्ताय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

खण्डरहित अक्षत शशिरूप, पुंज चढ़ाय होय शिवभूप।
॥ जगत० ॥ चंद्रप्रभु० ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक-प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल कुंद केतकी अनंग, कल्पतरू जस हरैं अभंग।
॥ जगत० ॥ चंद्रप्रभु० ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक-प्राप्ताय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर बावर मोदक लेउ, दोष क्षुधाहर थार भरेउ।
॥ जगत० ॥ चद्रप्रभु ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक-प्राप्ताय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय दीपक घृत जु भरेउ, वाती वरत तिमिर जु हरेउ।
॥ जगत० ॥ चंद्रप्रभु ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक-प्राप्ताय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कालागुरुकी कनी खिवाय, वसु विधि कर्म जु तुरत नसाय।
॥ जगत० ॥ चंद्रप्रभु ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल अंब सदा फल लेउ, चोच मोच अमृत फल देउ।
॥ जगत० ॥ चंद्रप्रभु ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध पुष्प शालि नैवेद्य, दीप धूप फल ले अनवेद्य ।
॥ जगत० ॥ चंद्रप्रभु ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अडिल्ल छन्द ।

जल चंदन बहु फल जु तंदुल लीजिये ।
दुग्ध शर्करा सहित सु व्यंजन कीजिये ।
दीप धूप फल अर्घ बनाय धरीजिये ।
पूजों सोम जिनेंद्र सुदुःख हरीजिये ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला ।

चंद्रप्रभु चरणं, सब सुख भरणं, करणं आतम हित अतुलं ।
दर्द जु हरणं, भवजल तरणं, मरनहरं शुभकर विपुलं ॥

त्रोटक छंद ।

भव्य मन हृदय मिथ्यात्त तम नाशकं ।
केवलज्ञान जग—सूर्य प्रतिभासकं ॥
चन्द्रप्रभु चरण मन हरण सब सुखकरं ।
शाकिनी भूत ग्रह सोम सब दुखहरं ॥
वर्धनं चन्द्रमा धर्म जलनिधि महा ।
जगत सुखकार शिव-मार्ग प्रभुने गहा ॥ चन्द्रप्रभु० ॥
ज्ञान गम्भीर अति धीर वर वीर है ।
तीनहूँ लोक सब जगतके मीर हैं ॥
विकट कन्दर्पको दर्प छिनमे हरा ।
कर्म वसु पाय सब आपही तैं झरा ॥ चन्द्रप्रभु० ॥

सोमपुर नगर मे जन्म प्रभु ने लहा।
क्रोध छल लोभ मद मान माया दहा॥ चन्द्रप्रभु० ॥
देह जिनराजकी अधिक शोभा धरे।
स्फटिकमणि कांति ताहि देख लज्जा करे॥ चन्द्रप्रभु० ॥
आठ अरु एक हज्जार लक्षण महा।
दाहिने चरणको निशपति गह रहा॥ चन्द्रप्रभु० ॥
कहत मनसुख श्री चन्द्रप्रभु पूजिये।
सोम दुख नाशके जगत भय धूजिये॥ चन्द्रप्रभु० ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप ताप के नाश को धर्मा मृत रस कूप।
चन्द्रप्रभु जिन पूजिये, होय जो आनन्द भूप॥(इत्याशीर्वादः)

मंगल अरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्य की पूजा।

दोहा—वासुपूज्य जिन चरण युग, भूसुत दोष पलाय।
तातैं भवि पूजा करो, मनमें अति हरषाय॥

। अडिल्ल छन्द- वासुपूज्यके जन्म समय हरषाय के।
आये गज ले साज इन्द्र सुख पाय के॥
ले मंदिर गिरजाय जु न्हवन करायके।
सौंपे माता जाय जो नाम धरायके॥

ॐ ह्रीं भोम अरिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्य जिन ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

कनक झारी अधिक उत्तम रतन जड़ित सु लीजिये।

पद्म द्रहको जल सुगंधित कर धार चरनन दीजिये ॥

भूतनय दूषण दूर नाश जु सकल आरत टारके ।
श्री वासुपूज्य जिन चरनन पूजौं हर्ष उरमें धारके ॥

ॐ ह्रीं भौम अरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री खण्ड मलय जु महा शीतल, सुरभि चन्दन घिस धरौं ।
जिन चरन चरचौं भविक हित, सौं पाप ताप सबै हरौं ॥
॥ भूतनय० ॥

ॐ ह्रीं भौमारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय चदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत अखण्डित सुरभि मण्डित, थारि भर कर में गहौं ।
अक्षत सुपुंज दिचाय जिनपद, अखप पद मैं जो लहौं ॥
॥ भूतनय० ॥

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

कमल कुन्द गुलाब चम्पा, पारिजातक अति घने ।
पहुप पूजत चरण प्रभुके, कुसुम शर तब ही हने ॥
॥ भूतनय० ॥

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पंचकल्याणप्राप्ताय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

गो घृत सद्य मंगाय भविजन, दुग्ध मिश्रित शर्करी ।
चरु चारु लेकर जजौं जिनपद, क्षुधा वेदन सब हरी ॥
॥ भूतनय० ॥

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मणि जडित कंचन दीपसुन्दर, सद्य घृत तामें भरो ।
उद्योत कर जिन चरण आगे, हृदय मिथ्यातम हरो ॥
॥ भूतनय० ॥

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

काला अगर घन सार मिश्रित, देव फूल सुहावने ।
खेवत धुंआ सो सुरंग मोदित, करत वसु कर्मन हने ॥
॥ भूतनय० ॥

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय धूप निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल अनार जो आम नींबू, सोच मोच सुधा फलं ।
जिन चरन चरचत फलन सेती, मोक्ष फलदाता रलं ॥
॥ भूतनय० ॥

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय फल निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गंध अक्षत पुष्प विंजन, दीप धूप फलोत्तमं ।
जिनराज अर्घ चढ़ाय भविजन, लेउ मुक्ति सुखोत्तमं ॥
॥ भूतनय० ॥

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभित जल श्रीखण्ड कुसुम तन्दुल भले ।
विंजन दीपक धूप सदा फल सों रले ॥

वासुपूज्य जिन चरण अर्घ शुभ दीजिये।
मंगल ग्रह दुख टार सु मंगल कीजिये ॥

जयमाला।

मंगल ग्रह हरनं मंगल करनं. सुखकर शिव-रमनी वरनं।
आतम हित करनं भवजल तरनं, वासुपूज्य सेवत चरनं।

। छन्द ।

इन्द्र नरेन्द्र खगेन्द्र जु देव, आय करें जिनवर की सेव।
वासुपूज्य जिन पूजा करो, मंगल दोष सकल परिहरो ॥
विजया जननी मन हर्षाय, जनक सु वासुपूज्य सुखदाय।
शुभ लक्षण कर लक्षित काय, चम्पापुर जन्मे जिनराय ॥वा०॥
महिमा अंक चरन मे परो, देखत सबको संशय हरो ॥वा०॥
फागुन असि जो चौदस जान, हो वैराग्य सु धरियो ध्यान।
घात घातिया केवल पाय, जैन धर्म जग मे प्रकटाय ॥वा०॥
षट शत एक मुनीश्वर भयो, गिरि मंदार लहि शिव गयो।
मंगल हेतु जजों जिनराय, मंगल ग्रह दूषण मिट जाय ॥वा०॥

। घत्ता छन्द ।

पूजन प्रभु की कीजे दोष हरीजे, छीजे पातक जन्म जरा।
सुख हो अविकारी ग्रह दुखहारी, भवजल भारी नीरतरा ॥

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय महा अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्री भौमअरिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्य जिनपूजा संपूर्ण।

अथ बुधग्रह अरिष्टनिवारक आठ जिन पूजा ।

सोम्य ग्रह पीड़ा करै पूजों आठ जिनेश ।
आठों गुण जिनमें लसैं, नावत शीश सुरेश ॥
विमलनाथ जिन नमों, नमों जु अनन्तनाथ जिन ।
धर्मनाथ जिन वन्दि वन्दिहौं, शांति शांति जिन ॥
कुन्थु अरह जिन सुमरि, सुमरि मनि वर्धमान जिन ।
इन आठों जिन जजों, भजों सुख करन चरन तिन ॥
बुध महाग्रह अशुभता, धरत करत दुख जोर जब ।
आह्वानन कर तिष्ठ तिष्ठ, सन्निधि करहु तब ॥

ॐ ह्रीं बुधग्रह अरिष्ट निवारक श्री अष्ट जिनाः अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट सन्निधिकरणम्। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

। अथाष्टक ।

। गीतिका छन्द ।

हेम झारी जड़ित बहु जल, भरों क्षीरोदक तनं ।
धार दे जिनचरण आगे, पाप ताप जु नाशनं ॥
विमलनाथ अनंतनाथ, सु धर्मनाथ जु शांति ये ।
कुंथु अरह जु नमिय जिन महावीर आठों जिन जजे ॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्री अष्टजिनेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभि सुरभित लेउ चन्दन, घिसों कुमकुम संग ही ।

जिन चरन चरचत मिटे ग्रीषम, मोह ताप जु भागही ॥
॥ विमलनाथ ॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्री अष्टजिनेभ्यो चन्दनं नि०

अक्षत अखंडित उभय कोट, समान शुभ्र जु अति घने ।
ले कनक थार भराय भविजन, पुंज देत सुहावने ॥
॥ विमलनाथ ॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो अक्षत नि०

मंदार माली मालती, मचकुन्द मरुवा मोतिया ।
अमल कुन्द जु कुसुम करना, कामबान जु घातिया ॥
॥ विमलनाथ ॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो पुष्पं नि०

घृत शुद्ध मिश्रित शर्करामृत, करहु विंजन भावसों ।
ग्रह बुद्ध शांतिक होत जिनके, चरन चरचों चावसों ॥
॥ विमलनाथ ॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो नैवेद्यं नि०

मणि जड़ित हाटक दीप सुन्दर, वर्तका घनसार है ।
सर्पि सहित शिखा प्रकाशित, आरती तमहार है ।
॥ विमलनाथ ॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्री अष्टजिनेभ्यो दीपं नि०

लोबान अगर कपूर चन्दन, लौंग चूरन लेइये ।
वह्नि धूम विवर्जितम्, जिन चरन आगे खेइये ॥
॥ विमलनाथ ॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो धूपं नि०

कल्पपादप जनित श्रीफल, फल समूह चढाइये।
भक्ति भाव वढाय करके, सरस श्रीफल लाइये॥
॥ विमलनाथ ॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो फलं नि०

शुभ सलिल चन्दन सुमन अत्तत, क्षुधा हर चरु लीजिये।
मणि दीप धूपक फल सहित, वसु द्रव्य अर्घ करीजिये॥
॥ विमलनाथ ॥

ॐ ह्रीं श्री बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्योअर्घं नि०

जल चंदन आदिक द्रव्य ले पूजों वसु जिनराय।
सौम्य ग्रह दूषण मिटे, पूरन अर्घ चढाय॥
॥ विमलनाथ ॥

ॐ ह्रीं श्री बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो महा अर्घं।

। जयमाला ।

विमलनाथ जिन नमों, जु अनन्तनाथ जिन।
धर्मनाथ पुनि नमों, नमों शांति कर्ता तिन॥
कुन्थुनाथ पद वन्दि, वन्दिहों अरहनाथ जिन।
नमिय प्रणमि जिन पाय, पाय जिन वर्धमान॥
ये आठों जिनरायको, हाथ जोड़ शिर धरत हों।
सोम-तनुज दुख हरनको, मंगल आरति करत हों॥

। पद्धडी छन्द ।

जय विमल विमल आतम प्रकाश।
षट द्रव्य चराचर लोक वास॥

जय जय अनन्त गुण है अनंत ।
सुर नर जस ,गावत लहैं न अंत ॥
जय धर्म धुरंधर धर्मनाथ ।
जग जीव उधारन मुक्ति साथ ॥
जय शांतिनाथ जग शांति करन ।
भव जीवनके दुख दारिद्र हरन ॥
जय कुंथु जिनं कुंथादि जीव ।
प्रतिपालन कर सुख दे अतीव ॥
जय अरह जिनेश्वर अष्ट कर्म ।
रिपु नाश लियो शिव रमन शर्म ॥
जय नमिय नमिय सुर नर खगेश ।
इन्द्रादि चन्द्र थुति करत शेष ॥
जय वर्धमान जग वर्धमान ।
उपदेश देय लहि मुक्ति थान ॥
शशि सुत अरिष्ट सव दूर जाय ।
भव पूजे अष्ट जिनेंद्र पाय ॥
मन वच तन कर जुग जोड़ हाथ ।
मनसिंधु जलधि तव नमत माथ ॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो अर्घं नि०

ये आठ जिनेश्वर, नमत सुरेश्वर, भव्य जीव मंगल करनं ।
मन वांछित पूरे, पातक चूरे, जन्म मरण सागर तरनं ॥

। इत्याशीर्वादः ।

। अथ गुरुग्रह अरिष्टनिवारक अष्टजिनपूजा ।

मन वच काया शुद्ध कर, पूजों आठ जिनेश ।
गुरु अरिष्ट सब नाश हों, उपजे सुक्ख विशेष ॥

छप्पय

ऋषभदेव जिनराज, अजित जिन सम्भव स्वामी।
अभिनन्दन जिन सुमति, सुपारस शीतल नामी॥
श्री श्रेयांस जिनदेव, सेव सब करत सुरासर।
मन वांछित दातार, मारजित तीन लोक गुरु॥
संवौषट् ठः ठः तिष्ठ, सुसन्निधि हूजिये।
गुरु अरिष्टके नाशको, आठ जिनेश्वर पूजिये॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक अष्ट जिना अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः। अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

उज्ज्वल जल लीजे, मन शुचि कीजे, हाटकमय भृङ्गार भरं।
जिन धार दिवाई, तृषा नसाई, भवजल निधि वे पार परं॥
ऋषभ अजित, संभव अभिनन्दन, सुमति सुपारसनाथ वरं।
शीतलनाथ श्रेयांस जिनेश्वर, पूजत सुरगुरु दोपहरं॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो जलं नि०

मलयागिर चन्दन, दाह निकन्दन, कुंकुम शुभ ले घनसारं।
चरचों जिन चरनं, भव तप हरनं, मनवांछित सब सुख निकरं॥
॥ ऋषभ० ॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्री अष्ट जिनेभ्यो चंदनं नि०

सरल शाली कृष्ण जीरक, वसुमती जो मन हरं।
उभय कोटक, अरु अखण्डित, अखय गुण शिवपद धरं॥
॥ ऋषभ ० ॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्री अष्ट जिनेभ्यो अक्षतं नि०

चम्पक चमेलि, करन केतकि, मालति मरुवो मोलसरं ।
कमल कुमुद गुलाब कुंद जु, सरन जुहि शिव-तिय वरं ॥
॥ ऋषभ० ॥

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्टनिवारक श्री अष्ट जिनेभ्यो पुष्पं नि०

घेवर सु बावर पुवा पूरी, मोदक फैनी घेवरं ।
सुरहि घृत पय शर्कराजुत, विविध चरु क्षुध क्षयकरं ॥
॥ ऋषभ० ॥

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्टनिवारक श्री अष्ट जिनेभ्यो नैवेद्यं नि०

मणिकर जडित, सुवर्ण थाल ले कदलि सुत घृत में तरं ।
दीपक उद्योतं, तम क्षय होतं, निज गुण लखि भारभरं ॥
॥ ऋषभ० ॥

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्टनिवारक श्री अष्ट जिनेभ्यो दीपं नि०

चंदन अगरं, लौंग सुतगरं, विविध द्रव्य लै सुरभितरं ।
खेवत जिन आगे, पातक भागे, धूवां मिस वसु कर्मजरं ॥
॥ ऋषभ० ॥

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्टनिवारक श्री अष्टजिनेभ्यो धूपं नि०

बादाम सुपारी, श्रीफल भारी, चोच मोच कमरख सुवरं ।
लेके फल नाना, शिव सुख थाना, जिनपद पूजत देत तुरं ॥
॥ऋषभ०॥

ॐ ह्रीं गुरु ग्रहारिष्टनिवारक श्री अष्टजिनेभ्यो फलं नि०

जल चंदन फूलं तंदुल तूलं, चरु दीपक लै धूप फलं ।
वसुविधि से अरचे वसुविधि विरचै, कीजे अविचल मुक्तिधरं॥
॥ वृषभ अजित० ॥

ॐ ह्रीं गुरु महारिष्टनिवारक श्री अष्टजिनेभ्यो अर्घं नि०

। अडिल्ल छन्द ।

मन वच काया शुद्ध पवित्र जु हूजिये ।
लेकर आठों दरब आठ जिन पूजिये ॥
मंगलीक वसु वस्तु पूर्ण सब लीजिये ।
पूरन अर्घ मिलाय आरती कीजिये ॥

ॐ ह्रीं गुरु अरिष्ट निवारक श्री अष्ट जिनेभ्यो महार्घं नि०

। जयमाला ।

सुरगुरु दुख नाशन, कल्मषत्राशन, वसुविधि वसुजिन पूजकरं ।
भव भव अघहरनं, सवसुखकरनं, भव्वजीव शिवधामधरं ॥

। पद्धडी छंद ।

जयधर्म धुरंधर ऋषभ धार, जय मुक्ति कामिनी कंत सार ।
जय अजितकर्म अरि प्रवल जान, जय जीतलियो सब गुणनिधान।
जय संभव संभव दंभ छेद, जय मुक्ति रमा लइयो अखेद ।
जय अभिनन्दन आनन्दकार, जय जय जन सुखकर्ता अपार ॥
जय सुमतिदेव देवाधिदेव, जय शुभमतिजुत सुर करहिं सेव ।
जय २ सुपार्श्व सुख परमज्ञान, जय लोकालोक प्रकाशमान ॥
जय शीतल जिन जगशांति करन, जय जन्म जरा मृतवह्नि हर्न,
जय श्रेयकरत श्रेयांसनाथ, जय श्रेयसुपंच दे मुक्ति साथ ॥
जय २ गुणगरिमा जग प्रधान, जय भव्य कमल परकाश भान ।
जय मनसुखसागर नमत शीस, जय सुरगुरु दोपन मेट ईश ॥

ॐ ह्रीं गुरु महारिष्टनिवारक अष्ट जिनेभ्यो जयमाला पूर्णार्घं नि०

दोहा—आठ जिनेश्वर पूजतें, आठ कर्म दुख जांय ।
अष्ट सिद्ध नव निधि लहै, सुरगुर होय सहाय ॥

इत्याशीर्वादः ।

। अथशुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदंत पूजा ।

। दोहा ।

पुष्पदंत जिनराय को, भवि पूजो मन लाय ।
मन वच काया शुद्धसों, कवि अरिष्ट मिट जाय ॥

। अडिल्ल छन्द ।

गोचर में ग्रह शुक्र आय जब दुख करें ॥
पुष्पदंत जिन पूज सकल पातक हरैं ॥
आह्वानन कर तिष्ठ सन्निधि हूजिये ।
आठ द्रव्य ले शुद्ध भावसों पूजिये ॥

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहअरिष्टनिवारक श्री पुष्पदंत जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ॰ ठ॰, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

। अष्टक ।

सोरठा—निर्मल शीत सुभाय, गंगाजल झारी भरौं ।
कवि अरिष्ट मिट जाय, पुष्पदन्त पूजा करौं ॥

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक पुष्पदंत जिन पंचकल्याणक-प्राप्ताय जल निर्वपामीति स्वाहा ।

कुमकुम लेइ घिसाय, कनक कटोरी में धरौं ॥ कवि अरिष्ट॰ ॥

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन्दुल अक्षत लाय, भाव सहित तुप परिहरौं । कवि अरिष्ट॰ ।

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पन्त जिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

कमल चमेली जाय, जुही कुन्द जु केवरो। कवि अरिष्ट० ॥

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

विंजन विविध बनाय, मधुर स्वाद युत आचरो। कवि अरिष्ट०॥

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन दीप कराय कदलीसुत वाती करों। कवि अरिष्ट० ॥

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर कपूर मिलाय, लोंग धूप बहु विस्तरौं। कवि अरिष्ट०।

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चोच मोच फल पाय, सरस पक्क लीजे हरो। कवि अरिष्ट०॥

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक ले आय, अर्घ देत पातक हरो। कवि अरिष्ट० ॥

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन ले फूल और अक्षत बने।
दीप दूध नैवेद्य सुफल मनमोहने।
गीत नृत्य गुण गाय अर्घ पूरण करो।
पुष्पदन्त जिन पूज शुक्र दूषण हरो ॥महार्घं॥

। जयमाला ।

मन वच तन ध्याओ पाप नसावो, सब सुख पावो अघहरणं।

ग्रह दूषण जाई हर्ष बढाई, पुष्पदन्त पूजत चरणं ॥

। पद्धडी छन्द ।

जय पुष्पदन्त जिनराज देव, सुर असुर सकल मिल करहिं सेव ।
जय फागुन बुदि नौमी बखान, सुरपति सुर गर्भकल्याण ठान ।
जय मार्गशीर्ष शशि उदय पक्ष, नौमी तिथि जगमें भय प्रत्यक्ष ।
जय जन्ममहोत्सव इन्द्र आय, सुरगिरि ले इन्द्र न्हवन कराय ॥
जय वज्रवृषभनाराच देह, दस शत वसु लक्षण सुगुन गेह ।
जय राजनीति कर राज कीन, मंगसर सित पड़वा तप सु लीन ॥
जय घात घातिया कर्म धीर, निज आतम शक्ति प्रकाश वीर ।
जय कातिक सुदि दुतिया महान, लहि केवलज्ञान उद्योत भान ॥
जय भव्य जीव उपदेश देय, जग जलधि उबारन सुजस लेय ।
जय भादों सुदि आठे प्रसिद्ध, हन शेष कर्म प्रभु भये सिद्ध ॥
जय जय जगदीश्वर भये देव, भृगु तजहिं दोष हर करत सेव ।
जय मन वांछित तुम करत ईश, मन शुद्ध जलधि तुम नमत शीश

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सब गुण अधिकारी दूषण हारी, मारी रोगादिक हरनं ।
भृगु सुत दुख जाई पाप मिटाई, पुष्पदन्त पूजत चरनं ॥

इत्याशीर्वादः ।

शनि अरिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रत जिन पूजा ।

दोहा—जन्म लग्न गोचर समय, रवि सुत पीड़ा देय ।
तब मुनिसुव्रत पूजिये, पातक नाश करेय ॥

। अडिल्ल छन्द ।

मुनिसुव्रत जिनराज, काज निज करनको ।
पूर्य पुत्र ग्रह क्रूर, अरिष्ट जु हरनको ॥

आह्वानन कर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः करो।
होय सन्निधि जिनराय, भव्य पूजा करो॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

। अष्टक ।

(चाल कातिक)

प्राणी गंगोदक ले सीयरो, निर्मल प्रासुक ले नीर हो
प्राणी झारी भर त्रय धार दे, जासे-कलंक मिटाय हो
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणकप्राप्ताय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी चन्दनघिस मलियागिरो, अरु कुमकुम तामें डार हो
प्राणी जिनपद चरचों भावसों, जासों जन्म जरा जर जाय हो
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणकप्राप्ताय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी उज्ज्वल शशिसम लीजिये, एजी तंदुल कोटसमान हो
प्राणी पांच पुंज दे भावसों, अक्षय पद सुखदाय हो
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणकप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी बेल चमेली केवड़ो, करना कमुद गुलाब हो

प्राणी केतकि दल ले पूजिये, तब कामबाण मिटजाय हो
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ।।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणकप्राप्ताय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा ।

प्राणी विंजन नाना भांतिके, एजी षट् रस कर संयुक्त हो
प्राणी जिन पद पूजों भावसों, तब जाय क्षुधादिक रोग हो
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ।।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणकप्राप्ताय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्राणी रतन जोत तम नासनी, कर दीपक कंचन थार हो
प्राणी जिन आरति कर भावसों, एजी भव आरत तम जाय हो
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ।।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणकप्राप्ताय दीप निर्वपामीति स्वाहा ।

प्राणी चन्दन अगर कपूर ले, सब खेवो पावक माहिं हो
प्राणी अष्ट करम जर जार हों, जिन पूजत सबसुख होय हो
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ।।

ॐ ह्रीं अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणकप्राप्ताय धूप निर्वपामीति स्वाहा ।

प्राणी आम अनार पिपूप फल, चोंच मोच बादाम हो
प्राणी फलसों जिनपद पूजिये, एजी पावे शिवफलसार हो
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ।।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणकप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्राणी नीरादिक वसु द्रव्य ले, मन वच काय लगाय हो
प्राणी अष्टकर्मको नाश है, एजी अष्ट महागुण पाय हो
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणकप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

। अडिल्ल छन्द ।

जल चन्दन ले फूल और अक्षत बने ।
चरु दीपक बहु धूप महाफल सोहने ॥
पूरण अर्घ बनाय जिन आगे हूजिये ।
मुनिसुव्रत जिनराय भावसों पूजिये ॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणक प्राप्ताय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला

दोहा—मुनिसुव्रत सुव्रत करन, त्याग करन जगजाल ।
शनि ग्रह पीड़ा हरणको पढो, हर्ष जयमाल ॥

। पद्धडी छन्द ।

जय जय मुनिसुव्रत त्रिजगराय,
शत इन्द्र आय माथा नमाय ।
जय जय पद्मावति गर्भ आय,
सावन वदि दुतिया हर्षदाय ॥
जय जय सुमित्र घर जन्म लीन,
वैशाखकृष्ण दशमी प्रवीन ॥

जय जय दश अतिशय लसत काय,
त्रय ज्ञान सहित हित मति कहाय ॥
जय जय तन लक्षण सहस आठ,
भवि जीवनमें थुतिकरन पाठ ॥
जय जय सौधर्म सुरेश आय,
जन्म कल्याणक करियो सुभाय ॥
जय जय तप ले वैशाख मास,
सुदि दशमी कर्म कलंक नाश ।
जय जय वैशाख जो असितपक्ष,
नौमी केवल लहि जग प्रत्यक्ष ॥
जय जय रचियो तव समवसरन,
सुर नर खग मुनि के चित्त हरन ।
जय छियालीस गुण सहित देव,
शत इन्द्र आय तहां करत सेव ॥
जय जय फागुनवदि द्वादशीय,
शिवनाथ वसे मुनि सिद्ध–लीय ।
जय जय शनि पीडा हरन हेत,
मनसुखसागर कर सुख निकेत ॥

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणकप्राप्ताय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा !

। घत्ता छन्द ।

मुनिसुव्रत स्वामी सब जग नामी, भव्य जीव बहु सुख करनं ।
मन वांछित पूरैं पातक चूरैं, रविसुतग्रह पीडा हरनं ॥

इति आशीर्वादः ।

राहु अरिष्टनिवारक श्री नेमिनाथ जिन पूजा

गोचर में जब आय राहु पीड़ा करे,
नेमिनाथ जिनराज तबै पूजा करे।
आठ द्रव्य ले शुद्ध भाव हि आनके,
श्याम पुष्प मन लाय भक्ति को ठान के।
पूजों नेम जिनेश भव्य चित लायकै,
राहु देय दुख दुष्ट राशिमें आयके।
कर आह्वानन तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः उच्चरो,
होय सन्निधि शक्ति भक्त पूजा करो।

ॐ ह्रीं राहु अरिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। परि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

। अष्टक ।

अष्टक गीतिका छन्द

कनक भारी मणिजड़ित ले, शीत उदक भरायके।
प्रभु नेम जिनके चरण आगे, धार दे मन लायके॥
जब राहु गोचर समय दुख देय दुष्ट स्वभावसों।
तब नेम जिनके भावसेती, चरन पूजों चावसों॥

ॐ ह्रीं राहु अरिष्टनिवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जलं नि०

श्रीखण्डमलय मिलाय केसर, कदलि सुत तामें घिसौं।
जिन चरण चरचत भाव धरके, पाप ताप तबै नसौं॥
॥ जब राहु गोचर० ॥ चंदनं० ॥

अक्षत अनूपम सालि सम्भव कनक भाजन लेहके ।
जिन अग्र पुंज चढ़ाय भवि जन, एक चित मन देइ के ॥
॥ जब राहु गोचर० ॥ अक्षतं०

कमल कुन्द गुलाब गुंजा केतकी करना भले ।
सुमन लेके सु मन सेती, पूजते जिन अघ टले ॥
॥ जब राहु गोचर० ।पुष्पं०

विंजन विविध रस जनित मनहर, क्षुधादूषणको हरे ।
भर थार कंचन भावसेती, नेमि जिन आगे धरे ॥
॥ जब राहु गोचर० ॥ नैवेद्यं०

मणिमई दीप अनूप भरके, चन्द्र ज्योति सु जगमगै ।
निज हाथ लै प्रभु आरती कर, मोह तम तब ही भगै ॥
॥ जब राहु गोचर० ॥ दीपं

कृष्णागरु लोबान लौग, और द्रव्य सुगन्ध मैं ।
जिन चरण आगे अगनिपर धर, धूम धूप सुरभिवमैं ।
॥ जब राहु गोचर० ॥ धूपं०

अम्बा बिजोरा नारियल, श्रीफल सुपारी सेवको ।
फल ले मनोहर सरस मीठे, पूजले जिनदेवको ॥
॥ जब राहु गोचर० ॥ फलं०

जल गन्ध अक्षत पुष्प सुरभित, चरु मनोहर लीजिये ।
दीप धूप फलौघ सुन्दर, अर्घ जिन पद दीजिये ॥
॥ जब राहु गोचर० ॥ अर्घं०

आठ द्रव्य ले सार नेम प्रभु पूजिये ।
राहु होय ग्रह शांति पाप सब धूजिये ॥

मन वांछित फल पाय होय वड़भाग सो।
जो पूजे जिन देव बढे अनुरागसो॥

ॐ ह्रीं राहु अरिष्टनिवारक श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

। जयमाला ।

श्री नेम जिनेश्वर जगपरमेश्वर, जीव दयाधर धीर धर।
मैं शरणै आयो शीश नमायो, सिंह सुत दुःख दूर करं॥

पद्धडी छन्द ।

जय जय जिन नेम सुनेम धार,
करुणाकर जग जन जलधि तार।
जय कातिक सुदि छठमी प्रधान,
शिवदेवी उर अवतरे आन॥
जय जय सावन सुदि छठ सुदेव,
इन्द्रादि न्हवन विधि करहि सेव॥
जय जय यदुकुल मंडित दिनेश,
सुर नर खग स्तुति करत शेष॥
जय जय शुचि शुक्ल उदास होय,
छठको तप कर निज आत्म जोय,
जय जय निर्मल तन निर्विकार,
भामंडल छवि शोभा अपार॥
जय जय आश्विन सुदि ज्ञान भान,
तिथि प्रथम पहर जग सुख निधान,
जय जय सावन छठ शुक्ल पक्ष,
सब लोकालोक कियो प्रत्यक्ष॥
जय जय वसुविधि विध सकल नास,
लहि सुख अनंत शिवलोक वास।

जय जय अजरामर पद प्रधान,
हो त्रिभुवन पति लोकाग्र थान ॥
जय जय छाया सुत परीहर्न,
मनशुद्ध समुद्र जुग हिये शर्न ।

घत्ता छंद ।

भवि जन सुखदाई होउ सहाई, मन वच काया गावत हों ।
सब दूषण जाई, पाप नसाई, नेम सहाई छावत हो ॥
ॐ ह्रीं राहु अरिष्टनिवारक श्री नेमनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं०

॥ इति ॥

केतु अरिष्टनिवारक मल्लिनाथ-पार्श्वनाथ पूजा ।

दोहा—केतु आय गोचर विषै, करै इष्ट की हान ।
मल्लि पार्श्व जिन पूजिये, मन वंछित सुख खान ॥

अडिल्ल—मल्लि पार्श्व जिन देव सेव, बहु कीजिये ।
भक्ति भाव वसु द्रव्य शुद्ध कर लीजिये ॥
आह्वानन कर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः करौ ।
मम सन्निधि कर पूज हर्ष हिय में धरौ ॥

ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिन अत्र अवतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

उत्तम गंगाजल लाय, मणिमय भर झारी ।
जिन चरन धार दे सार, जन्म जरा हारी ॥
मैं पूजों मल्लि जिनेश, पारस सुखकारी ।
ग्रह केतु अरिष्ट निवार, मनसुख हितकारी ॥

ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं० ।

श्री खण्ड मलय तरु ल्याय, कदलीसुत डारी ।
घिस केसर चरणनि ल्याय, भव आताप हरी ॥ मैं पूजों० ॥

ॐ ह्रीं केतुअरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चन्दनं०

तंदुल अन्तत अविकार, मुक्ता सम सोहै ।
भरले हाटक मय थाल, सुर नर मन मोहै ॥ मैं पूजों० ॥

ॐ ह्रीं केतुअरिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अन्तत० ।

ले फूल सुगंधित सार, अलि गुंजार करै ।
पद पंकज जिनहि चढ़ाय, काम विथा जु हरै ॥ मैं पूजों० ॥

ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं०

विजन वहुत प्रकार, पट्रस स्वाद मई ।
चरु जिनवर चरण चढ़ाय, कंचन थार लई ॥ मैं पूजों ॥

ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं।

मणि दीपक तूप भराय, चंद्रककी वाती ।
जगज्योति जहां लहकाय, मोहतिमिर घाती ॥ मैं पूजों ॥

ॐ ह्रीं केतुअरिष्टनिवारक मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय दीपं०

कृष्णागुरु चंदन लाय, धूप दहन खेई ।
मोदित सुरगण ह्वै जाय, रुचि सेती लेई ॥ मैं पूजों ॥

ॐ ह्रीं केतुअरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय धूपं०।

वहु मोच चोच वादाम, श्रीफल फल राई ।
अमृत फल सुख वहु धाम, लीजे मन लाई ॥ मैं पूजों० ॥

ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फलं०

जल चन्दन सुमन सुलेय, तंदुल अघहारी।
चरु दीप धूप फल लेय, अर्घ करूं भारी ॥ मैं पूजों ॥
ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं०
अडिल्ल—लै वसु द्रव्य विशेष सु मंगल गायके।
गीत नृत्य करवाय जु तूप बजायके ॥
मनमें हर्ष बढ़ाय, अर्घ पूरण करौं।
केतु दोषको मेट ताप सब परिहरौं ॥
ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महाअर्घं

जयमाला।

जय मल्लि जिनेसुर, सेव करे सुर, पार्श्वनाथ जिनचरण नमों।
मन वच तन लाई, अस्तुति गाई, करो आरती पाप वमों ॥

। पद्धडि छन्द ।

जय जय त्रिभुवनपति देव देव, इन्द्रादिक सुरनर करहिं सेव।
जय २ निजगुणज्ञायक महंत, गुण वर्णन करत न लहत अंत ॥
जयजय परमातम गुण अरिष्ट, भव पद्धति नाशक परम इष्ट।
जयजय अष्टादश दोष नाश, कर दिन सम लोकालोक भास ॥
जयजय वसुकर्म कलंकछीन, सम्यक्त्व आदि वसु सुगुणलीन।
जयजय वसुप्रतिहारज अनूप, वसु ईशु भूमिके भये भूप ॥
जय जय अदेह तुम देह धार, वर्णादि रहित हैं रूप सार।
जयजय अजरामर पदप्रधान, गुणज्ञान अलोकालोक मान ॥
जयजय सुखसाता बोधदर्श, निजगुणजुत परगुण नहीं पर्श।
जयजय चित शुद्ध समुद्र सार, कर जोर नमों हों बारबार ॥
ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेंद्राय अर्घं०
इत्याशीर्वाद.।

श्री चौबीस तीर्थंकरों के पंच कल्याणक

नाम	गर्भतिथि	जन्मतिथि	तपतिथि	ज्ञानतिथि	निर्वाण तिथि
१ श्री आदिनाथजी	आषाढ वदि २	चैत्रवदि ६	चैतवदि ६	फागुणवदी ११	माहवदि १४
२ श्री अजितनाथजी	जेठ वदि ऽऽ	माहसुदी १०	माह सु० १०	चैत सु० ४	चैत सुदी ५
३ श्री संभवनाथजी	फागुण सु० ८	कार्तिक सु० १५	मंगसिर सु० १५	कार्तिक ब० ४	चैत सुदी ६
४ श्री अभिनंदनजी	वैशाख सु० ६	माह सुदी १२	माह सु० १२	पोस सु० १४	वैशाख सु० ६
५ श्री सुमतिनाथजी	श्रावण सु० २	चैत्र सु० ११	चैत्र सु० ११	चैत सु० ११	चैत सु० ११
६ श्री पद्मप्रभुजी	माह बुदी ६	कातिक ब० १३	कार्तिक सु० १३	चैत्र सु० १५	फागुण ब० ४
७ श्री सुपार्श्वनाथजी	भादवा सु० ६	जेठ सु० १२	जेऽ सु० १२	फागुण ब० ६	फागुण ब० ७
८ श्री चन्द्रप्रभुजी	चैत ब० ५	पौप ब० ११	पोष ब० ११	फागुण ब० ७	फागुण सु० ७
९ श्री पुष्पदंतजी	फागुण सु० ९	मंगशिर सु० १	मगसिर सु० १	कार्तिक सु० २	आसोज सु० ८
१० श्री शीतलनाथजी	चैत ब० ८	माह ब० १२	माह ब० १२	पौप ब० १४	आसोज स० ८

११ श्री श्रेयांसनाथजी	जेठ ब० ८	फागुण ब० ११	फागुण व० ११	माह् ब० १	सावन सु० १५
१२ श्री वासपूज्यजी	आपाढ व० ६,	फागुण ब० ११	फागुण व० १४	माह् ब० २	भादवा सु० १४
१३ श्री विमलनाथजी	जेठ व० १०	माह् सुदी १४	माह् सु० १४	माह् सु० ६	आषाढ व० ६
१४ श्री अनंतनाथजी	कर्तिक व० १	जेठ व० १२	जेठ ब० १२	चैत ब० ऽऽ	चैत वदि ४
१५ श्री धर्मनाथजी	वैशाख सु० ८	माह् सुदी १३	माह् सु० १३	पौप सु० १५	जेठ सुद० १४
१६ श्री शान्तिनाथजी	भादों ब० ७	जेठ ब० १४	जेठ ब० १४	पोप सु० १०	जेठ ब० १४
१७ श्री कुंथुनाथजी	श्रावण ब० १०	वैशाख सुदी १	वैशाख सु० १	चैत सु० ३	वैशाख सु० १
१८ श्री अरनाथजी	फागुण सु० ३	मगसर सुदी ४	मगसिर सु० १४	कार्तिक सु० १२	चैत सु० ११
१९ श्री मल्लिनाथजी	चैत सु० १	मंगसर सुदी ११	मंगसिर सु० ११	पौप ब० २	फागुण सु० ५
२० श्री मुनिसुव्रतनाथजी	श्रावण ब० ३	वैशाख ब० १०	वैशाख ब० १०	वैशाख ब० ९	फागुण ब० १२
२१ श्री नमिनाथजी	आसोज व० २	आपाढ ब०१०	आसाढ़ ब० १०	मगसिर सु० ११	वैशाख ब० १४
२२ श्री नेमिनाथजी	कार्तिक सु० ६	सावन सु० ६	सावन सु० ६	आसोज सु० १	आषाढ सु० ८
२३ श्री पार्श्वनाथजी	वैशाख ब० ८	पोप व० ११	पौप ब० ११	चैत ब० ४	सावण सु० १
२४ वर्द्धमानजी	आषाढ सु० ६	चैत सु० १३	मंगसिर ब० १०	वैशाख स० १०	कार्तिक ब० ऽऽ

ॐ

❀ स्व० कवि चन्द्रजी कृत ❀

कर्मदहन विधान

स्थापना

दोहा—तीर्थंकर जिनको नमें, सुर नर मुनिगण संत ।
जयवंते वरतो सदा, ऐसे सिद्ध महन्त ॥ १ ॥

छप्पय-ऋषभ अजित संभव जिनेंद्र अभिनन्दन जानो ।
सुमति पद्म जिनदेव, सुपारसचन्द्र बखानो ॥
विमल अनन्त धर्म शांति, कुंथु जिन अरह कर्म हर ।
पुष्पदन्त शीतल श्रेयांस, जिन वासुपूज्य वर ।
मल्ल मुनिसुव्रत हु नमि नेमि, पार्श्व महावीर जी ।
ये चौबीसों वन्दन करों, हरो जगत की पीर जी ॥

सोरठा—गुरुके लागो पांय, आचारज उवझाय मुनि ।
शारद माय मनाय, देहु बुद्धि नाशे कुमति ॥

सवैया—ज्ञानावरणी सु हनि, ज्ञान जिन अनन्त लय,
दरशनावरणी सु घाति, अनन्त दरश पाय है ।
मोहनीय कर्म नाशि, सुख अनन्तक प्रकाश,
अन्तराय नाशके, अनन्त वीरज पाय है ॥
आयु करम नाश, अवगाहन गुण प्रगट भयो,
वेदनीय नाश, अव्याबाध प्रगटायो है ।
नाम हनि अमूर्ति हो, गोत्र नशा,
गुरु लघु आत्मविलासी, भये त्रिजग दर्शायो है ॥

दोहा—ऐसे सिद्ध महन्तको, पूजों मैं शिरनाय ॥
उतर उतर अपवर्ग से, तिष्ठ तिष्ठ इत आय ॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रागच्छागच्छ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ ।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

अष्टक

त्रिभंगी छन्द—

गंगाजल आनो, निरमल छानो, तप्त करानो शुद्ध महा ।
झारी भर नाचों तन मन राचों आनन्द सांचो हृदय लहा ॥
ते सिद्ध महन्ता, सब गुणवन्ता, पूजत सन्ता भक्ति करो ।
निजमनहरपाऊं, पुण्य कमाऊं करम नशाऊं मुक्तिवरों ॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

केसररंगप्यारा, घिसकेनियरा, चन्दनसियरा गंधमहा ॥
धर हेम कटोरा, युगकर जोरा पटपद शोरा करत जहां ॥ते०

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

तंदुल बहु लीने, खंड विहीने, शुद्ध सु बीने धोय किये ॥
धर मध्यसो धारा, शशि उनिहारा, देखत प्यारा हरष हिये ॥ते०

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

ले सुमन घनेरे, ऋतु ऋतु केरे, मन हुलसेरे देखत ही ।
धर मध्य सु थारा, भाव उजारा, मदन निवारा सेवत ही ॥ते०

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नेवज कर ताजा, लाडू खाजा, अति छबि छाजा मन भाया ।
पटरस कर भीना, स्वाद नवीना, थाल भरीना हरपाया ॥ते०

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीपक ले नीका, ज्योति जगीका, रतनन ही का पर जालों ।
धर मध्य सुधारा, विपुल उजारा मोह निवारा तम टालो ।ते०

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

वर गंध कुचरकें, दशविधि करकें उत्तम धरकें खेवत हों ।ते०
तसु धूम्र उड़ाना, मन हरषाना, करम नशाना सेवत हों ॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

उत्तम फल धारा, आम अनारा, श्रीफल भारा ले सु धरो ।
तुम शरणै आया, मन हरषाया, सुकृत कमाया पार करो ॥ते०

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल गंध सुधारे, अक्षत न्यारे, पुष्प सु प्यारे नेवज ले ।
द्युति दीप उचारी; धूप सुधारी, फल धर भारी सरस भले ॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अडिल्ल—अष्ट करम जे दुष्ट, तिन्हें तुम नाशियो ।
अष्ट महागुण सुष्ट, तिन्हें सु प्रकाशियो ॥
अष्ट द्रव्यसे पूजों, मन वच काय जी ।
आठों अंग नवाय, नमों तुम पांय जी ॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

प्रत्येक पूजा

दोहा—ज्ञानावरणी पंच विधि, सो तुम नाशे देव ।
ज्ञान प्रकाशे पंच भनि, करों तुम्हारी सेव ॥

गीताछन्द—

मतिज्ञानावरणी घातके, मतिज्ञान सुन्दर पाइयो ।
श्रुतज्ञानावरणी नाशकर, श्रुतज्ञान निज उर पाइयो ॥
त्रिधि अवधि मनपर्यय सु भारी, ज्ञानावरण निवारियो ।
तब अवधि मनपर्यय सुभारी, ज्ञान निज उर धारियो ॥
दोहा-केवल ज्ञानावरण हनि, प्रगटो केवल ज्ञान ।
लोकालोक निहारते, पूजों सिद्ध महान ॥

ॐ ह्रीं पंचप्रकार ज्ञानावरणकर्मनिवारणाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं नि०

दोहा—दरशन घातक प्रकृति नव, दरशन होन न देत ।
ताहि विनाश प्रकाशियो; अनन्त दरशन श्वेत ॥

अडिल्लछन्द—प्रथम चक्षुदर्शनावरण विधि जानिये ।
द्वितीय अचक्षुदर्शनावरण बखानिये ॥
तीजी अवधि दर्शनावरणी गाइये ।
चौथी केवलदर्शनावरण लहाइये ॥

दोहा—सुखसे सोवे सुख जगे; सो निद्रा पहिचान ।
टेरेसे जागे न सो, निद्रानिद्रा जान ॥

चौपाई—

उठता बैठा ऊंघै सोई । प्रचला करम उदय जिय होइ ॥
चलत फिरत जिहिं नींद सतावे । सो प्रचला २ कहलावे ॥
जाके उदय वड़ोवल होई । नरायण प्रतिहरि समसोई ॥
सो स्त्यानगृद्धि है भाई । इनको हते भये शिवराई ॥

ॐ ह्रीं नवप्रकारदर्शनावरणकर्मविनाशनाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं नि०

पाईत्ता छन्द—

अब कर्म वेदनी मानो, दो प्रकृति तासके जानो।
इक साता द्वितीय असाता, सब जीवन जेर कराता॥
दोहा—साता सुख आभास हो, दुःख असाता देत।
इनको हति शिवपुर गये, ते पूजों निज हेत॥

ॐ ह्रीं द्विप्रकारवेदनीकर्मविनाशनाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं नि०॥३॥

दोहा—बीस आठ भट मोहके, बड़े बड़े सरदार।
जेर किये जग जीव सब, छोड़त नाहिं गमार॥
प्रथम प्रकृति मिथ्यात्व हनि, द्वितिय मिश्रमिथ्यात्व।
समयमिथ्यात्व तृतीय हनि, तब पायो सम्यक्त्व।
अडिल्ल छन्द—अनन्तानुबंधी के चार बखानिये।
क्रोध मान अरु माया लोभहि जानिये॥
चार अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यानके।
चार संज्वलन इनि षोडश भट हानिके॥
दोहा—प्रथम नाश सम्यक्त्व लहि, द्वितिय अणुव्रतठान।
त्रितिय घाति मुनिपद धरे, चौथो हति जिनज्ञान॥
चार चौक सोलह भये, ये क्रोधादि कषाय।
इनको हति शिवपुर गये, जजों सिद्धसुखदाय॥

ॐ ह्रीं त्रिमिथ्यात्वषोडशकषायप्रकृतिघाताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं नि०

गीता छन्द—

अब हास्य रति अरती जु शोक भय जुगुप्सा जानिये।
स्त्री पुरुष तीजो नपुंसक, वेद त्रिविधि बखानिये॥

ये नो कषाय विनाश कर, इमि मोहनी का क्षय किया।
सो सिद्ध मन वच काय पूजों, शुभोदय अवसर लिया ॥

ॐ ह्रीं नोकर्मसहितसर्वमोहविनाशायसिद्धिपरमेष्ठिने अर्घनि० ॥५॥

दोहा—त्रय षोडश नव मिल प्रकृति, अट्ठाईस वखान।
तिन सबही को नष्टकर, जो पहुंचे शिव थान ॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

दोहा—आयुकर्म योद्धाप्रबल, ताके हैं भट चार।
ताको जिय बंधन करे, तहां धरत निर्धार ॥

देव आयु के उदय, देवपद पाइये।
मनुष्यायुके उदय, मनुष्य कहाइये ॥
तिर्यंचायुके उदउ, तिर्यग्गति में परे।
नरक आयुके उदय, नारकी अवतरे ॥

दोहा—चारों गति के दुख सहे, पड़ो कर्मवश जीव।
ताको हति शिवपुर गये, पूजों सिद्धसदीव ॥

ॐ ह्रीं चतुःप्रकारायुकर्मविनाशनाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ नि०॥६॥

दोहा—नाम करमके उदय जिय, नाना नाम धरात।
ताकी प्रकृति तिरानवे, सो जानो इस भाँत ॥

गीता छन्द—

सित पीत श्याम अरुण हरित, ये पंच वरण वखानिये।
तिक्त आम्ल सु क्षार कड़ुवा, मिष्ट रस पन जानिये ॥
दुर्गन्ध और सुगन्ध दो, स्पर्श की वसु लेखिये।
हलु और भारी तपत शीत, कठोर नरम विशेखिये ॥

दोहा—चिक्कण रूक्ष मिलाय सब, वर्णादिककी वीस।
ते हतिके शिवपुर गये, पूजों ते जगदीश ॥

ॐ ह्रीं वर्णादिविंशतिप्रकृतिविनाशनाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घंनि०॥७॥

दोहा—संहनन छह संस्थान छह, गति पुनि चार गनीस।
आनपूर्वी चार मिल, संस्थानादिक बीस ॥

कुसुमलता छन्द—

वज्र वृषभ नाराच, वज्र–नाराच दुतिय भनि।
तीजा है नाराच, अर्धनाराच चतुर्गनि ॥
कीलक पंचम जान, छठम स्फाटक नामा।
छहो संहनन धार, जीव भटके जगधामा ॥

पाईत्ता छन्द—

समचतुर प्रथम संस्थाना । न्यग्रोधोपरिमण्डाना ॥
सातिक तृतीय गनि लीजे। बावन फिर कुब्ज भनीजे ॥
हुंडक छठमो सो जानो, ये छह शरीर संस्थानो ॥
गति चार पूर्वीचारा। सुरनर पशु नारकधारा।

दोहा—षट षट चतु चतु बीस सब, संस्थानादिक जान।
तिनको हति शिवपुर गये, ते पूजों भगवान ॥

ॐ ह्रीं शरीरादिविंशतिविनाशाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं० ॥ ८ ॥

कुसुमलता छन्द—

औदारिक वैक्रियकाहारक तैजस जानो।
कार्मान मिल पन शरीर, ये ही परमानो ॥
ये ही बंधन नाम, ये ही संघात पंच भनि।
इन्द्री पंच मिलाय, शरीरादिक सु बीस गनि ॥

ॐ ह्रीं शरीरादिविंशतिप्रकृतिघाताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं० ॥९॥

दोहा—औदारिक वैक्रियक, आहारक आंगोपांग।
अशुभ चाल शुभ चाल मिल पैंसठ प्रकित सुआंग॥

ॐ ह्रीं उपांगशुभाशुभवृत्तप्रकृतिविनाशनाय सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घं नि० ॥ १० ॥

अडिल्ल—वर्णादिककी वीस, सेत आदिक सु जान तन।
संस्थानादिककी वीस, आदि सम चतुर नाम भन॥
शरीरादिक—पुनः वीस, औदारिक आदि वखानो।
दोय चाल मिलके, उपसंग पैंसठ पहिचानो॥

ॐ ह्रीं पंचाधिकषष्टिपिंडप्रकृतिनाशानाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घंनि.।११

अ० छंद—अब अट्ठाईस प्रकृति, अपिंड वखानिये।
प्रथम अगुरु लघु, दुतिय स्वास सो जानिये॥
तीजी है अपघात, तूर्य परघात जू।
आतापन उद्योत, जान विख्यात जू॥

दोहा—तीर्थंकर निर्माण मिल, प्रकृति हनि तिन आठ।
वसु विधि द्रव्य मिलायकर, जजों सिद्धकर ठाठ॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघ्वष्टप्रकृतिघाताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ नि.॥१२॥

कुसुमलता छन्द—

सूक्ष्म बादर जान, प्रकृति साधारण कहिये,
त्रस स्थावर शुभ अशुभास्थिर स्थिर पुनि लहिये॥
सुस्वर दुस्वर सुभग, और दुर्भग वखानिये।
अपर्याप्त पर्याप्त, और आदेय जानिये॥

दोहा—अनादेय यशकीर्ति भनि, अयशकीर्ति पुनि जान।
ये दश इककी वीस हनि, पायो मोक्षस्थान॥

ॐ ह्रीं विंशतिप्रकृति विनाशनाय सिद्ध परमेष्ठिने अर्घं नि।

दोहा—पैंसठ पिण्ड अपिण्ड पुनि, अट्ठाईस बखान।
नाम प्रकृति सब त्रानवे, घात लियो शिवथान॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घं नि० स्वाहा।

कुसुमलता छन्द

गोत्रकर्म बलवान, प्रकृति दो ताकी जानो।
एक ऊंच पुनि द्वितिय, नीच कुल गोत्रव खानो॥
उच्च उदय पद उच्च, नीचके उदय नीच लहि।
इनहि घाति शिव गये, तिनहिं पूजों सु चरण गहि॥

ॐ ह्रीं द्विप्रकारगोत्र कर्म विनाशनाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं नि०।

बेसरी छन्द

अंतराय अष्टम विधि जानो, ताकी पांच प्रकृति पहिचानो।
दानान्तराय उदय जु आये, दान न देय सके न सुहावे॥
लाभान्तराय उदय जु होई, कर उपाय लाभ ना कोई।
भोगांतराय उदय जु जी के, भोग मिलें भोगे न खुशी के॥

दोहा—अन्तराय उपभोगके, जानो उदय सु माहिं।
वस्त्राभूषण तयार पर, चेतन भोगत नाहिं॥
वीर्यान्तरायके उदय, जीव न वीरज पाय।
पांचों हति शिवपुर गये, पूजों मन वच काय॥

ॐ ह्रीं पंचप्रकारान्तरायकर्म घातकाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं नि०।

कुसुमलता छन्द

ज्ञानावरणी पांच, दरशकी नव विधि जानो।
कही वेदनी दोय, मोह अठवीस बखानो॥

आयुतनी गनि चार, आनवें नामकी कहिये ।
गोत्र करमकी दोय, पंच अन्तराय की लहिये ॥
दोहा—आठ करमकी प्रकृति सब, इक शत अड़तालीस ।
सबको हति शिवपुर गये, भये त्रिजगके ईश ॥
ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिने पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा—सुरपुर नरपुर नागपुर, तीन भुवन के ईश ।
तिन गुण की जयमालिका, गाऊं कर धर शीश ॥

त्रोटक छन्द

जिनज्ञानावरणी घातकरी, निजशक्ति अनंत प्रकाश धरी ।
दर्शन आवरण निवार कियो, दर्शन अनंत तब धारलियो ॥
फिर मोह महारिपु दुष्टहरो तब सुख अनन्त प्रकाश करो ।
अन्तरायवली जब नाशकिया, तब वीर्य अनंत प्रकाश लिया ॥
ये घाति चतुष्टय नाश भये, तब चार चतुष्टयानंत लये ।
अब चार अघातिया शेष रहे, तिनको भी अन्तिम काम दहे ॥
क्षय वेदनी अव्याबाध लहा, विधि आयु हता अवगाहगहा ।
हनिनाम अमूर्तिक गुण गयनं, प्रगटसो अगुरुलघुगोत्र हनं ॥
ये आठों करम विनाशकिये, गुण प्रगटे आठ प्रकाश लिये ।
जो भव में तनत्याग किया, तासे कछु ऊन शरीर लिया ॥
तिनके न क्षुधा न तृषा दरशे, नहिं राग द्वेष तिन्हें परशे ।
फिर होय न जन्मजरा मरना, स्थितिकाल अनंत तहां करना ॥
नहिं रोग न शोकसदा तिनके, भयविस्मय व्यपत न तिनके ।
निद्रा नहीं खेद न स्वेदतहां मदमोद अरति चिंता न तहां ॥
त्रैलोक विलोकत हैं सु सदा, निरइच्छा इच्छा न धार कदा ।
निमिवासा संत सु ध्यान करें, चिरकाल लगे सो करम हरें ॥

गणधरनिज धारहृदय चरणा, तुमको ध्यावत मनहर पचना।
मुनिराज तुम्हें जो ध्यावत हैं, तुम्हरे ढिग सो चल आवत हैं॥
अहमिन्द्र सदा तुव ध्यान करें, नित चेतन की चरचाउचरें।
इन्द्रादिक भक्ति करें तुम्हरी, निज थानक दो विनती हमरी॥
किन्नर तुम्हरे गुणगावत हैं, स्वरताल समाज वजावत हैं।
द्रुम २ वाजें सु मृदंग जहां, मुरली धुनि वाज रही सु तहां॥
धर वीन बजाय सु गान करै, स्वरसप्त महामुखसों उचरें।
संगीतकला तहां ठानत हैं, तननं तन तान सु तानत हैं॥
छम छम छम नूपूर बाजत हैं, ततथैई २ धुनि साजत हैं।
इति भांति सुर स्तुति गावत हैं, जय जय २ शब्दसुनावत हैं॥
जय जय जयवंत सदासुरहौं, शिवथान मंझारन आन चहों।
जय भक्तनको सुखदायक हो, शिवमारगजात सहायकहो॥
मैं दीन दुखी भवफंद परो, करुणाकर आप उद्धार करो।
जबलों यह फन्द मो नाहिंनशे, तबलोंतुव भक्ति हृदय सु वसे॥
यह मांगत हों तुमसे वर जी, करुणाकर आप सुनों अरजी।
तुमको तज आन न शरण गहों, कहें चन्द्र सदा तुव शरण रहों॥
घत्ता—जय २ सुरदेवा, सुरनर सेवा, करत स्वयमेवा भक्ति सही।
मैं मनवचध्याऊं तुमगुण गाऊं ता फल पाऊं मोक्षमही॥

ओं ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—देव नमत अरहंतपद, नितसेवतगुरुनिर्ग्रंथ।
दया धरम सु हृदय वसत 'चन्द्र' चलत निजपंथ॥
वुधजन से विनती करों, वार वार शिरनाय।
अनरथ घट वढ शब्दहों, तो तुम धरो वनाय॥
मैं मतिहीन विवेक नहिं, अरु प्रमाद आधीन।
थिरता जगकी जान लघु, लघु कर रची नवीन॥
॥ इति पु० ॥

पन्द्रहवाँ अध्याय

जैन तीर्थ और उनका यात्रा–मार्ग

आगरा

यह शहर सुन्दर और हिन्दुस्तान भर में प्रसिद्ध है। संसार का प्रसिद्ध बादशाह शाहजहां का बनाया हुआ ताजमहल इसी शहर मे है। इस शहर के कई रेलवे स्टेशन हैं। आगरा सिटी और आगरा फोर्ट दोनों स्टेशन शहर में हैं। आगरा फोर्ट स्टेशन से १ मील दूर मोतीकटरा की जैन धर्मशाला में ठहरना चाहिये। बेलनगंज के मन्दिर की धर्मशाला भी ठीक है।

यहां करीब ३० जैन मन्दिर हैं। रोशन मुहल्ले के जैन मन्दिर में श्री शीतलनाथजी की प्रतिमा बड़ी सुन्दर तथा विस्तृत आकार वाली है। इस शहर में कई जैन पाठशाला और विद्यालय हैं।

ताजमहल के सिवा यहां अकबर का लाल पत्थर का किला, शीशमहल, जुम्मामसजिद आदि 'सुन्दर देखने योग्य स्थान हैं। आगरा फोर्ट से फिरोजाबाद का टिकिट लेना चाहिये।

फिरोजाबाद

'यह शहर स्टेशन से १ मील दूर है। शहर मे जैन धर्मशाला मे ठहरना चाहिये। यहां चूड़ियां, ग्लास, चिमनी आदि शीशे के सामान तैयार करने के बहुत से कारखाने हैं। यहां ८ जैन मन्दिर हैं। पंचायती मन्दिर में हीरे की एक आठ अंगुल प्रमाण प्रतिमा तथा एक प्रतिमा श्री चन्द्रप्रभु स्वामी की स्फटिक मणि से निर्मित विराजमान है। यहां से शिकोहाबाद जाना चाहिये।

शिकोहाबाद

यह शहर स्टेशन से आधा मील दूर है। यहां एक जैन मंदिर है। यहां तांगे से बटेश्वर को जा सकते हैं। यहां से शौरीपुर एक मील है। स्टेशन से ११ मील सड़क से जाकर जमुना नदी का कच्चा पुल है और पुल से दो मील बटेश्वर है।

बटेश्वर

यह छोटा गांव प्राचीन और अच्छा है। गांव में १ जैन मंदिर है इस मन्दिर की नींव जमुना नदी में है। इसमें अजितनाथ भगवान की एक विशाल और सुन्दर प्रतिमा है। यहां से १ मील दूर शौरपुीर (जङ्गल) में कई प्राचीन मन्दिर और एक नया मन्दिर है। यहां नेमिनाथ भगवान की १ प्रतिमा तथा चरण पादुका है। कई खंडित प्रतिमायें भी हैं।

यहां के लिये दूसरा रास्ता आगरे से भी है। वापिस शिकोहाबाद जाकर फर्रुखाबाद जाना चाहिये।

फर्रुखाबाद

यह शहर स्टेशन से १॥ मील दूर है। रेशमी व सूती कपड़ों का छपाई का काम अच्छा होता है, कपडे देश-विदेश में सब जगह जाते हैं। यहां ३ मन्दिर हैं। यहां से छोटी लाइन द्वारा कायमगञ्ज का टिकिट लेना चाहिये।

कायमगञ्ज

यह शहर स्टेशन से १ मील दूर है, एक जैन मन्दिर है। यहां से ६॥ मील कंपिलाजी अतिशय क्षेत्र है, पक्की सड़क है।

श्री कंपिलाजी अतिशय क्षेत्र

यह छोटा सा गांव है। यहां एक धर्मशाला और एक विशाल मन्दिर है। यह स्थान विमलनाथ भगवान की जन्मभूमि है। यहां

प्रति वर्ष चैत्र मास में रथोत्सव होता है। कायमगंज स्टेशन से कानपुर सैंट्रल का टिकिट लेना चाहिये।

कन्नौज

यह शहर बहुत पुराना है। यहां इत्र-तेल का बड़ा व्यापार है, प्रसिद्ध होने से माल देश विदेश भेजा जाता है। दो जैन मन्दिर मुहल्ला छिपैटी में है।

कानपुर

रेलवे स्टेशन (सैन्ट्रल) शहर में ही है। वहां से आधी मील दूर लाठी मुहाल में जैन धर्मशाला है। यह व्यापारिक स्थान है। कपड़ा बहुत बनता और बाहर जाता है। लाल इमली मिल्स यहीं पर है और भी कई मिलें हैं। यहां तीन मन्दिर हैं। अनाज और चांदी सोने का व्यापार भी बहुत होता है। श्वेताम्बरियों का काच का मन्दिर देखने योग्य है। यहां से इलाहाबाद या लखनऊ जाना चाहिये।

लखनऊ

स्टेशन से एक फर्लाङ्ग दूर पर मुन्नालाल कागजी जैन की धर्मशाला है। यहां ६ मन्दिर हैं। शहर में चौक बाजार अमीनाबाद पार्क, इमाम बाड़ा, अजायबघर आदि देखने योग्य हैं। यहां के चिकन, पल्ले की टोपियां आदि प्रसिद्ध हैं। आबहवा अच्छी है।

इलाहबाद

रेलवे स्टेशन से १ मील दूर चौक के पास जैन धर्मशाला है। आस पास चार शिखरबन्द मन्दिर हैं। किले में अक्षयवट नामका वृक्ष है इसी वृक्ष के नीचे भगवान आदिनाथ ने तप धारण किया था। यहां ६ वर्ष बाद अर्धकुम्भ और १२ वर्ष बाद बडा कुंभ का मेला लगता है। २१ से ४० लाख तक यात्री आते हैं। गंगा यमुना और सरस्वती तीन नदियों का सङ्गम है।

यहां हाईकोर्ट, खुशरो बाग, युनिवर्सिटी, किला, आनन्दभवन आदि दर्शनीय स्थान हैं ! यहां से फैजाबाद जाना चाहिये।

फैजाबाद

धर्मशाला स्टेशन के पास ही है, शहर आधा मील दूर है। यहां एक मन्दिर है। यहां से ४ मील दूर इक्के तांगे से अयोध्या जाना चाहिये।

अयोध्या

मुहल्ला कटरा में एक मन्दिर, एक धर्मशाला और ७ टोंके हैं। आदिनाथ, अजितनाथ, अभिनन्दन, सुमतिनाथ और अनन्तनाथ इन ५ तीर्थंकरों की जन्मभूमि है। यह स्थान हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ है। पूजन प्रक्षाल का प्रबन्ध अच्छा है। यहां से बनारस कैन्ट जावें।

बनारस

स्टेशन से २ मील दूर मैदागिन में जैन मन्दिर और विशाल धर्मशाला है। यह सुपार्श्वनाथ और पार्श्वनाथ स्वामी की जन्म-भूमि है। यहां जैन मन्दिर और चैत्यालय कुल ११ हैं। मन्दिर भदैनी घाट पर हैं, ये मन्दिर बड़े सुन्दर हैं, और काशी स्याद्वाद जैन महाविद्यालय यहीं पर है। जैनियों में न्याय, व्याकरण आदि के विद्वान बनाने वाला यही विद्यालय है। महामना मालवीयजी द्वारा संस्थापित हिन्दू यूनिवर्सिटी अवश्य चाहिए।

बनारस की जरी के सच्चे काम की साड़ियां बहुत मनोहर और चित्ताकर्षक होती हैं।

यहां हिन्दुओं के हजारों मन्दिर हैं। यहां का मनिकर्णिका घाट क्वींस कालेज, मान मन्दिर आदि देखने योग्य हैं। यहां से मोटर द्वारा सिंहपुरी (सारनाथ) और चन्द्रपुरी के दर्शन करने जाना चाहिये।

सिंहपुरी

बनारस से ५ मील दूर है। यहां श्रेयांसनाथजी का जन्म हुआ था। यहां के जैन मन्दिर में भगवान की मूल नायक प्रतिमा बड़ी मनोहर है। बौद्ध मन्दिर भी देखने योग्य है। एक अजायब घर भी है।

चन्द्रपुरी

चन्द्रपुरी एक छोटा सां गांव है। गांव के किनारे एक मन्दिर और धर्मशाला है। यहां चन्द्रप्रभु का जन्म हुआ था। वापिस मोटर से बनारस जाकर आरा का टिकट लेना चाहिये।

आरा

स्टेशन से एक मील दूर चौक बाजार में बाबू हरप्रसादजी की धर्मशाला है। इसी के पास स्व० बाबू देवकुमारजी का बनवाया हुआ जैन सिद्धान्त भवन बडे विशाल रूप में है। बहुत से प्राचीन ग्रन्थों का संग्रह किया है। आरा में लगभग तीस मन्दिर हैं। जैन बाला विश्राम धनपुरा में है, जो विदुषी पं० चन्दाबाई की देख रेख में चलता है। एक नसिया शहर के बाहर है। यहां से पटना जाना चाहिये।

पटना

यह गुलजार बाग क्षेत्र है। स्टेशन के पास ही एक धर्मशाला और एक मन्दिर है। यहां से सेठ सुदर्शन को मोक्ष प्राप्त हुआ था। यहां कुल ६ मन्दिर हैं। हाईकोर्ट, गङ्गा नदी की छटा देखने योग्य है। इसका पुराना नाम पाटलीपुत्र है। हाथ की कारीगरी की वस्तुएं अच्छी मिलती हैं।

बिहार-शरीफ

पटना से यहां आना चाहिये। स्टेशन के सामने ही धर्मशाला

है। एक मन्दिर है, जिसमें प्रतिमायें वड़ी ही मनोहर हैं। यह शहर वडा है। कई चीजें देखने योग्य हैं। विहार से वड़गांव रोड को जाना चाहिये। वहां से ४॥ मील दूर दि० जैन धर्मशाला है वहां तांगे से जाना चाहिये। यही गांव कुण्डलपुर बोला जाता है।

कुण्डलपुर

इस दर्शनीय स्थान पर जमीन के अंदर से एक विशाल नगरी और जैन मूर्तियां निकली हैं। एक विशाल भवन बौद्ध धर्म का भी निकला है। इसके संबंध में कहा जाता है कि यह बौद्ध धर्म का विद्यालय और छात्रालय है और यहां कई हजार विद्यार्थी अध्ययन करते थे। दिगम्बरी धर्मशाला में एक मन्दिर है जिसमें महावीर स्वामी की प्रतिमा वडी सुन्दर है। यह महावीर स्वामी का जन्म स्थान है। वड़गांव स्टेशन वापिस आकर राजगृही की टिकट लें।

राजगृही

स्टेशन के पास २ धर्मशालाएं हैं। यहां श्वेताम्बरी मन्दिर में भी २ श्यामवर्णीय मनोहर प्रतिमा दिगम्बर रूप में हैं। यहां से पंच पहाडों की वंदना शुरू होती है। विपुलाचल पर्वत पर महा-वीर भगवान का समवशरण आया था। इस पर्वत पर चार मन्दिर और २ चरण पादुका हैं। उदयगिरि पर दो मन्दिर और २ चरण पादुका, रत्नगिरि पर एक मन्दिर और एक चरण पादुका, सोना-गिरि पर दो मन्दिर प्रतिबिंव और एक चरण पादुका और पांचवें पहाड़ वैभार गिरि पर ५ मन्दिर हैं। एक प्राचीन मन्दिर यहां से दूर है।

यहां के राजा श्रेणिक ने भगवान् से वहुत से प्रश्न कर जीवों को धर्म-मार्ग का ज्ञान कराया था। यह क्षेत्र भगवान् मुनिसुव्रतनाथ का जन्म स्थान है। पहाड की तलहटी में राजा श्रेणिक के भवन

चिह्न पाये जाते हैं। एक मील दूर गणधर स्वामी के चरणों सहित एक मन्दिर है। यहां निर्मल गर्म जल से भरे बहुत से कुण्ड हैं। वहां से १२ मील दूर पावापुरी बैलगाडी से जाना चाहिये।

पावापुरी

यहां से महावीर स्वामी का मोक्ष कल्याणक हुआ है। यहां तालाब के मध्य में एक श्री जिन मंदिर है, वहां पर ३ चरण पादुका हैं। ३-४ और भी दिगम्बर मन्दिर हैं। महावीर स्वामी का ज्ञान कल्याण का स्थान यहीं पर ऋजुकूला नदी के तट पर है। यहां से गुणावा तीर्थ १३ मील की दूरी पर है। बैलगाडी से जाना चाहिये।

गुणावा

यह पवित्र क्षेत्र जंगल में है यहां से श्री गौतम स्वामी ने निर्वाण प्राप्त किया था। यहां भी छोटे तालाब के बीच में एक सुन्दर मन्दिर है। यहां से १॥ मील दूर पर रेल्वे स्टेशन है, जहां से एक लाइन गया को और दूसरी लखी सराय, भागलपुर, कलकत्ता जाती है। यहां से नाथ नगर जावें।

नाथनगर

स्टेशन से आधी मिल दूर २ मंदिर और दो धर्मशाला हैं। यहां एक छोटा सा पहाड है जिस पर कई पुराने मन्दिर हैं। यहां से भागलपुर जाना चाहिये।

भागलपुर

स्टेशन से आधी मील दूर जैन धर्मशाला है। यहां का टसरी कपडा अच्छा होता है। यह व्यापारिक स्थान है। यहां के मन्दिरों का दर्शन कर मंदार हिल का टिकट लें।

मंदारगिरी

यह एक गांव है। यहां धर्मशाला और १ चैत्यालय है। यहा से १ मील दूर मंदार गिरि पहाड़ है, यह पहाड श्री वासुपूज्य भगवान् का मोक्ष कल्याण का स्थान है। पहाड के ऊपर दो प्राचीन शिखर बंद मंदिर हैं। पहाड की चढ़ाई करीब ६ फर्लाङ्ग है। भागलपुर आकर गयाजी को जावे।

गया

जैन धर्मशाला स्टेशन से १॥ मील है। स्टेशन बहुत बडा है। यह हिन्दुओं का वडा तीर्थ स्थान है। यहां पर २ जैन मन्दिर हैं। जैनियों के घर लगभग ३५–४० हैं। गया से बुद्ध गया तक पक्की सड़क है, वहां अशोक का बनाया हुआ एक विशाल बौद्ध मन्दिर है।

कुलहा पहाड़

गया से ३८ मील दूरी पर है, इसे जैनी पहाड़ के नाम से पुकारते हैं। २० मील पक्की सड़क है और बाकी कच्चा रास्ता। पहाड़ की तलहटी में एक पेड़ के नीचे पत्थर के टुकड़ों पर पार्श्वनाथ की पद्मासन प्रतिमा २ फीट ऊँची विराजमान है। अन्य मत वालों ने दही और सिन्दूर लगाकर विरूप कर रखा है और द्वारपाल के नाम से पुकारते हैं। और भी प्रतिमायें जहां कहीं यों ही पड़ी हैं। शीतलनाथ भगवान के गर्भ और जन्म कल्याण इस पहाड़ से १ मील दूर भद्रलपुर गांव में हुए थे।

कुलहा पहाड़ जाने के लिये २० मील पक्की सड़क जिदापुर डोंकी तक है। डोंकी ग्राम से बाईं तरफ कच्ची सड़क जाती है वहां से ३ मील अमारुत ग्राम है, वहां से ६ मील हंटरगज थाना है। यात्रियों को यहां से सामान साथ लेना चाहिये। इसके बाद लीलां-

जन तथा फल्गु नदी उतर कर ६ मील हतवरिया गांव जाना चाहिये। यहां एक धर्मशाला है इससे १ मील दूरी पर पर्वत आना है।

मधुवन

गया से पारसनाथ (ईसरी) स्टेशन जाना चाहिये। पारसनाथ स्टेशन के पास एक धर्मशाला है, यहां से सम्मेद शिखर का पहाड़ दिखाई देता है। यहां १४ मील पक्की सड़क है, गाड़ी या मोटर से शिखरजी के पहाड़ की तलहटी में जाना चाहिये। इस स्थान का नाम मधुवन है।

यहां कई धर्मशालायें हैं। तेरापंथी और बीसपन्थी की दो कोठियां हैं और कई जैन मन्दिर हैं, जिनकी रचना बडी ही सुन्दर है। यहां एक धर्मशाला और रमणीक है।

यहां पहाड़ पर जाने के लिये डोली इत्यादि भी मिल जाती हैं डोली आदि के लिये १ दिन पहिले ही मुनीम लोगों को कहने की आवश्यकता है।

पहाड़ पर वन्दना करने वाले भाइयों को प्रातःकाल ३ बजे उठकर स्नान करके तैयार होजाना चाहिये।

पहिली उपरैली कोठी से ही चढ़ाई प्रारंभ होती है। इससे २ मील की चढ़ाई पर गंधर्व नाला पड़ता है और फिर १ मील की चढाई पर दो मार्ग हैं, जिनमें पहिला दाईं तरफ का मार्ग श्री पार्श्व नाथ टोंक के लिये है और दूसरा बाईं तरफ का मार्ग सीता नाले होकर गौतमस्वामी की टोंक पर पहुंचता है। सबसे पहिले गौतम स्वामी की टोंक से वंदना शुरू करने के लिये बाईं तरफ वाले रास्ते से जाना चाहिये। इस स्थान से १ मील चलकर सीता नाला आता है, यहां से सामग्री धोकर १ मील पक्की सीढ़ियों से चढाई चढते हुये १ मील कच्ची सड़क से पर्वत के ऊपर पहुंच जाते हैं। इस प्रकार ६ मील की चढाई है।

पहिले पहल गौतम स्वामी की टोंक है, इसके बाद बायें हाथ की तरफ वंदना करके जाना चाहिये। फिर दूसरी श्री कुन्थनाथजी की है। यहां कुछ विश्राम कर फिर पूर्व की तरफ ३री श्री नेमिनाथ जी की, ४ वीं श्रीअरनाथजी की, ५ वीं श्री मल्लिनाथजी की, ६ वीं श्री श्रेयांसनाथजी की, ७ वीं श्री पुष्पदन्तजी की, ८ वीं श्री पद्म-प्रभूजी की, ९ वीं श्री मुनिसुव्रतनाथजी, १० वीं श्री चन्द्रप्रभुजी की टोंक बहुत ऊँची है और दूरी पर है। फिर वहां से ११ वीं श्री आदिनाथजी की, १२ वीं श्री शीतलनाथजी की, १३ वीं श्री अनंत-नाथजी की, १४ वीं श्री संभवनाथजी, की, १५ वीं श्री वासुपूज्यजी की १६ वीं श्री अभिनंदनजी की है। यहां से जल मंदिर होकर श्री गौतम स्वामी की टोंक पर आना चाहिये। फिर पश्चिम दिशा में जाना चाहिये।

वहां से १७वीं श्री धर्मनाथजी की, १८ वीं श्रीसुमतिनाथजी की, १९ वीं श्री शांतिनाथजी की, २० वीं श्री महावीरजी की, २१ वीं श्री सुपार्श्वनाथजी की, २२ वीं श्री विमलनाथजी की, २३ वीं श्री अजितनाथजी की, २४ वीं श्री नमिनाथजी की टोंकों की वन्दना करके २५वी श्री पार्श्वनाथजी भगवान की टोंक की वन्दना करनी चाहिये। यह टोंक सबसे बड़ी और ऊँची है। यहां कुछ विश्राम कर थकावट दूर कर लेनी चाहिये।

इस पर्वत राज से बहुत से तीर्थंकर और अनन्त मुनिराज निर्वाण पधारे हैं। श्री सम्मेद शिखर की चढाई ६ मील, टोंकों की वन्दना ६ मील, उतार ६ मील कुल १८ मील की वन्दना होती है। इसकी परिक्रमा २८ मील है। इस पर्वतराज का प्रभाव अचिंत्य है। थकावट जरा भी मालूम नहीं होती। फिर वापिस उतर कर मधुवन धर्मशाला में आना चाहिये और नीचे के मन्दिरों के दर्शन करना चाहिये।

यह तीर्थराज अनादि काल का है। इस परम पवित्र गिरिराज की भाव सहित पूजन वन्दना करने वाला भव्य जीव ४९ भव में अवश्य मोक्ष प्राप्त कर लेता है, उसे नरक और पशुगति नहीं प्राप्त होती।

यहां हर कार्य में गरम किया हुआ जल काम में लेना चाहिए।

यहां की यात्रा करके पारसनाथ वापिस आना चाहिये और हवड़ा की टिकट लेना चाहिये।

कलकत्ता

हवडा स्टेशन से करीब १ मील दूर श्री दिगम्बर जैन भवन (धर्मशाला) बहुत सुन्दर बना हुआ है। शहर के मध्य मे है। प्रवन्ध वहुत अच्छा है। यहा रसोई और कमरों की वडी सुविधा है। कलकत्ते का प्रसिद्ध बाजार हरीसन रोड पास ही है। रामकिसन दास सरावगी की धर्मशाला हरीसन रोड पर ही है।

यात्रियों को नं० १६।११, हरीसन रोड, (बांगड बिल्डिङ्ग) मे जिनवाणी प्रचारक कार्यालय अवश्य देखना चाहिये! यहां से जैन साहित्य प्रकाशित होता है, बडे बडे जैन ग्रंथ, पुराण शास्त्र सभी मिलते हैं। इसके सञ्चालक बाबू दुलीचन्दजी परवार हैं।

पहिला बडा मन्दिर चावल पट्टी मे है। दूसरा मन्दिर पुरानी बाडी के नाम से प्रसिद्ध है। तीसरा लोअर चितपुर रोड मे नया मन्दिर के नाम से सङ्गमरमर का बना हुआ है। चोथा मन्दिर बेलगछिया में खुली जगह पर हरीसन रोड से ३ मील है। पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा मनोज्ञ और मोहक है। यहां धर्मशाला भी है।

यहां हर साल कार्तिक सुदी १५ को बहुत बडा रथोत्सव होता

है। यह शहर व्यापारिक दृष्टि से बडा अच्छा है। यहां से विदेशों में माल आता जाता है।

यहां टकसाल, चिडियाघर, अजायबघर, बुटैनीकल गार्डन, फोर्टविलियम का किला, सेंटपाल गिरजा आदि देखने योग्य हैं।

खंडगिरि क्षेत्र का मार्ग

कलकत्ते से भुवनेश्वर का टिकट लेना चाहिये वहां से ५ मील पश्चिम पुरी जिले में उदयगिरी और खण्डगिरी दो पहाड़ियां हैं। भुवनेश्वर से गाड़ियों में जाना होता है। बीच में भुवनेश्वर गाँव पड़ता है। हिन्दुओं का बड़ा भारी तीर्थ है। यहाँ से खण्डगिरी जाना चाहिये, इस मार्ग में घना जंगल है। इन पहाडियों के बीच एक तंग घाटी है, पत्थर काटकर गुफा में और मन्दिर बनाये गये हैं।

खण्डगिरी

यहां तीन धर्मशालायें हैं। यह ग्राम छोटा है। पहाड़ की सीधी चढ़ाई पर सीढ़ियों के सामने १ खण्डगिरी गुफा है अन्दर और भी चार गुफायें हैं। एक गुफा में १॥ हाथ की कायोत्सर्ग प्रतिमा विराजित है गुफाओं से आगे एक जैन मन्दिर है। दक्षिण दिशा की तरफ बड़ा जैन मन्दिर है। कई गुफायें और छोटे २ मन्दिर और भी हैं।

उदयगिरी

दूसरा पहाड़ उयदगिरी है। कई बड़ी बड़ी गुफाये कोठरियां पहाड़ काटकर बनाई हैं। महाराजा खारवेल के समय का २५०० वर्ष पुराना एक शिला लेख है। चढ़ाई पर जय विजय गुफा और रानी का महल मिलते हैं। कई और भी गुफायें तथा कुण्ड हैं। एक द्वार पर जैन प्रतिमा का चिह्न बना हुआ है।

पुरी

वापिस भुवनेश्वर लौट कर पुरी का टिकट लेना चाहिये। पुरी हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ है। जगन्नाथ पुरी के नाम से मशहूर है स्टेशन से १॥ मील दूरी पर है। जगन्नाथजी का मन्दिर देखने योग्य है। मन्दिर के दक्षिण द्वार पर श्री आदिनाथजी की प्रतिमा मनोहर है! समुद्र तट की आबहवा अच्छी है। राजा लोगों के मकान और छतरियां सुन्दर बनी हैं। खुरदा रोड होकर मद्रास जावें।

मद्रास

दक्षिण भारत का सुन्दर और प्रसिद्ध व्यापारिक शहर है। बन्दरगाह बहुत बड़ा है। स्टेशन के पास हिन्दुओं की धर्मशाला है। समुद्र के किनारे होने से जलवायु उत्तम है! एक चैत्यालय और एक मन्दिर है। मन्दिर में धर्मशाला के रूप में ठहरने को मकानात हैं जहाँ कुआ नल बिजली सब हैं।

इसके सिवाय हाईकोर्ट, अनाथालय, मच्छी भवन, मरीना, चिड़ियाघर, अजायबघर आदि दर्शनीय स्थान हैं। अजायबघर में पत्थर और धातु की बहुत सी मूर्तियां हैं, १५ मूर्तियाँ पद्मासन करीब ५ फीट ऊंची हैं। विक्टोरिया पब्लिक हाल में गोमट्टस्वामी की प्रतिमा दर्शनीय है। रामेश्वरम् और लंका को रास्ता यहीं से जाता है। पोन्नूर का टिकट लेना चाहिये। गांव से ६ मील दूर तिरु मलाई पहाड़ पर जाते हैं। पहाड़ की मढ़ी भगलय तक रास्ता ठीक है आगे २ मील तक खराब है।

पहाड़ २५० गज ऊंचा है। १०० गज की चढ़ाई पर ४ मन्दिर हैं आगे एक गुफा में बड़ी चढ़ी प्रतिमा हैं। आगे २ मन्दिर और हैं जैनियों की संख्या अधिक है! वापिस पोन्नूर लौटकर मद्रास होकर बैंगलोर जावे।

बैंगलौर

स्टेशन से १ मील दूर चिक पीठ में जैनियों का मन्दिर है और धर्मशाला है। बैंगलौर की छावनी दक्षिण भारत में बड़ी है। यहां मैसूर नरेश का महल, सरकारी आफिस, लालबाग, अजायबघर आदि देखने योग्य हैं। वह स्वास्थ्य के लिये अच्छा स्थान है बैंगलौर के गलीचे सुन्दर होते हैं। अब कई कल कारखाने यहां खुल रहे हैं। यहां से आरसीकेरी स्टेशन जाना चाहिये।

आरसीकेरी

स्टेशन पर एक छोटी हिन्दू धर्मशाला है, एक जैन मन्दिर है जिसमें एक प्रतिमा धातु से बनी गोमट्ट स्वामी की प्रभाव युक्त है। एक सहस्रकूट चैत्यालय भी है। इसे जैन बस्ती के नाम से बोलते हैं। आरसी केरी से हासन का टिकट लेना चाहिये। हासन से १६ मील दूरी पर जैनबद्री मोटर द्वारा जाना चाहिये। यहां जैनबद्री को श्रवणबेलगोला कहते हैं। इधर इसी नाम से पूछा जाता है।

श्रवणबेलगोला (जैनबद्री)

यह एक जैनियों का पवित्र अतिशय क्षेत्र है। इसका नाम 'श्रवण बेल गोल' पड़ जाने के सम्बन्ध में कहा जाता है कि श्री नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती के समय में श्री रामचन्द्रजी ने गोमट्ट स्वामी की प्रतिमा को निर्मापित कराया था। उसकी प्रतिष्ठा राजा चामुण्डराय ने कराई और इसका पंचामृत से सर्वांग पूजन अभिषेक किया और उसे अभिमान भी हुआ कि कोई अन्य ऐसा नहीं कर सकता। उसने फिर उत्सव कराया लेकिन मूर्ति के शिरोभाग से जल के भरे सैकड़ों कलश खाली किये जाने पर भी नाभि भाग से नीचे एक बूंद भी न गिर सकी। कारण तो ज्ञात नहीं, लेकिन कहा जाता है कि राजा का मान भंग करने के लिये यह हुआ। राजा को

आश्चर्य हुआ। उसी समय एक गरीब बुढ़िया पंचामृत द्रव्यों से भरा हुआ 'वेलिया गोल' नामक लोटा लेकर आई। राजा से स्वीकृति लेकर उसने प्रतिमा का अभिषेक किया। बुढिया के एक ही लोटे से सिर से पैर तक प्रतिमा भीग गई। राजा को अपने अभिमान पर पश्चाताप हुआ। शुद्ध अन्त-करण से प्रार्थना करके क्षमा मांगी और पूजन की और उसकी मनोवृत्ति पूर्ण हो गई। इसलिये इसका नाम श्रवण वेलगोल पड़ गया।

यहाँ पर एक बहुत बड़ा तालाब है। किसी जैनी राजा ने बनवाया था। इधर उधर दो पहाड़ है, बड़े का नाम इन्द्रगिरि और छोटे का चन्द्रगिरि है। पहिले मुनि महाराज पहाड़ों से उतरकर अहार लेने आते थे। इसलिए जैन बद्री नाम पड़ा। भंडार बस्ती नाम का लाखों रुपयों का मन्दिर है। मन्दिर प्राचीन है और दूसरा श्री भट्टारकजी का है।

बड़ी पहाड़ी पर चढ़ने के लिये मार्ग मे एक फाटक आता है, सीढ़ियाँ बड़ी सुन्दर बनी है। चढ़ाई में तीन दरवाजे मिलते हैं। चढाई केवल ६ फर्लांग है। बीच में एक मन्दिर आता है जिसमे १॥ गज ऊँची पार्श्वनाथ भगवान की पद्मासन प्रतिमा है। मंदिर से थोड़ी दूर श्री गोम्मटस्वामी के मन्दिर के कोट की ड्योढी मिलती है। ड्योढा के फाटक में घुसते ही दोनो तरफ दो मूर्तियां हैं। आगे एक छोटा मन्दिर आने के बाद बड़ा मन्दिर बाहुबलि स्वामी का मिलता है। इस मन्दिर मे प्रवेश करते ही श्रीजी की विशाल प्रतिमा के दर्शन होते हैं।

भगवान् बाहुबलि की मूर्ति ५७ फुट ऊंची है। संसार में इस प्रकार की सुन्दर एवं विशाल मूर्ति दूसरी नहीं मिलती। यह भारतीय प्राचीन शिल्प कला का गौरव है। भगवान् के दर्शन बहुत दूर से और गांव से ही हो जाते हैं। यहां शिला लेख बहुत हैं। इस पर्वत पर ६ मन्दिर और है।

चन्द्रगिरि छोटा पहाड है चढने को सीढियां बनी हैं। विशाल पत्थर की शिलायें और गुफायें हैं। इस पर दाहिनी तरफ चढ़ाई पर भद्रबाहु स्वामी श्रुतकेवली की गुफा में उनकी चरण पादुका १ हाथ से ज्यादा बडी है। आगे चल कर बडा कोट मिलता है। इस कोट में ५ छत्रियां बडी बडी और बारह मन्दिर बने हैं।

भट्टारकजी के मठ में जैन साहित्य के अच्छे २ शास्त्रों का भंडार है जिनमें कई ताड़ पत्रों पर हैं और ये सब कन्नडी भाषा में लिखे हैं। सब मन्दिरों के सामने मानस्तम्भ हैं। बड़े २ मन्दिर में बेतादाद मूर्तियां हैं। गांव में ८ मन्दिर हैं।

यहां से मूडबद्री मोटर से जावें। रास्ते मे मैसूर,रंगपट्टम् बेणूर, हलेबिड आदि स्थान आते हैं।

मैसूर

स्टेशन से १ मील दूर जैन धर्मशाला है और इसके पास ही जैन मन्दिर है। यहां कनडी भाषा बोली जाती है। और भी तीन चैत्यालय है। मैसूर महाराज की एक ग्रन्थमाला निकलती है। कई जैन ग्रंथ प्रकाशित हुये हैं। राजा का महल देखने योग्य है। मैसूर की खुशबुदार अगरबत्ती और चंदन के सामान व वस्तुयें सारे संसार में प्रसिद्ध हैं। जैनियों के घर अधिक हैं। रेजीडेन्सी, महाराजा कालेज, वेस्लियन मिशन और हिन्दू मन्दिर- देखने योग्य है। कावेरी नदी के बांध पर बिजली की रोशनी देखने योग्य है। इसे कन्नमबाड़ी कहते हैं।

श्रीं रङ्गपट्टम

हिन्दुओं का तीर्थस्थान है। हिन्दू मन्दिर लाखों की लागत के बने हैं और बड़ी सुन्दर मूर्तियां हैं।

वेणूर

यहां १२ वर्ष में भगवान का अभिषेक हुआ करता है। यहां नदी है, नदी के किनारे एक कोट है। कोट के भीतर चौरस मैदान है। मैदान में गोमट स्वामी की ३७ फुट ऊंची प्रतिमा है। कोट के दरवाजे के पास भी दो मन्दिर हैं, इनके पीछे एक बडा मन्दिर है जिसमें हजारों प्रतिमायें हैं चार मन्दिर और भी हैं। यहां कुल ७ मन्दिर और १ गौमट स्वामी हैं।

हड़बेड़ी (हलेविड़)

यहां के लिये सीधे रास्ते से अलग दूसरे रास्ते पर दस मील जाकर वापिस सीधे रास्ते पर लौटना पडता है। यहां एक मन्दिर सबका सब कसौटी के पत्थर का बना हुआ है। किसी जमाने में यहा ७२० जैन मन्दिर बताये जाते हैं। रास्ते मे और कई ग्राम पड़ते हैं जहां जैन मन्दिर हैं। यात्रा में पहाड़ी दृश्य और झरने दिखलाई पडते हैं। इसके बाद मूडबद्री पहुँचते हैं।

श्री मूड़बद्री अतिशय क्षेत्र

जैन धर्मशाला सुन्दर बनी है। यहा पर करोडों रुपये के मंदिर और प्रतिमायें हैं। सब मिलाकर २२ मन्दिर हैं। इनमें ३१ जगह दर्शन हैं। ७ मंदिरों के सामने बड़े बड़े मान स्तम्भ हैं। यहां का प्रबन्ध एक भट्टारकजी के हाथ में है। सब मन्दिर विशाल हैं। पहिला चन्द्रप्रभु का मन्दिर ८६ करोड की लागत का बताया जाता है। यह चार मंजिली बना है। पहली मंजिल में ५ गज ऊंची श्री चन्द्रप्रभु स्वामी की पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। यह सप्त धातु की स्वर्णमय है, इस मंजिल में और भी बहुत सी प्रतिमायें हैं। दूसरी मंजिल में सहस्रकूट चैत्यालय है जिसमें १००८ प्रतिमायें सांचे में ढली हुई विराजमान हैं। तीसरी मजिल में भी ४ दर्शन

है, चौथे में हजारों प्रतिमायें पाषाण और स्फटिक की हैं।

दूसरा मन्दिर श्री पार्श्वनाथ भगवान का है। इसके चार बड़े परकोटे हैं। इसमें पार्श्वनाथ भगवान की १६ फुट ऊंची प्रतिमा है सभी मन्दिरों में अंधेरा रहता है।

यहां एक चौवीसी का मन्दिर है। इस मन्दिर में ३५ प्रतिमायें रत्न, सुवर्ण, चांदी, नीलम, पन्ना, हीरा आदि की विराजमान हैं।

यहां पर जयधवल और महाधवल आदि सिद्धान्त सूत्र ताड़पत्र पर लिखे हुये विराजमान हैं।

कारकल अतिशय क्षेत्र

यह प्राचीन तीर्थ मूडबद्री से १० मील दूर है। यहां करीब २० प्राचीन मन्दिर हैं। मन्दिरों में ऊपर और नीचे हजारों प्रतिमायें हैं। यहां पूर्व की दिशा में एक पर्वत है। इसकी चढाई केवल एक फर्लाङ्ग है। बाहुबली स्वामी की ४२ फुट ऊंची प्रतिमा कायोत्सर्ग है। इसके सामने पर्वत पर तीन प्रतिमायें बडी हैं। मानस्तम्भ करीब २० गज ऊंचा मन्दिर के सामने है। इस पहाड के सामने छोटे पहाड पर एक और मन्दिर है।

इसके ऊपर एक मन्दिर बहुत सुन्दर और बडी लागत से बना हैं। इसके चारों ओर १२ प्रतिमायें करीब ७-८ फुट की खड्गासन हैं। पश्चिम दिशा की ओर ११ मन्दिर बहुत बड़े बडे हैं। यहां से ३४ मील दूर वारंग ग्राम है वहां मोटर से जावें।

वारङ्ग ग्राम

एक छोटा सा गांव है। एक मन्दिर और एक मानस्तम्भ है प्रतिमायें सुन्दर हैं। इसीके पास एक तालाब है, तालाबके बीच में एक मन्दिर है। मन्दिर में १२ प्रतिमा चतुर्मुखी अतिशय युक्त विराजमान हैं। यह स्थान जङ्गल में है। सुपारी और नारियल के पेड बहुत हैं।

कुछ दूर चलकर आगम्वा घाटी आती है। मोटर नहीं जा सकती। बैल गाडी से घाटी पार करते हैं। इस घाटी की उतराई चढाई ५ मील है। नीचे उतर कर मोटर मिलती है और सिमोगा स्टेशन पहॅुचाती है, सिमोगा से हुवली पहुचेंगे। स्टेशन से १॥मील दूर मारवाडी बाजार मे जैन धर्मशाला है।

हुवली

धर्मशाला में तीन मन्दिर हैं। इन मंदिरों में १ चांदी की और चौवीसों महाराज की प्रतिमा सुन्दर हैं। पास ही एक नया मंदिर है। कपडे की मील देखने योग्य है। यहॉ से वेलगांव का टिकट लेना चाहिये।

वेलगांव

स्टेशन से १ मील दूर शहर है। यहां से मिरज, कोल्हापुर को लाईन जाती है। दि० जैनियों के करीब २०० घर हैं। यहां पर ३-४ मंदिर हैं। शहर के पास ही एक बहुत बड़ा किला है। वेलगांव से सीधा टिकट कोल्हापुर का लें। मिरज गाड़ी बदलती है। पूना भी उतर सकते हैं।

कोल्हापुर

स्टेशन के पास जैन धर्मशाला और मन्दिर हैं। स्व० सेठ माणिकचन्द्रजी द्वारा बनवाया हुआ एक बोर्डिंग हाऊस है। शहर के अंदर ७ मन्दिर हैं। एक मानस्तम्भ है। वाजार भी अच्छा है।

मिरज

मिरज और सांगली दोनों पास २ हैं। इन दोनों गांव में दो दो मंदिर हैं। जैनियों के घर मिरच में करीबन १०० और सांगली में २० हैं। यहां से पूना का टिकट ले।

पूना

स्टेशन से २ मील शुक्रवारी बाजार में जैन धर्मशाला है।

दितवारी बाजार में ४ मंदिर हैं । यहां तुलसीबाग, कौंसिल हाल, यर्वदा जेल, म्यूजियम आदि देखने योग्य हैं । यहां से बम्बई जाना चाहिये । मोटर से किराया कम लगता है ।

बम्बई

हीराबाग धर्मशाला जाना चाहिये या पास ही सुखानन्द धर्मशाला है । हीराबाग से तारदेव के रास्ते पर जैन बोर्डिंग व स्कूल है । इस धर्मशाला में दि० जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी का दफ्तर है । इसी में ऐलक पन्नालालजी जैन औषधालय भी है । इसी धर्मशाला में व्याख्यान भवन, वाचनालय आदि हैं । यहां सिर्फ दो मंदिर और ४ चैत्यालय हैं । एक मंदिर तेरापंथी का भूलेश्वर में है । दूसरा बीस पंथ के नाम से गुलाल बाड़ी में है ।

यह बहुत बड़ा व्यापारिक शहर है । यहां से बहुत सा सामान देश देशांतरों को आता जाता है । यहां का बन्दरगाह बहुत बड़ा है । किश्तियों में बैठने का आनन्द ताजमहल होटल के पास वाली खाड़ी में आता है ।

यहां सूती और रेशमी कपड़े के मिल, अजायबघर, टकसाल, प्रोंगका लाइट हाउस, कुलाबे का गिर्जा, चौपाटी, सार्वजनिक पुस्तकालय, हाईकोर्ट, सेक्रेटरियट, कौंसिल हाल आदि दर्शनीय हैं । बम्बई के पास ही 'ऐलिफेन्टा' की गुफा देखने योग्य है । अपोलो बन्दर से १ मील का रास्ता है, यहां पहाड़ काट कर मंदिर और मूर्तियां बनाई गई हैं । मारवाड़ी बाजार और कालबादेवी रोड देखने योग्य हैं । यहां से नासिक का टिकट लें ।

नासिक में हिन्दू धर्मशालायें बहुत हैं, हिंदुओं का तीर्थ है, पीतल के बर्तन मशहूर हैं । गोदावरी नदी का घाट महा मनोहर है ।

यहां से तांगे में ३ मील मशरूल ग्राम चले जावें । जैन धर्मशाला है यहां से श्री गजपंथा तीर्थ लगभग १ मील है ।

श्री गजपंथा सिद्ध क्षेत्र

पहाड़ की चढ़ाई आधा मील है। सीढ़िया बनी हुई हैं। पर्वत पर २ मंदिर, २ कुंड और २ गुफायें हैं। मंदिरों के शिखर और प्रतिमायें पर्वत के पत्थर काटकर बनायी हैं। दो स्थानों में चरण पादुका हैं। यहां चढ़ाव और कोट पर सफेदी की हुई है। यहां बलभद्र आदि ८ करोड़ मुनि मोक्ष गये हैं। यहां से नासिक जाकर मनमाड़ जङ्क्शन का टिकिट लें।

श्री मांगी तुङ्गी (सिद्धक्षेत्र)

मनमाड जङ्क्शन से ६० मील दूर मांगीतुङ्गी मोटर से जाना चाहिये। कई धर्मशालायें हैं। विशाल जङ्गल में पहाड़ से नीचे एक धर्मशाला है उसी में एक मन्दिर है। मांगी और तुंगी नाम के दो पहाड़ हैं। पहाडों की चढाई कठिन है। मांगी पहाड़ की चढ़ाई ३ मील है, इस पर चार गुफायें हैं। पहाड़ में पहाड के पत्थर से बहुत सी प्रतिमायें बनाई हैं। मूल नायक श्री भद्रबाहु की प्रतिमा है। यहां से २ मील दूर तुङ्गी पहाड़ है, इस पहाड़ पर मूर्तियाँ कम हैं। यहां भी ३ गुफायें हैं। इन दोनों पहाडों से राम, हनुमान सुग्रीव आदि ६६ मुनीश्वर मोक्ष पधारे हैं। एक कुण्ड है, लोग सामग्री धोते हैं। यहां से मनमाड़ वापिस लौटना चाहिये।

भुसावल

स्टेशन के पास ही जैन धर्मशाला है, यहा केवल एक ही जैन मन्दिर है। यहां से सूरत जाना चाहिये।

सूरत

स्टेशन से शहर को मोटर जाती है। यहां भी एक मन्दिर है। यहां पास ही चन्दावाडी में जैन धर्मशाला है। यहां से जैनमित्र, दिगम्बर जैन, जैन महिलादर्श पत्र प्रकाशित होते हैं। यहां कुल ७

मंदिर हैं। रुई व अनाज का व्यापार होता है। यहां जरी का काम बहुत अच्छा होता है। देश-विदेशों में माल जाता है। यहां से बडौदा आना चाहिये।

बड़ौदा

स्टेशन से २ मील दूर शहर है, यहां चौक बाजार में नई पोल के पास जैन धर्मशाला है। यहां केवल २ मंदिर हैं। यहां राजा का महल, बाग, कचहरी आदि देखने योग्य हैं। लक्ष्मी विलास महल को महाराज ने २७ लाख की लागत से तैयार कराया है। यहां से गोधरा, आनंद पोलाद आना चाहिये और सीधा टिकट अहमदाबाद का लेना चाहिये। बडौदा से पांवागढ़ जाते हैं।

अहमदाबाद

यहां एक दि० जैन धर्मशाला और २ प्राचीन जैन मंदिर हैं। मंदिर माणिक चौक में मॉडवी पोल के पास हैं। यहां कांच, लोहा कपड़ा आदि के बहुत से कारखाने हैं। इसके सिवाय जुम्मा मसजिद, सारसीज में बना हुआ तालाब, स्वामी नारायण का मन्दिर, तीन दरवाजा, काकरिया झील आदि देखने योग्य हैं। हर तरहका व्यापार होता है। यहां कपड़ा बुनने की मिलें बहुत हैं। यहां से भावनगर जावें।

भावनगर

स्टेशन के पास एक धर्मशाला है। यहां गोगड़ी दरवाजा हूमड़ों के मुहल्ले में २ जैन मन्दिर हैं। शहर अच्छा है। यहां राजमहल बाग, हौज, मिल आदि दर्शनीय हैं। पीतल तांबे के बर्तन, तेल कपड़े का व्यापार अधिक होता है। यहां से पालीताने का टिकट लेना चाहिये, बीच में सिहोर गाडी बदलती है, वहां से १ ब्रांच लाइन पालीताने-तक जाती है।

पालीताना

स्टेशन से १ मील दूर नदी के पास एक जैन धर्मशाला है, नदी के दूसरी पार एक जैन मन्दिर है। यहां से शत्रुञ्जय पहाड़ की वंदना के लिये जावें। पालीताने से शत्रुञ्जय पहाड तक तांगे बैलगाडी जाती हैं। १।। मील दूर है। एक पानी का कुण्ड बहुत सुन्दर है।

शत्रुञ्जय पहाड़

पर्वत की चढाई लगभग २ मील है। पर्वत पर दो दि० जैन मन्दिर हैं। चढाई के रास्ते में कई कुण्ड और तालाब हैं। पर्वत की चढ़ाई के मार्ग में आदिनाथजी के मन्दिर के पीछे बहुत सी छोटी कोटरी और आलों में बहुत सी चरण पादुका हैं। श्वेताम्बर आम्नाय के बहुत से मन्दिर हैं। पालीताना स्टेशन से जूनागढको जावें।

जूनागढ़

स्टेशन से एक मील दूर जैन धर्मशाला है। यहां का महल, कचहरी, तालाब आदि देखने योग्य हैं। यहां से गिरनार पहाड को जाना चाहिये। यह पहाड यहां से ३ मील दूर है। पर्वतराज की तलहटी में विशाल दि० जैन धर्मशाला है।

गिरनार (ऊर्जयन्ति)

प्रातः काल स्नान वगैरह से निवृत होकर पर्वतराज की वन्दना को जाना चाहिये। इस पर्वत पर लगभग७०२० सीढियां है, करीब २ मील की चढाई के बाद सोरठ का महल आता है। यहां से आगे कोट में दो दिगम्बर जैन मन्दिर हैं। प्रतिमाये सुन्दर हैं। यह पहली टोंक है। इसी के पास एक राजुलजी की गुफा है, यहां पर ही राजुलजी ने तप किया था। यहां एक चरणपादुका भी है। इसके

आगे १ मील चलकर दूसरी तीसरी टोंक हैं, यहा पर चरण-पादुकाएँ है। इन टोकों पर नेमिनाथ भगवान ने तप किया था।

इस पहाड को दिगम्बर, श्वेताम्बर, हिन्दू, मुसलमान सभी मानते हैं। यहां से एक मील की चढ़ाई पर चौथी पांचवीं टोंकें हैं। चौथी टोंक का रास्ता खराब और खतरनाक है।। यहां पर एक गुमटी और चरणपादुका है पांचवी टोंक जाने की सीढियां पर अच्छी हैं, यह सबसे ऊंची है। यहां सेनेमिनाथ भगवान मोक्ष पधारे हैं उनकी चरण पादुकायें हैं। छठी टोंक कालका की है, इस पर कोई नहीं जा सकता। सेसावन में भगवान का दीक्षा स्थान है। इस पर्वत से ७२ करोड मुनिराज मोक्ष पधारे हैं। वहां की वन्दना भाव सहित करनी चाहिये। यहां से राजकोट जावें।

राजकोट

शहर बडा सुन्दर है, यहां के बाजार देखने योग्य हैं। दो जैन मन्दिर हैं। यहां से तारंगा हिल जावें, बीच में महसाना गाडी बदलनी पडती है।

तारंगा सिद्ध क्षेत्र

तारंगा हिल स्टेशन से तारंगा ३॥ मील पैदल या बैलगाडी द्वारा है। एक मील दूरी पर पहाड की तलहटी में जैन धर्मशाला है। धर्मशाला में १३ प्राचीन मन्दिर हैं। पहाड़ के चारों तरफ कोट है। यहां से ३॥ करोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं। कार्तिक और चैत्र में मेला होता है। यहां २ पहाड़ हैं, एक कोटिशिला और दूसरा सिद्धशिला के नाम से है। तारंगा हिल से आबू रोड़ आना चाहिये।

आबूरोड़ (दिलवाड़ा)

आबूरोड़ स्टेशन पर एक धर्मशाला और १ मन्दिर है। यहां से माउन्ट आबू १६ मील दूर है। माउन्ट आबू से दिलवाडा १॥

मील है। यहां जैन धर्मशाला है। एक बडा भारी जैन मन्दिर है। यहां ५ श्वेताम्बरी मन्दिर प्राचीन हैं। इनके वीच एक दिगम्बर मन्दिर भी है। समूह से वाहर सड़क के किनारे एक दिगम्बर जैन मन्दिर और भी है, इसमें आदिनाथजी की प्रतिमा सुन्दर है। यहां से ४ मील दूर अचलगढ़ देखने योग्य है। नीचे एक तालाव है, गढ पर एक मूर्ति है, इसमें १४४४ मन सोने की १४ प्रतिमायें और हैं यहां और भी १४ देहरी हैं। इन्हीं मन्दिरों में दि० प्रतिमा भी हैं। आवू रोड से नयानगर (व्यावर) जावें।

नया नगर

स्टेशन से एक मील दूर नसियां है। यहां कपड़े की तीन मिलें हैं। वनयान बनाने का भी वडा कारखाना है। शहर के चारों तरफ परकोटा और चार दरवाजे हैं। तीन मंदिर शिखरवन्द हैं कुल पांच हैं। जैनियों के घर अधिक हैं। यहां से अजमेर जावें।

अजमेर

स्टेशन से २ फर्लांग दूर जैन धर्मशाला है। यहां मन्दिर और २ चैत्यालय हैं, एक नसियां है। नसियां ३ मंजिल ऊंची बनी हुई है। पहिली मंजिल में अयोध्या के समवशरण की सब नकल धातु की बनी हुई रंग विरंगी है। दूसरी मंजिल में स्फटिक और माणिक से बनी-प्रतिमायें हैं। इस जगह तीर्थ क्षेत्रों का नक्शा दीवाल मे लिखा हुआ है। तीसरी मंजिल में काठ के हाथी घोडे आदि रखे हैं। यहां ख्वाजा साहव की दरगाह, गढ विटली, आना सागर आदि दर्शनीय हैं। यहां से ७ मील दूर पुष्कर हिन्दुओं का तीर्थ है। यहां (पुष्कर में) वहुत वडा तालाव है, राजाओं के सुन्दर मकान वने हैं। एक जैन मन्दिर अच्छे मौके पर बना हुआ है और दर्शनीय है। अजमेर से नसीराबाद और चित्तौडगढ होकर उदयपुर जावें।

उदयपुर

स्टेशन से १॥ मील दूर सूरजपोल के बाहर राज्य की धर्म-शाला है। यहां से बाजार भी पार है। यहां ८ जैन मन्दिर और २ चैत्यालय है। प्राकृतिक सौन्दर्य, रमणीय प्रसाद और शुद्ध वायु के लिए प्रसिद्ध है। जैनियों का पार्श्वनाथ विद्यालय है। यहाँ का राजमहल, जगनिवास, अजायबघर, एकलिंगजी, हल्दी घाटी आदि दर्शनीय हैं।

यहाँ से ४० मील दूर श्री केशरियानाथ जाना पडता है, यहां बैलगाडी या तांगे या मोटर से पक्की सड़क से जाते हैं। इस गांव का धुलेव नाम है, इसे केशरियानाथ क्षेत्र कहते हैं।

केशरियानाथ

यहां चारों तरफ कंगूरेदार कोट बना हुआ है। इसके पास एक नदी, एक तालाब, बावडी और कई कुंड, चार धर्मशाला और एक विशाल मन्दिर है। मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा श्री आदिनाथजी की है। इस मन्दिर में ५२ देहरियां हैं। यहां विशेषतः केसर चढ़ती है। दूध का प्रक्षाल होता है, गुलाल भी चढ़ता है, तीनों काल यहां पूजा होती है। मन्दिर के सामने फाटक पर हाथी के ऊपर नाभि राजा और मरूदेवी की मूर्ति शोभित है और दोनों ओर चरण बने हैं। मन्दिर के अन्दर आठ खम्भों का दालान है, यहां ७ फुट ऊँची श्यामवर्ण श्री आदिनाथजी की दिगम्बर प्रतिमा है।

इस मन्दिर से एक मील दूर चरण पादुका है इसे पगलियाजी के नाम से कहते हैं। यहां एक चौक, बाग, बावडी और दालान है तथा छत्री में भगवान के चरण हैं। केशरियानाथ के मन्दिर की प्रतिमा इसी स्थान से निकली थी। एक धूलिया नामक भील को

स्वप्न में प्रतिमा के सम्बन्ध में ज्ञात हुआ, उसने खुदाई कराई, प्रतिमा के साथ वहुतसा धन मिला। इस गांव का नाम धुलेवा रखा और विशाल मन्दिर उसी भील ने बनवाया। यहां से चित्तौडगढ का टिकट लें। रास्ते में करेड़ा (पार्श्वनाथ) भी उतर सकते हैं। एक विशाल मन्दिर दिगम्बरियों का था अब श्वेताम्बरियों का हो गया है।

चित्तौड़गढ

यहां का किला दुनियां में प्रसिद्ध है। यहां केवल एक चैत्यालय है। राज कचहरी पहाड़ की तलहटी मे है, यहां से पास लेकर किले में जाते हैं। यहां कीर्त्ति स्थंभ, जलस्थभ, सूर्य फाटक आदि प्राचीन होने से टूटी फूटी अवस्था में हैं। यहां से मन्दसौर का टिकट लें।

मन्दसौर

स्टेशन से शहर १॥ मील है, यहां कोट के पास ही हिन्दू धर्मशाला है। यहां ५ मन्दिर शिखर बन्द और दो चैत्यालय हैं। यहां से प्रतापगढ जाना चाहिये।

प्रतापगढ

यहां दि० जैनियों की संख्या अधिक है। यहां बड़े २ जैन मन्दिर और ७ चैत्यालय हैं। शहर के बाहर एक मील की दूरी पर शांतिनाथ भगवान के मन्दिर मे ६ फुट ऊँची पद्मासन प्रतिमा अतिशय युक्त है। राजमहल, कचहरी, बाजार इत्यादि देखने योग्य हैं। यहां से मन्दसौर लौटकर इन्दौर जाना चाहिये। मार्ग में जावरा में ४ मन्दिर हैं। रतलाम मे ७ मन्दिर और १ नसियां है। राजा का महल, चौपड़ बाजार देखने योग्य है। बडे नगर में ३ जैन मन्दिर हैं। यहां प्रांतिक जैन औषधालय, अनाथालय आदि संस्थाये अच्छा काम कर रही हैं।

इन्दौर

स्टेशन से १ फर्लांग दूर जावेरी बाग में राव राजा स्वरूप-चन्दजी हुकमचन्दजी की नसियां है और धर्मशाला है। यहां से आधा मील दूर छावनी में दो मन्दिर हैं। १ मन्दिर तुकोगंज में, १ दीतवारा बाजार में और १ मन्दिर मल्हारगंज में है। यहां कुल ६ मंदिर हैं। यहां होल्कर कालेज, डाकखाना, महाराजा थियेटर हाल, विश्रामघर आदि देखने योग्य हैं। सर सेठ हुकमचंदजी का शीशमहल और उसी में जैन मंदिर सुन्दर है। तुकोगंज में इन्द्रभवन स्थान भी देखने योग्य है। सेठसाहबकी कई पारमार्थिक संस्थायें हैं। यहां से थोडी ही दूर रेवा नदी है, उसे मोटर द्वारा पार कर सिद्धवर कूट क्षेत्र जाना चाहिये।

सिद्धवर कूट

यहां चारों ओर कोट है, अन्दर ८ जैन मंदिर और ४ धर्म-शाला हैं। यहां से साढ़े तीन करोड मुनिराज, दो चक्रवर्ती और १ कामदेव मोक्ष पधारे हैं। यहां जङ्गल में भी एक मन्दिर है। यहां से मोटर द्वारा सनावद स्टेशन जावें, स्टेशन से मोटर द्वारा खरगोन जाना चाहिये। यहां से २ मील ऊन (पावागिर क्षेत्र) जाना चाहिये। यह प्राचीन क्षेत्र पावागिरि के नाम से अभी प्रसिद्ध हुआ है। यहां बहुत से मन्दिर और मूर्तियां जमीन से निकली हैं। यहां से सनावद लौट कर मऊ छावनी का टिकट लें।

मऊ छावनी

स्टेशन के पास हिन्दू धर्मशाला है। शहर में ३ मन्दिर और १ चैत्यालय हैं। यहां की छावनी [फौज पलटन के रहने का स्थान) बहुत बडी है। कपड़े का व्यापार अधिक होता है।

बड़वानी

यहां मोटर से आना होता है। यह एक बडा सुन्दर व्यापारिक शहर है। यहां एक बडा दि० जैन मन्दिर है, बोर्डिङ्ग है और २ धर्मशालायें हैं। राजमहल, कचहरी आदि दर्शनीय हैं।

यहां से ५ मील दूर श्री बावनगजाजी तीर्थ है। इसे चूलगिरि भी कहते हैं। पहाड़ की तलहटी मे दो मंदिर और दो धर्मशालायें हैं। यहां पर एक बावनगजाजी की खड्गासन प्रतिमा मनोहर है। यह प्रतिमा कुंभकर्ण की है और इसी के पास एक ६ गज की प्रतिमा इन्द्रजीत की है। इस जगह से १ मील चढ़ाई है पहाड़पर कुल १० मन्दिर हैं। बड़वानी मे पौष में मेला होता है। यहां से बढवानी, बढवानी से मऊ और मऊ से उज्जैन जावें।

उज्जैन

स्टेशन से २ मील दूर नमकमण्डी में जैन धर्मशाला है। एक मन्दिर धर्मशाला के पास है, दूसरा मन्दिर नयापुरा मे है। यहां कपड़े की तीन मिलें हैं। इस स्थानको हिन्दू लोग पवित्र तीर्थ मानते हैं। यहां आकाशलोचन, भैरवमठ, गोपाल मन्दिर आदि दर्शनीय हैं। यहां से मक्सी स्टेशन भोपाल ब्रांच लाइन का टिकट लेना चाहिये।

मक्सी पार्श्वनाथ

स्टेशन के पास ही जैन धर्मशाला है। यहां से १ मील कल्याणपुरा नाम का कस्बा है, यहां भी एक धर्मशाला है। इस धर्मशाला में २ मन्दिर दिगंबरी हैं। यहां १ प्राचीन दि० जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथजी का था। पहिले यह दिगम्बरी था अब दिगम्बर श्वेताम्बर दोनों के अधिकार में है। सुबह ६ बजे तक दि० पूजन करते हैं बाद में श्वेताम्बर। दर्शन सबही हर समय कर सकते हैं।

भगवान पार्श्वनाथ की प्राचीन चतुर्थ काल की प्रतिमा मनोहर है। यहाँ से भोपाल जाना चाहिये।

भोपाल

चौक बाजार के पास जैन धर्मशाला है। यहां १ मन्दिर और १ चैत्यालय है। यहां टकसालघर, तोपखाना, मोती मसजिद, नवाब का महल आदि दर्शनीय हैं। यहां से इटारसी होकर नागपुर का टिकट लें।

नागपुर

स्टेशन से १ मील दूर जैन धर्मशाला है। यहां कुल १२ मन्दिर हैं। इसके सिवा कपड़े की मिलें, किला, अजायबघर, चिड़ियाघर, यूनिवर्सिटी आदि दर्शनीय हैं। रेल से भुसावल की तरफ मुर्तिजापुर होकर कारंजा जावे।

कारंजा

एक मील दूर जैन धर्मशाला है। यहां ३ भट्टारकों के बनवाये हुए ३ मन्दिर हैं, तीनों में धर्मशालायें हैं। एक मन्दिर में एक चैत्यालय है, इसी मन्दिर में १८ प्रतिमा स्फटिक रत्न, सुवर्ण और पुखराज की हैं। रुई का व्यापार अधिक होता है, ब्रह्मचर्याश्रम भी है। यहां से मूर्तिजापुर जाकर एलिचपुर जाना चाहिये।

एलिचपुर

एक जैन धर्मशाला है, सुलतानपुरा मुहल्ले में एक बडा कीमती मन्दिर है। यहां से परतवाडा जाना चाहिये।

परतवाडा

जहां एक जैन मन्दिर है, बाजार अच्छा है। यहां से ८ मील दूर मुक्तागिरि क्षेत्र बैलगाडी से जाना चाहिये।

मुक्तागिरि

तलहटी में एक धर्मशाला और एक मन्दिर है। वहां से १ फर्लाङ्ग चढाई है, चढने को सीढ़ियां हैं। अनेक प्रकार के मोतियों की वर्षा हुई थी इसलिये मुक्तागिरि नाम पडा। यहां कुल २६ मन्दिर हैं। पहाड पर एक गुफा मे एक मन्दिर में २ प्रतिमाएं शांतिनाथजी की हैं। यहां से मूर्तिजापुर जाकर नागपुर आवें और नागपुर से रामटेक जाना चाहिये।

रामटेक

स्टेशन से १॥ मील दूर एक धर्मशाला है। दस बडे२ मन्दिर हैं। दो मन्दिर बहुत ही कीमती हैं। एक मन्दिर में १ प्रतिमा १४ गज की और एक प्रतिमा ४ गज की खड्गासन विराजित है। यहां से लौटकर इतवारी स्टेशन से छिंदवाडा का टिकट लें।

छिंदवाड़ा

शहर से १ मील दूर धर्मशाला है। यहां ८ मन्दिर हैं। शहर साधारण है। यहां से सिवनी जाना चाहिये।

सिवनी

एक मील दूर शहर में धर्मशाला है। जैनियों की बहुत सी संस्थायें हैं। यहां २१ मन्दिर हैं। यहां सिवनी बन्ध नामक एक तालाब है। चांदी का रथ दर्शनीय है। एक श्राविकाश्रम है। परवार जाति के धनीमानी इसी नगर मे रहते है।

जबलपुर

स्टेशन से एक मील दूर लार्डगंज की धर्मशाला में ठहरें। हनुमान ताल पर ७५ मन्दिर और शहर में ३१ मन्दिर हैं! जैन परवारों के ३०० के लगभग घर हैं। मंगली बजारिया के पास

जैन मन्दिर में एक लाइब्रेरी है, एक बोर्डिंग भी है। घुवाधार नामक एक पहाडी-भरना भी है। यहां से कुछ दूर नर्मदा बहती है। भरना और नदी के पास संगमरमर की चट्टानों के दृश्य सुन्दर हैं, यहां एक जैन मन्दिर भी है। राजा गोकुलदास का महल· कंपनी बाग, हाई स्कूल आदि देखने योग्य हैं। यहां से करेली स्टेशन, वहां से मोटर द्वारा बडी देवरी और वहां से ३ मील दूर श्रीबीनाजी अतिशय क्षेत्र है।

श्रीबीनाजी

एक धर्मशाला है और ३ प्राचीन मन्दिर हैं। एक शिखर बंद मन्दिर में शांतिनाथजी की प्रतिमा १८ फुट और दो प्रतिमा ऊपर नीचे पद्मासन है। दिसम्बर में मेला होता है। यहां से देवरी आना चाहिये!

देवरी

यहां धर्मशाला है। दो शिखरबन्द मन्दिर और चैत्यालय हैं, यहां का किला देखें और मोटर से सागर जावें।

सागर

स्टेशन से एक मील दूर जैन धर्मशाला है। यहां १३ मन्दिर हैं। वर्णीजी द्वारा संस्थापित विद्यालय और कई संस्थायें हैं। यहां एक तालाब ५–६ मील लम्बा है इसीसे यहां का सागर नाम पडा। यहां एक सरस्वती भवन है जिसमें सब तरह के ग्रंथों का संग्रह है। यहां से मोटर द्वारा द्रोणागिरि, नैनागिरि, खजराहा को जाना चाहिये।

द्रोणागिरि

इस ग्राम का नाम सेंदप्पा है और पहाड का द्रोणागिरि। गांव के आसपास २ नदियां बहती हैं। यहां एक मन्दिर और एक

धर्मशाला है, थोडी दूर एक फर्लांग की चढाई के बाद पहाड पर २४ मन्दिर हैं। पास ही एक गुफा भी है।

नैनागिरि

यह पहाड नैनागिरि गांव से २ फर्लांग है पहाड पर १५ मन्दिर शिखर पर और ६ मन्दिर नीचे हैं। यहां भगवान पार्श्वनाथ का समवशरण आया था।

खजराहा

यहां प्राचीन २१ जैन मंदिर हैं। शांतिनाथ के मन्दिर में ५ गज ऊंची प्रतिमा है। थोडी दूर पर १६ मन्दिर हिन्दूओं के भी हैं। यहां से सागर जाकर और वहां से बीना जंकशन जाकर जाखलौन जाना चाहिये।

श्री देवगढ अतिशय क्षेत्र

जाखलौनस्टेशन से ८ मील दूर देवगढ गांव है। वहां से एक मील दूर पहाड है। गांव के पास नदी और धर्मशाला भी है। पहाड के पास वाली बावडी मे द्रव्य धोकर चढाई शुरू करना चाहिये। पहाड पर कोट के भीतर प्राचीन ४५ मन्दिर हैं। एक मन्दिर में एक गुफा है जिसमें १५ गज ऊची भगवान चन्द्रप्रभु की प्रतिमा है, यह सबसे बडा है। दो तालाब भी हैं। यहां से जाखलौन जाकर ललितपुर का टिकट लें।

ललितपुर

स्टेशन से आधी मील दूर जैन धर्मशाला है। यहां एक कोट के भीतर ५ मंदिर हैं। मन्दिरों का स्थान पृथ्वी से ८ गज ऊंचा है, प्रतिमायें प्राचीन हैं।

चंदेरी

ललितपुर स्टेशन से २० मील दूर जैन धर्मशाला है यहां तीन मंदिर हैं। एक मंदिर में वर्तमान चौबीसी के अलग २ शिखर

बंद मंदिर हैं ! एक धर्मशाला है। एक मील दूर पहाड़ पर गुफा में कायोत्सर्ग प्रतिमा हैं हाटकपुरा गांव में १ जैन मंदिर है। चंदेरी से १२ मील थूबौनजी में १६ जैन मन्दिर हैं। १०-१० गज ऊंची कई प्रतिमायें हैं। यहां से वापिस ललितपुर और वहां से ३४ मील दूर टीकमगढ जावें।

पपौरा

टीकमगढ में ठहरने के लिए धर्मशाला है और ७ मन्दिर हैं। यहां से ३ मील दूर पपौराजी में ८० मन्दिर हैं, जो कि प्राचीन हैं। यहां कार्तिक सुदी १५ को मेला होता है। यहां एक पाठशाला भी है। यहां से ललितपुर लौटकर झांसी जाना चाहिये।

झांसी

स्टेशन से धर्मशाला ३ मील है। यहां २ मन्दिर और १ चैत्यालय है। झांसी की लक्ष्मीबाई का किला और बाजार छावनी वगैरह देखने योग्य हैं। यहां से सोनागिरी जावें।

श्री सोनागिरी सिद्धक्षेत्र

यह पर्वत स्टेशन से तीन मील दूर है लेकिन इस पर बने हुए सुन्दर मन्दिर स्टेशन से दिखने लगते हैं। स्टेशन पर भी धर्मशाला है, वरना तलहटी में जाकर ठहरना चाहिये। यहां दो धर्मशालायें हैं। नीचे तलहटी में १६ मन्दिर हैं और नीचे ऊपर के कुल मन्दिर ७५ हैं।

सुबह स्नानकर बन्दना को जावें। पहिले नीचे के मन्दिरों के दर्शन करें फिर ऊपर के। सब मन्दिर १ मील के घेरे में हैं। यहां एक पाठशाला भी है। यहां से ग्वालियर जावें।

ग्वालियर

स्टेशन से २ मील दूर चंपाबाग में धर्मशाला है। यहां मन्दिर और चैत्याल कुल २० है। लश्कर से ग्वालियर १ मील के

फासले पर हैं। रास्ते मे पहाड़ पर बड़ी २ गुफाएं हैं। यहां के किले की मूर्तियां देखे, किला बहुत पुराना है। यहां राजवाडा चौक बडा अच्छा स्थान है। इसके सिवाय कपड़े की मिल, अजायबघर, मान मन्दिर, मोतीमहल आदि देखने योग्य हैं। यहां से आगरा जाना चाहिये।

यहां तीर्थ यात्रा समाप्त हो जाती है, इस तीर्थ यात्रा के मार्ग में यह विशेपता है कि एक तरफ से तीर्थ करते हुए परिक्रमा के ढंग से प्राय: सभी तीर्थों की यात्रा हो जाती है। एक ही जगह दुबारा नहीं आना पडता।

इस यात्रा सम्बन्धी परिक्रमा में केवल हस्तिनापुर, श्री महावीरजी और श्रीपद्मपुरा तीर्थों की यात्रा छूट जाती है जो कि प्रयत्न करने पर भी इस क्रम में न आ सकीं। उन तीर्थों का हाल अब और पढिये।

श्री महावीरजी

यात्रियों को आगरा फोर्ट से श्री महावीरजी का टिकट लेना चाहिये। स्टेशन से ४ मील की पकी सडक है। यहां पर कई धर्मशालायें हैं। परकोटे के भीतर विशाल मन्दिर बना हुआ है। यहां श्री महावीरजी की वडी ही दिव्य और मनोहर प्रतिमा है। यहां के अतिशय से भारत के सभी जैन परिचित हैं। चैत सुदि १३ से वैशाख बदि १ तक वडा भारी मेला लगता है। अभी कुछ वर्ष पूर्व एक विशाल मानस्तम भी बन गया है। यहां से सवाई माधोपुर होते हुये श्रीपद्मपुरा जाना चाहिये।

चमत्कारजी

सवाई माधोपुर रेलवे स्टेशन से १॥ मील की दूरी पर श्री चमत्कारजी का सुन्दर मन्दिर है। यहां स्फटिक की श्री आदिनाथ

भगवान की प्रतिमा है। यहां मन्दिर मुसलमानी जमाने में भी विद्यमान रहा है। इसी मन्दिर के पास श्री भट्टारकजी की नसियां है, वहां के दर्शन करते हुये सवाई माधोपुर शहर में जाना चाहिये। शहर में ८ विशाल मन्दिर हैं। मूर्तियां बडी ही मनोज्ञ हैं यहां से वापस स्टेशन आकर श्योदासपुरा (पद्मपुरा वाडा) का टिकट लेना चाहिये।

श्री पद्मपुरा

श्योदासपुरा स्टेशन से पद्मपुरा क्षेत्र ३॥ मील है। सवारी मिलती है। यहां सवत् २००१ में एक श्वेत पाषाण की दि० मूर्ति प्रकट हुई है। यह अतिशय संयुक्त मूर्त्ति है, यहां भूत प्रेत आदि की बाधा भगवान की सेवा-पूजा द्वारा ही दूर हो जाती है। यहां की व्यवस्था प्रबन्धक समिति द्वारा होती है। यहां पर बडा ही सुन्दर और विशाल मन्दिर बन रहा है। एक बडी धर्मशाला बन चुकी है, सुन्दर चरण छत्री है। यात्रियों की सुविधा का पूर्ण प्रबन्ध है। यहां से जयपुर जाना चाहिये। जयपुर से बसों का आवागमन है।

जयपुर

पद्मपुरा से जयपुर आने के लिये रेल और मोटर बस दोनों से ही मार्ग हैं। जयपुर में श्री सेठ बनजीलालजी ठोलिया की विशाल धर्मशाला में ठहरने की सुन्दर व्यवस्था है। एक धर्मशाला मेंहदी वालों के चौक में भी है। एक दीवानजी की धर्मशाला मनिहारों के रास्ते में दीवाणजी के मन्दिर के सामने है। इसी रास्ते में दि० जैन संस्कृत कालेज का भी भवन है और पास ही वीर पुस्तक भंडार-जहां सभी प्रकार की धार्मिक पुस्तकें प्राप्त होती हैं। इस शहर में सैकडों जैन मंदिर चैत्यालय हैं। शहर के पास दीवानजी की नसियां भट्टारकजी की नसियां, तीनों नसियां, आमेर आदि के

मन्दिरों के दर्शन करना चाहिये। जयपुर सुन्दर नगर है। जो भारत का पेरिस कहा जाता है। यहां से देहली जाना चाहिये।

देहली

देहली स्टेशन के पास भी कई धर्मशालायें हैं। वैदवाडा, धर्मपुरा, पहाडी धीरज पर जैन धर्मशालायें हैं। यहां के जैन मन्दिर भी बड़े विशाल हैं। यहां कुतुबमीनार, जंत्र मंत्र, राष्ट्रपति भवन, कौंसिल हाऊस, चांदनी चौक आदि देखने योग्य हैं। यहां से चलकर मेरठ जाना चाहिये। शहर देखकर २२ मील दूर हस्तिनापुर क्षेत्र को जाना चाहिये।

हस्तिनापुर

इस क्षेत्र में मन्दिर और कई धर्मशालायें हैं। यह पाण्डवों की राजधानी थी। यह शांतिनाथ, कुन्थुनाथ, अरनाथ भगवान की जन्मभूमि है। तीनों भगवान की तीन नसियां हैं। यहां से मथुरा जाना चाहिये।

मथुरा

यह हिन्दुओं का पवित्र स्थान है। यहां से जम्बू स्वामी मोक्ष पधारे हैं। यहां कई धर्मशालायें हैं। शहर से २ मील दूर परकोटे में जम्बू स्वामी का विशाल मन्दिर है। यहां ठहरने का भी स्थान है। यहां श्री अजितनाथ भगवान की मनोज्ञ और विशाल प्रतिमा है। यहां ब्रह्मचर्याश्रम और भा० दि० जैन सङ्घ का प्रधान कार्यालय है। यहां यात्रियों को जरूर जाना चाहिये।

सोलहवां अध्याय

—: घरेलू औषधियाँ

१ अमृतधारा

सत अजवायन १ तोला, सत पीपर मेंट १ तोला, कपूर — तोला मिलाकर एक शीशी में बन्द कर धूप में रख दें। अनेक रोगों की एक दवा है।

२ दंत मंजन

छाल मौलश्री १० तोला, कोयला कीकर ५ तोला, नमक सेंधा ६ माशा, माजू १ तोला इन सब को कूट छान कर शीशी में भरलें। लाभकारी मंजन है।

३ विच्छू के काटे पर

इन्द्रायन की जड घिस कर लेप देना चाहिये और ठंडा पानी पीना चाहिये।

४ पेट दर्द

अमृतधारा ४ बूंद पानी में डालकर पीना चाहिये या सौंफ सनाय, हरड़ बड़ी, सेंधा नमक दो दो माशा लेकर कूट कर गर्म पानी के साथ फंकी लेना चाहिये। अर्क पोदीना, अर्क सौंफ, तीन तीन तोले लेकर गर्मकर पीना चाहिये!

५ दन्त रोग

रौज दांतौन करना चाहिये, इससे रोग होता ही नहीं। हरडे, बहेडा, आमला तीनों प्रकार के नमक और मानूफल इन सब को

कूट पीस कर छान ले दांतुन करें। मसूड़े फूलने पर नमक मे कड़वा तैल मिलाकर रगड़ना चाहिये।

६ नमक सुलेमानी

नमक सेंधा, नमक सांभरा, नमक काला हर एक ५ पांच तोला आध पाव नीबू के रस मे खरल कर छाया मे सुखाले। फिर नौसादर ६ तोला, मूलीखार १० तोला, पोदीना १० तोला, काली मिर्च ४ तोला, जीरा ४ तोला, दाल चीनी १ तोला, भुना सुहागा २ तोला, पीपल २ तोला, सोंठ ३ तोला, इन सब को अच्छी तरह पीस कर ऊपर वाली चीजों मे मिलाले। यह चूर्ण पेट दर्द का चलना, बदहजमी आदि सभी पेट के रोगों मे रामबाण है।

७ खांसी

६ माशे काकड़ा सींगी बारीक कूट कर मिश्री की चासनी में मिला कर कुछ देर चाटना चाहिये।

८ नकसीर

रसोत फूंक कर सूंघना चाहिये। या चिकनी मिट्टी पानी से तर कर सूंघनी चाहिये।

९ जुकाम व नजला

बनफशा, मुलहटी, उन्नाव, लिसोड़ा, खतमी, उस्तखदूस, गावजबा तीन तीन माशे लेकर पाव भर पानी मे अच्छी तरह औटा कर सुबह शाम सेवन करे।

१० जल जाने पर

गोले के तेल को चूने के पानी के साथ खूब फेट कर लगाना चाहिये या सरसों का तेल लगाकर ऊपर से पिसी हुई मेंहदी बुरक देना चाहिये।

११ आंख दुखने पर

एक छटांक गुलाब जल में १ माशा फिटकरी पीस कर डाल दें और फिर दिन में ३-४ बार डालें।

१२ आंख दुखने की पोटली

पठानी लोध ६ माशे, पिसी हलदी ६ माशे, अफीम १ रत्ती इनको साफ पत्थर पर घिस कर कपड़ छान करलो। मिट्टी के कोरे वर्तन में पानी में कपडे की पोटली बनाकर रखदो। पोटली को बार-बार दुखती हुई आंख पर लगाओ।

१४ गला पड़ना

गर्मी का मौसम में या ज्यादा बोलने से गला पड जाये तो धनियां मिश्री को चटाने से गला ठीक हो जाता है।

१४ मुंह में छाले

(१) सरद चिन्नी, पपड़िया कत्था, छोटी इलायची, वंशलोचन समुद्री झाग इनको बारीक पीस कर मुंह में जहां छाले पडे हों भुरके और मुंह नीचे करके लाल टपका देवे।

(२) अमृतधारा का फोवा छाले पर लगा कर लार पटका देवें।

(३) सौंफ आंवले जीरे का ज्यादा प्रयोग करे। खटाई तेल गुड मिरच से जितना बच सके बचे। घी, बादाम की चटनी को ज्यादा काम में ले।

१५ बाय का दर्द

एक पक्का नीले रंग का बैंगन लेवे। उसके चारों तरफ लोंग की डंठल गाड़ दे। फूल बाहर रह जाये। आधा सेर सरसों का तेल लोहे की कड़ाई में पकने रखदे। पकते तेल में बैंगन को

छोडदे । चम्मच वगैरह मे बैंगन को चलाता रहे । जब बैंगन काला पड जावे सूख जाये, तब कढाई को नीचे उतार लेवे । लोहे की मूसली से बैंगन को कढाई में ही तेल में रगड दे । फिर उसे शीशी में या टीन के डिब्बे में भर कर रख दे । बाय के रोगी को जहां बाय हो तेल वाली दवा जरा गरम कर लगावे, मामूली सेके, रुई रख कर पट्टी बांध देवे हवा न लगने दे । सर्दी से पैदा हुआ बाय का दर्द अच्छा हो जायेगा ।

१६ बुखार खांसी नाशक दवा

३ रत्ती दाल चीनी, ३ रत्ती लौंग, ३ रत्ती तुलसी की पत्ती छोटी इलायची के दाने ३, आधा पाव ओटते (गर्म) पानी में ये सब डाल कर दो छटाक दूध मिलाकर चीनी गेर कर पीवे कपडा ओढ कर लेट जावे । तीन दिन ऐसा करने से बुखार खांसी मलेरिया प्यास धमन आदि शांत हो जाते हैं ।

१७ पसली चलना

छोटे बच्चों को सर्दी लगने से पसली चलने लगती है । यह दवा अकसीर है । १ छटांक सरसों के तेल में ८—१० दाने मेथी, आधी गाठ सूंठ, ४-५ लौंग कूट कर गेरे, फिर तेल को गरम करे । एक उबाल सा आने पर उतार ले । ठंडा होने पर शीशी में भर कर रखले । जरूरत होने पर हाथों से छाती तथा कमर पर व पैरों के तलवे में लगावे । आवश्यकता समझे तो रुई से हलका २ सेक करे, हवा से बचाये ।

१८ स्वादिष्ट हाजिमा चूर्ण

पांदीना सूखा २ तोला, सूंठ २ तोला, सफेद मिरच २ तोला बडी पीपल २ तोला, हींगडा आधा तोला, बडी इचायची के बीज २ तोला, पीपरमेंट ३ माशा, नींबू का सत ६ माशा, काला नमक

७ तोला, अजवान देशी ३ तोला, पतर १ तोला, जीरा सफेद ३ तोला, सुहाग वरमान २ तोला, कलमी सोरा १ तोला, नौसादर ५ तोला।

विधि—इन १५ चीजों में से हींगडे को घी में भूने तथा सब को खूब बारीक कूटे कपड़ छान करले। पेट दर्द, जी मिचलना, अजीर्ण अवस्था में थोडा सा खावे। भोजन के बाद जरा सा खावे।

१६ सिर दर्द

(१) सूखे धनिये को खूब बारीक पीसना चाहिये। फिर पानी गेर कर चटनी सी बनावे और कटोरी में गरम करे। गरम गरम कर ललाट और माथे पर लेप करे तथा कण्डे की आग से सेक करे। सिर दर्द अच्छा होगा।

(२) जौ और सरसों के दाने पानी गेर पीसे, गरम करे सिर पर लेप करे, कण्डे की आग से सेके, सर्दी गर्मी से पैदा हुए दर्द को जड से खो देगा।

(३) ४ पिस्ता २ बादाम ४ दाने चिरोंजी बारीक रगड कर घी में छोंक ले, दर्द की जगह माथे पर सुहाता सुहाता लेप करे सिर दर्द अच्छा हो जायगा।

२० खांसी की दवा

सोंठ, हल्दी, नमक तीनों चीजों को बारीक पीसे, दो चम्मच पानी गेरकर गरम करे। खांसी वाले को पिलादे। दो तीन बार देने से खांसी में लाभ होगा।

२१ दन्त मंजन

बादाम के छिलके जलाकर राख करले उसमें मिकदार से सूखा आँवला, काली मिर्च, फिटकरी की खील (फिटकरी को

गरम तवे पर गेर खील बनाले) हल्दी, नोसादर, सींधा नमक काला नमक, छोटी इलायची।

इन सबको खूब बारीक पीसकर कपड छान करले, फिर थोडा सा कपूर मिलाकर शीशी मे भरकर रखदे। प्रातःकाल दांतों पर मले दांत साफ और मजबूत हो जायेंगे।

२२ खून साफ करने का नुसखा

मजीठ, नगरमोथा, कुडे की छाल गिलोय, सोंठ, भाडंगी, कटहली, घच, नीम की छाल, दारु हल्दी, बडी हरडे, बांसके पत्ते बहेडा, चिरायता, नेत्रवाला, गुदा असलतास, कचनार की छाल, सरफोंक, सूखा आमला, उसवा, प्रत्येक २—२ माशा वजन से लेवें।

इन सबको खूब कूट कर आधासेर पानी मे उबाले। जब पाव भर पानी रहे तब मिश्री मिलाकर दोनों समय पीवे। २१ दिन के सेवन से कैसा भी खून विकार हो लाभ होगा। घी का प्रयोग अधिक करे।

सत्रहवाँ अध्याय

श्री महावीर क्षेत्र की विभिन्न प्रवृत्तियां

दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी भारतवर्ष की धर्म प्राण जैन समाज की श्रद्धा का केन्द्र-स्थल बना हुआ है। इस क्षेत्र की यात्रार्थ प्रतिदिन ही सैकड़ों यात्री आते रहते हैं और श्रद्धा एवं भक्ति से भगवान् श्री महावीर प्रभु की पूजा एव दर्शन कर अपना मानव जीवन सफल करते हैं। यह क्षेत्र मात्र जैन बन्धुओं की ही श्रद्धा का स्थल नहीं है, अपितु सैकड़ों वर्षों से जयपुर, करौली, भरतपुर, अलवर आदि रियासतों के मीणा गूजर ब्राह्मण वैश्य आदि सभी जातियों की श्रद्धा का केन्द्र रहता आ रहा है। प्रति वर्ष चैत्र शुक्ला १३ से ५ दिन तक लगातार उक्त सभी जातियों के व्यक्ति आकर वीर प्रभु के दर्शन कर अपना जीवन सफल बनाते रहे हैं। यह मेला राजस्थान के सबसे बड़े मेले के रूप मे होता है।

इस प्रकार के महत्ववाला यह स्थान भूतपूर्व जयपुर राज्य की हिण्डौन निजामत का एक प्रमुख स्थान है। पश्चिम रेल्वे (बडी लाईन) पर २५ वर्ष पूर्व पटुंदा महावीर रोड और अब श्री महावीरजी के नाम से प्रख्यात स्टेशन है। आज से ७५ वर्ष पूर्व जब कि इधर रेलवे लाईन नहीं बनी थी उस समय लोग छोटी लाइन से मंडावर स्टेशन (बांदीकुई भरतपुर के मध्य) उतर कर गाडी तांगों आदि से आया करते थे। उस समय तक यहां बहुत

थोडे लोग आते थे किन्तु गत २५ वर्षो से जब से इस क्षेत्र की व्यवस्था का भार जयपुर जैन पंचायत द्वारा निर्मित कमेटी ने अपने हाथ में लिया है यहां की शोभा दिन दूनी रात चौगुणी चढती जा रही है और क्षेत्र सम्पूर्ण भारत में प्रख्यात हो गया है। क्षेत्र कमेटी ने अपनी सुन्दर व्यवस्था से क्षेत्र को मनोरम और सुख सुविधा सम्पन्न बना दिया है।

सन् १६२३ से १६३० तक क्षेत्र की व्यवस्था कोर्ट आफ वार्ड्स के द्वारा हुई। उसमें भी क्षेत्र की कोई उन्नति नहीं हुई। बडे प्रयत्नों के पश्चात् कमेटी के भूतपूर्व सभापति स्व० श्री मुंशी प्यारेलाल जी कासलीवाल बी. ए. रेवेन्यू मेम्बर, स्व० श्रीजमनालालजी साह स्व० श्री दरोगा मोतीलालजी, स्व० श्री कपूरचन्दजी पाटनी आदि जयपुर समाज के प्रमुख व्यक्तियों और पचों के सहयोग से जयपुर पंचायत को राज्य सरकार द्वारा कार्यभार संभलाया गया। श्री जमनालालजी साह ने पचायत के अधिकारी की हैसियत से यहां के कार्य की देखभाल की। १ अप्रेल सन् १६३० को कोर्ट आफ वार्ड्स से जयपुर पंचायत द्वारा निर्मित कमेटी ने राज्य में प्रार्थना पत्र देकर क्षेत्र का कार्य संभाला। उस समय १६) जयपुरी म्होर, १) गिन्नी और ६७८॥८) नकद एवं ६२५ उपकरण तथा ८३।≡॥ छटांक चांदी रोकड़ बाकी थी।

कमेटी के भूतपूर्व सभापति स्व० श्री मुंशी प्यारेलालजी कासलीवाल बी. ए. भूतपूर्व मेम्बर कौंसिल आफ स्टेट जयपुर एवं मंत्री स्व० श्री रामचन्द्रजी खिन्दूका तथा कमेटी के सभी सदस्यों

ने पूर्ण लगन के साथ क्षेत्र का कार्य किया जिसके फल स्वरूप आज क्षेत्र का वर्तमान रूप दिखाई दे रहा है।

कमेटी के कार्य-काल के प्रमुख कार्य एवं घटनाएं

क्षेत्र की प्रबन्ध-व्यवस्था अपने हाथ में लेने के ६ महिने पश्चात् ही राजस्थान के भू० पू० राज प्रमुख जयपुर नरेश सवाई मानसिंहजी १४ जनवरी सन् १६३१ को अपने उच्चाधिकारियों सहित श्री महावीरजी दर्शनार्थ पधारे थे और अपने कर कमलों से श्री १००८ भगवान महावीर स्वामी की आरती उतारी थी।

सन् १६४३ मे मेले को बन्द रखने का सरकारी आर्डर हो चुका था। परन्तु १० दिन मे ही सरकार ने अपना दूसरा आदेश निकाल कर मेला यथावत् जारी रखा। इतना ही नहीं उसी मेलेमें जयपुर के तत्कालीन प्रधान मंत्री सर मिर्जाइस्माइल स्वयं आये, और खेड़ा ग्राम से स्टेशन महावीर तकके कच्चे रास्ते के स्थान पर पक्की सडक बनवाने मे आधी सहायता राज्य की ओर से देना घोषित किया। तथा उसी समय गंगापुर हिण्डौन निजामतों मे रथयात्रा के दिन की सरकारी कार्यालयों की छुटी भी घोषित की।

सम्वत् १६८७ में स्व० सेठ बनजीलालजी ठोलिया जौहरी के सुपुत्रों ने सर्व प्रथम एक सुन्दर विशाल धर्मशाला बनवाई।

सम्वत् १६६१ मे स्व० श्री सेठ सन्तलालजी गोधा जौंहरी देहली निवासी ने एक विशाल धर्मशाला बनवाई।

सम्वत् १६६३ में श्री ला०लक्ष्मीचन्दजी मनोहरलालजी रिवाडी वालों ने 'रिवाड़ीवाली' धर्मशाला का निर्माण कराया।

नं० ३ की धर्मशाला एक बहुत बडी धर्मशाला है। इस धर्मशाला का विभिन्न व्यक्तियों ने निर्माण कराया है। उसमें ऊपर नीचे ६०८ कोठरियां एव बरामदे हैं।

इसी प्रकार कटला मे भी विभिन्न व्यक्तियों द्वारा नये २ निर्माण कार्य कमेटी की देख रेख मे ही हुए हैं।

सम्वत् १६६६ मे औषधालय भवन श्री ला० द्वारकादासजी ताराचन्द्रजी सोनीपत निवासी द्वारा बनाया गया।

सम्वत् २००० मे मन्दिर की परिक्रमा का बडा एवं सुन्दर रूप श्री मुसद्दीलालजी देहली निवासी ने कराया।

सम्वत् २००१ मे श्री बधीचन्दजी गंगवाल जयपुर निवासी ने एक सुन्दर धर्मशाला का निर्माण कराया। इसी धर्मशाला में आजकल श्री दि० जैन आदर्श महिला विद्यालय चल रहा है। इसी प्रकार कमेटी के प्रबन्ध काल मे ही मन्दिर मे मकराणे का कार्य एवं वेदियों का जीर्णोद्धार होकर मदिर मनोहर एवं दर्शनीय बन गया है। सम्वत् २००४ में श्री सेठ जोहरीलालजी कन्हैयालालजी काला जियागंज निवासी ने एक सुन्दर मानस्तभ बनाया है। जिसकी प्रतिष्ठा होकर ४ सुन्दर मूर्तियां विराजमान हो गई हैं।

सम्वन २००६ में फाल्गुण शुक्ला ५ वी. नि, २४७६ दिनाङ्क २२-२-५० को श्रीमान् सेठ बधीचन्दजी गगवाल जयपुर निवासी (वर्तमान मंत्री प्र० का० कमेटी, श्रीमहावीरजी)ने मूलनायक भगवान महावीर स्वामी की तीन शिखर की सगमरमर की सुन्दर वेदी बनाई है।

क्षेत्र की विभिन्न धार्मिक प्रवृत्तियां

पाठशाला—

क्षेत्र पर तथा आस पास के गांवों में रहने वाले बालकों को प्रारम्भिक शिक्षा देने के लिये पाठशाला चल रही है। हिन्दी, अंग्रेजी गणित, धर्म आदि विषयों की शिक्षा दी जाती है।

पुस्तकालय वाचनालय—

क्षेत्र पर एक सुव्यवस्थित पुस्तकालय है। जहां नवीन से नवीन तथा उत्तम से उत्तम पुस्तकों का संग्रह है। इस पुस्तकालय में धार्मिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक, कथा कहानी नाटक उपन्यास आदि विषयों की पुस्तकों को पढकर यात्रीगण साहित्यिक ज्ञान की वृद्धि करते हैं। पुस्तकालय में ही वाचनालय हैं जहां दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक पत्र पत्रिकायें मंगाई जाती हैं।

छात्रवृत्ति—

आर्थिक सहायता के अभाव में समाज के कितने ही होनहार विद्यार्थी विद्याध्यन से वंचित रह जाते हैं। इसलिये लगभग ११ वर्षों से साधारण व उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को क्षेत्र की ओर से छात्रवृत्तियां दी जा रही हैं। इस कोश से डाक्टरी, इन्जीनियरिंग, वाणिज्य, विज्ञान, दर्शन, अर्थशास्त्र, आयुर्वेद, संस्कृत, जैन दर्शन आदि सभी विषयों के पढने वाले विद्यार्थी लाभ उठा रहे हैं।

महावीर चेयर—

क्षेत्र की ओर से हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी मे जैन दर्शन की महावीर चेयर स्थापित है। इससे विश्वविद्यालय मे पढने वाले जैन अजैन विद्यार्थियों ने अत्यधिक लाभ उठाया है। विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने भी इस की प्रशंसा की है। इस चेयर की देख भाल आदि की कुल जुम्मेवारी प्रवन्ध कारिणी की ओर से स्थानीय श्री सन्मति ज्ञान प्रचारणी समिति को दी हुई है।

अनुसंधान विभाग—

संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा हिन्दी के प्राचीन साहित्य के अनुसंधान तथा नवीन साहित्य सर्जन के कार्य का कितना महत्व है इसे सब कोई जानते है। आमेर का प्रसिद्ध तथा प्राचीन शास्त्र भडार जो वर्षों से बन्द पडा था उसे खुलवा कर एक वृहद् सूची पत्र तैयार करा कर प्रकाशित कराया जा चुका है। प्रशस्ति सग्रह के अतिरिक्त राजस्थान के हस्तलिखित ग्रथों की सूचियों के तीन भाग प्रकाशित हो चुके है जिसकी विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है इस वर्ष प्रद्युम्न चरित्र (आदि कालीन हिन्दी का काव्य) छप चुका है, कई ग्रंथ प्रेस मे देने को तैयार हो रहे है। अनुसंधान विभाग की ओर से वीरवाणी आदि पत्रों मे समय २ पर खोज पूर्ण सामग्री प्रकाशित होती रहती है। कई विद्वान् काय कर रहे है।

औषधालय—

यहां एक व्यवस्थित औषधालय है। जहां औषध निर्माणशाला भी है। औषधालय से यात्री गण ही नहीं, अपितु ग्रामीण जनता

भी पूरा लाभ उठाती है। आयुर्वेदिक औषधियों के अतिरिक्त मुख्य २ एलोपैथिक औषधियां भी यहां से दी जाती हैं।

श्री मन्दिरजी का प्रधान द्वार—

मन्दिरजी का प्रधान द्वार एवं इसके दोनों ओर के विशाल कमरे हाल ही में बने हैं जिसने मंदिर भवन के चार चांद लगा दिये हैं।

महावीर पार्क—

स्व० सेठ हीरालालजी के सुपुत्र श्री पन्नालालजी मानकचंदजी पांड्या गुना निवासी ने चैत्र शुक्ला १३ वीर निर्वाण सं० २४७५ में बनवाया है।

महावीर क्षेत्र के इतिहास सम्बन्धी तथ्यों की खोज हो रही है, पूर्ण होते ही शीघ्र ही प्रकाश में लाया जायगा।

श्री भट्टारक पट्टावली

यह पट्टावली मूल संघ सरस्वती गच्छ बलातकार गण दि० जैन भट्टारकों की है। सर्व प्रथम वि० सं० ४ में श्री भद्रबाहु भट्टारक इस गण के संस्थापक हुए नीचे सं० १७२२ से शुरू करते हैं।

विक्रम सं०	१७२२ सावन सुदी ८	श्री सुरेन्द्रकीर्तिजी
,,	१७२३ सावन बुदी ५	श्री जगतकीर्तिजी
,,	१७७० ,, ,,	श्री देवेन्द्रकीर्तिजी
,,	१७९० ,, ,,	श्री महेन्द्रकीर्तिजी

" १८१५ सावन बुदी ५ श्री क्षेमेन्द्रकीर्तिजी

(जयपुर गद्दी)

" १८२२ फागुन सुदी ४ श्री सुरेन्द्रकीर्तिजी

" १८५२ " " श्री सुखेन्द्रकीर्तिजी

" १८८० " " श्री नरेन्द्रकीर्तिजी

" १८८३ " " श्री देवेन्द्रकीर्तिजी

" १९३९ " " श्री महेन्द्रकीर्तिजी

" १९७५ आसोज सु० १० श्री चन्द्रकीर्तिजी

(वर्त्तमान भट्टाकर)

श्री दि० जैन मुमुक्षु महिला श्रम

यह संस्थान ब्र० पं० कृष्णावाईजी कलकत्ता द्वारा मिती फागुन सुदी १२ सं० २००० में स्थापित की गई थी। अनेक दानी महानुभावों द्वारा दिये गये द्रव्य से संस्था का विशालकाय भवन श्री महावीरजी के मन्दिर से पश्चिम दिशा में करीब एक फर्लाङ्ग पर तैयार हो गया है। आश्रम में एक विशाल मनोरम मन्दिर का निर्माण भी हो चुका है।

श्री दि० जैन कीर्त्तिसागर आश्रम

यह स्थान मन्दिरजी से पूर्व दिशा में स्टेशन से आने वाली सड़क के किनारे पर है। यहां श्री जिन चैत्यालय है। यह स्थान सुन्दर और रमणीक है। वर्तमान मे इसकी व्यवस्था क्षेत्र कमेटी के हाथ मे है।

श्री दि० जैन आदर्श महिला विद्यालय

यह संस्था ब्र० पं० कमलाबाईजी विशारदा द्वारा सन १६५२ में स्थापित की गई थी। वर्तमान में वह संस्था श्री सेठ बधीचंदजी गंगवाल जयपुर वालों की सन्मति धर्मशाला में चल रही है। इस संस्था में प्राथमिक शिक्षा से प्रारम्भ होकर शास्त्री, साहित्यरत्न विदुषी एव हाई स्कूल परीक्षा तक की शिक्षा की निःशुल्क व्यवस्था हैं। अम्बर चर्खा प्रशिक्षण की व्यवस्था भी यहां पर चालू है। इसकी संचालिका श्री पं० कमलाबाई रात दिन संस्था की प्रगति के लिए प्रयत्नशील रहती हैं। वर्तमान में लगभग ११० छात्राएं अध्ययन कर रही हैं। संचालिकाजी का उत्साह प्रशंसनीय है। इस विद्यालय का नवीन भवन बन रहा है।

वर्तमान युग मे इस क्षेत्र की उन्नति प्रायः सन् १६३१ से प्रारम्भ होती है। इसी समय क्षेत्र की व्यवस्था का भार पूर्ण रूप से जयपुर की दिगम्बर जैन पंचायत ने संभाला। प्रारम्भ में श्री स्व० जमनालालजी साह ने अपने अथक परिश्रम और व्यक्तित्व द्वारा क्षेत्र सम्बन्धी सभी झगडों को निपटाकर कार्य को व्यवस्थित रूप देने का प्रयत्न किया। इस सारी सुव्यवस्था और प्रगति में श्री सेठ स्व० रामचन्द्रजी खिन्दूका मंत्री प्र० का० कमेटी श्री महावीरजी की चतुर्मुखी प्रतिमा दृष्टिगोचर होती है। श्री खिन्दूकाजी के स्वर्गवास के पश्चात क्षेत्र का मंत्रित्व का भार खिन्दूकाजी के अभिन्न मित्र श्री सेठ बधीचन्दजी गंगवाल जयपुर को सौंपा गया है।

उनकी अस्वस्थता मे ही मंत्रित्व का भार जयपुर के सम्माननीय एवं प्रसिद्ध सज्जन श्री बख्शी केशरलालजी बडजात्या के हाथों में दिया गया। श्री बख्शीजी साहब निर्भीक एवं लगन वाले व्यक्ति हैं। जयपुर की प्राय' सभी सामाजिक संस्थाओं से आप सम्बन्धित हैं। जयपुर की ऐसी कोई सामाजिक एवं धार्मिक प्रवृत्ति नहीं जिसमें आपका योग न हो। आपने थोड़े ही समय मे क्षेत्र की आर्थिक स्थिति सुदृढ करते हुए जो बहुमुखी प्रगति की है, वह श्लाघनीय है। आपके पूर्ण प्रयत्न से ही नदी पर पुल बनाने के लिए क्षेत्र की ओर से १' लाख रुपया सरकार को दे दिया गया है शेष सरकार लगायेगी। बिजली और पानी के लिए दो बडे इंजिन दानवीर शाहू शान्तिप्रसादजी की ओर से फिट होगये हैं। कटले के सामने की जमीन में नया बाजार आधुनिक ढंग का बनाया जा रहा है। कटले में यात्रियों को ठहराने की अधिकाधिक व्यवस्था की गई है। राज्य सरकार की ओर से क्षेत्र की मांग पर एक एलोपेथिक डिस्पेंसरी खोल दी गई है जिसके लिए भवन क्षेत्र की ओर से रहेगा। इसके अतिरिक्त और भी अनेक प्रगतियां हो रही है। यह सब श्री बख्शी साहब की कार्य कुशलता का प्रतीक है। हमारी महावीर प्रभु से कामना है कि सम्पूर्ण जैन समाज के सहयोग से यह क्षेत्र दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करता हुआ वीर प्रभु के उपदेशों का प्रचारक बने।

श्री महावीर क्षेत्र का उक्त परिचय तैयार करने में जिन जिन सज्जनों का सहयोग मिला है मैं उनका आभार मानता हूँ। साथ ही इसमें रही भूलों के लिए क्षमा चाहता हूँ।

अन्त में प्रार्थना है कि वीर प्रभु के भक्त इस क्षेत्र की उन्नति के लिए सदा सचेष्ट रहेंगे।

—महावीरप्रसाद जैन 'भूषण'

पंचपरमेष्ठी के १४३ मूलगुण

१. अरहंत के छयालीस मूलगुण ।

चौतीसों अतिशय सहित, प्रातिहार्य पुनि आठ ।
अनंत चतुष्टय गुणसहित, छीयालीसों पाठ ॥

चौंतीस अतिशय ।

जन्मे दश अतिशय सहित, दश भये केवलज्ञान ।
चौदह अतिशय देवकृत, सब चौंतीस प्रमान ॥

जन्मके दश अतिशय ।

अतिशयरूप सुगंध तन, नाहिं पसेव निहार ।
प्रियहितवचन अतोल बल, रुधिर श्वेत आकार ॥
लच्छन सहसरु आठ तन, समचतुष्कसंठान ।
वज्रवृषभनाराच जुत, ये जनमत दश जान ॥

केवलज्ञानके दश अतिशय ।

जोजन शतइकमें सुभिख, गगन-गमन मुख चार ।
नहिं अदया उपसर्ग नहिं, नाहीं कवलाहार ॥
सब विद्या ईसुरपनों, नाहिं बढ़ै नखकेश ।
अनिमिषदृग छायारहित, दश केवलके वेश ॥ ६ ॥

देवकृत १४ अतिशय ।

देवरचित हैं चार दश, अर्धमागधी भाष ।
आपस माहीं मित्रता, निरमल दिश आकाश ॥
होत फूल फल ऋतु सबै, पृथिवी काच समान ।
चरणकमलतल कमल है, नभतैं जय जय बान ॥
मंद सुगंध बयारि पुनि, गंधोदक की वृष्टि ।
भूमिविषै कंटक नहीं, हर्षमयी सब सृष्टि ॥

धर्मचक्र आगे रहै, पुनि वसु मंगल सार।
अतिशय श्रीअरहंतके, ये चौतीस प्रकार॥

आठ प्रतिहार्य।

तरु अशोक के निकट में, सिंहासन छबिदार।
तीन छत्र सिरपर लसैं, भामंडल पिछवार॥
दिव्यध्वनि मुखतैं खिरै, पुष्पवृष्टि सुर होय।
ढारैं चौसठि चमर जख, बाजै दुंदुभि जोय॥

अनन्तचतुष्टय।

ज्ञान अनंत अनंत सुख, दरस अनंत प्रमान।
बल अनंत अरहंत सो, इष्टदेव पहिचान॥

अष्टादश दोष वर्जन।

जनम जरा तिरषा छुधा, विस्मय आरत खेद।
रोग शोक मद मोह भय, निद्रा चिंता स्वेद॥
राग द्वेष अरु मरण जुत, ये अष्टादश दोष।
नाहिं होत अरहंत के, सो छबि लायक मोष॥

२. सिद्धोंके आठ गुण।

समकित दरसन ज्ञान, अगुरुलघू अवगाहना।
सूच्छम वीरजवान, निराबाध गुन सिद्धके॥

३. आचार्य के छत्तीस गुण।

द्वादश तप दश धर्मजुत, पालै पचाचार।
षट आवशिक त्रिगुप्ति गुन, आचारज पदसार॥

द्वादश तप।

अनशन ऊनोदर करै, व्रतसंख्या रस छोर।
विविक्तशयन आसन धरै, कायकलेश सु ठोर॥
प्रायश्चित धर विनयजुत, वैयाव्रत स्वाध्याय।
पुनि उत्सर्ग विचार के, धरै ध्यान मन लाय॥

दश धर्म ।

छिमा मारदव आरजव, सत्यवचन चित पाग ।
संजम तप त्यागी सरव, आकिंचन तियत्याग ॥

छह आवश्यक ।

समता धर वंदन करै, नाना थुती बनाय ।
प्रतिक्रमण स्वाध्यायजुत, कायोत्सर्ग लगाय ॥

पंचाचार और तीन गुप्ति ।

दर्शन ज्ञान चरित्र तप, वीरज पचाचार ।
गोपै मनवचकायको गिन छतीस गुण सार ॥

४ उपाध्याय के पचीस गुण ।

चौदह पूरवको धरै, ग्यारह अंग सुजान ।
उपाध्याय पचवीस गुण, पढ़ै पढ़ावैं ज्ञान ॥

ग्यारह अंग ।

प्रथम हि आचारांग गनि, दूजो सूत्रकृतांग ।
ठाणअंग तीजो सुभग, चौथो समवायांग ॥
व्याख्यापण्णति पंचमो, ज्ञातृकथा षट आन ।
पुनि उपासकाध्ययन है, अन्तःकृतदश ठान ॥
अनुत्तरणउत्पाददश, सूत्रविपाक पिछान ।
बहुरि प्रश्नव्याकरणजुत, ग्यारह अंग प्रमाण ॥

चौदह पूर्व ।

उत्पादपूर्व अग्रायणी, तीजो वीरजवाद ।
अस्ति नास्ति परवाद पुनि, पंचम ज्ञानप्रवाद ॥
छट्ठो कर्मप्रवाद है, सतप्रवाद पहिचान ।
अष्टम आत्मप्रवाद पुनि, नवमों प्रत्याख्यान ॥
विद्यानुवाद पूरव दशम, पूर्वकल्याण महंत ।
प्राणावाद, किरिया बहुल, लोकबिंदु है अंत ॥

५ सर्वसाधुके अट्ठाईस मूलगुण ।

पचमहाव्रत समिति पंच, पंचेन्द्रियका रोध ।
षट आवश्यक साधु गुण, सात शेष अव बोध ॥

पंच महाव्रत ।

हिंसा अनृत तसकरी, अब्रह्म परिग्रह पाप ।
मनवचतनतैं त्यागवो, पंचमहाव्रत थाप ॥

पाँच समिति ।

ईर्य्या भाषा एषणा, पुनि छेपन आदान ।
प्रतिष्ठापनाजुत क्रिया, पाँचों समिति विधान ॥

पाँच इन्द्रियों का दमन ।

सपरस रसना नासिका, नयन श्रोत्रका रोध ।
षटआवशि मंज्जन-तजन, शयन भूमिको शोध ॥

शेष सात गुण ।

वस्त्रत्याग कचलौंच अरु, लघुभोजन इकवार।
दांतन मुखमें ना करे, ठाड़े लेहिं अहार ॥

छह आवश्यक

ऊपर आचार्य के गुणों में जो छह आवश्यक बताये गये हैं- वे यहां भी समझें ।